श्री आत्म प्रबोध.

भाषांतर.



प्रकाशक,

श्री जैनआत्मानंदसभा

भावनगर.



ન્યાયાંભોનિધિ શ્રીમદ્વિજયાનંદસૂરી

(આત્મારામજી મહારાજ)

The Bombay Art Printing Works, Fort.

श्री आत्मानद ग्रंथमाळा नवर ३२ मो.

श्रीमद् जिनलाभसूरि विरचित,

श्री

आत्मप्रबोध भाषांतर.

जिन वचनामृत महोदधिमांथी धुरधर गीतार्थ पन्ति वचनतरंग विन्दुरुप सम्यक्त्व, देशविरति, सर्वविरति अने परमात्मभाव स्वरुप विगेरे अनेक विषयोपर दृष्टांतयुक्त विस्तारथी विवेचन

अनुवादक,

स्वर्गस्थ झवेरभाइ भाइचंद शाह,

भावनगर निवासी

बाबुसाहेब प्रतापचंदजी गुलाबचंदजी मुंबइ निवासीए करेली आर्थिक सहायवडे,

छपावी प्रसिद्धकर्त्ता,

श्री जैन आत्मानंद सभा

भावनगर

वीर संवत २४३८ आत्म संवत १७ विक्रम संवत १९६८ इ स १९१२

श्री "आनंद" प्रीन्टींग प्रेस—भावनगर

नरेंद्र देवेंद्रसुखानि सर्वा–ण्यपि प्रकाम सुलभानि लोके ।
पर चिदानदपदैकहेतुः सुदुर्लभस्तात्त्विक आत्मबोध ॥
ततो निरस्याऽखिलदुष्टकर्म–व्रज सुधीभिः सतत स्वधर्मैः ।
समग्र सासारिकदुःखरोध–स्समर्जनीयः शुचिरात्मबोध ॥

ત્રણ ભુવનોમા ચક્રવર્તી અને ઇંદ્રના સર્વ સુખો અત્યતપણે સુલભ છે, પરતુ સિદ્ધિસુખના અદ્વિતીય કારણરૂપ '**આત્મબોધની પ્રાપ્તિ**' વાસ્તવિકપણે દુર્લભ છે તેટલા માટે વિચક્ષણ જનોએ સમસ્ત દુષ્ટ કર્મના સમૂહને દૂર કરી આ માને એકાંત હિતકારી અને સસારની સર્વ આધિ, વ્યાધિ અને ઉપાધિઓને સ વર કરનાર પવિત્ર આત્મબોધની ઉપાર્જના કરવી

શ્રીમદ્ જિનલાભસૂરિજી.

(आत्मप्रबोध)





बाबुसाहेब गुलाबचन्दजी अमीचदजी झवेरी

मुंबई

Baboosaheb Gulabchandji Amichandji Zaveri

BOMBAY

The Bombay Art Printing Works, Fort

अर्पणपत्रिका.



स्वर्गवासी बाबुसाहेब,

गुलाबचंदजी अमीचंदजी पन्नालाल झवेरी,

मुंबइ

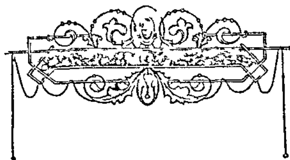
आप व्यावहारिक स्थितिमा सारी प्रवृत्तिवाळा हता. आपनो उच्च कुळमा जन्म थयो होवाथी तेमज बाबु पन्नालाल पुरणचंदजीना पौत्र थता होवाथी झवेरीना धंधामा कुशळ होवासाथे धर्मउपर श्रध्धावाळा हता. आपनु हृदय भद्रिक, शांत, उदार अने साधर्मी बंधुओने सहाय करवानी भावनाथी वासित हतु. जीवदया अने ज्ञानोध्धारना कार्यो पर आपने खास प्रेम हतो. आपना तेवा प्रेमपात्र धार्मिक कार्यो जोवानो जैनसमाजने वखत आव्या पहेला लघुवयमां आपनो देहोत्सर्ग थयो छे, तेवा परलोकवासी आत्माने भावमय शांति आपनारो, अने भव्यात्माने आत्मबोध प्राप्त करावनारो (आत्म स्वरूप ओळखावनारो) आ आत्मप्रबोध ग्रंथ आपना स्मरणीय हृदयमां आरोपित करी तेनी प्रेरणा करनार आपना पितृभक्त पुत्र बाबु साहेब प्रतापचंदजीना पुत्र कर्तव्यने अभिनंदन आपी अमे अति आनंदित थइए छीये.

आत्मानंद भुवन. }

श्री जैन आत्मानंद सभा,
भावनगर.







प्रस्तावना.

दरेक आत्मामा असाधारण अभ्युदयने आपनार सामर्थ्य अने शक्तिओ बीजरुपे रहेली छे. तेमने मनुष्य निश्चय बळथी मेळवी शके छे. निश्चयबळ ए काइ साधारण प्रकारनु बळ नथी, पण ते मनुष्य जीवननी उचामा उची भूमिकामा जवानु साधन छे. जैन योगविद्यानो महान् आरम्भ जेने माटे प्ररूपित थयेलो छे, तेवा मनना निग्रहनु फळ पण निश्चयबळ छे. मनुष्यनी अंतर्वृत्तिमा जे उच्च अभिलाषाओ अने शुद्ध विचारो प्रगटे छे, तेमनी कृतार्थता निश्चयबळमाज रहेली छे. जेनामा ए अद्भुत बळ रहेलु छे, ते धर्मनी क्रिया अने तत्त्वमार्गनो पथिक बनी शके छे. विश्वोपकारी भगवान् तीर्थकरोए प्राणीओना हितने माटे जे आज्ञारुप नियमो प्ररूपेला छे, ते बधा निश्चयबळथीज पाळी शकाय छे. ते निश्चय बळने दृढ राखवाने माटेज दान, शील, तप अने भाव–ए चतुर्विध धर्मनी प्ररूपणा करवामा आवी छे. ए चार स्तंभोने अवलंबीने सर्वधर्मशिरोमणि आर्हतधर्मनो सुदर प्रासाद रहेलो छे. निश्चयबळ अथवा मनोबळने धारण करनार भव्य आत्माए पवित्र अने सुदर प्रासादमा वास करवानो अधिकारी थाय छे. ते निश्चयबळने टकावी राखवाने माटे जे गुणोनी आवश्यकता छे, ते गुणो आर्हत धर्मशास्त्रमा दर्शावेला छे, ते शास्त्र उद्घोषणा करे छे के, “निश्चयबळ मेळववाने माट सद्वर्तन धारण करजो. उदासीनता, खेद, चिंता अने भय जे मनोबळने लुलु करी नाखनारा छे अने आत्माना भावी उदयने रोकनारा छे तेमने हृदयमा पेसवा देशो नहीं. निरतर आत्मचिंतवन करजो, कटुतामा मधुरता शीखजो. एटले दुःखमा सुखने मानी लेता शीखजो. दुःखोने अनुभवी ढीला थशो नहीं अने संतापना रोदणां रडशो नहीं तमारा मनने कर्म प्रकृतिनु ज्ञाता अने तत्त्वज्ञाननें सेववानु अधिकारी बनावजा निश्चयबळ आपजो, तेथी तमोने दु.खमां प्रसन्नता राखवानुं कार्य जरापण कठिन जणाशे नहीं. ”

शास्त्रोनी आ वाणी बोली जवानी के सांभळी जवानी नथी पण तेने क्रियामां-वर्तनमां मुकवी जोइए. ए वर्तनमां मुकवाने माटेज आर्हत आगम उपरथी प्राचीन विद्वानोए अनेक लेख लखेला छे. प्रत्येक लेखनी रचना भिन्न भिन्न लागे छे, पण तेमनो पवित्र उद्देश एकज होय छे. ते पवित्र उद्देशथी लखाएला ग्रंथोनी अंदर केटलुं बधुं गौरव रहेलुं छे ? तेनो विचार सहृदय विद्वानोज आपी शके तेम छे.

सर्व दर्शन शिरोमणि जैनदर्शनमां विश्वोपकारी महात्माओए भव्य आत्माओना हितनी खातर अनेक ग्रंथो लखेला छे अने तेथीज भारतवर्ष उपर वसती आर्य प्रजामां आर्हत धर्मनी ज्ञान समृद्धि सर्वोत्कृष्ट गणाय छे. जोके तेना अनेक कारणो छे, परंतु मुख्य कारण तेमना ग्रंथोमां वर्णवेलुं उच्च प्रकारनुं तत्त्वज्ञान केवल शुष्क नथी, पण ते साथे ते क्रिया, आचार अने सद्वर्तनना बोधरूप माधुर्यथी भरपूर छे. तेनी अंदर हृदयना उच्च भावने जागृत करनारी भावनाओ एवी रीते प्ररूपेली छे के जेमनाथी संसारी जीवो पोताना दोषोने दूर करवा अने आत्माना गुणोने संपादन करवा समर्थ थइ शके छे.

आ आत्मप्रबोध ग्रंथ आर्हत धर्मनी ज्ञानसमृद्धिना वैभवना परिपूर्ण विलास रूप छे. उपर कहेल निश्चयबळ अथवा मनोबळ प्राप्त करवानी सामग्री आ ग्रंथमां भरपूर गोठवेली छे. आत्मा ए पदार्थनी अंदर जे सामर्थ्य, वीर्य अने सत्ता रहेली छे, तेने ओळखाववाने माटे जे जे साधनो जोइए, ते साधनो आ ग्रंथमां युक्ति अने प्रमाण साथे प्रतिपादित करेला छे. मनुष्योमां कर्मजनित जे जे दोषो रहेला छे, तेमने टाळीने तेमना आत्मामां रहेला उच्च लक्षणो खीलववामाटे सर्वोत्तम साधन सम्यक्त्वज छे. ते विषे आ ग्रंथमां सविस्तर विवेचन करवामां आवेलुं छे, ते उपरथी आत्मा केवी रीते प्रबोधने प्राप्त करे छे, अने प्रबोध प्राप्त करवा माटे आत्माए शुं करवुं जोइए ? इत्यादि उच्च प्रकारो ग्रंथकारे एवी शैली अने क्रमथी वर्णव्या छे के, जेथी आ ग्रंथनुं आत्मप्रबोध ए नाम संपूर्ण सार्थकताने धारण करे छे वळी प्रबोधनो अर्थ जागृति थायछे, जेनाथी आत्मानी प्रबोध-जागृति थाय एवा विचारोनो जेमां संग्रह छे, एवो आत्मप्रबोध ग्रंथ तेना नामनी संपूर्ण कृतार्थता पण संपादन करेछे

ज्यां प्रकाश त्यां प्रबोध होयछे अप्रकाशमां प्रबोध होइ शकतो नथी, तेथी आ ग्रंथना प्रकरणने प्रकाश नाम आपेलुं छे. आ ग्रंथमां प्रकरण रूपे चार

प्रकाशो आपेला छे. प्रथम प्रकाशनुं नाम सम्यक्त्वनिर्णय राखेलुं छे. आ प्रकाशनी अंदर आ ग्रंथना अधिकारीनो निर्णय करी आत्मा शब्दनो अर्थ, आत्माना प्रकार, अने सम्यक्त्वनु स्वरूप विस्तारथी निरूपण करेलुं छे. श्रावकपणाना तत्त्वने प्रतिपादन करनार सम्यक्त्व तत्त्वने प्ररूपता ग्रंथकारे तेने अंगे आत्मशुद्धिनो विषय घणो सरसरीते वर्णव्यो छे. मनुष्यनी मानस शक्तिओ अने गुणो केवी-रीते विकाशने पामेछे अने असाधारण मानसशक्तिओ शाथी खीलेछे? ए वात आत्मशुद्धिना विषयथी स्पष्ट थायछे. ते उपर आपेल प्रभास चित्रकारनु दृष्टांत ए विषयनु यथार्थ स्पष्टीकरण करेछे. सम्यक्त्वना भेदोना प्रसंगमा पंचविध विनयनु स्वरूप प्रतिपादन करता देवपूजा अने चैत्य भक्तिनो विषय घणोज चित्ताकर्षक रचाएलो छे. पवित्र प्रभुनी पूजा—भक्तिथी हृदय उपर उंडामां ऊंडी जे भावना पडेछे, अने तेथी हृदय जे द्रवीभूत थायछे, तेनो चितार ग्रंथकारे ते विषयनी चर्चामा दर्शावेलो छे. अने ते उपर असरकारक दृष्टांतो आपी प्रस्तुत विषयने अत्यंत समर्थ बनाव्यो छे, जे वाचता आस्तिक हृदय भावोल्लासथी उभराइ जायछे. सम्यक्त्वनी विविध शुद्धि दर्शावतां ग्रंथकारे सम्यक्त्वनी महत्तानु भान कराव्युं छे अने पछी तेना दुषणो ने दृष्टांत पूर्वक समजावी सम्यक्त्वना आठ प्रभावकनु सविस्तार ब्यान आपेलु छे. जे प्रसंग सम्यक्त्वना अधिकारी आत्माओने अति आनंद उपजावे छे. ते उपरथी ग्रंथकारे सिद्ध करी बताव्युं छे के, दरेक जैने सम्यक्त्वनी भावनाने माटे उच्चपणे गतिमान् थवुं जोइए, ते प्रमाणे गतिमान् थता उच्च वर्त्तन राखवा प्रयत्न करवो जोइए अने कल्याणकारक प्रवृत्ति आचरवी जोइए अने तेथी दरेक जने सम्यक्त्वना प्रभावक थवु जोइए. प्रवचन, धर्मकथा, वादविवाद, निमित्तज्ञान, तप, विद्यासिद्धि अने शासनज्ञान ए उच्च साधनोथी प्रभावक थइ शकाय छे, अने प्रभावनाने माटे ते साधनो मेळववानी आवश्यकता छे, ए वात विद्वान् ग्रंथकारे उच्च आशयथी प्रतिपादन करेली छे. आ भवोदधिमाथी पसार थवा इच्छा राखनारा भव्यात्माए धारण करेला सम्यक्त्वने सर्वदा विभूषित राखवु जोइए. ए उद्देशने लइने आर्हत आगममा दर्शावेला सम्यक्त्वना भूषणो विषे ग्रंथकारे रसिक विवेचन करेलुं छे. त्यार बाद सम्यक्त्वना पांच लक्षणो हेतुपूर्वक उदाहरणो आपी समजाव्या छे. पछी छ प्रकारनी यतना, छ आगार, छ भावना अने छ स्थानकना शुद्ध स्वरूप दर्शावी ए प्रथम प्रकाशने पूर्ण करवामा आव्यो छे.

आ ग्रंथनो बीजो देशविरति नामे प्रकाश छे. आ प्रकाशमा गृहस्थ धर्मनु उपयोगी विवेचन आपेलुं छे. गृहस्थनी समाचारी केवी होवी जोइए? केवा गुणोथी गृहस्थावास अलंकृत थाय छे? अने गृहस्थे केवा व्रतो पाळवा जोइए? ए विषय उपर ग्रंथकारे पोतानी वाणीनो वैभव उच्च प्रकारे दर्शाव्यो छे तेमाथी एवो ध्वनि निकळे छे के, भव्य मनुष्ये निश्चय बळ वधारवाना साधनो संपादन करवा, दुर्लभ एवा मनुष्यजीवनने सूर्य जेवु तेजस्वी, प्रतापी अने सर्वनु श्रेयःसाधक बनाववु, आळस, प्रमाद, व्यग्रता, क्रोध, चिंता, मोह अने अमर्याद आसक्ति एटलाथी अत्यंत सावध रहेवु, ए दोषो विपत्तिओना महासागरमां डुबाडनारा छे, एम मानवु, सप्तव्यसनो उदयनी आशाने निर्मूळ करी दुर्गतिना दरवाजा तरफ लइ जनारा छे, एम निश्चय करवो. छळ प्रपंचनी छायामा पण उभा न रहेवु, सत्यनो प्राण जता पण त्याग न करवो अने निश्चय बळ अने आत्मबळमा विश्वासवाळा रहेवु, ए देशविरति धर्मना उपदेशनु रहस्य छे, अने गृहस्थ धर्मना शुध्ध स्वरूपनो प्रकाश छे. ते गृहस्थधर्मने अंगे बार व्रतोनु स्वरुप अने सदाचार भरेला सद्वर्त्तन विषे ग्रंथकारे घणा रसिक दृष्टांतो आपेला छे. ते प्रसंगे दानधर्मनु विवेचन करी गृहस्थावासमा करवा योग्य उदारता भरेली सद्भावतो विषे पण इसारो करवामा आवेलो छे. तदनुसार श्रावकनी एकादश प्रतिमा दृष्टांत सहित प्रतिपादन करी गृहस्थ श्रावकना उच्च जीवनने अर्पनारा कर्त्तव्यो दर्शाव्या छे, जे मनन पूर्वक वाचवा योग्य छे. आ प्रकाशना लेख उपरथी ग्रंथकारे सिध्ध कर्यु छे के, प्रत्येक ग्रहस्थे कर्त्तव्यनिष्ठ थवानु छे अने पोताना जीवनने सद्भावनामय बनावी सर्व प्रति उच्च प्रेमनी लागणीथी जोवानु छे. हृदयमा प्रेमरुप अमृतने भरी मृदुता भरेली वाणी उचारवानी छे, जे वाणी सर्व श्रवण करनारने शीतळता अने शांति उपजावे छे. प्रत्येक गृहस्थ देशविरति छे, छतां तेनी भावनामा सर्व विरतिपणानु स्वरूप प्रकाशित होवु जोइए. तेनु वर्त्तन दयाळुताथी रंगाएलु, विशुध्ध अने सात्विक होवु जोइए, जेथी शुध्धदेव, गुरु अने धर्म—ए त्रिपुटीनी आराधना करवानी योग्यता तेनामा पूर्णरीते प्राप्त थाय छे. सद्वर्त्तननी शुध्धिने सेवनारो गृहस्थ श्रावक आत्माना असाधारण महिमाने जाणी शकेछे, ते कोइपण जातना दुराग्रहने वश थतो नथी, मिथ्यात्व भरेला विचारो तेने रुचिकर लागता नथी, ते निरंतर पोतानी सम्यग् दृष्टि उचपद तरफ राखेछे, अने नीचपदनी उपेक्षा करेछे. तेनी भावनामां श्रेणीबंध सद्विचारो

रहेला छे. तेनी मनोवृत्तिथी मलिन वासना सदा दूर होय छे अने तेना जीवननो प्रवाह सत्प्रवृत्ति तरफ वल्या करेछे. आवा गृहस्थना उच्च जीवनने माटे ग्रंथकारे पूर्णु विवेचन करेलुं छे.

त्रीजा प्रकाशनु नाम सर्वविरति छे. आ स्थळे विद्वच्छिरोमणि ग्रथकारे सयम मार्गना शुद्ध स्वरूपनी प्ररूपणा करेली छे. सयमनु स्वरूप, तेना अधिकारी अने यतिधर्मना दश प्रकार विषे करेलु विवेचन अभ्यासी वाचकोने अति उपयोगी थइ पडे तेवुं छे. तप, स्वाध्याय, इन्द्रियनिग्रह, द्रव्यविरति वगेरे विषयो रसिक दृष्टात पूर्वक प्रतिपादन करेला छे. सयम साधकने हेय अने उपादेय शुं छे ? ते दर्शावी बार भावनानुं सुबोधक स्वरूप आपेलु छे. ते प्रसंगे आपेला प्राचीन ऐतिहासिक दृष्टातो घणा असरकारक छे. ते पछी बार प्रतिमानुं स्वरूप आपी साधुओनो अहोरात्रनो कार्यक्रम उपस्थित कर्यो छे. आ प्रसंगे ग्रंथकारे सिध्धातमा कहेला साधुगुणोनु वर्णन एवी सुदरताथी करी बताव्यु छे के, जेनी असर आस्तिक वाचकोना हृदय उपर सत्वर आरुढ थइ शके छे.

आ प्रकाश उपरथी महोपकारी महाशय ग्रथकर्त्ताए सिध्ध करी बताव्युं छे के, अधिकारी मनुष्यने पोतानु जीवन उच्च स्थितिए लइ जवामा वे मार्ग साधनीय छे. गृहधर्म मार्ग अने यतिधर्म मार्ग. गृहधर्म मार्ग यथार्थ रीते सपादन कर्यो होय तो ते द्वारा यतिधर्मनो मार्ग सुगमताथी प्राप्त कराय छे. सर्व विरति सयममार्ग ए मानवजीवननी उन्नतिनु शिखर छे. ते पर आरूढ थयेलो आत्मा परम आनदनी समीप आववानो अधिकारी बने छे. ससारनो त्याग करवाथी तेना अगरुप बीजी उपाधिओ दूर रहे छे, एटले ते निरुपाधि आनदनो पूर्ण अनुभव करवानो अधिकारी बने छे आनदनी शीतळ छायामा विश्रात थयेला सयमीने ज्ञेय चिंतनीय अने ध्येय सुख साध्य थाय छे. ते सर्वदा पोताना हृदयने सबोधीने कहे छे के, " मारु जीवन सयमनो जे आनद अनुभवे छे ते आनदज मारु लक्ष्य छे, मारु जीवन छे, मारा हृदयनो रवि छे, अने मारु सर्वस्व छे. अग्निनो सबध थता जेम पारो उडी जाय छे अने सूर्यना प्रकाशनो प्रबध थता जेम अधकार उडी जाय छे, तेम मने सयमनो सबध थता आ ससारनी विविध उपाधिओ उडी गइ छे. जे हृदयमां पूर्वे क्षणे क्षणे दुःख, क्लेश, भय, चिंता अने शोक वगेरे आवीने उभा रहेता हता, ते अत्यारे सिंहना नादथी जेम मृगवृंद नाशी जाय, तेम नाशी गया छे. सयमरुपी सिंह मारा हृदयरुप गुफामा बेठो छे.

तेना मुखमांथी 'सोऽहं' रुप महानाद थया करे छे, जे महानादनो प्रतिध्वनि गगनने भेदी लोकाकाशना सर्व प्रदेशमां व्यापी जाय छे."

आ ग्रंथना चोथा प्रकाशनु नाम परमात्मस्वरूप छे परमात्मा कोण? परमात्मापणु केवु होय? अने तेनी प्राप्ति शी रीते थाय? ए विषयो ग्रंथकारे सुबोधक वाणीथी वर्णवेला छे. जवस्थ केवळीनु स्वरूप आपी जिननिक्षेपानु यथार्थ रहस्य दर्शावेलु छे. ते पछी सिद्ध स्वरूप, सिद्धोनी अवगाहना अने समस्त वस्तु विषयिक केवळज्ञान अने केवळदर्शन संक्षिप्तमां एवी स्पष्टताथी निरूपित करेला छे के, जे उपरथी ग्रंथकारनी दिव्य प्रतिभावाळी महाशक्ति जणाइ आवे छे. श्री अर्हत् भाषित जैनआगममां जेने अनिर्वाच्य कह्युं छे, तेवा सिद्ध सुखनु दृष्टांत सहित वर्णन करतां ग्रंथकार विद्वान् वाचकोना हृदयने आकर्षी ले छे ते पछी सिद्धभगवानना अलौकिक गुणोनु वर्णन करी अने आत्मबोधनी दुर्लभता दर्शावी श्री विद्वच्छिरोमणि ग्रंथकार आ आत्मिकज्ञानना महोदधिरुप ग्रंथना सामा तट उपर आवी पोहोचे छे—ग्रंथ समाप्त थाय छे.

आ टेल्ला गहन विषय उपर ग्रंथकारनो जे महान् उद्देश छे, तेने जो पल्लवित करवा धारीए तो आ प्रस्तावना पण एक ग्रंथरुप थइ पडे तेथी संक्षेपमां एटलुज कहेवानु के, परमात्मभाव ए लोकोत्तर दिव्यभाव छे ते भावनो साथे सिद्धावस्थानो उत्कृष्ट संबंध छे सिद्धावस्थानो आनंद अवर्णनीय छे—अवाच्य छे ते आनंदना अनुभवीओज तेने जाणे छे. आपणे तो तेनी भावनाज भाववानी छे ए भावना भावताज विचार, वाणी अने कृति आनंदमय बनी जाय छे. ते विषे एटलुज कहेवु बस छे.

आ प्रमाणे धर्म, अर्थ, काम अने मोक्ष ए चार पुरुषार्थनी सरणीने जाणे सूचवता होय, तेवा चार प्रकाशथी आ आत्मप्रबोध ग्रंथने तेना विद्वान् कर्त्ताए प्रकाशित करेलो छे. उदयमान जैनसमुदायने धर्म अने तत्त्वनी श्रेष्ठ शिक्षण पद्धतिने जैनागम प्रमाणे उत्तेजी तेने स्वाश्रयनिष्ठ तथा कर्त्तव्य निष्ठ करवा आ ग्रंथ उद्देशे छे, एटलुज नहीं पण तेना मनन पूर्वक अभ्यासीने आत्मिक उन्नतिना आनंदमय द्वारसुधी उत्तम सुबोधना शब्दोथी ते दोरी जाय छे ए नि संदेह छे.

आ ग्रंथना कर्त्ता श्री जिनलाभसूरि खरतरगच्छना एक प्रख्यात आचार्य हता विक्रमसंवत् १७८४ ना वर्षमां तेमनो जन्म बिकानेरमां थयो

हतो. तेमनु संसारी नाम लालचन्द हतुं. तेमणे विक्रमसवत् १७ए६ ना वर्षमा बारवर्षनी वयमा दीक्षा लीधी हती. तेमना गुरुनु नाम जिनभक्तिसूरि हतुं. जिनलाभसूरि बाल्यवयमाथीज बुद्धिशाळी हता. तेमणे दीक्षा लीधा पछी उची जातनो अभ्यास कर्यो हतो. तेमनी व्याख्यान करवानी शक्ति उत्तम हती, आथी लोको तेमने बहु मान आपता हता. विक्रम सवत् १८०४ना वर्षमा तेमनी वीश वर्षनी वय थता तेमने सूरिपद आपवामा आव्यु हतु. ए सूरिपद नो महोत्सव कच्छदेशमा आवेला मान्दवीबंदरनी अदर थयो हतो. ते स्थळे रहीने तेमणे आ आत्मप्रबोध ग्रथनी रचना करी हती. अने तेना सुबोधक व्याख्यानो कच्छनी जैनप्रजाने सभळाव्या हता. जेनी प्रशसाना शब्दो देश विदेशमा पण प्रसरी गया हता.

सूरिवर जिनलाभसूरिनी विद्वत्ता अने व्याख्यान शक्तिथी घणाओ आ ससार तरफ विरक्त थइ तेमनी पासे दीक्षित थया हता विक्रम सवत् १८१एना वर्षमा तेमना परिवारमा पोणोसो साधुओ विद्यमान हता. एवा शिष्योना मोटा परिवार साथे तेमणे गोडी पार्श्वनाथजीनी तथा आबुनी यात्रा करी हती. विक्रम सवत् १८३४ना वर्षमा पचाश वर्षनी वये ते महानुभाव काळधर्मने पाम्या हता. तेमना स्वर्गवासथी ते देशनी जैनप्रजामा कहेवायु हतु के, " खरतर गच्छरूपी गगनमाथी एक तेजस्वी तारो अस्त थइ गयो. "

आ ग्रंथनु गुर्जर भाषातर भावनगर निवासी स्वर्गस्थ शा. कुवेरचद भाइ-चदे करेलु छे. मरहूम आर्हत धर्मशास्त्रना सारा ज्ञाता हता. भावनगरनी श्री जैनप्रजाना आगेवान पैकीना तेओ एक हता. अने तेज नगरमा स्थपाएल श्री वृद्धिचदजी जैनविद्याशाळाना मत्री हता अने पोताने प्राप्त थयेल धर्मज्ञान बीजाने आपवु एज जेनो मुख्य उद्देश हतो, आथी तेओ शास्त्रीय ज्ञानने सपादन करवामा अने तेनु दान बीजाने आपवामा यावज्जीवित उत्साही रह्या हता. आर्हत ज्ञानना अनुभवनो परिपाक थयेलो होवाथी तेओ आ उत्तम ग्रथनु भाषातर करवा शक्तिमान् थयेला छे, तेमज तेओए जैन शैलीने अनुसरी लखेली भाषा लालित्य-वाळी छे. केटलेक प्रसंगे मूल ग्रथना आशयने समजाववामा तेमणे सारो स्पष्टार्थ करेलो छे. भाषातरकार आ पोतानी कृतिने परिपूर्ण मुद्राकित थयेल जोइ शक्या नथी. आ ग्रथनो बीजो प्रकाश थोडो छपाया बाद गइ शालना श्रावण वदी ८ ना रोज तेमना जीवितनु अवसान थयेलु छे, पाछळथी तेमना पितृभक्त अने उत्साही पुत्र फत्तेहचदे पोताना पितानी कृतिने पूर्ण रीते प्रसिद्ध थवा मुफो वि-

गेरे वांचवामां आ सभाने सारी मदद करी छे. जो भाषांतरकार आ ग्रथना मुद्रित थयेला बाह्य अने आभ्यतर सुदर स्वरूपने प्रसिद्ध थयेलु जोइ शक्या होत तो तेमना हृदयमा पूर्ण सतोप थात अने आ प्रसिद्ध करनारी सस्थाने सारु अभिनदन मळत, परतु कर्मयोगे एम बनी शक्यु नहीं, एटलु असतोपनु कारण थयु छे.

आ प्रसगे जणावता आनद उपजे छे के, नामदार नीझाम सरकारना झवेरी बाबू पन्नालाल पूरणचंदना प्रपौत्र बाबू प्रतापचदजी गुलाबचदजीए पोताना स्वर्गवासी पिता बाबूसाहेब गुलाबचदजीना स्मरणार्थे आ उपयोगी ग्रथ प्रगट करवामा उत्तम सहाय आपी छे. स्वर्गवासी बाबू गुलाबचदजी पोताना टुक जीवनमा पण धार्मिक वृत्ति, तेमज पोताना झवेरी तरिकेना धधामा असाधारण उदारतायुक्त अने कर्त्तव्य निष्ठ थयेला छे, तेवा पोताना स्वर्गवासी पिताना नामना स्मरणार्थे पितृभक्त युवान पुत्र बाबू प्रतापचदजीनी आ सत्प्रवृत्ति खरेखर धन्यवादने पात्र छे उद्योग, ज्ञान अने धार्मिक कार्योमा उत्साहथी आगळ वधता युवान बाबू प्रतापचदजीनी आ प्रवृत्ति बीजा गृहस्थोने अनुकरण करवा योग्य छे, एवी नम्र सूचना आपी तेओए आपेली सहायताने माटे अत'करणथी आभार मानवामा आवे छे.

सदरहु ग्रथनी शुद्धिने माटे यथाशक्ति प्रयत्न करवामा आवेलो छे छता छद्मस्थपणामा सुलभ एवा प्रमाद तथा दृष्टि दोषादि दोष के प्रेसना दोषने लइने कोइपण स्थाने स्खलना थइ होय तो मिथ्यादुष्कृत पूर्वक क्षमा याचीए छीए.

सर्व जैनप्रजा पोताना धार्मिक साहित्यना गौरवमा, समृद्धिमा तथा कल्याण शक्तिमा वृद्धि करनारा, आ उपयोगी ग्रथने पठन,पाठन तथा वाचननो उत्तम उपयोग करी आदर आपशे तो करेलो श्रम सफळ थयेलो मानी आ सस्था पोतानी आवी प्रवृत्तिमा विशेष उत्साहित थशे

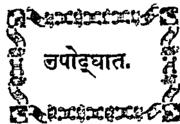
छेवट नीचेनी भावनावडे आत्मानु उद्बोधन करी आ प्रस्तावना समाप्त करवामा आवे छे.

" प्रवर्त्तता सत्प्रवृत्या, सधर्मसुहृदोऽखिला ।
निवर्त्तता सदा तेषा, विपत्त्यन्तरायकृत् " ॥१॥

" सर्व साधर्मी बधुओ सत्प्रवृत्तिथी प्रवर्त्तो अने तेमने ते प्रवृत्तिमा अतराय करनारी विपत्तिनी सदा निवृत्ति थाओ. " ॥ १ ॥

वीर सवत २४३८, आत्म सवत १७
आश्विन शुक्ल तृतीया रवीवार
आत्मानद भुवन.

श्री जैन आत्मानंद सभा
भावनगर.



उपोद्घात.

प्रत्येक ग्रंथना आंतर शरीरनी घटनानो आधार खास करीने तेना अनुबंध चतुष्टय उपर होवाथी तेनी जेवा प्रकारे सकलना थयेली होय तदनुसार विद्वज्जनो ग्रंथ महत्वतानी समीक्षा करे छे. मगळ, अभिधेय, प्रयोजन अने संबंधरुप आ चतुष्टय ग्रंथनी आदरणीयता तरफ दिग्दर्शन करावी वाचकोने सन्मुख थवा प्रवृत्ति करावे छे. जे ग्रथनी आदिमा अढार दोष रहित सर्वज्ञ परमात्माने नमस्कार होय, जे ग्रंथमा आत्मानो उद्बोधन क्रम अभिधेय होय, जे ग्रंथनुं प्रयोजन स्वपरने व्यावहारिक मात्र नहि किंतु आत्मिक हित शीघ्रपणे प्राप्त करावतुं होय, अने जे ग्रथमां दर्शावेला आंतरभावो रुप उपायो वडे कर्मक्षयथी उत्पन्न थयेली मुक्ति सपादन थइ शके—आवा ग्रथो लौकिक फळदानने उल्लंघी अलौकिक फळदान सादर करे तेमां शु आश्चर्य ! जैनदर्शनना ग्रंथकाराए प्रथमथीज आवाज अनुबंध चतुष्टयनी योजना करेली छे, जे प्रशस्य होइ ज्ञानीओए प्राप्त करेला उत्तम फळने अभिलक्षे छे. सन्मुख थयेला वांचको पछीथी ग्रथना अभिधेय अगोतुं निरीक्षण करी स्वरुचि अने स्वादर रुप तुलाओ वडे ग्रथपरत्वे पोताना अधिकारनी तुलना करे छे, तदनुसार श्रवण मनन के वाचन तरफ प्रवृत्तिशील बने छे, अने बुद्धिना क्षयोपशम प्रमाणे ग्रथावलोकननी समीक्षा थाय छे. श्रुत, चिंता अने भावनाना सतत परिशीलन वडे ग्रथनी आतर सुदरता ओळखवामां आवे छे अने भावनाना परिपाकपणा पछी ग्रथना चर्मदृष्टिए देखाता स्थूलभावोनु चैतन्यमय आत्मा साथे आरोपण थाय छे—अत्र ग्रथकारनो श्रम सपूर्ण फळग्राही बने छे.

आत्मा शब्दनो अर्थ आ आत्मप्रबोध ग्रथना व्याख्याकारे ' अततीति आत्मा ' ' ते ते भावने सततपणे प्राप्त करे ते आत्मा ' ए रीते शरूआतमा कहेलो छे, ते अपूर्व भावसूचक छे. पश्चिमथी पूर्वतरफ जोसबध वहेता आ जन्-

वमे जाणी शके छे ? अविद्याना अधकारमा पडी रहेला आत्मरत्नने शास्त्रे खोळी कढाय छे ? श्वासोश्वासादि बाह्य प्राणोथी जीवन्त कहेवाता—देह एज हु एवी मान्यता करता मनुष्योनो आत्मा केवु जीवन अनुभवे छे ? स्थावर अने जगम रुप बाह्य समृध्धिने पोतानी समृद्धि माननाराओ आत्माने ओळखी शक्या छे के केम ? वैज्ञानिक विद्यार्थी पण आत्मा जेवो कोइ देहगत पदार्थ छे तेम अनुमान थइ शके छे ? सुख दुःखनो ज्ञाता कोण होवो जोइए ? आ सर्व स्थितिओ तपासवी मुश्केल छे तो आत्मज्ञान प्राप्त करी तेनो उन्नतिक्रम नक्की करी ते मार्गना अनुयायी थवु, ए विशेष प्रमाणमा दुर्लंघ्य होय, तेनु कहेवुज शु !

जडवादना आ जमानाने अगे एक तरफथी आत्मज्ञान नष्ट थतु जाय छे, तो बीजी तरफथी आत्मानु अस्तित्व प्रतिपादन करनारा शास्त्रो जुदीज दिशामा गमन करता होवाथी आत्मारुप पदार्थनु वास्तविक ज्ञान प्रकट थइ शकतु नथी. जुओ ! बौद्ध दर्शन आत्माने द्रव्यरुपे क्षणस्थायी मानी वस्तुस्थितिमा साकर्य उत्पन्न करे छे, मीमासको सर्व अवस्थामा आत्माने नित्य अने अवध माने छे, प्रत्येक शरीरे भिन्न भिन्न आत्मा मानतु सांख्यदर्शन सर्व अवस्थामा आत्माने अकर्ता अने अभोक्ता माने छे तेमज नैयायिक दर्शन पण जीवात्मा अने परमात्मा जुदा माने छे तेथी जीवात्मा परमात्मा थइ शके नहि विगेरे मान्यताने अवलबी आत्मवादने अन्यथारुपे करेलो छे. तदुपरात प्रत्यक्ष प्रमाणनेज माननाराओ आत्मारुप पदार्थ नहीं देखातो होवाथी तेना अस्तित्वनीज उपेक्षा करता होवाथी आत्मवादथी विदूर छे आ रीते आत्माने शोधवो अने ते यथार्थ रीते शोधवो ए सामान्य बुध्धिगम्य नथी, परतु तेने वास्तविक रीते शोधी मूळ स्वरूपनी ओळखाण कराववी ए सूक्ष्म बुद्धिगम्य होवाथी जैनदर्शने निवेदन करेला नित्यानित्यरुप, द्रव्यपर्यायात्मक, निश्चय व्यवहारमय—विगेरे अपेक्षाओ वडे जुदी जुदी अवस्थामा प्राप्त थता स्वरूपने शास्त्र साधनवडे नीहाळी अनुष्ठान रुप कष, छेद, अने तापरुप कसोटीए चडावी सुवर्णनी जेम आत्मशुध्धि—एकात्म भाव ओळखी काढवो ए आ दश दृष्टातथी दुर्लभ मनुष्यजन्मनु अपूर्व कर्तव्य छे, जे स्वयसिध्ध छे अने अध्यात्मज्ञानीओ तेमज सर्वोधि गया छे.

चतुर्गतिमा अग्रपद धरावती मनुज गतिने प्राप्त थयेलो मनुष्यप्राणी के जेमा अन्य गतिओ करता बुद्धिमत्ता विशाळ प्रमाणमा प्राक् पुण्य कर्मने अगे मेळवी होय छे तेओ त्रण प्रकारना जीवन वडे जीवता होय छे. (१) बहि-

रात्म जीवन (२) अंतरात्म जीवन (३) परमात्म जीवन. आत्माने नहि ओळखनार पौद्गलिक भावोमां रची पची रहेनार अने स्थूळदेहवडे अनुग्रह अने उपघात युक्त बनता दरेक पदार्थोनी क्रियाने पोतानी माननार, दरेक प्रसंगे स्वत्वनुं आरोपण करनार, सर्व मनुष्यो बहिरात्म जीवनवाळा गणायछे. आ मनुष्योना साडा त्रण हाथनी अवगाहनावाळा देहगत प्रमाण वाळो आत्मा पोतानी आसपासना तेमज बहु दूर रहेला पदार्थोनो कर्त्ता पोतानेज माने छे. आ स्वरूपमा आत्मस्वभावनुं आच्छादन थइ गयेलुं होवाथी तेओ प्रथम कोटिमां वर्ते छे. बीजी कोटिमा वर्तता मनुष्यो 'आत्माने ओळखी लेनारा' होय छे, तेमने समजाय छे के हुं कोण छुं? आ पौद्गलिक सर्व पदार्थोथी मारी स्थिति विलक्षण प्रकारनी छे. मारो अने तेनो संबंध पूर्व अने पश्चिम दिशानी जेवो छे, छतां आजसुधी दिङ्मूढ प्राणीनी जेम पूर्व ने पश्चिम दिशा गणी बने एकज छे तेवा भ्रांतिजन्य अज्ञानमा वासित हतो. चौदराजलोकना सर्व जड पदार्थोथी पोताने जुदोज समजी लेनारा पोतानी मर्यादाने वास्तविक स्थितिमा समजी लेनारा मनुष्यो अंतरात्म जीवन वडे सजीव गणाय छे, परतु परमात्मजीवनयुक्त मनुष्योए आत्माने स्वरूपवडे संपूर्ण रीते ओळखी लीधेलो छे, अने ते एवी रीते ओळखी लीधेलो छे के, जे पुनः कदापि विस्मृतिना पटमा अदृश्य न थाय! एटलुंज नहि, परंतु तेओए जगत्‌ना सर्व प्राणीओना आत्मानी परिस्थिति जाणी लीधेली छे. आ मनुष्यो कदापि आत्मा शिवाय अन्य वस्तुना संबंधनी इच्छा करता नथी. ज्यासुधी देहधारीपणे होय त्यासुधी आ संसारमा विहरेछे, पछीथी निरीहभावपणे रहेला देहसंबंधने पण तजीने पूर्णानंदमय आत्मराज मात्र लोकाग्रे विराजे छे; अने ते शाश्वतपणे आत्मानुभव करता सदा जीवन्त छे. आथी ए पण सिद्ध थाय छे के जेटले जेटले अंशे साधक थाय—आत्मज्ञान—आत्मनो प्राप्त थाय तेटले तेटले अंशे आत्माना आभ्यंतरनो आविर्भाव छे.

आत्माने उच्च कोटिमा मूकवाने माटे, रागद्वेष दूर करवाना शिक्षणने घणा दर्शनकारो सम्मत थयेला छे, परतु तेने दूर करवाना अनुष्ठानोमां अनेक गुण तफावत छे. जैनदर्शन वडे निरूपण करायलो आ क्रम सर्व दर्शनोथी अग्रपद धरावे छे, एम कहवुं अतिशयोक्ति भरेलु कदापि थशेज नहि केमके कर्मनो बंध, निधत्त, निकाचित, उदय, उदीरणा विगेरे अवस्थाओ, आत्मप्रदेशनी साथे थतो तेमनो संबंध, ते वडे आत्माने प्राप्त थतो अनुग्रह अने उपघात तेमज कर्म

प्रकृतिओनुं घातित्व, अघातित्व, संक्रमण अने निष्क्रमण विगेरे जेवुं सूक्ष्मतर स्वरूप आ दर्शनमां वर्णवेलुं छे, तेनो आंशिक भाग पण अन्यदर्शनोमां दृष्टिगोचर थइ शकतुं नथी, एज बतावी आपे छे के आ सर्वज्ञप्रणीत दर्शन होवुं जोइए, अन्यथा आवा प्रकारनी अपूर्व हकीकतनो संभव कयाथी होइ शके ? जे दर्शन जडपरमाणुओने पण कर्ता मानी अन्यनो जगत् कर्ता तरीके निरास करे छे, ते साथे आत्मा पोतेज कार्मण परमाणुओना वशवर्ती पणाथी अनेक पदार्थो, अनेक स्थितिओ अने नानी नानी अनेक सृष्टिओ सर्जेवानी शक्ति धरावे छे (पछी ते ज्ञानथी के अज्ञानथी गमे ते रीते होय) अने पछीथी विनाश करे छे. आवी परंपराओनी मान्यतावाळुं जैनदर्शन आधुनिक प्रत्यक्ष प्रमाण मात्रने माननारी विज्ञान विद्या (Science) वडे शोधखोळ करायला जड स्वरूपने मळतुं आवे छे, एटलुंज नहि परंतु अरूपी पणे प्रत्यक्ष प्रमाणथी अगोचर आत्मवादने सुंदर शैली वडे स्थापन करी, जडवादथी थयेला एकांत अज्ञानने दूर करी, सूक्ष्म दर्शिजनोने 'प्रदीप हस्तमतिनी' पेठे अच्छो प्रकाश आपे छे. वस्तुस्थिति आ प्रकारे होइ जगतना आत्माओ शिवाय एवा कोइ जगत्कर्ता महात्मानी सृष्टिना पदार्थो सर्जनरुपे जरुर पडती लागती नथी, के जे वगर विश्वव्यवस्था शून्य बनी जाय' परमाणुओ पण अनंत शक्तिवाळा निवेदन करेलाछे. आ उपरथी वास्तविक रीते ए सिध्ध थायछे के आत्मा ए अस्तित्व धरावनारी अपूर्व वस्तु छे अने ते अनंत शक्तिवाळी छे.

कर्मरुप जडपरमाणुओथी जेनो स्वभाव आच्छादित थइ गयेलो छे एवा आ आत्माने ते ते जडपरमाणुओने दूर करवानो आत्मज्ञान प्राप्त करवानो यथार्थ क्रम होय अने तेने अनादि मिथ्यात्वरुप घोर निद्रामांथी जागी आत्मा समजवा प्रयत्न करे अने समजी तदनुकूळ आचरण करे तो इष्टसिध्दि संपादन करे ए युक्तियुक्त छे. आ ग्रंथ 'आत्मप्रबोध' तदनुकूळ कार्यवाहकपणे योजायेलो छे, तेमां आत्मानी चार भूमिकाओ उच्च उच्च भावने अनुक्रमे वहन करनारी दर्शावी तेना उपर आरोहण करवानो वारवार उद्‌बोध करवामां आवेलो छे. जोके जैनदर्शनमां आत्मानी चौद भूमिकाओ—ज्ञान दर्शन चारित्रना प्रकटीकरणनी जुदी जुदी अवस्थाओ प्रतिस्थाने वर्णवेली छे, छतां ग्रंथकर्त्ताए संक्षिप्तपणे ग्रहण करी आ चार भूमिकानुं निरूपण कर्युं छे.

(१) सम्यक्त्व (२) देशविरति (३) सर्वविरति (४) परमात्मभाव.

सम्यक्त्व भूमिकाना स्वरूप दर्शनमा मिथ्यात्व गुणस्थानकथी आत्मा उच्च स्थाने आवतां—तेना मिश्र परिणाम थतां, पछीथी अनिवृत्ति करणरुप आत्मवीर्यथी चतुर्थ गुणस्थानके प्रवेशतां आत्मा सम्यक्त्व भूमिका प्राप्त करे छे. आ सम्यक्त्वने केवी रीते प्राप्त करवुं ? प्राप्त करनार आत्माना परिणाम केवा होय ? विगेरे प्रथम प्रकाशरुपे क्रमपुरःसर दर्शावेलु छे. सम्यक्त्व ए अनादि निष्पन्न भवनी आत्यंतिक निवृत्तिनुं बीज छे एम जैनदर्शन पुनः पुनः डिंडिम वगाडीने कहे छे, तेथीज कहेवामा आवेलु छे केः—

कृष्णपक्षे परिक्षीणे, शुक्ले च समुदञ्चति ।
द्योतते सकलाध्यक्षाः, पूर्णानंदविधो. कलाः ॥

'मिथ्यात्वरुप कृष्णपक्ष पूर्ण थतां अने सम्यक्त्वरुप शुकलपक्ष उदयमान थतां पूर्णानंदमय आत्मारुप चद्रनी कलाओ क्रमशः सकळभावोने प्रत्यक्ष करती प्रकाशे छे' श्रीमद् यशोविजयजी.

आम होइ सम्यक्त्वरुप बीज अवश्य मुक्ति फळ प्राप्त करावी आपे छे, *सप्त कर्म प्रकृतिओना क्षय के उपशमथी उत्पन्न थयेलु क्षायिक के औपशमिक सम्यक्त्व उत्कृष्ट स्वरूपमां सर्व घाति प्रकृतिओना क्षयरुप क्षायिक सम्यक्त्वरुपे प्रकटे छे. सप्तकर्मप्रकृतिना क्षय के उपशमरुप आत्मभावनी जागृति ते अंतरात्म अवस्था छे अने सर्व प्रकृतिओना क्षयरुप आत्मभावनी जागृति ते परमात्म अवस्था छे.

ग्रंथकर्ता पूर्वोक्त स्थितिनु भान करावतां सम्यक्त्वना बाह्य अने आभ्यंतर स्वरूपनु दर्शन करावे छे, ते साथे सम्यक्त्वना सदहणा. लिंग, विगेरे सदसत प्रकारो दर्शावे छे.

सम्यक्त्वना अनेक प्रकारो जुदीजुदी अपेक्षाए पण दर्शावे छे, परंतु व्यवहारथी शुद्ध देव—गुरु अने धर्मनी श्रद्धा अने निश्चयथी अंतरात्मपणु प्राप्त करवु ए मुख्य उद्देशोमां सम्यक्त्वना षट्स्थानको दर्शावतां आ प्रकाश समाप्त करे छे. त्यार पछी पंचम गुणस्थानक उपर देशविरतिनी भूमिकानो आत्माने अधिकारी बनावे छे. 'ज्ञानस्य फल विरति' ए सूत्रनु सत्य आत्माने देशविरतिनी भूमिका यथार्थ करावे छे. केमके आत्माए संसारना क्षणिक पदार्थोने भ्रममूलक जाणया

* अनंतानुबंधी क्रोध—मान—माया—लोभ, मिथ्यात्वमोहनीय, मिश्रमोहनीय, अने सम्यक्त्व मोहनीय.

शी रीते ? शुं कहेवा मात्रथी ? शु अन्यने उपदेश आपवा पुरता ? शु पोतानु स्वार्थी जीवन तृप्त करवा खातर ? शु दम्भवडे जगतनी वंचना खातर ? नहिज. वास्तविक स्थिति जाणनार मनुष्य तेज होइ शके के जे जाणवा पछी हेय पदार्थोने तजवानी अभिलाषा रागतो जाय–क्रमे क्रमे तजतो जाय अने परिणामे स र्वेने तजी दे देशविरतिपणु ए गृहस्थने योग्य बारव्रतनी परिपालना रुप कर्तव्य विशेष छे, के जे कर्तव्यवडे आत्मा असत्य मार्गथी दूर रहेवा यथाशक्ति प्रयत्नपरायण थाय छे, अने सर्व रीते दूर रहेवानी निरतर अभिलाषानु सेवन करे छे. षष्ठ तथा सप्तम गुणस्थानके वर्तता आत्मानी त्रीजी भूमिका सर्वविरति छे अत्र जगतना सर्व पदार्थोमाथी ' अहममता ' दूर थाय छे. आरम्भ समारम्भजन्य सर्व पापोनो परिहार थाय छे. सर्व विरति भूमिकाने प्राप्त थयेला मनुष्य प्राणीओ कोइ प्रकारनु पाप सेवता नथी, अन्यने तेवु करवानो उपदेश करता नथी, तेमज तेवु करनारनी अनुमोदना करता नथी सासारिक इच्छा मात्रनो ज्या त्याग अने एक मात्र आत्मानुभवनीज अपेक्षा अस्खलितपणे वहेती होय त्या स्वार्थमय दुनियामां निर्भयपणे वास करी रहेला क्रोध, कीर्ति, यश, मान, दम्भ अने प्रपचोमा अमूल्य समयने गुमाववानो वखत क्याथी होय ? वस्तुत' सर्व विरतिनो आ अप्रतिहत मार्ग निर्दिष्ट थयेलो छे आ भूमिकामां बाह्य मर्यादाओमा टकी रहेवाने सस्कार पाडवा माटे द्रव्यथी मुनिवेष अगीकार करवो पडे छे अने भावथी कषायादिने निर्मूल करवा हिंसा, असत्य विगेरे अव्रतोथी सर्व प्रकारे विरमण करवु पडे छे चतुर्थ परमात्म भूमिका अष्टम गुणस्थान वर्ती आत्माथी मांडीने सिद्धपणानी अवस्था पर्यंत छे आमां क्षपकश्रेणि के उपशम श्रेणिगत आत्मा अगीयारमु गुणस्थानक के ज्या मोहनो सर्वथा उपशम होय छे, अथवा बारमु गुणस्थानक के ज्या मोहनो सर्वथा क्षय होय छे तेथी, आ बने गुणस्थानके ' वीतराग ' पणे सभवाय छे, त्यारथी ते परमात्मानी कोटिमा आवी शके छे चतुर्दश गुणस्थानक सुधी ते भवस्थ परमात्मतामा छे अने पछीथी शाश्वतपणे सिद्धिस्थ परमात्मतामा वर्ते छे आ प्रकाशमा भवस्थ केवलीनु स्वरूप तथा सिद्धना जीवोनी अवगाहना तथा सिद्ध सुखनी अनिर्वचनीयतानु स्फोटन करे छे आ रीते विस्तारथी चारे भूमिकानु स्वरूप ग्रथकार प्रतिपादन करे छे.

जैनदर्शनरूप प्रासादना चार द्वार द्रव्यानुयोग, गणितानुयोग, चरणकर-

णानुयोग अने कथानुयोग रुप छे. आ चारेनुं स्वरूप अखिल ग्रंथना सर्वांगमा व्यापेलु छे. दरेक द्रव्यानुयोगनी हकीकत प्रसगे कथाओ, दृष्टांतो अने उपनयो आपी द्रव्यानुयोगना उत्तम पण कठिन विषयने सामान्य बुध्धिजनोने तृप्ति थाय तेवु बनाववामा ग्रथकर्त्ताए अधिक पण उपयोगी श्रम लीधेलो छे, प्रसगे चैत्यविनय विगेरे प्रकरणोमा गणितानुयोगरुपे चैत्य संख्या विगेरे प्रतिपादन करेली छे, अने देशविरति तथा सर्वविरति अधिकारमा तो खास करीने चरणकरणानुयोग अग्रपद धरावतो होवाथी चतुर्गतिना अतरुप चारे अनुयोगोनो प्रकाश पामेलो छे. प्रसगोपात्त नगवती तथा राजप्रश्नीय विगेरे सूत्रना आलावाओ साक्षीरुपे दर्शावेला छे, नीतिशास्त्रना श्लोको उपनय तरीके दाखल करेला छे, अने अशुचिन्नावनामा गर्भनु व्यावहारिक स्वरूप पण उतारी आप्यु छे, आ सर्व अगो एकदरे तपासता आ ग्रथना अधिकारी मनुष्यो प्रति ग्रथकारनी उपकार्य बुध्धि सादर थयेली छे एम स्पष्ट थाय छे.

ग्रथना अतरग शरीर परत्वे आटली हकीकतना निवेदन पछी कहेवानी आवश्यकता छे के, अमारा मर्हूम पिताश्री के जेओ आ ग्रथना भाषातर कर्त्ता छे ' मर्हूम पूज्यपाद श्रीमद् रध्धिचदजी महाराज पासे तेओए व्याख्यानमा आ सुदर ग्रथनो अमुक भाग श्रवण करता तेनुं भाषातर करवानी इच्छा तेमना हृदयमा प्रकटी. आथी पोताना अनेक व्यवसायोमाथी पण अवकाश मेळवी, मर्हूम पूज्यपाद पासे आ ग्रथ साद्यत वाची लीधो अने पछीथी अनुकूळताए जाषातरनी शरुआत करी थोमा वखतमा ते पूर्ण कर्यो. त्यारपछी अनेक प्रकारनी व्यवसायमय प्रवृत्तिओना उद्भवने अगे तैयार करेलो ग्रथ एक बाजुएज रह्यो. आ ग्रथ उपरात बीजी अनेक परचुरण सक्षिप्त हकीकतोनो सग्रह करेलो, परतु ते अग्निनो भोग थइ पमता फक्त आ ग्रथ अन्यस्थाने होवाथी अवशेष रह्यो, केटलोक वखत वीतवा पछी अमारा स्वर्गवासी पिताना निकट सबधमा श्री जैन आत्मानद सन्नाना सेक्रेटरी मा. वल्लभदास त्रिभुवनदास गांधी आवता प्रसगोपात्त एक वखत तेमनी साथे 'धर्मसबधी वातचीत थता–' उक्त ग्रंथ घणोज उपयोगी छे अने जेनुं भाषातर अमोए कर्यु छे ' एम अमारा मर्हूम पिताश्रीए उक्त सेक्रेटरीने जणाव्यु, जेथी आवो उपयोगी ग्रथ श्री जैनआत्मानंद सभा तरफथी बहार पमे तो सभाने मोटु मान प्राप्त थवा साथे जैनप्रजा तेनो लाभ सारी रीते सपादन करी शके एम उक्त सेक्रेटरीने हकीकत जणाववाथी तेमणे अमारा पिताश्रीने उक्त ग्रथनु भाषातर सन्ना

तरफथी प्रसिध्ध करवानी मागणी करी, अमारा पिताश्रीए ते योग्य जाणी आ ग्रंथ उक्त सेक्रेटरीने सुपरत कर्यो, त्यारबाद शुद्धिने माटे अमारा पिता तरफथी पुनरवलोकन करी ताकीदे उपाय तेम गोठवण करवा सूचववामा आव्यु. तदनुसार आ ग्रथ छपाववानी शरुआत करवामा आवी. परतु प्रथम एकज प्रकाश तेमना विद्यमानपणामां मुद्रित थया पछी तेओ काळनी गतिने आधीन थया, जेथी त्यारपछी आ ग्रथ तेमना अवसान पछी लगभग एक वर्ष उपरात आश्विन शुक्ल दशमीए पूर्ण थवा पाम्यो छे, अने त्यारपछी जनसमूह समक्ष सादर करवामां आव्यो छे.

ग्रथना सप्रथमा प्रस्तावना के उपोद्घातरूपे ग्रथकार अथवा तेना अनुवादक जे दृष्टिबिंदु वडे लखी शके छे तेवु अन्य लखी शकता नथी ए निःसदेह वात छे. अमारा मर्हुम पिताश्रीना हाथथी आ ग्रथमाटे तेवु लखायु होत तो तेओ धार्मिकज्ञानना एक सारा अभ्यासी होवाथी खरेखर तेने माटे योग्य न्याय आपी शकत, परतु ग्रथ प्रसिध्ध थया पहेलां तेओनो देहोत्सर्ग थवाथी तेम बनवु अशक्य थइ पड्यु छे जेथी उक्त भाषांतरकार जेवु नहि परतु तेमना ऋणी पुत्र तरीके तेमनी सेवारूपे आ ग्रथपरत्वे तेमनावतीनी यत्किंचित् फरज बजाववा तरीके आ उपोद्घात लखी जनसमाजनी सेवामां मूकवामां आवे छे.

आ ग्रथना कर्ता श्रीयुत जिनलाभसूरि खरतरगच्छीय छे अने व्याख्याकार श्रीयुत क्षमाकल्याणकजी छे. खरतरगच्छमा पण अनेक धुरधर पडितो नयचक्रसारादिना कर्ता श्रीमद् देवचद्रजी विगेरे थइ गयेला छे. तपगच्छ अने खरतरगच्छनी मान्यतामा अमुक फेरफार पोषधादि क्रियाकांडमां क्वचित् क्वचित् छे, जेथी आ ग्रथने अगे थयेला पोषधव्रतना विवेचनमा जेटला पुरतो तफावत छे ते बने गच्छोने माटे आ ग्रथना पा ७४४A मे दर्शाववामां आवेलो जनमगळ सन्मुख पुरोहित थयेलो छे. श्रीयुत जिनलाभसूरिनी विद्वत्तानी तुलना तेमना ग्रथना अवलोकन पछी जाणी शकाय तेम छे. तेओश्रीए अन्यग्रथोनी रचना करी छे के नहि ते जाणवामां आवी शक्यु नथी, छता एटलु तो कहेवु अस्थाने नथीज के 'सामान्य अने विशिष्ट सर्व जनोने एकांत हितकारी आ अमूल्य ग्रथ छे' ते साथे आ ग्रथबोलना भांते ' आ उत्तम ग्रथ यावचद्र दिवाकर यशस्वी अने अविचल रहो' एवा मागलिक आशीर्वचन पुरःसर विरमवामा आवे छे तथाऽस्तु

आश्विन शुक्ल दशमी } शा फतेचंद झवेरभाइ

भावनगर

विषयानुक्रमणिका.



प्रथम प्रकाश (सम्यक्त्व निर्णय.)

द्वितीय

अंक	विषय	पृष्ठ.

तृतीय प्रकाश (सर्व विरति.)

चतुर्थ प्रकाश परमात्म स्वरुप

शुद्धिपत्रक.

पत्र.	पंक्ति.	अशुध्द	शुध्द.
८	१२	पल्पोपमना	पल्योपमना
,,	१३	कोटीनी	कोटाकोटीनी
,,	१५	दुर्जेयअने	दुर्जेयएटले
१०	२४	काइ न	काइसास्वादनगुणस्थान-वर्ती न
१६	१६	अविरुध्द	विरुद्ध
१८	२०	निंमळ	निर्मळ
२०	९	पुरुषअविरति	पुरुष सम्यग्दृष्टिअविरति
२५	१	करवाने के उचार करवाने शक्तिमान्	करवाने शक्तिमान्
२५	८	जावनाओ	जावनाए
३५	१७	तीजा	तीर्जा
४३	८	कुरुदहनइ	कुडकुडदहनइ
,,	,,	वियंढसु	वियड्ढसु
४५	१९	पूइजाइ	पूइज्जइ
,,	,,	निक्लन	निष्फलन
४८	४	स्पष्ट	स्पृष्ट
५०	२९	गयो	गया
५३	२	प्रेमरागा	प्पेमरागा
५४	६	प्रसादनी	प्रासादनी
५५	१२	अग्गपूआ	अग्गपूआए

पत्र.	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
५५	७	यदाणा	य दाणं
५९	१७	२	३
६४	१	पुणाफळ	पुणांफल
,,	,,	पूयाएह	पूयाण्ह
६८	१६	सध	संघ
६७	?	उच्छव	उच्छेय
७०	३	अक्तअओ	अक्कओ
७२	३१	स्थिरता	स्थित.
७३	२-४	,,	,,
,,	१०	वय	वाया
७८	२	घर्मो	धर्मो
८०	५	भवचननी	भवचनी
,,	२०	यता	तथा
८१	१८	चेतननो अने	ज्ञानरुप
८३	७	देवार्द्धि	देवार्द्धि
८६	२	घर्मकथी	धर्मकथी
७४	१८	सूरि	सुरिए
१००	१५	कोलाहाल	कोलाहल
१००	१७	भसाद	प्रासाद
१०८	१८	मत्याख्यानतु फल विशेषज्ञान	विशेषज्ञानतुफलमत्याख्यान
१२०	१६	उदयना	हृदयना
१२८	२	सुघर्मा	सुधर्मा
१२५	१८	अभिलाप राखवो	अभिलाप न राखवो
१२७	१५	शोत्रतेनापि	शोत्रनेनापि
१३४	६	हृदममां	हृदयमां
१४१	२२	पत्री	पत्री
१४७	फुटनोट	ग्रकारतु	मकारतु
१६१	१२	युक्त शरीरवडे	युक्त थइ
१६३	१	वुड्ढाणगो	वुड्ढाणुगो
१६७	२	मज्जा	मज्ज
,,	४	घारसच्चओ	बारसव्वओ
१६८	२३	तेमनो	सूक्ष्मएकेंद्रियनो

पत्र.	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१७७	२	दयालुपणाथी	दयालुपणानी कसोटीथी
१७३	८	म्यूल	थूल
१७५	७	परचूइ	पराजूइ
१७०	५	दुरहिंणिंवेसाढ	दुरहिणिवेसाढ
१७५	६	पव्नर्फ	पप्भट
,,	७	पंकुत्तं	पाकुत्त
१७८	२३	दीपर्थी	दीपथी
२०१	८	तेनार्थी	वाकीनाथी
,,	१७	वस्तु	वास्तु
२०४	२	विविंर	वित्रर
,,	१३	एटलें	एटले तेना
,,	१४	प्रमाणनुं स्वरूप अने	प्रमाणमा
२०८	२५	अमे	अने
२१०	१२	जेवा आ	जेवा गृहस्थे आ
२१३	५	अनेएपणीय	अनेपणीय
२२१	२१	नङ्क	मांस
२२६	१०	दल	दाल,
२२८	१६	दुध्यान	दुर्ध्यान
२३१	७	अनर्थदंम वर्जेलो छे अने	अर्थदंड वर्जेलो छे तेथी
२३६	१०	अगकारी	अगीकारी
,,	२३	तेणे	तेने
२३७	२	राजादिकश्रावकनीपाछळचालतातेने	राजादिकने
,,	?	एवो श्रावक	एवा
२३८	२०	सज्जन अने परिजन	स्वजन अने परजन
२४१	५	दिग्व्रतने	दिग्व्रतनो
२४४	३	देह अने सत्कार	देहसत्कार
,,	११	चतुर्विध	चतुर्विध
२४५	९	पुच्छं	पुछगं
२४७	७	पोपध अतिथि	पोपध अने अतिथि
२५४	११	करावाने	करवाने
२५७	१०	पड्जगीनो	पड्जगी छे,
,,	११	अनुमति अने	अनुमतिनो
२६७	२०	तेनानामतु	तेनु

पत्र	पंक्ति	अशुद्ध.	शुद्ध.
,,	,,	वन्या	धन्या
३६८	१७	पाळवापणु	पामवापणु
,,	१९	करीतेमांसर्वे	करीसर्वे
३९१	१८	जणस्स	जणय
३९५	१६	न्दजद्	नजेद्.
३१०	३४	धर्मवाळुं अने	धर्मवाळु छे ते
३११	७	पत्र	पात्र
३१६	३३	करवा	करावर्वा
३३६	३०	करतो	करवो
३३७	१८	मवृत्तिवाळाने	मवृत्तिवाळा
३३९	९	पर्यापवाळाने	पर्यायवाळाने
३३६	७	घणी	धणी
३४३	१३	करे नहीं,	करे
३४४	७	एवमए	एवमेय
३५३	९	नावेयवा	नावेयव्वा
,,	१५	पदार्थोने-पेठे	पदार्थो श्पेठे,
३६३	५	अस्थिनज्जा	अस्थिमज्जा
३६५	३	अवाङ्गुख	अवाङ्मुख
३७६	३३	अव्यवछन्न	अव्यवछिन्न
३७८	१५	छद्दम	छद्दम
३७८	१४	तेने विषे	करता छतां
३७९	८	सुरासुरादि	सुरसुरादि
,,	११	कायगुत्तो	कायगुत्तो
,,	३५	परिद्ध	पसिध्ध
३८१	फुटनोट	देवताष्ठित	देवताधिष्ठित
३९६	२१	जैनाजासोए	जैनाभासो
३९८	१७	उव्वाइ	उववाइ
,,	३१	चेहयाणि	चेइयाणि
४००	३	ममाणे	ज्ञाने
४०४	१३	ज्ञानेनना	ज्ञानेना
४१०	१६	सामान्य सिध्धोतु	सिध्धोतु सामान्य
४१४	१९	ब्राह्म	बाह्य

શ્રી આત્મ પ્રબોધ.

(ભાષાંતર.)



। नमः श्री पार्श्वनाथाय ।

श्री आत्मप्रबोध.

प्रथम प्रकाश.



(सम्यक्त्व निर्णय.)

अनंतविज्ञानविशुद्धरूप निरस्तमोहादिपरस्वरूपम् ।
नरामरेन्द्रैः कृतचारुभक्ति नमामि तीर्थेशमनंतशक्तिम् ॥ १ ॥



जेनु विज्ञान अनंत छे, जेनु स्वरूप निर्मळ छे, जेणे मोह अज्ञान–आदि पर स्वरूपने टाळेलु छे अने मनुष्योना इन्द्र—चक्रवर्त्तीओए तथा देवताओना इन्द्रोए जेनी मनोहर भक्ति करेली छे, एवा अनंतशक्तिवाळा श्री तीर्थंकर प्रभुने हु नमस्कार करु छु.'

अनादिसंबद्धसमस्तकर्म——मलीमसत्वं निजकं निरस्य ।
उपात्तशुद्धात्मगुणाय सद्यो नमोऽस्तु देवार्यमहेश्वराय ॥ २॥

पोताना अनादिकाळथी बंधाएला समस्तकर्मनी मलिनताने दूर करी जेमणे शुद्ध आत्मगुण ग्रहण करेलो छे, एवा देवताओने पूजवा योग्य महेश्वर श्री वीर भगवानने नमस्कार हो २

जगत्त्रयाधीशमुखोद्भवाया वाग्देवतायाः स्मरणं विधाय ।
विज्ञाव्यतेऽसौ स्वपरोपकृत्यै विशुद्धिहेतु शुचिरात्मबोध ॥३॥

त्रण जगत्ना स्वामीना मुखथी उत्पन्न थयेल वाग्देवता—सरस्वतीनु स्मरण करी पोताना अने परना उपकारने माटे विशुद्धिनो हेतुरुप एवो आ पवित्र—शुध्ध आत्मबोध ग्रथ रचवामा आवे छे ३

ग्रथना आरंभमा संक्षेप करवानी इच्छावाळा पुरुषे शिष्टपुरुषोना आचारने आचरवाने अने ग्रथनी समाप्ति थवामा अतराय करनारा घणा विघ्नोना समूहने दूर करवाने अत्यत अव्यभिचारी अने योग्य इष्टदेवताना स्तवन वगेरे करवा रुप जेनु स्वरुप छे एवु भाव मगळ माथे करीने करवु जोइए, एवु विचारी अहिं पण ग्रथनो आदिमा सर्व तीर्थंकरोने प्रणाम करवा पूर्वक नजीकना उपकारी श्रीवीर परमेश्वरने नमस्कार करवा रुप अने वाग्देवताना स्मरण करवा रुप भावमगळनो आश्रय करवामा आव्यो छे तेमज वळी श्रोताओनी प्रवृत्ति माटे आ ग्रथनु प्रयोजन, अभिधेय अने सबध ए त्रण पण नियमथी कहेवा जोइए आत्मज्ञान मोक्षने प्राप्त करावनार होवाथी सर्वनु उपकारक छे, तेथी अहिं पोताना अने परना उपकारने अर्थ ए पद कही स्वोपकार अने परोपकार रुप प्रयोजन दर्शाववामा आव्यु छे, अने 'आत्मबोध' ए नाम आपी अतिशुध्ध आत्मज्ञाननो मार्ग अभिधेय रुपे निरुपण करवामा आवेल छे अने 'ते आत्मबोध' कहेवामा आवे छे' एम कही वाच्य वाचक भाव वगेरे सबध सूचव्यो छे तेमा आत्मबोधनु स्वरूप ते वाच्य छे अने 'आ ग्रथ' वाचक छे. इत्यादि अहीं घणु कहेवानु छे, पण ते सद्बुध्धिवाळा पुरुषोए पोतानी मेळे बीजा ग्रथोथी जाणी लेवु ग्रथनो विस्तार थवाना भयथी अहीं कहेवामा आव्यु नथी

हवे प्रथम जे सामान्यथी अभिप्राय दर्शावेल छे, तेने विवेचन करी बतावे छे

प्रकाश माद्यं वर दर्शनस्य ततश्च देशाद्विरतेर्द्वितीयं ।
तृतीय मस्मिन् सुमुनि व्रताना वक्ष्ये चतुर्थं परमात्मतायाः॥४॥

आ प्रथमा प्रथम प्रकाशमा सम्यग् दर्शननु स्वरुप बतावेल छे, बीजा प्रकाशमा देश विरतिनुं स्वरुप, त्रीजा प्रकाशमा उत्तम मुनिव्रतनु स्वरुप अने चोथा प्रकाशमा परमात्म भावनुं स्वरुप दर्शावेल छे. आ उपरथी परस्पर सबंधवाळा सम्यक्त्वादि स्वरूपने प्रतिपादन करनारा एवा चार प्रकाशथी प्रतिबद्ध एवो आ आत्मप्रबोध ग्रंथ छे, एम सूचवेलु छे.

आ ग्रंथना अधिकारीओ, कोण छे ?

न संत्यभव्या नहि जातिभव्या न दूरभव्या बहु संसृतित्वात्।
मुमुक्षवोऽभूरिभवभ्रमा हि आसन्नभव्यास्त्वधिकारिणोऽत्र ॥५॥

अभव्य, जातिभव्य अने दूरभव्य ए बहु ससारी होवाथी आ ग्रथना अधिकारी नथी. जेमने बहु भवमा भ्रमण करवानुं नथी एवा मुमुक्षु पुरुषो अने आसन्न भव्य ए आ ग्रथना अधिकारीछे. २

आ कहेवानु तात्पर्य ए छे के, दुष्ट अतवाळा अने अनत चार प्रकारनी गतिना स्वरुपने प्रसार करनारा आ ससारने विषे आ जगतना सर्व जतुओना चित्तने चमत्कार करनारा एवा इन्द्रादिक सुर असुरोए रचेला उत्कृष्ट आठ महा प्रातिहार्य वगेरे सर्व अतिशयोथी युक्त एवा जगद्गुरु श्री वीरप्रभुए सर्व घनघाति कर्मना दलीयाना समूहना नाशथी उत्पन्न थयेल सर्व लोकालोक लक्षणवाळा लक्ष्यने अवलोकन करवामा कुशळ एवा निर्मळ केवलज्ञानना बलथी त्रण प्रकारना जीवो कहेला छे १ भव्य, २ अभव्य, अने ३ जातिभव्य. जे जीवो काळादिकना योगनी सामग्री प्राप्त करी पोतानी शक्तिथी सर्व कर्मोने खपावी मुक्तिए गया छे, जाय छे अने जवाना छे, ते सर्व जीवो त्रिकाळनी अपेक्षाए भव्य कहेवाय छे.

जे जीवो आर्य क्षेत्र विगेरेनी सामग्री छता पण तेवी जातना कोइ जाति स्वभावने लइने सर्वदा तत्त्वश्रद्धाना अभावथी क्यारे पण मुक्तिने पाम्या नथी, पामता नथी अने पामवाना नथी, ते अभव्य कहेवाय छे.

मुक्तिनी प्राप्तिनु मूळ कारण सम्यक्त्वज छे, तेने माटे शास्त्रमा कह्यु छे—

दसणभट्ठो भट्ठो दसण भट्ठस्स नत्थि निव्वाण।
सिज्झति चरणरहिया दसणरहिया न सिज्झति॥ १ ॥

जे सम्यक्त्वथी भ्रष्ट थयेलो छे, ते सर्वथी भ्रष्ट समजवो. सम्यक्त्वथी भ्रष्ट थयेला प्राणीने मोक्ष प्राप्त थतो नथी, प्राणीओ चारित्ररहित मुक्ति पामे छे परतु सम्यक्त्वरहित कदापि मुक्तिमार्ग प्रति प्रयाण करी शकता नथी

अहिं जे ' चारित्र रहित ' एम कह्यु, ते द्रव्य चारित्रथी रहित एम समजवु

वळी जे जीव अनादिकाळथी आश्रित एवा सूक्ष्म भावनो त्याग करी जो बादर भावने पामे तो ते अवश्य सिद्ध थाय छे, परतु सर्व सस्कारने करनारा विषयमा नहीं आवेली खाणनी अदर रहेल सस्कारने योग्य एवा पाषाणनी जेम सूक्ष्म भावनो त्याग करी कदि पण अव्यवहार राशिरुप खाणथी बाहेर आवेला नथी, आवता नथी अने आववाना नथी, ते जातिभव्य कहेवाय छे आ जीवो मात्र कहेवानाज भव्य छे, पण सिद्धि साधकपणे भव्य नथी, तेने माटे आगममा कह्यु छे के—

" सामग्गिअभावाओ, ववहाररासिअप्पवेसाओ ।
भव्वावि ते अनता, जे सिद्धिसुह न पावतित्ति ॥१॥

सामग्रीनो अभाव होवाथी जेमनो व्यवहार राशिमा प्रवेश नथी एवा भव्य जीवो पण अनता छे के, जेओ मोक्ष सुखने पामता नथी अने पामवाना नथी १

उपर कहेला त्रिविध जीवोमाथी जे अभव्य अने जातिभव्य—ए बे

राशिना जीवो निर्मल श्रद्धाथी रहित होवाथी आ आत्म प्रबोध ग्रंथने विषे अधिकारी नथी, माटे बाकीना भव्य राशिना जीवो रह्या, तेज आ ग्रंथना अधिकारी छे.

ते भव्य जीवो बे प्रकारना छे. एक आसन्नभव्य अने २ दूरभव्य, तेमा दूरभव्य कोने कहेवाय ? ते कहे छे. जेने अर्ध पुद्गल परावर्तनथी अधिक ससार हजी वर्त्ते छे, ते दूरभव्य कहेवाय छे अने जेने अर्ध पुद्गल परावर्त्तनथी न्यून ससार वर्त्ते छे, ते आसन्नभव्य कहेवाय छे, तेओमा जे दूरभव्य छे, तेमने मिथ्यात्वनो उदय प्रबल होवाथी केटलाक काळ पर्यंत सम्यक्दर्शननी प्राप्तिनो अभाव होय छे, तेथी तेमनु पर्यटन आ ससार अटवीमां घणो काल रहे छे, एटले तेमने आत्मबोधनो सूक्ष्म मार्ग दुर्लभ थाय छे, अने जेओ आसन्नभव्य छे, तेमने काइक न्यून अर्ध पुद्गल परावर्त्तन काल होवाथी आत्मबोधनो सूक्ष्म मार्ग सुलभ थाय छे. वली तेमने हलका कर्मने लइने तत्त्व श्रद्धा सुलभ छे, माटे आसन्नभव्य जीवो आ ग्रंथना अधिकारी छे, ते आसन्नभव्य जीवोना उपकारने अर्थे आत्मबोधनु काइक स्वरुप निरुपण करवामा आवे छे.

आत्मा शब्दनो अर्थ

ते ते भावने सततपणे प्राप्त थाय ते आत्मा कहेवाय छे. (अततीति आत्मा पोताना गुणपर्यायोने ग्रहण करवानी जेनामां शक्ति छे, ते आत्मा कहेवाय छे.

आत्माना त्रण प्रकार.

ते आत्मा त्रण प्रकारना छे. १ बहिरात्मा, २ अतरात्मा अने ३ परमात्मा.

बहिरात्मानु स्वरूप

मिथ्यात्वना उदयने वश थइ शरीर, धन, परिवार, मदिर, नगर, देश, मित्र अने शत्रु वगेरे इष्ट—अनिष्ट वस्तुओमा राग द्वेषनी बुद्धिने

धारण करे छे अने सर्व असार वस्तुने सार रुपे जाणे छे. ते पेहेला गुण ठाणामा वर्त्तनारो जीव बाह्य दृष्टिपणाने लइने बहिरात्मा कहेवाय छे.

अंतरआत्मानु स्वरूप

जे तत्त्व श्रद्धासहित थइ कर्मना बंध वगेरेनु स्वरूप सारीरीते जाणे छे. जेमके "आ जीव आ ससारने विषे कर्म बंधना हेतुरूप एवा मिथ्यात्व, अविरति, कषाय अने योगवडे समय समय प्रत्ये कर्मने बांधे छे, ते कर्म ज्यारे उदय आवे छे, त्यारे ए जीव पोतेज तेने भोगवे छे. तेने कोइ बीजो जीव सहाय पण करतो नथी." आ प्रमाणे चिंतवे छे. अने ज्यारे द्रव्य वगेरे काइक वस्तु जाय छे, त्यारे ते आ प्रमाणे चिंतवे छे मारो आ वस्तुनी साथेनो संबंध नष्ट थयो. मारु खरु द्रव्यतो ज्ञानादि छे, जे आत्म प्रदेशनी साथे संबंध धरावे छे, ते द्रव्य कदाइ पण जवानु नथी." ज्यारे काइ द्रव्य वगेरेनो लाभ थाय छे, त्यारे ते आ प्रमाणे जाणे छे—"आ पौद्गलिक वस्तुनो संबंध मारे थयो छे, तेमा हर्ष शो धारण करवो?" ज्यारे वेदनीय कर्मना उदयथी कष्ट वगेरेनी प्राप्ति थाय त्यारे ते समभावने धारण करे छे अने आत्माने परभावथी भिन्न मानी तेने त्याग करवानो उपाय करे छे अने चित्तमा परमात्मानु ध्यान करे छे, तेमज आवश्यकादि धर्म कृत्यमा विशेष उद्यमवंत थाय छे, ते चोथा गुणठाणाथी बारमा गुण ठाणा सुधी वर्त्तनारो जीव अंतर्दृष्टिथी अंतरात्मा कहेवाय छे

परमात्मानु स्वरूप

जे जीव शुद्ध आत्मस्वभावने प्रतिबंध करनारा कर्म शत्रुओने हणी अने निरुपम केवलज्ञानादिकनी उत्तम संपत्तिने प्राप्त करी सर्व पदार्थोना समूहने हथेलीमा रहेल आमळानी जेम अथवा हथेळीमा रहेल निर्मळ जलनी जेम जाणे अने जुवे, तेमज परम आनंदना संदोहथी संपन्न थाय ते तेरमा अने चौदमा गुणठाणामा रहेल आत्मा तथा सिद्धात्मा (शुद्ध स्वरूपपणे) परमात्मा कहेवाय छे

आत्मबोध शब्दनो अर्थ.

बोधन एटले वस्तुना यथार्थ स्वरूपनु ज्ञान ते बोध. आत्मा के जेनु लक्षण आगळ कहेवामा आवशे, एवो चेतन अने तेनाथी अभिन्न सम्यक्त्वादि धर्म तेनो बोध, ते आत्मबोध तेने प्रतिपादन करनारो ग्रंथ ते उपचारथी आत्मबोध कहेवाय छे. एवी रीते आत्मबोध शब्दनो अर्थ कह्यो.

आत्मबोधनुं माहात्म्य वर्णवे छे.

जे प्राणीने आत्मबोध थयेलो होय छे, ते, प्राणी परमानंदमा मग्न होवाथी कदि पण ससार सुखनो अभिलाषी थतो नथी. कारण के, ते ससार सुख अल्प अने अस्थिर होय छे. जेम कोइ माणस विशिष्ट इच्छित वस्तुने आपनारा कल्पवृक्षने प्राप्त करी तेनी पासे लुखा भोजननी प्रार्थना करतो नथी, तेम प्राणी परमानंदमा मग्न थइ ससार सुखनो अभिलाषी थतो नथी. जेम सारा मार्गे चालनारो देखातो पुरुष कुवामा पडतो नथी, तेम जे प्राणीओ आत्मज्ञानमा तत्पर छे, तेओ कदि पण नरकादि दुःखने पामता नथी. जेणे अमृतनो स्वाद लीधो होय तेवा पुरुषने जेम खारा पाणीने पीवानी रुचि थती नथी, तेम जेणे आत्मबोधने प्राप्त कर्यो छे, तेने बाहेरनी वस्तुना ससर्गनी इच्छा थती नथी

आत्मबोध वगरनो प्राणी केवो होय छे ?

जेने आत्मबोध थयो नथी ते प्राणीने मनुष्य देह होवाथी शींगडा पुछडा प्रमुख काइ होतु नथी, तोपण तेने पशुज जाणवो. कारण के, आहार, निद्रा, भय अने मैथुनवडे युक्त होवाथी तेना ते धर्म पशुना जेवा छे, तेम वळी जे प्राणीए वस्तुताए आत्माने जाण्यो नथी, तेने सिद्धिनी प्राप्ति दूर छे, अने परमात्मसपत्तिनो उपलक्षक ते थतो नथी, अने ससारनी धन धान्य विगेरेनी समृद्धि तेना उत्साहनु कारण रहे छे तेमज तेनी आशा रूपी नदी सदा पूर्ण रहे छे. तेथी ज्यासुधी प्राणीने आत्मबोध थयो नथी, त्यासुधी तेने आ संसार समुद्र दुस्तर छे, त्यासुधी मोह रूपी महा सुभट तेने दुर्जय छे अने त्यासुधी अति विषम एवा कषायो टके छे, तेथी आत्मबोध सर्वोत्तम छे.

आत्मबोध थवानु कारण सम्यक्त्व छे

कारण विना कार्यनी उत्पत्ति थती नथी एवो न्याय छे, तो आत्मबोध प्रगट थवामा कांइ सत् रूप कारण होवु जोइए ते कारण वस्तुताए सम्यक्त्व ज छे बीजु कांइ नथी. आगममा पण सम्यक्त्व शिवाय आत्मबोधनी उत्पत्ति साभळवामा नथी, ते उपरथी आत्मबोध सम्यक्त्व मूल छे एम सिद्ध थयु.

सम्यक्त्वना स्वरूपने प्रतिपादन करवाने तेनी उत्पत्तिनी रीति कहे छे

कोइ अनादि काळनो मिथ्यादृष्टि जीव मिथ्यात्वने लइने अनंत पुद्गल परावर्त्तन सुधी आ अपार ससार रूपी गहनमा भमी भमी भव्यपणाना परिपाकने पामी तेने लइ पर्वतनी नदीना जळना वेगमा घसडाता पाषाणना घसारानी जेम मात्र मात्र अनाभोगथी निष्पन्न एवा यथा प्रवृत्ति करणरूप परिणाम विशेषथी घणा कर्मनी निर्जरा करतो अने थोडा कर्मने बाधतो सञ्ज्ञी जीवपणु प्राप्त करे छे पछी पल्योपमना असख्येय भागथी न्यून एवा एक सागरोपम कोटीनी स्थितिवाळा आयुष्य शिवायना सात कर्मोने करे छे जीवने पोताना दुष्कर्मथी उत्पन्न थयेल घाटा राग द्वेषना परिणाम रूप, कठोर अने घाटा लावा काळनी लागेल गोपाएल वक्रग्रथि (गाठ) ना जेवो दुर्भेद्य अने पूर्वे कदि नही भेदाएल ग्रथि छे, ए ग्रथि सुधी अभव्य जीवो पण यथाप्रवृत्तिकरणवडे कर्मने खपावी अनतवार आवे छे. अने ते ग्रथिदेशमा रहेल अभव्य जीव अथवा भव्य जीव सख्येय अथवा असख्येय काळ सुधी रहे छे. तेमा कोइ अभव्य जीव चक्रवर्त्ती वगेरे अनेक राजाओए जेमने श्रेष्ठ पूजा, सत्कार, अने सन्मान आपेल छे, एवा उत्तम साधुओने जोवाथी, अथवा जिन समृद्धिना दर्शनथी अथवा स्वर्गना सुख वगेरेना प्रयोजनथी दीक्षा ग्रहण करी द्रव्य साधुपणाने प्राप्त करी पोतानी महत्ता वगेरेनी अभिलाषाथी भावसाधुनी जेम प्रतिलेखनादि क्रियाओना कलापने आचरे छे अने ते क्रियाना बळथी उत्कृष्ट नवमा ग्रैवेयक सुधी पण जाय छे

अने कोइ नवमा पूर्व सुधी मात्र सूत्रपाठ जाणे अर्थ जाणतो नथी,

कारण के, अभव्य जीवोने पूर्वधर लब्धिनो अभाव छे, तेथी ते मात्र द्रव्यश्रुत मेळवे छे. कोइ मिथ्यात्वी भव्य जीव तो ग्रंथिदेशमा रही काइक उणा दश पूर्व सुधी द्रव्यश्रुत मेळवे छे, एथीज काइक उणा दशपूर्व सुधी श्रुत पण मिथ्याश्रुत थइ जाय. कारण के, ते मिथ्यात्वीए ग्रहण करेल छे, अने जेने पूर्ण दशपूर्व श्रुत थाय तेने निश्चे सम्यक्त्व थाय छे, अने बाकीना काइ उणा दशपूर्वधर वगेरेमा सम्यक्त्व थवानी भजना छे एटले सम्यकत्व थाय अथवा न पण थाय. तेने माटे कल्पभाष्यमा नीचे प्रमाणे कह्यु छे—

"चउदस दसय अभिन्ने, नियमा सम्मं तु सेसए भयणा"

ए पछी कोइ महात्मा के जेने परम निर्वृत्ति—मोक्षनु सुख नजीक छे अने जेना अनिवार्य वीर्यनो वेग घणीरीते उल्लास पामेलो छे, ते महात्मा तीक्ष्ण खड्गनी धारानी जेम परम शुद्ध अध्यवसाय विशेष रुप अपूर्वकरणवडे जेनु स्वरूप कहेवामा आव्यु छे, एवा ग्रंथिनो भेद करी अनिवृत्तिकरणमा प्रवेश करे छे. त्या प्रतिसमये शुद्ध थतो ते तेज कर्मोने निरतर खपावतो अने उदय आवेला मिथ्यात्वने वेदतो ते जे उदय आवेल नथी तेने उपशम करवारुप अतर्मुहूर्त कालना प्रमाणवाळा अंतरकरणमा प्रवेश करे छे.

ते प्रवेश करवानो विधि आ प्रमाणे छे

अतरकरणनी स्थितिना मध्यमाथी दलिया लइ ज्यासुधी अतरकरणना दलीया सघळा क्षय पामे त्यासुधी प्रथमनी स्थितिमा नाखे छे. एवी रीते अंतर्मुहूर्तना काळे करी सर्वे दलियानो क्षय थइ जाय छे. ते पछी ज्यारे ते अनिवृत्तिकरण समाप्त थाय अने उदीरणा करेल मिथ्यात्वने भोगववाथी क्षीण थता, अने नही उदीरणा करेल मिथ्यात्वने परिणाम विशेषथी रोकता खारी जमीननी जेम मिथ्यात्वनो विवर पामीने एटले जेम रणागने विषे मोटो सुभट वैरीनो जय करीने अत्यत आल्हादने पामे तेम कर्म आपेला मार्गने पामीने परम-उत्कृष्ट-आनदमय अने अपौद्गलिक एवा उपशम सम्यक्त्वने पामे छे. ज्यारे जीव उपशम सम्यक्त्वने पाम्यो ते वखते जेम उन्हाळाना तापमा तपाइ गयेलो कोइ जीव बावनाचदनथी अत्यंत शीतळताने पामे छे, तेम ते जीवने उपशम

सम्यक्त्वना रसथी पोताना आत्मानी अंदर अत्यंत शीतळता प्रगट थाय छे ते पछी उपशम सम्यक्त्वने विषे वर्ततो जीव सत्ताने विषे वर्त्तता एवा मिथ्यात्वने शोधी, तेनी त्रण पुंज रुपे व्यवस्था करे छे. जेम कोइ मेणाना कोदराने शोधे छे, ते शोधता केटलाएक शुध्ध थइ जाय छे, केटलाएक अर्धा शुध्ध थाय छे अने केटलाएक तेवाने तेवाज रहे छे. एम जीव पण अध्यवसाये करीने जिनवचननी रुचिने रोकनारा दुष्टरसनो उच्छेद करी मिथ्यात्वने शोधे छे, ते शोधता छता शुद्ध, अर्ध शुद्ध अने अशुध्ध, एम त्रण प्रकारे थाय छे.

आ त्रण पुंजमा जे शुध्ध पुंज छे, ते सर्वज्ञ भगवंतना धर्मने विषे सम्यक्त्वनी महिमा रोकवावाळो नथी, तेथी ते सम्यक्त्व पुंज कहेवाय छे अने बीजो जे अर्ध शुद्ध पुंज छे, ते मिश्रपुंज कहेवाय छे ते मिश्रपुंजनो उदय थवाथी जिन धर्मने विषे उदासीनता होय छे, अने अशुध्ध पुंजना उदयथी अरिहंत—सिद्धादिकने विषे मिथ्यापणानी महिनो उदय थाय छे, तेथी ते मिथ्यात्वपुंज कहेवाय छे, एटले शुद्धदेव अरिहंतने कुदेव माने अने शुद्ध गुरुने कुगुरु माने ते मिथ्यात्व कहेवाय छे. तेज अंतरकरणे करी अंतर्मुहूर्त्त काल पर्यंत औपशमिक सम्यक्त्व अनुभव्या पछी तरतज निश्चयथी शुध्ध पुंजना उदयथी क्षयोपशम सम्यग्दृष्टि थाय छे अने अर्ध शुद्ध पुंजना उदयथी मिश्र अने अशुद्ध पुंजना उदयथी सास्वादन गुणस्थान फरसवा पूर्वक मिथ्यादृष्टि थाय छे ते सास्वादन गुणस्थान जघन्यपणे एक समय प्रमाण अने उत्कृष्टथी छ आवळी प्रमाण छे. वळी प्रथमनु उपशम सम्यक्त्व प्राप्त थता कोइ जीव सम्यक्त्वनी साथेज देशविरति पणाने पण पामे छे अने कोइ जीव प्रमत्त भावना छठा गुणस्थानने पामे छे अने कोइ जीव सास्वादन गुणस्थान पामी मिथ्यादृष्टि पण थाय छे. शतकनी—बृहद् चूर्णीमा ते विषे कह्यु छे—

उवसम सम्मदिठी अंतरकरणठिओ कोइ देसविरइंपि॥ लहइ कोइ पमत्तभावंपि सासायणो पुण न किंपि लहे इत्ति ॥ १ ॥

बीजु काइ न पामे एम कर्म ग्रंथनो अभिप्राय कहेलो छे हवे सिध्धांत

नो अभिप्राय कहे छे—

अनादि मिथ्यादृष्टि कोइ ग्रंथिभेद करीने तेवी रीतना तीव्र परिणाम साथे अपूर्व करणमा आरूढ थइ मिथ्यात्वना त्रण पुंज करे छे, ते पछी अनिवृत्ति करणना सामर्थ्यथी शुद्ध पुजना पुद्गलोने वेदता उपशम समकित पाम्या वगरज तेने प्रथमथीज क्षयोपशम सम्यक्त्व प्राप्त थाय छे.

अन्य आचार्य वळी आ प्रमाणे कहे छे. "यथाप्रवृत्ति वगेरे त्रण करण करीने अतर करणने पहेला समये उपशम सम्यक्त्व पामे छे, पण ते त्रण पुजने करतो नथी अने ते पछी उपशम सम्यक्त्वथी पर्ण अवश्य मिथ्यात्वमाज जाय छे." आ विषे तत्त्व शुं छे ? ते केवली भगवान् जाणे छे.

हवे कल्प भाष्यने विषे कहेल त्रण पुजनो सक्रमण विधि बतावे छे—मिथ्यात्वना दलिया रूप जे पुद्गलो छे, तेमने खेंचीने जे सम्यग्दृष्टि ते जेना परिणाम विशेष वधता छे ते सम्यक्त्व अने मिश्र ए बनेनी मध्ये सक्रमावे छे, अने सम्यग्दृष्टि मिश्र पुद्गलोने सम्यक्त्वमा सक्रमावे छे, अने मिथ्यात्वी मिश्र पुद्गलोने मिथ्यात्वमा सक्रमावे छे अने सम्यक्त्वना पुद्गलोने मिथ्यादृष्टि मिथ्यात्वने विषे सक्रमावे छे पण मिश्रमा संक्रमावे नहीं—ए प्रकारे पण मिथ्यात्व क्षीण न थयु होय त्यासुधी सम्यग्दृष्टिओ नियमा ए त्रण पुजवाला होय छे. मिथ्यात्वनो क्षय थता निश्चे वे पुजवाला होय छे, अने मिश्रनो क्षय थता एक पुजवाला होय छे, अने सम्यक्त्वनो क्षय थता क्षायिक समकिती होय छे. उपर ज्या ज्या सम्यक्त्व, मिश्र अने मिथ्यात्व ए त्रण शब्दो योजरामा आव्या छे, त्या त्या मोहनीय शब्द साथे जोडवाथी सम्यक्त्व मोहनीय, मिश्र मोहनीय अने मिथ्यात्व मोहनीय एम जुदा नाम पडे छे.

वळी कर्मग्रथना अभिप्राये एम छे के, "पहेलवेलो सम्यक्त्व पामेलो जीव सम्यक्त्वमाथी पतित थइ मिथ्यात्वने पाम्या छता फरीथी उत्कृष्ट स्थितिवाळी कर्म प्रकृतिने बाधे छे, अने सिद्धातना अभिप्राय प्रमाणे एम छे के, जेणे ग्रंथिभेद करी सम्यक्त्व प्राप्त करेल छे, एवो जीव सम्यक्त्वथी पतित थइ पुन. कर्मनी उत्कृष्ट स्थिति बाधतो नथी आ स्थळे सम्यक्त्वना विचारने माटे घणी

चर्चा छे, पण ग्रथगौरवना जयथी ते अहीं करेल नथी, ते बीजा ग्रथोथी जाणी लेवु

सम्यक्त्वना जेद

सम्यक्त्व केटला प्रकारनु छे? तेवी शका थता तेने दूर करवाने सम्यक्त्वना जेद बतावबामा आवे छे–सम्यक्त्व एक प्रकारे छे, तेम बे, त्रण, चार, पाच अने दश प्रकारे पण छे, एम अनतज्ञानी श्री तीर्थंकर जगवाने कहेलु छे

सम्यक्त्वनो एक प्रकार शी रीते थाय? ते कहे छे **तत्त्वश्रद्धान** एटले तत्त्वने विषे श्रद्धा ते सम्यक्त्वनो एक प्रकार छे श्रीजिनजगवाने उपदेश करी बतावेला जीव–अजीव विगेरे पदार्थने विषे सम्यक् प्रकारे जे श्रद्धा एटले धारणानी रुचि ते सम्यक्त्वनो एक प्रकार छे

सम्यक्त्वना द्रव्य अने जाव एम बे प्रकार थाय छे, जे परिणामनी विशुद्धिथी मिथ्यात्वना पुद्गलोने विशुद्ध करवा ते "द्रव्यसम्यक्त्व" कहेवाय छे, एटले तेमा पुद्गल द्रव्यने शोधी शुद्ध करवाथी ते द्रव्य शुद्ध थयु, माटे ते द्रव्य सम्यक्त्व कहेवाय छे, अने जे तेना आधारजूत थइ जीवने जिनेश्वरे कहेला वचनने विषे तत्त्वश्रद्धा थवी ते बीजु "जावसम्यक्त्व" कहेवाय छे.

वळी निश्चय अने व्यवहारना जेदथी सम्यक्त्व बे प्रकारनु थाय छे ज्ञान दर्शन अने चारित्र रुप जे आत्माना शुज परिणाम ते "निश्चयसम्यक्त्व" कहेवाय छे, अथवा "ज्ञानादि परिणामथी आत्मा अजिन्न छे, एटले जुदो नथी" आवु जे श्रद्धाथी मानवु, ते "निश्चयसम्यक्त्व" कहेवाय छे. तेने माटे कह्यु छे के—

" आत्मैव दर्शनज्ञानचारित्राण्यथवा यते ।
यत्तदात्मक एवैष शरीरमधितिष्ठति " ॥ १ ॥

यतिने आत्माज दर्शन, ज्ञान अने चारित्र छे. कारणके, ज्ञान, दर्शन चारित्र रूपज आत्मा आ शरीरने विषे रहेलो छे कारणके, जोते आत्माथी जिन्न होय तो मुक्तिना हेतु रूप थइ शकता नथी

वळी निश्चयथी पोतानो जीवज देव निष्पन्न स्वरूपवालो छे, तेम पोता

नो आत्मा तत्त्व रमणरूप गुरु पण छे अने पोताना जीवनो जे ज्ञानदर्शन स्वभाव तेज धर्म छे. ते शिवाय कोइ बीजो नथी. आवुं जे श्रद्धान ते निश्चय सम्यक्त्व कहेवाय छे. आ सम्यक्त्वज मोक्षनु कारण छे तेथी जीवने स्वरूपना ज्ञान विना कर्मक्षयरूप मोक्ष थतोज नथी.

अरिहंत जगवान् ते देव छे, सुधर्मनो उपदेश आपी मोक्षमार्गने देखाडनार ते गुरु छे, अने केवळी जगवते कहेलो दयामूल धर्म ते धर्म छे, इत्यादिक पदार्थ तरफ सातनय चार प्रमाण अने चार निक्षेपवमे जे तत्त्वश्रद्धान ते निश्चयसम्यक्त्वनु कारणजूत व्यवहारसम्यक्त्व कहेवाय छे. आहि कहेवानुं तात्पर्य ए छे के, जेना राग, द्वेष, मोह अने अज्ञान गयेला छे, तेज देव कहेवाय. तेवा देव तो श्री अरिहंत भगवान् छे. बीजा हरि, हर ब्रह्मादिक देव नथी, एटले ते देवोमा देवत्व नथी, कारण के तेओने विषे स्त्री, शस्त्र, जपमाला आदि रागादिकना चिन्हो प्रगटपणे वर्त्ते छे.

आहिं शिष्य प्रश्न करे छे के, " ते देवोने विषे रागादिक होय तेमा अमारे शी हानि छे ? " तेना उत्तरमा गुरु कहे छे—" एम कहो नही. कारण के, ते देवो रागादिकथी कलुषित छे, तेथी तेमनो हजु मोक्ष थयो नथी, तेथी तेमनामा मोक्षसुख आपवानी योग्यता नथी, माटे तेमनामा देवपणुं नथी, कारण के, देवनु सन्मुखपणु मोक्षसुखने अर्थे छे, एटले जो देव सन्मुख होय तो मोक्षसुख सुखे मेळवी शकाय छे, तेथी एम कहेवु योग्य नथी. नित्यमुक्त तेजके जे कर्मे करीने लेपाय नहीं, अने रागादि के करीने पण न लेपाय. जे विष्णु, शकर अने ब्रह्माने नित्यमुक्त कह्या छे, ते अयोग्य छे, कारण के, तेमने फरीथी संसारमा जटकवापणु साजळवामा आवे छे, अने तेमने असख्याता जव करवा पुराणोने विषे कहेला छे.

आहि शिष्य प्रश्न करे छे के, जले कदि ते देवने मुक्तिना दातापणु न होय तो पण तेमनामा राज्य–धन दोलतनु दातापणुं तेमज रागादिक कष्टनु वारवापणु छे, तेथी आ जगतमा कहेवाता जे देव–ते नाम देवने विषे साक्षात् जोवामां आवे छे.

गुरु उत्तर आपे छे, "एम कहेवुं योग्य नथी. कारणके, जो एवा देव कहेवाता होय तो राजा प्रमुख तथा वैद्योमा देवपणु केम न कहेवाय? पण राजा प्रमुख अने वैद्यो सामा पुरुषना कर्मने अनुसारेज आपनारा छे, तेथी अधिक आपनारा नथी, केमके वधारे आपवानी तेमनी शक्तिज नथी, तेमनी तेटलीज प्रवृत्ति छे, वळी ते देवना सर्व जक्त राजाओ नीरोगी होय, ते अनुभवथी पण विरुद्ध छे कह्यु छे के,—जे पुरुष (जीव) पोते जेवा कर्म करे छे अथवा तेणे जेवा करेला छे, ते जीव तेवा प्रकारे कर्मनु शुभाशुभ फळ भोगवेछे एटले तेवा प्रकारना भोगने पामे छे ते विषे हवे विशेष कहेवाथी बस थयु

आ जगत्मा जे देव कहेवाय छे, ते सर्व देवतत्त्वने लायक नथी. जे अढार दूषणथी रहित तथा रागद्वेषथी रहित छे, ते देव कहेवाय छे अने तेज मारा शुध्ध देव छे. जे पृथ्वीकाय वगेरे छ कायजीवनी विराधनाथी निवृत्ति पाम्या छे अने उत्तम ज्ञानवान् छे, तेज मारा शुध्ध गुरु छे. परतु जेमनी सर्व आरभमा प्रवृत्ति छे अने जे निरतर छकाय जीवनी हिसा करनारा छे, तेवा ब्राह्मण, तापस वगेरे मारा गुरु नथी, एम निश्चय दृष्टिवत भव्य जीवने सम्यक्त्व होय छे.

अहिं शिष्य प्रश्न करे छे के, "ब्राह्मण वगेरे कुगुरुने विषे छकायनी विराधना चाले होय, पण जातिथी तो ते ब्राह्मण छे"

गुरुए उत्तर आप्यो "शिष्य, एम कहे नहीं कारण ब्राह्मण जातिए श्रेष्ठ होय, पण जो तेना आचरण निंदनीय होय तो ते निंदा करवा योग्य छे जुवो पारासर अने विश्वामित्र वगेरे ऋषिओ ब्राह्मण जातिने अभावे पूजनीय कहेवाया छे ते विषे पुराणमा लखे छे के,—

"श्वपाकीगर्भसंभूत पाराशरमहामुनि ।
तपसा ब्राह्मणो जातस्तस्माज्जातिरकारणम्" ॥१॥

पाराशरमहामुनि चमाळणीना गर्भथी उत्पन्न थया हता, पण तपवडे ब्राह्मण थया हता, तेथी ब्राह्मणपणामा जाति कारण नथी १

"कैवर्त्तीगर्भसंभूतो व्यासो नाम महामुनिः ।
तपसा ब्राह्मणो जातस्तस्माज्जातिरकारणम्" ॥ २ ॥

धीवरनी स्त्रीथी उत्पन्न थयेला महामुनि व्यास तपवडे ब्राह्मण थया हता, तेथी ब्राह्मण थवामा जाति-कारण नथी. २

" शशकीगर्भसंभूतः शुको नाम महामुनिः ।
तपसा ब्राह्मणो जातस्तस्माज्जातिरकारणम्" ॥ ३ ॥

हरिणीना गर्भथी उत्पन्न थयेला महामुनि शुकदेव तपवडे ब्राह्मण थया हता, तेथी ब्राह्मण थवामां जाति कारण नथी. ३

" न तेषां ब्राह्मणी माता संस्कारश्च न विद्यते ।
तपसा ब्राह्मणा जातास्तस्माज्जातिरकारणम्" ॥ ५ ॥

ते उपर कहेला मुनिओनी माता ब्राह्मणी न हती, तेमज तेमने संस्कार थयो नहतो; परंतु तेओ ब्राह्मणो थया हता, तेथी ब्राह्मण थवामा जाति कारण नथी. ५

वळी बीजे स्थले पण कह्युं छे के,—

" सत्यं ब्रह्म तपो ब्रह्म ब्रह्म चेन्द्रियनिग्रहः ।
सर्वभूतदया ब्रह्म एतद् ब्राह्मणलक्षणम्" ॥ १ ॥

" सत्य ब्रह्म छे, तप ब्रह्म छे, इन्द्रियोनो निग्रह करवो ए ब्रह्म छे अने सर्व प्राणी उपर दया करवी ए ब्रह्म छे, ए ब्राह्मणना लक्षणो छे. " १

" शूद्रोऽपि शीलसंपन्नो गुणवान् ब्राह्मणो भवेत् ।
ब्राह्मणोऽपि क्रियाहीनः शूद्रापत्यसमो भवेत्" ॥२॥

शूद्र होय पण जो ते शीलसपन्न अने गुणवान् होय तो ते ब्राह्मण थाय-छे, अने ब्राह्मण होय पण जो ते क्रियारहित होय तो ते शूद्रना सतान जेवो थइ जाय छे. १

तेथी सर्वमा विरति प्रमाणभूत छे. विरतिभाव विना गुरुपणु पण तार्य तारकपणाने अयोग्य छे ते विषे कहु छे के,—

" डुन्निवि विसयासत्ता डुन्निवि धणधन्नसगहसमेआ ।
सीस गुरू समदोसा तारिज्जइ नणसु को केण " ॥१॥

" गुर अने शिष्य बने विषयमा आसक्त छे, अने धन तथा धान्यना सग्रहथी युक्त छे, तेथी बने सरखा दोषवाला छे, तो तेमा कोण कोने तारे ? ते कहे. " १

कदि कहेशो के, तापस वगेरेने शामाटे गुरु न कहेवाय ? कारण के, तेओ सयमी, निःसगी अने जगलमा रहेनारा छे. वळी तेओ फुल फलादिक खानारा छे पण तेमने गुर कहेवा योग्य नथी, कारण के, तेमने सम्यक् प्रकारे जीवना स्वरुपनो बोध होतो नथी, तेमज तेमनामां स्नान वगेरेनु आरभपणु रहेल छे, तेथी छकायना पालक साधुज मारा गुरु छे, एम सिद्ध थाय छे तेम सर्वज्ञ, अने केवलज्ञानीए प्ररूपेल धर्मज श्रेष्ठ छे, ते मोक्षपदने आपनारो छे, बीजा अन्य धर्मो मोक्षपदने आपनारा नथी, तेथी ते धर्मा सर्वज्ञना धर्म छे, एम कहेवु नहीं, अने तेमना देव तथा गुरुने सर्वज्ञ न कहेवा, कारण के, एक मूर्तिपणे जे अविरुद्ध धर्मनु स्थापण करवु, ते सर्व रीते अयोग्य छे. जे धर्मना व्याख्यानमा अनेक प्रकारना जुदा जुदा विरुद्ध कथन आवे ते धर्मनु मूल कहेवाय नहीं जैन धर्मना आगममा ज्या ज्या जुवो त्या अरिहत भगवाननु कथन एकज प्रकारनु आवेछे तेथी ते धर्म मानवाने योग्य छे. ज्या मोक्ष मार्गना हेतुमा विरुद्ध कथन आवे त्या धर्म रहेवानो सभव नथी कारण, 'एक कहे आम करवु अने एक कहे तेथी विपरीत करवु तेथी आचरनारने कयु करवु, ते विषे भव्य प्राणी शका आकाक्षामा पडी जाय छे अने शका वगेरेथी धर्म विमुक्तताना हेतु प्रगट थाय छे. जेमके विष्णुना मतमा आ सृष्टि विष्णु मूल छे,एम कहे छे अने शैवमतमा आ सृष्टि शिव मूल छे,

एम माने छे, तेमज शुध्दिनी बाबतमा पण एक जले करी शुध्दि माने छे, अने एक रक्षावडे शुध्दि माने छे. मोक्षनी बाबतमा एक आत्माना क्षये करी मोक्ष माने छे अने एक नव गुणनो उच्छेद थाय, त्यारे मोक्ष माने छे. वळी तेमा देवताओ पाछळथी उच्छेद करनारा, वरदानने आपनारा अने सासारिक रीतिमा वर्त्तनारा होय छे, तेथी तेओ सर्वज्ञपणाने योग्य शी रीते थाय ? नज थाय. ते माटे तेमनो प्ररूपेलो धर्म प्रमाणभूत नथी. जेम अनेक माणसो 'अमे, आ, ते, तेओ, एम पोतानी मेळे धर्म कहे ते प्रमाणभूत गणाय नहीं, तेम तेमनो कहेलो धर्म प्रमाण भूत गणातो नथी, कारणके, तेओ सर्वज्ञना वचनने अनुसारे धर्मने कहेता नथी, जे सर्वज्ञना वचनने अनुसारे कहेवामा आवे तेज धर्म गणाय छे, तेथी केवलि प्ररूपित धर्मज श्रेष्ठ छे, आ प्रमाणे सम्यक् प्रकारनी शुध्द रुचि—श्रध्दा होय ते व्यवहार सम्यक्त्व कहेवाय छे. कारणके, व्यवहारनयनो मतपण प्रमाणज छे. ते व्यवहारनयना बळथीज तीर्थनी प्रवृत्ति छे, जो ते नयने प्रमाण भूत न मानीए, तो तीर्थनो उच्छेद थइ जाय.

शास्त्रमा कह्यु छे के,—

" जइ जिणमय पवज्जह, ता मा ववहार निच्छय मुयह।
ववहारनउच्छेए तिथ्थुच्छेओ जओवस्समिति" ॥ १ ॥

" जो तमारे जिनमत अगीकार करवो होय तो तमे निश्चय अने व्यवहार बने नयने छोडशो नहीं. तेमा व्यवहार नयने छोडवाथी. अवश्य तीर्थनो उच्छेद थाय छे. " १

सम्यक्त्वना बीजा बे प्रकार

पुद्गलिक अने अपुद्गलिक एम पण सम्यक्त्वना बे भेद पडेछे. जेमा मिथ्या स्वभाव गयो होय अने सम्यक्त्वना पुजमा रहेला पुद्गलोना वेदवा रूप क्षयोपशम प्राप्त थाय, ते पुद्गलिक सम्यक्त्व कहेवाय छे. सर्वथा मिथ्यात्व, मिश्र सम्यक्त्व पुजना पुद्गलोनो क्षय थवाथी तथा उपशमथी उत्पन्न थयेल जे निःकेवल जीव परिणाम रुप क्षायिक तथा उपशम सम्यक्त्व ते अपुद्गलिक सम्यक्त्व कहेवायछे.

१

अर्थात् पुद्गलोनु वेदन स्वरुप ते पुद्गलिक सम्यक्त्व अने क्षयोपशम करवाथी जे जीवना परिणाम ते अपुद्गलिक सम्यक्त्व एम समजवु

सम्यक्त्वना बीजा बे प्रकार

वळी निसर्ग अने अधिगम एम बे प्रकारे पण सम्यक्त्व कहेवाय छे. तीर्थंकर तथा गणधर वगेरेना उपदेश शिवाय स्वाभाविक कर्मना उपशम क्षयपणाथी जे सम्यक्त्व प्रगट थाय, ते निसर्गसम्यक्त्व कहेवाय छे श्री तीर्थंकर गणधर वगेरेना उपदेशथी तथा जिन प्रतिमा देखवाथी अने बीजा शुभ बाह्य निमित्तना आधारथी कर्मनो उपशम-क्षय थता जे सम्यक्त्व थाय ते अधिगम सम्यक्त्व कहेवाय छे

ते विषे मार्ग तथा ज्वरनु दृष्टांत

एक वटेमार्गु मार्गथी भ्रष्ट थयो होय, ते कोइना बताव्या शिवाय भमतो भमतो पोते तेज खरे मार्गे जेम आवी जाय छे, तेवी रीते निसर्गसम्यक्त्वनी प्राप्ति थाय छे. कोइ वटेमार्गु मार्गथी भ्रष्ट थता कोइना बताववाथी खरे मार्गे आवे तेवी रीते अधिगम सम्यक्त्वनी प्राप्ति थाय छे जेम कोइ माणसने ज्वर आव्यो होय ते परिपक्व स्थिति थातां औषधना उपचार विना स्वाभाविक रीते उतरी जाय छे तेवी रीते निसर्ग सम्यक्त्व समजवु अने जेम कोइनो ज्वर औषधना उपचारथी उतरी जाय छे, ते अधिगम सम्यक्त्व जाणवु. एवी रीते प्राणीने मिथ्यात्व रूप ज्वरना जवाथी सम्यक्त्व मार्गनी प्राप्ति थाय छे अने ते निसर्ग अधिगम रूप थायछे

सम्यक्त्वना त्रण प्रकार

कारक, रोचक अने दीपक एम सम्यक्त्व त्रण प्रकारनु छे जे जीवोने सम्यक् प्रकारना अनुष्ठाननी क्रियानी प्रवृत्ति करावे ते कारकसम्यक्त्व कहेवाय छे. एटले ते सम्यक्त्वमा उत्कृष्ट विशुद्धि-निर्मळतारुप सम्यक्त्व प्रगट थता जीव सूत्रमा कहेवा प्रमाणे क्रिया करे छे, तेथी ते कारक सम्यक्त्व कहेवाय छे. ए कारक सम्यक्त्व विशेष निर्मळ चारित्रवाळोनेज प्राप्त थायछे. मात्र श्रध्धानए रोचक सम्यक्त्व कहेवाय छे. ए सम्यक्त्वमा जीवने सम्यक् अनुष्ठाननी प्रवृत्ति

रुचे छे, पण ते करी शकतो नथी. आ सम्यक्त्व अविरति सम्यग्दृष्टि एवा कृष्ण अने श्रेणिक वगेरेने थयु हतु. जे जीव पोते मिथ्यादृष्टि अथवा अजव्य एवा अंगारमर्दक आचार्यनी जेम धर्मकथावमे जिनेश्वरना कहेला जीव-अजीवादि पदार्थोने यथार्थरीते परने प्रकाशे-दीपावे तेथी ते दीपक सम्यक्त्व कहेवाय छे. दीपक जेम वीजाना अंधकारने दूर करे छे अने पोताने प्रकाश करतो नथी तेम दीपक सम्यक्त्वथी वीजाने गुण थाय छे अने पोताने गुण थतो नथी, तेथी ते दीपक सम्यक्त्व कहेवाय छे.

अहीं शिष्य प्रश्न करे छे. जे जीव पोते मिथ्यादृष्टि छे, तो पछी तेने सम्यक्त्व शब्द शी रीते घटे ? ए वचननो विरोध आवे छे.

गुरु उत्तर आपे छे. शिष्य, एम कहे नहीं. ते जीवने मिथ्यादृष्टिपणुं छता पण तेनामा जे परिणाम विशेष छे, ते निश्चे प्राणीने धर्म पमाडवानो हेतुरूप थाय छे एटले सम्यक्त्वनु कारणजूत थाय छे, तेथी जेम घीमा आयुष्यनो उपचार करवामा दोष नथी तेम कारणने विषे कार्यनो उपचार करवाथी ते सम्यक्त्व कहेवाय छे.

सम्यक्त्वना वीजी रीते त्रण जेद

औपशमिक, क्षायिक अने क्षयोपशमिक एम सम्यक्त्वना त्रण प्रकार पण थाय छे.

सम्यक्त्वना चार जेद.

उपशमिक, क्षायिक, क्षयोपशमिक अने सास्वादन-एवा सम्यक्त्वना चार जेद छे.

सम्यक्त्वना पाच प्रकार.

उपशमिक, क्षायिक, क्षयोपशमिक, सास्वादन अने वेदक-एम सम्यक्त्वना पाच प्रकार पण थाय छे.

१ उपशमिक—उदीरणा करेला मिथ्यात्वने अनुजववथी क्षय करता अने नहीं उदीरणा करेला मिथ्यात्वने परिणामनी निर्मळता विशेषे करी सर्व प्रकारे

उपशमावता—दबावी देता एटले उदयमा न आववा देवारुप करता जे चैतन्यनो गुण प्रगट थाय छे, ते उपशमिक सम्यक्त्व कहेवाय छे.

आ सम्यक्त्व अनादि मिथ्यादृष्टिने, ग्रंथिभेद करनारने, अने उपशम श्रेणिना प्रारंभना करनारने थायछे

२ क्षायिक—अनंतानुबंधी कषायनी चोकडीनो क्षय थया पछी अनंतर मिथ्यात्व, मिश्र सम्यक्त्वरुप त्रण पुंजरूप दर्शनमोहनीय कर्मनो सर्वथा क्षय थता आत्माने जे गुण उत्पन्न थाय, ते क्षायिक सम्यक्त्व कहेवायछे. आ सम्यक्त्व क्षपक श्रेणी अंगीकार करनारने होय छे " क्षपक श्रेणी अंगीकार करनार पुरुष आठ वर्षथी उपरांत वयवाळो, वज्रऋषभनाराच संघयणवाळो, अने ध्याननने विषे चित्त आपनारो होय छे, ते पुरुष अविरति होय, देश विरति होय अथवा प्रमत्त—छठा गुणठाणावाळा अथवा अप्रमत्त—सातमा आठमा गुणठाणावाळामाथी गमे ते होय ते क्षपकश्रेणी माडे छे, " एम प्रवचनसारोद्धार ग्रंथने विषे कहेलु छे

३ क्षयोपशमिक—उदय आवेला मिथ्यात्वने विपाकना उदये करी वेदी क्षय करे अने शेष के जे सत्तामा अनुदय आवेलु होय तेने उपशांत करे एटले मिथ्यात्व मिश्र पुंजने आश्रीने रोके अर्थात् उदयने अटकावे अने शुद्ध पुंजने आश्री मिथ्यात्व भावने दूर करी एटले उदीरणा करेला मिथ्यात्वनो क्षय करवाथी अने नहीं उदीरणा करेला मिथ्यात्वनो उपशम करवाथी आत्माने जे गुण उत्पन्न थाय ते क्षयोपशमिक सम्यक्त्व कहेवाय छे. आ मिथ्यात्व शुद्ध पुंज लक्षणवालु छे, ते अतिशय निर्मळ एवा वादळानी पेठे छे, तेथी तेमा यथावस्थित शुद्ध तत्त्वरुचिनु आच्छादन थतु नथी, एटले ते आच्छादन करनार न होवाथी ते उपचारथी सम्यक्त्व कहेवाय छे

अहिं शिष्य प्रश्न करे छे—उपशम सम्यक्त्व अने क्षयोपशमसम्यक्त्वमा शो तफावत छे ? कारणके, ते बने सम्यक्त्वमा काइ विशेष जोवामा आवतु नथी ते बनेमा उदय आवेल मिथ्यात्वनो क्षय अने नहीं उदय आवेल मिथ्यात्वनो उपशम, ए कहेवामा आव्यु छे

गुरु उत्तर आपे छे—तेमा विशेषपणु छे

क्षयोपशम सम्यक्त्वमा मिथ्यात्वना विपाकनो अनुभव नथी, पण प्रदेश

ढाकी राखेल्ला अग्निना धुमाडानी श्रेणीनी जेम प्रदेशनो अनुभव छे. अने उपशम सम्यक्त्वमा विपाक उदयथी तथा प्रदेश उदयथी सर्वथा मिथ्यात्वनो अनुभवज नथी, माटे ते बनेमा एटलो तफावत छे.

४ सास्वादन—प्रथम कहेला उपशम सम्यक्त्वथी पडता एटले सम्यक्त्वथी पतित थता ते वखते सम्यक्त्वना आस्वादस्वरूपमय थवाय ते सास्वादन सम्यक्त्व कहेवाय छे. उपशम सम्यक्त्वथी पडता छता ज्यासुधी मिथ्यात्व न पमाय त्यासुधी सास्वादन सम्यक्त्व होय छे. ते सास्वादनसम्यक्त्वनो काल जघन्य एक समयनो अने उत्कृष्ट छ आवळीनो छे.

५ वेदक—जेणे क्षपक श्रेणी अंगीकार करेली छे, एवा पुरुषने चार अनतानुबंधी अने मिथ्यात्व मिश्र पुंज (वे) खपावता अने क्षायोपशमिक लक्षण रूप शुद्ध पुंजने खपावता, ते शुद्ध पुंजना पुद्गलनो छेल्लो पुद्गल खपाववाने उजमाळ थता ते छेल्ला पुद्गलने वेदवा रूप जे सम्यक्त्व ते वेदक सम्यक्त्व कहेवाय छे. ते सम्यक्त्व एक समयनु छे. वेदक सम्यक्त्व पाम्या पछी अनंतर समयेज क्षायिक सम्यक्त्व अवश्य प्रगट थाय छे.

ते पाचे सम्यक्त्वना कालनो नियम कहेछे.

" अंतमुहुत्तोवसमो छावलि सासाणवेअगो समओ ।
साहीयतित्ति सायर खइओ दुगुणो खओवसमो ॥१॥"

उपशम सम्यक्त्वनो काल अंतर्मुहूर्तनो छे, सास्वादन सम्यक्त्वनो काल छ आवलीनो छे, वेदकनो काल एक समयनो छे, क्षायक सम्यक्त्वनो काल तेत्रीश सागरोपमथी काइक अधिकनो छे अने क्षयोपशम सम्यक्त्वनो काल छासठ सागरोपमथी काइक अधिक एटले क्षयोपशमनो क्षायकना करता बमणो काल छे आ उत्कृष्ट काल कहेलो छे. क्षायक सम्यक्त्वनी स्थिति जे तेत्रीश सागरोपमथी अधिक कहेली छे, ते सर्वार्थसिद्धादिकनी अपेक्षाए ससारने आश्रीने समजवी अने सिद्ध अवस्थानी अपेक्षा ए तो तेनी सादि अनंत स्थिति जाणवी. जे क्षयोपशमनी बमणी स्थिति कही छे, ते विजयादिक अनुत्तर विमानने विषे तेत्रीश सागरोपमनी स्थितिमा बे वार जवानी अपेक्षा ए कही छे. अथवा बारमा दे-

वक्षोकने विषे बावीश सागरोपमनी स्थितिए त्रणवार जवानी अपेक्षाए कही छे. जे साधिक—(अधिक सहित) एम कहेवामा आव्यु छे, ते मनुष्य जवना आयुष्यनो मक्षेप करवाथी जाणवु. आ सर्व उत्कृष्ट स्थिति जाणवी. जघन्य स्थिति तो वेदक, उपशम अने सास्वादन–ए त्रणेनी एकज समयनी स्थिति छे अने क्षयोपशम तथा क्षायक ए बेद्धा वे सम्यक्त्वनी स्थिति जघन्यपणे अतर्मुहूर्तनी छे. आठ समयथी मानीने वे घमीमा एक समय ओछो ते अतर्मुहूर्त कहेवाय छे. ते अतर्मुहूर्त्तना असख्याता जेद छे

सम्यक्त्व केटली वार पमाय छे

" उक्कोस सासायणं उवसमियं हु ति पचवाराओ ।
वेयग खइगाइक्कसि असखवारा खउवसमो" ॥ १ ॥

" आ ससारने विषे उत्कृष्टथी सास्वादन अने उपशमिक सम्यक्त्व पाच वार होय छे. पण ते प्रथम एकवार उपशम सम्यक्त्व प्राप्त थाय त्यारे चार वखत उपशम श्रेणीनी अपेक्षाए होय छे वेदक तथा क्षायक सम्यक्त्व एकजवार होय छे अने क्षयोपशम सम्यक्त्व असख्यातिवार होय छे, ते पण बहु जवनी अपेक्षाए समजवु "

कये गुणस्थानके कयु सम्यक्त्व होय छे

"बीयगुणे सासाणो तुरियाइसु अगिगारचउचउसु ।
उवसमखायगवेयगखाओवसमा कमा हुति" ॥ १ ॥

सास्वादनसम्यक्त्व बीजे गुणठाणे होय छे. अने उपशमसम्यक्त्व चोथा सम्यक्दृष्टि गुणठाणाथी अगीयारमा गुणठाणा सुधी आठ गुणस्थानके एटले अविरतिथी लइने उपशातमोह गुणठाणासुधी उपशम सम्यक्त्व होय छे तथा चोथा गुणस्थानथी अयोगी गुणस्थानना अग सुधी अगीयार गुणठाणे क्षायिक सम्यक्त्व होय छे चोथा गुणठाणाथी लइने अप्रमत्त गुणठाणाना अत सुधी वेदक सम्यक्त्व होय छे तेज चोथा गुणस्थानथी मानीने अप्रमत्त गुणस्थान सुधी एटले चार गुणस्थाने क्षयोपशमिक सम्यक्त्व होय छे, अर्थात् सातमा गु

एगाणा सुधी ते होय छे. अने क्षपकश्रेणि मांडवावाळाने वेदक थइने क्षायक थाय छे अने आठमे गुणठाणेथी श्रेणि मांडे छे."

सम्यक्त्व केटलीवार मुकाय अने केटलीवार ग्रहण थाय

प्रथम मुक्यु पछी ग्रहण कर्युं, एवुं जे सम्यक्त्वादि ते गृहीतमुक्तने आकर्षा कहेवाय छे. ते सम्यक्त्व केटलीवार ग्रहण थाय अने केटलीवार मुकाय, ते दर्शावे छे. ते साथे एक जीवने एक भवमा केटला सम्यक्त्व थाय ते पण जणावे छे. भावश्रुत, सम्यक्त्व अने देशविरति नामना त्रण सामायिकवाळाने एक भवमा हजार [1]पृथक्त्व होय छे. सर्वविरतिवाळाने एक भवे सो पृथक्त्व आकर्षा थायछे. ते उत्कृष्टथी जाणवा. अने जघन्यथी तो एकज आकर्ष थाय छे.

संसारने विषे रहेला जीवोने सर्व भवमा केटला आकर्षा एटले जीव व्यवहार राशिमा आव्या पछी मोक्षे जाय त्या सुधीमा केटला आकर्षा थाय ते वात जणाववा कहे छे के, अनेक भवोमा एक जीवने त्रण भावश्रुतादिकना असंख्याना हजार पृथक्त्व आकर्षा थाय छे एटले सर्व भवनी अपेक्षाये त्रण भावश्रुतादिने उत्कृष्टा असंख्याता हजार पृथक्त्व आकर्षा थाय छे. तेमा जे सर्व विरति छे, तेने हजार पृथक्त्व उत्कृष्टा थाय छे, अने द्रव्यश्रुतवाळाने अनंता आकर्षा थाय छे, कारणके, तेमा बेइंद्रिय आदि मिथ्यात्वीओनी गणना छे

सम्यक्त्वना दश प्रकार.

प्रथम आंतरा रहित कहेला एवा उपशमादिक पांच प्रकारना सम्यक्त्वने निसर्ग तथा अधिगम साथे गणता तेना दश प्रकार थाय छे अथवा पन्नवणा वगेरे आगमोने विषे निसर्ग रुचि वगेरे भेदथी दश प्रकारना सम्यक्त्व कहेला छे, तेना नाम आ प्रमाणे छे. १ निसर्गरुचि, २ उपदेशरुचि, ३ आज्ञारुचि, ४ सूत्ररुचि, ५ बीजरुचि, ६ अधिगमरुचि, ७ विस्ताररुचि, ८ क्रियारुचि, ९ संक्षेपरुचि अने १० धर्मरुचि.

ते दश प्रकारना सम्यक्त्वनुं विवेचन.

---

[1] बेथी नवसुधी पृथक्त्व शब्द वपराय छे

१ निसर्गरुचि—निसर्ग एटले स्वभावे करीने जिनेश्वरना कहेला तत्त्वोने विषे रुचि थाय, ते निसर्गरुचि सम्यक्त्व कहेवाय छे, अर्थात् जिनेश्वरे दर्शावेला तत्त्वादिकनु स्वरूप एमज छे, तेथी अन्यथा छेज नहीं, आम जाणे, एटले जे तीर्थंकर भगवाने कहेला द्रव्य, क्षेत्र, काल तथा भावना भेदे करी तथा नाम, स्थापना द्रव्यभावना भेदे करी चार प्रकारना जीवादिक पदार्थोने जातिस्मरण ज्ञाननी जेम बीजाना उपदेश विना अथवा श्रुतज्ञानना बळे करीने अत्यंत श्रद्धा करे ते निसर्गरुचि सम्यक्त्व कहेवाय छे.

२ उपदेशरुचि—गुरु, माता, पिता वगेरे वडिलोए कहेला वस्तुतत्त्वमां जे रुचि उत्पन्न थाय एटले आंतरा रहित कहेला जीवादिक पदार्थोने विषे तीर्थंकर, गणधर आदि पुरुषोना तेमज छद्मस्थ पुरुषोना उपदेशथी जे रुचि-श्रद्धा उत्पन्न थाय ते उपदेश रुचि सम्यक्त्व कहेवाय छे.

३ आज्ञारुचि—सर्वज्ञनी आज्ञा उपर जे भव्य पुरुष रुचि करे एटले जे भव्य राग, द्वेष, मोह,तथा अज्ञानथी देशथकी रहित थइ तीर्थंकर तथा गणधर वगेरेनी आज्ञा वडे प्रवचनना अर्थ थयेला छे, एम जाणी पोते बुद्धिहीन होय तो पण तेने यथार्थ रीतें प्राप्तपुरुष मुनिनी पेठे अंगीकार करे ते आज्ञारुचि सम्यक्त्ववालो कहेवाय छे. आ सम्यक्त्वमां कहेवानु तात्पर्य ए छे के, आगमने विषे जे अर्थ ज्ञानी महाराजे कहलो छे ते यथार्थज छे-मारे प्रमाण छे, कदि तेमांथी कोइ भाग हु मंदबुद्धि समजी शकतो नथी तो आगळ उपर विशेष अभ्यासथी ते मारा समजवामां आवशे. उद्यम करवाथी शु प्राप्त थतु नथी ? तेम करतां कदि समजवामा न आवे तो मारा कोइ कर्मनो दोषछे. आ प्रमाणे माने छे. पण जेमां पोताने समज पडे नहीं तेने अप्रमाण गणे नहीं, अने एवो दृष्टिथी पोते पोतानी मद बुद्धि थवाना कारण प्रगट करेछे सर्व भव्य जीवोए सम्यग्दृष्टिथी जिनेश्वरना वचन उपर श्रद्धापूर्वक एवी प्रतीति करवी जोइए. अने अभ्यासमा तत्पर रहेवु जोइए. एवी रीतें जिनेश्वरे जे कहेल तेने प्रमाणभूत माने ते आज्ञारुचि सम्यक्त्व कहेवाय छे.

आज्ञारुचि सम्यक्त्व उपर माषतुषनु दृष्टांत

कोइ पुरुषे कोइ उत्तम गुरु पासे धर्म सांभळी प्रतिबोध पामी दीक्षा लोधो हती गुरुए तेने अभ्यास कराववा मांडयो, परतु कोइ ज्ञानावरणीय कर्म

ना उदयथी ते शिष्य एक पद पण धारण करवाने के उच्चार करवाने शक्तिमान् थयो नहीं. आथी गुरु कंटाळी गया अने तेमणे मान्यु के, हवे आ शिष्यने शास्त्रनु अध्ययन कराववायी मर्यु. छेवटे एक वखते गुरुए तेने कयु के, " शिष्य, तने काइ पण आवडे तेम नथी, माटे तु केवळ ' मारुप, मातुप ' एम जप्या कर. " ते अल्पमति शिष्य ते वाक्य पण पूरी रीते बोली शक्यो नहीं. तेने ठेकाणे ' मापतुप' एम बोलवा लाग्यो पोते ते जाणता पोताना आत्माने पछी निंदतो हतो, पण केवळ गुरुनी आज्ञाने प्रमाण करी ते उपर पूर्ण श्रद्धा राखतो हतो, तेथी ते उत्तम भावनाओ करी चार घनघातीकर्मनो क्षय करी तत्काळ केवळज्ञाननी लक्ष्मीने प्राप्त थयो हतो. आवो पुरुष आज्ञारुचि कहेवाय छे.

४ सूत्ररुचि—सूत्र एटले अग उपाग आदि आचारागप्रमुख. जेनी अदर आचारनु लक्षण कहेवामा आवे छे, तेने विषे जेने रुचि छे एटले जाणवा जणाववानी, धारवानी अने तेना स्वरूपना चितवननी प्रीति छे, ते सूत्ररुचि सम्यक्त्ववान् कहेवाय छे. अर्थात् सूत्र जाणता जणावता ते सम्यक्त्वनी प्राप्ति थाय छे अने अतिशय साग अ यवसाय उत्पन्न थाय छे ते सूत्ररुचि उपर गोविंदवाचकनु दृष्टात छे

गोविंद वाचकनी कथा

गोविंद नामे एक बौद्ध धर्मनो भक्त हतो. ते जिनेश्वरना आगमनु रहस्य तथा तत्त्व ग्रहण करवा माटे कपटे करी जैन साधु बनी आचार्य महाराजनी पासे जैन सिद्धात जाणवा आव्यो. जैन सिद्धात जाणता तेने सत्रना अर्थवडे तेना परिणामनी निर्मळता प्रगट थइ आवी अने तेथी सम्यक्त्वने पामी जैन शुद्ध मुनि थइ आचार्य पदने पामी गोविंदवाचकना नामथी प्रख्यात थया हता. आ गोविंद वाचक सूत्ररुचि सम्यक्त्ववाळा जाणवा.

५ बीजरुचि—बीजनी पेठे जे एक वचन अनेक अर्थने बोध करनारु होय ते बीज वचन कहेवाय छे, तेवा वचनने विषे जेने रुचि होय ते बीजरुचि सम्यक्त्ववान् कहेवाय छे. जेम बीज एक होय छता अनेक बीजोने उत्पन्न करे छे, तेम आत्माने एक पद उपर रुचि होय ते अनेक पदनी रुचिने उत्पन्न करनारी थाय छे, एवी जे आत्माने विषे रुचि ते बीजरुचि कहेवाय छे. अथवा ते

उपर जळने विषे पमेला तेलना विंदुनु दृष्टांत छे. जेम तेलनो बिंदु जळना एक देशमा पमे छे, पण ते पछी समस्त जळने आक्रमण करे छे, तेवी रीते तत्त्वना एक देशमा आत्मानी रुचि उत्पन्न थइ, तो ते आत्मानी रुचि तेवी रीतना क्षयोपशमथी समस्त तत्त्वोने विषे प्रसरी जाय छे, आनु नाम बीजरुचि कहेवाय छे

६ अभिगमरुचि—अभिगम एटले विशेष प्रकारनु ज्ञान, तेने विषे जेने रुचि थाय ते अभिगमरुचि सम्यक्त्ववान् कहेवाय छे. एटले [1]श्रुतज्ञानना अर्थने आश्रीने जेने विज्ञान–विशिष्ट ज्ञान प्राप्त थाय ते अभिगमरुचि कहेवाय छे

७ विस्ताररुचि—सातनयो वमे सपूर्ण द्वादशागीनी विस्तार पूर्वक विचारणा करवामा जेनी रुचि वृद्धि पामे छे, ते विस्ताररुचि सम्यक्त्ववाळो कहेवाय छे.

ए विस्ताररुचि सम्यक्त्वमा नैगमादिक सर्वेनयो वमे तथा प्रत्यक्षादिक प्रमाणो वमे षट् द्रव्यनु अने तेना पर्यायनु यथार्थ ज्ञान थाय छे.

८ क्रियारुचि—सम्यक् प्रकारे सयम–चारित्रना अनुष्ठान एटले क्रियानी प्रवृत्तिने विषे जे रुचि थवी ते क्रियारुचि सम्यक्त्व कहेवाय छे जे पुरुषने क्रियारुचि सम्यक्त्व प्राप्त थयेलु होय, तेने भावथी ज्ञानाचार, दर्शनाचार अने चारित्राचार आदि अनुष्ठानने विषे रुचि उत्पन्न थाय छे

९ सक्षेपरुचि—जेनामा विशेष प्रकारे जाणवानी शक्ति न होय, तेथी ते सक्षेपथी जाणवानी रुचि करे, ते सक्षेपरुचि सम्यक्त्ववाळो कहेवाय छे. ते सम्यक्त्वमा जिन वचन रूप आगमने विषे अकुशलपणु छता तेमज बौद्धादिक कुदर्शननो अभिलाषी न छता चिलातिपुत्रनी पेठे उपशम, विवेक अने सवर नामना त्रण पदे करीने तत्त्वनी रुचि प्राप्त थाय छे

१० धर्मरुचि—धर्म एटले अस्तिकायादि धर्म तथा श्रुतधर्म अने चारित्रधर्म, तेने विषे जेने रुचि होय ते धर्मरुचि सम्यक्त्ववाळो कहेवाय छे. एटले जिनेश्वरे कहेला धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय वगेरेना गति, स्थिति रुप उपष्टभकता आदि स्वभावने विषे अस्तिपणु तेमज अग–प्रविष्ट अर्थात् अग–आगम

[1] आचारांग आदि अग, उववाइ आदि उपाग अने उत्तराध्ययनादि प्रकरण ते श्रुतज्ञान कहेवाय छे

ना स्वरूपने विषे तथा सामायिकादि चारित्रधर्मने विषे जे जीव श्रद्धा करे छे, ते धर्मरुचि समजवो.

अहिं जे सम्यक्त्वना उपाधि भेद वडे जुदा जुदा प्रकार कह्या छे, ते शिष्यने विशेष बुद्धि उपजाववा माटे कहेला छे. परंतु वस्तुताए तो निसर्ग अने अधिगम ए बे भेदमाज कोइ कोइ स्थले ते बधानो अंतर्भाव थइ जाय छे. वळी अहिं सम्यक्त्वने जीवथी अभिन्नपणुं जे कहेलुं छे, ते गुण अने गुणीनो अभेद जणाववा माटे कहेल छे, ते उपरथी समजवानुं के, जे दश प्रकारनुं सम्यक्त्व तेज आत्मा छे, कारण के सम्यक्त्व ए आत्मानो गुण छे, एटले आत्मा तेज सम्यक्त्व अने सम्यक्त्व तेज आत्मा, ए तत्त्वथी जाणवुं. आत्मा अने आत्माना गुणमां अभेद छे. तत्त्वथी गुण अने गुणी जुदां नथी.—ए परमार्थ छे.

सर्व धर्मकृत्योमां सम्यक्त्वनी प्रधानता.

" समत्तमेव मूलं निद्दिट्ठं जिणवरेहिं धम्मस्स ।
एगंपि धम्मकिच्चं न तं विणा सोहए नियमा" ॥१॥

" जिनवरोए धर्मनुं मूळ सम्यक्त्वनेज कहेलुं छे, ते सम्यक्त्व विना धर्मनुं एक कार्य पण निश्चे शोभतुं नथी. " १

आ अपार संसारमां बहु प्रकारे भ्रमण करी खेद पामी गयेला भव्य जीवोए जेनुं स्वरूप प्रथम कहेलुं छे एवा शुद्ध सम्यक्त्ववडे पोताना आत्माने युक्त करवो. कारण के, पोतानी आत्मारूपी भूमिने निर्मळ करवाथी ते आधारे करेला सर्व धर्मना कृत्यो प्रभास चित्रकारे रचेली भूमि उपरना चित्रोनी जेम असाधारण रीते शोभी उठे छे. कारण के, आत्म शुद्धि कर्या विना एक पण धर्मकृत्य शोभतुं नथी, तेथी भव्य जीवोए प्रथम आत्मशुद्धिने विषे प्रयत्न करवो.

प्रभास चित्रकारनुं दृष्टांत

आ जंबूद्वीपने विषे भरतक्षेत्रना मध्य भागे साकेतपुर नामे नगर छे. ते मनोहर अने उज्ज्वळ एवा घरोथी तथा सुंदर जिन मंदिरोनी श्रेणीथी सुशोभित छे. नाग, पुनाग विगेरे विविध जातना वृक्षोथी युक्त एवा अनेक उद्यानोए करी ते विराजित छे. तेमां सर्व शत्रुरूपी वृक्षोने उखेडवामां गजेंद्र समान महाबल नामे

एक राजा हतो. एक वखते ते राजा सजामरुपमा बेठो छे, तेवामा अनेकप्रकारना देशोमा फरनारा पोताना एक दूतने आ प्रमाणे पुछ्यु, "हे दूत, मारा राज्यने विषे राजश्रीजाने योग्य एवी कोइ वस्तु नथी एम छे ?" दूते कह्यु, राजेंद्र,तमारा राज्यमा बीजी वस्तुओ छे, पण नेत्रोने आनद आपनारी अने अनेक प्रकारना चित्रोथी अलंकृत एवी राजश्रीमा योग्य चित्रसज्जा नथी." दूतना आ वचन सा जळी राजानु मन तेवी सजाना कुतूहलथी परित थइ गयु तत्काळ तेणे मत्रीने बोलावीने हुकम कर्यो के, 'सत्वर एवी चित्रसजा करावो.' राजानी आज्ञा थतां- ज मत्रीए ते आज्ञा शिरपर चमावी दीधी, विस्तारवाळी अने मनोहर विविध प्रकारनी रचनाथी सुशोभित एक मोटी सजा तैयार करावी ते पछी राजाए वि- मल अने प्रजास नामना बे चित्रकारोने बोलावीने कह्यु, "चित्रकारो, तमे बने चि त्रना काममा निपुण छो, माटे एकआ सजाने चित्रवाळी करो, तेमां सजानो अर्धे जाग विमल चितरे अने अर्ध जाग प्रजास चितरे," एम कही तेमने अर्ध अर्ध जाग वहेंची आप्यो. पछी तेनी मध्य जागे एक पमदो बाधी राजाए तेमने सूचना आपी के "तमारे कोइ कोइना चित्रो जोवा नहीं, तमे प्रत्येकतमारी बुध्धि प्रमाणे तेमा चितार काम करो."

राजानी आवी आज्ञा थता ते बने चित्रकारो एक बीजानी स्पर्धाथी पोतपोताना जागमा चित्रकाम करवा लाग्या एवी रीते चित्रकाम करतां तेमने छ मास वीती गया ते पछी चित्रकाम जोवाने आतुर एवा राजाए ते बनेनी पासे आवी चित्रकाम पूर्ण करवा माटे पुछ्यु, आ वखते विमने कह्यु, "स्वामी, में मा रो जाग पूरो कर्यो छे, ते आप जुवो" राजाए तेमा प्रवेश करी जोयु, त्या वि चित्र प्रकारना चित्रोथी अद्भुत एवा ते जूमि जागने जोइने राजा सतुष्ट थइ गयो. त त्काल राजाए विमलने घणु द्रव्य तथा वस्त्रादिकनु इनाम आपी तेनी उपर महान् प्रसाद कर्यो ते पछी राजाए प्रजासने पुछ्यु, त्यारे प्रजासे कह्यु के, में तो हजु चि त्रनो आरज पण कर्यो नथी, मात्र हजु जूमि सस्कार कर्यो छे एटले चितरवानी जूमिने शुध्ध करी छे कारण जो जूमिने बराबर शुध्ध करी होय तो ते पर चितार काम घणुज शोजी उठे छे पछी राजाए ते जूमि सस्कार केवो कर्यो हशे ते जोवाने माटे वचमा राखेला पमदाने दूर कराव्यो तेवामा ते जूमिनी अदर घणु रमणीय चित्रकाम थयेलु जोवामा आव्यु ते जोइ राजाए कह्यु,—

" अरे प्रभास, तु शु अमने पण ठगे छे ? अहिं तो साक्षात् चित्रकाम देखाय छे." प्रभासे कह्यु, " महाराज, ए साक्षात् चित्रो नथी पण आ सामेना भागना चित्रोना प्रतिबिंबोनो सक्रम थयेलो छे. " तेना आ वचनो सांभळी राजाए फरीवार ते पडदो बधाव्यो, एटले मात्र एकली भूमि जोवामा आवी. आथी राजाए विस्मय पामीने पुछ्यु, " चित्रकार, ते आवा भागे संस्कारवाळी भूमि केम रची ?" प्रभास बोल्यो, " स्वामी, आवी उज्वल भूमि उपर चित्रकाम घणु सरस थाय छे चितरेली मूर्तिओना रंगनी कांति अधिक शोभे छे अने ते पर आलेखेला रूप बहुज दीपी नीकळे छे, जेथी प्रेक्षकोना हृदयमा आनंदरूप भावनो उल्लास थइ आवे छे. " प्रभास चित्रकारना आ वचनो सांभळी राजा तेनी विवेकवाळी कुशलता उपर हृदयमा संतुष्ट थइ तेने इनाम आपी तेनी उपर प्रसाद कर्यो. अने तेने कह्यु के, "मारी आ चित्र सभा जे प्रकारनी शोभावाळी थइ छे ते अपूर्व प्रसिध्धि पामी एमी ने एवी कायम रहो "

ए कथानो उपनय

साकेतपुर नगर ते आ महान् संसार समजवो. महाबल राजा ते सम्यक् प्रकारे उपदेश आपनार आचार्य समजवा जे सभा ते मनुष्यगति समजवी. जे चित्रकार ते भव्य जीव जाणवो. जे चित्रशालानी भूमि ते आत्मा अने ते भूमिनो जे संस्कार ते सम्यक्त्व जाणवु अने चित्र ते धर्म समजवो जे अनेक प्रकारना चित्रो ते प्राणातिपातनी विरति वगेरे व्रतो जाणवा चित्रोने दीपावनारा उज्वल प्रमुख वर्णो ते धर्मने शोभावनारा अनेक प्रकारना नियमो जाणवा. अने भावनो उल्लास ते वीर्य समजवु

आ उपरथी ए उपदेश लेवानो छे के, प्रभास चित्रकारनी जेम पंडित पुरुषोए आत्मारूप भूमिने निर्मळ करवी के जेथी ते आत्मभूमि उज्वल क्रियारूप अनेक प्रकारना चित्रोनी अद्भुत शोभाने धारण करे छे, जे शोभा आ जगतने विषे अनुपम गणाय छे आ प्रभासना दृष्टांतथी सर्व धर्म कार्योने विषे सम्यक्त्वनु प्रधानपणु दर्शाव्यु छे

सम्यक्त्वना बीजा सडसठ भेदो

हवे विस्ताररुचि जीवोना उपकारने माटे सम्यक्त्वना सडसठ भेदो कहे-

छे. चार प्रकारनी श्रध्धा, त्रण लिंग, दश विनय, त्रण शुध्धि, पाच दूषण रहित, आठ प्रभावक, पाच भूषण, पाच लक्षण, छ जयणा, छ आगार, छ भावना अने छ स्थानक, एवी रीते सम्यक्त्वना सडसठ भेदो थाय छे ए सडसठ भेदोए जे युक्त होय तेने निश्चयथी विशुध्ध सम्यक्त्व प्राप्त थाय छे

चार श्रध्धा

१ परमार्थनी स्तवना, २ परमार्थ जाणनारनी सेवा एटले तेनी गुरुपणे मान्यता, ३ जेमणे सम्यक्त्व वमेलु होय तेश व्यापन्न दर्शनीओनु वर्जवु, ४ तथा अन्य दर्शनीओनो त्याग करवो आ चार प्रकारनी श्रध्धा कहेवाय छे जेने आ चार श्रध्धा होय तेने अवश्य सम्यक्त्व होय छे

त्रण लिंग

जेनामा सम्यक्त्व होय, तेने ओळखवाना जे चिन्हो ते लिंग कहेवाय छे. १ शुश्रूषा, २ धर्मराग अने ३ वैयावृत्य ए त्रण लिंग जाणवा

दश प्रकारनो विनय

१ अरिहंत, २ सिध्ध, ३ चैत्य, ४ श्रुत, ५ धर्म, ६ साधुवर्ग, ७ आचार्य, ८ उपाध्याय, ९ प्रवचन अने १० दर्शन ए दशनो विनय करवो ते दश प्रकारनो विनय कहेवाय छे भक्ति-बहुमान आदिथी विनय कराय छे

त्रण प्रकारनी शुध्धि

१ जिन, २ जिनमत अने ३ जिनमतने विषे रहेला जे साधु साध्वी वगेरे, तेनाथी बीजाने असाररूपे चितववा-ए त्रण प्रकारनी शुध्धि कहेवाय छे

पाच दूषण

१ शंका, २ कांक्षा, ३ विचिकित्सा, ४ कुदृष्टि प्रशंसा अने ५ कुदृष्टिनो परिचय ए सम्यक्त्वना पाच दूषणो वर्जवा योग्य छे

आठ प्रभाविक

१ प्रवचनी, २ धर्मकथी, ३ वादी, ४ नैमित्तिक ५ तपस्वी, ६ प्रज्ञप्ति

आदि विद्यावान् ७ चूरण, अंजनादिकवडे सिद्ध, अने ८ कवि—ए आठ प्रभाविक कहेवाय छे.

पांच भूषण

१ जिनमतने विषे कुशळता, २ जिन शासननी प्रभावना करवापणुं, ३ तीर्थसेवा, ४ जिनमतने, विषे स्थिरता, अने ५ जिनमतने विषे भक्ति-ए पांच सम्यक्त्वना भूषण कहेवाय छे. कारण के, ते सम्यक्त्वने आभूषणनी जेम शोभा पमाडनारा छे.

पांच लक्षण

१ शम, २ संवेग, ३ निर्वेद ४ अनुकंपा, अने आस्तिकता—ए पांच सम्यक्त्वना लक्षण छे. ते उपरथी सम्यक्त्ववान् पुरुष ओळखी शकाय छे.

छ यतना

परतीर्थिक आदिने १ वंदन, २ नमस्कार, ३ आलाप, ४ संलाप, ५ खानपाननुं दान अने ६ गंध पुष्पादिक अर्पवा— ए छ यतना वर्जवा योग्य छे.

छ आगार

१ राजाना हुकमथी, २ समुदायनी आज्ञाथी, ३ बळवान्ना हुकमथी, ४ देवतानी आज्ञाथी, ५ दुर्लभ आजीविकाथी अने ६ मोटा महान् पुरुषना आग्रहथी काइ करवुं पडे ते आगार कहेवाय छे, ते उपर प्रमाणे छ प्रकारना आगार छे.

छ भावना.

१ आ सम्यक्त्व चारित्र धर्मनुं मूल छे, २ आ सम्यक्त्व चारित्र धर्मनुं द्वार छे, ३ आ सम्यक्त्व चारित्र धर्मनो स्तंभ छे, ४ आ सम्यक्त्व चारित्र धर्मनु आधारभूत छे, ५ आ सम्यक्त्व चारित्र धर्मनु भाजन छे अने ६ आ सम्यक्त्व चारित्र धर्मनु निधान छे आ प्रमाणे शास्त्रमा कहेल छे, तेनु चिंतवन करवु, ते छ भावना कहेवाय छे.

छ स्थानक

१ जीव छे, २ ते जीव नित्य छे, ३ ते जीव कर्मो करे छे, ४ ते करेला

कर्मने भोगवे छे, ५ मोक्ष छे अने ६ मोक्षनो उपाय छे एवी अस्ति (छे) पणे श्रद्धा करवी ते छ स्थानक कहेवाय छे

आ प्रमाणे सडसठ भेदे करी सम्यक्त्व निर्मल होय छे

ते सम्यक्त्वना सडसठ भेदोनु सविस्तर विवेचन

चार श्रद्धानु स्वरूप

१ परमार्थ संस्तव एटले जीव, अजीव, पुण्य, पाप वगेरे तात्त्विक पदार्थोनो परिचय, अर्थात् तेना स्वरूप जाणवानो विशेष उद्यम, रुचि, बहुमान पूर्वक जीवादि पदार्थोने विषे ज निरंतर अभ्यास ते प्रथम श्रद्धा कहेवाय छे २ परमार्थने जाणनारानी सेवा एटले परमार्थने जाणनारा आचार्य वगेरेनी भक्ति अर्थात् भ्रमरीनी जेम मुनिना गुणोनी परीक्षा करी तेमनी सेवा भक्ति करवी जे मुनि संवेग एटले मोक्षाभिलाषना शुद्ध रंगना कल्लोलवने झीलनारा अर्थात् जेना चित्तमा निरंतर मोक्ष जवाना तरंग ऊठी रह्या छे, एवा अने जे शुद्ध जैन मार्गने प्ररूपनारा छे, तेवा पुरुषोनी सेवा—भक्ति करवाथी समतारूप अमृतनु पान मळे छे अने तेथी आत्माने विषे आनंद पमाय छे ए बीजी श्रद्धा छे

३ जेमणे जैन दर्शननो नाश कर्यो छे, एवा अने प्रभुना वचनने उत्थापनारा एवा निन्हवो वगेरेने वर्जवा कारणके ते निन्हवो सम्यक्त्वने ग्रहण करी पुन. तेनु वमन करनारा छे अने प्रभुना वचनथी विपरीत रीते वर्त्तनारा छे, ते गोष्ठा माहिल वगेरे कहेवाय छे तेवी रीते यथाछंदा पुरुषोने पण वर्जी देवा ते लोको आगम उपर दृष्टिने बंध करी स्वच्छंदे वर्त्तनारा अने स्वकपोल कल्पित मार्गे चालनारा छे तेमनु आचरण गृहस्थना करता पण नठार छे तेओ काचु पाणी पीवे छे, माथे तेल चोळी मुकावे छे, काचा पाणीए न्हाय छे, धोवे छे, वस्त्रो धोवरावे छे, गुप्त रीते स्त्री सेवन करे छे, अने लोकोमा पोताने ब्रह्मचारी कहेवरावे छे, उपान प्रमुख पेहेरे छे अने मठधारी थइ रहे छे पासत्था, उत्सन्ना, कुशीलिया, ससक्ता, यथाच्छंदा ए पाच जिन मतमा अवंदनीय कहेला छे. महावीर प्रभुना वेषनी विडंबना करनारा, मंद अने अज्ञानी एवा ए कुगुरुने वर्जवाथी त्रीजी श्रद्धा प्रगटे छे.

४ चोथी श्रद्धा कुदर्शनने त्याग करवा रूप छे. कुदर्शन एटले जैन शिवाय बौद्ध वगेरेना दर्शनो तेनो त्याग करवाथी सम्यक्त्वनी चोथी श्रद्धा कहेवाय छे. ए चार श्रद्धा उपरथी पुरुषमा सम्यक्त्वनी प्रतीति थाय छे. सम्यग्दर्शनवाळा प्राणीओए पोताना आत्माना गुणोने निर्मल करनारी ए परमार्थ परिचय वगेरे चार श्रद्धाओने निरतर धारण करवी. तेमा खास करीने चोथी श्रद्धामा कहेला कुदर्शनवाला पुरुषोनो सर्वथा त्याग करवानो छे. कारणके, ते पोताना दर्शननी मलिनताना हेतु रूप छे. जो कुदर्शनीनो संग न वर्जे तो जेम गगानुं जल लवण समुद्रना ससर्गथी तत्काल खारु थइ जाय छे, तेम सम्यग्दृष्टिना उचा गुणो तेवा कुगुरुना ससर्गथी तत्काल नाश पामी जाय छे, तेथी सर्वथा तेमनो ससर्ग वर्जवो, एवो जिनेश्वरनो उपदेश छे

त्रण लिगनी व्याख्या

१ शुश्रूषा—एटले साजळवानी इच्छा. सद्ज्ञानना हेतु रूप एवा धर्मशास्त्र साजळवा उपर प्रीति. साकरना स्वादथी पण वधारे मधुर अने युवान अने सुदर स्त्रीओथी परिवृत थइ दिव्य गीतने साजळवानी इच्छावाला चतुर पुरुषने जेवो राग थाय, तेवी रीते धर्म साजळवानो आत्मानो जे अध्यवसाय ते शुश्रूषा नामे सम्यक्त्वनु पेहेलु लिग–चिन्ह छे. ज्यारे जव्य जीवने सम्यक्त्व प्राप्त थयु होय, त्यारे एवा परिणाम थाय छे.

२ धर्मराग—चारित्रादि धर्मने विषे राग ते धर्मराग नामे बीजु चिन्ह कहेवाय छे. एटले कोइ मोटी अटवीनु उल्लघन करी आवेलो अने क्षुधाथी जेनु शरीर क्षीण थइ गयु छे, एवो ब्राह्मण जेम घेवर खावानी इच्छा करे तेम सम्यक्त्ववालो जीव कोइ कर्मदोषथी सदनुष्ठानादि धर्म करवाने अशक्त होय पण तेने धर्मने विषे तीव्र अजिलाप होय छे, तेनु धर्मरागनु चिन्ह कहेवाय छे.

३ देवगुरुनी वैयावच्च करवानो नियम ए सम्यक्त्ववतनु त्रीजु चिन्ह छे. देव एटले अतिशय आराधन करवा योग्य अरिहंत अने गुरु एटले शुद्ध धर्मनो उपदेश करनारा आचार्य भगवान, तेमनी वैयावच करवामा यथाशक्ति सेवा प्रमुख करवानो नियम, जे नियम श्रेणिक वगेरेने हतो. महान् श्रेणिक

राजाने एवो नियम हतो, के ज्यारे परम तीर्थंकर महावीर जगवान् जे दिशाए विचरता होय, ते समाचार जाणवामा आवे त्यारे, ते दिशानी सन्मुख सुवर्णना एकसो आठ जवनो साथीओ करी पछी दातण करवुं, तेवी रीते देवपूजामा पण तेने एवो साथीओ करवानो नियम हतो, ते प्रमाणे ते दररोज करतो अने तेथी तेणे तीर्थंकर नामकर्म उपार्जन कर्यु हतु तेवीरीते बीजा पण जव्य जीवोए ए प्रमाणे यथाशक्ति नियमो ग्रहण करवा यत्न करवो जोइए. ए शुश्रूषादिक त्रणे लिंगोथी सम्यक्त्वनी उत्पत्तिनो निश्चय थाय छे.

दशप्रकारना विनयनी व्याख्या.

१ अरिहत एटले तीर्थंकर जावजिन विचरता जिन २ सिद्ध एटले जेमना आठ कर्म रूप मलना पमल क्षीण थइ गया छे, एवा सिद्ध जगवान् ३ चैत्य एटले जिनेश्वरनी प्रतिमा—मूर्त्ति, ४ श्रुत एटले सिद्धात—आचाराग आदि आगम. ५ धर्म एटले क्षमादिक दश प्रकार रूप. ६ साधुवर्ग एटले श्रमण समूह. ७ आचार्य एटले छत्रीश गुणना धारक अने गच्छना नायक ८ उपाध्याय एटले शिष्यो ने सूत्रो जणावनारा, ९ प्रवचन एटले जीवादि नव तत्त्वोने कहेनार (अथवा सघ) १० सम्यग्दर्शन एटले सम्यक्त्व अने तेनी साथे अनेदोपचारथी सम्यक्त्ववान् पण दर्शन कहेवाय छे. पूर्वे पण सजव प्रमाणे कहेवु ए अरिहतादिक दशस्थानने विषे पाच प्रकारे विनय करवो

विनयना पांच प्रकारनी व्याख्या

१ जक्ति एटले साहामा जवु, अशनादिक चार प्रकारनो आहार आपवो, अथवा जे योग्य होय ते आपवु, ते रूप बाह्य प्रतिपत्ति.—बाहेरनी देखाती सेवा. आम जक्ति करवाथी अन्य जनो जाणे के, 'आ जक्तिवत छे,' ते जोइ बीजाओ पण तेम करवाने प्रवर्त्ते अहिं बाह्य जक्तिनो अर्थ राग विनानी —उपरनी जक्ति एवो अर्थ न करवो, कारणके, समकितगुण होवाथी जीवथी अंतर्दशारूप परिणामवाळीज जक्ति बने छे.

२ बहुमान एटले मनमा अतिशय प्रीति

३ वर्णन एटले तेमना प्रजाविक गुणोनु कीर्त्तन—स्तवन करवु ते

४ अवर्णवादपरिहार एटले तेमनी अप्रशंसा—निंदानो त्याग करवो. बीजाना उत्तम गुणोनी प्रशंसा करे, पोताना गुणोनी न करे, अने जेथी धर्मनी लघुता थती होय, तेवा कामने गोपवे—प्रगट न करे.

५ आशातनापरिहार—एटले मन, वचन अने कायाए करीने प्रतिकूल प्रवृत्तिनो निषेध करे एटले जे जे काम करे तेमा देव, गुरु अने धर्मनी आशातना करे नहीं अने करावे नहीं. अर्थात् जिनमतनी निंदा, लघुता थवारूप आशातना पण न करे. एटले पोताना हृदयने नठारी प्रवृत्तिमा नांखे नहीं.

आ दश प्रकारनो दर्शन विनय उपर कहेला दश स्थानोने आश्रीने जाणी लेवो. सम्यक्त्व होयतोज आ विनय प्रगट थाय छे, तेथी ते दर्शनविनय कहेवामा आव्यो छे.

त्रीजा चैत्य विनय विषे विवेचन.

चैत्यनो अर्थ जिनेश्वरनी प्रतिमा थाय छे. अथवा जिनबिंब थाय छे. ए प्रभुनी प्रतिमा केवा स्वरूपवाळी अने केटला प्रकारनी छे? एवी शिष्यनी शका थता तेना भेद दर्शावे छे. श्री जिनेश्वरना चैत्यना पाच भेद छे. १ भक्ति चैत्य, २ मगळ चैत्य, ३ निश्राकृत चैत्य, ४ अनिश्राकृत चैत्य अने ५ शाश्वत चैत्य. गृहने विषे शास्त्रोक्त विधिपूर्वक लक्षणादिक सहित प्रतिदिन त्रिकाल पूजा वदनादि करवाने माटे करावेली जे जिनप्रतिमा ते भक्ति चैत्य कहेवाय छे. ए प्रतिमा घर देरासरमा थापवाने धातुनी बनेली अने अष्ट प्रातिहार्य सहित थाय छे.

घरना द्वार उपर रहेला लीजा काष्ट (उत्तराग)ना मध्य भागे स्थापेला जिनबिंबने मगलचैत्य कहे छे. लोको मागलिकने माटे ते द्वारना काष्ट उपर जिनमूर्त्ति कोतरावे छे. अने जो ते मगलचैत्य होय तोज ते घरमा रहे छे, अन्यथा रहता नथी. मगलचैत्य वगरना घरमा रही शकाय नहीं, ते विषे एक दृष्टात कहेवाय छे.

मथुरा नगरीने विषे मगल निमित्ते प्रथम जिनप्रतिमानी प्रतिष्ठा करे छे. जिनबिंबनु स्थापन करे छे. जे घरमा मगलचैत्यनु स्थापन न कर्यु होय ते घर

पणी जाय छे श्री सिध्धसेनाचार्ये कर्यु छे के "घर घर प्रत्ये द्वारना मध्य जागे —उत्तरागे श्री पार्श्वनाथ प्रजुनी प्रतिमा स्थापे छे." ते मथुरा नगरीमा आजे पण लोकोना घरना द्वार उपर मगल चैत्य देखाय छे. जे कोइ गच्छ सबधी चैत्य ए- टले तपगच्छ, खरतरगच्छ, के अचलगच्छनु चैत्य, ते निश्राकृत चैत्य कहेवायछे. ते चैत्यमा ते ते गच्छना आचार्यादिकनो तेमा प्रतिष्ठा प्रमुख कार्यो करवानो अ धिकार होय छे. बीजा गच्छना आचार्यो बीजा गच्छे सबधी चैत्यमा प्रतिष्ठा क रावी शकता नथी

उपर कहेल निश्राकृत चैत्यथी विपरीत जाववालु चैत्य अनिश्राकृत चै त्य कहेवाय छे. ते चैत्यने विषे सर्व गच्छोना आचार्यो प्रतिष्ठा करावी शके छे. मालारोपण वगेरे चैत्य सबधी सर्व कार्यो करवानो अधिकार सर्व गच्छोना आ चार्योने होय छे शत्रुजयगिरि उपर आदीश्वर जगवाननु चैत्य अनिश्राकृत चै- त्य छे, ते टुकमा सर्व गच्छोना आचार्यो प्रतिष्ठादि करावी शके छे. त्या सवासो मजीना देरासरमा देवाजियतीने नामे ओळखातो यतिवर्ग तेनी मालेकी धरावी तेमा प्रतिष्ठादि करावे छे, ते निश्राकृत चैत्य कहेवाय छे.

पाचमु सिध्धचैत्य ते सिध्धायतनना नामथी ओळखाय छे. अने तेने शाश्वत जिन चैत्य पण कहे छे

बीजी रीते चैत्यना पाच प्रकार

१ नित्य चैत्य, २ द्विविध चैत्य, ३ जक्तिकृतचैत्य, ४ मगलकृतचैत्य अने ५ साधर्मिक चैत्य जे देवलोकने विषे शाश्वत चैत्य छे, ते नित्यचैत्य क- हेवाय छे.

बे प्रकारे जक्तिए करेला निश्राकृत अने अनिश्राकृत (जरतादिके जेम कराव्या हता तेवा) ए बे प्रकारना चैत्य ते द्विविधचैत्य कहेवाय छे. ते बीजो अने त्रीजो जेद समजवो मथुरानगरीनी जेम मगळने अर्थे गृहद्वारना मध्य जागे काष्ठ (उत्तराग) उपर करेल चैत्य ते मगळचैत्य समजवु जे कोइना ना मथी देवगृहमा प्रतिमा करावी स्थापे ते साधर्मिक चैत्य कहेवाय छे. वार्त्तक मुनिना पुत्रे पोताना रमणीय देवगृहने विषे पोताना पितानी मूर्त्ति स्थापी हती ते साधर्मिक चैत्य कहेवायु छे.

वार्त्तक मुनिनी कथा

वार्त्तक नामना नगरने विषे अजयसेन नामे राजा हतो. तेने सद्बुद्धिना नंमार रूप वार्त्तक नामनो मंत्री हतो.

एक वखते ते मंत्री पोताना घरना दीवानखानामा बेठो हतो, तेवामां कोइ परगामथी मीजमान आव्यो. मंत्री तेने मान आपी तेनी साथे वार्त्तालाप करवा लाग्यो, तेवामा धर्मघोष नामना मुनि तेने घेर जिक्षा लेवाने आव्या. मुनिने जिक्षा माटे आवेला जाणी वार्त्तकनी स्त्री घी, खांमथी मिश्रित एवुं एक खीरनुं पात्र जरी तेमने व्होरावा आवी. ते वखते पात्रमांथी एक बिंदु जूमि उपर पड्यो. ते मुनिना जोवामा आव्यो. ते महात्मा जगवते उपदेश करेला जिक्षाग्रहणना विधिने जाणनारा हता. जिक्षा बेंतालीश दोषोथी दूषित न होवी जोइए, एम तेओ समजता हता. आथी ते पमेलो बिंदु जोइ तेमना मनमां स्फुरी आव्युं के, " आ जिक्षा छर्दित नामना दोषथी दूषित जे, तेथी आ जिक्षा मारे कल्पे नहीं. " आवुं विचारी ते महात्मा ते जिक्षा ग्रहण कर्या वगर ते घरमांथी बाहेर नीकळी गया. चतुर मंत्री वार्त्तक के जे घरना दीवानखानामां बेठो हतो, तेणे मुनिने जिक्षा लीधा वगर पाछा जता जोयां. ते जोताज ते मनमां चिंतववा लाग्यो के, आ मुनिए मारा घरनी जिक्षा केम लीधी नहीं ? जेवामा तेणे आ प्रमाणे जोयुं, त्या आगणामा घी साथे मिश्रित खांमनो बिन्दु जोवामा आव्यो. ते उपर माखीओ एकठी थइ. ते माखीओने जक्षण करवाने गरोळी दोमी. ते गरोळीनुं जक्षण करवा उंदर दोड्यो. उंदरने मारवा माटे बीलामी दोमी आवी. बीलामीने हणवा माटे पेला आवेला मीजमानने कुतरो दोड्यो. तेने मारवाने आमोशी पामोशीना कूतरा दोड्या. ते कुतराओने परस्पर लमाइ थइ एटले पोतपोताना कूतराओने वारवाने ते मीजमानना अने आमोशी पामोशीना तथा मंत्रीना सेवको दोमी आव्या. पोतपोताना कूतरानो पक्ष करता तेमनी वच्चे परस्पर लमाइ सळगी उठी. पछी वार्त्तक मंत्रीए ए सर्वना युध्धने शांत करी दीधु. पछी तेणे पोताना मनमा विचार्यु के, " एक घी खांमनो बिंदु जूमि उपर पमवाथी आटली बधी मारामारी थइ पमी, तेथीज ते महा मुनिए "आ दूषित जिक्षा ग्रहण करी नहीं. ते महात्माए विचार्यु हशे के जो हु आ दूषित जिक्षा ग्रहण

तो मने मोटा पापनो जाग लागी जशे. कारणके, आथी पापनो प्रसंग उत्पन्न थया विना रहेशे नहीं. " आ प्रमाणे विचार करी दूषित जिक्षा ग्रहण करी नहि. ते पछी वार्त्तक मंत्रीए नीचे प्रमाणे जैनधर्मनी प्रशंसा करी हती.

" अहो ! जगवान् जिनेश्वरनो सुदृष्टिवाळो धर्म केवो छे ? वीतराग जगवान् विना आवो पापरहित धर्मनो उपदेश देवाने कोण समर्थ छे ? माटे मारे पण हवे वीतराग प्रजुना धर्मने त्रिकरण शुद्धिथी सेववो. ए वीतराग जगवानज मारे सेववा योग्य छे अने तेमणे कहेली क्रियाज पाळवी उचित छे. " आ प्रमाणे चिंतवी ते मंत्री आ संसार उपरथी विमुख थइ गयो. तेनामां शुज ध्याननो योग प्रगट थयो. तत्काळ तेने जातिस्मरण ज्ञान थइ आव्युं. ते वखते देवताओए तेने मुनिवेश अर्पण कर्यो. पछी मंत्री वार्त्तके गृहनो त्याग करी शुद्ध अनगार थइ बीजे स्थळे विहार कर्यो. अनुक्रमे चिरकाळ संयम पाळता तेने केवळज्ञान प्राप्त थयुं. पछी ते वार्त्तक नगरने विषेज देह त्याग करी ते मोक्षे गयो.

ते मंत्रीनो सुबुद्धि नामे पुत्र हतो. पिताना स्नेहे करीने तेनुं हृदय पुराइ गयुं. पछी ते पितृवत्सल पुत्र एकरमणीय देरासर करावी तेमां रजोहरण तथा मुहपत्तीरूप परिग्रहने धरनारी पितानी प्रतिमा रचावी स्थापित करी अने तेनी पासे एक दानशाळा उघारी. आ सार्धमिक चैत्य कहेवाय छे ए रीते चैत्यना पांच जेद कहेला छे

उपर कहेला चैत्यना जेदोमां जक्तिकृत वगेरे चार प्रकारना चैत्योनी अंदर कृत्रिमपणुं छे, तेथी तेमां न्यूनाधिक जावनो संजव होय छे, माटे तेमनी संख्यानो नियम नथी एटले जे कत्रिम जिनजुवन छे, तेने श्रावको जक्तिने अर्थे करे छे ते अशाश्वता जिनजुवन कहेवाय छे. ते जिनजुवनो काइक वधारे अने काइक ओछां होय छे, तेथी तेमनी संख्यानो नियम होइ शकतो नथी अने जे शाश्वता जिन चैत्यो छे, तेमनुं नित्यपणुं छे, माटे तेमनी संख्या होइ शके छे ते कारण माटे आ त्रिजुवनने विषे शाश्वतजिन संबंधी देवकुळना बिंबोनी संख्या चैत्यवंदननी अंतर्गत रहेल 'कम्मभूमि' इत्यादि गाथाने अनुसार कहेवामां आवे छे ते गाथा नीचे प्रमाणे छे

[1]" सत्ताणवइ सहस्सा लक्खाछपन्न अठ्ठकोडिओ ।
चउसय छायासिया तिल्लुक्के चेइए वंदे ॥ १ ॥
वंदे नवकोडिसय पणवीसं कोडितेवन्ना ।
अठ्ठावीस सहस्सा चउसय अठ्ठासियापडिमा " ॥ २ ॥

आठ क्रोड,छप्पनलाख, सत्ताणुहजार, चारसोने छयाशी, एटला जिन चैत्य त्रण लोकने विषे छे तेमने हु नमस्कार करु छुं. तथा नवसो पचवीश क्रोड त्रेपनलाख, अठ्यावीश हजार, चारसो अठ्यासी एटला जिनबिंब त्रणलोकने विषे छे, तेमने हुं नमस्कार करुछुं.

हवे त्रण भुवनने विषे कहेला प्रमाणनी शाश्वत जिनभुवन तथा जिनबिंबोनी जे सख्या छे, ते कहे छे. तेमां अधोलोक पाताळने विषे दक्षिण अने उत्तर दिशाना विभागे रहेला भुवनपतिना दश निकायने विषे सर्व संख्या सातकोटी अने बोतेरलाख, भुवनो छे. ते दरेक भुवनने विषे एक एक चैत्यनो सद्भाव होइने शाश्वत जिनचैत्यो पण तेटलाज छे ते चैत्योने विषे रहेला जिनबिंबोनी सर्व सख्या आठसोने तेत्रीशक्रोटी, अने छोंतेर लाखनी छे. ते दरेक चैत्यने विषे एकसोने आठ जिनप्रतिमानो सद्भाव होइने उपर प्रमाणे जिनबिंबो छे.

हवे तीरछा लोकने विषे अने पाच मेरुने विषे पंचाशी चैत्यो केवी रीते छे ? ते कहे छे ते प्रत्येक मेरुमा चार चार वन छे. ते दरेक वनने विषे चारे दिशाए चार चार चैत्यो छे. ते दरेक मेरुने एक एक चूलिका छे, ते उपर एकेक चैत्य एम एकएक मेरुने विषे सत्तर सत्तर चैत्य छे, एटले ते पाचे मेरुना सर्व मळीने पचाशी चैत्यो थाय छे. तथा ते दरेक मेरुनी विदिशामा चार चार गजदंता पर्वत मळी वीश गजदंता पर्वतो छे. अने तेनी उपर वीश चैत्यो तथा पाच पाच देवकुरु अने उत्तरकुरुने विषे आवेला जबू शाल्मलि प्रमुख दश वृक्षोनी अदर दश चैत्यो छे. प्रत्येक महाविदेहने विषे शोळ शोळनो सद्भाव होवाथी ऐंशी वखारा पर्वतो छे. ते उपर ऐंशी चैत्यो छे, तथा दरेक महाविदेह प्रत्ये बत्रीश बत्रीश

१ आ प्रमाणे खरतर गच्छवाळा माने छ, तपगच्छादिक तो प्रतिक्रमण सूत्रमा छपायेल गाथा प्रमाणे माने छे

अने जरत ऐरवतमां एक एकनो सद्जाव होवाथी चोत्रीश विजयो थाय अने तेमां पाच भरत, पांच ऐरवत अने महाविदेहना एकसो साठ एम कुल मळी एकसो सीतेर विजय थाय छे. ते प्रत्येकमां एक एक दीर्घ वैताढय पर्वत छे ते दरेक पर्वत उपर एक एक चैत्य होवाथी एकसोने सीत्तेर चैत्य छे. जम्बुद्वीपमां छ अने धातकीखन्ड तथा पुष्करार्द्धने विषे बार बार थइने त्रीश कुलगिरि पर्वतोछे, तेमनी उपर त्रीश चैत्यो छे. धातकीखड अने पुष्करार्द्ध बनेमा बे बे इक्षुकार पर्वतोमा चार चैत्यो छे. अढीद्वीपनी मर्यादा करनार समयक्षेत्ररूप मानुषोत्तर पर्वतने विषे चार दिशाओमां चार चैत्यो छे. तथा आठमा नदीश्वर द्वीपमा बावन चैत्यों छे ते आ प्रमाणे—पूर्व दिशाए आवेला नदीश्वरना मध्य जागे अजनना जेवा वर्णवाळा अजनगिरि छे. तेनी चार दिशाए चार वाव्यो छे, ते वाव्योना मध्यभागे श्वेतवर्णना चार दधिमुख पर्वतो छे. चार विदिशामां बबेनो सद्जाव होवाथी रक्तवर्णना आठ रतिकर पर्वतो छे. ते आठ, चार अने एक एम मळीने पूर्व दिशाए तेर पर्वतो थया, ते तेर पर्वतो उपर तेर चैत्यो छे. तेवी रीते पश्चिम, दक्षिण अने उत्तर—ए त्रणे दिशाए कहेला नाम प्रमाणे तेर तेर पर्वतो छे, एम चारे दिशाओ मळी बावन पर्वतो थया. ते दरेक पर्वत उपर एकेक चैत्य होवाथी बावन चैत्यो थाय छे. अगीआरमा कुन्डलद्वीपने विषे चार दिशाओमा चार अने तेरमा रुचकद्वीपने विषे चार दिशाओमां चार चैत्यो रहेला छे, एम सर्वनी संकलनाए करी तिरछा लोकमां चारसोने नेंशठ चैत्यो थायछे, ते चैत्योनी अदर पचास हजारने चार जिनबिंबो छे; अहीं पण दरेक चैत्यने विषे एकसो आठ बिंबो रहेला छे.

हवे ऊर्ध्व लोकने विषे सुधर्मा देवलोकथी आरजीने पांच अनुत्तर विमान सुधी चोराशी लाख, सत्ताणु हजार अने त्रेवीश विमान छे. ते दरेक विमाने एक चैत्यनो सद्जाव होवाथी चैत्यो पण तेटलाज छे. ते सर्व चैत्योमां मळी एकाणु क्रोड, छोंतेर लाख, अठ्योतेर हजार, चारसोने चोराशी जिनबिंबो छे. कारण के दरेक चैत्ये एकसो आठ जिनबिंबोना सद्जाव होवाथी तेमनी संख्या तेटलीज थाय छे.

ए प्रमाणे त्रण लोकने विषे रहला शाश्वत जैन चैत्योनी अने जिनबिं

वोनी संख्या मेळववाने माटे " सत्ताए वईसहस्सा " इत्यादि वे गाथाओ कहेली छे अने ते उपरथी सर्व संख्या प्राप्त कराय छे. अहींआ चैत्यो अने जिनबिंबोना अविसंवादी स्थानोने आश्रीने आ संख्या देखाडी छे. केटलाएक आचार्य विसंवादि स्थानोने आश्रीने आतरारहित कहेली संख्यानी अपेक्षाए चैत्य अने बिंबोनी संख्या वधारे प्रतिपादन करे छे. ते विषे संघाचार नामनी चैत्यवंदन भाष्यनी टीकाने विषे नीचे प्रमाणे कह्यु छे.

" सगकोडि लक्ख विसयरि, अहो य तिरिए दुतिसपणसयरा ।
चुलसिलक्खा सग नवई, सहसतेविसुवरिलोए ॥ १ ॥

तेरस कोडि सया कोडिगुणए नवइ सट्ठिलक्ख अहलोए ।
तिरिए तिलक्ख तेणवइ सहस्सपडिमाडुसयवत्ता ॥ २ ॥

बावन्न कोडिसय चउणवइ लक्खसहस चउयाल ।
सत्तसयासट्ठिजुआ सासयपडिमाउ वरिलोए ॥ ३ ॥

" अधोलोकने विषे सात क्रोड अने बोंहोतेर लाख चैत्यो छे. तिरछालोकमा प्रत्येक भवने एक एक चैत्यनो सद्भाव होवाथी बत्रीशोने पचोतेर चैत्यो छे. ते चैत्योने विस्तार पूर्वक कहे छे. पाचमेरु, वीश गजदंता पर्वतो, जंबू शाल्मली प्रमुख दश वृक्षो, एंशी वखारा पर्वतो, एकसो सीतेर दीर्घ वैताढ्य पर्वतो, त्रीश कुलगिरि पर्वतो, चार इषुकार पर्वत, मानुषोत्तर पर्वत, नंदीश्वर द्वीप, कुण्डलद्वीप, अने रुचकद्वीपने विषे अविसवादी स्थानोमा चारशो ने त्रेशठ चैत्यो जे पूर्वे कहेला छे, ते जाणवा. बाकी रहेल चैत्योनी सख्या विसंवादी स्थानने विषे छे, ते आ प्रमाणे—पाचमेरुनी अपेक्षाए पाच भद्रशाल वनने विषे आठ आठ करिकूट (हाथीना आकारना) पर्वतो छे. ते दरेक पर्वत उपर एक एक चैत्य होइ बधा मळी चालिश चैत्यो आवेला छे. गगा सिंधु वगेरे नदीओना प्रपात कुडो त्रणसो ने एंशी छे, ते दरेकमा एक एक चैत्य होवाथी त्रणसोने एंशी चैत्यो त्या रहेला छे. एंशी प्रद्रह छे. तेमापण एंशी चैत्यो छे, पाच देवकुरु अने पांच उत्तरकुरुने विषे दश चैत्यो, हजार काचनगिरिओने विषे हजार चैत्य, अने वीश यमलगिरिमां वीश चैत्यो छे; सीतेर गगादि महा नदीओमां सीतेर चैत्यो छे; वीश वृत वैताढ्योने

विषे वीश चैत्यो छे. जबू, शाल्मली, प्रमुख, मूल दश वृक्षोने विषे जे दश चैत्यो छे, ते पूर्वे कहेल अविसवादी चैत्योनी गणनामा ग्रहण करेला छे , पण तेना परिवार जूत एवा अगीयारसो अने साठनी सख्यावाळा लघु जबू आदी वृक्षो छे, तेओमा चैत्योनी सख्या तेटली ज छे , ते आ स्थले ग्रहण करवा

वत्री वत्रीश राजधानीओने विषे वत्रीश चैत्यो छे. एथी विसवादी स्थानना सर्व चैत्योनी सख्या वे हजार, आठसो अने वारनी थाय छे. एवी रीते अविसवादी तथा विसवादी बने स्थानोना सर्व चैत्योनी सख्या मेळवतां कुल मळीने वत्रीशोने पचोतेर चैत्यो थाय छे अने ऊर्ध्व लोकने विषे चोराशी लाख, सत्ताणु हजार अने त्रेवीश चैत्योनी सख्या छे ते सख्या प्रत्येक विमाने एकेक चैत्यना सद्भावथी थाय छे. ए प्रथम गाथानो अर्थ थयो.

वाकीनी वे गाथा वमे ते कहेला चैत्योने विषे अनुक्रमे जिन बिंबोनी सख्या दर्शावे छे. अधो लोकने विषे तेरसोने नेवाशी क्रोम अने साठ लाख प्रतिमाओ छे. तेटली सख्या दरेक चैत्ये एकसो एशी जिनविंबना सद्भावथी थाय छे. तिरछा लोकमां त्रण लाख, त्राणु हजार, वशो अने चालीश जिन विंबो छे, ते आ प्रमाणे—नदीश्वर, रुचक अने कुंडल द्वीपने विषे रहेला साठ चैत्योमा प्रत्येकने विषे एकसो चोवीश विंबोना सद्भावथी अने वाकीना स्थानने विषे रहेला सत्यावीशसो अने वावन चैत्योनी अदर एकसो वीश विंबोना सद्भावथी—ऊपर कहेली सख्या थाय छे.

तथा ऊपरना लोकमा एकसो वावन क्रोम, चोराणु लाख, चुमालीश हजार सातसो अने साठ शाश्वत प्रतिमाओ छे वार देवलोकने विषे रहेला चैत्योनी अदर प्रत्येके एकसो एशी विंबोनो स्वीकार होवाथी तेमज नवग्रैवेयक तथा पाच अनुत्तर विमानने विषे रहेला चैत्योनी अदर प्रत्येके एकसो वीश जिनविंबो होवाथी ऊपर कहेली सख्या थाय छे. ए वीजी गाथानो अर्थ जाणवो सर्व चैत्योना जिनविंबोनी सख्या केटली छे ? तेने माटे नीचेनी बे गाथा कहेली छे

"सव्वेवि अठकोमि लक्का सगवन्न कुसयअमनठआ ।
तिहुअण चेइय वंदे असंखुदहि दीवजोइवणे ॥ १ ॥

पनरसकोमिसयाइं कोमि बायाल लक्खअडवन्ना ।
अमतीससहसवंदे सासयजिण पमिमतियलोए ॥ २ ॥

आ गाथानो अर्थ सुगम छे, मात्र तेमा एटलोज विशेष छे के, समुद्र द्वीप ज्योतिषीना विमानो, अने व्यंतर देवोना नगरो असख्याता छे, तेमने विषे रहेला असख्याता चैत्योने हु वदन करु छुं. अहिं प्रथम करिकूटादि पर्वतोने जे विसवादी स्थानपणु कह्यु छे, ते जंबूद्वीप प्रज्ञप्ति विगेरे ग्रथोमा ते स्थानोने विषे चैत्योने कहेला नथी, तेथी कहेल छे. वली तेने अनुसरती क्षेत्रसमासनी गाथा आ प्रमाणे छे—

" करिकूमदहनइ कुरुकंचणजमलसम वियढेसु ।
जिणज्ञवण विसवाओ जोतं जाणति गियत्था ॥ १ ॥

पूर्वे जे दरेक चैत्य प्रत्ये एकसो आठ जिन बिंबोनी सख्या ग्रहण करेली छे, ते वधी पन्नत्तिने अनुसारेज छे. तथा वैताढ्यने विषे रहेला सिध्धायतन— कूटना अधिकार विषे नीचे प्रमाणे सूत्र छे—

" एत्थणं महं एगे सिध्धाययणे पन्नत्ते कोसं आयामेणं अध्धकोसं विक्खम्नेणं देसूण कोस उढ्ढं उच्चत्तेण अट्ठगाइ धणु सयाइं विक्खम्नेण तावंतिय चेव पवेसेण सेयावर कणगथूज्ञि- यागा दारवण्णओजाववणमाणा तस्सण सिध्धायतणस्स वहुसमरमणिज्जस्स भूमिन्नागस्स वहु मज्झादेसज्ञागे एत्थणं महएगे देवच्छंदे पन्नत्ते इत्यादि ॥

आ पाठमा एकसो आठ आठ प्रतिमा कहेली छे अने ते पछी ते जिन प्रतिमानो परिवार कहेल छे.

ए रीते जंबूद्वीपने विषे रहेला सर्व चैत्योने विषे प्रत्येक तेमां एकसो आठ जिन प्रतिमा छे. ते ज्या उपागमा कहेल छे, तेने अनुसारे त्रण लोकना सर्व चैत्योने विषे प्रत्येक चैत्ये एकसो आठ जिन प्रतिमा जाणी लेवी एज कार-

एथी ' कम्मभूमि ' इत्यादि स्तोत्रने विषे पण एज प्रमाणे संख्या प्रतिपादन करेली छे, तेथी सद्बुद्धिवालाओए विचार करवो अने जैनागम सर्व प्रमाण भूत मानवो.

आहिं कोइ प्रश्न करे के, "तमोए ए प्रकारे चैत्योनी अने जिन बिंबोनी संख्या प्रतिपादन करी पण जो चैत्यादिकनी संख्या अधिक हशे, तो पछी तेनी ओछी संख्या कहेवामा मोटो दोष उत्पन्न थशे " आ प्रश्ननो उत्तर आपे छे—" तमे जे शंका करी ते सत्य छे, पण ते कारणने लइने स्तोत्रने अंते त्रिलोकवर्त्ती सर्व शाश्वता तथा अशाश्वता जिन चैत्यादिकने नमस्कारनु प्रतिपादन करनारी ' ज किंचि नाम तिथ्य ' इत्यादि गाथा कहेली छे, माटे तेमा उपरनो दोष उत्पन्न थशे नहीं. अने तत्त्वथी तो तेनो निर्णय केवली अथवा बहु श्रुत जाणे विवाद करवामा काइ पण सिद्धि थती नथी

सम्यग् दृष्टिओने तो " तमेव सच्च निस्सक ज जिणेहिं पवेइय " आ वाक्यज ग्रहण करवा योग्य छे. ते विषे हवे बहु विस्तार करवानी जरूर नथी.

हवे अविसवादी तथा विसवादि बने स्थानकने आश्रीने त्रिभुवनने विषे रहेला शाश्वत जिनचैत्योनु प्रमाण दर्शावे छे बार देवलोक, नव ग्रैवेयक, पाच अनुत्तर अने नदीश्वर, कुण्डल तथा रुचक नामना द्वीपोने विषे रहेला जिन चैत्यो बोंतेर योजन ऊचा एकसो योजन लाबा अने पचास योजन पोहोळा छे कुलगिरि, देवकुरु, उत्तर कुरु, मेरवन, गजदतपर्वत, वखारा पर्वत, इषुकार पर्वत, मानुषोत्तर अने असुरकुमारादि दश निकायने विषे रहेला चैत्यो छत्रीश योजन ऊचा, पचाश योजन लाबा अने पचाश योजन पोहोळा छे. दीर्घ वैताढ्य, मेरुनी चूलिका, काचनगिरि, महा नदीओ, कुण्डो, जबू प्रमुख वृक्षो, वैताढ्य, द्रहो, यमल पर्वतो, अने करिकूट गिरिओने विषे रहेला चैत्यो चौदशें चुमालीश धनुष ऊचा, एक गाऊ लाबा अने अर्ध गाऊ पोहोळा छे, राजधानी, व्यतर देवताना नगरो, अने ज्योतिष्क विमानोने विषे रहेला चैत्यो नव योजन ऊचा, साडाबार योजन लाबा अने सवाछ योजन पोहोळा छे. इत्यादि सर्व सद्बुद्धिवत पुरुषोए विचारी लेवु

जे नंदीश्वर, रुचक अने कुंमल ए त्रण द्वीपोने स्थाने रहेला सात चैत्योने चार चार द्वार छे अने ते शिवायना सर्व शाश्वत चैत्योने त्रण त्रण द्वार छे. वली शाश्वत जिन चैत्योमा रहेला जिन बिंबो:-ऋषजानन, चंद्रानन, वारिषेण अने वर्द्धमान एवा चार नामे ओलखाय छे. अने ते आगमने विषे प्रतिपादन करेल छे.

एवी रीते शाश्वत जिनचैत्य संबंधी वक्तव्यता कही अने जक्तिकृत विगेरे अशाश्वत जिनचैत्योना गुणदोषनु वर्णन करेछे कपाल, नासिका, मुख, ग्रीवा, हृदय, नाजि, गुह्य, साथल, जानु, पींमी अने चरण प्रमुख अगीयार अंगोमा जे प्रतिमा वास्तुकादि ग्रंथने विषे कहेला प्रमाणवाळी होय, नेत्र, कान, खांध, हाथ अने अंगुलि आदि सर्व अवयवोवमे अदूषित होय, समचोरस संस्थाने • रहेल पर्यंकासने युक्त होय, कायोत्सर्गे करी विराजित होय, सर्वांगे सुंदर होय अने विधिवमे चैत्यादिकमा प्रतिष्ठित करी होय, तेवी प्रतिमा पूजवाथी सर्व जवी प्राणीओने ते मन वांछित आपनारी थाय छे. उपर कहेला लक्षणोथी रहित एवी जिनप्रतिमा अशुन्न अर्थनी सूचक होवाथी अपूज्य छे. जे प्रतिमा उपर कहेला लक्षणोथी युक्त होय, पण जो सो वर्ष अगाउ कोइ प्रकारे अवयवोथी दूषित थइ होय तो ते पण अपूज्य गणाय छे. पण जो उत्तम पुरुषे विधिपूर्वक चैत्यादिकने विषे प्रतिष्ठित करेली होय अने ते सो वर्ष पछी अगथी विकल थइ गइ होय तो तेने पूजवामा बीलकुल दोष नथी तेने माटे शास्त्रमा नीचे प्रमाणे कहेलु छे के—

" वरससयाओ उड्ढ जं विंब उत्तमेहिं संठवियं ।
वियलंगुविपूइज्जाइ त विंबं निक्कलन जओ ॥ १ ॥

अहिं एटलो विशेष छे के, मुख, नेत्र, मोक अने कटी जाग आदि प्रदेशने विषे खंमित थयेल मूलनायक बिंब सर्वथा पूजवाने अयोग्य छे. अने आधार, परिकर अने लांछनादिक प्रदेशो करीने खंमित होय तो ते पूजनिक छे. जेम धातु तथा लेप आदिना बिंबो विकल अंग थवाथी फरीथी समाराय छे, तेम पाषाण, काष्ट तथा रत्नमय बिंब खंडित थवाथी फरीथी सज्ज करी शकाता नथी.

तेम वळी अतिशय अंगवाळी, हीन अंगवाळी, कृशोदरी, वृष्णोदरी, कृश हृदयवाळी, नेत्रादिकथी हीन, ऊंची दृष्टिवाळी, नीची दृष्टिवाळी, अधो मुखवाळी अने जयकर मुखवाळी प्रतिमा देखनारने शांत जाव नहीं उत्पन्न करनारी तेमज स्वामीनो नाश, राजादिकनो जय, इव्यनो नाश, अने शोक–सताप आदि अशुजने सूचवनारी होवाथी ते सज्जन पुरुषोने अपूजनीय कहेली छे. अने यथोक्त उचित अगने धरनारी अने शांत दृष्टिवाळी जिनप्रतिमा सद्भावने उत्पन्न करनारी तथा शांति अने सौजाग्यनी वृद्धि करवा प्रमुख शुज अर्थने आपनारी होवाथी सदा पूजनीय कहेली छे.

गृहस्थोए पोताना घरने विषे केवी प्रतिमा पूजवी जोइए ?

गृहस्थोए पोताना घरने विषे केवी प्रतिमा पूजवी जोइए ? तेनु स्वरुप दर्शावे छे. पूर्वे दर्शावेला दोषथी रहित, एकथी लइने अगीयार आंगळ सुधीना मानवाळी, परिकर सहित,–एटले अष्ट प्रातिहार्य सहित, सुवर्ण, रुपु, रत्न अने पीतळादि धातुमय अने सर्व अगे सुदर, एवी जिन प्रतिमा गृहस्थे पोताना घरने विषे स्थापी सेववा योग्य छे. परिकर विनानी उपर कहेला मानथी रहित, पाषाण, लेप, दात, काष्ट, लोह अने चित्रमां आलेखेली जिनप्रतिमा गृहस्थने पोताना घरने विषे पूजनिक नथी–एटले पूजवी न जोइए तेने माटे शास्त्रमां कह्यु छे के, —

" समयावलि सूत्ताओ लेवोवलकट्टदतलोहाए ।
परिवारमाणरहिय घरमि नहु पूयए बिंब ॥ १ ॥

ते घर देराशरनी प्रतिमानी आगळ बलिबाकुलनो बहु विस्तार न करवो , पण जावथीज निरतर न्हावण करवु, अने त्रिकाळ पूजा करवी. अगीयार आंगळथी अधिक प्रमाणवाळी जिनप्रतिमा घरने विषे पूजवी नहीं. तेवी प्रतिमा तो देराशरने विषेज पूजवा योग्य छे. तेमज अगीयार आगळथी हीन प्रमाणवाळी प्रतिमा मोटा देराशरमां स्थापवी नहीं, ए पण विवेक राखवो

विधिपूर्वक जिनबिंबना करनार तथा करावनारने सर्वकाळ समृद्धिनी

वृद्धि थाय छे. दारिद्र, दुर्भाग्य, नठारु शरीर, दुर्गति, हीनबुद्धि, अपमान, रोग अने शोक वगेरे दोषो कोइकाळे पण थता नथी.

अहिं जिनचैत्यना अधिकारमा घणी बाबत कहेवानी छे, पण ते विषे श्रीआचारदिनकर प्रमुख ग्रथोथी जाणी लेवुं. ए प्रकारे पाच प्रकारना चैत्योनी वक्तव्यता कहेवामा आवी, हवे तेना विनयनु स्वरुप कहे छे.

चैत्य विनयनु स्वरूप

द्वित्रिपंचाष्टादिभेदै प्रोक्ता भक्तिरनेकधा ।
द्विविधा द्रव्यभावाभ्यां त्रिविधागादिभेदत· ॥ १ ॥

पूर्वे विनय, भक्ति, बहुमान वगेरे जे कहेला छे, तेना प्रकार कहे छे. भक्ति बे, त्रण, पाच अने आठ वगेरे भेदोथी अनेक प्रकारनी छे. तेमा द्रव्य अने भावथी बे प्रकारनी छे अने अग, अग्र अने भाव—एम त्रण प्रकारनी छे. तेमा जल, विलेपन, पुष्प अने आभरण वगेरेथी जे अग पूजा थाय छे, ते बतावे छे. दु·खे करीने प्राप्त थयेला सम्यक्त्व रत्नने स्थिर करवानी इच्छावाळा विवेकी पुरुषे पोते प्रथम पवित्र थइ, बादर जीवनी यतनादिकने माटे शुद्ध वस्त्र पेहेरी जिनालयमा जवु. त्या श्री जिनेश्वर समान मुद्राए युक्त, एवा श्री जिनबिंबने मार्जन करी, कपूर, पुष्प, केशर, तथा साकर प्रमुखथी मिश्रित सुगंधी जलवडे स्नात्र करवु. ते पछी कपूर, केशर, अने चदन आदि द्रव्योथी विलेपन करवु, ते पछी पुष्प पूजा करवी. भव्य प्राणीए सामान्य पुष्पोथी प्रभु पूजा न करवी. तेने माटे नीचे प्रमाणे कहेलु छे—

" न शुष्कै· पूजयेद्देवं कुसुमैर्न महीगतै ।
न विशीर्ण फलस्पृष्टैर्नाशुभैर्नाविकासिभि· ॥ ॥ १ ॥"

सुकाइ गयेला, पृथ्वीपर पडेला, सडीने विशीर्ण थयेला, फळोथी स्पर्शाएला, अशुभ अने विकास नहीं पामेला पुष्पोथी जिनेश्वरनी पूजा करवी नहीं. १

" पूतिगंधान्यगंधानि आम्लगधानि वर्जयेत् ।
कीटकोशापविद्धानि जीर्ण पर्युषिता निच ॥ २ ॥

नठारा गधवाळा, सुगध वगरना, खाटा गधवाळा, कीमाए वींधेला, जु ना अने वासी पुष्पोथी पूजा करवी नहीं २

हस्ता त्प्रस्खलितं क्षितौ निपतित लग्नं कचित्पादयो
र्यन्मूर्ध्वोर्ध्वगतं धृत कुवसनैर्नाभेरधो यद् धृतम् ।
स्पष्टं दुष्टजनैर्घनैरभिहित यद् दूपित कीटकै.
त्याज्य तत्कुसुमं दलं फल मथो भक्तैर्जिनप्रीतये ॥ ३ ॥

हाथथी पमीगयेलु, पृथ्वीपर पमेलु, पगमा कोइ ठेकाणे अमकेलु, मस्तक उपर चमेलु, नठारा वस्त्रोमा लीधेलु, नाभिनी नीचे राखेलु, दुष्ट लोकोए स्पर्शेलु, धनथी हणाएलु, अने कीमाओए दूपित करेलु एवु पुष्प, पत्र अने फल जिनेश्वरनी प्रीतिने माटे भक्तोए त्यजी देवु ३

उपर कहेला दूपित पुष्पोवमे प्रभुनी पूजा करवाथी माणस नीचपणाने पामे छे. तेने माटे कह्यु छे के,

" पूजा कुर्वन्नगलग्नैर्धरामा पतितैः पुन. ।
यः करोत्यर्चन पुष्पै रुच्छिष्ट सोऽभिजायते ॥ १ ॥ "

अग उपर लागेला अने पृथ्वीपर पमीगयेला पुष्पोथी जे पुरुप पूजा करे छे, ते पुरुष उच्छिष्ट थइ जाय छे. एटले नीचपणाने पामे छे. १

ए कारण माटे उपर कहेला दोपथी वर्जित एवा पुष्पोवमे जिनपूजा करवी. तेवा उत्तम प्रकारना पुष्पोनी पजाना प्रभावथी भव्य प्राणीना घरने विषे धनसारनी पेठे सर्व सुखवाळी समृद्धिनी वृद्धि वगेरे प्रगट थाय छे अने दारिद्र, शोक, अने सताप आदि पापना उदय दूर थइ जाय छे. आ प्रमाणे आ लोकमा फल मळे छे अने परलोकमा देव लोकना तथा मोक्षना सुखनी प्राप्ति थाय छे.

पुष्प पूजा विपे धनसारनी कथा

कुसुमपुर नामन नगरने विपे धनसार शेठ रहेतो हतो. ते हमेशा त्रिकाळ जिनपूजा वगेरे कार्यो करवामा तत्पर हतो. एक वखते अर्धरात्रे ते धनसार

शेठना मनमा आ प्रमाणे विचार थयो—" मे पूर्वभवे सारां काम करेलां हशे, तेथी आ भवमा ते शुभ कर्मना बलथी मने आ वृद्धि पामती समृद्धि प्राप्त थइ छे हवे जो हु आ भवने विषे काइ शुभ कार्यनी क्रियानु सेवन करुं तो हु पाछो आगामी भवे समृद्धिना सुखने प्राप्त करनारो थइश. वली जे आ समृद्धि देखाय छे, ते पण हाथीना कर्णनी जेम चचल छे, माटे आ प्राप्त थयेली लक्ष्मीने सफल करवाने अने परलोकमा सुख पामवाने अर्थे हुं एक जिन प्रासाद करावीश, कारण के, शास्त्रने विषे श्री जिनप्रासाद करावबानु महा फल कहेलुं छे. अने तेथी मोटा पुण्यनी प्राप्ति दर्शावी छे. तेथी प्रथम एज कार्य करी मने प्राप्त थयेल आ मनुष्यभव वगेरेनी सर्व सामग्री मारे सफल करवी उचित छे."

आ प्रमाणे चिंतवन करता धनसार शेठने बाकीनी सर्व रात्रि व्यतिक्रांत थइ गइ. ज्यारे प्रभात समय थयो एटले ते धनसारे न्यायथी उपार्जन करेली पोतानी लक्ष्मीवमे बावन जिनालयवाळुं एक जिनमदिर करावानो आरंभ कर्यो. आ कार्यमा प्रतिदिन घणा द्रव्यनो खर्च थवाथी तेना पुत्रे पोताना पिता धनसारने पूछ्युं.—" पिताजी, सर्व द्रव्यने नाश करनारु आ वृथा काम केम आरभ्यु छे ? आ काम मने बीलकुल रुचतु नथी. आ द्रव्यथी नवा घर, अने नवीन आभूषणो कराव्या होय तो वधारे सारु. कारण के, घर अने आभूषण वगेरे कोइ कालातरे काम आवे छे " पुत्रना आ वचनो शेठ धनसारे जाणे सांभळ्या नहोय तेम काढी नाख्यां. तेणे ते उपर बीलकुल ध्यान आप्युं नहीं. धनसार शेठे तो उल्लास सहित चमता परिणामे करी द्रव्यनो भारे व्यय करी ते जिनालयने पूर्ण कराव्यु. ज्यारे चैत्य पूर्ण थयु, त्यारे कोइ पूर्वना अतराय कर्मना उदयथी तेना घरमा रहेला सर्व द्रव्यनो नाश थइ गयो. आ वखते तेनो पुत्र अने बीजा मिथ्यात्वी लोको बोलवा लाग्या के " धनसार शेठे जिनालय कराव्युं, तेथी तेना सर्व द्रव्यनो नाश थइ गयो." ते लोको आम बोलतां तोपण जेनु चित्त जैन धर्मने विषे दृढ छे एवो धनसार शेठ पोताना द्रव्यना प्रमाणमां थोडु थोडु पुण्य कर्या करतो हतो.

एक वखते धर्मगुरु भगवान् ते नगरमा पधार्या. धनसार तेमने वदना क-

रवाने गयो. गुरुए ए धर्मी शेठने पुछ्यु, ' केम तमारे सुखशाता छे ? ' त्यारे शेठे कह्यु, " जगवन्, तमारी कृपाथी सुखज छे, पण धर्मना निंदक लोको बोले छे के, " जिनालय कराववाथी आ धनसार शेठनु सर्व द्रव्य नाश पामी गयु " आवी धर्मनी निंदा सांजळी मारा मनने चिंता थाय छे. मारु द्रव्य नष्ट थयु, तेनी चिंता मने बीलकुल नथी पण धर्मनी निंदा थवाथी मने जारे खेद थायछे. द्रव्यने माटे तो हु समजु छु के, शुज कर्मना उदयथी द्रव्य बहु वार आवेछे अने अंतराय कर्मना उदयथी नाश पामे छे. हे स्वामी, आप ज्ञानना बलथी जुओ अने मने कहो के " आ जवने विषे मारु अंतराय कर्म तुटशे के नहीं ?" धनसार शेठना आ वचनो सांजळी ते गुरु संतुष्ट थइ गयो, अने तेमणे पोताना ज्ञानना बलथी धनसार शेठना अशुज कर्मनो नाश अने शुज कर्मनो उदय जाणी लीधो. पछी धर्मनी उन्नति करवाने माटे गुरुए ते धनसार शेठने सर्व मंत्रोमां श्रेष्ठ अने महामंगल रुप नवकार मंत्र साधन विधि सहित आप्यो धनसार शेठ ते मंत्रने विधि सहित जाणी जिनालयमा जइ मूलनायक प्रभुनी आगळ रही अष्टमतप आचरवा पूर्वक ते महा मंत्रनो जप करवा लाग्यो. ज्यारे ए तपना पारणानो दिवस आव्यो पटले ते दिवसे एक अखंमित उत्तम पुष्पोनी माला श्री जिनेश्वरना कंठमा स्थापी. जेवामा प्रजुनी स्तुति करवा प्रवर्त्यो, तेवामा नाग कुमार देवतानो इंद्र धरणेंद्र संतुष्ट थइ ते शेठनी आगळ प्रगट थयो. अने बोल्यो, " धनसार शेठ, तमारी जक्तिथी हु संतुष्ट थयो छु जे इच्छा होय ते मागी लो धनसार शेठे प्रजुनी स्तुति पूर्ण करीने कह्यु, " देव, जो तमे मारी पर संतुष्ट थया हो तो, आ प्रजुना कंठमा आरोपण करेली पुष्पमाला वमे जे पुण्य प्राप्त थयु होय, तेनु फल मने आपो " धरणेंद्रे कह्यु, " शेठ, ते अर्पण करेली पुष्पमालाना पुण्यनु फल आपवाने हु समर्थ नथी. चोसठ इंद्रो पण तेनु फल आपवाने शक्तिमान् नथी, माटे बीजु काइ मागो " शेठे कह्यु, " कदि तमे बधी पुष्पमालानु फल आपवाने असमर्थ हो तो ते मालाने विषे रहेल एकज पुष्पनु फल आपो " इंद्रे कह्यु, " ते पण आपवाने हु समर्थ नथी." धनसार शेठे कह्यु, " ज्यारे तमारामा एटलु फल आपवानी पण शक्ति नथी तो तमे तमारे स्थाने पाछा चाल्या जाओ. " धनसार शेठना ए वचन सांजळी धरणेंद्रे कह्यु, " शेठजी, देवतानु दर्शन निष्फल होय नहीं, माटे तमारा घरमां में रत्नोथी

भरेला सुवर्णना कलशो स्थाप्या छे. " आटलुं कही धरणेंद्र अदृश्य थइ गयो.

ते पछी धनसार शेठ ज्यां गुरु महाराज हता, त्यां आव्यो. अने तेमनी समक्ष ते देवेंद्र संबंधी वृत्तांत जणाव्यो. पछी पोताने घेर आवी पारणुं कर्युं. पारणुं कर्या पछी धनसारे जैनधर्मनी निंदा करवामां तत्पर एवा पोताना पुत्रोने बोलावी पूर्वेनो सर्व वृत्तांत कही संभळाव्यो अने रत्न जडित सुवर्णना कलशो बताव्या. ते पछी श्री जिनेश्वरनी पुष्पनी पूजानो महिमा वर्णवी पोताना सर्व कुटुंबने जैनधर्मना मार्गमां स्थिर करीने धनसार शेठ जावजीव सुधी सुखी, भोगी, दानी अने जितेंद्रिय थयो हतो. आ प्रमाणे पुष्प पूजा उपर धनसार शेठनी कथा छे.

आभरण पूजा

विवेकी पुरुषोए सुवर्णना अने रत्नोना चक्षु, श्रीवत्स, हार, कुंडल, बीजोरुं, छत्र, मुगट अने तिलक आदि अनेक प्रकारना आभरणो के जे पोते तथा अन्य पुरुषोए अणभोगवेला होय ते जिनबिंबने घटमान स्थाने आरोपित करवा, जे दमयंती वगेरेए करेला हता. दमयंती के जे पूर्वभवे वीरमती नामे स्त्री हती, तेणीए अष्टापद पर्वतने विषे चोवीश जिनबिंबोना ललाटने विषे रत्नना तिलको आरोपित कर्या हता. ते पुण्यना प्रभावथी ते त्रीजे भवे स्वाभाविक तिलकथी अलंकृत ललाटवाळी अने तेनी कांतिवडे निरंतर अंधकारनो नाश करनारी त्रिखंडना अधिपति नळ राजानी दमयंती नामे राणी थइ हती. ते शिवाय बीजा पण घणा भव्य जीवो आभरण पूजाना प्रभावथी सुखनी श्रेणीने पामेला छे. आ प्रमाणे पेहेली अंगपूजा कहेवामां आवी.

बीजी अग्र पूजा

नैवेद्य, फळ, अक्षत अने दीवा प्रमुखथी अग्र पूजा थाय छे. अहिं उत्तम प्रकारना मोदक प्रमुख खाजा ते नैवेद्य कहेवाय छे. श्रीफळ बीजोरा वगेरे फळ कहेवाय छे. पोताने भोग्य एवुं खंड रहित अने उज्वल एवुं शालिप्रमुख धान्य विशेष ते अक्षत कहेवाय छे. ते नैवेद्य, फळ अने अक्षत प्रभुनी पासे मुकवा. ते साथे प्रधान यतना पूर्वक प्रभु समीपे श्रेष्ठ घृतनो दीपक करवो. अहिं विवेकी

गृहस्थे एटलु ध्यानमा राखवानु के, ते प्रभुना दीपकवर्मे पोतानु गृहकार्य कांइपण करवु नहीं जो कोइ ए दीपकवर्मे गृहकार्य करे तो ते देवसेननी मातानी जेम तिर्यंच प्रमुख योनिओमां उत्पन्न थाय छे. अने तेथी मोटा दुःखनु भाजन थाय छे. ते विषे कह्यु छे के, –

दीप विधाय देवाना मग्रत . पुनरे वह्नि ।
गृह कार्यं न कर्तव्य कृते तिर्यग् भवो भवेत् ॥१॥

"देवनी आगळ दीवो करी ते दीवा वर्मे गृहकार्य न करवु. तेम करवाथी तिर्यंचनो भव प्राप्त थाय छे." १

ते विषे देवसेननी मातानु दृष्टांत

इन्द्रपुर नामना नगरमा अजितसेन नामे राजा हतो. ते नगरमां देवसेन नामे एक शेठ रहेतो हतो. ते उत्तम श्रावक हतो. ते हमेशा धर्म कार्य करी सुखे काळ निर्गमन करतो हतो ते नगरमा धनसेन नामे एक ऊटने वहन करनारो पुरुष हतो. तेना घरमांथी एक ऊटडी निरतर देवसेन शेठने घेर आव्या करती हती. ऊष्ट्रवाहक धनसेन लाकडीओना प्रहार करी तेणीने ताडन करतो तो पण ए ऊटडी तेना घरमा रहेती नहीं देवसनने घेर आव्या करती हती. ते ऊट डीने अति मार पडतो जोइ जेनु हृदय दयाथी आर्द्र छे, एवा देवसेन शेठे मूल्य आपीने ते ऊटडी खरीदी लीधी अने पोताने घेर राखी.

एक वखते धर्मघोष आचार्य ते नगरने विषे पधार्या. ते खबर साभळी घणा भव्य जीवो तेमने वदना करवाने गया. तेमनी साथे देवसेन शेठ पण गयो हतो. ते वखते ते गुरुए तेमने नीचे प्रमाणे धर्मोपदेश आप्यो.

"धर्मो जगत सार सर्वसुखाना प्रधानहेतुत्वात् ।
तस्योत्पत्तिर्मनुजात्सार तेनैव मानुष्यम् ॥ १ ॥
अपि लभ्यते सुराज्य लभ्यते पुरवराणि रम्याणि ।
न हि लभ्यते विशुद्ध सर्वज्ञोक्तो महाधर्म· ॥ २ ॥

न धम्मकज्जं परमत्थि कज्जं, न पाणि हिंसा परमं अकज्जं।
न प्रेमरागा परमत्थि बंधो, न बोहिलाभा परमत्थि लाभो॥३॥

" सर्व सुखोनु मुख्य हेतु होवाथी धर्म आ जगतमां सार रुप छे. ते धर्मनी उत्पत्ति मनुष्यथी थायछे, तेथी मनुष्य पणज तेमां सार रुप छे. कदि सारु राज्य प्राप्त थाय अने मनोहर नगरो मेळवी शकाय पण शुध्ध एवो सर्वज्ञ कथित धर्म मेळवी शकातो नथी. धर्म कार्यना जेवु बीजु उत्कृष्ट कार्य नथी. जीव हिंसाना जेवु बीजु उत्कृष्ट अकार्य नथी, प्रेमरागना जेवो बीजो उत्कृष्ट बंध नथी अने बोधिलाभना जेवो बीजो उत्कृष्ट लाभ नथी." १-२-३.

आ प्रमाणे धर्मघोष गुरुनो उपदेश सांभळ्या पछी देवसेन शेठे गुरुने आ प्रमाणे पुछ्युं,-" स्वामी, कोइ एक उंटनी छे, ते मारा घर शिवाय कोइ बीजे ठेकाणे रहेती नथी, तेनु शु कारण हशे ? " गुरु महाराजे कह्यु, " भद्र, ए उंटनी पूर्व भवे तारी माता हती. एक दिवसे तेणीए श्री जिनेश्वरनी आगळ दीवो करी ते दीवावडे पोताना घरना काम कर्या. तेमज प्रभु आगळ करेला धूपना अंगारा वडे घरनो चुलो सळगाव्यो हतो. ते पापने तेणीए आलोव्युं नहीं, अने काळे करी मृत्यु पामी गइ. ते कर्मना योगे ते अहि उंटनी थइने अवतरी छे. पूर्व भवना स्नेहथी ते तारा घरने छोडती नथी." आ वार्त्ता सांभळी देवसेन शेठ वगेरे भव्य लोको देव संबंधी वस्तुना एवा उपयोगनुं फल जाणी तेनो त्याग करवाने उजमाळ थया, अने ते गुरु महाराजने नमी पोतपोताने स्थाने चाल्या गया हता.

आ प्रमाणे देवसेननी मातानु दृष्टांत लक्षमा लही संसारथी भय पामनारा भव्य जीवोए देवनी वस्तुओवडे पोताना घरनु कार्य न करवु देव उपर चडेनु थोडु पण ग्रहण करवु नहीं. देवनी सुखडनु तिलक पण न करवु, अने देवना जळवडे पोताना हाथ पग पण पखाळवा नही. देव द्रव्य व्याजे पण लेवुं नहीं. अर्थात् देव संबंधी वस्तु पोताना काममा कदिपण लेवी नहीं.

त्रीजी भाव पूजा

आ त्रीजी भाव पूजा जिनेश्वरने वंदन स्तवन स्मरण वगेरेथी थाय छे.

प्रथम उचित स्थाने रही चैत्यवदन करवु. तेमा शक्रस्तव विगेरे बोलवा. एटले लोकोत्तर एवा तीर्थंकरना छता गुणोने वर्णन करनारा वचनो वडे स्तुति करवी. ते पछी श्री जिनेन्द्रने पोताना हृदयकमळमा स्थापी तेमना गुणोनु स्मरण करवु, तथा प्रभुनी आगळ नाटकादि करी रावणनी जेम अखडभाव धारण करवो. जेम लंकाना स्वामी रावणे एक समये अष्टापद पर्वतने विषे भरत राजाए करा वेला पोतपोताना वर्ण प्रमाणवाला चोवीश जिनेश्वरोना प्रसादनी अदर ऋषभा दिक प्रभुओनी द्रव्यपूजा करी हती, अने मदोदरी प्रमुख सोळहजार अत.पुर साथे नाटक कर्यु हतु, ते समये तेणे तेनी वीणानी तात तुटी जता प्रभुना गुण गानना रगमा भग पडवाना भयथी पोताना शरीरमाथी नस खेंचीने साधी हती. तेवी जिन भक्तिथी ते रावणे तीर्थकर नाम कर्म उपार्जन कर्यु हतु. जे रावण महाविदेह क्षेत्रने विषे तीर्थंकर थशे

ए प्रमाणे बीजा पण भव्य जीवोए जिनपूजाने विषे यत्न करवो जोइए, तेने माटे भाष्यमा नीचे प्रमाणे लख्यु छे

" यद्यपि गंधव्वनट्टवाइयलवणजलारत्तियाइ दीवाइ जं किच त सव्व पिओअरइ अग्गपूआ " ॥ १ ॥

आ वचनथी जो के नाटकने अग्र पूजामा गणेल छे, तो पण ते नाटक भाव मिश्रित होवाथी, तेमा भावनी प्रधानता छे, तेथी तेने भाव पूजामा कहेलु छे, ते दोष नथी, एम जाणवु ए प्रकारे त्रीजी भाव पूजा जाणवी.

पाच प्रकारनी पूजा

पांच प्रकारनी पूजा आ प्रमाणे कहेवाय छे १ पुष्प प्रमुखनी पूजा, २ जिनेश्वरनी आज्ञा, ३ देव द्रव्यनु रक्षण करवु, ४ उत्सव अने ५ तीर्थ यात्रा आ पाच प्रकारे जिनेश्वरनी भक्ति पण कहेवाय छे ते विषे कह्यु छे के—

" पुष्पाद्यर्चा तदाज्ञा च, तद्द्रव्य परिरक्षणम् ।
उत्सवास्तीर्थयात्रा च, भक्ति पचविधाजिने " ॥ १ ॥

" पुष्पादिकथी पूजा करवी, जिनेश्वरनी आज्ञा मानवी, देव द्रव्यनु

रक्षण करवु, उत्सवो करवा अने तीर्थ यात्रा करवी—ए पाच प्रकारनी जिनेश्वरनी नक्ति कहेवाय छे. " १

जिनेश्वरनी नक्ति पाच प्रकारे थाय छे. केतकी, चपक, जाइ, जुइ, शतपत्र वगेरे अनेक प्रकारना उत्तम पुष्पो तथा धूप, दीप अने चदनादि वडे पूजा करवी ते प्रथम नक्ति कहेवाय छे.

मन, वचन अने कायाए करीने जिनेंद्रनी आज्ञा पाळवी ए बीजी नक्ति कहेवाय छे. जिनेश्वरनी आज्ञा ए सर्व धर्मकृत्यनु मूळ कारण छे, जिनाज्ञा विना सर्व धर्म कार्यो निरर्थक छे, एम जाणी नव्य जीवोए जिनाज्ञा पाळवाने उद्यम करवो. तेने माटे आ प्रमाणे कह्युं छे—

" आणाइतवो, आणाइसंजमो, तह यदाणा माणाए ।
आणारहिओ धम्मो पलाल पूलव्व परिहाइ ॥ १ ॥
नमिओ नवो अणतो तुहआणाविरहिएहि जीवेहि ।
पुणनवियव्वो तेहि जेहिं नगीकया आणा ॥ २ ॥
जो न कुणइ तुह आण सो आण कुणइ तिहुअणजणस्स ।
जो पुण कुणइ जिणाण तस्साणा तिहुअणेचेव ॥ ३ ॥"

" जिनेश्वरनी आज्ञा ए तप, ए सयम अने दान मान ए आज्ञाथी सफळ छे. ते आज्ञा विनानो धर्म ते शाळना फोतरानी जेम निष्फळ छे.

हे जिनेश्वर, तमारी आज्ञाथी रहित एवा जीवो आ अनत ससारमां नम्या छे. अने जे जीवे तमारी आज्ञा अगीकार करी नथी, ते जीवनी गति फरीथी पण तेवीज थशे. २

जे जीव तमारी आज्ञा करशे नही, ते जीव त्रण जगत्ना लोकोनी आज्ञा करे छे एटले तेने त्रण जगत्ना जीवोने ताबे रहेवु पडे छे अने जे जीव तमारी आज्ञा माने छे, तेनी आज्ञाने त्रण जगत्ना जीवो माने छे. ३

देव द्रव्यनु सम्यक् प्रकारे रक्षण करवु,– वृद्धि करवी, ते त्रीजी नक्ति कहेवाय छे. आ ससारने विषे सर्व प्राणीओ पोताना द्रव्यना रक्षणने माटे

तत्पर रहे छे, परतु देव द्रव्यनु रक्षण करवामा – तेने वधारवामा उत्तम जीवोनी ज प्रवृत्ति होय छे. जेओ देव द्रव्यना रक्षणने माटे सारी रीते प्रवर्ते छे, ते प्राणीओ आ लोक तथा परलोकमा सुखनी परपराने प्राप्त करनारा थाय छे, जेओ देव द्रव्यनु भक्षणादिक करे छे, तेओ आ उभय लोकने विषे अति घोर दुःखना भाजन बने छे. ते विषे कह्यु छे के,

"जिण पवयण वुड्ढी कर पभावग नाणदसण गुणाण।
भक्खतो जिणदव्व अणत ससारिओ होइ"॥१॥

" जिन प्रवचननी वृध्धि करनारु अने ज्ञान तथा दर्शन गुणोनु प्रभावक एवा जिन द्रव्यनु जे पुरुष भक्षण करे छे, ते अनत ससारी थाय छे."१

जिण पवयण वुड्ढी कर पभावग नाणदसण गुणाण।
रखतो जिण दव्व परित्त ससारिओ होइ ॥२॥

" जिन प्रवचननी वृध्धि करनारु अने ज्ञान तथा दर्शन गुणोनु प्रभावक एवा जिन द्रव्यनु जे पुरुष रक्षण करे छे, ते पुरुष भव सख्याना प्रमाणवाळो थाय छे. एटले तेना भवनी सख्या परिमित थाय छे "२

" जिण पवयण वुड्ढी कर पभावग नाणदसणगुणाण।
वढ्ढतो जिणदव्वं तित्थयरत्त लहइ जीवो ॥३॥

" जिन प्रवचननी वृध्धि करनारु अने ज्ञान तथा दर्शनना गुणोनु प्रभावक एवा जिन द्रव्यने वधारनारो जीव तीर्थकरपणाने प्राप्त करे छे." ३

अहि वृध्धि एटले नवा नवा द्रव्यनो प्रक्षेप करवा वगेरेथी वधारवु, एम समजवु ते पण पनर प्रकारना कर्मादान रुप कुव्यापार वर्जीने सद्व्यापारना विधि वमे द्रव्यनी वृध्धि करवी. अविधि वमे करेली द्रव्य वृध्धि उलटी दोषरुप थाय. छे. तेने माटे शास्त्रमा कह्यु छे के,

" जिणवर आणा रहिय, वधारनावि केवि जिणदव्व।
वुड्डति भवसमुद्दे मूढा मोहेण अन्नाणी॥१॥"

" जिनेश्वरनी आज्ञाथी रहितपणे जिनद्रव्यने वधारनारा केटलाएक मूढ थयेला अज्ञानी जीवो पण मोहवडे आ समुद्रने विषे बुडे छे. १ "

केटलाएक आचार्य कहे छे के, श्रावक शिवायना बीजा पासेथी वधारे ग्रहण करी कालांतरे देवद्रव्यनी वृद्धि करवी उचित छे, कह्यु छे के,

" चेइयदव्वविणासे रिसिघाए पवयणस्सउड्डाहे ।
संजयी चउत्थभंगे, मूलग्गि वोहिलाभस्स ॥ १ ॥

चैत्यद्रव्यनो विनाश करवाथी, मुनिनो घात करवाथी, शासननी निंदा करवाथी अने सयतिनु चोथु व्रत भागवाथी वोधिलाभनो मूलमाथी नाश पामे छे. ' "

चैत्यद्रव्यनु कोइ भक्षण करतो होय तेनी उपेक्षा करवी, ए चैत्यद्रव्यनो विनाश समजवो. चैत्यद्रव्यना भक्षण तथा रक्षण करवा उपर घणा दृष्टांतो छे, पण आ स्थले सागर शेठनु दृष्टांत कहेवामा आवे छे.

सागर शेठनु दृष्टांत

साकेतपुर नगरमा सागर नामे एक शेठ रहेतो हतो, ते परम श्रावक हतो. एक वखते ते नगरना श्रावकोए ' आ सारो श्रावक छे. ' एम धारी तेने चैत्यनु द्रव्य सोंपी दीधु. अने कह्यु के, " सागर शेठ, आ नवीन चैत्य बने छे, तेनी अदर सुतार, कडीआ वगेरे जे काम करनारा छे, तेमने तमारे द्रव्य चुकववु. " सागर शेठे ते द्रव्य ग्रहण कर्यु. लोभने वश थयेला ते शेठे ते मजुरोने रोकडु द्रव्य न आपता ते द्रव्यने वदले दाणा, गोळ, घी, तेल, वस्त्र वगेरे पदार्थो आपवा माड्या, अने ते वस्तुओ खरीद करी तेमा जे नफो मळे ते पोते लेवा माड्यो. एम करता रुपीआना अेंशीमा भागरुप जे काकणी थाय छे, तेवी एक-हजार काकणीनो तेने नफो थयो. आ कृत्य करवाथी ते सागर शेठे अति-घोर दुष्कर्म उपार्जन कर्यु. केटलेक समये ते सागर शेठ ते कर्म आलोव्या विना मृत्यु पामी समुद्रमा जल मानुष रुपे उत्पन्न थयो. जातिवत रत्नोना ग्रहण करनारा

पुरुषोए समुद्रना जलचर जीवोना उपद्रवने वारनार अने जलनी अंदर उद्योत करनार तेल ग्रहण करवाने माटे ते जल मनुष्यने पकमी वज्रनी घटीमा नाख्यो. तेमा ते महान् पीमाथी छ मास सुधी दुःखी मृत्यु पामी त्रीजी नरके नारकी रुपे उत्पन्न थयो. त्याथी नीकळीने पाचसो धनुष्यना प्रमाणवाळो मोटो मत्स्य थयो. त्या म्लेच्छ लोकोए सर्व अंगना छेदवारुप मोटी कदर्थना करी तेने मारी नांख्यो. त्याथी मृत्यु पामी ते चोथी नरके गयो. त्याथी नीकळी एज प्रमाणे वे वार मत्स्य थयो अने वे वार सातमी नरके उत्पन्न थयो एटले एक वार मत्स्य अने एकवार सातमी नरके—एवी रीते उत्पन्न थयो ते पछी पूर्वे करेला हजार काकणी प्रमाण देव द्रव्यना उपजोगथी अंतर रहित हजार-वार घोमो थयो. ते पछी अनुक्रमे ज़ुक, गामर, हरण, सावर, शीयाळ, मार्जार, ऊंदर, नोलीओ, गीरोळी, घो, सर्प, वीछी, पृथ्वीकाय, अप्काय, तेऊकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, शख, छीप, जळो, कीमी, कीमा, करमीआ, पतगीआ, माखी, जमर, मत्स्य, काचबो. गधेमो, पामो, ऊट, खचर, घोमो, अने हाथी वगेरे अनेक जातिमा सहस्र जव जम्यो हतो. ते सर्व तिर्यचोना जवोमा शस्त्रोना घातनी मोटी पीमाओ सहन करी मरण पाम्यो हतो एवी रीते थवाथी जेना दुष्कर्म क्षीण थयेला छे, एवो ते सागर शेठनो जीव वसतपुर नगरने विषे रहेता कोटिपति वसुदत्त नामना शेठनी स्त्री वसुमतीना उदरने विषे गर्जपणे उत्पन्न थयो. ज्यारे जीव गर्जमा आव्यो त्यारे ए कोटि धनपति वसुदत्त शेठनु सर्व द्रव्य नाश पामी गयु ज्यारे तेनो जन्म थयो त्यारे तेनो पिता वसुदत्त शेठ पोतेज मरण पामी गयो ज्यारे ते बाळक पाच वर्षनो थयो त्यारे तेनी माता वसुमती मरण पामी त्यारे लोकोए तेनु नाम निःपुण्यक पाम्यु. ते जिखारीनी वृत्तिथी उछरी मोटो थयो

एक दिवसे ते निःपुण्यकनो मामो तेने दुःखी जाणी तेमवा आव्यो. ते तेने पोताने घेर तेमी गयो जे दिवसे निःपुण्यक मामाने घेर गयो, ते ज रात्रे चोरोए आवी तेना मामाना घरने लुटी लीधु ते निःपुण्यक जेना घरमा एक दिवस रहे तेना घरमा चोरोनी धाम, अग्निनी लाय अने घरना स्वामीनो नाश इत्यादि उपद्रवो थता हता. 'आथी आ दुर्जागी छे, वलती गामी छे अने मूर्त्तिमान् उत्पात छे' इत्यादि शब्दोथी लोको तेनी निंदा करवा लाग्या

आथी ते उद्वेग पामीने देशांतर चाल्यो गयो. फरतो फरतो ताम्रलिप्ती नगरीने विषे रहेता विनयंधर नामना एक शेठने घेर नोकर रह्यो. जे दिवसे ते रह्यो, तेज दिवसे ते शेठनु घर अग्निथी बळीने भस्म थइ गयु. एथी शेठे तेने श्वाननी जेम घरनी बाहेर काढी मुक्यो. 'हवे शु करवु ?' एम मूढ बनी ते पोताना कर्मने निंदवा लाग्यो. कह्यु छे के,

"कम्मं कुणंति सवसा, तस्सुदयंमिय परव्वसा हुंति।
दुक्ख सहइ सवसो निवसइ परवसो तत्तो"॥१॥

"जे जीवो स्ववश थइने कर्म करे छे, तेओने परवश थइने कर्म भोगववा पडे छे पण स्ववशे जे दुःख भोगवे छे, ते परवश पडता नथी" ?

ते पछी पोतानु भाग्य बीजे स्थळे हशे, एवु धारी ते समुद्रना तीर उपर गयो. अने तेज दिवसे एक वहाणमा बेठो. त्या रहेला धनावह नामना एक खलासीनी साथे ते सुखे द्वीपांतरमा आवी पोहोच्यो. आ वखते ते हृदयमां फुलाइ गयो अने विचार करवा लाग्यो के, 'हवे मारा भाग्यनो उदय थयो, कारण के, हु बेठा छता आ वाहाण भाग्यु नहीं के बुडयु नहीं. अथवा मारा दुर्दैवनु कृत्य हमणा मने विसरी गयु हवे वळती वखते मने ए दुर्दैवनु स्मरण न थाओ." आ प्रकारे चिंतवी ते पाछो वळता वाहाण पर चडयो. दुर्दैवे जेम दृष्टिथी पात्र भागे तेम ते वहाणने भागी नाख्यु. तेना सो कटका थइ गया. ते वखते नि.पुण्यक एक पाटीआने वळगी महाकष्टे करी केटलेक दिवसे समुद्रने कांठे आव्यो. त्या आवेला एक गामना ठाकोरने त्या सेवक थइने रह्यो. ते ठाकोरना शत्रु भीलोए ते गाम उपर धाड पाडी, अने 'आ ठाकोरनो पुत्र छे' एम धारी निःपुण्यकने बाधी पोतानी पल्लीमा लइ गया. तेज दिवसे बीजी पल्लीना पतिए आवी ते पल्लीनो नाश कर्यो. आथी पेला भीलोए 'आ कोइ अभागीओ छे' एवु मानी नि पुण्यकने पोतानी पल्लीमाथी बाहेर काढी मुक्यो

एवी रीते ते नि·पुण्यकने उपद्रवोनो हेतु होवाथी भीजा हजारो ठेकाणेथी काढी मुकवामा आव्यो हतो अने तेथी तेणे अनेक जातना दुःखो भोगव्या हता.

एक वखते ते वाञ्छितने आपनारा एक यक्षना मंदिरमा आवी चड्यो. त्यां तेणे पोताना दुःख निवेदन करवा पूर्वक एकाग्रतार्थी ते यक्षनी आराधना करी. एकवीश दिवस उपवास करता ते यक्ष तेने तुष्यमान थयो. यक्षे प्रत्यक्ष दर्शन आपी तेने कह्यु, " जाऽ, आहिं दररोज सायकाळे सोनाना हजार पींछा वाळो एक मोटो मोर आवी मारी पासे नृत्य करशे, ते नृत्य थइ रह्या पछी तेना पींछामाथी दररोज एक एक सोनानु पींछु पडशे, ते तारे ग्रहण करवु." यक्षना आवा वचन साजळी ते नि पुण्यक खुशी थयो. पछी त्या रही ते प्रतिदिन ते मोरना सुवर्णना पीछाने ग्रहण करवा लाग्यो. अनुक्रमे तेणे नवसो पींछा एकठा कर्यां. हवे ते मोरनी पासे सो पींछा बाकी रह्या. दुर्दैवथी प्रेराएला ते निःपुण्यके चितव्यु के, ' हवे एक एक पींछु लेवाने माटे आ अटवीमां केटलोक वखत रहेवु, माटे एक साथे आ बाकी रहेला सो पींछा मुठीमा ग्रहण करी लउ. " आवु चितवी ते मोरना बधा पींछा मुष्टिवडे ग्रहण करवा गयो, तेवामा ते मोर काकीमानु रुप लइ उडी गयो अने नि'पुण्यके जे पूर्वे नवसो पींछा ग्रहण करेला हता, ते पण तेनी साथे नाशी गया कह्यु छे के,

" दैवमुल्लघ्य यत्कार्यं क्रियते फलवन्न तत् ।
सरोऽम्भश्चातकेनात्त गलरध्रेण गच्छति" ॥ १ ॥

" जे काम दैव-कर्मने ओळगीने करवामां आवे, ते सफळ थतु नथी चातक (बपैयो) सरोवरनु जळ मेळवे छे, पण ते तेना गळाना छिद्रमांथी नीकळी जाय छे. " १

ते नि'पुण्यक ' मने धिक्कार छे में फोगटनी उतावळ करी. ' एम चिंतवतो ते वनमा आमतेम भमवा लाग्यो तेवामा एक ज्ञानी मुनि तेना जोवामां आव्या. तेणे ते मुनिने नमस्कार करी पोतानो पूर्वभव पुछयो. पछी ते मुनिए तेना पूर्वभवनु स्वरूप यथास्थित कही सभळाव्यु ते साभळी तेणे पूर्वभवे देवद्रव्य वडे करेल आजीविकाना पापनी आलोयणा मागी त्यारे मुनिए कह्यु के, प्रथम तो देवद्रव्य अधिक अधिक आपवु अने ते आप्या पछी तेनु सम्यक् प्रकारे रक्षण अने वृद्धि प्रमुख करवु–एम करवु, ते लागेना दुष्कर्मनो प्रतिकार (उपाय) छे, अने तेम करवाथीज सर्व प्रकारे भोगऋद्धि तथा सुखनो लाभ प्राप्त थाय छे."

मुनिनां आवा वचन सांजळी तेणे एवो नियम ग्रहण कर्यो के " ज्या सुधी पूर्वे ग्रहण करेला देवद्रव्यथी हजार गणु द्रव्य न अपाय त्यांसुधी आहार, वस्त्रादिकना निर्वाहथी जरा पण अधिक द्रव्य मारे ग्रहण करवुं नहीं." आवो नियम ग्रहण करी तेणे श्रावकनो धर्म अंगीकार कर्यो. ते पछी ते निःपुण्यक जे जे वेपार करवा लाग्यो, तेमा ते घणुं द्रव्य कमावा लाग्यो. ते पोताना आहार वस्त्रना निर्वाह जेटलु राखी बाकीनु द्रव्य देव कार्यमा आपतो. एम करता थोडा दिवसमा तेणे देव निमित्ते दश लाख काकणी द्रव्य आपी दीधु. तेटलु द्रव्य आपी ते देवनो अनृणी थयो. पछी घणु द्रव्य उपार्जन करी ते पोताना नगरमां आव्यो. त्या ते सर्व धनाढ्य शेठोमा महान् शेठ गणायो. पोताना अने परना करावेला सर्व चैत्योने विषे पोतानी शक्ति प्रमाणे अखंड जक्ति पूर्वक निरतर पूजा प्रजावना करवा लाग्यो. अने सम्यक् प्रकारे देव द्रव्यनु रक्षण अने योग्यता पूर्वक देव द्रव्यनी वृध्धि वगेरे करी तेणे अरिहत जक्तिरूप प्रथम स्थानक आराध्यु अने तेथी करीने तेणे जिननाम कर्म–तीर्थकर नाम कर्म उपार्जन कर्यु. ज्यारे अवसर प्राप्त थयो, एटले तेणे गीतार्थ गुरुनी पासे दीक्षा ग्रहण करी. ते पछी सिध्धांतनो अन्यास करी ते गीतार्थ थयो. अने तेणे धर्मदेशनाथी घणा जव्य जीवोने प्रतिबोध कर्यो. छेवटे तेणे अनशन लइ काल करी सर्वार्थ सिध्धि विमानने विषे देव रुपे उत्पन्न थयो. त्या देवतानी समृध्धि जोगवी महा विदेह क्षेत्रने विषे तीर्थंकरनी संपत्ति जोगवी ते मोक्षपदने प्राप्त थयो ए प्रकारे देवद्रव्यना अधिकारमा सागर शेठनी कथा कहेवाय छे. एवी रीते जिनेश्वरनी त्रीजी जक्ति कहेवामा आवी.

चोथी जक्ति

जे निश्चे करी जव्यजीवो अष्टाइउत्सव, स्नात्र, चैत्यबिंबनी प्रतिष्ठा, वगेरे उत्सवो करे तथा श्रीपर्यूषण पर्वने विषे कल्पसूत्रनी वाचना प्रमुख शासननी प्रजावना करे, ते जिनशासननी उन्नतिना हेतु होवाथी ते पण जिनपूजाज कहेवाय छे कह्यु छे के —

" प्रकारेणाधिका मन्ये जावनातः प्रजावनाम् ।
जावना स्वस्य लाजाय स्वान्ययोस्तु प्रजावना ॥ १ ॥

" कोइ प्रकारे नावनाथी प्रनावना अधिक छे एम हु मानु छु, कारण के, नावना पोतानाज लानने माटे थाय छे अने प्रनावना पोताना अने बीजाना बनेना लानने माटे थाय छे. १ "

पांचमी नक्ति

तीर्थयात्रा करवी ए जिनेश्वरनी पाचमी नक्ति कहेवाय छे. शत्रुंजय, गिरनार, अर्बुदाचल, अष्टापद, समेतशिखर, आदि सर्व तीर्थोने विषे जिनवदन करवा अने ते क्षेत्रनी स्पर्शनादिक करवाने माटे जवु, ते तीर्थयात्रा कहेवाय छे , ए तीर्थयात्रा पण जिननक्तिज गणाय छे ते तीर्थोमा शत्रुंजय तीर्थ सर्व तीर्थोनो राजा छे अने त्रण लोकमा तेना जेवु बीजु तीर्थ नथी. कह्यु छे के.

" नमस्कारसमो मंत्र शत्रुंजयसमो गिरि. ।
वीतरागसमो देवो न नूतो न नविष्यति ॥ १ ॥ "

" नवकारना जेवो मत्र, शत्रुंजयना जेवो गिरि अने वीतरागना जेवो देव थया नथी, अने थशे नहीं १ "

श्री शत्रुंजय तीर्थना स्पर्शवा प्रमुखे करी महापापी प्राणीओ पण स्वर्गादिकना सुखने नोगवनारा थाय छे. अने जे पुण्यवत प्राणीओ छे, ते अल्प कालमा सिद्धिपदने पामे छे तेने माटे कह्यु छे के.—

" कृत्वा पापसहस्राणि हत्वाजतुशतानिच ।
इद तीर्थं समासाद्य तिर्यंचोऽपि दिवगता ॥ १ ॥
एकैकस्मिन् पदे दत्ते शत्रुंजयगिरिं प्रति ।
नवकोटि सहस्रेन्य पातकेन्यो विमुच्यते ॥ २ ॥ "

" हजारो पाप करीने अने हजारो प्राणीओने मारीने तिर्यंचो पण आ शत्रुंजय तीर्थने प्राप्त करी स्वर्गे गयेला छे १

शत्रुंजय पर्वत प्रत्ये एक एक पगलु नरवाथी प्राणी क्रोमहजार नवना पापमाथी मुकाय छे १—२

तेम वळी कह्यु छे के.—

'छठेणंजत्तेण अपाणएणं व सत्तजत्ताउ
जो कुणइ सत्तुजे सो तइय जवे लहइ सिद्धि'

छठ जक्तवमे पाणीथी रहित सातयात्रा शत्रुंजय पर्वत उपर करनार प्राणी त्रीजे जवे मुक्ति पामे छे. वळी आ प्रकारे जे मनुष्य दुर्लज मनुष्यजव पामीने सिद्धाचळ तीर्थनी यात्रा करीने पोतानो जन्म सफळ करे छे तेने धन्य छे! जे प्राणी तथाप्रकारनी योग्य सामग्रीना अजावथी पोते यात्रा करवानी शक्ति रहीत छे तोपण अन्य यात्रिकोनी अनुमोदना करे छे तेमने पण धन्यवाद छे. जे प्राणीओ श्री सिद्धाचळने पोतानी दृष्टिए अवलोकन करे छे अने पोताना शरीरना अंगोपांगोवमे स्पर्शे छे तेमज ऋषजादि देवोनुं अर्चन करे छे तेओ पण अनेकशः स्तुतिपात्र छे. परमति यात्रा संबंधे उपदेश आपता नीचे मुजब कहे छे.

वपु: पवित्रीकुरुतीर्थयात्रया । चित्तंपवित्रीकुरु धर्म वांछया ॥
वित्त पवित्रीकुरु पात्र दानतः । कुल पवित्रीकुरु सच्चारित्रतः॥

अर्थ—तीर्थयात्रा वमे शरीरने पवित्र करो, धर्म इच्छा वमे चित्तने पवित्र करो, द्रव्यने सुपात्र दानवमे पवित्र करो अने उत्तम आचारना पालनवमे कुलने पावन करो. *आ प्रकारे उपदेश आप्या करे तथा मुक्तिनगर प्रति प्रयाण* करवा इच्छता लोकोने सुखे करीने आरोहण करवाने माटे उत्तम पगथीयारुप विमलाचल तीर्थने हुं क्यारे नेत्रयुगल वमे नीरखीश तेमज स्वशरीर वमे क्यारे हु ते तीर्थाधिराजने स्पर्शवा जाग्यशाळी थइश. आ मारो जन्म तीर्थना दर्शनादि विना फोकट जाय छे ए रीते स्वचित्तमां जावना जावे छे तेवा प्राणीओ पोताना स्थानके रहेला छता पण तीर्थ यात्राना महा फळने पामे छे. जेओ छती सामग्रीए यात्रा करता नथी तेओ दीर्घसंसारी जाणवा. श्री शत्रुंजय गिरि उपर थोमु पण करेलु पुण्य महा फळ दायक थाय छे, कह्यु छे.

" नवि त सुवन्नजूमिजूसण दाणेण अन्नतिथ्थेसु ।

ज पावइ पुण्णफल पूयाएह्वणेण सत्तुंजे ॥ १ ॥ "

" अन्य तीर्थोमां सुवर्ण, भूमि अने आभूषणोना दान करवाथी जे पुण्य थतुं नथी, ते पुण्य शत्रुंजय तीर्थ उपर पूजा अने न्हावण करवाथी थाय छे ? "

वळी तीर्थ यात्रा करनारा प्राणीओए यात्रा वखते भूमि संथारो, शीलव्रत, अने एकाहार प्रमुख छ वाना करवाना छे अने तेम करीने रहेवाथी त्यां तीर्थयात्रानो प्रयास विशेष इष्टफळनेआपनारो थाय छे. ते छ वानाने 'छरी' करीने कहे छे. छ रीकार नीचे प्रमाणे दर्शाव्या छे

" एकाहारी भूमिसंस्तारकारी
पद्भ्या चारी शुद्धसम्यक्त्व धारी ।
यात्राकाले य सचित्तापहारी
पुण्यात्मा स्याद् ब्रह्मचारी विवेकी ॥ १ ॥ "

" यात्रा वखते जे विवेकी पुरुष एकाहार—एक वखत आहार करनार, भूमि संस्तारकारी—भूमि उपर संथारो करनार, पगवडे चारी—चालनार, सचित्तापहारी—सचित्त वस्तुनो त्याग करनार अने ब्रह्मचारी—ब्रह्मचर्य पाळनार रहे छे ते पुण्यात्मा कहेवाय छे ? "

वळी कह्युं छे के,

" श्रीतीर्थपाथरजसा विरजी भवंति
तीर्थेषु वभ्रमणतो न भवे भ्रमति ।
द्रव्यव्ययादिह नरा स्थिरसंपद स्युं
पूज्या भवंति जगदीशमथार्चयंत ॥ १ ॥ "

" भव्य प्राणीओ तीर्थना मार्गना रजवडे विरज पापरहित थाय छे तीर्थोमां भ्रमण करनाराओ आ संसारमां भ्रमण करता नथी जेओ तीर्थक्षेत्रमां द्रव्यनो व्यय करे छे, तेओ स्थिरसंपत्तिवाळा थाय छे अने त्यां जगत्पतिने पूजनाराओ बीजाओने पूजवा योग्य थाय छे " ?

आ प्रमाणे तीर्थ सेवानु महाफल जाणीने जव्य जीवोए श्री शत्रुंजयादि महातीर्थनी यात्राने विषे आदर सहित थवु. अने तेमा पोतानु द्रव्य सफल करवुं वळी तीर्थनी यात्रा करवाने इच्छता एवा बीजा यात्रालुओने , शबळ (जातु) आपवा वगेरेथी सहाय करवी. तीर्थ यात्रा करनारे धनशेठनी जेम पोतानी शक्ति प्रमाणे तीर्थनी उन्नति करवी, लघुता करवी नही.

ते विषे धनशेठनी कथा

हस्तिनागपुर नगरने विषे अनेक कोटी द्रव्यनो स्वामी धनशेठ नामे एक परम श्रावक हतो. एक दिवसे रात्रे धर्म जागरणा करतां तेणे पोताना मनमां आ प्रमाणे चिंतव्यु. "हुं निश्चे पूर्व जन्मना पुण्यने लीधे आ मनुष्य जन्म पाम्यो छुं. ते साथे आर्यक्षेत्र, उत्तम कुळ, रुप अने लक्ष्मीना समूहने प्राप्त थयो छु. तेम वळी जेम मोटा पुण्यना उदयथी रंक पुरुष निधानने प्राप्त करे, तेम हु श्री जिनेश्वरे कहेला धर्मने पाम्यो छुं. पण ज्यां सुधी श्री विमलाचल अने रैवताचल आदि तीर्थमां रहेला श्री आदीश्वर प्रभु तथा नेमिनाथ प्रभु वगेरे तीर्थंकरोना बिंबना दर्शन, वंदन, अने पूजनादि सत्कृत्यो में कर्या नथी, त्यां सुधी आ सर्व समृद्धि प्राप्त थवाथी शु ? तेमज आ वैजवथी परिपूर्ण एवा कुटुंब, गृह वगेरे प्राप्त थया, ते शा कामना ? "

आ प्रमाणे चिंतवी प्रजात काळे राजानी आज्ञा लइ तेणे हस्तिनागपुरनगरमां उद्घोषणा करी मोटो संघ एकठो कर्यो. पछी शुभ दिवसे ते मोटा संघनी साथे हस्तिनागपुरनी बाहेर नीकळ्यो. अने तेणे शासनना अधिपति श्री वीर प्रभुना चैत्यने साथे लीधुं. मार्गमां ठेकाणे ठेकाणे मोटी समृद्धिथी चैत्योने पूजतो, जीर्ण चैत्योनो उध्धार करतो, मुनिराजना चरण कमळने वंदन करतो, स्वामिवात्सल्य करतो अने करुणाथी दीन जनोने निरंतर वांछित दान आपतो ते धन शेठ अनुक्रमे शत्रुंजय पर्वत पासे आवी पोहोच्यो. ते गिरिपर आरूढ थयो अने त्यां आदीश्वर प्रभुने मोटी समृद्धिथी नमन पूजन करी अठाइ उत्सव आदर्यो. ते सिद्धक्षेत्रने स्पर्शी, वंदन, पूजन अने जेट वगेरे करी तेणे पोताना जन्मने सफळ कर्यो.

ते पछी ते धनशेठ गिरनार पर्वत उपर आव्यो. त्यां मुख्य चैत्यने विषे

यादव कुळना मंडनरूप अने सर्व ब्रह्मचारीओना समूहमा मुगट समान एवा श्री नेमिनाथ प्रभुने त्रण प्रदक्षिणा करी नमस्कार कर्यो ते पछी सुगंधी जळवडे प्रभुने न्हावण करावी उत्तम बावना चंदननु विलेपन करी सारा उत्तम वस्त्रोथी अने मणि सुवर्ण तथा रत्नो आभरणोथी श्री नेमिप्रभुना बिंबने भूषित कर्यु ते पछी प्रभुना कंठमां पंचवर्णी पुष्पमाला आरोपित करी, तेमनी समीपे अष्टमंगळनु आलेखन करी श्रीफळने ढोकित कर्यु पछी धूपनो उत्क्षेप, दीपक, छत्र चामर अने चंदरवा प्रमुख स्थापी मोटी ध्वजा चडावी. इत्यादि अनेक प्रकारनी पूजा करी भक्तिथी उल्लसित एवा रोमांचने धारण करतो ते धनशेठ जेवामा श्री नेमिप्रभुना मुखकमळने अवलोकतो हतो, तेवामा महाराष्ट्र देशना मध्य भागे आवेला मलयपुर नगरथी श्वेतांबर साधुओनो द्वेषी, दिगंबर मतनो भक्त वरुण नामनो एक कोटपति शेठ पोताना संघने लइ त्यां आवी चडयो. अहीं धनशेठे करेली प्रभु पूजाने देखी ते वरुण शेठना हृदयमा द्वेष उत्पन्न थइ आव्यो ते रोषातुर थइने आ प्रमाणे धनशेठ प्रत्ये बोल्यो. " तत्त्वथी विमुख एवा श्वेतांबर श्रावकोए निग्रंथोमा श्रेष्ट एवा आ भगवानने सग्रंथ केम कर्या ? परिग्रहवाळा केम बनाव्या? आ प्रमाणे कही ते मिथ्याबुद्धिवाळा वरुण शेठे तरतज उतावळा थइ प्रभु उपर चडावेला, वस्त्र, आभूषण, पुष्पमाळा वगेरने बिंब उपरथी दूर कराव्या. अने हाथी पगलाना जळवडे ते जिनबिंबनी पखाळ करावी आ वखते जिनेश्वर देवनी अविधि–आशातना करनारा ते वरुण शेठनी साथे धनशेठने घणो वचनविवाद थयो. ते पछी ते बने संघपतिओ परस्पर आमर्ष राखी पोतपोताना परिवार साथे तत्काळ पर्वत उपरथी नीचे उतर्या अने विक्रमराजाना गिरिनगर नामना नगरनी समीपे आवी पोहोच्या त्या ते बनेनी वच्चे पोतपोतानी पर्षदा करी पोतपोताना तीर्थनी स्थापना करवा महान् वादविवाद थयो. राजा विक्रमे आ तेमनो वृत्तांत लोकोना मुखथी सांभळयो एटले पोते राजा तेमनी पासे आव्यो अने तेमने वादविवाद करता अटकावी कह्यु के, " हु तमारो वाद काले सवारे दूर करीश हमणां कोइए कदाग्रह करवो नहीं. " आ प्रमाणे कही राजा विक्रम पोताने स्थाने चाल्यो गयो. राजा गया पछी तेओ बने संघपतिओ पण पोताना स्थाने गया. आ वखते धनशेठ 'प्रभाते कोनु तीर्थ स्थपाशे.' एवी चिंता करवा

ध्यानमां लगाव्यु. तेवामा शासन देवी प्रत्यक्ष प्रगट थइ नीचे प्रमाणे बोली—

" वरसिठजिठ सुपइस्समयलछगाजयनठमामणागऽवि-

नियमणे कुणसु डुक्कामिणं " ॥ १ ॥

" प्रधान अने मोटामा मोटा धर्मने तथा आगमने तुं पाम्यो छे, एटले हवे तारो जय नष्ट थयेलो समजजे. तेथी मनमां जरा पण दुःख धरवुं नहीं. अने मनने निश्चित राखवुं. " १

" जं चिइवंदणमज्जगाहं उज्जितसेलइच्चाइं पखिविय नि-

वसहाए जयं धुवं तुज्झ दाहामि" ॥ २ ॥

" जे चैत्यवदनना मध्यमां " उज्जितसेलसिहरे " ए गाथा छे, ते प्रक्षिप्त गाथा छे, एम तेना कहेवाथी तने राजा विक्रमनी सजामां अवश्य जयलक्ष्मी अपावीश. " २

आ वात सांजळी धन शेठ हर्षित थइ गयो पछी तेणे रात्रिने सुखेथी निर्गमन करी. प्रजात थता राजा विक्रमे ते बने सघपतिओने पोतानी सजामां परिवार सहित बोलाव्या. तेओ राज सजामां आव्या अने राजानी आज्ञाथी ते बने पक्षकारोए पोतपोतानो वृत्तांत जणाव्यो. ते सांजळी राजा विक्रम बोल्यो " सघपतिओ, तमो बने जैन आगमना ज्ञाता छो; जैन धर्मना श्रद्धालु छो अने जिनशासनना प्रजावक करवाने विषे प्रवीण देखाओ छो, ते छतां तमोए आवुं अघटित कार्य केम आरज्यु छे ? प्रथम धन शेठे नम्रताथी कयुं, " राजेंद्र, अमोए अमारा तीर्थमां वस्त्र–आभूषणोए करी जिनपूजा करीए छीए, तेनो आ दुष्ट बुद्धिवाळो शेठ शामाटे विनाश करे छे ? त्यारे वरुण शेठे जणाव्यु, "स्वामी, अमो अमारा तीर्थने विषे कोइने अविधि–आशातना नहीं करवा दइए. आ प्रमाणे बनेना वचन सांजळी राजाए सशय लावीने कयुं, " आ तमारा बनेमां कोनु तीर्थ हशे, ए शी रीते जाणवामां आवे ?" धनशेठे कयु, "स्वामी, आ तीर्थ अमार ज छे कारणके, अमारा चैत्यवदननी अदर ' उज्जित सेलसिहरे ' इत्यादि गाथा लांबा वखतथी चाली आवे छे. जो आपने तेमां शंका रहे-

ती होय तो आ अमारा सघमांथी बालक, तरुण, अने वृध्धमांथी गमे तेनी पासे चैत्यवदन सूत्र बोलावो, एटले आपने खात्री थशे." वरुण शेठे कह्यु, "महाराजा, आ नवीन गाथा रची आ कपटी शेठ पोताना बधा सघने बखते शीखव तो न होय ? ते शी खबर पडे ?" वरुण शेठना आ वचन सांभळी राजाए पोताने खात्री करवाने माटे एक सेवकने पवनगति नामनी ऊटनी उपर बेसाडी पोताना शेहेरनी नजीक रहेला श्रेणिपल्ली नामना गाममांथी शीलादिक गुणो वडे प्रसिध्ध, उत्कृष्ट जैन धर्मना जाण एवा धनशेठनी एक पुत्रीने तत्काल त्यां बोलावी. ते शेठ पुत्री त्यां आवी एटले राजाए श्वेतांबर सघनी समक्ष तेणीने पुछयुं, "व्हेन तने चैत्यवदन आवडे छे ? तेणीए कह्यु, स्वामी, ते मने सारी रीते आवडे छे." राजाए कह्यु, त्यारे तु ते सत्वर कही सभळाव." राजानी आज्ञाथी ते बालाए अति गभीर स्वरथी प्रथम सपूर्ण चैत्यवदन त्यांसुधी कह्युं के, ज्यांसुधी नीचेनी गाथा बोलवामां आवी.

"उज्जिंतसेलसिहरे, दिक्खानाणं निसिहिया जस्स ।
तं धम्मचक्कवर्ट्टि, अरिठ्ठनेमि नमसामि" ॥ १ ॥

आ गाथा सुधी ज्यारे ते बाला चैत्यवदन बोली, ते सांभळी सर्व परिवार सहित राजा विक्रमनु हृदय हर्षथी उल्लसित थइ गयु. तत्काल ते प्रसन्न थइ बोल्यो, "आ श्वेतावर सघ जीत्यो छे. निश्चयथी आ तीर्थ तेनु ज छे." राजाना आ वचन सांभळी हारी गयेलो वरुण शेठ लोकोना मुखथी पोतानी निंदा अने धन शेठनी प्रशसा साभळतो कचवाते मने पोतानो सघ लइ चाल्यो गयो. अने पोताने स्थाने आव्यो.

त्यारथी ए गाथा चैत्यवदननी अदर अद्यापि भणाय छे. जो के आ गाथा अविरति देवताए रचेली होवाथी विरतिवतोने भणवी अयुक्त छे, तोपण ते शासननी उन्नतिनी हेतु रुप छे, तेथी पूर्वाचार्योए—गीतार्थ पडितोए तेनो निषेध करेलो नथी, तेथी सज्जन भविजनोए ते अवश्य भणवा योग्य छे तेम वली तेवा पूर्वाचार्योना आचरणने जे अन्यथा करे छे, तेने आगमने विषे दड आपवो कह्यो छे श्री भद्र बाहु स्वामीए सुयगडांग सूत्रनी निर्युक्तिमा तथा अध्ययनमां आ प्रमाणे कहेल छे—

" आयरियपरंपरएण आगयं जो उच्छवबुद्धिए कोविय
इच्छे य वाइजमालिनासंसनासिहिइ " ॥१॥

आचार्यनी परपराए आवेलानो जे उच्छेद करे छे, ते जमालिनी पेठे अनेक दुःखोने सहन करे छे. " १

ते पछी जेनो विजय थयो छे, एवा ते धनशेठनो विक्रम राजाए सारो सत्कार कर्यो अने घणु सन्मान आपी तेने विदाय कर्यो. पछी धनशेठ पोताना सघनी साथे फरीवार गिरनार पर्वत उपर आव्यो अने त्यां श्री नेमिप्रभुनी उत्तम वस्त्राभरणो अने पुष्पोथी प्रथमना करतां विशेष पूजा करी. तेणे त्या याचकोने अगणित दान आपी अष्टाइ उत्सव कर्यो. पछी पोते पोताना सघने साथे लइ, त्यांथी नीकळ्यो अने अनुक्रमे मार्गे चालता हस्तिनागपुर आवी पोहोंच्यो. त्यां राजा वगेरे प्रजा जने ते धनशेठनु सारे सन्मान कर्यु. ते पछी धनशेठ चिरकाल सुधी श्रावक धर्मने पाळी अने अनेक प्रकारे जिन शासननी प्रभावना करी अते सद्गतिनो भाजन बन्यो हतो. आ प्रमाणे वृध्द संप्रदायथी आ धन शेठनी कथा द्वारा पांचमी भक्ति कहेली छे, जेनी अंदर पांच प्रकारनी पूजा कहेवामां आवी छे.

आठ प्रकारनी पूजा.

हवे आठ प्रकारनी पूजा कहे छे, तेने माटे कयु छे के,

" वरगंधधूवचुक्खएहिं, कुसुमेहिं पवरदीवेहि ।
नेवज्जफलजलेहिय, जिणपूयाअठहा होइ " ॥ १ ॥

" १ उत्तम गध–चदनादिक द्रव्य, २ अगरु प्रमुख सुगंधी धुप, ३ अखम्ति अक्षत, ४ पचवर्णी पुष्पो, ५ निर्मल घृतथी पूरित सुवर्ण मणिमय पात्रवाळो दीपक, ६ लाप्सी प्रमुख नैवेद्य, ७ श्रीफल प्रमुख फल, अने ८ निर्मल–पवित्र जल एम आठ प्रकारे पूजा कहेवाय छे. ते अष्ट प्रकारी पूजानुं फल नीचे प्रमाणे कहे छे—

" अंगगंधसुवन्नवन्न रूव सुहं च सोहग्गं ।

पावइ परम पयं पिहु, पुरिसो जिणगंधपूयाए ॥ ३१ ॥
जिण पूयणेण पुसो, होइ सुगंधोसुगंध धूवेण ।
दीवेण दित्तमतो, अक्खअओ अक्खएहिं तु ॥ ३२ ॥
पूयई जो जिणचंदं, तिसिवि सकासु पवर कुसुमेहि ।
सो पावइ सुर सुक्ख, कमेण मुक्ख सया सुक्ख ॥ ३३ ॥
दीवाली पव्वदिणे, दीव काऊण वद्धमाणग्गे ।
जो ढोयइ वरसफले, वरससफल भवे तस्स ॥ ३४ ॥
ढोयइ वहु भत्ति जुओ, नेवज्ज जो जिणंद चदाण ।
भुजइ सो वरभोए, देवासुरमणुअनाहाणं ॥ ३५ ॥
जो ढोयइ जलभरिय कलस भत्तिश्यवीयरागाणं ।
सो पावइ परमपय सुपसथ्थं भावसुद्धीए ॥ ३६ ॥ ”

“ पुरुषो जिननी गधपूजा करवाथी सुगधी अने सुवर्ण वर्णी रु वाला शरीरने पामे छे तथा सौभाग्य, सुख अने अनुक्रमे मोक्ष सुखने प करे छे ३१

सुगधी धूपवडे जिनपूजा करवाथी पुरुष सुगधी थाय छे, दीपपूज करवाथी दीप्तिवालो—तेजस्वी अने अक्षत पजाथी अक्षय सुखवाल थाय छे. ३२

जे पुरुष त्रणे काल उत्तम प्रकारना पुष्पोथी जिनपूजा करे छे,ते देवतान सुख पामी अनुक्रमे सदा सुखवाला मोक्षने प्राप्त करे छे ३३

जे दीवालीना पर्वने विषे श्री वर्द्धमान प्रभुनी पासे दीपक प्रकटी उत्त फलने मुके, ते पुरुषनु आखु वर्ष सफल थाय छे ३४

जे पुरुष घणी भक्तिवालो थइ श्री जिनचद्रने नैवेद्य धरे छ, ते पु रुष देव, असुर अने मनुष्योना स्वामीना भोगने भोगवे छे ३५

जे पुरुष भक्तिथी श्री वीतराग प्रभुने जळनो भरेल कळश ढोळे, ते पुरुष भाव शुद्धिवडे श्रेष्ठ थइ उत्तम एवा मोक्षपदने पामे छे. ३६

उपर प्रमाणे विविध प्रकारे कहेली जिनपूजा भव्य पुरुषोए मन, वचन अने कायानी शुद्धि पूर्वक करवी. जो जिनभक्ति शुध्ध भावथी करी होय, ते थोडी होय तो पण मोटा फळने आपनारी थाय छे ते विषे कहु छे के—

" यास्या म्यायतन जिनस्य लभते ध्यायश्चतुर्थं फलं
षष्ठं चोत्थित उद्यतोऽष्टममथो गंतु प्रवृत्तोऽध्वनि ।
श्रद्धालुर्दशम बहिर्जिनगृहा त्प्राप्तस्ततो द्वादशं
मध्ये पाक्षिकमीक्षिते जिनपतौ मासोपवासं फलम् ॥

" हुं जिन मदिरमां जइश ' एवु चितववाथी पुरुषने एक उपवासनुं फळ मळे छे. अने त्या जवाने उठे त्यारे छठ तपनु फळ मळे छे. ज्यारे ते प्रत्ये मार्गे चालवा मांडे त्यारे अष्टमनु फळ मळे छे. जिनगृहनी बाहेर नजीक आवे त्यारे चार उपवासनु फळ मळे छे, चैत्यमा आवे त्यारे पाच उपवासनु फळ मळे छे, चैत्यनी मध्ये आवे त्यारे पनर उपवासनु फळ मळे छे अने जिनेश्वरना दर्शन करे त्यारे मासोपवासनु फळ मळे छे. " १

आहिं तेवी ज रीतनी भावशुद्धि ते मुख्य कारण समजवुं. एवी रीते आठ प्रकारनी पुजा कहेली छे. आदि शब्दथी सत्तर प्रकारनी अने एकवीश प्रकारनी पूजा पण कहेवाय छे. ते आ प्रमाणे—

" न्हवण विलेवण वच्छजुग, गंधारुहणं च पुप्फरोहणयं।
मालारुहण वन्नय, चुन्न पडागाण आभरणे ॥ ३७ ॥
माल कलावंस घर, पुप्फ पगर च, अठ मंगल यं ।
धूवुक्खेवो गीयं, नट्टं वज्ज तहा भणियं " ॥ ३८ ॥

" १ निर्मळ जळ वडे स्नान, २ चंदनादिक वडे नव अंगे नव तिलक, ३ वस्त्र युगळ पेहेरावबा, ४ वास चूर्णनो प्रक्षेप, ५ विकस्वर पुष्पो चडाववा, ६

मद्यु कठे गुंथेल पुष्पमाळनु आरोपण, ७ पचवर्णी पुष्पो वडे सर्व अगे शोजा करवी—अर्थात् फुलनी आंगी रचवी, ८ कपूर, कृष्णागरु प्रमुख सुगधी द्रव्य वमे पूजन करवु, ए ध्वजा चमाववी, १० छत्र, मुगट वगेरे आजूषणो पेहेरावना, ११ पुष्पनु गृह करवु, १२ मलुनी आगळ पांचवर्णी पुष्पोनो ढगलो करवो, १३ अक्षत वगेरे अष्टमगळ आलेखवा, १४ सुगंधी धूप उखेववो, १५ गीत-गान करवा, १६ अनेक प्रकारना नृत्य करवा,—नाटक करवा, १७ अने शख, नगारा वगेरे वाजिंत्रो वगाडवा ए सत्तर प्रकारी पूजा कहेवाय छे.

एकवीश प्रकारनी पूजा नीचे प्रमाणे कहेली छे—

जिणपमिमाण पूया, भेया इगवीस नीरचदणय।
जूसणपुप्फो वासं, धूव फलदीव तडुलयं ॥ २ए ॥
नेवज्ज पत्त पूगी, वारि सुवच्छ च छत्त चामरय ।
वाजित्तगीय नट्ट, थुइकोस वुड्ढ इयहीर ॥ ३० ॥ ”

“ १ स्नान, २ चदन, ३ आजूषण, ४ पुष्प, ५ वासक्षेप, ६ धूप, ७ फल, ८ दीपक, ए अक्षत, १० नैवेद्य, ११ पान, १२ सोपारी, १३ जल, १४ वस्त्र, १५ छत्र १६ चामर, १७ वाजित्र, १८ गीत १ए नाटक, २० स्तुति अने २१ जमारनी वृद्धि ए प्रमाणे एकवीश प्रकारनी पूजा कहेवाय छे. ”

ते शिवाय एकसो आठ वगेरे बीजा पूजाना घणा नेदो कहेला छे, ते बीजा शास्त्रीय ग्रथोथी जाणी लेवा एवी रीते चैत्य विनयनी अदर आवेल दश प्रकारना विनय माहेलो आ विनयनो त्रीजो नेद कहेवामा आव्यो. बाकीना विनयना बीजा नेदोनी सविस्तर व्याख्या पमितोए बीजा मोटा ग्रथोमाथी जाणी लेवी.

सम्यक्त्वनी त्रिविध शुद्धि

अनुक्रमे सम्यक्त्वनी त्रण प्रकारनी शुद्धिनी व्याख्या करे छे. १ जिन, २ जिनमत अने ३ जिनमतने विषे स्थिरता ए सम्यक्त्वनी त्रिविध शुद्धि छे.

जिन एटले श्री वीतराग. जिनमत एटले स्यात् पदे करीने युक्त एवा तीर्थंकर प्रणीत, यथास्थित जीव अजीवादि तत्त्वो, अने जिनमतने विषे स्थिरता एटले जेमणे जिन तीर्थंकरना आगमने अंगीकार करेल छे, एवा मुनि महाराजा वगेरे-एटले साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविका. ए जिन, जिनमत अने जिनमतने विषे स्थिरता कहेवाय छे. ए कहेवानो आशय एवो छे के, ए जिनादि त्रणने मुकी बाकीना एकांत वादरुप ग्रहे करीने ग्रसित थयेला आ संसारने विषे कचरारुप छे. एटले जिनादिक त्रणज आ जगतमां साररुप छे, बाकीना सर्व असार रुप छे. आवा प्रकारनी विचारणाथी सम्यक्त्वनी निर्मलता थाय छे, तेथी ते सम्यक्त्वनी शुद्धि कहेवाय छे, ते सम्यक्त्वनी शुद्धि आगमने विषे बीजी रीते पण कहेली छे. ते आ प्रमाणे—

" मणवयकायाणं सुद्धि सम्मत्त साहणा तथ्थ ।
मणसुद्धि जिण जिणमय वज्जमसार मुणइ लोयं ॥१॥
तिथ्थकर चलणाराहणेण जं मझसिज्झइ न कज्जं ।
पच्छेमि तथ्थ नन्न देव विसेस च वयसुद्धि॥ २ ॥
छिज्जंतो भिज्जतो पिलिज्जतोविडज्झमाणोवि ।
जिणवज्जं देवयाण नमह जो तस्स तणुसुद्धि " ॥ ३ ॥

" मन, वचन अने काया ए त्रणे करीने करातो जे शुद्धि, ते सम्यक्त्वनी साधन भूत थाय छे. एटले मन, वचन तथा कायानी शुद्धिथीज सम्यक्त्व उत्पन्न थाय छे, ज्यारे जीव जिनमत शिवाय आ समग्र लोकने असारपणे माने छे, त्यारे ते पहेली मन. शुद्धि कहेवाय छे श्री तीर्थंकर देवना चरण कमलनुं आराधन करीने मारं कार्य सिध्ध थयुं नथी, तो पछी बीजा देवना आराधनथी मारुं कार्य शी रीते सिध्ध थाय ? अर्थात् नज थाय, तेथी हुं तीर्थंकर शिवाय बीजा देवनी आराधना नही करुं ' आ प्रमाणे पोताने मुख कहेवुं, ए बीजी वचन शुद्धि कहेवाय छे. जे शस्त्र वगेरेथी छेदातो होय, भेदातो होय, पीलातो होय अने बलतो होय, छता बीजा देवने जरा पण कायाथी नमन नही, ते त्रीजी काय शुद्धि कहेवाय छे. १-२-३

आ प्रकारे बीजी रीते पण सम्यक्त्वनी त्रण प्रकारनी शुद्धि कहेली छे.

पांचदूषण

१ शंका एटले रागद्वेषथी रहित, यथार्थ उपदेशना करनार अने सर्वज्ञ एवा जिनेश्वरना वचनने विषे संशय ए शंका सम्यक्त्वने बाधित करनारी छे, तेथी ते सम्यक्त्वनु पहेलु दूषण कहेवाय छे तेथी सम्यक्त्व दर्शनीओए ए शंकानो सर्वथा परिहार करवो जोइए वळी ते शंकाथी लोकमां पण माणस पोताना कार्यने सिद्ध करी शकतो नथी. शंकालु माणसनु कार्य नाश पामी जाय छे. जेओ निःशंक रहेनारा छे, तेओना कार्य अवश्य सिद्ध थयेला देखाय छे. ते विषे बे व्यापारीओनु दृष्टांत प्रसिद्ध छे

शंका उपर बे व्यापारीओनु दृष्टांत

कोइ एक नगरीमा बे व्यापारीओ रहेता हता तेओ बने कोइ पूर्व कर्मना योगथी जन्मथीज दरिद्री हता. एक वखते तेओ ज्यां त्यां भमता हता, तेवामा कोइ सिद्ध पुरुष तेमना जोवामा आव्यो. तेने जोइ संपत्तिनी सिद्धि करवाने माटे तेओ बने ते सिद्ध पुरुषनी सेवा करवा लाग्या. एक दिवसे तेमनी सेवाभक्तिथी प्रसन्न थयेला ते सिद्ध पुरुषे ते बनेनी वच्चे बे कथाओ (मंत्रितवस्त्रो) आपी. अने तेणे आ प्रमाणे कह्यु, "वेपारीओ, आ बे कथा चमत्कारी छे. तमारे तेने कंठने विषे धारण करवी छ मास सुधी आ कथा तमे धारण करशो, एटले पछी दररोज ते कथा तमोने पांचसो सोनैया आपशे." सिद्ध पुरुषना आ वचनो सांभळी ते बने व्यापारीओ ते कथाओ लइ पोतपोताने स्थाने आव्या. ते बनेमांथी एक व्यापारी शंकाशील हतो, तेणे विचार कर्यो के, "आ कथा छ मास सुधी धारण कर्या पछी फल आपशे, एनी शी खात्री ?" आवी शंका लावी तेणे ते कथानो त्याग करी दीधो. बीजाए एवी शंका करी नहीं. तेणे निःशंक थइ अने लोकलज्जाने गोणी दइ ते कथाने छ मास सुधी धारण करी. आथी ते कथाना प्रभावथी ते मोटी समृद्धिवाळो शेठ बनी गयो तेनी आवी समृद्धि जोइ पेला कथाने त्याग करनारा व्यापारीने यावज्जीवित पश्चात्ताप थया कर्यो. धनाढ्य बनेलो व्यापारी यावज्जीवित सुखी, भोगी अने दानी

थयो हतो."

आ दृष्टांत उपरथी समजण के भव्य पुरुषोए उत्तम वस्तुमां जरा पण शंका न करवी जोइए.

'कांक्षा' एटले अन्य दर्शननो अभिलाष. ते उत्पन्न थवाथी परमार्थ रीते श्री अरिहंत भगवाने कहेला आगम उपर अविश्वास थायछे, तेथी ते सम्यक्त्वने दूषण कहेवाय छे. सम्यक्त्ववंत पुरुषोए ते कांक्षा दूषणनो परिहार करवामां यत्न करवो. कारणके, लोकमां पण कांक्षा करनारो पुरुष घणां दुःखोनो भागी थतो देखाय छे. ते विषे एक दृष्टांत कहेवाय छे.

कांक्षा उपर दृष्टांत

"एक नगरने विषे कोइ एक ब्राह्मण रहेतो हतो. ते हमेशां 'धारा' नामनी पोतानी गोत्रदेवीनुं आराधन करतो हतो. एक वखते तेणे लोकोना मुखथी 'चामुंडा' देवीनो प्रभाव सांभळ्यो. ते सांभळी ते चामुंडा देवीनुं आराधन करवा लाग्यो. एटले धारा अने चामुंडा बने देवीओनी आराधना करवा लाग्यो. अने तेम करतां घणो समय वीती गयो.

एक वखते ते ब्राह्मण ग्रामांतर जतो हतो. मार्गमां चालतां एक नदीनुं चोतरफ पूर आव्युं. ते पूरमां ब्राह्मण सपडाइ गयो अने तणावा लाग्यो. ज्यारे ते पूरनी बाहेर नीकळी न शक्यो, त्यारे ते उंचे स्वरे पोकार करी कहेवा लाग्यो "हे धारादेवी, दोडो दोडो, हे चामुंडा, मारी रक्षा करो, रक्षा करो." आवा पोकारथी ते बने देवीओनुं स्मरण करवा लाग्यो. तेना पोकारथी बने देवीओ त्यां हाजर थइ. परस्पर इर्ष्याथी ते बनेमांथी एके देवी ते ब्राह्मणनी सहाय करवाने गइ नहीं. ब्राह्मणनुं रक्षण थयुं नहीं. ब्राह्मण आर्त्त तथा रौद्रध्यान धरतो ते पुरना जळमां डुबी गयो हतो.

आ दृष्टांत उपरथी आत्म हितेच्छु पुरुषोए बीजा मतनी कांक्षा न करवी. ए प्रकारे कांक्षा नामनुं सम्यक्त्वनुं बीजुं दूषण दृष्टांत पूर्वक कहेलुं छे.

त्रीजुं विचिकित्सा दूषण

जिनेश्वरनी आज्ञाने अनुसरी चालनारा अने शुद्ध आचारने धारण

करनारा मुनि आदि. आदि शब्दथी श्रावको पण लेवा तेमनी जे निंदा करवी, ते विचिकित्सा नामे त्रीजु दूषण कहेवाय छे. ते सम्यक्त्वने दूषित करनारु होवाथी तेने दूषण तरीके कहेलु छे. ए विचिकित्सा दूषणने सर्वथा वर्जित करवु. जेमने सम्यक्त्व रत्न प्राप्त थयेल छे, अने जेओ सम्यक्त्वने विषे प्रयत्नवत छे, एवा पुरुषोनी तथा बीजा हरकोइ पुरुषनी निंदा करवी योग्य नथी तेमा जे निर्दोष एवा साधु प्रमुख उत्तम पुरुषो छे, तेमनी निंदा तो सर्वथा वर्जवी, एवो न्याय छे. जे श्रद्धालु एवा बीजानी आगळ पोताना गुरुजननी निंदा करे छे, अने जेओ स्वय मगळरुप अने मगळना कारणरुप एवा त्यागी गुरुओने सन्मुख आवता जोइ "आ अमगळनु कारणरुप मारे अपशुकन थया हवे आथी मारा कार्यनी सिद्धि नहीं थाय." आ प्रमाणे पोताना मनमा चिंतवे छे, तेओ महा मूढपणावाळा, जिन-वचनथी विमुख, एकाते मिथ्यादृष्टिवाळा अने दुष्कर्मना बधक जाणवा. ज्ञानी महाराज कहे छे के, तेवा दुष्ट प्राणीओनी आलोक तथा परलोकमा माये करीने कोइ वखत पण वाछित कार्यनी सिद्धि थती नथी. ए सम्यक्त्वनु विचिकित्सा नामे त्रीजु दूषण कहेल छे

कुदृष्टि प्रशसा

मिथ्यात्वनी प्रशसा करवारुप सम्यक्त्वनु चोथु दूषण छे

कुदृष्टि एटले खराब दृष्टिवाळा, जेनु शुद्ध दर्शन नथी, एवा अशुद्ध धर्मवादी कुतीर्थी, तेमनी जे प्रशसा करवी ते सम्यक्त्वनु चोथु दूषण छे. ते प्रथम कहेवा हेतुथी वर्जवु. कारण के, ते सम्यक्त्वने मलिन करे छे.

जेओ कुतीर्थिओना काइक अतिशय वगेरे जोइ " आ ठीक छे, आ मत ग्राह्य छे कारण के जेनी अदर आवा अतिशयवाळा होय छे. " आ प्रमाणे जे प्रशसा करे छे, ते मढ निष्कारण पोतानु शुद्ध सम्यक्त्व रत्न मलिन करे छे.

मिथ्यात्वीनो परिचय

मिथ्यात्वीओनो परिचय राखवो, ए सम्यक्त्वनु पाचमु दूषण छे. उपर कहेला कुदृष्टिओनी साथे आलाप सलाप प्रमुखथी परिचय करवो, ते पण सम्य-क्त्वने दूषित करे छे, माटे ए पाचमा दूषणनो सर्वथा परिहार करवो जेओ सुदृष्टि-

वाळा मुनिओ वगेरे होय तेमनोज परिचय करवो. कुदृष्टिओनो परिचय न करवो. कुदृष्टि—अन्य मतिओनो परिचय करवाथी नद मणिकार शेठनी पेठे माप्त थयेल सम्यक्त्वरुप रत्न नाश पामे छे.

नंद मणिकर शेठनुं दृष्टांत

एक वखते राजगृह नगरने विषे श्री चरम तीर्थंकर श्री वर्द्धमान प्रभु समोसर्या हता. श्रेणिक वगेरे श्रद्धालु लोको तेमने वंदना करवाने आव्या हता. ते समये सौधर्म देवलोकनो निवासी दर्दुराक नामे देव पोताना चार हजार सामानीक देवताओना परिवार साथे त्यां प्रभुने वंदना करवा आव्यो. तेणे सूर्याभ देवनी पेठे श्री वीर प्रभुनी आगळ बत्रीश प्रकारनु नाटक करवा मांड्युं. ते नाटक कर्या पछी ते देव पोताने स्थाने चाल्यो गयो. ते पछी श्री गौतम गणधरे भगवंतने पुछयु के, " भगवन्, आ देवताए आवी ऋद्धि क्या पुण्यथी प्राप्त करी छे ?" प्रभुए उत्तर आप्यो. " आ नगरमा नदमणिकार नामे एक शेठ वसे छे. एक वखते मारा मुखथी धर्म सांभळीने तेणे सम्यक्त्व सहित श्रावक धर्मने अंगीकार कर्यो. ते पछी घणा काळ सुधी तेणे श्रावक धर्म पाळ्यो हतो. एक वखते कोइ कर्मना योगथी तेने कोट कुदृष्टिनो परिचय थयो. तेनो परिचय वधवाथी तेने कोइ शुद्ध मुनि महाराजना परिचयनो अभाव थयो. आथी तेना हृदयमा मिथ्या बुद्धि वृद्धि पामी. ते पूर्वे घणो सद्बुद्धिवाळो हतो, पण मिथ्यादृष्टिना सहवासथी अनुक्रमे बुद्धिमां मद भावने पामी गयो. ते मिश्र परिणामथी काळक्षेप करवा लाग्यो.

एक दिवसे ते नद मणिकार शेठे ग्रीष्मऋतुमा पोषध साथे अठमनो तप ग्रहण कर्यो. बे दिवसे तेणे ए व्रत पाळ्यु. त्रीजे दिवसे मध्य रात्रे तेने अतितीव्र प्यासनी तृषा लागी. तृषानी वेदनाथी तेनामा आर्त्तध्यान उत्पन्न थयुं. ते आ प्रमाणे चिंतववा लाग्यो " आ संसारने विषे जे पुरुषो परोपकारने माटे वाव्यो तथा कुवाओ करावे छे, तेओने धन्य छे. धर्मना उपदेशकोए नवाण कराववाना धर्मने उत्तम कह्यो छे. जेओ ते धर्मने निंदे छे, तेओनी युक्ति खोटी छे. वाव्य कुवा वगेरे नवाण करावनाराने माटे शास्त्रमा कह्यु छे के. "

"धन्यास्त एव संसारे कारयंति वहूनिये।

वापी कूपादि कृत्यानि परोपकृति हेतवे ॥१॥
धर्मोपदेशकैश्चापि प्रोक्तो ऽसौ धर्म उत्तम ।
येत्वाहुर्दुष्टतामत्र तदुक्तिर्दृश्यते वृथा ॥२॥"

" जेओ वाव्य, कुवा वगेरेना कृत्यो परोपकारने माटे करावे छे, तेओ आ ससारमा धन्य छे. धर्मना उपदेशकोए ए धर्मने उत्तम कहेलो छे. जे लोको ए धर्मने दूषित कहे छे, तेमनु वचन वृथा छे."१–२

वली कहु छे के,

"ग्रीष्मर्तौ दुर्बला सत्वास्तृषार्त्ता वापिकादिषु।
समागत्य जलं पीत्वा नवति सुखिनो यत.॥३॥"

" ग्रीष्मऋतुने विषे दुर्बळ प्राणीओ, तृषाथी पीडित थइ वाव्य अथवा कुवा वगेरेमा आवीने जलपान करी सुखी थाय छे."

" अतोहमपि च प्रातर्वापीमेका महत्तराम् ।
कारयिष्यामि तस्मान्मे सर्वदा पुण्यसभव. " ॥ ४ ॥

" एथी हु पण प्रातःकाले एक मोटी वाव्य करावीश, तेथी मने सर्वदा पुण्य थवानो सत्नव छे. "४

आ प्रमाणे मनमा चिंतवता तेणे बाकीनी सर्व रात्रि प्रसार करी प्रातःकाले पारणु करी श्रेणिकराजानो हुकम लइ ते वैज्ञारगिरि पर्वतने विषे आव्या अने त्या आवीने तेणे एक मोटी वाव्य करावी ते वापिकानी चारे दिशाए अनेक प्रकारना वृक्षोथी सुशोभित अने दानशाळा, मत्र मरूप तथा देवकुल प्रमुख थी मंडित एवा वन कराव्या मिथ्यात्वीना परिचयथी आ प्रमाणे तेणे पोताना धर्मनो त्याग करी दीधो. अनुक्रमे प्रबळ कर्मनो उदय थवाथी तेनामा मोटा सोळ रोग उत्पन्न थया. ते सोळ रोगना नाम आ प्रमाणे छे. १ कास, २ श्वास, ३ ज्वर ४ दाह, ५ कुक्षिमा शूल, ६ नगदर, ७ हरस, ८ अजीर्ण, ९ दृष्टिरोग, १० पृष्ट शूल, ११ अरुचि, १२ खुजली, १३ जलोदर, १४ माथानी पीडा, १५कर्ण वेदना अने १६ कोढ आ सोळ रोगो तेने जोरे पीडा करवा लाग्या आ रोगोथी

जेनु शरीर पीमित थयेलु छे, एवो ते शेठ अतिशय वेदना जोगवी मृत्यु पामी गयो. मरण वखते तेनुं ध्यान तेनी वाव्य उपर हतुं, तेथी ते मरण पामीने तेज वाव्यमा गर्भज देमकापणे उत्पन्न थया. ते वाव्य जोइने ते वाव्य पोतानी करावी छे, एम थता तेने जाति स्मरणज्ञान उत्पन्न थइ आव्युं. ते ज्ञान उत्पन्न थवाथी तेना जाणवामा आव्युं के, जैन धर्मनी विराधना करवाथी आ फळ प्राप्त थयुं छे, तेथी तेना हृदयमा वैराग्य उत्पन्न थइ आव्यु. आथी ते देमको विचार करवा लाग्यो के, " आजथी हवे मारे निरंतर छठ तप करवो. पारणाने दिवसे वाव्यना कांठा उपर आवी स्नान करता एवा लोकोथी प्रासुक थयेला जलनुं पान करवुं अने प्रासुक थयेली मृत्तिकानु जक्षण करवु. " आवो विचार करी तेणे तेवो अजिग्रह धारण कर्यो

एक वखते ते वाव्यने विषे स्नान करवाने आवता एवा लोकोथी मारुं आगमन तेना सांजळवामा आव्यु, तेथी मने ते पोताना पूर्व जवनो धर्माचार्य मानी एक सहस्र पत्रवालुं कमळ मुखमा लइ मने वंदना करवाने नीकळ्यो. ते व खते केटलाएक दयालु लोको मने वंदना करवा आवता हता, तेमणे दयाबुद्धिथी ते देमकाने वारंवार वाव्यना जलमा नाखवा मांडयो. छता पण मने वंदना करवामा एकाग्रचित्तवाळो ते देमको वाव्यमाथी बाहेर नीकळी जेवामा आवतो हतो, तेवामा जक्तिथी जेनुं मन उल्लास पामेलु छे एवो श्रेणिकराजा घणो परिवार लइने मने वंदन करवा आवतो हतो, ते तेज मार्ग नीकळ्यो कर्म योगे ते देमको श्रेणिकराजाना घोमानी खरी नीचे चकदाइ गयो. शुज्ञ ध्यानथी त्यांज मृत्यु पामी ते सौधर्म देवलोकने विषे दर्दुराक नामे महा समृद्धिवान् देवतारूपे उत्पन्न थयो. तरतज तेने अवधिज्ञान उत्पन्न थयु. तेथी तेणे पोताना पूर्व जवनो वृत्तांत अवलोकी अहीं मारा समवसरणनी रचना जाणी तत्काल अहीं मने वंदना करवाने आव्यो अने पोतानी सर्व समृद्धि देखामी पाछो पोताना स्थान प्रत्ये चाल्यो गयो. हे गौतम, ए प्रमाणे ए दर्दुराकदेवनो वृत्तांत मे तमने कह्यो छे."

गौतम मुनिए पुन प्रजुने प्रश्न कर्यो " जगवन्, ए देवता अहींथी च्यवीने क्या जशे ? " जगवाने कह्यु, " ते महाविदेह क्षेत्रने विषे उत्पन्न थशे."

मिथ्यात्वीना परिचयथी केवु नठारु फळ मळे छे ? ते विषे आ नंदमणि

कारनु दृष्टात साजळी सम्यक्त्ववत पुरुपोए सर्वथा कुदृष्टिना परिचयनो त्याग करवो. अने सम्यग्दृष्टिना परिचयने वधारवो

आ प्रमाणे सम्यक्त्वने दूषित करनारा सम्यक्त्वना पाच दूषणो जे कहेवामा आव्या तेओथी सम्यक्त्व मलिन थाय छे, माटे ते पाचे दूषणोनो सर्वथा परिहार करवो.

सम्यक्त्वना आठ प्रज्ञावक

हवे सम्यक्त्वना आठ प्रज्ञावक कहे छे. जेनाथी सम्यक्त्वनो प्रज्ञाव वधे ते प्रज्ञावक कहेवाय छे.

१ प्रवचनी प्रज्ञावक

प्रवचन एटले द्वादशागी. ते जेने अतिशयनी पेठे होय ते प्रवचननी कहेवाय छे. वर्त्तमानकाळने योग्य एवा जे जे सूत्रो छे, तेना अने तेना अर्थना धारण करनारा—तीर्थना वहन करनारा जे आचार्य ते प्रावचनी कहेवाय छे. देवर्ध्दिगणी क्षमाश्रमणादिक प्रथम प्रवचनना प्रज्ञावक थया हता.

देवर्ध्दिगणिनी कथा

एक वखते राजगृही नगरीने विषे चरम तीर्थकर श्री महावीर प्रज्ञु समोसर्या हता. देवताओए मनोहर समवसरण रच्युं हतु बार परिपदो तेमा एकठी मळी हती. ते वखते सुधर्मा इन्द्र आव्यो. ते ज्ञगवानने त्रण प्रदक्षिणा करी अने वदन करी पोताने योग्य स्थाने बेठो. ते पछी प्रज्ञुए जल सहित मेघना जेवा ध्वनिथी स्वरनी मधुरताथी परमानदरुप अमृतने झरनारी, महा निबिड मोहरुप अधकारनो नाश करनारी, सर्व जगत्ना प्राणीओने चमत्कार करनारी अने मनने हरनारी एवी देशना आपी. देशनाने अंते सौधर्मपति इन्द्रे विनयथी वीरप्रज्ञुने पुछ्यु, " ज्ञगवन्, आ अवसर्पिणी कालमा तमारु तीर्थ केटलो काल प्रवर्त्तशे. पछी शी रीते तेनो विच्छेद थशे ? " इन्द्रनो आ प्रश्न साजळी वीर प्रज्ञुए कह्यु, हे इन्द्र, एकवीश हजार वर्ष दुषम नामे पाचमा आरा सुधी मारु तीर्थ प्रवर्त्तशे. ते पछी पाचमा आराना छेल्ले दिवसे पेहेला पोहोरमा १ श्रुत, २ सूरि, ३ धर्म अने ४ सघ–ए चार विच्छेद पामशे. बीजे पोहोरे विमलवाहन राजा थता तेनो

सुधर्मा नामे मंत्री अने राजनीति नाश पामी जशे. सायंकाळे बादर अग्निनो विच्छेद थइ जशे. आवी रीते मारा तीर्थनो उच्छेद थइ जशे.

इंद्रे पुनः प्रश्न कर्यो, " स्वामी, तमारु पूर्वगत श्रुत केटलो काल रहेशे?" प्रभुए उत्तर आप्यो. " इन्द्र, एक हजार वर्ष पर्यंत मारु पूर्वगत श्रुत रहेशे. ते पछी तेनो उच्छेद थइ जशे.

इंद्रे पुनः पुछ्युं,—स्वामी, कया आचार्य महाराजनी पछी सर्व पूर्वगत श्रुत विनाश पामशे ? "प्रभु बोल्या—" देवर्ध्दिगणी क्षमाश्रमणनी पछी सर्व पूर्वगत श्रुत विच्छेद पामी जशे. " इंद्रे फरीथी पुछ्युं, " भगवन्, जे देवर्ध्दिगणी थवाना छे, तेमनो जीव हाल क्या छे ? " प्रभुए कह्यु, " इंद्र, जे तारा पेदल सैन्यनो अधिपति आ हरिणगमेषी देव तारी पासे रहेलो छे, ते देवर्ध्दिगणीनो भावी जीव छे. प्रभुना आ वचन सांभळी इंद्र विस्मय पामी गयो अने ते पोतानी पासे रहेला हरिणगमेषी देवनी प्रशंसा करवा लाग्यो. ते देवे पण आ पोतानो वृत्तांत सांभळी लीधो. ते पछी इन्द्र परिवार सहित प्रभुने नमी पोताने स्थाने चाल्यो गयो.

ते हरिणगमेषी देवे अनुक्रमे आयुष्यना दलियानी हानि थतां छ मासनुं आयुष्य बाकी रहेतां मनुष्यनुं आयुष्य बांध्युं, ते पछी पोतानी पुष्पमाळानुं करमाइ जवुं अने कल्पवृक्षोनुं कंपन वगेरे च्यववाना चिन्हो देखी तेणे इंद्रने आ प्रमाणे विनंति करी " स्वामी, तमे अमारा पोषण करनारा प्रभु छो तेथी मारा पर कृपा करी एटलुं करो के, जेथी मने परभवने विषे धर्मनी प्राप्ति थाय. हुं फरीथी योनिरूप यंत्रना संकटमां पडी बे प्रकारना अंधकारथी जेना चेतननो अने चक्षुनो लोप थयेलो छे एवो बनी गर्भनी ओरमां लेपाएला शरीरने अग्निथी ताप थाय अने सूची (सोइ)ना समूहथी पण अधिक शरीरने वेदना थाय, तेवा दुःखो भोगववा जतां हुं धर्मकरणीने भूली जइश, माटे मारे स्थाने उत्पन्न थयेला बीजा हरिणगमेषी देवने मने बोध करवा मोकलजो. एथी आपनुं स्वामिपणुं पर भवने विषे पण सफळ थशे. "

ते देवताना आ वचनो इंद्रे अंगीकार कर्या, तोपण ए हरिणगमेषी देवताए पोताना विमाननी भींत उपर वज्र रत्नवडे नीचे प्रमाणे अक्षरो लख्या.

" जे हरिणगमेषी देव आ स्थाने उत्पन्न थाय, तेणे मने परजवने विषे प्रतिबोध करवो. जो ते नहीं करे तो तेने इंडना चरणकमळनी सेवामां विमुखपणानो दोष लागशे. "

आयुष्य पूर्ण थया पछी ते हरिणगमेषी देव त्यांथी च्यवीने जंबूद्वीपमां आवेला जरतक्षेत्रनी अंदर सौराष्ट्र देशमां वेलाकुलनगरना राजा अरिदमनना सेवक कामर्द्धि क्षत्रियनी स्त्री कलावतीनी कुक्षिने विषे पुत्ररूपे उत्पन्न थयो. ते कामर्द्धि सेवक काश्यप गोत्री हतो. ज्यारे ए गर्नमां आव्यो त्यारे तेनी माता कलावतीए स्वप्नाने विषे एक महार्द्धिक देवने जोयो हतो. अनुक्रमे शुज दिवसे ए पुत्रनो जन्म थयो. तेनु नाम देवर्द्धि पाड्युं. पांच धात्रीओथी पालन करातो ते पुत्र बार वर्षनो थयो. पिताए तेने बे कन्याओ परणावी. देवर्द्धि ते कन्याओनी साथे विषय जोग जोगवतो हतो. ते युवान थयो त्यारे तेने अधर्मी जनोनो सहवास थयो हतो. पोतानी समान वयना राजपुत्रो तथा क्षत्रिय पुत्रोनी साथे ते सीकारनी वार्ता करतो हतो. ते धर्मनी वार्त्ता जाणतो नहीं तेम सांजळतो पण नहीं. ते आ रीते पोतानो काल निर्गमन करतो हतो

हवे पेला विमानने विषे नवो हरिणगमेषी देव उत्पन्न थयो. उत्पत्ति समये जे पूजा आदि करणी करवा योग्य छे, ते करी ते सुधर्मा इंडनी सजामां सेवाने माटे आव्यो तेने देखी इंडे पुछ्युं के, " तुं नवो उत्पन्न थयो छे ? " तेणे हा कही एटले इंडे तेने आज्ञा करी के, तारा स्थान उपर थयेला पेहेलाना हरिणगमेषी देवने तारे प्रतिबोध करवो. " इंडनी आ आज्ञा तेणे अंगीकार करी. ते पछी ते पोताने स्थाने चाल्यो गयो

एक वखते ते हरिणगमेषी देवे पोताना विमाननी दीवाल उपर पेला अक्षरो अवलोक्या. ते वाची तेणे एक पत्र लख्यो तेमां नीचे प्रमाणे श्लोक लख्यो हतो

" स्वजित्तिलिखितं वाक्यं, मित्र त्वं सफलं कुरु ।
हरिणेगमेषिको वक्ति, संसारं विषमं त्यज ॥ १ ॥ "

"हे मित्र, तारा विमाननी चीते लखेलु वाक्य तु सफल कर. अने हरिणगमेषी देव कहे छे के, आ विषम संसारने छोडी दे. १"

आ श्लोक लखी तेणे पोताना एक सेवकने बोलावी कह्युं के, "आ पत्र तारे देवर्द्धिने आपवो." एम कही ते सेवकने विदाय कर्यो. ते सेवक ज्यां देवर्द्धि हतो त्यां आव्यो अने आकाशमां रही ते पत्र तेनी पासे नाख्यो. देवर्द्धिए आकाशमांथी पडता ते पत्रने देखी लइने वांच्यो, पण तेना अर्थ तना समजवामां आव्यो नहीं. ते पछी केटलोक समय वीती गयो. पछी पेला देवताए स्वप्नामां आवी तेने ए श्लोक कह्यो, तोपण देवर्द्धि प्रतिबोध पाम्यो नहीं.

एक वखते देवर्द्धि सीकार करवाने नीकल्यो हतो. कोइ अटवीमां आवता एक वराह तेनी नजरे आव्यो. तत्काळ तेणे पोताना घोडाने वराहनी पुठे दोडाव्यो. वराहनी पाछळ ते अटवीमां दूर चाल्यो गयो. तेवामां पेला हरिणगमेषी देवे तेने भय बताव्यो. एक केशरीसिंह उभो छे अने पाछळ मोटो खाडो छे, ते खाडानी बे पडखे बे मोटा वराह घुर्घुर शब्दो करता उभा छे. नीचे धरतीकंप थाय छे अने उपरथी पथरानो वर्षाद पडे छे. आ प्रमाणे मृत्युना भयने उत्पन्न करनारा कारणोने देखी ते देवर्द्धि भयथी व्याकुल थइ गयो. अने चारे दिशा तरफ जोवा लाग्यो. तेणे चोतरफ जोयुं पण कोइ तेना मरणनो निवारक जोवामां आव्यो नहीं, तेथी ते विशेष चिंता करवा लाग्यो. ते समये पेला देवताए रुद्र दृष्टिए विलोकीने कह्युं,"केम हजु सुधी मारा कहेला श्लोकनो अर्थ नथी जाणतो ?" देवर्द्धिए भय पामीने कह्यु, "हु काइपण जाणतो नथी." पछी ते देवताए तेने तेना पूर्वभवनो बधो वृत्तांत कही संभळाव्यो. अने पछी कह्यु के, 'जो तु व्रत ग्रहण कर तो तने छोडी दउ—आ मरणांत कष्टमांथी तारु रक्षण करु." ते सांभळी ते देवर्द्धिए ते अंगीकार कर्यु,पछी ते देवताए ते देवर्द्धिने त्यांथी उपाडी लोहीताचार्यनी पासे मुक्या अने त्यां तेमणे जिनेश्वर भगवान्नी दीक्षा ग्रहण करी. दीक्षित थयेला देवर्द्धिए आगमनु पूर्ण ज्ञान संपादन कर्युं अने पोते यथार्थ गीतार्थ थया. गुरुनी पासे जेटलु पूर्वश्रुत हतु, तेटलु तेमणे भणी लीधु ते पछी तेओ श्री केशीगणधरना संतानिक देवगुप्त गणी पासे आव्या अने तेमनी पासे प्रथम पूर्व अर्थयुक्त अने बीजु पूर्व मात्र सूत्ररूपे भण्या हता. तेमना विद्यागुर

स्वर्गवासी थया पछी गुरुमहाराजाए देवर्द्धिने गीतार्थ जाणी पोतानी पाटे स्था पित कर्या अने तेमने गणीपद आप्यु. अने बीजा गुरुए तेमने क्षमाश्रमण पद आप्युं. त्यारे महानुभाव देवर्द्धि गणी क्षमाश्रमण, ए नामथी प्रख्यात थया हता.

ते समये पाचसो आचार्यो विद्यमान हता, तेओमां देवर्द्धिगणी क्षमाश्र मण युग प्रधानपदने धारण करनार, कलिकाल केवली, सर्व सिध्धातनी वाचना आपनारा, अने जिनशासननी प्रभावना करनारा थया हता.

एक वखते महानुभाव देवर्द्धिगणी श्री शत्रुंजय पर्वत उपर आव्या हता. त्या वज्रस्वामीए स्थापेल श्री आदीश्वर प्रभुनी प्रतिमाने नमी तेमणे श्री कवरुयक्षनी आराधना करी हती. श्री कवरुयक्षे प्रत्यक्ष थइने गणीने कह्यु के, "मारु शु काम छे?" ते वखते महानुभाव देवर्द्धिगणीए कह्यु, हे यक्षदेव, हमणा बार वर्षनो दुकाल थयेलो छे. श्री स्कंदिलाचार्ये मथुरामा सिध्धातनी वाचना करी, तो पण कालनी समयने अनुसारे मंदबुध्धिपणाथी साधुओ आगमोने विसरी जाय छे, अने जशे. तेथी तमारी सहायथी ते सिध्धांतोने ताडपत्र उपर लखवानी मारी इच्छा छे. तेम करवाथी जिनशासननी उन्नति थशे. कारण के, मंद बुध्धिवाळा पुरुषो पण पुस्तकनु अवलंबन करीने सुखे शास्त्राभ्यास करी शकशे."

देवर्द्धिगणीना आ वचनो साभळी ते यक्ष प्रसन्न थइने बोल्यो "हु तमोने ए कार्यमा सानिध्य करीश तमो साधुओने एकठा करो. पछी आचार्ये कह्यु के, तमो मषी, ताडपत्र विगेरेनो मोटो जथ्थो एकत्र करावो केटलाएक लहीआने पण एकठा करो. अने ते साथे साधारण द्रव्य पण एकठु करो." आ प्रमाणे कही ते गणी त्याथी विहार करीने वल्लभीपुरमा आव्या हता. त्यां पेला यक्षे पुस्तक लखवानी सर्व सामग्री एकठी करी हती. पछी वृध्ध अने गीतार्थ देवर्द्धिगणी जेम जेम अग-उपागना आलावा कहेता गया, तेम तेम लहीआओए प्रथम खरडारुपे लखी लीधा. ते पछी ते गणी महाराजाए सयोजना करावी मूल पत्रमां लखाव्या हता अद्यापि पण ते कारणने लइने अगोने विषे उपागोनी साक्षी आपवामा आवे छे. वळी वच्चे वच्चे विसवादनी सख्यानो

नियम न होवायी माथुरी वाचना पण देखाइ आवे छे. तेम वळी पूर्वे आर्यरक्षितसूरि महाराजाए सिध्धांतोने विषे जुदा जुदा अनुयोग कर्या, स्कंदिलाचार्ये तेमनी वाचना करी अने देवर्ध्धिगणीए तेमने पुस्तकारूढ कर्या हता. ते कारणने लइने सुधर्मा स्वामीना वचनो कोइ कोइ ठेकाणे विसंस्थूल देखाय छे. एटले तेमा पाठांतरो जोवामा आवे छे, ते पण आ दुषम कालनोज प्रभाव छे. तथापि सम्यग् दृष्टि जीवोए आ जिन आगमने विषे जरा पण संशय करवो नहीं. ते समये देवताना सानिध्यथी एक वर्षनी अंदर एक कोटी प्रमाण जैन पुस्तको लखवामां आव्या हता. श्रीवीरप्रभुना निर्वाण पछी नवसो ऐंशी वर्ष अतिक्रांत थया पछी सर्व सिद्धांतोना लखनार अने युग प्रधान पदने धारण करनार श्री देवर्ध्धिगणी क्षमाश्रमण श्री जिनशासननी बहु प्रकारे प्रभावना करी छेवटे सिध्धगिरि उपर अनशन करी देवलोके गया हता.

आद्य प्रकारना आचार्यो श्री जिनशासनना प्रभावक कहेवाय छे. बीजा धर्मकथी नामे प्रभावक कहेवाय छे. जेमनी धर्मकथा प्रशस्त होय ते धर्मकथी कहेवाय छे. तेओ क्षीराश्रव लब्धि प्राप्त करी जल सहित मेघनी गर्जना जेवी वाणी वडे आक्षेपणी, विक्षेपणी, संवेदनी, अने निर्वेदनी—एवी चार जातनी देशना वडे लोकोना मनने प्रमोद उत्पन्न करे तेवी धर्म कथाओ करे छे अने तेमनाथी घणां भव्य जीवोने प्रतिबोध करे छे. तेवा धर्मकथी श्री नंदिषेण विगेरे हता.

ते चार प्रकारनी कथाओना लक्षणो

१ जेमां हेतु दृष्टांत वडे स्याद्वादनी पध्धतीथी पोतानो मत स्थापन करवामां आवे, ते आक्षेपणी कथा कहेवाय छे.

२ जेमां पूर्वापर विरोधवडे मिथ्या दृष्टिना मतनो तिरस्कार करवामां आवे ते विक्षेपणी कथा कहेवाय छे

३ जे मात्र सांभळवाथी भव्य जीवोने मोक्षनो अभिलाष थाय, ते संवेदनी कथा कहेवाय छे.

४ जेमा संसारना भोगना अंगनी स्थिति—लक्षणनु मात्र वर्णन करवाथी

ज जव्य जीवोने ते वैराग्यनुं कारण थाय, ते निर्वेदनी कथा कहेवाय ठे.

धर्मकथी श्री नंदिषेणनुं दृष्टांत.

कोइ एक नगरमां मुखप्रिय नामे एक धनवान् ब्राह्मण रहेतो हतो. एक वखते तेणे मिथ्यात्वथी मोहित थइ यज्ञ करवानो आरंज कर्यो.ते यज्ञमां रंधेला अन्ननी रक्षा करवा माटे तेणे एक जीम नामना पोताना सेवकने आज्ञा करी. ते वखते ते जीमे एवो ठराव कर्यो के, ब्राह्मणोने जमाड्या पठी जे बाकी अन्न रहे ते मने आपवु.' आवा ठरावथी तेणे ते अन्ननी रक्षा करवाने कबुल कर्युं हतुं. मुखप्रिय ब्राह्मणे ते ठराव कबुल कर्यो अने ते जीमने अन्ननी रक्षा करवाने राख्यो. ते गृहस्वामी मुखप्रिय ब्राह्मणे ब्राह्मणो जमी रह्या पठी वधेलुं अन्न पोताना सेवक जीमने आपी दीधु. जीम सेवावृत्ति करतो हतो, तोपण ते सम्यक् दृष्टि हतो. तेणे ते अन्नथी जैन मुनिओने प्रतिलाजित कर्या. अने बीजा अन्य दर्शनीओने पण दया दाननी बुद्धिथी आप्युं, आथी ते जीमे जोगकर्म उपार्जन कर्युं. केटलेक समये ए जीम सेवक मृत्यु पामीने देवता थयो. देवताना सुख जोगवी त्यांथी च्यवीने ते राजगृह नगरीना राजा श्रेणिकने घरे पुत्ररुपे उत्पन्न थयो. त्यां तेनुं नंदिषेण नाम पाडवामा आव्युं. पेला मुखप्रिय ब्राह्मणनो जीव मृत्यु पामी केटलाक जव जमी ते काळे कदलीना वनने विषे कोइ हाथिओना टोळामां एक हाथिणीनी कुक्षिने विषे उत्पन्न थयो. ते वखते हाथिणीओना यूथपति गजेंद्र विचार करतो के, जो कोइ नवीन हाथी मोटो यूथपति थशे, तो ते मारो पराजव करशे." आवुं विचारी ते यूथपति हाथिणीओने प्रसव समये कोइ हाथी अवतरे त्यारे तेने हणी नांखतो हतो जेना गर्जमा पेला मुखप्रिय ब्राह्मणनो जीव अवतरेल ते हाथिणी ते यूथपतिथी पोताना गर्जनुं अकुशल जाणी कपटथी लगडी थइ अने हळवे हळवे हाथीनी पाछळ चालवा लागी.कोइ कोइवार एक बे दिवसे ते पोताना यूथपतिना टोळाने मळवा लागी. एक वखते कपट करी हाथिणी टोळाथी विखूटी पडी कोइ तापसना आश्रममां आवी तेणी पोतानी सुंढवडे ते दयाळु तापसना चरणनो स्पर्श करवा लागी अने तेने वार वार नमवा लागी. दयाळु तापसोए ते हाथिणीने गर्जवती जाणी तारो गर्ज कुशल रहो ' एम आशीष आपी पोताना आश्रय नीचे राखी. हाथिणीए एक

दिवसे एक पुत्रने जन्म आप्यो. तापसना पुत्रोए तेनी परिपालना करवा मांडी अने ते गजपुत्र सुरक्षित थयो. हाथिणी अरण्यमा चरवा जती अने आश्रममां पोताना पुत्रने स्तनपान करावा आवती हती. हाथिणीनु ते बालक उछरवा लाग्यु अने तापसोना बालकोनी साथे क्रीडा करवा लाग्यु. तापसोना कुटुंबोनी साथे हलीमली गयेलो ते गजबालक हमेशा पोतानी सुंढमां जल लावी आश्रमना वृक्षोने सिंचन करतो हतो. आ प्रमाणे वृक्षोने सिंचन करतां गजेंद्रना बालकने जोइने ते तापसोए तेनु नाम सेचनक पाड्यु. ते सेचनक ते स्थले उछरी वृद्धि पामी त्रीश वर्षनो गजेंद्र थयो. एक वखते ते महान् हस्ती वनमां फरतो पेला मोटा गजेंद्रना जोवामा आव्यो. तत्काल ते गजेंद्र तेना उपर धसी आवता आ युवान हस्तीए पोताना उग्र बलथी ते यूथपति गजराजने मारी नाख्यो. अने पोते यूथपति बनी गयो. तेणे विचार्यु के "जेम मारी माताए पेला यूथपतिना भयथी मने तापसोना आश्रममां जणी मोटो कराव्यो, तेवी रीते बीजी हाथणीओ न करे." आवु धारी पोतानु यूथ लइ तापसोना आश्रममां गयो अने त्या ते तापसना कुपमाने तेणे भागी नाख्यु. ते जोइ तापसो तेनी उपर रोषाविष्ट थइ गया अने ते प्रदेशना राजा श्रेणिकनी पासे तेनी फरीयाद करी. राजा श्रेणिक तापसोनुं ते कष्ट जोइ काइ प्रयोगथी ते नवीन यूथपतिने बंधनमां लाव्यो. अने बंधनना स्थानमां यंत्रवाली साकलोथी तेने बधाव्यो.

एक वखते तापसोए ते बांधेला सेचनक हाथीने जोइने कह्यु के, 'तें जेवुं कर्म कर्यु, तेवु तने फल मळ्यु छे.' आ वाक्य सांभळताज ते गजेंद्र क्रोधातुर थइ गयो अने तत्काल ते बंधनने तोडी ते तापसोने मारवाने पाछळ दोड्यो. तापसो व्याकुलपणाना शब्दो पोकारता नाशी गया. तापसोनो पोकार सांभळी श्रेणिक राजानो पुत्र नंदीषेण ते हस्तीने वश करवा माटे दोडी आव्यो. नंदीषेणने जोतांज ते गजेंद्र तत्काल उहापोह करवा लाग्यो. अने तेम करता तेने अवधिज्ञान उत्पन्न थइ आव्यु. तेने पोताना पुर्व जन्मनो वृत्तात याद आवी गयो. कुमार नंदीषेण पण ते हाथीने जोइ स्निग्ध हृदयवालो थइ गयो. पूर्व जन्मना स्नेहथी तेणे गजेंद्रने केटलाएक वचनो कही प्रतिबोध आप्यो. पछी संतुष्ट थयेला गजेंद्रनी उपर बेसी कुमार नंदीषेण तेने बंधन स्थानमां लाव्यो अने त्यां तेने बांधी दीधो.

आ खबर सांजळी श्रेणिकराजाए प्रसन्न थइ पोताना कुमारनो जारे सत्कार कर्यो अने तेने पाचसो कन्याओ परणावी. एक वखते श्रीवीर जगवान् राजगृह नगरीमां समोसर्या. आ शुज खबर साजळी तेमने वदन करवाने पोताना पिता श्रेणिक राजनी साथे कुमार नदीषेण पण गयो हतो. श्रीवीरप्रजुए धर्म देशना आपी. ते सांजळी नदीषेण प्रतिबोध पाम्यो. तत्काल नदीषेणे वीरप्रजुनी पासे दीक्षा आपवानी मागणी करी. तत्काल प्रजुए विचार्यु के, " आमाराथी तेने धर्मनी वृद्धि थशे " आवुं विचारी ' यथा सुख देवानुप्रिय ' एम कही पछी ' आने प्रतिबंध करशो नही ' एवु बीजु वाक्य कह्यु नहीं कारण के, तेमणे जाण्यु हतु के, आगळ उपर आ नदीषेणने व्रतमा विघ्न थवानु छे.

नदीषेण कुमार से पछी प्रजुने वादी घेर आव्यो. तेणे व्रत लेवाने माटे पोताना मातापितानी आज्ञा मेलवी पछी ते मोटा उत्सव पूर्वक दीक्षा ग्रहण करवा तत्पर थयो. आ वखते शासन देवताए आकाश वाणीथी जणाव्यु, " कुमार नदीषेण, तु दीक्षा लेवाने तैयार थयो छे, पण हजु तारे जोगनिक कर्मनो उदय छे, माटे केटलोक वखत तेनी राह जो पछी दीक्षा ग्रहण करजे " शासन देवताए आ प्रमाणे कह्यु, तोपण नदीषेणे ते मान्यु नहीं अने तत्काल पोताना मननी दृढता विचारीने ते श्री वीरप्रभुनी पासे गयो अने तेमनी पासे दीक्षा ग्रहण करी. दीक्षा लीधा पछी ते बुद्धिमान् नदीषेण मुनिए अनुक्रमे दशपूर्व ज्ञाननो अन्यास कर्यो. अने ते राजर्षि दुष्कर तपस्या करवा लाग्या. आ तेना आचरणथी तेओ पूर्ण रीते लब्धिवान् थया हता. वीरप्रजुए जे धारणा धारी हती, अने शासनदेवे तेने माटे जे वचनो उचार्या हता, ते सफल थवानो वखत आव्यो. मुनि नदीषेणने तेमना जोग कर्मनो उदय थइ आव्यो मननी चचळताथी पूर्वे जोगवेला अने रमण करेला वैषयिक विचारो तेना स्मरण मार्गमां आववा लाग्या. तेना मनमा मनोजवनो उदय थयो. ज्यारे पोते ए कामपीडा न सहन करवा असमर्थ थया एटले सूत्रने विषे कहेला विधि प्रमाणे मनने वश करवाने अने पोताना विकारी देहने कृश करवाने माटे घणी आतापना करवा लाग्या. हमेशा विशेष तप आचरवा लाग्या. तोपण तेमनी जोगनी इच्छा निवृत्त थइ नहीं.

ज्यारे कोइ पण रीते तेनी कामवेदना शात थइ नहीं एटले तेमने पोताना शुध्ध व्रतनो भग थवानो महान् भय लागी आव्यो. तत्काल तेमणे चिंतव्युं के, "व्रतनो भग थया करता मरण पामवु सारुं छे." आथी तेओए मृत्यु पामवाने माटे गळे पाश नाख्यो. तत्काळ ते खबर जाणी देवीए तेनो फांसो तोडी नाख्यो तोपण तेओ एटलेथी अटक्या नहीं. तत्काल तेमणे विष भक्षण कर्युं. देवताना प्रभावथी ते विष अमृत रुप थइ गयु. पछी अग्निमा पडी प्राण काढवा तैयार थया. देवना प्रभावथी ते अग्नि पण बुझाइ गयो. एवी रीते मरणने माटे करेला तेमना सर्व प्रयोगो निष्फळ थइ गया हता.

एक वखते ते नदीषेण मुनि राजगृह नगरीमा अठमना पारणा माटे भिक्षा लेवा नीकळता एक वेश्याना घरमा पेशी गया. त्या जइ तेमणे कह्यु, "हे गृहनायिका, जो तारी श्रध्धा होय तो मने भिक्षा आप. तने धर्म लाभ थशे.

वेश्याए नदिषेण मुनिना आ वचन साभळी हसता हसता कह्यु, "महाराज, तमे धर्म लाभ आपो छो, पण ते धर्म लाभमा सिध्धि नथी. अर्थ लाभमा छे." वेश्याना आ वचन साभळी ते वखते अभिमान रुपी पर्वत उपर आरूढ थयेला एवा मुनि नदीषेण वेश्या प्रत्ये बोली उठ्या के, 'तमारे अर्थ लाभ थाओ.' आ वाक्य मुखमाथी नीकळताज तेमना तपनी लब्धिथी ते वेश्यानु घर साडाबार क्रोड सोनैयाथी पूराइ गयु हतु ते विषे निशीथ सूत्रना छठा अध्ययनमा नीचे प्रमाणे कहेलु छे.

"धम्मलाभ तओ भणइ, अथ्थलाभं विमग्गिओ ।
तेणावि लध्धिजुत्तेण, एव भवउत्ति भाणियं" ॥१॥

"धर्मलाभ बोले छे, तेवामा तो तेणीए (वेश्याए) अर्थ लाभ माग्यो. तेणे पण लब्धि युक्त थइ 'एमज थाओ' एम कह्यु."

श्री ऋषिमण्डलनी टीका वगेरेमा वळी बीजी रीते कह्यु छे, तेथी तत्त्वनी वात तो केवळी भगवान् जाणे.

वेश्या अत्यत विस्मय पामी गइ अने उतावळी उठी मुनिना चरणमा आवीने नमी पडी तेणीए हावभाव करी मुनिना चित्तमा विकार उत्पन्न क-

रवा आ प्रमाणे बोली. " स्वामी, तमोए आ सोनैयाथी मने वेचाती लीधी छे, तेथी आ धन साथे मने तमे ज भोगवो. " आ प्रमाणे कही मोहना चाळा करती अने प्रेम वचनोने माधुर्य साथे बोलती वेश्याए मुनिना हृदयने क्षोभ पमाडी दीधु मुनि भोग्य कर्मना उदयथी क्षोभ पामी वेश्याने वश थइ तेणीना आवासमाज रह्या. तोपण मुनिए ते वखते एवो नियम राख्यो हतो के, वेश्याने त्यां आवनारा कामी पुरुषोमा दररोज दश पुरुषोने धर्मनो उपदेश करी प्रतिबोध पमाडवा. ज्यारे तेमा एक पण न्यून रहे त्यारे तेनी जग्याए पोताने रही प्रतिबोध पामवो. आ नियमने लइने मुनि वेश्याना गृहद्वार आगळ उभा रहेता अने जे कामी पुरुषो त्या आवे, तेमने अनेक प्रकारनी युक्तिनी रचना साथे आक्षेपणी वगेरे चार प्रकारनी धर्म कथाओ कहेता हता अने धर्म करावता हता तेओ माथी तेमणे केटलाएकने तो श्रीजिनेश्वर समीपे महाव्रत लेवरावता अने केटला एकने सम्यकत्व मूल बार व्रतो अगीकार करावता हता आ प्रमाणे धर्म कथाथी भव्य जीवोने प्रतिबोध आपता अने पोते शुध्ध श्रावक धर्मने पाळता बार वर्ष वीती गया हता. हवे तेमना भोग्य कर्म जीर्ण थइ गया, आथी एक दिवसे नव कामी पुरुषोने प्रतिबोध आप्यो.

दशमा पुरुषने शोधता एक सोनी मळी आव्यो तेने अनेक प्रकारनी युक्तिथी प्रतिबोध आपवा माड्यो, पण ते धीठ पुरुष प्रतिबोध पाम्यो नहीं. ज्यारे तेने घणु समजाव्यो, त्यारे तेणे मुनिने कह्यु, " अरे भाइ, विषय रुप कादवमा बुडेला तारा आत्माने तारवाने तु पोते समर्थ नथी तो, पछी बीजाने शो उपदेश आपे छे ?" आ अरसामा वेश्याए ते नदिषेणने भोजन करवाने बोलाव्या, पण दश पुरुषोने प्रतिबोध करवानी पोतानी प्रतिज्ञा पूर्ण थइ नथी, त्या सुधी तेओ भोजनने इच्छता नथी राधेली रसवती बे त्रण वार शीतळ थइ गइ. ज्यारे नदिषेण आव्या नहीं एटले वेश्या तेमनी पासे आवी अने हसती हसती बोली—" स्वामी, जो कोइ दशमो पुरुष मळतो न होय तो तमे पोतेज दशमा थाओ. अने तमारी प्रतिज्ञा पूर्ण करी आवीने जमी ल्यो "

वेश्याना आ वचनो साभळी मुनि नदिषेण के जेमना भोग्य कर्म पूर्ण थइ गया छे, एवा तेओ फरीवार मुनिवेष लइ श्री वीर प्रभुनी पासे आव्या

अने तेमणे तेमनी पासे महाव्रत अंगीकार कर्यो. पछी शुध्द–निर्मल चारित्र पाली अते समाधिथी काल करी देवलोकने प्राप्त थया. त्यांथी च्यवीने तेओ महाविदेह क्षेत्रने विषे जइ मोक्ष पदने प्राप्त थशे. आ वृत्तांत श्री वीर चरित्र उपरथी लेवामा आव्यो छे. महा निशीथ सूत्रमा तो नदिषेणने केवळज्ञाननी प्राप्ति थयेली, एम लखेलु छे. तेमा तत्त्व शु छे ? ते केवलिगम्य छे. आ प्रकारे आ धर्मकथी नामना शासनना बीजा प्रभावक जाणवा.

त्रीजा वादी नामना प्रभावक

वादी, प्रतिवादी, सभ्य अने सभापति ए चतुर्विध पर्षदाने विषे प्रतिपक्षनु निराकरण करवा पूर्वक स्वपक्षनु स्थापन करवा भाषण करे ते वादी नामे शासनना त्रीजा प्रभावक कहेवाय छे. जे वाद लब्धिथी संपन्न अथवा वक्तृकवादी होइ देवताओना वृदोथी पण जेमना वचननो वैभव मद करी शकाय नहीं एवा होय ते वादी कहेवाय छे. ते उपर प्रत्यक्षादि सर्व प्रमाणोमा कुशळ अने प्रतिवादीनो जय करी राजद्वारमा मोटा माहात्म्यने पामेला मल्लवादीनु दृष्टांत छे. ते मल्लवादी शासनना त्रीजा प्रभाविक जाणवा. ते मल्लवादीनी कथा अन्य ग्रंथोथी जाणी लेवी

चोथो नैमित्तिक नामे प्रभावक

निमित्त एटले लाभ तथा अलाभने सूचवनारु त्रैकालिक ज्ञान, तेने जे जाणे छे अथवा भणे छे, ते नैमित्तिक कहेवाय छे. जिनमतना प्रतिस्पर्धीने जीतवा माटे भद्रबाहु स्वामी प्रमुखे अनेक निश्चय भरेला चमत्कारो बताव्या हता. चोथा नैमित्तिक नामना शासनना प्रभावकमा महानुभाव भद्रबाहु स्वामीनु वृत्तांत प्रसिध्द छे. ते वृत्तांत बीजा ग्रथोथी प्रख्यात थयेलु होवाथी अहीं आपवामा आव्यु नथी

पाचमो तपस्वी नामे प्रभावक.

विशेष उत्कृष्ट अने दुःखथी करी शकाय तेवा अष्टम प्रमुख तपने जे आचरे ते तपस्वी कहेवाय छे. जे तपस्वी शात रसथी भरपुर थइ अष्टम, चार उपवास, पांच उपवास, पक्ष, मासखमण वगेरे अनेक जातनी तपस्या करी

जिनमतनी प्रभावना करे छे, ते वीर शासननो पाचमो तपस्वी नामे प्रभावक कहेवाय छे. ते विषे श्रीवीर प्रभुए वर्णन करेला धना काकंदी नामना साधु वगेरेना वृत्तांतो प्रख्यात छे. ते तपस्वी नामे पाचमा प्रभावक जाणवा

छट्ठो विद्यावान् नामे प्रभावक

विद्या एटले प्रज्ञप्ति प्रमुख शोळ विद्यादेवीओ अने शासनदेवी तेओ जेमने सहायभूत छे, ते विद्यावान् नामे शासननो छट्ठो प्रभावक कहेवाय छे. ते उपर महानुभाव वज्र स्वामीनु वृत्तांत प्रसिद्ध छे.

सातमो सिद्ध नामे प्रभावक

सिद्ध चूर्ण, अंजन, पादलेप, तिलक, अने गुटिका तथा वैक्रिय प्रमुख सिद्धिओ जेने प्राप्त थाय, ते सिद्ध नामे सातमो प्रभावक कहेवाय छे. ते सिद्ध चमत्कार भरेला संघादिक कार्यो साधवाने माटे अने ते चमत्कारद्वारा मिथ्यात्वनो नाश करवा माटे तेमज शासननी प्रभावना वधारवाने माटे अवसर प्रमाणे ते चूर्ण अंजन विगेरेने जोडवामा कुशलपणु बतावे छे. तेवा सिद्धोमा आर्यसमित आचार्य वगेरेना वृत्तांतो प्रख्यात छे तेओ शासनना सातमा प्रभावक जाणवा.

आर्यसमित सूरिनी कथा

आभीर देशमा अचलपुर नामे एक नगर छे. ते नगरमा जिन शासनने दीपावनारा अने मोटी समृद्धिमान् घणा श्रावको रहे छे. ते अचळपुरनी समीपे कन्या अने वीणा नामनी बे नदीओ आवेली छे ते नदीओने मध्य भागे एक ब्रह्मदीप छे. तेनी अंदर घणा तापसो वसे छे. ते तापसोमा एक तापस पादलेपनी क्रियाने विषे प्रवीण छे ते हमेशा पाद लेप करी स्थल मार्गनी जेम जल मार्गे चालतो हतो ते क्रियाथी लोकोने अति आश्चर्य पमाडतो ते तापस वेणा नदी उतरी पारणु करवाने अचलपुरमा आवतो हतो भोळा लोको ते तापसनो आ चमत्कार देखी दुःसह एवा मिथ्यात्वना तापथी तपेला होवाथी पाणीनी जेम तेना दर्शन रुप कादवमा खुची गया. ते लोको जिनमतनी श्रद्धावाना श्रावकोने जिनमतनी अवगणना करता आ प्रमाणे कहेवा लाग्या—श्रावको, जुवो,

अमारा शासनने विषे गुरुनो जेवो प्रत्यक्ष प्रभाव छे, तेवो तमारा शासनमा नथी; तेथी अमारा धर्मनी समान बीजो कोइ धर्म नथी "

तेमना आ वचन साभळी " ए भोळा लोकोनु मिथ्यात्वने विषे स्थिर थवापणु न थाओ " एम चिंतवी ते श्रावको ते मिथ्यात्वीओना वचनने अनेक युक्तिओथी प्रतिहत करी ते तापसने दृष्टिथी पण जोता नही. एक दिवसे आचार्यपणाना सपूर्ण गुणोथी अलकृत अने अनेक सिद्धिओथी सपन्न एवा श्री वज्रस्वामीना मामा श्री आर्यसमितसूरि त्या आवी चड्या. तेमना आगमनो वृत्तात साभळी नगरना सर्व श्रावकोए मोटा आडवरथी सामा जइ तेमना चरणकमळने विषे वदना करी. पछी ते श्रावकोए पेला तापसे करेली जिन शासननी लघुतानो वृत्तात दीन वचनोथी सरिजीने निवेदन कर्यो ते साभळी आर्यसमितगुरुए ते श्रावकोने आ प्रमाणे कह्यु, " श्रावको, ए कपटी तापस पादलेपनी क्रियाथी मूढ लोकोने ठगे छे, तेनामा बीजी कोइ जातनी तपशक्ति नथी. "

सूरिवरना आ वचनो साभळी ते श्रावको ते गुरुने सविनय वदना करी पोताना स्थान तरफ आव्या तेमणे तत्काल ते धूर्त तापसनी परीक्षा करवानो विचार करी ते तापसने अति आदरपूर्वक एक श्रावके पोताने घेर भिक्षा माटे आमत्रण कर्यु. पण भक्त अने रागी लोकोथी परिवृत थयेलो ते तापस उत्सुक थइ ते श्रावकने घेर जमवा आव्यो. ते तापसने आवतो जोइ अवसरने जाणनारा ते श्रावके एकदम बेठा थइ तेने बहु मान आपी एक उचा आसन उपर बेसार्यो, पछी उष्णजलथी ते तापसना चरणनु क्षालन करवा माड्यु. ते कपटी तापस पोताना पाद लेपनो नाश थवाना भयथी चरणनु क्षालन इच्छतो न हतो, तोपण ते श्रावके भक्ति दर्शावता अति आग्रहथी पाद प्रक्षालन कर्यु ते एवी रीते मर्दन करीने कर्यु के जेथी लेपनो गध पण तेमा रह्यो नहीं. पछी अनेक जातनी रसवती पीरसी तेने जमाड्यो तापस मिष्ट रसवतीने जमतो पण पोताना चरणलेपनो नाश थवाथी कदर्थना थवाना भविष्यना भयथी चितातुर रहेतो हतो. तेने रसवतीनो स्वाद पण बे स्वाद लागतो हतो. भोजन कर्या पछी ते बेणा नदीने काठे आव्यो. तेनी ते चमत्कारी क्रिया जोवाने हजारो लोको एकठा थया हता. तेमा श्रावको पण मोटी सख्यामा हाजर हता. ते वखते कपटी तापसे विचार कर्यो के,

ते श्रावके चरणनो लेप धोइ नाख्यो छे, छता तेनी अदर लेपनो काइक अश रहे लो हशे, तेथी जल मार्गे चालवामा हरकत नहीं आवे. आवु चिंतवी ते तापस हिमत लावीने वेणा नदीना पूरमा पेठो. तेमा पेसताज ते जलमा बुडवा लाग्यो. 'हु बुबु बु हु बुबु बु' एम तेणे पोकार करवा माड्या, ते वखते केटलाएक दयालु श्रावकोए अनुकपा करी तेनी पाछळ दोडी तेने जलनी बाहेर काढयो. ते वखते तेनु पोगळ सर्वना जाणवामा आव्यु. केटलाएक लोको ' अरे ' आ कपटीए आपणने छेतर्या हता, ' एम कहेवा लाग्या. ते पछी केटलाएक तेना रागी बनेला मिथ्यात्वीओ पण तत्काल जैनधर्मना रागी बनी गया. ते वखते श्री जिन शास ननी प्रभावना करवाने इच्छता अने अनेक योगना सयोगने जाणनारा श्री आर्य समित सूरि त्या आव्या. तेमणे ते वेणा नदीमा एक चूर्ण नाखीने सर्व लोकोनी समक्ष कह्यु के, " वेणानदी, अमारे तारी पेली पार जवानी इच्छा छे. " आटलु कहेताज ते नदीना बे काठा एकदम भेगा मळी गया ते जोइ सर्व लोको आश्चर्य पामी गया. ते पछी ते महान् आचार्य अमद आनदथी पर्ण एवा चतुर्विध सघ सहित ते नदीना सामेना तीरनी भूमि उपर आवी पहोच्या. अने त्या तेम णे सत्य धर्मोपदेश आपी सर्व तापसोने प्रतिबोध आप्यो. आचार्यना प्रतिबोधथी जेमना हृदयमा सर्व मिथ्यात्व मल नाश पाम्यो छे, एवा ते सर्व तापसोए प्रतिबोध पामी ते आचार्यनी दीक्षा ग्रहण करी हती ते तापस साधुओथी ब्रह्म दीपिका नामे एक शाखा चाली छे ते आगममा प्रसिद्ध छे

आ प्रमाणे महानुभाव आर्यसमितसूरि ते पाखडीओना तीव्र मतनु खडन करी, जिनमतनी भारे प्रभावना वधारी, अने ते उत्कृष्ट एवा जिनमतने विषे रक्त थयेला भव्यजनोना मनने हर्षमय करी त्याथी बीजे स्थळे विहार कर्यो हतो त्या रहेला सर्व श्रावको अनेक प्रकारनी धर्मक्रिया वडे जिन शासननी उन्नति करता सुखे श्रावक धर्म पाळता अनुक्रमे सद्गतिना भाजन थया हता आ प्रमाणे ते आर्यसमितसूरिनु दृष्टात ' सिद्ध ' नामना शासनना सातमा प्रभावक विषे जाणवु

शासन कवि नामनो आठमो प्रभावक

जे नव नवा वचनोनी रचनाओथी सुशोभित, श्रोतृवर्गना मनने हर्ष उ-

त्पन्न करनार अने अनेक न्नापाए ग्रंथित एवा गद्यमय तथा पद्यमय मबंधोनु वर्णन करे ते 'कवि' कहेवाय ठे. आपणा सत्यधर्मनी वृद्धिने अर्थे सुंदर तथा रसिक रचनोनी रचना करी राजा प्रमुख उत्तमजनोने ते प्रतिबोधे ठे, तेथी ते कवि ए शासननो आठमो प्रज्ञाविक गणाय ठे. ते उपर सिध्दसेन दिवाकरनु दृष्टांत आपवामा आवे ठे.

सिद्धसेन दिवाकरनुं दृष्टांत.

उज्जयिनी नगरीने विषे श्री विक्रमादित्य नामे राजा हतो. तेने देवसिका नामनी मातानी कुक्षिमाथी उत्पन्न थयेलो अने सर्व विद्यामां प्रवीण एवो मुकुंद नामे एक पुरोहित पुत्र हतो. एक वखते ते मुकुंद वाद–विवाद करवाने माटे न्नृगुपुर (न्नरूच) तरफ चाल्यो. रस्तामां चालता जैनोना गुरु वृध्धवादी आचार्य तेने सामा मल्या. तेमनी साथे ए मुकुंद वाद करवाने तैयार थयो. ते वखते बन्नेनी वच्चे एवी प्रतिज्ञा करवामा आवी के, जे कोइ जेनाथी हारे ते तेनो शिष्य थाय. आवी प्रतिज्ञा करी तेमणे तेज स्थले कोइना क्षेत्रमां वादनो आरंन्न कर्यो, ते स्थले हार जीतमा साक्षी तरीके गोवाळीयाओने राखवामा आव्या तत्काल मुकुंदे आचार्यनी साथे प्रथम वादनो आरंन्न कर्यो. अने संस्कृत न्नाषामा पूर्व पक्ष ग्रहण कर्यो ते वखते गोवालीआ लोको संस्कृत न्नाषा समजी शक्या नहीं, एटले तेमणे जणाव्यु के अमे आ न्नाषामा काइ पण समजता नथी तोपण मुकुंदे संस्कृत न्नाषा ठोडी नहीं एटले गोवालीयाओए जाण्यु के, आ पुरोहित काइ पण समजतो नथी ' पठी गुरु महाराज अवसर जाणी रजोहरणने कटी साथे बाधी चर्पटीथी नृत्य करता बोल्या—

" नवि चोरीए नवि मारीए, परदारा गमण निवारीए,
थोवा थोवं दाइए, सग्ग मटामट जाइए १

कालो कंबल अरुणी ठट्ट, गळे न्नरिओ दीवड पट्ट,
एवड पडीओ नीले ऊाड, अवर कीशु ठे सग्ग निलाड २

अर्थ—चोरी करवी नही, कोइ जीवने मारवा नही, परस्त्री गमन करवु नही, वधारे शक्ति होयतो विशेष दान आपवु अने अल्पशक्ति होय तो थोडु दान आपवु, एम करवाथी सुखे देवलोकमा जवाय छे. जेमनी पासे काळी कांबलो होय छे, जेओ वृक्षनो गाळना वस्त्रो पेहेरे छे अने जेओ छासथी जरेली दोणी उपर रोटला राखी लीला सुगंधी आंबाना वृक्ष नीचे रहेला छे, एवा गोवालीयाओने गुरु महाराज कहे छे के, तमारे आवी सामग्री छे ते छता तमारा जागमा बीजु शु स्वर्ग छे? तमारे तो अहींज स्वर्ग छे १–२

आचार्यनी आ वाणी सांजळी ते गोवालीयाओ खुशी खुशी थइ गया अने सर्वे एकी साथे कहेवा लाग्या के, आ महाराजे आ मुकुदने जीती लीधो छे. ते पछी ते वृध्दवादी आचार्य राजसजामां गया अने त्यां मुकुदनी साथे चर्चा करी तेने पराजत करी दीधो अने तेने पोतानो शिष्य बनाव्यो. अने तेनु कुमुदचड एवु नाम राख्यु. कुमुदचड ते आचार्यनी पासे अभ्यास करी आगळ वध्या. पछी गुरुए तेनु सिध्दसेन दिवाकर एवु नाम आप्यु. अने त्यारथी ते एज नामथी विख्यात थया हता.

एक वखते सिध्दसेन दिवाकरनी पासे कोइ जट वाद करवाने आव्यो हतो तेने समजावता माट ते चतुर विद्वाने " नमो अरिहताण " इत्यादि प्राकृत पाठने बदले " नमोऽर्हत्सिध्दाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्य " एवो सस्कृत बोल्या हता ए सस्कृत वाक्य चौद पूर्वनो आदिमा रहेलु हतु. एक दिवसे दिवाकरे पोताना गुरुने पुछ्यु के, आपणा सर्व जैन आगमो प्राकृत जाषामा छे, ते सस्कृतमा होय तो केवा बने? जो आपनी आज्ञा होय तो हु ते सर्वने सस्कृतमा गोठवी दउ. त्यारे गुरुए सिध्दसेन दिवाकरने नीचेना श्लोकथी कह्यु—

' बालस्त्री मदमूर्खाणा, नृणा चारित्रकाङ्क्षिणाम् ।
अनुग्रहाय तत्त्वज्ञै, सिध्दात प्राकृत कृत " ॥१॥

बाल, स्त्री, मद बुध्दि, अने मर्ख एवा चारित्रना अजिलाषी पुरुषोनी पर अनुग्रह करवा माटे तत्त्वज्ञ पुरुषोए जैन सिध्दातने प्राकृत करेलो छे. '

तेथी हे शिष्य, तारा हृदयमा प्राकृत आगमने संस्कृत करवानी जे स्फुरणा थइ, तेथी तने प्रायश्चित्त लाग्यु छे. अने तेथी तने गच्छनी बाहेर मुकवानी शिक्षा करवामा आवे छे. आ प्रमाणे कही ते आचार्ये सिध्धसेन दिवाकरने गच्छनी बाहेर मुकी दीधा हता. आ वखते समस्त संघे आवी सूरिवरने विनति करी के, " स्वामी, सिध्धसेन दिवाकर कवित्व वगेरेना गुणोथी युक्त छे, तेथी ते शासनना प्रभावक छे, माटे तेमने गच्छनी बाहेर मुकवा न जोइए. आ प्रमाणे संघना अति आग्रह पूर्वक कहेवाथी गुरुए कह्यु के ते सिध्धसेनदिवाकर द्रव्यथी मुनिवेशनो त्याग करी अने भावथी मुनिवेषने धारण करी अनेक प्रकारना तप करता छेवटे अढार राजाओने प्रतिबोध पमाडी जैनो करशे अने एक नवुं तीर्थ प्रगट करशे, त्यारे हु तेने गच्छनी अंदर लइश. ते शिवाय लेवामा आवशे नहीं " गुरुना आ वचन सांभळी सिध्धसेनदिवाकरे विचार करी ते गुरुना वचनने अंगीकार कर्यु अने त्याथी विहार करी तेओ उज्जयिनी नगरीमा आव्या.

एक वखते सिध्धसेनदिवाकर कोइ शेरीमाथी बीजी शेरीमा पेशता हता, तेवामा घोडा खेलववा माटे जता एवा विक्रम राजाए तेमने जोया. तत्काल राजाए दिवाकरने पुछ्यु, के, " तमे कोण छो ? " सिध्धसेनदिवाकरे उत्तर आप्यो, " अमे सर्वज्ञ पुत्र छीए. " तत्काल राजाए तेमने मानसिक नमस्कार कर्यो सिध्धसेनदिवाकरे तेमने उंचे स्वरे धर्मलाभ दीधो, त्यारे राजाए आश्चर्य पामीने पुछ्यु के, " तमे कोने धर्मलाभ आप्यो ? " दिवाकरे कह्यु, " जेणे अमोने नमस्कार करेलो छे, तेमने अमे धर्मलाभ आप्यो छे. " ते सांभळी राजा आश्चर्य साथे संतुष्ट थइ गयो अने तेणे हर्षथी तेमने विनति करी के, " तमारे तमारा पवित्र चरणवडे मारा सभा मंडपने पवित्र करवो. " आम कही विक्रमराजा पोताने स्थाने चाल्यो गयो हतो.

एक वखते सिध्धसेनदिवाकर विक्रमराजाना चार नवा श्लोको रची राजद्वारे गया अने तेमणे द्वारपाल पासे नीचे प्रमाणे राजाने कहेराव्यु—

" दिदृक्षुर्भि क्षुरायातो, द्वारे तिष्टति वारित· ।
हस्तन्यस्तचतुः श्लोको, यद्वागच्छतु गच्छतु ॥ १ ॥

" राजाने मळवानी इच्छाथी भिक्षुक आव्यो छे, पण द्वार उपर अट-कावबाथी ते त्यां उभो छे. तेना हाथमा चार श्लोक छे, ते आपनी पासे आवे के पाछो जाय. " १

राजाए उत्तरमां नीचे प्रमाणे कहेवराव्युं—

दीयतां दशलक्षाणि, शासनानि चतुर्दश ।
हस्तन्यस्तचतुः श्लोको यद्वा गच्छतु गच्छतु ॥ २ ॥

जेना हाथमा चार श्लोको छे, ते भिक्षुकने दश लाख द्रव्य अने चौद गामोना पट्टा करी आपो ते खुशी होय तो आवे अने खुशी न होय तो पाछो जाय. " २

ते पछी सिध्धसेन दिवाकर राजानी पासे गयो. ते वखते महाराजा विक्रम पूर्व दिशा तरफ सिंहासन उपर बेठा हता. त्यां जइ ते कवीश्वर नीचे प्रमाणे नवीन श्लोक बोल्या—

" आहूते तव निःस्वाने, स्फुटितं रिपुहृद्घटे ।
गलिते तत्प्रियानेत्रे, राजश्चित्रमिदं महत् " ॥ १ ॥

" हे राजा, तमारा नीशाननो रुको वागतां तमारा शत्रुओनो हृदयरूप घमो फूटी जाय छे अने तेमनी स्त्रीओना नेत्र गळे छे. आ एक मोटुं आश्चर्य छे. " १

आ श्लोक सांभळी राजा विक्रम दक्षिण दिशा तरफ मुख करीने बेठा. कारणके, ते श्लोकथी प्रसन्न थयेला राजाए मनमां चिंतव्युं के, " में आ भिक्षुक कविने मारुं पूर्व दिशानुं राज्य आपी दीधुं "

ते पछी आचार्य पुनः सन्मुख आवी नीचे प्रमाणे श्लोक बोल्या—

" अपूर्वेयं धनुर्विद्या, भवता शिक्षिता कुतः ।
मार्गणौघः समभ्येति, गुणो याति दिगंतरम् ॥ २ ॥

हे राजा, कोइ अपूर्व धनुर्विद्या तमो क्याथी शीख्या के जेथी त

मारी आगळ मार्गग-बाणोना समूह आवे छे अने गुण (पणछ) बीजी दिशामा जाय छे. एटले कहेवानो आशय एवो छे के, धनुर्विद्या जाणनार पुरुष मार्गण-बाणोना समूहने बीजा तरफ फेंके छे, अने गुण-पणछ ऊंची चमे छे. परतु तमारे तो बाणो तमारी पासे आवे छे, अने पणछ बीजी दिशामा जाय छे. आ विरोधनो परिहार एवी रीते छे के, हे राजा, तमारी आगळ मार्गण-याचक लोकोना समूह आवे छे अने तेथी तमारा गुणो बीजी दिशाओमा फेलाय छे. १

आ श्लोक साभळी राजा विक्रम पश्चिम दिशा तरफ मुख राखीने बेठा एटले दक्षिण दिशानु राज्य तेने आपी दीधु. ते वखते सिद्धसेन आचार्य नीचे प्रमाणे त्रीजो श्लोक बोल्या—

" सरस्वती स्थिता वक्त्रे, लक्ष्मी· करसरोरुहे ।
कीर्ति. किं कुपिता राजन्, येन देशातर गता ॥ ३ ॥"

हे राजा, तमारा मुखमा सरस्वती रहेल छे अने तमारा करकमळमां लक्ष्मी रहे छे. तोपछी कीर्त्ति शा माटे कोप पामी छे के जे रीसाइने देशांतरमां चाली गइ छे. " ३

आ श्लोक साभळी राजा विक्रम उत्तर दिशा तरफ मुख राखीने बेठा, त्यारे सिद्धसेनाचार्य तेनी सन्मुख थइ नीचेनो चोथो श्लोक बोल्या—

" सर्वदा सर्वदो सीति, मिथ्या सस्तूयसे बुधैः ।
नारयो लेभिरे पृष्ठ, न वक्ष. परयोषित. " ॥ १ ॥

हे राजा, तु हमेशा सर्वद—सर्व वस्तुओने आपनारो छे, एम विद्वानो तारी स्तुति करे छे, ते मिथ्या छे, कारण के तारा शत्रुओने ते पीठ आपी नथी अने परस्त्रीओने छाती आपी नथी अर्थात् जे सर्व वस्तुनो दाता होय ते तेवी वस्तुने शा माटे न आपे ? कहेवानो आशय एवो छे के, तु कदिपण रणभूमिमां थी पाछो फर्यो नथी के जेथी तारा शत्रुओ तारी पीठ जुवे अने तें कदिपण परस्त्रीने छाती साथे दबावी नथी के जेथी ते तारी छातीने मेळवे. " ४

आ श्लोक साभळी सतुष्ट थयेला राजा तत्काल पोताना सिंहासन उपरथी बेठो थयो अने तेणे चारे दिशाओनु राज्य सूरिवरने आपवा मांड्यु, त्यारे

सूरि सिध्धसेन दिवाकरे कह्यु, " राजन्, मारे राज्यनी कांइ जरुर नथी."
राजाए पुछ्यु, " त्यारे तमारे शु जोइए छीए ? " सूरिजी बोल्या. " हु मात्र
एटलु मागु छु के ज्यारे हु तमारी पासे आवु, त्यारे तमारे मारा मुखथी धर्म
सांभळवो. " राजाए ते वात अंगीकार करी. ते पछी आचार्य सिध्धसेन दिवाकर
पोताने स्थाने चाल्या गया हता.

एक वखेत आचार्य सिध्धसेन उज्जयिनी नगरीमां आवेला महाकाल
शंकरना प्रासादमा जइ ते शंकरना लिंग उपर पग करी सुइ गया हता. प्रातःका
ले ते शंकरना पूजारीओए आवी तेमने पोकार करी उठाडवा मांड्या, तोपण
तेओ उठ्या नहीं ते वखते ते लोकोए जइने राजानी आगळ फरीयाद करी के,
राजेंद्र, कोइ भिक्षुक महाकाल शिवना लिंग उपर पग करीने सुतो छे. अमोए
तेने घणु कर्यु तोपण ते उठतो नथी " लोकोना आ वचनो सांभळी राजा वि-
क्रमे हुकम कर्यो के, " तेने मारीने काढो. " तत्काल राजानी आज्ञा मेळवी ते
लोको त्या आव्या अने चाबुक तथा लाकडीओना प्रहारथी सिध्धसेनने मारवा
लाग्या. जेम जेम ते आचार्यना शरीर उपर घा पडवा लाग्या, तेवी रीते राजाना
अंतःपुरमां राजानी राणीना शरीर उपर घा पडवा मांड्या, आथी जनानामां
मोटो कोलाहल उठ्यो अने ते सांभळी राजा त्या दोडी आव्यो अने आश्च
र्यथी पुछवा लाग्यो के, ' आ शु थयु ? तेवामां कोइए आवी राजाने जणाव्यु के,
" महाराज, कोइ महाकाल प्रसादनी अंदर भिक्षुकने ताडना करे छे, ते ताडना
ना प्रहारो अंत.पुरमां राणी साहेबने वागे छे राजा तत्काल महाकाल प्रासाद-
मा गयो, त्या तेमणे सिध्धसेन आचार्यने जोया अने तत्काल ओळखी लीधा
तत्काल तेमणे लोकोने ताडना करता अटकाव्या अने पछी बधो वृत्तांत सांभळ्यो.
राजाए आचार्यने पुछ्यु के, " तमे, महादेवना लिंग उपर चरण शामाटे मुक्या
हता ? आ महादेव ए मोटो देव छे अने स्तुति करवा योग्य छे. " आचार्ये क-
ह्यु, राजन, महादेव तो अनन्य देव छे जे महादेव छे. तेनी हु स्तुति करु छु, ते
तमे सावधान थइने सांभळो " आ प्रमाणे कही सिध्धसेन आचार्ये कल्याणम
दिरस्तोत्र रचवानो आरंभ कर्या ज्यारे तेमणे अगीयारमा श्लोकनु आदिपद
" यस्मिन् हरप्रभृतयोऽपि हतप्रभावा' " आ प्रमाणे कह्यु, त्यारे तत्काल पृथ्वी
कंपायमान थवा लागी अने अग्निनो धुमाडो नीकळवा लाग्यो क्षणवारमां ते

शिवलिंगना बे कटका थया अने तेमांथी तेजनो समूह चारे तरफ प्रसरी गयो. तेम थताज तेमांथी धरणेंद्र सहित श्री पार्श्वनाथजीनी प्रतिमा प्रगट थइ आवी. ते वखते आचार्ये ते स्तोत्रने संपूर्ण करी आ प्रमाणे कह्यु, " राजन्, अहिं प्रथम अवंतिसुकुमालनो लोकप्रसिद्ध पुत्र हतो. तेना पिता नलिनीगुल्म विमानमां गया हता. तेओ जे स्थाने कायोत्सर्ग करीने रह्या हता, ते स्थाने तेणे महाकाल नामे लोक प्रसिद्ध नवो प्रासाद करावी आ प्रतिमानी प्रतिष्ठा करी हती. केटलोक काल गया पछी मिथ्यादृष्टिओए ते पार्श्वनाथना प्रतिबिंबने आच्छादित करी ते ठेकाणे आ शिवलिंगनी स्थापना करी दीधी हती, अत्यारे मारी आ स्तुतिना प्रभावथी ते लिंग फाटी तेमांथी ते प्रतिमा प्रगट थइ छे." आचार्यना आ वचन सांभळी विक्रम राजाना हृदयमां चमत्कार साथे हर्ष उत्पन्न थइ आव्यो. तत्काल तेज वखते राजा विक्रमने जिनोक्त तत्त्वना स्वरूप उपर पूर्ण श्रद्धा थइ अने तेने सम्यक्त्व रत्ननी प्राप्ति थइ आवी. उदार महाराजाए तेज क्षणे ते पार्श्वनाथ प्रभुनी नित्य पूजाना निर्वाहने माटे एकसो गाम अर्पण कर्या अने पोते श्रावक धर्म अंगीकार कर्यो. आचार्य सिद्धसेन दिवाकरे महाराजा विक्रमनी आज्ञामां वर्तनारा बीजा अढार राजाओने प्रतिबोधित कर्या. आचार्यना गुणोना समूहथी रंजित थयेला विक्रम राजाए आचार्यने बेसवा माटे एक पालखी भेट करी हती. ते पछी ते महान् आचार्य ते पालखीमां बेशी निरंतर राजद्वारमां जता हता. ते पछी वृद्धवादी आचार्यना सांभळवामां आव्यु के, सिद्धसेन दिवाकर जे कार्य करवा माटे गया हता, ते कार्य तो सिद्ध थइ गयु छे, परंतु तेओ प्रमादरूपी कादवमां मग्न थइ गया छे—राजमानना पाशमां सपडाइ गया छे, माटे मारे त्यां जइ तेमने प्रतिबोध आपवो, अने तेमने प्रमादमांथी मुक्त करी सन्मार्गे दोरवा." आवु विचारी वृद्धवादी गुरु विहार करी उज्जयिनी नगरीमां आव्या. सिद्धसेन विक्रम राजाना बहुमानथी तेमनी पासे जइ शक्या नहीं, तेथी वृद्धवादी आचार्य पालखी उपाडनार भोइनु रूप धारण करी तेने द्वारे उभा रह्या. ज्यारे सिद्धसेनसूरि पालखीमां बेशी राजभुवन तरफ जता हता, तेटलामां ते वृद्धवादीसूरिजीए एक भोइने बदले पोते पालखी उपाडी अने वृद्धपणाने लइने तेओ मंद मंद गतिथी चालवा लाग्या. तेमने मंदगतिथी चालता जोइ सिद्धसेन दिवाकर नीचे प्रमाणे बोल्या—

" भूरिभारभराक्रांतः स्कंधः किं तव बाधति ।

" घणा भारथी आक्रांत थयेला तारा स्कंधने शु काइ बाधा थाय छे ? "

आ वाक्यमा 'बाधति' ए अशुद्ध रूप छे. कारणके, 'बाध्' धातु आत्मनेपद होवाथी तेनु खरु रूप 'बाधते' थवु जोइए. आचार्य सिद्धसेन दिवाकरे प्रमादथी तेवी भूल करी एटले गुरुए नीचे प्रमाणे कह्यु.

" न तथा बाधते स्कधो यथा बाधति बाधते " ॥ १ ॥

जेवी रीते बाधते ने बदले तु बाधति एवु अशुद्ध रूप बोल्यो, ते मने जेवु पीडे छे, तेवी स्कधने पीडा थती नथी. "

आ सांभळी ते आचार्य सिद्धसेन चमत्कार पामी विचारमां पडी गया. तत्काल तेमणे विचार्युं के, 'आ कोण छे?' तेमने जोतांज तेमना जाणवामा आव्यु के, 'आ तो वृद्धवादी गुरु छे.' तत्काल पोते पालखी उपरथी उतरी तेमना चरणमां नमी पडया अने 'मारो अपराध क्षमा करो, क्षमा करो' एम कहेवा लाग्या. पछी गुरुए सिद्धसेनने फरीथी प्रतिबोध पमाडी सघनी समक्ष मिथ्या-दुष्कृत आपवा पूर्वक तेमने सघमां लीधा हता.

महानुभाव दिवाकर पछी चिरकाल सुधी श्री वीरशासननी प्रभावना करी प्रांते सद्गतिना भाजन बन्या हता आ प्रमाणे ते आचार्य कवि नामना आठमा प्रभावक जाणवा. एवी रीते शासनना आठ प्रभावक कहेवाय छे. ते प्रवचनी आदि आठ प्रभावको जिनशासनने शोभावे छे पोताना प्रकाशक स्वभाववाळु जे प्रवचन कहेवाय छे, तेने देश, काल, भाव, द्रव्य तथा क्षेत्रनी योग्यता प्रमाणे सहाय करवाथी—जेओ प्रकाश करे छे, तेथी तेओ प्रभावको कहेवाय छे. तेओनी क्रियारूप प्रभावना सम्यक्त्वने निर्मल करे छे.

बीजे प्रकारे आठ प्रभावक

ते आठ प्रभावकने बीजे प्रकारे पण दर्शावे छे.

"अइसेसइड्ढि[1] धम्मकहि[2],
वाइ[3] आयरिय[4] खवग[5] नेमित्ति[6] ।

विज्जाव रायगण स—
मयाय तित्थं पभावंति ॥ १ ॥

अतिशय ऋद्धिवाळा अवधिज्ञानी, मनःपर्यवज्ञानी, आमर्ष औषधि प्रमुख लब्धिवान् ते पेहला, बीजा धर्मकथी, त्रीजा वादी, चोथा आचार्य, पांचमा क्षपक—मोटी आतापना प्रमुख लेनार तपस्वी, छठा निमित्ति, सातमा विद्याश्रेष्ठ अने आठमा राजवल्लभ तथा गच्छ—समुदायवल्लभ अर्थात् महाजनमान्य ए प्रमाणे आठ प्रभावक बीजे प्रकारे जाणवा

सम्यक्त्वना पांच भूषण

जिनशासनमा एटले अरिहंतना दर्शनमा कुशलपणु, ए पेहेलुं भूषण छे. ते सम्यक्त्वने शोभावे छे, माटे भूषण कहेवाय छे. तेथी सम्यग्दृष्टि जीवोए तेवी कुशलता मेळववामा विशेष उद्यम करवो अरिहंतना दर्शनने विषे कुशल एवो पुरुष द्रव्य, क्षेत्र, काळ अने भावादिकने अनुसारे अनेक प्रकारना उपायो योजी बीजा अज्ञानी जीवोने सुखे करी प्रतिबोध पमाडे छे. ते विषे कमळ नामना एक श्रावक पुत्रने प्रतिबोध पमाडनार श्रीगुणाकरसूरिनो वृत्तांत प्रख्यात छे. बीजा ओए ते सूरिवरनी जेम जिनमतने विषे कुशलता करवी जोइए.

श्रीगुणाकरसूरिनो वृत्तांत

एक नगरने विषे धन नामे श्रावक रहेतो हतो. ते धनवान्, बुद्धिमान् अने गुणी हतो. तेथी ते महाजन मंडळमां मान्य थइ पड्यो हतो. ते धन शेठने कमल नामे एक पुत्र हतो ते घणो कळावान् अने चतुर हतो. पण धर्म तरफ अरुचि धरनारो हतो. धर्मना तत्त्व उपर तेनी बीलकुल श्रद्धा नहती. तेनो पिता धन शेठ तेने घणु समजावतो पण ते मानतो नहतो ज्यारे तेनो पिता कांइ पण तत्त्वनी वात कहे त्यारे ते उठीने नाशी जतो हतो. आथी धन शेठ घणो कचाली गयो हतो.

एक वखते धन शेठना मनमा विचार थयो के, जो कोइ आर्हत धर्मना प्रवीण आचार्य अहीं आवे तो मारा पुत्रने लाभ थया विना रहे नहीं. कोइ

पवित्र महात्मानी सेवा करवाथी आ कमळने धर्मनी प्राप्ति थया विना रहेशे न
हिं. आ अरसामां कोइ आचार्य महाराज ते नगरनी समीपे आवेला वनमां आ
वी समोसर्या. आ खबर सांभळी नगरना लोको तेमने वंदना करवाने गया. तेम
नी साथे धन शेठ पण गुरुने वंदना करवा आव्यो. गुरुए तेओने धर्मनो उप
देश आप्यो. देशना समाप्त थया पछी बीजा नगरजनो तेमने वंदना करी पोत
पोताने स्थले चालता थया. पाछळ रहेला धन शेठे ते महानुभावने आ प्रमाणे
विनंति करी—" स्वामी, मारो पुत्र कमळ धर्मना विचारथी तद्दन अज्ञात छे
धार्मिक तत्त्व उपर तेनी श्रद्धा उत्पन्न थती नथी. तो कृपा करी आपे तेने प्रति
बोध आपवो जोइए. आपना जेवा गीतार्थ गुरुनो बोध कदिपण निष्फल थतो
नथी धन शेठना आ वचनो सांभळी आचार्ये ते वात मान्य करी पछी तत्का
ल शेठ घेर आव्या अने तेमणे तेना पुत्र कमळने आ प्रमाणे कह्युं,—" पुत्र,
आजे एक गीतार्थ गुरु वनने विषे पधार्या छे, तो तारे त्यां जइ तेमना वचन सां
भळवा. " पिताना कहेवाथी कमळ ते आचार्यनी पासे आव्यो अने नम्रमुख
थइ तेमनी पासे बेठो. आचार्ये तरत सातनय युक्त एवा द्रव्यगुण पर्यायवडे ग
र्भित विचारवाळी देशना आपी. देशना समाप्त थया पछी आचार्य पुछ्युं, " भ-
द्र, अत्यार सुधीमां तारा समजवामा काइ आव्यु ? " कमळे प्रत्युत्तर आप्यो,
" भगवान, कांइक जाणयु छे. ' आचार्ये कह्यु, " शु जाणयु ? ' कमळ बोल्यो,
" भगवान, आ नजीक रहेल बोरडीना वृक्षना बिलमांथी मकोडा नामना
एकसोने आठ तेइंद्रि जीवो नीकळीने बीजा बिलमां पेठा. ते मारा जाणवामां
आव्यु. पुन आचार्ये पूछ्युं, " ए तो ठीक, पण अमारा कहेवामाथी काइ जा
णयु ?,' कमळे कह्यु, " ना, कांइ जाणयु नथी " कमळनुं आ वचन सांभळी
आचार्य जाणयु के, ' आ अयोग्य छे ' पछी तेओ मौन धरी रह्या पछी कमळ
उठीने पोताने घेर चाल्यो गयो. बीजे दिवसे कमळनो पिता धन शेठ आचार्यने
वंदना करवाने आव्यो ते वखते आचार्ये कमळनी सर्वे चेष्टा तेने जणावी पछी
आचार्य त्यांथी विहार करी बीजे स्थाने चाल्या गया हता

एक वखते कोइ बीजा आचार्य तेज वनमा आवी समोसर्या धनशेठ
तेमने वंदना करवाने आव्यो, अने पूर्वनी जेम तेणे पोताना कमळपुत्रनो वृत्तांत
तेमनी आगळ निवेदन कर्यो. आचार्ये धनशेठने कह्यु के, ते कमळने अहिं मोक

लावो. अने तेने कहेवुं के, तेणे गुरुनी पासे नीची दृष्टिए न रहेवु, तेम गुरुनी सामे जोया करवुं अने गुरु बोले तेमा उपयोग राखवो." आचार्यनी सूचना उपरथी धन शेठे कमळ पुत्रने ते प्रमाणे करवाने कही गुरुनी समीपे मोकल्यो. कमळ गु-रुनुं मुख जोतो तेमनी समीपे बेठो. गुरुए पुछ्युं, "जड, तु काइ पण तत्त्व जा-णे छे?" कमळे कह्युं, "हा, हु त्रण तत्त्वो जाणुछु. मन इच्छित एवु पहेलु अशन, बीजु पान अने त्रीजु शयन. ए त्रण तत्त्वो जाणु छु." आचार्य हसीने बोल्या– "आ तो गामडीआना वचन जेवा वचनो छे. परतु जे ज्ञेय एटले जाणवा योग्य, हेय एटले त्याग करवा योग्य अने उपादेय एटले ग्रहण करवा योग्य होय, तेमा-थी काइ जाणे छे? कमळे कह्युं, "एमाथी तो हु काइपण जाणतो नथी. तमे पोते कहो तो हु श्रद्धाथी सांभळीश." ते वखते आचार्य तेने प्रतिबोध पमा-डवा माट बे त्रण घडी सुधी तत्त्वना निर्णय रुप देशना आपी निवृत्त थया. पछी तेमणे कमळने पुछयुं के, 'जड, कहे, हवे तें शु तत्त्व जाण्यु?' अल्पमति कमळ बोल्यो, गुरुजी, में काइ बीजु जाण्यु नथी. मात्र तमे बोलता हता, त्यारे तमारो हडीओ एकसो ने आठ वार उचो नीचो थतो मारा जोवामा आव्यो, ए मे जाण्यु छे. ते शिवाय हु काइपण समज्यो नथी" कमळना आ वचनो सांभळी आचार्य खेद सहित बोल्या के, "आ तो अंध आगळ आरसी थइ." पछी ते कमळ चाल्यो गयो अने ज्यारे धन शेठ तेमने वांदवा आव्यो एटले आचार्ये कमळनी ते चेष्टा धन शेठने निवेदन करी पछी आचार्य त्याथी विहार करी बीजे स्थले चाल्या गया हता.

एक दिवसे द्रव्य, क्षेत्र, काळ अने भावने अनुसारे परने प्रतिबोध करवामा कुशळ एवा कोइ बीजा आचार्य पाछा तेज वनमा आवी चड्या. तेमना आगमनना खबर सांभळी लोको श्रेणिबंध तेमने वंदना करवाने गया. साथे धनशेठ पण त्या गयो हतो. देशना पूर्ण थया पछी धनशेठे गुरुने निवेदन कर्युं. स्वामी, मारो पुत्र कमळ धार्मिक विचारमां अत्यत अज्ञात रहे छे. पूर्वे अहिं पधारेला आचार्योए तेने अतिशय बोध आप्यो हतो, ते छता ते प्रतिबोध पाम्यो नहीं. प्रथम आचार्ये प्रतिबोध आपता तेणे मकोडानी गणत्री करी अने बीजा आचार्ये बोध आपतां तेणे तेमना कठनो हडीयो उंचा नीचो थवानी गणत्री करी तेथी कोइपण प्रकारे ते अज्ञानी पुत्रने आप प्रतिबोध आपो के जेथी ते अज्ञानी पुत-

तुं मिथ्यात्व रुप अन्धकार नष्ट थइ जाय. अने तेने सम्यक्त्वरत्ननी प्राप्ति थाय. जो मारो पुत्र गाढ अज्ञानमांथी मुक्त थशे तो आपने महान् लाभ थशे." आचार्ये विचार करीने जणाव्युं, "शेठ, आ तमारा पुत्रनी बुद्धि लौकिक व्यवहारमां केवी छे ?" धनशेठे कह्युं, "स्वामी, एक धर्म विचार विना बीजी सर्व बाबतोमां ते निपुण छे." आचार्य उत्साह लावीने कह्युं, "त्यारे तो ए तमारो पुत्र सुबोध्य छे, माटे अवसरे तेने अहिं मोकलजो" पछी धनशेठे पोताने घेर आवी कमळनी पासे ते आचार्यना गुणोनी प्रशंसा करी के, "पुत्र, कोइ उत्तम आचार्य आवेला छे, ते त्रिकालदर्शी छे अने सर्व प्राणी मात्रनी सुख दुःखनी प्रवृत्ति जाणे छे, माटे तारे त्यां जइ तेमने नमवुं अने पुछवुं" तत्काल कमळ पितानुं वचन अंगीकार करी आचार्यनी पासे आव्यो. अने विनयथी वंदना करी तेमनी पासे बेठो. आचार्ये तेना मननो अभिप्राय जाणवाने कह्युं, "भद्र आ तारा हाथना मणिबंधमां मत्स्यना मुख सहित शीघ्र फल आपनारी धनरेखा देखाय छे" कमळे विनयथी पुछयुं, "महाराज, ए रेखानुं शुं फल थशे ?" गुरुए "मच्छेण य सहस्सधण" इत्यादि गाथा बोली कह्युं के, भद्र, ए रेखाथी अमारा जाणवामां आवे छे के, "तारो जन्म शुक्लपक्षमां छे अने तारा ग्रहो समभावने भजनारा थशे." तत्काल कमळ चमत्कार पामी त्यांथी उठी पोताने घेर आव्यो अने जन्मपत्रिका लइ आवी तेणे गुरुने बतावी. गुरुए जन्मपत्रिकामांथी पूर्वे कहेला ग्रहोने बतावी दीधा. अने कह्युं के, तारो अमुक वर्षे विवाह थयेलो छे अने अमुक वर्षे तने तावनी पीडा थइ हती." आ प्रमाणे गुरुनुं वचन सांभळी कमळ चमत्कार पामी गयो अने तेणे घेर आवी पोताना पिताने जणाव्युं के, "गुरु खरेखर त्रिकालज्ञानी छे." ते पछी कमळ दररोज गुरुने वंदना करवा जतो हतो. आचार्य तेज नगरमां चातुर्मास्य रह्या तेओ हमेशा कौतुक भरेली कथाओ कही धर्मोपदेश आपवा लाग्या, आथी कमळ धर्मनो विशेष जाण थवा लाग्यो तेना हृदयमां आर्हत धर्म उपर श्रद्धा थइ आवी अने तेथी तेणे अनुक्रमे श्रावकना बार व्रतो ग्रहण कर्या. छेवटे गुरुनी कृपाथी ते पोताना पिता करतां पण वधारे धर्म पर दृढतावाळो थयो. चातुर्मास्य वीत्या पछी ते आचार्य त्यांथी विहार करी बीजे स्थळे चाल्या गया. कुमार कमळ श्रावक धर्मने चिरकाळ पाळी अंते सद्गतिनुं पात्र थयो हतो. आ उपरथी समजवानुं के, बीजाओए पण तेवी रीते

भव्य जीवोनो उपकार करनारु श्री जैन शासनने विषे कुशलपणुं राखवुं, तेम करवाथी सम्यक्त्व रत्न आ जगत्मा निःसीम शोभाने धारण करनारु थाय छे. ए प्रमाणे जिनदर्शनमा कुशलपणारुप सम्यक्त्वना पेहेला भूषण उपर श्रावकपुत्र कमळने प्रतिबोध करनार आचार्यनुं दृष्टांत कहेवामां आव्यु.

सम्यक्त्वनुं बीजुं भूषण.

सम्यक्त्वनु बीजु भूषण श्री जिनशासन प्रभावना छे. आगमादिकना बलथी अथवा ज्ञानना बलथी श्री जिनशासननु विशेष दीपकपणु करवुं, ते जिनशासननी प्रभावना छे. पूर्वे आठ प्रभावकना भेदथी ते आठ प्रकारे कहेवामां आव्युं छे. पूर्वे कहेलानु अहिं पुनः जे ग्रहण करवामा आव्युं, ते पोताने अने परने उपकारकारी होइने तेमज तीर्थंकर नाम कर्म बांधवाने लइने तेनु प्राधान्य जणाववाने माटे छे. तेम वळी जे वचनो सद्भूत अर्थने प्रकाश करनारा अने रागद्वेषने दूर करनारा छे, तेने वारंवार ग्रहण करवामा कांइ पण दोष नथी; कारणके, ते सद्बोधनी वृद्धिनु कारण रुप छे. ते विषे श्री उमास्वातिवाचक महाराजाए प्रशमरति प्रकरणमां कयुं छे—

" ये तीर्थकृत्प्रणीता, भावास्तदनंतरैश्च परिकथिताः ।
तेषा बहुशोऽप्यनुकीर्तनं भवति पुष्टिकरमेव ॥ १ ॥

" जे तीर्थंकर प्रणीत भावो छे, ते आंतरा रहित कहेला छता तेमनुं बहु वार अनुकीर्त्तन-स्मरण करवु, ते पुष्टिने करनारु ज थाय छे. " १

यद्वदुपभुक्तमपि सद्, भेषजमासेव्यतेऽर्त्तिनाशाय ।
तद्वद्रागार्त्तिहरं, बहुशोऽप्यनुयोज्यमर्थपदम् ॥ २ ॥"

" जेम औषध एकवार खाधु होय पण ते पीडानो नाश करवाने फरीवार खवाय छे. तेवी रीते राग रुपी पीडानो नाश करवा माटे अर्थना पदो घणी वार कहेवामा आवे छे. " २

" यद्वद्विषघातार्थं मंत्रपदैःनपुनरुक्तदोषोऽस्ति ।
तद्वद्रागविषघ्नं पुनरुक्तमदुष्टमर्थपदम् ॥ ३ ॥

" जेम विषनो नाश करवा माटे वारवार मंत्रना पदो बोलवामां पुनरुक्ति दोष आवतो नथी, तेवी रीते राग रूपी विषने हणनारा अर्थ पदो बोलवामां पुनरुक्तिनो दोष आवतो नथी.

वृत्त्यर्थं कर्म यथा, तदेव लोकः पुनः पुनः कुरुते ।
एवं विरागवार्त्ता, हेतुरपि पुनः पुनश्चित्य " ॥ ३ ॥

जेम लोको पोतानी आजीविकाने माटे तेनु तेजकाम वारवार करे छे, एवी रीते वैराग्यनी वार्त्ताना कारणने वारवार करवु जोइए. " ३

सम्यक्त्वनुं त्रीजुं जूषण

सम्यक्त्वनु त्रीजु जूषण तीर्थ सेवा छे. तीर्थ द्रव्यथी अने जावथी, एम बे प्रकारे छे. तेमा जे शत्रुंजयादिक ते द्रव्यतीर्थ छे अने जे ज्ञान दर्शन चारित्रना धारण करनार अने जव्य जनोना तारक एवा साधु साध्वी ते जावतीर्थ कहेवाय छे. ते उजय प्रकारना तीर्थनी सेवाने विधि पूर्वक करवाथी सम्यक्त्व जूषणवालु कहेवाय छे. अने ते परंपराए सिद्धिरूप फलने आपनारु थाय छे. श्री जगवती सूत्रना बीजा शतकना पाचमा उद्देशमा कहेवामां आव्यु छे के " तथा प्रकारना साधु तथा श्रावकनी पर्युपासना करवाथी शुं फल प्राप्त थाय ? " तेना उत्तरमां प्रजुए कह्यु छे के, सिद्धांतनु श्रवण ए पर्युपासनानु फल छे श्रवणनु फल श्रुतज्ञान छे, श्रुतज्ञाननु फल विशेष ज्ञान छे. विशेष ज्ञाननु फल प्रत्याख्यान छे, प्रत्याख्याननु फल संयम छे. संयमनु फल अणएहय छे, अणएहयनु फल तप छे, तपनु फल वोदाण छे, वोदाणनु फल अक्रिरिय छे, अने अक्रिरियनु फल सिद्धि छे. श्रुतज्ञानथी हेयोपादेय प्रमुखनु विवेचनकारी ज्ञान थाय छे. प्रत्याख्याननु फल विशेष ज्ञान कह्यु तेनु कारण ए छे के विशेष ज्ञानवालो पुरुष पापना पच्चखाण करे छे. ज्यारे पच्चखाण करवामा आवे त्यारे तेने संयम प्राप्त थाय छे. अणएहयनो अर्थ अनाश्रव थाय छे संयमवंत पुरुषने अनाश्रव होय छे एटले ते नवा कर्मने ग्रहण करतो नथी. ज्यारे अनाश्रवने लइने ते लघुकर्मी थाय छे, त्यारे ते तपस्या करे छे. वोदाणनो अर्थ व्यवदान थाय छे. व्यवदान एटले कर्मनी निर्जरा. तपस्याथी पूर्वना कर्मनी निर्जरा थाय छे. अक्रिरिय एटले योगनिरोध कर्मनी निर्जरा

थवाथी योगनो निरोध थाय छे. ते पछी पर्यवसाने सिद्धिनु फळ प्राप्त थाय छे. आ प्रमाणे सम्यक्त्वना त्रीजा जूषण तीर्थसेवानु फळ जाणी समकितवत पुरुषोए तेमा प्रवृत्ति करवी.

सम्यक्त्वनुं चोथुं जूषण.

सम्यक्त्वनु चोथु जूषण स्थिरता छे. स्थिरता एटले चित्तनी चपलतानो अज्ञाव. जैनधर्मने विषे पोतानु अथवा परनु स्थिरपणु करवु–दृढ चित्त राखी रहेवुं, ते स्थिरता कहेवाय छे. परतीर्थीओनी महान् समृद्धि जोवामां आवे तोपण सुलसानी पेठे निःप्रकप रहेवु, जिन वचन उपर अविचल श्रध्धा राखवी तेवा जीवो दृढधर्मी कहेवाय छे. जे दृढधर्मी पुरुषो होय छे, तेओ अरिहतना प्ररुपेला आगममा प्रशंसनीय गणाय छे. ते विषे आगममां कह्युं छे के, " चार प्रकारना पुरुषो होय छे. १ प्रियधर्मी छे पण दृढधर्मी नथी. २ दृढधर्मी छे, पण प्रियधर्मी नथी. ३ दृढधर्मी छे अने प्रियधर्मी छे अने ४ दृढधर्मी नथी तेम प्रियधर्मी पण नथी. आ चार प्रकारना पुरुषोमां त्रीजो प्रकार सर्वोत्तम छे. अने ते जव्य पुरुषोए ग्रहण करवा योग्य छे.

स्थिरता विषे सुलसानो वृत्तात

जबुद्दीपना जरत क्षेत्रने विषे मगध नामे देश छे. ते देशनी राजधानी राजगृही नगरी छे. ते नगरीमा प्रसेनजित् नामे राजा राज्य करे छे. ते सर्व उचित कलामां कुशल छे. तेने नाग नामे एक सारथि हतो. ते राजा प्रसेनजितना चरण कमळनी सेवामां सदा तत्पर रहेतो हतो तेने सुलसा नामे स्त्री हती. ते पतिव्रता अने जैन धर्म उपर पूर्ण रागी हती. ते गुणवती बाला सर्वदा शुध्ध निष्ठाथी देव जक्ति अने पति जक्ति करती हती.

एक दिवसे नागसारथिए कोइ घरमां गृहस्थने पोताना उत्संगमां पुत्रने रमाडतो जोयो. पोते अपुत्र होवाथी ते जोइ हृदयमां अतिशय परिताप पाम्यो अने पोताना मुखने हाथ उपर राखी आ प्रमाणे मनमां कहेवा लाग्यो—" अहो ! हुं केवो मद जाग्यवान् छु के, मारे एक पण पुत्र नथी. आ जाग्यवान् पुरुषने धन्य छे के जेने हृदयने आनद आपनारा घणा पुत्रो छे. " आवु चिंतवतो

नागसारथि पोताने घेर आव्यो. पोताना पतिने आम चिंता करतो जोइ सती सुल्र साए कह्यु, "स्वामी नाथ, तमारा हृदयमां शी चिंता उत्पन्न थइ छे? तमारु चिंतातुर मुख जोइ मारा हृदयने परिताप थाय छे माटे जे सत्य होय ते कहो ?" नागसारथि मंद स्वरथी बोल्यो—"प्रिया, आजे एक गृहस्थने में पोताना उत्संगमा पुत्रने रमाडतो जोयो, ते उपरथी मने पुत्रनी चिंता उत्पन्न थइ आवी छे आज सुधी मारे काइ पण पुत्र थयो नथी, एथी हु मारा आत्माने दुर्जागी मानु छु. मने अत्यार सुधी एक पण पुत्र प्राप्त थयो नहीं, ए मारा हृदयने शल्यनी जेम पीडे छे" स्वामीना आवा वचनो सांजळी सुलसाए कह्यु—"स्वामी, चिंता करशो नहीं. पुत्रने उत्पन्न करवा माटे तमे कोइ बीजी कन्यानु पाणिग्रहण करो. कोइ पण रीते तमारा मननी चिंता दूर करवी ए मारी फरज छे."

नागसारथि बोल्यो—"प्रिये, ए वात मारी आगळ कहीश नहीं. आ जन्ममा मारे तु एकज प्रिया छे. तारा शिवाय बीजी स्त्रीने हु मनथी पण इच्छतो नथी. मारामां पुत्र दर्शननी अजिलापा उत्पन्न थइ छे पण ते पुत्र तारी कुक्षिथी उत्पन्न थयेलोज इच्छु छु. बीजी स्त्रीथी उत्पन्न थयेला पुत्रने जोवानी मारी इच्छा नथी. माटे तु सती छे, तेथी कोइ देवतानी आराधना करी तेनी पासे पुत्रतुं वरदान माग, जेथी मारो मनोरथ सिद्ध थाय." सुलसा पतिना आवा वचन सांजळीने बोली,—स्वामिनाथ, जो आपणा कर्ममा पुत्र हशे तो आपणने अवश्य प्राप्त थशे. ते शिवाय कदिपण पुत्रनी प्राप्ति नहीं थाय. वांछित अर्थनी सिद्धि करवाने माटे मन, वचन अने कायाथी बीजा कोइ पण देवनी आराधना करीश नहीं. आपणे तो श्री अरिहंत देवनी आराधना करीशु. जे जगवान् सर्व इष्ट सिद्धिना कारण रूप कल्पवृक्ष समान छे हु सर्व मनोरथोने पूरनारा [1]आचाम्ल प्रमुख तपने आचरिश एनाथी आपणा कार्यनी सिद्धि थशे. कोइ जातनी चिंता करशो नहीं." सतीना आ वचनो सांजळी नागसारथिने आश्वासन मळ्यु ते पछी सती सुलसा आदिनाथ प्रमुख सर्व जिनेश्वरोनी त्रिकाल पूजा करवा लागी अने बीजा धार्मिक कार्यो तथा तपस्या करवामा ते तत्पर बनी गइ.

केटलोक समय वीत्या पछी देवलोकमा इन्द्रनी सजानी अंदर सुलसाना

[1] आयाबल

ाभिकपणानी प्रशंसा करवामां आवी ते वखते एक मिथ्यात्वी देवता ते प्रशंसा
ांभळी शक्यो नहीं, तेथी ते सुलसानी परीक्षा करवाने पृथ्वी उपर आव्यो.
साधुनो कृत्रिम वेष पेहेरी सुलसाना घरमां पेठो. आ वखते सुलसा पोताना
रमां जिनेश्वर प्रभुनी पूजा करवामां आसक्त हती, तोपण तेणीए ज्यारे मुनिने
र आवेला जोया, एटले ते तत्काल बेठी थइ अने अतिशय भक्ति पूर्वक तेणे
ुनिना चरणकमळमां वंदना करी सतीए मुनिने विनयथी पुछ्युं, "महाराज, शु
ारण पधार्या छो ?" कपटी मुनिए कह्युं, "बाइ, अमारी साथे एक बीजा साधु
, तेमने एक रोग थयेलो छे. ते रोगनुं छेदन करवाने लक्षपाक तेल जोइए छीए;
वुं तेल तमारा घरमां हशे, माटे ते लेवा आव्यो छु"

मुनिना आ वचनो सांभळतांज सती सुलसा पोताना ओरडामां गई
अने लक्षपाक तेलनो एक घडो लावी तेणीए मुनिना आगळ मुक्यो. पोते ते
घडानुं ढांकणुं उघाडवा मांड्युं, तेटलामां देवना प्रभावथी ते घडो फुटी गयो.
आथी सुलसाना हृदयमां जरा पण खेद थयो नहीं. ते पाछी घरमां जइने बीजो
घडो लावी ते घडो उघाडतांज भांगी गयो. तोपण ते अखिन्न हृदये पाछो
त्रीजो घडो लावी. ते पण प्रथमनी जेम भागी गयो. हवे तेणीना घरमां चोथो
घडो नहतो, तेथी ते घडानो अपशोष न करतां पोताना मनमां कहेवा लागी के,
"अरे! हुं केवी निर्भागी! आ मारुं तेल ग्लान मुनिना उपयोगमां आव्युं
नहीं." सती सुलसाने आम चिंतवती जाणी, तेनी उत्तम भावना जोइ ते देव
प्रसन्न थइ गयो. तत्काल तेणे पोतानुं स्वरूप प्रगट कर्युं. ते बोल्यो—"सती श्रा-
विका तमने धन्यवाद घटे छे. इंद्रे देवतानी सभामां तमारी प्रशंसा करवा मांडी
ते वखते में अल्पबुद्धिवाळे तेमां शंका करी. पछी तमारी परीक्षा करवाने हुं मु-
निनो वेष धारण करी अहिं आव्यो हतो इंद्रे करेली प्रशंसाथी पण वधारे
तमारामां धर्मनी स्थिरता जोइ हुं संतुष्ट थइ गयो छुं, तेथी जे तमोने इष्ट होय ते
मागी ल्यो." आ वखते सती सुलसाए प्रसन्न थइने कह्युं, "देव, जो तमे मारी
उपर संतुष्ट थया हो तो मने पुत्र रूप वांछित वर आपो" सतीनी आ मागणी
उपरथी ते देवताए तेणीने बत्रीश गुटिकाओ आपी अने कह्युं के, "तमारे आ
गुटिकाओ अनुक्रमे भक्षण करवी तेथी तमारे तेटला सुंदर पुत्रो थशे. ते शिवाय
मारा योग्य कांइ पण कार्य आवी पडे तो मने संभारजो." आटलुं कही ते

देव अदृश्य थइ गयो. देव अदृश्य थया पछी चतुर सुलसाए विचार कर्यो के, आ गुटिकानुं अनुक्रमे जक्षण करवाथी बत्रीश पुत्रो थशे. तो ते पुत्रोना मल मूत्र विगेरे अशुचिने कोण साफ करशे ? अने तेमनो वरदास शी रीते थइ शकशे ? माटे आ बधी गुटिकाओ एक साथे खावी वधारे सारी छे, तेम करवाथी बत्रीश लक्षणवाळो एकज पुत्र थशे." आवुं विचारी सुलसा ते बत्रीश गुटिकाओने एकी साथे जक्षण करी गइ ते पछी सुलसानी धारणा प्रमाणे बन्युं नहीं पण दैवयोगे तेणीना उदरमां बत्रीश गर्भ उत्पन्न थया अनुक्रमे उदरनी मोटी वृद्धि थवाथी सती सुलसाने जार पीडा थइ पडी गर्भना भारनी पीडाने नहीं सहन करवाथी सुलसाए कायोत्सर्ग करी पेला देवतानुं स्मरण कर्युं तत्काल ते देवता त्यां हाजर थयो अने पोताना स्मरणनुं कारण पुछ्युं. सुलसाए ते देवनी आगळ पोतानो सर्व वृत्तांत जणावी दीधो. ते वखते देव बोल्या. "जद्र, तें एकी साथे बत्रीश गुटिका खाधी, ते घणुं अयोग्य कर्युं छे. हवे तारा गर्भमां बत्रीश बाळको उत्पन्न थया छे. तेओ बधा एकी साथे अवतरशे अने सरखा आयुष्यवाळा थशे. ते सर्वेनुं मरण एकज वखते थशे परंतु तुं गर्भ पीडानो जय राखीश नही. हुं तने ते विषे सहाय करीश" आ प्रमाणे कही सुलसाना गर्भनी पीडाने हरी ते देव पोताने स्थाने चाल्यो गयो. पछी सुलसा गर्भनी पीडाथी रहित थइ अने सुखे गर्भनुं वहन करवा लागी. समय पूर्ण थयो एटले तेणीए बत्रीश लक्षणवाळा बत्रीश पुत्रोने जन्म आप्यो. नागसारथिए मोटा आडंबरथी ए बत्रीश पुत्रोनो जन्मोत्सव कर्यो. अनुक्रमे ते बत्रीश पुत्रो मोटा थइ यौवन वयने प्राप्त थया. सारथिए ते बत्रीश कुमारोने राजा श्रेणिकनी सेवामां राख्या. तेमनी उत्तम सेवाथी श्रेणिक राजा तेमनी उपर संतुष्ट रहेतो हतो.

एक दिवसे राजा श्रेणिके प्रथमथी संकेत करी चेडाराजानी पुत्री सुज्येष्ठाने गुप्त रीते लाववानो योजना करी ते योजना पारपाडवाने चंपा नगरीनी सामे छुपी सुरंग करावी अने ते सुरंग मार्गे नागसारथिना बत्रीश पुत्रोनी साथे रथमां बेशी श्रेणिकराजा ते नगरना दरवाजामां पेठा. राजकुमारी सुज्येष्ठाए पण प्रथम चित्रमां जोयेला मगधपति श्रेणिकने ओळखी पोतानी नानी बेन चेल्लणाने ए वृत्तांत कह्यो हतो. चेल्लणा पोतानी बेनना वियोगने सहन करवा असमर्थ हती, तेथी ते पण ते रथमां साथे आवी. रस्तामां जतां सुज्येष्ठा पोताना आभूषणनो

करीओ त्युडी जवायी ते लेवाने पाछी गइ ते वखते सुलसाना बत्रीश पुत्रोए राजा श्रेणिकने जणाव्यु के, " स्वामी, आपणे आ शत्रुना घरमा घणीवार रहेवुं योग्य नथी." राजाने ते वात रुचिकर लागी तत्काल ते चेल्लणानेज लइने त्याथी आगल चाल्यो गयो. पाछळथी सुज्येष्टा रत्नाभरणनो करंडीयो लइ आवी. तेणे ते स्थळे श्रेणिकनो रथ जोयो नहीं. पोतानो मनोरथ अपूर्ण रह्यो. आथी तेना मनमां लागी आव्यु. तेम वळी पोतानी बेन चेल्लणानो वियोग पण ते सहन करी शकी नहीं, आथी तेणीए उचे स्वरे पोकार कर्यो—" हा, हा, कोइ चेल्लणाने हरी जाय छे " आ पोकार राजाना सांभळवामा आवता चेटक राजा तत्काल क्रोध पामी तैयार थइ गयो. ते वखते ते राजानी पासे रहेलो वैरंगिक नामनो सुभट ते राजाने निवारी पोते चेल्लणाने पाछी वाळवा दोडी गयो. ते वैरंगी दोडता श्रेणिकना रथनी थोडे दूर आवी पोहोच्यो. तेणे जोरथी एक एवु बाण मार्यु के जेथी सुलसाना बत्रीश पुत्रो एकी साथे हणाइ गया. पछी तेणे ते साकडी सुरंगमायी ते बत्रीश रथो खेंचवा माड्या तेवामा श्रेणिक राजा पोतानो रथ वेगथी आगळ चलावी गयो. ते वखते वैरंगिक सुभट पोतानो मनोरथ सिद्ध न थवाथी निराश थइ पाछो फर्यो तेणे सखेद मने ते वृत्तात चेटक राजाने जणाव्यो. अने पछी ते पोताने घेर चाल्यो गयो.

राजा श्रेणिक सुज्येष्टाने बदले चेल्लणाने लइने पोतानी राजधानी राजगृह नगरीमा आवी पोहोच्यो. त्या जइ ते गांधर्व विवाहनो विधिथी चेल्लणाने परण्यो. राजाना मुखथी नागसारथि अने सुलसा पोताना बत्रीश पुत्रोना मरणनो वृत्तात सांभळी अति शोकातुर थइ गया. अने तेनो भारे विलाप करवा लाग्या. ते बने दंपती शोकना महासागरमा मग्न थयेला जाणी राजा श्रेणिक अने अभयकुमारे तेमने आ प्रमाणे प्रतिबोध आप्यो " भद्र, तमे आर्हत धर्मना ज्ञाता अने विवेकी छो. आ ससारनु स्वरुप तमारा जाणवामां छे, तेथी तमारे विशेष शोक करवो नहीं. आ ससारने विषे जे काइ आ साक्षात् भाव देखाय छे ते सर्व विनाशी छे अने मरण पामवु, ए सर्व जीवोने साधारण छे, तेथी शोकनो त्याग करी धर्मना साधनरुप धैर्यनु अवलंबन करवु. " आ प्रमाणे प्रतिबोध आपी राजा श्रेणिक पोताना कुमार अभय मंत्री साथे पोताने मेहेल गयो. ते पछी बने

दपति पोताना पूर्वना कर्मना विपाकने प्रमाण करी शोकरहित थइ गया. आ आर्हत धर्मना आराधनमां विशेष उजमाल थया हता.

एक वखते श्री वीरप्रभु चंपा नगरीना उद्यानमा समोसर्या सर्व पर्षद तेमने वंदना करवाने आवी. भगवते धर्मनी देशना आपी. आ वखते दंभ, छत्र अने [1]काषाय वस्त्रने धारण करनार अंबड नामनो एक परिव्राजक के जे श्री वीर प्रभुनो उत्तम श्रावक हतो, ते वीरप्रभुने नमी योग्य स्थाने बेशी प्रभुना मुखथी धर्मदेशना सांभळतो हतो, ते प्रभुने वंदना करी आ प्रमाणे बोल्यो—"स्वामी, हाल राजगृह नगरने विषे जवानी मारी इच्छा छे." प्रभुए विचार करीने कह्यु, "देवानुप्रिय, जो तमारे त्यां जवु होय तो त्यां नागसारथिने घेर आ मारी श्राविका सुलसा छे, तेने मधुर वाणीथी धर्मशुध्धि साथे सुखशाता पुछजो" प्रभुनी आ आज्ञाने अंगीकार करी अंबड श्रावक लब्धिना बळथी आकाश मार्गे चाली राजगृह नगरीमा आव्यो. ते नागसारथिना घरना द्वार आगळ आवी उभो रह्यो, ते वखते तेणे पोताना मनमां चिंतव्यु के, "भगवान् वीरप्रभुए जेने माटे काळजी राखेली छे, एवी सुलसा धर्मने विषे केवी दृढ हशे? तेनी परीक्षा करवी जोइए." आवु चिंतवी तेणे तत्काल वैक्रिय लब्धि वडे बीजु रूप करी सुलसाना घरमां प्रवेश कर्यो. तेणे घरमा पेशी प्रथम सुलसानी पासे भिक्षा मागी. सुल्साए 'सत्पात्र शिवाय बीजाने भिक्षा आपवी नहीं' एवो नियम ग्रहण करेलो हतो, तेथी ते प्रतिज्ञा पाळवाने तेणे अंबड श्रावकने पोताने हाथे भिक्षा आपी नहीं. अंबड त्यांथी पाछो फर्यो अने नगरनी बाहेर पूर्वमां जइ तेणे ब्रह्मानु स्वरूप विकुर्व्युं. चार मुख अने चार भुजाओ धारण करी. अंग उपर ब्रह्मसूत्र अने कंठमा रुद्रमाळा आरोपित करी. ते सावित्री साथे हंसना वाहन उपर बेठो हतो. ते रक्तवर्णी ब्रह्मा बनी चारे मुखे चार वेदोनो ध्वनि करवा लाग्यो. आ ब्रह्माना प्रत्यक्ष दर्शन करवाने राजगृही नगरीना हजारो लोको आवबा लाग्या. केटलाएक तेनी भक्ति करवाने, केटलाएक कौतुक जोवाने अने केटलाएक मननी इच्छा पूरी करवाने ते स्थले एकठा थवा लाग्या. आ वार्ता सती सुलसाना सांभळवामां आवी तोपण सम्यक्त्वने विषे दृढ नियमवाळी ते रमणी

[1] भगवा वस्त्र.

ते कपटी ब्रह्मानी पासे गइ नहीं. ज्यारे सुलसा तेने वंदन करवा आवी नहीं एटले ते अंबड श्रावके बीजे दिवसे दक्षिण दिशामां विष्णुनुं स्वरूप धारण कर्युं. तेणे गरूड उपर आसन कर्युं, पीळा वस्त्रो धारण कर्या, चारे भुजामां शंख, चक्र, गदा अने शार्ङ्ग धनुष्य राख्या, ते साथे लक्ष्मी तथा बीजी गोपांगनाओ सहित लीला प्रदर्शित करी. तेना दर्शन करवाने अनेक लोको दोडी गया. पण मिथ्यात्वीओना परिचयथी भय पामती ते शुद्ध श्राविका ते स्थाने गइ नहीं. ज्यारे सुलसा पोताना विष्णुना स्वरूपथी ललचाणी नहीं एटले ते अंबडे त्रीजे दिवसे पश्चिम दिशामां शंकरनु रूप विकुर्व्युं. ते महादेव वाघना चर्मने धारण करी वृषभनावाहन उपर बेठा हता. त्रण नेत्रो अने मस्तक उपर चन्द्र धारण कर्यो. जटामां गंगा, गजचर्मना वस्त्रो, शरीरे भस्म, एक हाथमां त्रिशूल, बीजा हाथमां खप्पर, गळामां रुंडमाळ अने खोळामां पार्वती धारण करेला हता. ते शंकर रूपे लोकोने कहेतो हतो के, आ जगत्ना सर्व प्राणीओने संहार करनार हुं छुं. मारा जेवी कोइनामां शक्ति नथी अने मारा शिवाय कोइ परमेश्वर ज नथी. नगरना सर्व लोको तेना दर्शन करवाने जवा लाग्या पण सम्यक्त्वथी विभूषित एवी सुलसा त्यां गइ नहीं. ते पोताना धर्मने विषे दृढता धारण करीने बेशी रही.

अंबड श्रावके जाण्युं के, सुलसा पोताना धर्ममां दृढ रही छे. पछी चोथे दिवसे तेणे उत्तर दिशामां समवसरणनी रचना करी. आठ प्रातिहार्य सहित जिनेंद्रनु रुप धारण करी तेमां ते विराजित थयो. ते वार्ता सांभळी घणा लोको तेने वंदना करवाने गया. अने नगरना लोकोने आर्हत धर्मनो उपदेश आपवा मांड्यो तथापि धर्मने विषे दृढतावाळी सुलसा ते स्थळे गइ नहीं. आ वात अंबडना जाणवामां आवता तेणे सुलसाना मनने क्षोभ पमाडवाने माटे एक पुरुषने तेणीने घेर मोकल्यो. ते पुरुषे सुलसाने घेर आवी आ प्रमाणे कह्यु,—"भद्रे, आ नगरनी बाहर श्री अरिहंत भगवान् समोसर्या छे, तेमने वंदना करवाने माटे तमे केम जता नथी ?" सुलसा बोली "हे महाभाग, हाल आ पृथ्वीने विषे श्रीवीर भगवान् शिवाय बीजा कोइ तीर्थंकर विद्यमान नथी. अने श्री वीरभगवान् तो हाल बीजा देश तरफ विचरे छे, तेओ एकदम अहीं शी रीते आवे ? कोइपण रीते वीरप्रभुनो अहीं आववानो संभव नथी." सुलसाना

आ वचन सांभळी ते पुरुषे कह्यु, " अरे भोळी स्त्री आतो पचवीशमा तीर्थंकर छे; तेओ हमणांज उत्पन्न थयेला छे, माटे तमे पोते तेमनी पासे जइ केम वंदना करता नथी ? " सुलसाए आक्षेप करीने कह्यु, " भद्र, ए वात तदन अघटित छे. आ जगतने विषे पचवीशमा तीर्थंकर कदिपण थताज नथी. मने तो लागेछे के, आ कोइ मायावी पुरुष छे. ते कपटना आडंबरथी भोळा लोकोने ठगे छे. तेवा धूर्त्तनी पासे मारे शा माटे आववु जोइए ? " सुलसाना आ वचन सांभळी ते पुरुषे विचार करीने कह्यु, " भद्रे, तमारे एवी शका शा माटे लाववी जोइए. ए धूर्त्त होय के कपटी होय तोपण ते जैन शासननी उन्नतिनेतो करनारो छे. गमे ते रीते शासननी उन्नति थती होय, तेमा दोष जोवानो नथी. " सुलसा जरा नाखुश थइने बोली–" भद्र, आवी वात कहेवा उपरथी मने लागे छे के, तु पण भोळो (मूर्ख) माणस छे. जो तु ज्ञानवडे विचार करीश तो तने मालुम पडशे के, असद् व्यवहारथी शासननी उन्नति थती नथी पण उलटी लोकोमां हासी थाय छे. " सुलसाना आवां दृढता भरेला वचनो सांभळी ते पुरुष त्यांथी चाली नीकळ्यो अने अबडनी आगळ आवी तेणे ते सर्व वृत्तात निवेदन कर्यो ते उपरथी अबडे पोताना हृदयमा विचार कर्यो के, " वीर प्रभुए सभा समक्ष जे सुलसाने धर्मलाभ पूछाव्यो, अने तेणीनी संभावना करी ते सर्व रीते घटित छे. ते वखते नीचे प्रमाणे बे पद्य बोल्यो हतो—

" मया व्यामोहित विश्व, विश्व न सुलसा पुन ।
तमसा ग्रस्यते लोको, न प्रदीपशिखा पुन ॥ १ ॥
तथामुष्य मनोरूढं, विपुलै र्दृढता गुणै ।
स्यातु मिष्टे मया तत्र, महिमा नहि मादृशाम् ॥ २ ॥"

" में बधा विश्वने मोहित कर्युं, पण सुलसाने मोहित करी नहीं. अंध कार लोकने ग्रसे छे पण ते दिवानी शिखाने ग्रसी शकतु नथी. '

आ सुलसानुं मन अरिहंतोना विशाळ गुणोथी एवु रुधाइ गयु छे के जेमां मारा जेवाओनो महिमा रही शके तेवो अवकाश रह्यो नथी २

'आ पर्योने कही ते अंबम श्रावके विचार्यु के "सुलसाने में घणी रीते चलायमान करी ते छता पण ते जरा पण चलित थइ नहीं. तेथी तेनी दृढताने पूर्ण धन्यवाद घटे छे"

आवु विचारी ते अबम श्रावके पोतानु मायारुप फेरवी स्वाभाविक रुप धारण कर्युं, अने ते हृदयमा प्रसन्न थइने सुलसाना घरमा आव्यो. सती सुलसा तेने मूलरुप धारी जोइ बेठी थइ सामी आवी अने तेने एक साधर्मि बंधु तरीके मान आपी आ प्रमाणे बोली—"हे त्रण जगत्ना स्वामी श्री वीरप्रभुना श्रावक, तमे कुशल छो ?" एम सुखशातानु प्रश्न करी तेना चरणनुं प्रक्षालन करी तेने पोताना गृह चैत्यनुं वंदन कराव्यु अंबम श्रावक पण विधि पूर्वक चैत्यवंदन करी सुलसा प्रत्ये बोल्यो—"हे महासति, आ भरतक्षेत्रने विषे तमे एकज धर्मने विषे दृढतावाला अने पुण्यवान् छो, कारणके, श्री वीर प्रभुए मारे मुखे तमोने धर्म-लाभ कहेवराव्यो छे.

अबमना मुखथी आ वात सांभळी सुलसा अतिशय आनंदवाळी थइ गइ. अने जे दिशामा प्रभु विहार करता हता, ते दिशा तरफ अंजलि जोडी, प्रभुने हृदयमा धारण करी तेणे उत्तम वाणीथी प्रभुनी स्तुति करी.

आ वखते तेणीनो आशय विशेष जाणवाने माटे अबम आ प्रमाणे बोल्यो—"महासती, आ नगरनी बाहेर हमणा ब्रह्मा, विष्णु अने शंकर प्रत्यक्ष आव्या हता, तेमना दर्शन करवाने तमे गया हता के केम ? सुलसा बोली—"देव, जे पुरुषो जैन धर्ममा अनुरक्त थया होय, तेओ रागद्वेषरुप शत्रुओने जीतनारा, भव्यजनोनो उपकार करनारा, सर्वज्ञ अतिशय संपन्न अने पोताना तेजथी सूर्यने पण पराजित करनार एवा देवाधिदेव श्री महावीर प्रभुने मूकी राग, द्वेष तथा मोहथी पराभव पामेला, निरंतर स्त्री सेवामा तत्पर रहेनारा, वध बंधन वगेरे क्रियाने आचरनारा आत्म धर्मने नहीं जाणनारा अने सूर्यनी आगळ खद्योत जेवा ते देवोने जोवा केम उत्साह करे ? अर्थात् नज करे कोइ पुरुषे परम आल्हादने आपनारा अमृततु पान कर्यु होय तेने खार पाणी पीवानी इच्छा केम थाय ? कदिपण न थाय जेणे हीरा, माणेक तथा रत्नोनो वेपार कर्यो होय तेने काचना कटकानो वेपार करवो केम रुचे ? हे देवता, तमे जिनेश्वरना

कहेला भावने जाणोछो, अने तेमणे प्ररुपेला धर्मने विषे रक्तछो, ते छतां तमे मने आवो प्रश्न केम करो छो ? " सुलसाना आ वचनो सांभळी अबड अत्यत प्रसन्न थइ गयो. तेणे सुलसानी धर्म उपरनी स्थिरतानी प्रशंसा करी. पछी तेणे ब्रह्मा, विष्णु, वगेरेना स्वरुपने धारण करवानो पोतानो सर्व वृत्तांत सुलसानी आगळ कही सभळाव्यो. पछी तेणीने मिथ्यादुष्कृत कही ते पोताने स्थाने चाल्यो गयो हतो. पछी अबडने श्री वीरप्रभु पासे ग्रहण कर्या छे, बार व्रत जेमणे एवा सातसो शिष्यो थया हता. एक वखते ते अबडना शिष्यो काम्पिल्लपुरथी विहार करी पुरिमताळपुर जता हता. मार्ग जता तेओ तृषाथी आकुळ व्याकुळ थइ गया. तेवामा गगा नामनी एक मोटी नदी आवी पण कोइ जळ आपनार त्या न हतु. तेओ सर्वे अदत्तादानथी विरक्त हता. एटले तेओ परस्पर आ प्रमाणे कहेवा लाग्या. हे देवानुप्रियो, आपण सातसोमाथी कोइ एक पोताना व्रतनो भग करी जो जलपान करावे तो बाकीना बधाना व्रतनु रक्षण थाय आ प्रमाणे कहेवामा आव्यु तोपण कोइ पोताना व्रतनो भग करवा तैयार थयु नहीं पछी सर्वेए ते स्थळे अनशन व्रत ग्रहण कर्युं. हृदयमां श्री महावीर प्रभुनु ध्यान करता अने पोताना गुरु अबडने नमन करता तेओ समाधि मरणथी काल करी पांचमा देवलोकने प्राप्त थया हता.

अबड श्रावक मूल परिव्राजक हतो, पण ते आर्हत धर्मने प्राप्त कर्या पछी स्थूलहिंसानो त्याग करतो, नदी वगेरे जलाशयोमां क्रीडाने न करतो, नाटक, तथा विकथादिक अनर्थ दडने नहीं आचरतो, तुबी, लाकडा के माटीनां पात्रोने वर्जी बीजा पात्रोने नहीं स्वीकारतो, गंगानी मृत्तिका शिवाय बीजी वस्तुओथी विलेपन न करतो, कदमूलनुं भक्षण छोडी देतो, आधाकर्मिक आहारनो परिहार करतो, मात्र मुद्रा अलकारने धारण करतो, काषाय वस्त्रोने पेहेरतो, जलने गळी पान करतो, [1]अर्ध आढक प्रमाण जलथी स्नान करतो अने श्री जिन प्रणीत धर्मने विषे बुद्धिने राखतो पोताना जीवनने सफल करतो हतो छेवटे छ मासनु अनशन ग्रहण करी अबड श्रावक समाधिथी मृत्यु पामी पांचमा देवलोकने प्राप्त थयो हतो. ते देवलोकमां दिव्य भोगने भोगवी अनुक्रमे मनुष्य भव पामी चारित्रनी आराधना करी मोक्षपदने पामशे.

[1] एक जातनु माप

सती सुलसाए हृदयमा धर्मनी स्थिरता धारण करी अने सम्यक्त्वने उत्तम प्रकारे दीपावी तीर्थकर नाम कर्म उपार्जन कर्युं हतुं. ते महा सती आ जरत क्षेत्रने विषे आवती चोवीशीमा श्री निर्मम नामे पनरमा तीर्थंकर थशे. एवी रीते बीजा जव्य जीवोए पोतानु सम्यक्त्व रत्न दीपाववा माटे, धर्म उपर स्थिरता करवा माटे सर्वदा प्रयत्न करवो. जेथी आ त्रण जगतना शिखर उपर रहेला मोक्षपदनी प्राप्ति अवश्य थशे. एवी रीते सम्यक्त्वनी स्थिरता उपर सुलसानो वृत्तात कहेवामां आव्यो.

सम्यक्त्वनुं पांचमुं जूषण जक्ति

प्रवचननो विनय करवो—वैयावच्च करवी—ते जक्ति कहेवाय छे. ए साचा जावे करवाथी सम्यक्त्वने शोजावे छे, माटे ते सम्यक्त्वनुं जूषण कहेवाय छे. तेनाथी अनुक्रमे मानुषी तथा दैवी संपत्ति प्राप्त थाय छे अने परिणामे ते मोक्षने आपे छे. ते उपर श्रीबाहु तथा सुबाहु आदिना दृष्टांतो प्रख्यात छे श्रीबाहु साधुए उल्लसित जावथी पोताना गुरु आदि पाचसो साधुओने आहार लावी आपी तेमज बीजी वैयावच करी उत्तम प्रकारनी जक्ति करी बतावी हती. तेनाथी तेणे जोग्य कर्म उपार्जन कर्यु हतुं. सुबाहु मुनिए पण तेमनी वैयावच्च—जक्ति करी अतिशय जुजबल उपार्जन कर्यु हतुं. ते पछी बने मुनिओए पूर्वोक्त प्रकारे जक्ति करता पोताना सम्यक्त्वने सारी रीते शोजाव्यु हतुं. ते जक्तिना प्रभावथी उत्तम पुण्य संपादन करी तेओ देवलोकमां गया अने त्यां दिव्य सुखनो अनुजव लइ ते बने श्रीऋषजदेव प्रजुना पुत्र रूपे अवतर्या हता. पहेला जे बाहुमुनिनो जीव हतो ते जरत चक्रवर्त्ती थयो अने सुबाहुनो जीव बलवान् बाहुबली थयो हतो. बने निरुपम एवा मनुष्य सुखने प्राप्त करी छेवटे मोक्षना परम सुखना जोक्ता थया हता ते विषे विस्तारथी जाणवु होय तो अन्य ग्रंथोथी जाणी लेवुं. ए प्रमाणे प्रवचननी जक्तिनुं फल मोटु छे, एम मानी भव्य जीवोए तेने विषे विशेष उद्यम करवो—एवी रीते सम्यक्त्वने दीपावनारा पाच आजूषणो कहेवामां आव्या.

सम्यक्त्वना पांच लक्षणो

[१]उपशम, [२]संवेग, [३]निर्वेद, [४]अनुकंपा, [५]आस्तिकता—ए सम्यक्त्वनां

१ उपशम–मोटो अपराध करनारा माणस उपर पण कोप न करवो, ते उपशम कहेवाय छे. ते उपशम कोइ माणसने कषायनां परिणतिना कडु फळ जोवाथी थाय छे अने कोइने स्वाभाविक रीते थाय छे. अर्थात् अपराधी माणसनुं पण प्रतिकूळ चिंतवधुं नहीं ते उपशम कहेवाय छे. आ उपशमथी पोतानामां प्राप्त थयेला सम्यक्त्वनी ओळख थाय छे, तेथी विवेकी पुरुषोए ए उपशम भावने सर्वदा धारण करवो. उपशमभाव एटलो बधो उपयोगी छे के ते सर्व कार्योने सहेलाइथी साधे छे. क्रोधना उदयथी कदि कार्य नष्ट थइ गयुं होय, पण ते उपशमथी पुनः प्राप्त थाय छे, ते विषे शास्त्रमां आ प्रमाणे कहेलुं छे

"कोहेण य हारवियं, उप्पज्जंतं च केवलं नाणं।
दमसारेण य रिसिणा, उवसम जुत्तेण पुण लद्धं" ॥१॥

श्री दमसार मुनिए क्रोधे करीने उत्पन्न थतुं केवळज्ञान गुमाव्युं हतुं, पण उपशम भावथी पाछुं, ते ज्ञान प्राप्त कर्युं हतुं. ते कथा आ प्रमाणे छे.

दमसार राजर्षिनी कथा

आ जंबूद्वीपमां आवेला भरतक्षेत्रनी अंदर कृतागला नामे नगरी छे. तेमां सिंहरथ नामे एक राजा थयो हतो, तेने सुनंदा नामे राणी हती. ते राणीना उदरथी दमसार नामे एक कुमार थयो हतो ते यथोक्त बुद्धिमान् हतो ते बालवयमांज बोंतेर कळामां प्रवीण बनी गयो, तेथी ते तेना पिताने उदयना आनंदने उपजावतो हतो. अनुक्रमे दमसार यौवन वयने प्राप्त थयो पिताए तेने घणी राजकन्याओनी साथे परणावी युवराज पद उपर नीमी दीधो. राजकुमार दमसार पछी सुखे काळ निर्गमन करतो हतो

एक दिवसे ते नगरनी समीपे भगवान् महावीर स्वामी समोसर्या. देवताओए आवी तत्काळ समवसरण कर्युं, पर्षदा वंदन करवाने आवी आ वखते राजा सिंहरथ पोताना कुमारनी साथे सपरिवार तेमने वंदना करवाने आव्यो. छत्र, चामर वगेरे राजचिह्नोने दूर मूकी राजा प्रभुनी समीपे आव्यो. प्रभुने त्रण प्रदक्षिणा करी उत्कृष्ट भक्ति साथे विधिपूर्वक वंदना करी योग्य स्थाने बेठो.

पछी प्रजुए मनुष्य तथा देवतानी पर्षदामा उत्तम प्रकारनी धर्मदेशना आपी. पर्षदा धर्मनी देशना सांजळी पोतपोताने स्थाने चाली गइ. ते वखते दमसार कुमारे जगवतने प्रदक्षिणा करी विनयपूर्वक आ प्रमाणे कह्यु, "स्वामी, आपे सर्व विरतिरूप धर्मनो जे उपदेश आप्यो, ते मने रुच्यो छे, माटे हु आपनी पासे दीक्षा लइश. पण जो मारा माता पिता आज्ञा आपशे तोज हु दीक्षा लइश."

प्रजुए गंजीर स्वरथी कह्यु, "देवानुप्रिय, जेम सुख उपजे तेम करो; पण प्रतिबंध करशो नहीं." प्रजुना आ वचन सांजळी दमसार कुमार घेर आव्यो अने तेणे पोताना मातापिताने आ प्रमाणे कह्यु,—"पूज्य मातापिता, आजे में श्री वीरप्रजुने जक्तिथी वांद्या छे तेमनो उपदेश मने रुचिकर लाग्यो छे. जो तमे मने आज्ञा आपो तो हु ते प्रजुनी पासे चारित्र लेवानी इच्छा राखु छुं." कुमारना आ वचन सांजळी माता पिताए कह्यु, "वत्स, तु हजी बाळक छे. तें जोग्य कर्मने जोगवेला नथी, तेथी ताराथी चारित्र पाळी शकाय नहीं. संयम मार्ग पाळवो घणोज मुश्केल छे. तीक्ष्ण तरवारनी धार उपर चालवा जेवो छे. तारु शरीर घणुंज सुकोमळ छे, तेथी ताराथी मुनिना परिषहो सहन थइ शकशे नहीं, माटे आ संसारना सुख जोगव्या पछी योग्य वये चारित्रनु ग्रहण करजे." माता पिताना आ वचनो सांजळी दमसार कुमार नम्रताथी बोल्यो—"पूज्य माता पिता, तमोए जे संयमनी दुष्करता बतावी ते यथार्थ छे, परतु ते दुष्करता कायर पुरुषोने लागे छे धीर पुरुषोने लागती नथी. धर्मवीर पुरुषो संयमनी गमे तेवी मुश्केली होय तोपण तेने साध्य करवाने समर्थ थइ शके छे. तेने माटे कह्यु छे के,—

" ता तुंगो मेरुगिरि, मयरहरो होइ तावदुत्तारो ।
ता विसमा कज्जगइ, जाव न धीरा पवज्जंति " ॥ १ ॥

"ज्या सुधी धीर पुरुषो प्रव्रजित थया नथी, त्या सुधी तेमने मेरुपर्वत उंचो लागे छे, समुद्र दुस्तर लागे छे, अने कार्यनी गति विषम लागे छे." १

"हे पूज्य माता पिता, आथी हु संयम ग्रहण करवाने हींमत धरु छु. मने संपूर्ण वैराग्य प्राप्त थयेल छे. पूर्वे में अनंतीवार संसारना निःसार सुखो जोगवेला

छे, तेवा असार सुखने विषे हवे मारी इच्छा नथी ससारनी आधि तरफ मने सपूर्ण तिरस्कार छे, तेथी तमे मने अविलवे आज्ञा आपो, जेथी हु सयमने अगीकार करु."

दमसार कुमारनो सयमने विषे आवो जाव जोइ तेमज दृढ निश्चय जाणी माता पिताए तेने सयम लेवानी आज्ञा आपी. पछी तेमणे पोताना कुमारनो दीक्षोत्सव कर्यो. पवित्र वृत्तिवाळा दमसारे वर्द्धमान परिणामथी श्रीवीरप्रजु पासे आनद पूर्वक दीक्षा लीधी. पछी तेना माता पिता परिवार सहित पोताने स्थाने चाल्या गया हता.

राजर्षि दमसार ते पछी चारित्र धर्मने यथार्थ रीते पालवा लाग्या. छठ, अठम वगेरे तपस्या करी तेमणे कर्म निर्जरा करवा मांडी.

एक दिवसे महानुजाव दमसार मुनिए श्री वीरप्रजुनी पासे एवो अभिग्रह ग्रहण कर्यो के, "हे जगवन्, हु जावजीव सुधी मासखमण तप अगीकार करीने विचरीश" वीरप्रजुए कह्यु, "देवानुप्रिय, जेम तमने सुख उपजे तेम करो." पछी राजर्षि दमसार मुनि ए महा तपने आचरवा लाग्या. घणा मास सुधी ए तपस्या करवाथी तेमनु शरीर शुष्क थइ गयु मात्र शरीरमा हाडपिंजर रहेलु छे. आ वखते जगवान् महावीर प्रजु चपा नगरीमा समोसर्या हता महात्मा दमसार मुनि तेमनी पासे आवी चड्या एक समये ते राजर्षि मासखमणना पारणाने दिवसे पेहेली पोरिसीए स्वाध्याय ध्यान करी बीजी पोरिसीए ध्यान करतां तेमना मनमा एवो विचार उत्पन्न थयो के, आजे वीरप्रजुने एवो प्रश्न करवो के, हु जव्य छु के अजव्य छु चरम छु के अचरम छु मने केवलज्ञान थशे के नहीं थाय?" आवो विचार करी तेओ ज्या वीरप्रजु विराजमान हता, त्यां आवी तेमने त्रण प्रदक्षिणा आपी वदना करी आगळ बेठा तेवामा त्रिकालदर्शी वीरप्रजुए कह्यु, "दमसार मुनि, आजे ध्यान करता तमोए मने पुछवाने माटे एवो अध्यवसाय कर्यो हतो के, हु जव्य छु के अजव्य, हु चरम छु के अचरम अने मने केवलज्ञान थशे के नहीं?

आ वात सत्य छे?" प्रजुना आ वचनो साजळी दमसार मुनिए कह्यु, "स्वामी, ए वात सत्य छे." पछी प्रजुए कह्यु, "राजर्षि, तु अजव्य नथी पण जव्य छे. तु

अचरम शरीरी नथी, पण चरम शरीरी छे. तने प्रथम प्रहरनी अंदर केवलज्ञान उदय आव्युं हतु पण कपायना उदयथी तेमां विलंब थयो छे. अने हजु विलंब पण थशे." आ वखते दमसार मुनि बोल्या—" जगवन्, हवेथी हु सर्वथा कपायनो त्याग करीश. ते पछी त्रीजी पोरिसीमा ते राजर्षि प्रजुनी आज्ञा लइ मासखमणने पारणे भिक्षा लेवा माटे नीकळ्या. ते वखते तेओ इर्यासमिति पाळी चालता हता. चालता चालता तेओ चंपा नगरीना मार्गमा आव्या. ते वखते सूर्य मस्तक पर तपे छे. ग्रीष्मऋतुना सख्त तापथी तपेली रेती अग्निनी ज्वाला समान धखती हती, ते उपर मुकवामां आवता चरणमां महा पीमा थती हती. तापनी पीमाथी आकुळ व्याकुळ थयेला मुनिए पोताना मनमा चिंतव्यु के, " आ ग्रीष्मऋतुनो ताप घणो दुःसह छे, माटे कोइ जाणीता माणसने चपा नगरीनो रस्तो पुछुं. एटलामां कोइ मिथ्यादृष्टि पुरुष ते मार्गे प्रसार थतो जोवामा आव्यो. ते मुनिने सन्मुख आवतां जोइ पेला मिथ्यादृष्टि पुरुषना मनमां आव्युं के ' आ तो अपशुकन थया. ' आवुं चिंतवी ते नगरने दरवाजे उजो रह्यो. त्यारे मुनिए ते साधुने पुछ्युं— " जद्र, आ नगरमां कये मार्गे जवाय छे ?" ते मिथ्यात्वीए विचार्यु के, आ मुनि मने अपशुकन रूप थयेल छे, तेथी तेने जुलो पामी दुःखी करु ' आवुं चिंतवी तेणे साधुने कह्यु, " महाराज जे रस्तो देखाय छे, ते रस्ते चालो एटले नगरमां जवाशे अने ज्यां वस्तीवाळां घर हशे ते स्थले आवी पोहोंचाशे. " मुनि तेणे बतावेले मार्गे चाल्या. ते मार्ग एटलो बधो विपम हतो के मुनि तेमां एक मगलु पण जरी शक्या नहीं. मगलां जरता तेने जारे पीमा थइ आवी ते मार्गे घरोनो पछवामानो जाग जोवामा आव्यो कोइ पण माणस तेमने सामे मळ्यो नहीं. आथी ते राजर्पिना मनमा क्रोध कपायनो उदय थइ आव्यो. तत्काल तेमणे पोताना मनमां चिंतव्युं,—" अहा ! आ नगरना लोको दुष्ट छे. कोइ पापीए मने नठारो मार्ग बताव्यो, तेथी हु घणोज दुःखी थयो. एवा दुष्ट पुरुषो शिक्षा आपवाने योग्य छे. तेने माटे कह्यु छे के,—

" मृदुत्व मृदुषु श्लाघ्यं, काठिन्यं कठिनेषु च ।
भृग· छिणोति काष्टानि, कुसुमानि दुनोति न ॥ १ ॥

कोमळ वस्तुनी अंदर कोमळता अने कठिन वस्तुनी अंदर कठिनता

वखाणवा योग्य छे जेमके भमरो काष्टने छोले छे. अने पुष्पोने छोलतो नथी. ?

तेथी आ गामना दुष्ट लोकोने हु कष्टमां पामीश."

आ प्रमाणे विचारी ते मुनिए कोपथी आकुल-व्याकुल थइ कोइ छाया-वाला प्रदेशमा उभा रही उत्थानश्रुत गणवानो प्रारंभ कर्यो. जे उत्थानश्रुतमां उद्वेगने उत्पन्न करनारा सूत्रो रहेला छे. ते सूत्रोना प्रभावथी जे देश, नगर के गाम सुखे वसवा योग्य होय ते दुःखे वसवा योग्य थइ जाय छे राजर्षि दमसार मुनिए ते सूत्रने गणाववानो आरंभ कर्यो. जेम जेम ते मुनि तेने गणवा लाग्या, तेम तेम चपानगरनी अंदर अनेक जातना अकस्मातो थवा लाग्या. नगरना सर्व लोको भयभीत थइ गया अने शोकाकुल थइ पोतपोताना धन धान्यादिकनो त्याग करी, मात्र जीवित लइ दशे दिशाओमा नाशवा लाग्या. ज्यारे प्रजा नाशवा लागी एटले राजा पण पोताना समृद्धिमान् मेहेलनो त्याग करी नाशी गयो. सर्व नगर शून्य थइ गयु आ वखते नगरनो आवो देखाव जोइ अने लोकोने कष्ट पामता विलोकी ते मुनिना हृदयमा पश्चात्ताप थवा लाग्यो. तत्काल तेओ ते सूत्रनी गणना करवाथी निवृत्त थइ गया. तेमणे पोताना मनमां चिंतव्यु " अरे ! आ में शु कर्यु ? में कारण शिवाय आ लोकोने दुःखी कर्या. सर्वज्ञनु वचन अन्यथा होय नहीं वीर प्रभुए मने कह्यु के, 'कपायना उदयथी तु केवल-ज्ञानने हारी गयो छे.' ए वीरनु वचन यथार्थ थयु छे" आ प्रमाणे चिंतवी अति करुणारसमा मग्न थयेला मुनिए सर्व लोकोने स्थिर करवा माटे समुत्थान श्रुतने गणवा मांड्यु. ए श्रुतना सूत्रोने गणवाथी देश, नगर के गाम सुवासित थाय छे तेमणे आह्लाद आपनारा ते सूत्रोनु परावर्त्तन जेम जेम करवा मांड्यु, तेम तेम सर्व लोको प्रमुदित थता नगरमा पाछा आववा लाग्या. राजा पण सहर्ष थइ पोताना दरबारमा आव्यो सर्व नगर निर्भय थइ गयु अने सर्व लोको स्वस्थ थइ गया

पछी दमसार मुनि तपथी कृश थइ उत्कृष्ट एवा शमरसमां मग्न थता ते नगरमांथी आहार पाणी लीधा वगर पाछा वळ्या अने विनय सहित प्रभुनी पासे आव्या. राजर्षि दमसार मुनिने जोइ वीरप्रभु बोल्या " राजर्षि, चपा नग-रीमा भिक्षाने अर्थे जता कोइ मिथ्या दृष्टिना वचनथी क्रोध पामी पछी क्रोधथी

ज्ञात थइ तुं अहीं आवेलो छु ए वात यथार्थ छे. " ? मुनिए कयुं, हा, ए वात यथार्थ छे. प्रभु बोल्या—" मुनि, जे कोइ साधु अथवा साध्वी कषायने व-हन करेछे, ते आ संसारने दीर्घ करे छे अने जे उपशम भावने धारण करे छे तेनो संसार अल्प थइ जाय छे. " प्रभुना आ वचनो सांभळी दमसार मुनिए क-ह्यु,—" भगवन्, कृपा करी मने उपशमनु सारभूत प्रायश्चित्त आपो. पछी प्रभुए तपकरवा रूप प्रायश्चित्त आप्यु. पछी ते महर्षिए प्रभुनी पासे अभिग्रह लीधो के " स्वामी, ज्यारे मने केवळज्ञान उत्पन्न थशे त्यारे हु आहारने ग्रहण करी-श. " आवो अभिग्रह धारण करी ते महात्मा दमसार मुनि तप तथा संयमथी पोताना आत्माने भावता विचरवा लाग्या. प्रमादथी उत्पन्न थयेला दोषने निंदता अने शुभ अध्यवसायने धारण करता ते महर्षिने ते पछी सातमे दिवसे केवल-ज्ञान उत्पन्न थइ आव्यु. देवताओए आवी तेमना केवलज्ञाननो महोत्सव कर्यो. महर्षि दमसार केवली भव्यजीवोने प्रतिबोध आपी बार वर्ष सुधी केवलीपर्याय पाळी अते अनशन करी मोक्षपदने प्राप्त थया हता. आ प्रमाणे उपशम भाव उपर दमसार मुनिनु सुबोधक दृष्टात छे. एवी रीते बीजा पण सम्यक्त्वधारी जीवोए सर्व आभ्यतर तापने निवारवा माटे अने पोताना तथा परना उपकारने करनारा उपशम रसने विषे मग्न थवु के, जेथी परमानदना सुखनी श्रेणी उल्लसित थाय छे, ए उपशम नामनुं प्रथम लक्षण कहेवामां आव्यु.

संवेग नामनुं बीजुं लक्षण

अतिशय श्रेष्ट एवा देव तथा मनुष्यना सुखनो अभिलाप राखवो, ए संवेग नामनु सम्यक्त्वनु बीजु लक्षण कहेवाय छे. सम्यग्दृष्टि पुरुष इंद्र तथा चक्रवर्त्तीना मनोहर सुखने पण अनित्य अने दुःखानुबधी माने छे अने शाश्वत– नित्य आनदना स्वरुपवाळा मोक्षसुखनेज वांछेछे. ए सम्यक्त्वनु बीजुं संवेग लक्षण कहेवामां आव्युं.

सम्यक्त्वनु त्रीजुं लक्षण निर्वेद

नारकी तथा तिर्यच आदि सासारिक दुःखथी कटाळी जवु, ते निर्वेद

पादि गहन दुःख रहेबु छे एवा आ संसाररुप वदीखानामां कर्मरुपी पोलीसो अनेक प्रकारनो कदर्थना करे छे, तेनो प्रतिकार करवाने असमर्थ अने ममत्वथी रहित एवो प्राणी दुःखे करी ससार उपर विरक्त थइ जाय छे. एवी रीते बीजु संवेग अने त्रीजु निर्वेद ए उभय लक्षणो मोक्षपदने आपनार होवाथी सम्यग्दृष्टि पुरुषोए दृढप्रहारीनी जेम तेनो सर्वथा आश्रय करवो

दृढप्रहारीनु दृष्टांत

माकदी नगरीने विषे 'सुभद्र' नामे एक शेठ रहेतो हतो. तेने 'दत्त' नामे एक पुत्र हतो. दत्त बाल्यवयमाथीज उन्मत्त जेवो हतो. ते बीजा बाळकोनी उपर दृढ प्रहार करतो तेथी लोकोमा ते दृढप्रहारीना नामथी ओळखातो हतो. दत्तना तोफानथी लोको तेना पिता सुभद्रनेठपको आपवा आवता हता.सुभद्र पोताना उन्मत्त छोकराने घणो रीते वारतो तो पण ते उच्छृंखल छोकरो रजाक छोडतो नहीं. हमेशा नाना बाळकोनो उपर प्रहार कर्या करतो हतो. दृढप्रहारीना आवा नठारा वर्तनथी कटाळी लोकोए राजानी पासे फरीयाद करी. राजाए हुकम कर्यो एटले सुभद्र शेठे दत्तने पोताना घरमांथी काढी मुक्यो. दत्त घर छोडीने चाल्यो गयो तेनो स्वभाव अतिशय क्रूर होवाथी कोइ ठेकाणे ते निवासने पामी शक्यो नहीं ते फरतो फरतो कोइ चोर लोकोनी पल्लीमां गयो. त्यां ससर्गना दोषथी दूषित थइ ते चोर बनी गयो एक वखते कोइ दरिद्री ब्राह्मणना घरमा ते चोरी करवा पेठो. तेवामां तेना आगणामा रहेली गाय पोताना शींगडाथी तेने मारवा सन्मुख दोडी आवी. घातकी दृढप्रहारीए पोताना हाथमां रहेला खड्गथी ते गायने मारी नांखी. ते वखते घरमां सुतेलो ब्राह्मण हाथमा लाकडी लइ तेनी सामो आव्यो. दृढप्रहारीए तने पण खड्गथी मारी नाख्यो ते वखते ते ब्राह्मणनी सगर्भा स्त्री पोकार करवा लागी घातकी चोरे तेणीने पण ठार मारी नाखी ते वखते तेणीना उदरमाथी गर्भ बाहेर नीकळी तरफडवा लाग्यो तेने जोता ज ते दृढप्रहारीना हृदयमां कोइ शुभ कर्मनो उदय थइ आवता तत्काल वैराग्य उत्पन्न थइ आव्यो ते घातकी चोरे पोताना मनमां आ प्रमाणे चिंतव्यु, "अहा ! शु में पापीए आवु घोर पाप कर्यु ? मारा मानुष्य जन्मने धिक्कार-छे के जे जन्म आवा पापना समूहने करनार थइ पड्यु." आवु चिं

तवी तेणे पचमुष्टि लोच करी चारित्रनो अंगीकार कर्यो अने एवो अभि-ग्रह धारण कर्यो के, "ज्यां सुधी मने आ करेला पापनुं स्मरण थइ आवे त्यां सुधी मारे अन्नपाणी ग्रहण करवां नहीं, आवो अभिग्रह ग्रहण करी ते दृढप्रहारी मुनि ते नगरनी पूर्व दिशाने दरवाजे कायोत्सर्ग ध्याने रह्या हता. ते मुनिने एवी स्थितिमां जोइ नगरना मूर्ख लोको तेनी उपर धुळ तथा पथ्थरनी दृष्टि करवा लाग्या, तो पण ते ज्ञानी मुनि क्षमागुणने धारण करी रहेता हता. तेमना वशीभूत थयेला चित्तनी अंदर कोइ पण जातनो क्षोभ थतो न हतो. तेवी रीते दोढ मास सुधी रहेतां तेने पोताना पापनुं विस्मरण तद्दन न थयुं, त्यारे ते बीजे दरवाजे जइ कायोत्सर्ग ध्याने रह्या, त्यां पण तेमने तेवीज रीते बन्युं हतुं. तेवी रीत ते चारे दरवाज फरी तेणे सर्व प्रकारना उपद्रवो ने सहन कर्या. अने सर्व प्रकारनी पीडा वेठी पोतानी दृढताने अचल राखी हती. ते पछी आ दुःखमय संसारथी विरक्त अने परम संवेगना रंगथी व्याप्त थयेला ते महर्षिने छ मासे ते पूर्वनुं पाप मूलमांथी नष्ट थतां केवलज्ञान उत्पन्न थयुं पछी त काळ तेओ मोक्षपदने प्राप्त थया हता. ए प्रकारे संवेद तथा निर्वेद उपर दृढ प्रहारी महर्षिनी कथा प्रख्यात छे ते कथानुं श्रवण करी बीजा आत्म-हितार्थी पुरुषोए ते उभय लक्षणोने यत्न पूर्वक धारण करवा.

सम्यक्त्वनुं चोथुं लक्षण अनुकंपा.

दुःखी प्राणीओना दुःखने निष्पक्षपातथी निवारण करवानी जे इच्छा ते अनुकंपा कहेवाय छे. ए सम्यक्त्वनुं चोथुं लक्षण छे. दुष्ट स्वभाववाळा सिंह, वाघ वगेरेने पण पोताना संतानो उपर करुणा होय छे, पण वस्तुताए ते करुणा कहेवाती नथी, कारणके, ते पक्षपातने लइने करुणा छे. जे पक्षपात वगर स्वाभा-विक करुणा होय ते अनुकंपा कहेवाय छे ते अनुकंपा द्रव्य अने भाव एम बे प्रकार छे. दुःखीयाने देखी पोतानी शक्ति प्रमाणे तेना दुःखनो प्रतिकार करवो, ते द्रव्यथी अनुकंपा कहेवाय छे. जेओ धर्म रहित छे, तेने धर्म पमाडवो अथवा आ संसार तरफ वैराग्य उत्पन्न कराववो, ए भावथी अनुकंपा कहेवाय छे. सम्य-ग्दृष्टि पुरुषोए इन्द्रदत्तने आश्रीने सुधर्म राजानी पेठे ते उभय प्रकारनी अनुक-पानो सर्वदा आश्रय करवो.

सुधर्म राजानी कथा.

पचाल देशमां वरशक्ति नामे एक नगर हतुं तेमां दयाथी जेनुं आर्द्र हृदय छे, अने जे जैन धर्ममां पूर्ण रागी छे,एवो सुधर्मा नामे राजा राज्य करतो हतो. तेने जयदेव नामे एक नास्तिक मंत्री हतो. एक वखते परदेशमांथी आवेला कोइ चर पुरुषे सभा मंडपमां बेठेला राजानी आगळ विनंती करी के, " स्वामी महाबल नामनो एक सीमाडानो राजा घणो उन्मत्त थइ गयो छे ते अनेक गामोनो नाश करे छे अने सार्थपतिओने लुटे छे ते दुष्ट राजा तमारा शिवाय कोइथी वश थइ शके तेम नथी. " ते चरना आवा वचन सांभळी राजाए पोताना मंत्रीनी सामे जोयुं, एटले मंत्री विनयथी बोल्यो, " महाराजा, ए बीचारो रंक राजा आपनी आगळ कोण मात्र छे ? ज्यांसुधी आप महाराजाए तेनुं आक्रमण कर्युं नथी, त्यांसुधी ए गर्जना करे छे. तेने माटे कह्युं छे के,

" तावद्गर्जंति मातंगा, वने मदभरालसाः ।
शिरोऽवलग्नलांगूलो यावन्नायाति केशरी" ॥ १ ॥

" ज्यांसुधी मस्तक पर पुछडी चडावी केशरीसिंह आव्यो नथी, त्यां सुधी मदना भारथी भरपूर एवा गजेंद्रो वनमां गर्जना करे छे. " १

मंत्रीनां आवां वचनो सांभळी राजाए चिंतव्युं के, जे तावानो राजा पोताना देश के मंडळनो नाश करनार थाय, तेने अवश्य वश करवो जोइए. नहीं तो तने नीतिना भंगनो प्रसंग प्राप्त थाय छे. नीति शास्त्रमा लखे छे के, " दुष्टस्य दंडः स्वजनस्य पूजा " एटले जे दुष्ट होय तेने दंड आपवो अने जे स्वजन होय तेनी पूजा करवी, माटे आ कार्यमां जरा पण विलंब न करवो. " आवुं चिंतवी राजाए आज्ञा करी पोताना सैन्यने एकठुं कर्युं अने पोते सज्ज थइ ते महाबल शत्रु उपर चडाइ करवा चाल्यो. अनुक्रमे तेना देशमां आव्यो, अने मोटी लडाइ करी ते राजाने क्षणवारमां हरावी दीधो. ते राजानुं सर्वस्व हरी लइ राजा सुधर्म पाछो फरी पोतानी राजधानी पासे आव्यो. नगरना महाजन मंडळे मोटा आडंबरथी सामैयुं कर्युं अने राजानो प्रवेशोत्सव कर्यो मोटा सैन्यथी परिवृत थयेलो राजा जेवामां नगरना मुख्य दरवाजा पासे आव्यो, तेवामां ते दरवाजो अकस्मात्

तुटी पड्यो. मोटु अपशुकन थइ पड्युं, पछी राजा पाछो वळी नगरनी बाहेर पडाव नाखीने रह्यो. पछी मंत्रीए हजारो लोकोने कामे लगाडी तत्काळ ते दरवाजो पाछो उभो कराव्यो. पछी बीजे दिवसे राजा प्रवेश करवाने आव्यो, तेटलामां पाछो ते बीजो दरवाजो पण तुटी पड्यो, पुनः पाछो कर्यो अने त्रीजी वार पण तेमज बन्युं, पछी राजाए कंटाळी पोताना मंत्रीने आ प्रमाणे कह्युं, " मंत्रीश्वर, जयदेव, आ दरवाजो वारवार केम पडतो हशे? हवे ते कया उपाये स्थिर थइ शकशे? " मंत्रीए कहुं, " महाराज, में ते विषे एक निमित्तियाने पूछ्युं हतुं, मारा पूछवाथी ते निमित्तियाए मने कह्यु छे के, " आ दरवाजाना अधिष्ठायक देव कोप पाम्या छे, ते दररोज आ दरवाजाने पाडी नाखे छे. जो राजा पोताने हाथे अथवा पोताना मातापिताने हाथे एक मनुष्यनो वध करी तेना रुधिरथी आ दरवाजानुं सिंचन करे तो ते दरवाजो स्थिर रहेशे. ते शिवाय पूजा, बलिदान वगेरे बीजा उपायोथी ते स्थिर रहेशे नहीं. " मंत्रीना आ वचन सांभळी दया धर्मी राजा बोल्यो. " मारे ए दरवाजाने स्थिर राखवानी कांइ जरुर नथी. जीवनो वध करवो, ए महा पाप छे, एवुं महा पाप माराथी कदिपण बनशे नहीं. तेने माटे कह्यु छे के,

" क्रियते किं सुवर्णेन, शोभते नापि तेन च ।
कर्णस्तुट्यति येनाग, शोभा हेतुर्निरंतरम् ॥ १ ॥ "

" ते सुवर्ण शा कामनुं छे? अने तेनाथी शुं शोभा प्राप्त थाय तेम छे? के जेनाथी कान तुटी जाय "

माटे मारे तेवी हिंसा करीने नगरमां जवानी जरुर नथी. ज्यां हुं रहुं, तेज नगर छे. " राजाना मननी आवी दृढता जोइ मंत्रीए नगरना महाजनने बोलावीने कह्युं, " लोको, आ नगरनो दरवाजो मनुष्यनुं बलिदान आप्या शिवाय टकी शकवानो नथी ते मनुष्यनुं बलिदान करवामां राजा विरुद्ध छे, एटले राजानी आज्ञा शिवाय ते बनी शके तेम नथी, माटे हवे तमने योग्य लागे तेम करो. " मंत्रीना आवां वचन सांभळी सर्व महाजन मळीने राजानी पासे आव्युं अने तेमणे राजाने जणाव्युं, " स्वामी, जे काम आपनाथी बनी शके तेवुं न होय तो ते काम अमे मळीने करीशुं, तमे पोते तेमां मौन पकडीने रहो. " राजाए

कह्युं, " प्रजाजनो, एम बने नही प्रजाथी पुण्य के पाप जे काइ थाय छे, तेनो छट्ठो भाग राजाने प्राप्त थाय छे. तेथी तेना पाप कामनो भाग लेवानी मारी इच्छा न थी. " महाजनोए पुन' आग्रहथी जणाव्यु, " स्वामी, तेना पापनो भाग अ मारो अने पुण्यनो भाग तमारो छे, एम मानी अमोने आज्ञा आपो. अने कृ पा करी मौन धरीने बेशी रहो " प्रजाजनना आवा आग्रहथी राजा मौन धरीने बेशी रह्यो. पछी नगरजनोए प्रत्येक घरे फरी उघराणु करी घणु द्रव्य एक ठु कर्युं. ते द्रव्यथी एक सोनानो पुरुष बनाव्यो पछी ते पुरुपने एक गामामा ने साथे तेनी कोटि द्रव्यनी पत्रिका मुकी नगरमा एवी उद्घोषणा करावी के, " जे कोइ माता पिता पोताने हाथे पुत्रनु गळु मरडी मारी देवताने बलिदान आ पे तेने आ सुवर्णनो पुरुष अने कोटि द्रव्य आपवामा आवशे " आवी जाहेर घोषणा नगरमा चारे तरफ प्रवर्तावी ते नगरमा वरदत्त नामे एक दरिद्री ब्राह्मण रहेतो हतो. तेने रुद्रसोमा नामे एक स्त्री हती. ते घणीज लोभी अने निर्दय हती. ते दपतीने सात पुत्रो हता ज्यारे आ घोषणा साभळवामा आवी त्यारे ते दरिद्री वरदते आवी पोतानी स्त्री रुद्रसोमाने बधी वात कहीने पूछ्यु " प्रिये आपणे सात पुत्रो छे. तेमां इन्द्रदत्त नामे सर्वथी नानो पुत्र छे. जो आपणे तेने बलिदानमा आपीए तो आपणने आ द्रव्यनी प्राप्ति थाय अने आपणु दारिद्र दूर थइ जाय. जेनी पासे द्रव्य होय छे, ते सर्व सद्गुणी गणाय छे तेने माटे लख्यु छे के,

" यस्यास्ति वित्त स नर कुलीन·
स पडित. स श्रुतिमान् गुणज्ञ ।
स एव वक्ता सच दर्शनीय
सर्वे गुणा काचनमाश्रयते ॥ १ ॥ "

" जेनी पासे द्रव्य छे, ते पुरुप कुलवान्, पंडित, विद्वान्, गुणज्ञ, वक्ता अने दर्शनीय गणाय छे, तेथी सर्वे गुणो द्रव्यने आश्रीने रहेला छे. ' "

तेम वली कह्यु छे के,

' पूज्यते यदपूज्योऽपि, यदगम्योऽपि गम्यते ॥
वंद्यते यदवंद्योऽपि, तत्प्रभावो धनस्य च ॥ १ ॥

" जे अपूज्य छता पूजाय छे, अगम्य छता गम्य थाय छे अने अवंदनीय छता वंदनीय थाय छे, ते द्रव्यनो प्रभाव छे. १ "

हे स्त्री, तेथी जो आपणा घरमा द्रव्य आवशे तो आपणे सर्वोपरि थइशु. अने पुत्रने वेचवाथी थयेला पापने बहु ब्रह्मभोजन वगेरे करीने दूर करीशु. आ काममा कोइ जातनी चिंता करवी नहीं. " पतिना आ वचन सांभळी ते निर्दय स्त्रीए ते वात अंगीकार करी. पछी वरदत्त ब्राह्मणे महाजनना पटहनो स्पर्श करीने कह्यु, "हुं मारा पुत्रने बलिदानमा आपवाने तैयारछु, मने आटलु द्रव्य आपी दो. " महाजने कह्यु, " जो तु तारी स्त्री सहित तारा पुत्रनु गळु मरडी देवताने बलिदान आपे तो पछी आ सर्व द्रव्य तने आपवामा आवशे. वरदत्ते ते वात कबुल करी. आ वखते तेनो पुत्र इन्द्रदत्त पोताना माता पितानी स्वार्थमय चेष्टा जोइ विचार करवा लाग्यो—" अहा ! आ संसारनु स्वरूप केवु स्वार्थमय छे ? परमार्थे करी कोइ कोइने वल्लभ नथी. कह्यु छे के,

" वृक्ष क्षीणफल त्यजंति विहगा· शुष्क सरः सारसाः " इत्यादि

" जेना फलो क्षीण थइ जाय एवा वृक्षनो पक्षीओ त्याग करे छे. अने शुकाइ गयेला सरोवरनो त्याग सारस पक्षीओ करे छे. "

वळी जे दरिद्री होय, तेने प्राय करीने दया होती नथी. कह्यु छे के,—

" बुभुक्षित· किं न करोति पाप, क्षीणा जना निष्करुणा भवन्ति।

" भुख्यो माणस शु पाप नथी करतो ? जे माणसो द्रव्यथी क्षीण थइ जाय छे, ते निर्दय बनी जाय छे. "

इन्द्रदत्त पोताना मनमा आ प्रमाणे चिंतववा लाग्यो. पछी वरदत्ते पोताना पुत्रने महाजनने सोंप्यो महाजने ते पुत्रने वस्त्र, आभूषण वगेरेथी शणगार्यो. पछी तेना ललाट उपर तिलक करी मुखमा तांबूल आप्यु. एवी रीते तेने

सुशोभित बनावी राजानी पासे लावगामा आव्यो राजा पण अलंकृत थइ तेना माता पिता अने नगरजनोथी वींटाएला इन्द्रदत्तने प्रसन्न वदनवाळो जोइ चमत्कार पामीने बोल्यो–" हे इन्द्रदत्त, तने आ वखते बलिदानमां लइ जाय छे, ते छता तु केम प्रसन्न वदन देखाय छे ? तने मृत्युनो भय केम लागतो नथी ? " इन्द्रदत्त बोल्यो. " देव, ज्या सुधी भय नथी आव्यो, त्या सुधी व्हीवु नहीं. भय आव्या पछी नि.शक थइने ते सहन करवु. तेने माटे कह्यु छे के,

" तावद्भयस्य भेतव्य, धावद्भयमनागतम् ।
आगत तु भयंवीक्ष्य, प्रहर्तव्यमशंकितः "

ज्या सुधी भय आव्यो नथी, त्या सुधी तेनाथी भय राखवो, पण ज्यारे भय आवी पडे त्यारे नि शकपणे ते उपर प्रहार करवो. "

आटलु कही ते इंद्रदत्ते कह्यु, आ वखते हु एक नीतिनु वचन बोलु छु, ते तमारे सर्वने सावधान थइने साभळवा योग्य छे. " लोकोमा कहेवायछे के, पिताए सतापेलो बालक माताने शरणे जायछे माता पिताथी परिताप पामेलो बाळक राजाने शरणे जाय छे अने राजाए सतापेलो महाजनने शरणे जाय छे. हे राजा, ज्या माता पिता पोते पुत्रनु गळु मरडी तेने मारवा तैयार थाय छे, तेमां राजा प्रेरक छे अने महाजन द्रव्य आपी हणवाने माटे ग्रहण करेछे, त्या एक परमेश्वर शिवाय बीजा कोनी शरणे जवु ? अने कोनी आगळ ते दु ख निवेदन करवु ? हवे तो परमेश्वरनु शरण लइ धैर्यने धारण करी दु.खने सहन करवु. महाराजा, आवो विचार करवाथी मारा मनमा मरणनो शोक थतो नथी "

इन्द्रदत्तना आ वचनो साभळी राजानु हृदय करुणारसमा मग्न थइ गयु. तेणे आर्द्र हृदयथी जणाव्यु, " लोको, तमे शामाटे आ दीन बाळकने हणवा तत्पर थया छो ? आवु पाप करवानी शी जरर छे ? पापना हेतुरप एवा आ नगर अने तेना स्थिर दरवाजानी मारे काइ पण जरुर नथी आ जगत्मा सर्व ससारी प्राणीओ जीवितना अर्थी छे, कोइ पण मरणनी इच्छा करतु नथी, तेथी आत्माना हितेच्छु पुरुषोए कोइ पण जीवनी हिंसा न करवी जोइए सर्व जीवोने विषे अनुकपा राखवी जोइए. " आ प्रमाणे राजाने दया धर्ममां दृढ रहेल

तथा इंद्रदत्तने सत्त्ववंत देखी ते नगरनी प्रतोलीनो अधिष्टायक देव प्रसन्न थइ गयो. तत्काळ तेणे ते वनेनी उपर पुष्पनी वृष्टि करी अने ते दरवाजाने सर्वना जोता स्थिर करी दीधो. ते देखाव जोड सर्व नगर जनो विस्मय पामी गया.

पछी राजाना गुणोनु कीर्त्तन करता अने दयामय जैन धर्मनी अनुमोदना करता लोको राजानी साथे मोटा उत्सव सहित नगरमा पेठा हता. पेलो इन्द्रदत्त पण हर्ष पामतो पोताना माता पितानी साथे घेर गयो. त्यारथी घणा नव्य जनोए दयामय जैन धर्मने अंगीकार कर्यो हतो. ए प्रमाणे अनुकपा नामे सम्यक्त्वना चोथा लक्षण उपर सुधर्म राजानु दृष्टांत कहेवामा आव्यु. एवी रीते बीजा पण नव्य जनोए आत्म धर्मने ओळखावनारा, अने सर्व सुखनी श्रेणीने प्रतिपादन करनारा ए अनुकपा लक्षणने धारण करी जगत्‌ना सर्व प्राणी उपर अनुकंपा राखवी.

सम्यक्त्वनु पाचमुं लक्षण आस्तिकता

जेनी मति अस्तिपणाने विषे होय ते आस्तिक कहेवाय छे. ते आस्तिकपणानो नाव अथवा क्रिया ते आस्तिकता अथवा आस्तिक्य कहेवाय छे. अन्यमतना तत्त्वो सानळे छे तो पण श्री जिनोक्त तत्त्वने विषे जे आकांक्षा रहित प्रीति धारण करवामा आवे छे एटले जिन वचन उपर पूर्ण विश्वास राखवामा आवे ते आस्तिक्य कहेवाय छे. तेवा आस्तिकपणाने लइने सम्यक्त्व सारी रीते ओळखाय छे, तेथी ते सम्यक्त्वनु लक्षण कहेवाय छे. सम्यक्त्व प्रत्यक्ष जणातु नथी ते एवा लक्षणथी ओळखाय छे. तेवा आस्तिक्यवाळो पुरुष ते आस्तिक कहेवाय छे. तेने माटे आगमने विषे कयु छे के,

" मन्नइ तमेव सच्चं निस्संकं जं जिणेहि पन्नत्तं ।
सुह परिणामो सम्म कंखाइ विसुत्तियारहिओ " ॥१॥

" जे जिनेश्वरे प्ररूप्यु छे, तेने सत्यज माने छे अने ते पण निःशंकपणे माने छे, अने जे आकांक्षा वगेरे दोषथी रहित एवा शुन्न परिणाम ते सम्यक्त्व कहेवाय छे. "

आ गाथा उपर पद्मशेखरनी कथा प्रख्यात छे, ते कथानी अंदर आ गा-

थानो भावार्थ आवी जाय छे.

पद्मशेखरनी कथा

जंबूद्वीपमां भरतक्षेत्रनी अंदर पृथ्वीपुर नामे नगर छे. ते नगरने विषे पद्मशेखर नामे राजा राज्य करे छे.

एक दिवसे ते नगरनी पासे आवेला वनमां घणा मुनिओथी परिवृत्त थयेला श्री विनयधर नामे आचार्य समोसर्या तेमना आगमननी वार्ता सांभळी राजा प्रमुख घणा लोको तेमने वंदना करवाने आव्या. गुरुवर्ये सर्व भव्य जीवोना उपकारने माटे धर्मदेशना आपी. ते वखते राजा पद्मशेखरे गुरु पासेथी जीवाजीवादि नव तत्त्वोनो परमार्थ जाणी तेने वज्रलेपनी पेठे पोताना हृदयमां धारण कर्यो हतो बीजा पण घणा भव्य जीवोए ते समये गुरु पासेथी सम्यक्त्व रत्नने प्राप्त कर्युं हतुं. ते पछी राजा प्रमुख सर्व लोको विनयथी गुरु महाराजने नमन करी पोतपोताने स्थाने चाल्या गया पछी गुरु महाराज त्यांथी विहार करी बीजे स्थले चाल्या गया हता.

त्यारथी राजा पद्मशेखर श्री जिनोक्त तत्त्वोने विषे आस्तिकताने धारण करी सुखे काल निर्गमन करतो हतो. कदि कोइ पुरुष जिनोक्त नव तत्त्वोनी उपर श्रद्धा न राखे अने पोतानी मंद बुद्धिने लइने ते तरफ अभाव दर्शावे तो राजा पद्मशेखर जेम सारथि वृषभने वश करे तेम तेने वादथी जीती वश करी आर्हत धर्मनुं यथार्थ स्वरूप समजावतो हतो. वळी ते राजा कोइ वार घणा लोकोनी सभा वच्चे गुरु तत्त्वनी आ प्रमाणे प्रशंसा करतो हतो—" हे भव्य लोको, आ संसारमां गुरु सर्वोत्तम छे. जे सदा आ लोकनी ममताथी रहित, जीवदयाना प्ररूपक, दुष्ट वादिगणने जितनार, कषाय रहित, उपमा रहित, उपशम रसना समूहथी परिपूर्ण हृदयवाळा, रागद्वेषथी वर्जित, संसारथी विरक्त, काम विकारने नाश करनार, सिद्धि रूपी स्त्री उपर परिचार करनार, सर्व द्रव्यनो परिहार करनार, चारित्र रुप महारत्नने ग्रहण करनार, सर्व जीवो उपर करुणा रसने वर्षावनार, अने दुर्धर प्रमाद रुप गजघटानो नाश करवामां सिंह समान छे, ते शुद्ध गुरु कहेवाय छ जे प्राणीओ मनुष्यत्व विगेरे सर्व धर्मनी सामग्री प्राप्त करी एवा गुणवाळा गुरुने सेवे छे, तेवाओने धन्य छे. अने जेओ तेमना उपदेश वचन रुप

अमृतनु पान करे छे, तेओने विशेष धन्य छे." आवा वचनो कही राजा पद्म-शेखर घणा नव्य आत्माओने प्रतिबोधित करतो हतो अने अनेक आत्माओना पापकर्मना मलने प्रक्षालित करतो हतो.

ज्यारे राजा आवो प्रतिबोध आपतो हतो, तेवामा एक विजय नामे शेठ-नो पुत्र ते स्थाने बेठो हतो. राजाना वचनमा तेने प्रतीति आवी नही. तेथी तेणे उन्ना थइने जणाव्यु, "महाराजा, तमे जे गुरुनी प्रशसा करोछो, ते सर्वे गुरुओ फोतरानी जेम सार वगरना छे, कारण के, पवने चलावेला ध्वजपटनी पेठे चपल चित्तवाला ते मुनिओ विषयोमा आसक्त एवी पोतानी इन्द्रियोने रोकवाने केम समर्थ थइ शके ? इन्द्रादिक देवताओ पण ते इन्द्रियोने रोकवाने समर्थ थइ शकता नथी." ते श्रेष्ठि पुत्रना आ वचनो सानळी राजा पोताना मनमा चितववा लाग्यो. 'आ कोइ दुर्बुद्धि अने वाचाल छे आ अल्पमति माणस आवा विपरीत वचनोथी नोला लोकोने नमावी सन्मार्गथी भ्रष्ट करशे, माटे आ युवा-नने कोइ पण रीते प्रतिबोध करवो जोइए" आवु चिंतवी राजाए यक्ष नामना एक सेवकने एकाते बोलावीने कह्यु, "यक्ष, तारे आ विजयनी साथे गाढ मैत्री करवी अने तेनो विश्वास मेलववो. पछी तेना रत्नना करंडीयामा आ मारु महा मूल्यवालु रत्नानरण नाखी देवु."

राजानी आवी आज्ञा थवाथी ते यक्षे ते विजय शेठनी साथे गाढ मै-त्री करी अने तेनो पूर्ण विश्वास सपादन कर्यो. ते पछी एक दिवसे ते रत्नानरण विजयना करंडीयामा नाखी ते वृत्तात राजाने निवेदन कर्यो. ते पछी राजाए त-त्काल नगरनी अदर आवार उद्घोषणा करावी के, "सर्व लोकोने खबर आ-पवामा आवे छे के, आजे राजानु एक रत्नानरण गुम थयेलु छे, तो जो कोइए ते लीधु होयतो तेणे जलदी आपी देवु. जो ते नही आपी जाय अने पाछलथी ते जाणवामा आवशे तो तेना लेनारने सख्त शिक्षा करवामा आवशे." आवी उद्घोषणा करावी सर्व नगरना लोकोना घर शोधवा माटे पोताना सेवकोने हु-कम कर्यो. सेवकोए लोकोना घर शोधवा माडता विजयना घरनो शोध कर्यो. शोध करता रत्नना करंडीयामा रत्नानरण जोवामा आव्यु. ते जोइ तेमणे विज-यने पूछ्यु, "विजय, आशु ? आ राजानु रत्नानरण तमारा करंडीयामा क्या-

थी ? " विजये कह्यु, " हु काइपण जाणतो नथी. " राजपुरुषोए कह्यु, " पोते रत्नाभरणनी चोरी करी अने कहे छे के, हु काइ जाणतो नथी ए केम कहेवाय ? शा माटे चोरीने छुपावे छे ? " विजय भयथी काइ बोली शक्यो नहीं. ते मौन धरीने रह्यो. " पछी राज सेवकोए तेने पकडी बाधी लीधो अने तेने राजानी समीपे लाव्या. राजाए सेवकोने छानी रीते सूचना करी के, " हु आज्ञा करु तोपण तमारे तेनो वध करवो नहीं. पछी राजाए प्रकाशथी सभा समक्ष कह्यु, " आ चोर छे, माटे तेने हणी नाखो " राजानी आवी आज्ञा थवाथी राज सेवकोए विजयने वध करनारने सोंपी दीधो. विजयना सगाओ, स्नेहीओ अने सबधीओ ते जोता हता, पण तेने खरो चोर जाणी तेओ तेने छोडाववाने आगळ पड्या नहीं विजये पोताना मनमा जाण्यु के, हवे मारा जीवितनो अत आवी जशे पछी ते पेला यक्षने दीन वचनोथी कहेवा लाग्यो. " मित्र, तु हरेक रीते राजाने प्रसन्न करी मने छोडाव अने मने जीवितनु दान आप " तेनी आवी दीनवाणी साभळी यक्षने दया आवी तेणे राजाने विनति पूर्वक कह्यु, " स्वामी, आ मारा मित्र विजयने योग्य दड लइ छोडी दो अने सर्व कल्याणना साधन रुप एवा जीवितनु तेने दान आपो. " यक्षना आ वचनो साभळी राजा कोपायमान थइने बोल्यो—" यक्ष, आ चोरने छोडी देवो ए मने योग्य लागतु नथी. तोपण तारा वचननु मान राखवाने एक उपाय छे के, ते विजय मारा घरमाथी एक तेलथी भरेलु पात्र हाथमा ले अने तेमाथी एक बिन्दु पण नीचे पडे नहीं. तेवी रीते आखा नगरमा भमीने मारी पासे लावीने मुके, ता हु तेने जीवतो राखीश. ते शिवाय तेने जीवतो राखवामा आवशे नहीं. " यक्षे राजानो आ हुकम विजयने जणाव्यो मरणना भयथी भय पामेला विजये पोताना प्राण बचाववान ते सर्व कबुल कर्यु पछी राजा पद्मशेखरे पोताना नगर जनोने बोलावी आ प्रमाणे आज्ञा करी नगरजनो, आजे आपणा नगरमा प्रत्येक स्थाने विविध जातना वाजाओ वगडावो. मनोहर रूपने धारण करनारी अने सर्व इन्द्रियोना सर्वस्वने हरनारी वेश्याओने घेर घेर नचावो " राजानी आवी आज्ञा थवाथी लोकोए आखा नगरमा तेवी गोठवण करी दीधी पछी विजय ते तेलनु पात्र लइ नगरमा फरवा नीकळ्यो. ते शब्द, रूप, रस, अने गध वगेरे विषयोनो अति रसिक हतो, छता मरणना भयथी ते जितेंद्रिय, निर्विकारी अने मनने

जीतनारो थइ कोइ पण स्थले स्खलना पाम्या वगर आखा नगरमा भमी राजानी सभामा आव्यो अने यत्नथी जाळवेलुं ते तेलनु पात्र राजानी आगळ मुकी ते प्रणाम करीने उभो रह्यो. राजा हास्य करीने बोल्यो—" विजय, तुं नगरमा फर्यो ते वखते वाद्य, गीत, अने नृत्यो थता हता, ते छता ते तारा विद्युत्ना जेवा चपळ मनने अने इन्द्रियोने केवी रीते वश करी ?" विजय बोल्यो—" स्वामी, मरणना भयथी हु तेम करी शक्योछु. कह्युं छे के, " मरणसम नत्थि भय " " मरण समान बीजुं भय नथी. "

राजाए कह्यु, " विजय तुं विषयोमा लुपातुर छे, ते छता ते एक भवमा मरणना भयथी प्रमादने हणी नाख्यो, तो जे मुनिओ अनत भवना भीरु छे अने तत्त्वोने जाणनारा छे, तेओ अनत अनर्थो उत्पन्न करनारा प्रमादने केम सेवे ?" राजानु आ वचन साभळी विजय एकदम प्रतिबुद्ध थइ गयो. तेना मोहनो उदय नाश पामी गयो. जिनमतना परमार्थने जाणी तेणे श्रावक धर्मने अंगीकार कर्यो. ते वखते सर्व लोको आनद पामी गया. अने राजाना सद्गुणोने प्रेमपूर्वक गावा लाग्या.

आ प्रमाणे राजा पद्मशेखरे घणा भव्यजीवोने जैन धर्ममा स्थापित करी अने जैन धर्मना महिमाने वधारी सुखे राज्य पालन कर्यु हतु. छेवटे आस्तिक्य रुप सम्यक्त्वना लक्षणना प्रभावथी ते चिरकाल राज्य करी देवगतिने प्राप्त थयो हतो.

भव्य जीवोए आ पद्मशेखर राजाना चरित्रने साभळी पोताना हृदयमा आस्तिकरूप सम्यक्त्वना लक्षणने धारण करवुं के जेथी मोक्ष संपत्ति प्राप्त थाय छे.

छ प्रकारनी यतना

" परतीर्थिकादि वदनेत्यादि " परतीर्थिओ एटले परिव्राजक, सन्यासी भिक्षु, अने भौत वगेरे वगेरे शब्दथी शिव, कृष्ण, ब्रह्मा, बौद्ध, प्रमुख देवोनु ग्रहण करवु. तथा अरिहतनी प्रतिमा रुप एवा स्वदेवो पण जो दिगवर वगेरे कुतीर्थिओए ग्रहण करेला अने भौत एटले भौत मतिओए अगीकार करेला होय, तेमने वदन स्तवन न करवु. ते पेहेली यतना कहेवाय छे.

तेवा देवोने नमस्करण एटले मस्तक वमे पचाग वदन न करवु, ते बीजी यतना कहेवाय छे. सम्यक्त्व व्रत पुरुषोए आ बनेनो त्याग करवो. तेनो त्याग न करवाथी जो तेवा देवोने वदन–स्तवन वगेरे करवामा आवे तो तेना जक्त लोको मिथ्यात्व वगेरेमां स्थिर थाय छे.

प्रवचन सारोध्धार नामना ग्रथमा लखेलु छे के, मस्तके करी जे करवामा आवे ते वदन कहेवाय छे अने प्रणाम पूर्वक श्रेष्ठ ध्वनि वमे गुणोलु कीर्त्तन करवु, ते नमस्करण कहेवाय छे. तेने माटे बीजे स्थळे पण आ प्रमाणे लखेलु छे

" वंदण यं करजोरुण, शिरसा नमण पुयणं च इहनेय।
वायाई नमुकारो, नमसण मण प्पसाओत्ति" ॥ १ ॥

" कर जोमवा ते वदन, मस्तक नमाववु ते नमन, वचने करी नमवु, ते नमस्करण अने मननो प्रसाद–प्रसन्नता नमसन समजवु. " ?

परतीर्थिओए प्रथम नही बोलाव्या छता, तेमनी साथे आलाप न करवो ते त्रीजी यतना कहेवाय छे. सम्यक्दृष्टि पुरुषोए तेवी आलापनो सर्वथा त्याग करवो जोइए.

परतीर्थिओनी साथे सलपन करवु, एटले वारवार न बोलवु, ए चोथी यतना कहेवाय छे. सम्यग् दृष्टिओए सलपन न करवु जोइए. परतीर्थीओनी साथे विशेष जाषण करवाथी अति परिचय थाय छे अने तेने लइने आचार भ्रष्ट थवाय छे. तेमज मिथ्यात्वनो उदय थइ आवे छे. कदि परतीर्थिओ प्रथम बोलावे तो सभ्रम रहित थइ लोकापवादना जयथी तेनी साथे थोरु बोलवु.

ते परतीर्थिओने अशन, पान, खादिम अने स्वादिम तथा वस्त्र पात्र अनुकपादान सिवाय बीजी रीते न आपवा ए पाचमी यतना कहेवाय छे. बीजी रीते आपवाथी जो ते बीजा लोकोना जोवामा आवे ता तेमनु बहुमान थाय छे अने तेथी मिथ्यात्वनी प्राप्ति थाय छे. मात्र परतीर्थिआने अनुकपादान करवानीज आज्ञा छे अनुकपा शिवाय धर्म बुध्धिये तेमने काइ पण आपी शकातु नथी. अनुकपादान देवामा कांइ पण दोष नथी. तेने माटे कह्यु छे के—

"सव्वेहिं पि जिणेहि, दुज्जय राग दोस मोहेहिं।
सत्तानुकंपणट्ठा, दाण न कहिंपि पडिसिद्धं ॥ १ ॥

"जेमणे राग, द्वेष अने मोहनो त्याग करेलो छे, एवा सर्व जिनेश्वरोए सर्व प्राणीओने अनुकंपादान करवानु कदिपण प्रतिषेध्युं नथी." १

वळी सम्यग् दर्शनी पुरुषोए परतीर्थिकोए ग्रहण करेला जिनबिंबोनी पूजा निमित्ते गंध, पुष्पादिक वस्तु सम्यग्दर्शनीओए मोकलवी नहीं. आदि शब्दथी विनय, वैयावच, यात्रा, स्नात्र वगेरे न करवा. तेम करवाथी लोकोने मिथ्यात्वमा स्थिर करवापणु थाय छे. तेम न करवाय। ए छठ्ठी यतना कहेवाय छे.

आ छ यतना साचवी पर तीर्थीओना परिचयनो सर्वथा त्याग करनारा जव्यात्माओ जोज राजाना पुरोहित धनपालनी पेठे सम्यक्त्वनु उल्लंघन करता नथी.

धनपाल पुरोहितनी कथा.

अवंति नगरीमा जोज राजाने सर्वधर नामे एक पुरोहित हतो. तेने धनपाल अने शोजन नामे बे पुत्रो हता. बने पुत्रो पांमित्य वगेरे गुणोथी ते महाराजाना मानीता थया हता. एक दिवसे श्री सिद्धसेनसूरिना सतानिक श्री *सुस्थित नामना आचार्य जव्य जनोने प्रतिबोध करवा माटे त्या आवी चड्या. पुरोहित सर्वधर हमेशा आचार्य पासे जतो आवतो, तेथी तेने आचार्य उपर प्रीति थइ.

एक वखत पुरोहित सर्वधरे आचार्यश्रीने पुछ्यु,—स्वामी, में मारा घरना आगणामा कोटि द्रव्य दाटेलुं हतु. हाल में तेनी घणी तपास करी तो पण ते द्रव्य मने हाथ लागतु नथी. तो हवे ते द्रव्यनी प्राप्ति शी रीते थशे ? ते कृपा करी जणावो." आचार्य हास्य करी उत्तर आप्यो. "जद्र, जो ते द्रव्य तने प्राप्त थाय तो तारे शु करवु ?" सर्वधरे कह्यु,—"स्वामी, जो ए द्रव्य मने प्राप्त थाय, तो हु तमोने अर्धोअर्ध वेंहेची आपु. गुरुए कोइ प्रकारथी ते द्रव्य सर्वधरने बतावी आप्यु. सर्वधर ते द्रव्यनो ढगलो जोइ सानदाश्चर्य थइ गयो. पछी तेना बे सरखा जागना ढगला करी, तेमाथी एक ढगलो गुरुने माटे निर्धारी

* कोइ बाजा प्रथमा श्री उद्योतन सूरिना शिष्य श्री वर्द्धमान सूरि हता, एम कहे छे

गुरुने विनंति करी. " स्वामी, आ अर्धु द्रव्य आप ग्रहण करो. " गुरु बोल्या- " जद्र अमारे मुनिने द्रव्यनु काइ प्रयोजन नथी. अमोए तो प्रथम पासे रहेला द्रव्यनो त्याग करी दीधो छे.

सर्वधर बोल्यो—" त्यारे शुं तमे सार रुप अर्ध द्रव्य मागोछो ?" गुरुए कह्यु, " हा, जे तमारा घरमा अर्धु सार रुप होय ते आपो. " सर्वधरे कह्यु,— " मारा घरमा शुं सार रुप छे ?" आचार्य बोल्या—" तमारा घरमा सार रुप बे पुत्रो छे, तेमांथी एक पुत्रने आपो. " गुरुना आ वचनो सांभळी ते पुरोहित चकित थइ गयो अने क्षणवार मौन धरीने रह्यो. पछी ते आचार्य महाराज त्यांथी विहार करी बीजे स्थाने चाल्या गया हता.

पछी पुरोहित सर्वधर ते गुरुना उपकारनु स्मरण करवा लाग्यो ते स्मरण करता तेना मनमा आव्यु के, ते उपकारी गुरुनो प्रत्युपकार करवाने समर्थ थइ शक्यो नहीं. आ पश्चात्तापथी तेने हृदयमा लागेला शल्यनी जेम पीडा थवा लागी. तेवी स्थितिमा केटलोक काळ निर्गमन कर्या पछी ते रोगग्रस्त बनी गयो रोगी अवस्थामा रहेता ते छेल्ली स्थितिमा आवी पड्यो ते वखते तेना बने पुत्रोए पोताना धर्मने उचित एवी अंतक्रिया करवा मांडी. ते वखते पितानु मन दुःखी थतु जोइ तेना पुत्रोए पूछ्यु, " तात, तमारा चित्तमा कोइ चिंतानी पीडा होय तेवु देखाय छे, तो ते शी चिंता छे ? ते कृपा करी निवेदन करो. " पुत्रोना आ वचनो सांभळी सर्वधरे पोतानो सर्व वृत्तांत जणाव्यो. ते पछी कह्यु के, "पुत्रो, तमारा बनेमाथी एक जण जैनधर्मनी दीक्षा ल्यो तेम करवाथी हु ऋणमुक्त थइश. तमारा जेवा पुत्रोए मने ऋणमुक्त करवो जोइए. " पिताना आ वचन सांभळी धनपाल जय पामी नीचु मुख करी रह्यो. ते वखते शोभनने कह्यु,—" तात, हु दीक्षा ग्रहण करीश, तमे ते जैन मुनिना ऋणमाथी मुक्त थाओ अने हृदयमा परमानंद भावने धारण करो. " पुत्रना आ वचनो सांभळी ते सर्वधर पुरोहित काळ धर्मने पामी देवलोके चाल्यो गयो ते पछी शोभने पितानी उत्तर क्रिया करी श्री वर्द्धमान सूरिना शिष्य श्री जिनेश्वर सूरि पासे जैन दीक्षा ग्रहण करी. आथी तेनो बंधु धनपाल रोषाविष्ट थइ गयो अने त्यारथी ते जैन धर्मनो पूर्ण द्वेषी थवा लाग्यो. तेणे पोतानी सत्ताथी अवंतिमा साधुओना आगमननो निषेध करा

व्यो. आथी अवंतिना संघे गुरुने आ प्रमाणे पत्रथी लखी जणाव्युं—
" स्वामी, आपे शोभनने दीक्षा आपी उपद्रव उभो कर्यो छे शोभनने दीक्षा न आपी होत तो शुं गच्छ शून्य थइ जात ? शुं ते निर्वंश थइ जात ? गच्छ तो एक रत्नाकर रूप छे. शोभने दीक्षा लीधी तेथी तेनो भाइ धनपाल पुरोहित मिथ्यात्वीपणाथी रोषाविष्ट थइ आर्हत धर्मनी घणी हानि करे छे. " गुरु आ वृत्तांत जाणी विचारमां पड्या. तेमणे पोताना शिष्य शोभनने गीतार्थ जाणी शुभ दिवसे तेने वाचनाचार्यनुं पद आप्युं हतुं. ते पछी तेमने एक मुनि युगल साथे ते उपद्रवनी शांतिने माटे अवंति तरफ मोकल्या. शोभनाचार्य गुरुनी आज्ञा मान्य करी त्यांथी विहार करी उज्जयिनी नगरी प्रत्ये आव्या. ते वखते रात्रि होवाथी नगरना दरवाजा बंध हता एटले तेओ रात्रे बाहेर रह्या हता. प्रातःकाले प्रतिक्रमण करी तेओए नगरमां प्रवेश कर्यो, तेटलामां पुरोहित धनपाल तेमने सामो मळ्यो. ते जैन धर्मनो पूर्ण द्वेषी होवाथी पोताना बंधु शोभनने आ प्रमाणे उपहास्यनुं वचन कह्युं,—

" गर्दभदंत भदंत नमस्ते "

" गधेडाना जेवा जेना दांत छे, एवा हे भगवान्, तने नमस्कार छे."

आ वचन सांभळी शोभनाचार्ये पोताना भाइने ओळखी तेना प्रत्युत्तरमां आ प्रमाणे कह्यु.

" कपिवृषणास्य वयस्य सुखं ते " ।

" वांदराना वृषण जेवा मुखवाला हे भाइ, तने सुखशाता छे ? "

आ प्रतिहास्यनुं वचन सांभळी धनपाळे कह्युं, " तमारो निवास क्यां छे ? " शोभनाचार्ये कह्युं, " ज्यां तमारो निवास छे, त्यां " पछी धनपाळ पोताना भाइना वचनने ओळखी लज्जा पामी त्यांथी कोइ कार्यने माटे चाल्यो गयो हतो. ते पछी शोभनाचार्य प्रत्येक जिनमंदिरे चैत्यवंदन करी जेवामां चैत्यनी बाहेर आवे छे, तेटलामां नगरनो संघ एकठो थइ गयो. अने ते गुरुनी सामे आवी तेमना चरणमां नमी समीप बेठो. शोभनाचार्ये उत्तम वाणीथी तेने धर्मदेशना आपी. पछी सर्व संघनी साथे तेओ पोताना भाइ धनपालना घर तरफ चाल्या.

ते वखते बधु धनपाल सन्मुख आव्यो अने विनयथी नमस्कार करी पोताने घे
लइ गयो. त्या तेमने वसवाने माटे एक सुशोभित चित्रशाळा आपी. ते वख
तेणे पोतानी माता अने स्त्री वगेरेनी पासे उत्तम प्रकारनी रसवती तैयार करावी
ज्यारे ते रसवती शोभनाचार्य पासे निवेदन करी, त्यारे आचार्ये ते स्वीकार्
नहीं तेमणे जणाव्यु के, आधाकर्मिक आहार जैन साधुने अग्राह्य छे ते पछी
गुरुनी आज्ञा मेळवी तेमनी साथे रहेला बे मुनिओ श्रद्धालु श्रावकोने घे
आहार लेवाने गया. ते वखते धनपाल तेमनी साथे चाल्यो. ते समये कोइ श्राव
कने घेर गोचरीए जतां एक गरीब श्राविकाए एक दहींनु पात्र ते मुनिनी आगळ
धर्यु. अने कह्यु के, " मारा घरमा आ वस्तु छे, ते वोहोरो." मुनिए पुछ्यु, "आ
दहीं शुध्ध छे ?" श्राविकाए कह्यु, "महाराज ते त्रण दिवसनु छे." तत्काल मुनि
बोल्या के, " तो ए दहीं अमारे लेवा योग्य नथी. कारण के, श्री जिनेश्वरे
आगममा त्रण दिवसनु दहीं लेवानो निषेध करेलो छे. आ सांभळी साथे आवेला
धनपाळे पूछ्यु के, " महाराज, आ दहीं अशुध्ध केम छे ? " मुनिए कह्यु " ते
विषे तमारे तमारा भाइने पुछी जोवु. " पछी धनपाळ ते दहींनु पात्र लइ शो
भनाचार्य पासे आव्यो अने ते आचार्यने बतावी कह्यु के, " आ दहीं अशुध्ध
केम छे ? ते लोकोमा अमृत तुल्य कहेवाय छे. जो तमे आ दहींमा जीव देखाडो
तो हु श्रावक थइ जाउ अने जो नहीं देखाडो तो हु जाणीश के, तमे भोळा
लोकोने ठगनारा छो. " पोताना भाइना आवा वचन सांभळी शोभनाचार्ये कह्यु,
" हु तमोने हमणांज जीव बतावु, पण पछी तमारे तमारु वचन पाळवु जोइशे."
धनपाळे ए वात कबुल करी पछी शोभनाचार्ये एक लाखनी थेपली मगावी
पछी दहींना पात्रनु मुख बंध करी, तेनी पासे एक छिद्र करी ते पात्र तडके
मुक्यु. पछी ते छिद्रमाथी दहीं पेला लाखना अळतामा पडवा लाग्यु, त्यारे
तेनी अदर थोडा जीवडाओ जोवामा आव्या तत्काळ तेमणे ते धनपालने बता-
व्या. धनपाल ते चालता जीवोने जोइ पोताना मनमा अतिशय आश्चर्य पामी
गयो तत्काल तेना हृदयमां एवी भावना प्रगट थइ आवी के, जैन धर्मने धन्यवाद
घटे छे. तत्काल ते पोताने मुखे आर्हत धर्मनी प्रशंसा करवा लाग्यो तेना हृदयमा
तत्त्व रुचिरुप सम्यक्त्व प्रगट थइ आव्यु पछी तेणे पोताना भाइ शोभनाचार्य
पासे बारव्रत अगीकार कर्या अने ते शुध्ध श्रावक बनी गयो ते श्री अरिहत ते

शुध्द देव, उत्तम साधु ते गुरु, अने जिनेन्द्र नाषित ते धर्म मानतो अने हृदयने विषे श्री पचपरमेष्ठिनु ध्यान धरतो ते आत्म साधन करवा लाग्यो. तेणे अन्य मतने तदन ठोमी दीधो. ते द्वादशव्रत धारी उत्कृष्ट श्रावक बनी गयो.

शोजनाचार्य आ प्रमाणे पोताना बधुने प्रतिबोध आपी गुरुनी समीपे गया हता. धनपाल ज यतना पाळतो सुखे करी सम्यक्त्व धर्मने आराधतो काळ गुमावतो हतो.एक वखते कोइ दुष्ट ब्राह्मणे आवी जोजराजाने कह्युं,"महा-राजा, तमारो पुरोहित धनपाल जैन थइ गयो छे. ते जिनेश्वर विना बीजा कोइ पण देवने नमतो नथी." ते ब्राह्मणना आ वचनो सांभळी राजाए पोताना मनमां विचार कर्यो के, जो ए वात सत्य होय तो तेनी परीक्षा करीए. ते पछी राजा जोज एक दिवसे धनपालने साथे लइ महाकालना मदिरमा गयो. जोज राजाए महाकालेश्वर शकरने प्रणाम कर्यो. धनपाल शकरने नम्यो नही. तेणे पोताना हाथमां रहेल मुद्रिकानी अंदर स्थापित एवा जिनेश्वरनी प्रतिमाने नमस्कार कर्यो. जोजराजाए ते चातुर्यथी जाणी लीधु. पछी राजा पाताने स्थाने आव्यो, त्यां तेणे चंदन पुष्प वगेरे पूजानी सामग्री आपी धनपालने आज्ञा करी के, " धनपाल आ पूजानी सामग्री लइ देवनी पूजा करी आवो. " आवी आज्ञा करी तेनी पाछळ गुप्त बातमीदारो मोकल्या. धनपाल राजानी आज्ञाथी तत्काल ऊठो थइ प्रथम देवीना मदिरमा गयो.त्याथी जयजीत थइ बाहेर नीकळी शिवा-लयमा गयो. त्यां पण आसपास फरी बाहेर नीकळी विष्णुना मंदिरमां पेठो.त्यां पोतानु उत्तरीय वस्त्र नांखी रूप ढांकीने बहार नीकळी श्री ऋषजदेवना मदिरमां गयो. त्या शातचित्ते जक्तिजावथी,श्री जिनेश्वरनी पूजा करी राजद्वारे आवी पोहोच्यो. राजाए मोकलेला गुप्त दूतोए ते वृत्तात राजाने छानी रीते कही दीधो पछी राजा जोजे धनपालने पुछ्यु. "केम धनपाल, तमे देवपूजा करी ?" धनपाले उत्तर आप्यो. "स्वामी,में सारी रीते पूजा करी." त्यारे राजाए पुनः जणाव्युं." धनपाल, तमे जवानी देवीना मदिरमा जयजीत थइ बाहेर केम नीकळी गया ?" धनपाल बोल्यो "स्वामी, ते देवीना हाथमा त्रिशूल हतुं. ललाट प्रदेशमां भ्रकुटी चमावेली हती अने ते पामानु मर्दन करता हता. तेथी हु तेमनाथी जय पामीने बाहेर नीकळी गयो हतो. कारण के, में जाण्यु के,'आ जवानीने युध्द करवानो

अवसर छे, पूजानो अवसर नथी, आवु विचारी में तेमनी पूजा करी नहीं राजाए पुनः पुछ्यु, " धनपाल, त्यारे तें शंकरनी पूजा केम न करी ?" धनपा उत्तर आप्यो " स्वामी, जेने कंठ न होय तेने पुष्पमाल शी रीते पेहेरावाय जेने नासिका न होय, तेने सुगंध केम अर्पाय ? जेने कान न होय तेने गीत शं रीते सजळावाय ? अने जेने चरण न होय तेने चरणमां वंदना शी रीते थाय आवु विचारी लिंगरुप ते शंकरनी पूजा में करी नहीं. आ अर्थने अनुसरत श्लोक ते आ प्रमाणे बोल्यो हतो.

"अकंठस्य कंठे कथं पुष्पमाला, विना नासिकायाः कथं धूप गंध अकर्णस्य कर्णे कथं गीतनादं, अपादस्य पादे कथं मे प्रणामः॥१

आ श्लोक बोली रह्या पछी राजा जोजे पुनः प्रश्न कर्यो. " धनपाल त्यारे विष्णुना मंदिरमा जइ तेमनी पूजा केम न करी ? अने तेमने वस्त्रथी ढांक तु जलदी बाहेर केम नीकळी गयो ? " धनपाले कह्यु, " राजेंद्र, विष्णु पोतान स्त्रीने साथे राखी रहेला हता. तेथी में विचार कर्यो के, आ वखते विष्णु जना नामां एकांत रहेला छे, माटे हमणा पूजानो वखत नथी कोइ साधारण पुरुष पण पोतानी स्त्री पासे एकांते रह्यो होय ते वखते तेनी समीपे सारा माणस न जवु जोइए तो आ तो कृष्ण वासुदेव के जे त्रण खंडना स्वामी कहेवाय छे, तेमनी पासे केम जवाय ? " आवो विचार करी हु तेमनी पूजा कर्या वगर पाछो वळ्यो हतो. वळी में विचार्यु के, " चौटे जता आवता लोकोनी दृष्टिए आ देखाव आवशे, " आवु विचारी में तेमनी उपर वस्त्र ढांक्यु हतु. " धनपालना आ वचन सांभळी राजा भोजे कह्यु, " त्यारे मारी आज्ञा शिवाय, तें ऋषभदेवनी पूजा केम करी ? " धनपाले कह्यु, " स्वामी, तमे मने देवनी पूजा करवानी आज्ञा करी हती अने ते देवपणु तो में ऋषभदेव भगवान्मां जोयु, तेथी में तेमनी पूजा करी हती. जेमना स्वरूपनु वर्णन आ प्रमाणे छे

" प्रशम रसनिमग्नं दृष्टियुग्मं प्रसन्नं
वदनकमलमंकः कामिनी संगशून्यः ।
करयुगमपि धत्ते शस्त्र संबंध वंध्यं
तदसि जगति देवो वीतरागस्त्वमेव " ॥ १ ॥

"जेमना बे नेत्रो समता रसमा निमग्न छे. जेमनु वदन कमळ प्रसन्न छे, जेमनो उत्संग स्त्रीना संगथी रहित छे अने जे शस्त्रोनां संबंधथी रहित एवा बे हाथने धारण करे छे, एवा हे ऋषभदेव भगवान्, आ जगत्मा तमेज एक वीतराग देव छो " १

आ श्लोक बोल्या पछी धनपाले विशेषमा जणाव्युं, " स्वामी, जे रागद्वेषथी युक्त होय, ते देव कहेवाता नथी, कारण के, तेमनामा देवपणानो अभाव छे. तेवा देवो आ संसारना तारक थइ शकता नथी. जेओ आ संसारना पारने उतारनारा छे, तेओज आ लोकमा देव कहेवाय छे, अने तेवा देव तो श्री जिनेश्वर एकज छे, तेथी उत्तम बुद्धिवाळा पुरुषोए तेवा देवनीज सेवा भक्ति करवी जोइए. "

धनपालना आवा युक्तिवाळा वचनो सांभळी भोज राजाना मनमा कुदेवने माटे शंका उत्पन्न थइ अने तेणे धनपालनी प्रशंसा करवा मांडी. एक वखते मिथ्यात्वी ब्राह्मणोनी प्रेरणाथी भोज राजाए एक मोटा यज्ञनो आरम्भ कर्यो. ज्यारे यज्ञनी पूर्णाहुतिनो समय आव्यो त्यारे एक बोकडाने होमवा माटे त्या लाववामा आव्यो. होम करता बोकडो पोकार करवा लाग्यो, ते जोइ राजा भोजे धनपालने पुछ्युं, " भद्र धनपाल, आ बोकडो शुं बोले छे ? ते कहे. ? ते वखते धनपाले कह्युं, " महाराज, ते बोकडो आ प्रमाणे बोले छे—

" नाहं स्वर्गफलोपभोग रसिको नाभ्यर्थितस्त्वं मया
संतुष्ट स्तृण भक्षणेन सततं साधो न युक्तंतव ।
स्वर्गे यांति यदि त्वया विनिहिता यज्ञे ध्रुवं प्राणिनो
यज्ञं किं न करोषि मातृपितृभिः पुत्रैस्तथा बांधवैः ॥ १ ॥

हे साधु पुरुष, हुं स्वर्गना फलनो उपभोग करवामा रसिक नथी. ते फलने माटे में तारी प्रार्थना पण करी नथी. हु हमेशा घास खाइ संतुष्ट रहु छुं, ते छता तुं मने मारे छे, ते घटित नथी. यज्ञमा हणेला प्राणीओ जो स्वर्गे जता होय तो तुं तारा माता पिता, पुत्रो अने बांधवाने मारी यज्ञ केम करतो नथी?"१

धनपालना मुखथी आ शब्दो सांभळी राजा भोज कोपायमान थइ गयो. पण ते वखते ते मौन धरीने बेशी रह्यो

एक वखते राजा भोजे एक मोटुं सरोवर कराव्युं. वर्षाऋतु आववाथी ते सरोवर जळथी परिपूर्ण भराइ गयुं. ते खबर जाणी राजा भोज पांचसो पंडितोनो परिवार लइ ते सरोवर जोवाने आव्यो चतुर पंडितो पोतपोतानी बुद्धिने अनुसारे नवा काव्योथी ते सरोवरनुं वर्णन करवा लाग्या धनपाल ते वखते मौन धरीने रह्यो. ते समये भोज राजाए धनपालनी सामे जोइने कह्युं के, धनपाल, तमे पण सरोवरनुं वर्णन करो राजानी आज्ञा थवाथी धनपाले आ प्रमाणे एक नवीन कविता रची सरोवरनुं वर्णन कर्युं

" एषा तडाग मिषतो वरदान शाला
मत्स्यादयो रसवती प्रगुणा सदैव ।
पात्राणि यत्र बक सारस चक्रवाका
पुण्यं कियद्भवति तत्र वयं न विद्म ॥ १ ॥

" आ सरोवर एक उत्तम दानशाळा छे तेनी अंदर मत्स्य वगेरे सदाकाळ तैयार थयेली ऊमकदार रसोइ छे. बगला, सारस अने चक्रवाक पक्षीओ तेमां पात्ररूप छे ते दानशाळानुं पुण्य केटलुं थशे, ए अमे जाणी शकता नथी. " १

धनपालना आ वचनो सांभळी राजा भोज मनमां रोषाविष्ट थइ गयो तेणे पोताना मनमां चिंतव्युं के, " धनपाल घणोज दुष्ट छे मारी कीर्तिने वधारनारुं जे काम छे, ते जोइने इर्ष्या करे छे. वळी आ तेना वचनो उपरथी जणाय छे के, ते मारो शत्रुरूपे पुरोहित छे जो एम न होय तो बीजा ब्राह्मणोए आ सरोवरनुं वर्णन करी मारी कीर्ति वधारी प्रशंसा करी अने आ दुष्ट पुरोहिते मारी निंदा करी माटे मारे पोताए आ धनपाळने सख्त शिक्षा करवी जोइए बीजी कोइ शिक्षा करवानी जरुर नथी, मात्र तेना बे नेत्रो काढी नाखवा, एटले तेने खरी शिक्षा थशे. " आवुं विचारी मौन धरी राजा पोतानी स्वारी लइने दरबार गढमां आववा नीकळ्यो चौटामां आवता एक वृद्ध डोशी तेने सामी

मळी. तेणीए एक बालिकाना हाथनु अवलंबन लीधु हतु. ते मोशीने जोइ राजाए पोताना पंडितोने कह्यु.

"करकंपावे शिर धुणे, बुढ्ढी कहा कहेह"?

"आ बुढ्ढी हाथ कपावे छे अने मस्तक धुणावे छे, ते उपरथी ते शुं कहेवा मागे छे? ते कहो.

राजानो आ प्रश्न सांभळी एक पंडिते कह्यु.

"हक्कारंता यम जमा, नन्नंकार करेइ ॥१॥"

"यमराजाना सुभटो तेने हणाणी, हणाणी, एम हाकोटा मारे छे, त्यारे ते मस्तक धुणावीने 'ना ना' एम कहे छे एटले यमराजाना सुभटो तेने लेवा हाकोटा मारे छे त्यारे ते मोशी ना पाडे छे.

आ वखते धनपाले कह्यु, "राजेन्द्र, आ मोशी शुं कहे छे? ते सांभळो

कि नंदिः किं मुरारिः किमु रतिरमणः कि नलः किं कुबेरः
किंवा विद्याधरोऽसौ किमथ सुरपति. कि विधु. कि विधाता।
नायं नाय नचायं न खलु नहि नवा नापि नासौ न चैष[1]:
क्रीडा कर्त्तुं प्रवृत्तो यदिह महीतले भूपति भोजदेव· ॥ १ ॥

आ पृथ्वी उपर क्रीडा करवाने प्रवर्तेला भोजराजाने जोइ कोइ बालिका आ वृद्ध मोशीने पुछे छे के, "शु आ नंदि (शंकर) छे? शु आ कृष्ण छे? शु आ कामदेव छे? शु आ नलराजा छे? शु आ कुबेर छे? शु आ विद्याधर छे? शु आ इन्द्र छे? शुं आ चन्द्र के शु आ विधाता छे? ते वखते मोशी ना पाडे छे के, ए सर्वमांथी कोइ नथी, कोइ नथी, कोइ नथी. परंतु ते आ पृथ्वीपट उपर क्रीडा करवाने माटे प्रवृत्त थयेला भोजराजा छे, १

धनपालना मुखथी आ रसिक कविता सांभळी भोजराजा हृदयमां संतुष्ट थइ गयो. तेणे संतुष्ट थइने कह्यु, धनपाल, हु तमारी उपर प्रसन्न थयो छुं, माटे

[1] ते डोशीना मस्तकनु कंपन आवा प्रकारनु अर्थ सूचक छे

जे इच्छा होय ते मागी ल्यो." आ वखते प्रथम सरोवरना वर्णनथी नाखुश थयेला राजाना अभिप्रायने बुद्धिबळथी जाणीने कह्यु, "राजेंद्र, मने बे नेत्रो आपो."

राजा आ वचनो सांभळी अति विस्मय पामी गयो. तेणे पोताना मन मां चिंतव्यु के, "में आ वात कोइने जणावी नथी, ते छतां आ धनपालना जाणवामा शी रीते आवी हशे?

आ उपरथी मने लागे छे के, आ धनपालना हृदयमां कोइ अलौकिक ज्ञान होवु जोइए" आवु चिंतवी ते धनपालनो तेणे अनेक इनामो आपी मोटो सत्कार कर्यो. ते पछी राजाए धनपालने बे नेत्रोना वरदानने माटे पूछी जोयुं, त्यारे धनपाले कह्यु के, "स्वामी, श्री जैनधर्मनी सेवाथी मारामा एवी अलौकिक बुद्धि उत्पन्न थइ छे, तेना बळथी हु ते जाणी शक्यो छु." आ सांभळी राजाभोजनी जैन धर्म उपर श्रद्धा थइ अने तेणे जैन धर्मनी प्रशसा करी हती. पछी धनपाल कवि शुद्ध श्रावक बन्यो हतो. तेणे श्राद्ध धर्म विधि, रुषभपचाशिका वगेरे केटलाएक ग्रथोनी रचना करी आर्हत धर्मनी उन्नति करी हती. श्राद्ध धर्म विधि प्रकरणमा एक नीचे प्रमाणे गाथा लखेली छे

जत्थपुरे जिणभवण समयविऊ साहु सावया जत्थ ।
तत्थ सया वसियव्व पउर जल इंधण जत्थ " ॥१॥

जे नगरमा जिन भवन होय, अवसरने जाणनारा साधुओ अने श्रावको होय अने घणु जल तथा इंधण होय ते नगरमा सदा वास करवो.'

आ प्रकारे जावजीव सुधी छ यतना पाळी सम्यक्त्वादि धर्मने आराधी ते धनपाल अते देवगतिने पाम्यो हतो. एवी रीते यतनाने विषे धनपालनु वृत्तांत कहेवामां आव्यु

छ आगार

आगार छ कहेवाय छे. १ राजाभियोग, २ गणाभियोग, ३ बलाभियोग, ४ देवाभियोग, ५ गुरुनिग्रह अने ६ वृत्तिकातार ए छ आगारोना नाम छे. पोते अणजाणता राजाना हुकमथी करवु पडे ते पेहेलो राजाभियोग कहेवाय छे श्रावकनी इच्छा न होय पण राजानी आज्ञाथी करवु पडे छे एटले

जे क्रियाना करवाना पच्चखाण' कर्यां होय, पण राजाना फरमानथी ते छच्छ्यथी करवी पमे ते पेहेलो आगार छे. तेवा आगारने लइ निषिद्ध क्रिया करवाथी सम्यक्त्वनो नाश गणातो नथी. ते उपर कोशा वेश्यानुं दृष्टांत कहेवाय छे.

कोशा वेश्यानुं दृष्टांत

पाटलीपुर नगरमा कोशा नामे एक वेश्या रहेती हती. तेणीए श्री स्थूलजद्र मुनिनी पासे सम्यक्त्व प्रमुख बार व्रतो ग्रहण करेला हता. एक वखते सनुष्ट थयेला राजाए ते वेश्याने एक रथकारने आपी दीधी. कोशा राजानी आश्रित हती, एटले राजाए तेणीने हुकम कर्यो के, तारे रथकारनी साथे रहेवु. कोशा दृढ श्राविका हती तेथी तेणीने रथकारनी साथे रहेवु पसद पमयु नही, तेम ते अंतःकरणथी पण रथकारने इच्छती नहती. परतु राजाना हुकमथी तेणीने रथकारनी साथे रहेवु पमयु ते पछी कोशा रथकारनी साथे रही तेनी आगल श्री स्थूलजद्र मुनिनी प्रशंसा करती हती. ते आ प्रमाणे प्रशसानो श्लोक बोली हती

" ससारेऽस्मिन् समाकीर्णे बहुभि शिष्टजंतुभि. ।
स्थूलभद्र सम. कोऽपि नान्यः पुरुषसत्तम. ॥ १ ॥ "

" घणा शिष्ट जतुओथी व्याप्त एवा आ ससारमा स्थूलजद्रना जेवो कोइ बीजो उत्तम पुरुष नथी. १ "

स्थूलजद्र मुनिनी आ प्रशसा साजली ते रथकार खुशी थतो हतो.

एक वखते ते रथकार कोशा वेश्याना मनने रजन करवा माटे पोताना घरना बागमा गयो. त्या जइ एक गोखमा बेशी ते पोतानी कला तेणीने बतावता लाग्यो. प्रथम तेणे पोतानु एक बाण आबानी लुब उपर नाख्यु, बीजा बाणथी ते बाणने अने त्रीजा बाणथी बीजा बाणने—एम पोताना हाथ सुधी बाणोनी श्रेणी करी ते आबानी लुबने हाथवमे खेंची लीधी अने ते कोशा वेश्याने आपी, अने तेणीनी सामे जोयु. आ वखते वेश्याए कह्यु, " तमे तमारी चालाकी बतावी त्यारे हवे मारी चालाकी जुवो. पछी तेणीए एक थाळमा सरसवना दाणानो ढगलो कर्यो, तेमा पुष्पोथी आच्छादित करेल सोय मुकी ते

उपर तेणीए नृत्य करवा मांड्यु, पण ते सोयनी अणीथी तेणीना वे पग
धाया नहीं अने सर्षवनो ढगलो जरा पण वीखायो नहीं. कौशल्य आवु
जोइ ते रथकारे कह्यु, वेश्या, तने पूर्ण सावाशी घटे छे. तारु आवु अद्भुत
तुर्य जोइ हु सतुष्ट थयो छु. तारी इच्छा आवे ते मागी ले. हु तने जे मा
आपवा तैयार छु. वेश्या बोली—" रथकार, तु खुशी थयो. पण आमा
कर्यु छे ? अभ्यासथी गमे ते थइ शके छे, अभ्यासनी आगळ काइ पण
नथी तेने माटे कह्यु छे के,

" सुकर नर्तनं मन्ये सुकरं लुविकर्त्तनम् ।
स्थूलभद्रोऽपि यच्चक्रे शिक्षितं तत्तु दुष्करम् ॥ १ ॥

" आवु नृत्य करवु सेहेलु छे अने आम लुब कापवी सुगम छे, एम
मानु छु, पण महामुनि स्थूलभद्र मुनिए जे करी बताव्यु अने शीखव्यु
अति दुष्कर छे. १ "

वेश्याए विशेषमा जणाव्यु के, " शकडाल मत्रीना पुत्र श्री स्थूल
मुनि पूर्वे मारी साथे बार वर्ष सुधी भोगभोगवी पछी पुन चारित्र ग्रहण
अहिंज मारा घरनी चित्रशालामा शील व्रतने पाळी चातुर्मास रह्या हता,
वखते तेमने अनेक जातना भोग्य पदार्थो आपवामा आव्या हता. विकार थव
एकज कारण होय तो ते लोहमय शरीरवाळा पुरुषना व्रतने नाश करनारु
छे तो पछी षड्रस भोजन, चित्रशाळामा निवास, यौवनवय, अने वर्षाऋतु म
विकारना कारणो व्रतने नाश करनारा केम न थाय ? परतु ते बधा कारणो
महामुनि रुप पर्वतने सिंहनी फाळनी जेम क्षोभ पमाडवाने असमर्थ थया ह
ए महानुभाव मुनीश्वरने विषे मारा करेला हावभावो पण जडना मह
अने विरागिणीना हास्यनी जेम निरर्थक थया हता पोताना व्रतनु रक्षण
रवाने इच्छता एवा मनुष्यो जे स्थानमा स्त्री होय, तेनी समीपे एक क्षणमात्र
ण रहेवाने समर्थ नथी, तो श्री स्थूलभद्र मुनि अक्षयव्रत वाळा थइने मारी
मीपे भुवे चातुर्मास्य रह्या हता. तेथी वधारे शु कहेवु ? टुकामा एटलुज कहेव
के, महामुनि स्थूलभद्र मुनिना जेवा अति दुष्कर कार्यना करनार कोइ पण
रुप आ पृथ्वी उपर थयेल नथी "

महानुभाव स्थूलभद्र मुनिनी आवी प्रशंसानुं वर्णन सांभळी ते रथकार हृदयमां प्रतिबोध पामी गयो अने ते कोशा वेश्याने वारंवार नमी स्तुति करवा लाग्यो. स्तुति कर्या पछी तेणे कोशा वेश्याने कह्युं, " भद्रे, तमे मने आ संसार रूप समुद्रमां बुडतो बचाव्यो छे. हुं तमारो हृदयथी आभार मानुं छुं." आटलुं कही ते रथकारे गुरुनी पासे जइने दीक्षा ग्रहण करी हती. पवित्र हृदया कोशा वेश्या पण सम्यक्त्व युक्त थइ चिरकाल पर्यंत श्रावक धर्म पाळी छेवटे सद्गतिनु पात्र बनी हती. एवी रीते राजाभियोग उपर कोशा वेश्यानु दृष्टांत कहेवामां आव्युं.

गणाभियोग

बीजो गणाभियोग छे. गण एटले स्वजनादिकनो समुदाय, तेनो जे अभियोग एटले हुकम ते बीजो गणाभियोग कहेवाय छे. जे कार्य सम्यक्त्ववतने करवु अयोग्य होय पण कदि ते स्वजन समुदायना आग्रहथी करवु पडे एटले द्रव्यथी करवु पडे भावथी नहीं, पण तेथी करीने सम्यग्दृष्टिने धर्मनु उल्लंघन थतु नथी. ते उपर विष्णु कुमार प्रमुखनु दृष्टांत प्रसिद्ध छे. विष्णु कुमारे गच्छना आग्रहवाळा आदेशथी वैक्रिय लब्धिवडे रूप (आकार)नी रचना करी जिनमतना पराद्वेषी नमुचि नामना पुरोहितने पोताना चरणना प्रहारवडे मारी सातमी नरक भूमिनो अतिथि कर्यो हतो. पछी ते विष्णु कुमार मुनि ते पापनी आलोयणा करी पोताना सम्यक्त्वादि धर्मने आराधी उत्कृष्ट सुखने प्राप्त थया हता एवी रीते आगळ पण भावना पूर्वक उदाहरणो जोडीने वांची लेवा.

३ बलाभियोग

बल एटले पराक्रम—हठ प्रयोग, तेवडे बलात्कार करी अभियोग (हुकम) करवो, ते त्रीजो बलाभियोग कहेवाय छे. एटले सम्यक्त्व व्रतनी पासे काइ बलवान् पुरुष पोताना बलथी अनुचित कार्य करावे, ते बलाभियोग कहेवाय छे. तेवा बलाभियोगथी जो सम्यग् दृष्टि पुरुष धर्मनु उल्लंघन करे तो ते दूषित गणातो नथी.

४ देवाभियोग

कुल देवता वगेरेना अभियोगथी काइ पण धर्म विरुद्ध कार्य करवु पडे ते चोथो देवाभियोग कहेवाय छे. तेवा देवना बलात्कारथी काइ पण धर्मनु अतिक्रमण करनार पुरुष दूषित थतो नथी. कारण के, देवता पोतानी शक्तिथी अनेक जातनी हेरानगति करी शके छे, माटे ते देवाभियोग आगारमा गणाय छे.

५ कांतार वृत्ति

कांतार एटले जगल, तेने विषे वर्त्तवु, अर्थात् जगलमा निर्वाह करवो ते कांतार वृत्ति कहेवाय छे. कांतार—जगल पीडानो हेतु होवाथी तेनी अहि विवक्षा करेली छे. जेम जगलमा रहेवु पीडाकारी छे, तेम तेवी रीते निर्वाह करवो ते पीडाकारी छे. तेवा कारणथी धर्मनु उल्लघन थाय, तो ते निर्दोष छे

६ गुरु निग्रह

गुरु एटले माता पिता प्रमुख वडिलो, तेमनो निग्रह एटले तेमना आग्रहथी कबजे रहेवु पडे ते गुरु निग्रह कहेवाय छे. गुरु—वडिलो कया कया कहेवाय ? तेने माटे शास्त्रमा कह्यु छे के,

"माता पिता कलाचार्य एतेषा ज्ञातयस्तथा ।
वृद्धा धर्मोपदेष्टारो गुरुवर्ग सतामत ॥ १ ॥"

माता, पिता, कलाचार्य अने तेमना कुटुंबीओ, वृद्ध अने धर्मनो उपदेश करनारा—ए सर्व गुरु वर्ग कहेवाय छे एम सत्पुरुषोए मानेलु छे ?

कदि कोइ वडिलना आग्रहथी धर्मनो अतिक्रम करवो पडे तो ते जिन शास्त्रमा आगार कहेल छे. एटले अपवाद कहेल छे. तेवा धर्मना उल्लघनथी दोषित थइ शकातु नथी

आ प्रकारे जेणे सम्यक्त्व मूल बार व्रत अगीकार करेला छे, एवा प्राणीओने जे परतीर्थि वगेरेनु वदन प्रमुख निषेध्यु छे, छता राजा भियोग वगेरे छ

कारणोने लइने ते जक्ति रहित द्रव्यथी आराधे तो पण ते सम्यग् दृष्टि होवाथी पोताना सम्यक्त्वनु उल्लंघन करता नथी, एम जाणवु. आ छ आगारो–अपवादो जे अल्प सत्त्व वाला छे, तेमने माटे कहेला छे परतु जेओ महा सत्त्ववंत छे तेमने माटे तो आ प्रमाणे कहेलु छे.

" न चलति महा सत्ता सुन्निज्जमाणाओ सुद्ध धम्माओ ।
इयरेसि चलणजावे पइन्नजंगो न एएहिं ॥ १ ॥

महासत्त्ववाला पुरुषो जो तेमना शुध्ध धर्मने कोइ जेदवा आवे तो पण तेओ चलायमान थता नथी. अने जेओ अल्पसत्त्ववाला छे, तेओ कदि चलायमान थाय तो ते स्वजावने लइने तेमनी प्रतिज्ञानो जंग थतो नथी. "

ते उपर टीकाकार लखे छे के, " महासत्त्ववत पुरुषो कदि कोइ राजादि तेमने तेमना धर्मथी चलित करवा तत्पर थाय तो पण तेओ मोटा सत्त्ववाला होवाथी चलित थता नथी. पण जेओ अल्प सत्त्ववाला छे, तेओ चलित थवाना स्वजाववाला छे, एटले तेओ राजादिकना अजियोगना कारणथी चलायमान थइ जाय छे, तेथी तेमने माटे आछ आगार कहेला छे, तेथी करीने तेमनी प्रतिज्ञानो जंग थतो नथी.

छ जावना

हवे छ जावनानी व्याख्या करे छे. ए छ जावना जाववाथी सम्यक्त्व दृढ थाय छे.

पेहेली भावना

आ सम्यक्त्व पांच अणुव्रत, त्रण गुणव्रत, अने चार शिक्षाव्रत–ए बार व्रतोनु अने पचमहाव्रत रुप चारित्रनुं मूल कारण छे, एम श्री तीर्थंकरोए तथा गणधरादिकोए कहेलु छे जेम मूल वगरनु वृक्ष तीव्र पवनथी कंपायमान थइ पडी जाय छे, तेम सम्यक्त्व रुप मूलवालु धर्म रुपी वृक्ष के जे अति दृढ अने मजबूत छे, ते धर्म वृक्ष सम्यक्त्व रहित होय तो कुतीर्थ—कुमत रुपी तीव्र-पवनथी चलायमान थइ जाय छे, ते स्थिरताने पामतु नथी; तेथी सम्यक्त्वने धर्म- वृ-

कहेलु मूल कहेलु छे. जो मूल दृढ होय तो वृक्षने कोइ जातिनी हानि थती नथी. ए पेहेली भावना जाणवी.

बीजी भावना

आ सम्यक्त्व धर्मरुप नगरमा प्रवेश करवानु द्वाररुप छे, जेम नगर चारे तरफ दृढ किल्लावालु होय, पण जो तेने दरवाजो न होय तो ते नकामु गणाय छे. कारण के, लोकोने निर्गम अने प्रवेश करवानो तेमां अभाव छे. तेवी रीते धर्म रुपी नगर जो सम्यक्त्वरुप द्वारथी रहित होय तो ते तद्दन नकामु छे. तेमां प्रवेश करवो अशक्य छे, माटे सम्यक्त्वने धर्मरुप नगरना द्वार तुल्य कहेलु छे.

त्रीजी भावना

आ सम्यक्त्व धर्मरुपी प्रासादनु प्रतिष्ठान एटले पायारुप छे, जेनी उपर प्रासादनी प्रतिष्ठा कराय ते प्रतिष्ठान कहेवाय छे. जो पायो मजबुत होय तो प्रासाद मजबुत रहे छे, अने पायो मजबुत न होय तो प्रासाद दृढ रहेतो नथी, ते भग-मगे छे. तेथी धर्म रुपी प्रासाद सम्यक्त्व रुप पायाथी मजबूत रहे छे.

चोथी भावना

आ सम्यक्त्व धर्म रुपी जगत्ना आधार भूत छे. जेम आ जगत् पृथ्वी तलना आधार विना रही शके नहीं, तेम धर्म रुपी जगत् सम्यक्त्व रुप आधार विना रही शकतु नथी.

पांचमी भावना

सम्यक्त्व ए धर्मने रहेवानु पात्र रुप छे. जेम कुंभी वगेरे पात्र विना क्षीर प्रमुख पदार्थो रही शकता नथी, तेओ विनाश पामी जाय छे, तेम सम्यक्त्व रुप पात्र विना धर्म रुप वस्तुनो समूह विनाश पामी जाय छे, माटे सम्यक्त्वने पात्र कहेलु छे.

छठी भावना

सम्यक्त्व ए धर्मनु निधान-भंडार रुप छे.जेम निधान वगर बहु मूल्यवाला मोती, मणि, सुवर्ण वगेरे द्रव्य प्राप्त करी शकाता नथी, तेम सम्यक्त्व रुप मोटा निधान

विना निरुपम सुखने आपनार चारित्र रुप धर्मरत्न प्राप्त करी शकातु नथी, तेथी ते सम्यक्त्वने निधाननी उपमा आपेली छे.

आ प्रमाणे छ ज्ञावना वमे ज्ञावेलु एवु सम्यक्त्व मोक्षना सुखनुं साधक बने छे.

छ स्थानक

जे छ स्थानकने यथार्थ रीते धारे ते सम्यक्त्वने संपादन करी शके छे. ते छ स्थानक आ प्रमाणे छे.

१ अस्ति जीवः। २ स च नित्यः। ३ स पुनः कर्माणि करोति। ४ कृतं च वेदयति। निर्वाणमस्ति अस्य जीवस्य। ६ अस्ति पुनर्मोक्षोपायः।

१ अस्तिजीवः। जीव विद्यमान छे. प्रत्येक प्राणीओने पोताना संवेदन अनुज्ञव प्रमाणे सिध्ध चैतन्यनी अन्यथापणानी अप्राप्ति छे एटले पोताना आत्माना अनुज्ञवथी बीजा आत्मानी अंदर जणाती जीवपणानी प्राप्ति छे. आ जे चैतन्य छे, ते ज्ञूतोनो धर्म नथी पण जीवनो धर्म—स्वज्ञाव छे जो ते ज्ञूतोनो स्वज्ञाव होय तो ते चैतन्यनी सर्व स्थाने अने सर्व काले प्राप्तिनो प्रसंग आवे. जेम पृथ्वी भूतमा कठिनता छे, तेम चैतन्यमा नथी ते उपरथी सर्व ज्ञूतोमा सर्व काले चैतन्यनी प्राप्ति थती नथी. मुरुना देहमा तथा मुरुदामा पण चैतन्यनी अप्राप्ति छे, माटे चैतन्य ज्ञूतोनु पण कार्य नथी. तेनामा अत्यंत विलक्षणपणु होवाथी चैतन्यने तेना कार्य कारण ज्ञावनी पण अप्राप्ति छे. कठिनतादि स्वज्ञाववाला भूतो प्रत्यक्ष प्रतीत थाय छे अने चैतन्यतो तेनाथी विलक्षण छे, तेथी चैतन्य अने ज्ञूतोनो कार्य कारण ज्ञाव शी रीते घटे? तेम चैतन्य ज्ञूतोनो धर्म पण नथी तेम कार्य पण नथी. तेथी प्रत्येक प्राणीने स्वसंवेदन (स्वानुज्ञव) प्रमाणे जीव छे, ए वात सिध्ध थाय छे. जेनु आ चैतन्य ते जीव छे, आथी नास्तिक मत परास्त थइ जाय छे.

२ सच नित्यः। ते जीव नित्य छे. एटले उत्पत्ति तथा नाशथी रहित छे. कारण के तेने उत्पन्न करवाना कारणोनो अज्ञाव छे, तेमज सर्व प्रकारे तेनामा विनाशपणानो स्वज्ञाव नथी, तेथी ते नित्य छे. जो अनित्य होय तो बंध मोक्षनु एकाधिकरणपणु न थाय. ते विषे कहे छे. जो जीव—आत्माने नित्य न मा-

"दीपो यथा निर्वृतिमभ्युपेतो नैवावनिं गच्छति नांतरीक्षम् ।
दिशं न काञ्चिद्विदिशं न काञ्चित् स्नेहक्षयात्केवलमेति शांतिम् ॥१॥
जीवस्तथा निर्वृतिमभ्युपेतो नैवावनिं गच्छतिनांतरीक्षम् ।
दिशं न काञ्चिद्विदिशं न काञ्चित् क्लेशक्षयात्केवलमेति शांतिम् ॥२॥

"दीपक निर्वाण (बुझावपणा) ने प्राप्त थता ते पृथ्वीमा, अंतरीक्ष-आकाशमा, दिशा अने विदिशामा चाल्यो जतो नथी, पण केवल स्नेह (तेल) नो क्षय थवाथी ते शांतिने पामे छे. तवी रीते जीवपण निवृत्ति (निर्वाण) ने प्राप्त थता पृथ्वी, आकाश, दिशा के विदिशामा जतो रहेतो नथी, पण केवल क्लेशनो क्षय थवाथी ते शांतिने पामे छे. १—२

आ सौगतनो मत तद्दन अयुक्त छे, कारण के जो तेम होय तो चारित्र लेवा वगेरे प्रयास निरर्थक थाय छे. वळी तेमा आपेलु दीपकनु दृष्टांत पण घटतु नथी, कारण के दीपकनी अग्निनो सर्वथा विनाशज नथी. ते तो तेवी जातिना पुद्गलना परिणामनी विचित्रता छे, एटले अग्निना पुद्गलो पोताना देदीप्यमान रूपनो त्याग करी अंधकारना रूपांतरने पामे छे, तेम दीवो बुझाइ जता केटलोएक काल अंधकारना पुद्गल रुप विकार प्राप्त थाय छे, ते पुनः चिरकाले तरतज प्राप्त करातो नथी, ते आजणना रजनी पेठे सूक्ष्म अने सूक्ष्मतर परिणामना सद्भावथी प्राप्त करवामा आवतो नथी, अहीं आपेला अंजनना रजनु दृष्टांत आ प्रमाणे छे.—जेम अंजननी काली रज पवने करी हरातो उडी जाय छे, ते परिणामनी सूक्ष्मताथी पमातो नथी, ते छता ते असत् नथी तेनु छतापणु छे, ते उपरथी सिद्ध थयु के, जेम आतरा रहित कहेलु स्वरूप परिणामांतरने पामी दीपकनो निर्वाण कहेवाय छे, तेम जीव पण कर्म रहित थइ केवल अमूर्त्त जीव स्वरूप लक्षण रुप परिणामांतरने प्राप्त थयो तेनो निर्वाण कहेवाय छे. तेथी दुःखादिक्षयरूपवाली छती एवी जीवनी अवस्था तेज तेनो निर्वाण मोक्ष छे.

६ अस्ति पुनर्मोक्षोपायः । जीवने मोक्ष मेळववानो उपाय छे. एटले सम्यग् ज्ञान, दर्शन तथा चारित्र मोक्षना साधक होवाथी ते तेना उपाय रुप छे.

ते आ प्रमाणे—मिथ्यात्व, अज्ञान, जीव हिंसादिक दुष्ट हेतुओनो समुदाय सर्व कर्मोना जालने उत्पन्न करवाने समर्थ छे अने तेना विरोधी रुप सम्यग् दर्शनादिकनो अभ्यास सकल कर्मोने निर्मूल करवा समर्थ छे, ते आ प्रमाणे, मिथ्यादृष्टि वमे करेलो जे उपाय, ते मुक्तिनो साधक थशे, एम कहेवु तथा मिथ्यात्वीनो करेलो उपाय हिंसादिक दोषवमे पाप वालो होवाथी संसारनु कारणपणुं छे, आ उपरथी मोक्षना उपायना अभावने प्रतिपादन करनार कणादमतनो तिरस्कार करवामा आव्यो छे. एवी रीते जीवना अस्तित्व वगेरे छ स्थानको सम्यक्त्वना कहेला छे. जेना आत्माने विषे ए छ स्थानकनी प्रतीति छे, तेने सम्यक्त्व होय छे. अहि प्रत्येक स्थानके आत्मादिकनी सिद्धिने माटे घणु कहेवानुं छे, पण ग्रंथनी गहनता थइ जवाना भयथी ते कहेवामा आव्यु नथी.

एवी रीते सप्तसठ भेदथी सम्यक्त्वने कह्युं छे. ए सप्तसठ भेदथी युक्त एवा सम्यक्त्वने आराधवाथी भव्य आत्मा मोक्ष मार्गनो अधिकारी बने छे. वली अहिं जे भव्य प्राणीओ वस्तुमात्रना प्रमाणनी सिद्धिमा परस्पर सापेक्ष कालादिक पांचने कारणपणे प्रमाण करे छे, तेने तेवा प्रकारना सम्यक्त्व रत्ननु स्वामिपणु प्राप्त थाय छे, बीजा एकांतवादीओने थतु नथी. तेने माटे कह्यु छे के,

" कालो सहाव नियइ पुव्वकयं पुरिसकारणे पंच ।
समवाए सम्मत्त, एगंते होइ मिच्छत्तं ॥ १ ॥

काल, स्वभाव, नियति, पूर्वकृतकर्म, अने पुरुषकार (पुरुषार्थ) ए पांच कारण माने तेने सम्यक्त्व होय छे अने तेमा जे एकांत माने तेने मिथ्यात्व होय छे. १

इत्थं स्वरूपं परमात्मरूप निरूपक चित्रगुणं पवित्रम् ।
सम्यक्त्वरत्नं परिगृह्य भव्या भजंतु दिव्य सुखमक्षयं च ॥ १ ॥

आवी रीते पूर्वे कहेला स्वरूपवानु, परमात्माना रूपने प्ररूपण करनारु अने विचित्र रूपवालु सम्यक्त्व रत्न ग्रहण करीने हे भव्य पुरुषो, तमे दिव्य अने अक्षय सुखने भजो. १

" प्रवचनसारोद्धारा–द्यनु सारेणैष वर्णितो मयका ।
सम्यक्त्वस्य विचारो निजपरचेतः प्रसत्तिकृते ॥ २ ॥

पोताना अने बीजाना चित्तनी प्रसन्नताने माटे प्रवचन सारोद्धार वगेरे ग्रथोने अनुसारे में आ सम्यक्त्वनो विचार वर्णन करेलो छे. २ "

इति श्री जिनभक्त सूरीन्द्रना चरणकमलने विषे भ्रमर तुल्य एवा श्री जिनलाभ सूरिए संग्रह करेल आ आत्मबोध ग्रंथनो सम्यक्त्व निर्णय नामनो प्रथम प्रकाश समाप्त थयो.

इति प्रथम प्रकाश. ।



अथ द्वितीय प्रकाश.

(देशविरति.)



बीजा देशविरति प्रकाशमा जेनु स्वरूप प्रथम कहेवामा आव्यु छे, एवो सम्यक्त्वमूल आत्मबोध प्रकट थवाथी केटलाएक आसन्न भव्यजीवोना चारित्र मोहनीय कर्मनो क्षय अथवा उपशम थवाथी तेमने देशविरति आदि लाभनी प्राप्ति थाय छे, ते बतावे छे.

" सदात्मबोधेन विशुद्धिभाजो भव्याहि केचित्स्फुरितात्मवीर्याः।
भजति सार्वोदित शुद्धधर्म देशेन सर्वेण च केचिदार्या. ॥१॥

निरतर आत्मबोध वडे विशुद्धिने प्राप्त थएला केटलाएक भव्य प्राणीओ पोताना वीर्यने देशथी अने केटलाएक सर्वथी फोरवी सर्वज्ञ प्रभुए कहेला शुद्ध धर्मने भजे छे १ "

कहेवानो आशय एवो छे के, केटलाएक सर्वज्ञ प्रणीत निरतिलक्षण शुद्ध धर्मने देशथी भजे छे अने केटलाएक सर्वथी एटले सर्व विरति भावने भजे छे. तेमा प्रथम देशविरति पामवानु स्वरूप प्रगट करे छे. आ ससारने विषे बीजा कषायनी चोकडीनो क्षय अथवा उपशम थता मनुष्य, अने तिर्यचो सम्यक्त्व युक्त शरीर वडे जे देशविरति प्राप्त करे छे, तेनी शुद्ध व्याख्या करवामा आवे छे. देश एटले कोइ भाग ते वडे प्राणातिपातादि पाप स्थानकोथी निवृत्त थवु-पाछा हठवुं, ते देशविरति कहेवाय छे. ते निर्मल देशविरतिपणु बीजा अप्रत्याख्यान क्रोध, मान, माया अने लोभ लक्षणरूप चार कषाय क्षीण अथवा उपशात थतां आ ससारने विषे सम्यक्त्व युक्त एवा मनुष्य तथा तिर्यचरमे प्राप्त करी शकाय छे, ते शिवाय बीजाथी पमातु नथी. कारणके,देवता अने नारकीओने ए देशविरतिनी प्राप्तिनो

असंभव छे. तेथी आहिं तेमनु ग्रहण करवामा आव्यु नथी वली सम्यक्त्वनी प्राप्तिने समये रहेली कर्मनी स्थिति म येथी पल्योपम पृथक्त्व लक्षणरूप स्थितिनो क्षय थवाथी देशविरति प्राप्त थाय छे. तेने माटे प्रवचन सारोद्धार ग्रथना २४०मा द्वारमां आ प्रमाणे कहेलु छे.

"सम्मत्तमियलद्धे पलिय पुहुत्तेण सावओ होइ।
चरणोवसमखायाणं सायर सखतरा हुति ॥ १ ॥"

जेटली कर्मनी स्थितिमा सम्यक्त्व पामवापणु छे तेमाथी पल्योपम पृथक्त्व कालनी स्थिति खपावता श्रावक थाय छे अने सख्याता सागरोपमे उपशम चारित्र अथवा क्षायिक चारित्र पामे छे, एटले देशविरति पाम्या पछी सख्याता सागरोपमे चारित्र पामे, ते पछी सख्याता सागरोपमे उपशम श्रेणीने पामे, ते पछी सख्या ता सागरोपम जता क्षपकश्रेणी पामे अने ते पछी तेज भवमा मोक्ष थाय छे.

ए प्रकारे देशविरतिने रहेवानो काल जघन्यथी अंतर्मुहूर्त्तनो छे अने उत्कृष्टथी देशे उणा पूर्व कोटीनो छे, एवा प्रकारनी देशविरति जेने विद्यमान छे, ते देशविरति श्रावक कहेवाय छे ते श्रावकने बे प्रकारना कहेला छे विरता अने अविरता. जेमणे देशविरतिपणु अगीकार करेलु छे, ते आनदादिक श्रावकोनी पेठे विरता श्रावको कहेवाय छे अने जेमणे क्षायिक सम्यकत्व अगीकार करेलु छे, ते अविरता कहेवाय छे. सत्यकि विद्याधर, श्रेणिक तथा कृष्ण वगेरे अविरता श्रावको हता.

आ बीजा देशविरति प्रकाशने विषे जेमणे देशविरतिपणु अगीकार क- रेलुं छे, एवा श्रावकोनु स्वरूप कहेवामा आवे छे. तेनु निरूपण करवा माटे प्रथम श्रावकनी योग्यताने दर्शावनारा तेना एकवीश गुणो कहे छे

"धम्मरयणस्स जुग्गो अखुद्दो रूववपगइ सोमो।
लोगप्पिओ अकूरो भीरु असठो सदक्खिन्नो ॥ १ ॥
लज्जालुओ दयालू, मझत्थो सोमदिट्ठि गुणरागी।
सक्कह सुपरकजुत्तो सुदीहदस्सी विसेसन्नू ॥ २ ॥

वुड्ढाणगोविणीओ, कयन्नुओ परहियत्थ कारीय ।
तह चेव लद्ध लक्को इगवीस गुणो हवइ सढ्ढो ॥ ३ ॥"

१ धर्म रूप रत्न ने योग्य, एवो श्रावक अक्षुद्र एटले ऊची जातनो अर्थात् सुखे करीने धर्मने जाणनार.

२ रूपवान् एटले संपूर्ण अंग उपांगवाळो, मनोहर, सौम्य एटले सदाचारनी प्रवृत्ति वडे अन्य लोकोने धर्मने विषे गौरवपणु उपजावनारो. अहीं कोइ प्रश्न करे के, नंदिषेण, हरिकेशी प्रमुख कुरूपवाळा हता, तेओमा पण धर्मनी प्राप्ति सांभळवामा आवे छे. अने तमे तो रूपवानने ज धर्मना अधिकारी कहो छो, तेनु शुं कारण?" तेना उत्तरमा कहे छे के, "रूप बे प्रकारनु छे एक सामान्य रूप अने बीजु अतिशयवाळु रूप तेमा जे संपूर्ण अंगोपांगवाळु रूप के जे नंदिषेण ने हतुं, ते सामान्य रूप समजवु. अने जे केवळ शेष सद्गुण सद्भावे कुरूपपणु छे, ते काइ पण दोषवाळु गणातु नथी. तेम अतिशायी रूप तो जो के तीर्थंकरादिकनुज संभवे छे तोपण जे रूपे करीने कोइ देशमा अने कोइ काळे अने हरेक वयने विषे वर्तती एवो पुरुष 'आ रूपवान् छे' एम लोकोने प्रतीति उत्पन्न करे छे, तेज अहीं अधिकारी जाणवो एटले ते अतिशय रूपमा तेवा श्रावकोने शास्त्रकारे गण्या छे, एम जाणवु

३ वळी प्रकृति सौम्य एटले स्वभावे करीने सौम्य-शीतळ आकृतिवाळो भयंकर आकृतिवाळो नही. तेवो सौम्य प्रकृतिवाळो विश्वास करवा लायक होय छे एवा प्रकारना जीवो घणु करीने पापव्यापारमा प्रवर्तता नथी अने तेओ सुखे करी आश्रय करवा योग्य होय छे.

४ लोकप्रिय आलोक तथा परलोक संबंधी विरुद्ध कार्योने वर्जवाथी अने दान शीलादिगुणे करीने सर्व लोकोने प्रिय होय छे. एवो लोकप्रिय श्रावक सर्व प्राणीओने धर्म तरफ बहुमान उत्पन्न करावे छे.

५ अक्रूर-एटले क्लिष्ट अध्यवसायवाळो न होय. जे क्रूर होय ते परना छिद्राने जोवामा लंपट होय छे, तेथी तेनुं मन कलुषित रहे छे. माटे ते धर्मनु अनुष्ठान आचरतो होय तोपण ते धर्मना आचरणना फळने मेळवी शकतो नथी.

तेथी अक्रूरपणु राखवु युक्त छे

६ भीरु एटले आलोक तथा परलोकना कष्टोथी भय पामनार शील-वाळो जे भीरु होय ते निःशंकपणाथी अधर्ममा प्रवर्ततो नथी.

७ अशठ–एटले निष्कपट आचारने विषे रहेनार. शाठ्यपणाथी वचन, प्रपचना चातुर्य वगेरे सर्व लोकोने अविश्वासनु कारण थाय छे, तेथी अशठपणुज राखवु युक्त छ.

८ सदाक्षिण्य—एटले दाक्षिण्यताथी युक्त पोतानु कार्य छोडीने पर कार्य करवामा रसिक हृदयवाळो एवो पुरुष सर्व लोकोने माननीय होय छे.

९ लज्जालु–प्राकृत शरीरवगेरे लज्जावाळो ते अकृत्य सेवननी वार्ताथीज लज्जा पामी जाय छे अने लज्जाने लइने पोते अगीकार करेला सत् अनुष्ठाननो ते कदि पण त्याग करी शकतो नथी

१० दयालु–एटले दुःखी प्राणीओनु रक्षण करवानो अभिलाषी. धर्म रूपी वृक्षनु मूल दयाज छे.

११ मध्यस्थ, रागद्वेष रहित बुद्धिवाळो, एटले सर्व ठेकाणे रागद्वेष रहित रहेनारो तेवा पुरुषनु वचन सर्व जगत्‌ने ग्रहण करवा योग्य थाय छे.

१२ सौम्यदृष्टि–कोइने उद्वेग नहीं करनार. जेना दर्शन मात्रथी प्राणीओने प्रीति उत्पन्न थाय छे

१३ गुणरागी–गाम्भीर्य, स्थैर्य प्रमुख गुणोने विषे राग–प्रीतिवाळो ते ते गुणोनो पक्षपाती होवाथी सद्‌गुणोने बहु प्रकारे अगीकार करे छे अने निर्गुणो–अवगुणो तरफ उपेक्षा करे छे

१४ सत्कथ–सुपक्षयुक्त=सदाचारनो धारक होवाथी सद्‌वृत्तिना कहेनारा जे सहायो ते वगेरे युक्त तथी ते कोइ पर तीर्थिओथी उन्मार्गे लइ जइ शकातो नथी अहिं कोइ आचार्य सत्कथ अने सुपक्ष युक्त–एवा बे जुदा गुणो गणे छे

१५ सुदीर्घदर्शी–लाबा विचार करी सुदर परिणाम वगेरे कार्य करनार, साहसथी के उतावळथी कार्य नहीं करनार ते निश्चयथी पारिणामिकी बुद्धि वगेरे आ लोकमा सारा परिणामवाळा कार्योनो आरम्भ करे छे.

१६ विशेषज्ञ—सारासार वस्तुना विज्ञागने जाणनार, ते विशेषज्ञ कहेवाय छे. जे विशेषज्ञ न होय ते दोषने गुणपणे अने गुणने दोषपणे अंगीकार करे छे, तेथी विशेषज्ञ पण घणुज शोजनिक छे.

१७ वृद्धानुग—वृद्ध पुरुषोनी परिपक्व बुद्धिने अनुसारे चालनार. एटले गुण उपार्जन करवानी बुद्धिए वृद्धोने सेवनार. वृद्धोना वचनने अनुसरी चालनारो पुरुष कदिपण आपत्तिने पामतो नथी. ते संपत्तिनेज पामे छे. तेने माटे शास्त्रकार आ प्रमाणे लखे छे.

" वृद्धवाक्यं सदामान्य, प्रायश्च सुगुणैर्नरैः ।
पश्यहंसावने वद्धा, वृद्धवाक्येन मोचिताः ॥ १ ॥"

गुणी पुरुषोए सर्वदा प्राये करी वृद्धना वचनने मानवुं. वनमा बंधाएला हंसो वृद्धना वचनथी मुक्त थया हता. १

१८ विनीत—विनयवालो. महान् पुरुषोनो विनय करनार. विनयथी तत्काल ज्ञानादिकनी संपत्ति प्रकट थाय छे.

१९ कृतज्ञ—करेलाने जाणनार–कदर जाण. ते बीजाए करेल आ लोक संबंधी उपकारने जाणे छे. तेने गोपवतो नथी. परोपकार गोपववाथी कृतघ्न थवाय छे. अने तेथी सर्वत्र निंदा पात्र बने छे. तेथी कृतज्ञ थवुं युक्त छे.

२० परहितार्थकारी—बीजाना हितने करनारा अर्थोने साधनार. अहीं कोइ शंका करे के, प्रथम सदाक्षिण्य ए गुणथी परहितकारीपणुं आवी जाय छे, तो पछी आ बीजी वार ते गुण शामाटे कह्यो ? ते बनेमा शो तफावत छे ? तेना उत्तरमा कहेवानुं के, सदाक्षिण्य ए दाक्षिण्यता करवानो गुण छे, पण ते बीजानी प्रार्थना करवाथी करवामा आवे छे अने आ परहितार्थकारीनो गुण तो स्वजावथीज छे. ते पुरुष प्रार्थना कर्या विना स्वजावथीज परहित करवामा प्रवर्त्ते छे. तेथी ते निरिच्छकचित्तपणे बीजाओने उत्तम धर्मने विषे स्थापित करे छे.

२१ लब्धलक्ष—शीखवा योग्य आचरण उपर लक्ष आपनार–पामनार. जाणे पूर्वे जवे तेणे अन्यास कर्या होय, तेम ते अनुष्ठानने जाणे छे. तेवा श्रावकने वंदन तथा प्रतिक्रमणादिक धर्म कृत्य सत्वर प्राप्त थाय छे

आ प्रमाणे एकवीश गुणोथी युक्त एवो श्रावक होवो जोइए उपर कहेला एकवीश गुणवाळा भव्य श्रावकने विषे देशविरतिपणानी योग्यता आवे छे. तेने माटे कह्यु छे के,

" जे न खमति परीसह, जयसयाण सिणेह विसय ओभेहि ।
सव्वविरइ धरेउ, ते जुग्गा देस विरइए " ॥ १ ॥

" जे प्रत्याख्यानावरणी कषायना उदयवाळा जीवो परिषह जय,' स्व जन स्नेह, अने विषय लोभना कारणे वडे सर्व विरति धारण करवाने समर्थ नथी, तेओ देशविरतिने योग्य होय छे. " १

अहिं कहेवानु तात्पर्य ए छे के, उत्तम धर्मनी सामग्री प्राप्त करी विवेकी पुरुषोए प्रथमथी सर्व विरतिनो आदर करवो पण जेओ क्षुधा, तृषा, भिक्षाने सहन करवा तथा मल धारणादिक परिषहोने समवा धीर छे, तेमज अत्यत प्रीतिपात्र एवा माता पिता, स्त्री, पुत्रादि स्वजनोनो त्याग करी एकाकी रहेवाने असमर्थ छे, अने पर्वना पुण्ययोगे प्राप्त करेला इन्द्रियोना विषयोने छोडवा अशक्त छे, तेओने सर्व विरति करवाने उत्साह करती नथी. " सर्व प्राणीओ भ्रष्ट न थाओ, सर्वनो नाश थता जेवो तेवो लाभ मळे ते पण श्रेयकारी छे " एम चितवी तेमणे देशविरतिनो अगीकार करवो जोइए जो उपर कहेला स्वरूपवाळा प्रतिबधक कारणोनो अभाव होय तो सर्व विरति अगीकार करवी उत्तम छे तेने माटे आवश्यक चूर्णीमा कह्यु छे के,

" विसयसुह पिवासाए, अहवा बधवजणाणुराएण ।
अचयतो बावीस परिसहे दुस्सहे सहिउ ॥ १ ॥
जइ न करेइ विसुध्द सम्म अइदुक्कर तवचरण ।
तो कुज्जा गिहिधम्म नयवजो होइ धम्मस्स " ॥ २ ॥

" जे विषयनी तृष्णाथी, अथवा स्वजनना अनुरागथी बावीश परिषहोने सहन करवाने समर्थ न थइ शके तेमज शुद्ध चारित्रने न आचरी शके अने अति दुष्कर तपने न करी शके तो तणे गृहस्थ धर्मने आदरवो, जेथी ते धर्म वर्जनिक न थाय १-२

आवा देशविरतिने अंगीकार करनारा श्रावको जघन्य,मध्यम अने उत्कृष्ट एम त्रण प्रकारना छे.तेने माटे कह्यु छे के

" आउट्टि थूलहिंसाइ मज्जामंसाइं चाउओ ।
जहन्नो सावओ वुत्तो जो नमुक्कारधारओ ॥ १ ॥
धम्मजुग्गगुणाइन्नो छक्कम्मो बारसव्वओ ।
गिहत्थो सुत्तायारो सावओ होइ मज्झिमो ॥ २ ॥
उक्कोसेणं तु सड्ढो उ सचित्ताहार वज्जिओ ।
एकासणगभोइय बंभयारीतहेवय ॥ ३ ॥"

" जे श्रावक प्रयोजन विना स्थूल हिंसादि करे नहीं, मद्य, मांसादिक अभक्ष्य वस्तुनो त्याग करे, नमस्काररूप महा मंत्रने धारण करे अने दररोज नवकारसीनु पच्चखाण करे ते जघन्य देशविरति श्रावक कहेवाय छे. जे श्रावक धर्मने योग्य एवा गुणोथी युक्त होय छे,निरंतर छ आवश्यकने आचरे छे अने बार व्रतने अंगीकार करे छे ते सदाचारवान् गृहस्थ मध्यम श्रावक कहेवाय छे. जे श्रावक सर्वदा सचित्त आहारने वर्जे छे, निरंतर एकासणादिक करे छे, अने ब्रह्मचर्यने पाळे छे ते उत्कृष्ट श्रावक कहेवाय छे."

"हवे बार व्रतरूप लक्षणवाळु देशविरतिनु स्वरूप निरूपण करवाने प्रथम ते बार व्रतना नाम आपे छे."

१ प्राणिवध, २ मृषावाद, ३ अदत्तादान, ४ मैथुन, ५ परिग्रह, थकी स्थूलपणे विरमणरूप पांच अणुव्रत तथा ६ दिशिपरिमाण, ७ भोगोप भोगमान, ८ अनर्थदंड विरमण-ए त्रण गुणव्रत तथा ९ सामायिक, १० देशावकाशिक ११ पोषध अने १२ अतिथि संविभाग ए चार शिक्षाव्रत-ए सर्व मळी बारव्रत कहेवाय छे. कह्यु छे के,

" [१]पाणिवह [२]मुसावाए [३]अदत्त [४]मेहूण [५]परिग्गहे चेव ।
[६]दिसि [७]भोग [८]दंड [९]समइ [१०]देसे [११]तहपोसह [१२]विभागो॥१।

अहीं आ प्रमाणे भावता सम्यक्त्वना लाभ पछी गृहस्थ प्राणातिपातादिना आरंभनी निवृत्तिथी सद्गति पामवारूप गुणोने जाणता सता वारव्रत ग्रहण करे छे. ते वारव्रतमा सर्व सारभूत प्राणीवधनी निवृत्ति छे, तेथी तेने जैन शासनमां प्रथम कहेलुं छे. प्राणीओना वधथी विरमवु, ते प्राणिवध विरमण अथवा प्राणातिपात विरमण—अहिंसाव्रत कहेवाय छे. जीव द्रव्यनु अमूर्तपणु छे, माटे तेनी हिंसा थवी अयोग्य छे, तेथी सर्व प्राणीओना दश प्राणनो विनाश करवो, ते हिंसा कहेवाय छे. तेने माटे लख्यु छे के,

" पचेंद्रियाणि त्रिविध बल च उच्छ्वास नि श्वासमथान्यदायु. ।
प्राणा दशैते भगवद्भिरुक्तास्तेषा वियोगी करणं तु हिंसा॥१॥"

" पाच इंद्रियो, त्रण बल, श्वासोच्छ्वास अने आयुष्य ए दश प्राण भगवते कहेला छे, तेमनो वियोग करवो, ते हिंसा कहेवाय छे. १ "

ते प्राणनो वियोग न करवो ते रूप जे व्रत ते अहिसा व्रत कहेवाय छे. जैन धर्मनु मूल जीवदया छे, तेथी सर्व व्रतोने विषे अहिसा व्रतने प्रथम गणवामा आवेलु छे तेने माटे कह्यु छे के—

" इक्कचिअ इत्थवय निदिठ्ठ जिणवरेहि सव्वेहि ।
पाणाइवाय विरमण अवसेसा तस्स रक्खठा " ॥१॥

सर्व जिनवरोए जिन शासनमा प्राणातिपात विरमण ए एकज व्रत कहेलु छे. वाकीना जे बीजाव्रतो कहेला छे, ते पेहेला व्रतनी रक्षाने माटे छे १

आ सपूर्ण वीश विश्वा प्रमाण वाळी दया साधुओने होय छे अने श्रावकोने सवा विश्वा प्रमाण दया होय छे. तेने माटे कह्यु छे के,

" थूला सुहुमा जीवा सकप्पारंभओ अ ते दुविहा ।
सावराह निरवराहा साविक्खाचेव निरविक्खा ॥ १ ॥

सूक्ष्म अने बादर एवा जीवना बे भेदथी प्राणि वध बे प्रकारनो छे. तेमा बेइंद्रिय प्रमुख स्थूल बादर कहेवाय छे अने एकेंद्रिय सूक्ष्म बादर कहेवाय छे, कारणके, तेमनो शस्त्रादि प्रयोगे करी वध थवानो अभाव छे.

हवे गृहस्थोने तो स्थूल बादर प्राणातिपातथी निवृत्ति थइ शके पण सूक्ष्म प्राणातिपातथी निवृत्ति थइ शके नहीं, कारणके तेमने पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, प्रमुखथी पचन पाचनादि समस्त क्रियानी प्रवृत्ति रहेली छे

एवी रीते स्थावर जीवनी हिंसानो नियम न होवाथी वीशमाथी दश विश्वा अपगमे एटले तेमने दश विश्वा दया रहे छे

स्थूल प्राणिवध संकल्प अने आरम्भ-एम बे प्रकारनो छे. 'हु मारु' ए प्रकारे मनमा जे संकल्प थाय ते संकल्पथी प्राणिवध कहेवाय छे. खेतीवाडी तथा घर प्रमुखनो जे आरंभ, तेमां प्रवर्तवु, ते बीजो आरम्भथी प्राणिवध कहेवाय छे तेमा संकल्पथी स्थूल प्राणिवधमाथी निवृत्त थवु, ए गृहस्थथी बनी शके छे, पण आरम्भथी निवृत्त थवु, ए बनी शकतु नथी. जो आरम्भथी निवृत्त थवा इच्छा राखे तो तेना शरीरनो अने कुटुम्बादिकनो निर्वाह थइ शके नहीं, तेथी आरम्भोत्पन्न हिंसानो अनिषेध थता दश विश्वामाथी पाच विश्वा दया अपगमे एटले बाकी पाच विश्वा दया रही हवे जे संकल्पथी वध छे, ते पण बे प्रकारे छे. सापराध अने निरपराध. तेमा जे सापराध चोर, जार पुरुष वगेरेनो वध संकल्पथी वर्जी शके नही अने निरपराधनो वध संकल्पथी वर्जी शके, एम सापराध हिंसानो नियम न होवाथी पाच विश्वा दयामाथी अढी विश्वा दया अपगमे एटले बाकी अढी विश्वा दया रही हवे निरपराध वध छे, ते सापेक्ष अने निरपेक्ष एम बे प्रकारे छे. तेमा अपेक्षा एटले शका तेनाथी युक्त ते सापेक्ष शकास्थान कहेवाय छे अने तेथी जे विपरीत एटले अपेक्षा रहित ते निरपेक्ष कहेवाय छे. तेमा गृहस्थ श्रावक सापेक्ष हिंसा वर्जी शकतो नथी, निरपेक्ष हिंसा वर्जी शके छे. जेम कोइ राजाना अधिकारी श्रावके बार व्रत अगीकार कर्या होय ते पोताना धर्मनो जाण होवाथी तेने शका रहे छे, तेथी कोइ निरपराधी पुरुष होय तोपण तेने वधनो निषेध करी शकतो नथी अने राजा अथवा कोइ शत्रुना पुत्रनो पण अपराध छता वध अटकावी शकतो नथी, तेथी सापेक्ष हिंसाना न वर्जवाथी अढी विश्वा दयामाथी सवा विश्वा दया गइ एटले बाकी सवा विश्वा दया रहे छे, तेथी गृहस्थ श्रावक सवा विश्वा दया पाळी शके छे तेने माटे कह्यु छे के—

" साहु वीसं सड्ढे, नस संकप्पा वराह साविक्खे ।

अद्धद्धो सवाओ, विसोअओ पाए अइवाए " ॥१॥

साधुने वीश विश्वा दया छे अने श्रावकने आरम्भ, सापराध अने सापेक्षपणे थावर जीव हणवाने लीधे सवा विश्वा दया छे १

अहीं कोइ प्रश्न करे के, नियमित स्थानथी बीजा स्थानमां श्रावक पोतानी इच्छा प्रमाणे जीववध भले करे, तेमां कोइ जातनो दोष नथी तेना उत्तरमां कहे छे के त्रस जीव वगेरेथी जुदा एवा स्थावरादिकने विषे श्रावकोनी यतना होय छे, पण निर्दयता होती नथी. ए भावार्थ समजवानो छे. " में तो सकल्पथी निरपराधी त्रस जीवना वधनु पच्चखाण करेलु छे, बीजानु कर्यु नथी " आ प्रमाणे चिंतवी श्रावक पृथ्वीकाय वगेरेनु, तथा आरम्भथी त्रसादिकनु नि शकपणे उपमर्दन करे नहीं अने जो निर्वाह थतो होय तो बनता सुधी स्थावरादिकनु पण उपमर्दन न करे कदि निर्वाह न थाय तो, ते विचार करे के, " आ साधुओने धन्य छे, के जेओ सर्व प्रकारना आरम्भथी मुकाया छे, अने हु तो महारं भने विषे मग्न थइ पड्यो छु. हवे हु एमाथी क्यार मुक्त थइश " आम दयाथी चिंतवी शका सहित तेने विषे प्रवर्त्ते छे. तेने माटे कह्यु छे के,

" वज्जइ तिव्वारम्भ कुणइ अकामो अनिव्वहतोय ।
थुणइ निरारम्भजण दयालुओ सव्वजीवेसु " ॥१॥

आ गाथानो अर्थ उपर आवी गयो छे.

वळी कोइ कहे छे के, अनियमित–अप्रत्याख्यात वस्तुने विषे शी यतना होय ? आम बोलवुज न जोइए कारणके, यतना शिवाय प्राणातिपात विरमण व्रतना फलनो अभाव थाय छे वळी जे व्रत छे ते पुण्यने माटेज आदरथी कराय छे, पोताना उच्चारेला निर्वाहने माटे करातु नथी अने वळी ते पुण्य मनना परिणामथीज थाय छे जो स्थावरादिकने विषे निर्दयपणु थाय तो पछी सर्व ठेकाणे तेनु निर्दयपणुज होनु जोइए कारणके, जीवपणु सर्व ठेकाणे समान छे, माटे ज नहीं पचखाण करेला स्थावरादिकने विषे पण यतना करवी जोइए ते विषे कह्यु छे के,

" जं जं घर वावार कुणइ गिही तथ्थ तथ्थ आरंभो ।
आरभेविहु जयणं तरतम जोएण चितेइ " ॥ १ ॥

" गृहस्थ जे जे घरना काम करे छे, त्या त्या आरम्भ रहेलो छे, पण श्रावक ते आरभने विषे तरतमना योगे करी यतना करे छे." १

अल्पारम्भथी जे कार्य साध्य होय, तेमा महारम्भ करे नहीं एटले बहु सावद्य कर्मने त्यजी अल्प सावद्यने आचरे ते तरतम योग कहेवाय छे.

हवे अन्वय अने व्यतिरेकथी दयानु शुभाशुभपणु दर्शावे छे.

" यो रक्षति परजीवान् रक्षति परमार्थत. स आत्मानम्।
यो हत्यन्यान् जीवान् स हति नर आत्मनात्मानम्॥ १ ॥

जे बीजा जीवोनी रक्षा करे छे, ते परमार्थपणे पोताना आत्मानी रक्षा करे छे अने जे बीजा जीवोनी हिंसा करे छे, ते पोताने हाथे पोताना आत्मानीज हिंसा करे छे. १

अन्वय अने व्यतिरेकथी दयानुं फल.

हवे अन्वय अने व्यतिरेकथी दयानु फल कहे छे. सुख, सौभाग्य, बल, आयुष्य, बुद्धि, काति, अने लक्ष्मी, आदि जे फलो छे, ते दयाना फलो छे. बहु रोग, शोक, वियोग, दुर्बलता अने भय, वगेरे हिंसाना फलो छे उपलक्षणथी सपत्ति, स्वर्ग, वगेरे जे रमणिक छे, ते दयाना फल छे अने नरकादिकमा पडवा रुप ते हिंसाना अनिष्ट फल छे आ प्रमाणे समजी लेवु.

प्रथम व्रतनु दृष्टातथी वर्णन.

" जे य संसारजं दुक्खं मोक्तुमिच्छति जंतुणो ।
अणुकंपापरा निच्च सुलसुव्व हवति ते ॥ १ ॥ "

जे प्राणीओने आ ससारमाथी उत्पन्न थयेला दुःखथी मुक्त थवानी इच्छा होय, तेमणे सुलसनी जेम अनुकपा—दयामा तत्पर थवुं. १

सुलसनु वृत्तात

राजगृही नगरीमा कालकसूरियो नामे एक कसाइ रेहतो हतो.ते पोतानी

ज्ञातिना पाचसो घरमा मोटो हतो. तेने सुलस नामे एक पुत्र हतो. तेने अभय-कुमार मंत्रीनो समागम थइ आव्यो. आथी ते दयाधर्मने माननारो श्रावक थइ गयो. सुलसनो पिता कालकसूरियो दयाधर्मथी तद्दन रहित हतो. ते हमेशा पाचसो पाडानो वध करतो हतो राजा श्रेणिक तेने अटकावतो तोपण अभव्यपणाने लइने ते तेवा निंद्य काममाथी निवृत्ति पाम्यो नही. अंते ते मोटा उग्र पापथी भरेला पिंडवालो कालक दुष्ट लेश्याना योगथी मृत्यु पामी सातमी नरके गयो

ज्यारे ते मृत्यु पाम्यो एटले तेना ज्ञाति जनोए तथा कुटुंबीओए आवी सुलसने कह्यु के, "हवे तु तारा पिताना पदने ग्रहण कर अने कुटुंबनु भरणपोषण कर " सुलसे जवाब आप्यो क "ते शी रीते करु ? " त्यारे कुटुंबीओए कह्यु के, कुलक्रमथी चालता आवेला रीवाज प्रमाणे दररोज पाचसो पाडाओने मार अने तेमाथी उत्पन्न थयेला द्रव्यथी अमारु भरण-पोषण कर "

कुटुंबीओना आवा वचन साभळी सुलस बोल्यो-" अरे ! कुटुंबीओ, एवी मोटी हिंसा करी उपार्जन करेलु धन तमे खाओ अने तेनाथी उत्पन्न थयेलु पाप मारे एकने भोगववु पडे, ए केम बने ? " सुलसना आवा वचन साभळी ते कुटुंबीओए जणाव्यु के, "जो एम होय तो अमे बधा तारा पापने वेहेंची लइए " आ समये पोताना कुटुंबीओने प्रतिबोध आपवाने माटे सुलसे एक कुहवाडीनो घा करी पोतानो पग जरा छेदी नाख्यो अने तेनी पीडाथी पोते आक्रंद करतो बोल्यो, " मने भारे वेदना थाय छे, माटे तमे बधा मारा कुटुंबीओ आ मारी पीडाने वेंहेची ल्यो " तेना आ वचनो साभळी कुटुंबीओए कह्यु, " भाइ सुलस, वेदना वेहेंची लेवानु सामर्थ्य अमारामा नथी " सुलसे कह्यु, ज्यारे तमारामा तेटलु सामर्थ्य नथी तो नरकना हेतुरूप अनेक पाडाओना वधथी उत्पन्न थयेला मारा पापने तमे शी रीते वहेंची लेशो ? "

सुलसना आ वचन साभळी सर्व कुटुंबीओ मौन करीने बेशी रह्या पछी सुलस पोताना कुटुंबीओने बोध आपी माणीना वधथी निवारी सद्व्यवहारथी तेमनु पालन करवा लाग्यो ते यावज्जीवित शुद्ध श्रावक धर्मने पाळी मृत्यु पामी स्वर्गे गयो हतो एवी रीते पहेला अहिंसा व्रतना आराधन उपर सुलसनु दृष्टात कहेवाय छे एवी रीते बीजा भव्यजीवोए पण उत्तम धर्मनु मूळ अने सर्व

अर्थनी सिद्धिने अनुकूळ एवु ए व्रत प्रयत्नवडे सेववु. तेने माटे भावनानी गाथा आ प्रमाणे छे—

" धन्ना तेन मणिज्जा, जेहि मणवयणकायसुद्धीए ॥
सव्वजियाण हिंसा, चत्ता एव विचितिज्जा " ॥ १ ॥

" जेमणे मन वचन अने कायानी शुद्धिए करी सर्व जीवनी हिंसा छोडी छे, तेमने धन्य छे अने तेओ नमस्कार करवा योग्य छे, एम चितववु." १

बीजु स्थूल मृषावाद विरमण व्रत

मृषा एटले असत्य वचन, तेनाथी विरमवु-निवृत्ति थवु, ए बीजु मृषावाद विरमण व्रत कहेवाय छे. ते व्रत कन्यालीक वगेरेनी निवृत्ति करवारूप छे. तेने माटे कहे छे—

" कन्नागोभूअलीअं, नासावहार च कूडसक्खिज्ज ।
थूलमलीअं पचहा, चइए सुहुमंपि जहसत्ति " ॥ १ ॥

"अति स्थूल वस्तु सबधी एटले अति दुष्ट अध्यवसायथी उत्पन्न थयेल अलीक (जुठु) मृषावादनो पाच प्रकारे त्याग कहे छे ते पाच प्रकार आ प्रमाणे छे

कन्यालीक १ गवालीक २ भुवलीक ३ न्यासापहारः ४ कूटसाक्षिक च ५ ॥

निर्दोष कन्याने पण 'आ विष कन्या छे' एम कहेवु, ते कन्यालीक कहेवाय छे. बहु दूधवाळी गायने थोडा दूधवाळी कहेवी, अने थोडा दूधवाळी गायने बहु दूधवाळी कहेवी, ते गवालीक कहेवाय छे. पारकी जमीनने पोतानी कहेवी ते भुवलीक कहेवाय छे उपलक्षणथी तेवी रीते द्विपद (मनुष्य) चतुष्पद (पशु) अने अपद (सर्पादि) वगेरेनु अलीक जाणी लेवु.

अहि प्रश्न करे छे के, जो तेम उपलक्षणथी समजवानु होय तो सर्व सग्रहादिकने अर्थे द्विपदादिकनु ग्रहण केम न कर्यु ? तेना उत्तरमा कहे छे के, लोकोमा

कन्यादिक अलीक अति निंदनीय गणाय छे, माटे ते वर्जवाने अर्थे तेनु मुख्य-पणे ग्रहण करेलु छे, तेथी तेमां कांइ पण दोष नथी.

न्यास एटले थापण तेनो अपहार एटले ओळववी, ते न्यासापहार कहेवाय छे. आ न्यासापहार अदत्तादाननु रुप थइ शके छे, पण ओळववा रुप वचननु प्रधानपणु होवाथी, तेने मृषावादमां गणेलु छे. लाच वगेरेना लोजथी अथवा मत्सर जाव वगेरे पराजवपणाथी प्रमाण करेला द्रव्यने अन्यथा रीते स्थापन करवु, जेथी खोटी साक्षी पूरवी पमे ते कूटसाक्षिपणु कहेवाय छे आ जेदमां पारका पापने दृढ करवापणु होवाथी पूर्वना जेदथी तेनु जुदापणु छे एटले चोथो अने पांचमो जेद जुदो छे.

एवी रीते स्थूल मृषावादने दर्शावी हवे गृहस्थने माटे सूक्ष्म अलीकनी यतना कहे छे. एटले गृहस्थे स्थूल मृषावादनो त्याग करवो अने सूक्ष्म मृषावादमां यतना करवी. सूक्ष्म एटले अल्पवस्तु संबंधी मृषावाद तेनो यथाशक्ति त्याग करवा यत्न करवो. अर्थात् जो निर्वाह चाले तो सूक्ष्म मृषावाद पण बोलवु नहीं, अने निर्वाह न चाले तो तरतम योगथी यतना करवी. कहेवानो आशय एवो छे के, थोमाथी निर्वाह थतो होय तो वधारे मृषा बोलवु नहीं. ते सत्य व्रतनो प्रजाव आ प्रमाणे छे, ते कहे छे—

" जे सच्च ववहारा, तेसिं डुठावि नेव पहवंति ।
नाइक्कमंति आणं ताण दिव्वाइ सव्वाइ " ॥ १ ॥

जे सत्यवादी छे, तेमने दुष्ट पुरुषो पण कष्ट आपवाने समर्थ थता नथी अने सर्व दिव्यो तेमनी आज्ञानुं अतिक्रमण करी शकता नथी. " १

ते विषे श्री कालिकाचार्य अने दत्तपुरोहितनी कथा कहेवाय छे,ते त्रीजा प्रकाशमां कहेवाशे

तेम वळी कह्यु छे के, -

" जलमग्निर्विद् कोशो विष मापाश्च तंडुला· ।
काल धर्म· सुतस्पर्शो ,दिव्याना दशक मतम् " ॥१॥

" जल, अग्नि, शत्रु, कोश, विष, माष (अडद), तंदुल, काल, धर्म, सुतनो स्पर्श–ए दश दिव्य कहेवाय छे. " १

ए रुप सर्व दिव्यो तेमनी आज्ञानु उल्लंघन करता नथी. ते आज्ञा आ प्रमाणे छे. " हे जल, तुं मने डुबाडीश नहीं. " " हे अग्नि, तुं मने बाळीश नहीं. " इत्यादि आज्ञाओ जाणवी.

हवे सत्यनु प्रतिपक्षी असत्य छे, तेने निंदे छे.

" वयणम्मि जस्स वयणं, निच्च मसच्च वहेइ वच्चरसो ।
सुद्धीए जलन्हाणं, कुणमाण तं हसंति बुहा " ॥१॥

जेना मुखने विषे सर्व जगतने अनिष्ट अने अपवित्र एवो असत्य वचन रुप विष्टारस निरंतर वह्या करे छे ते पुरुष शुद्धिने माटे जलमां स्नान करे छे, तेने जोइ पंडित पुरुषो हसे छे. " १

कहेवानो आशय एवो छे के, पुरुष असत्य वचन बोली निरंतर पोताना आत्माने मलिन करे छे अने मात्र त्वचा उपर रहेला मळने पखाळवा जलथी पवित्र थवा इच्छा राखे छे, ते तेनी केवी मूर्खता कहेवाय ? ते विषे बीजा मतवाळाओ पण आ प्रमाणे कहे छे.

" चित्तं रागादिभिः क्लिष्टमलीकवचनैर्मुखम् ।
जीवघातादिभिः कायो, गंगा तस्य पराङ्मुखी " ॥१॥

जेनु चित्त रागादिकथी क्लेशवालु छे, असत्य वचनोथी मुख क्लिष्ट थयु छे, अने जीवहिंसा वगेरेथी काया क्लिष्ट थइ छे, तेवा पुरुषथी गंगा विमुख थाय छे. " १

" सत्यं शौचं तप. शौचं, शौचमिंद्रिय निग्रहः ।
सर्व भूत दया शौचं, जलशौचं च पंचमम् " ॥ १ ॥

" सत्य वचन बोलवु -सत्य रीते चालवु, ए पेहेलु शौच छे, तप आचरवु, ए बीजु शौच छे, इंद्रियोनो निग्रह करवो, ए त्रीजुं शौच छे; सर्व प्राणी मात्र

उपर दया राखवी, ए चोथु शौच छे अने जळनु शौच-ए पांचमु शौच छे. " १

अहिं सर्व प्रकारना शौचने विषे सत्यता ए प्रधान छे, माटे तेनु प्रथम ग्रहण करेलु छे अने जल शौच ए बाह्य शुचिपणाथी रहेलु छे, माटे तेने छेल्लु गणेलु छे. ते विषे कयु छे के,—

" मुयत्तणपि मन्ने, सार सारन्नवयणसत्तीओ ।
निस्मरूण चियवरं, जलत अगार सिगारा " ॥ १ ॥

" असत्य बोलनारा अने मर्मने उघाडवादि पाप सहित एवा वचन संबधी जे शक्ति, तेनाथी मुगापणु वधारे सार छे, ते उपर दृष्टांत आपे छे के, धगधगता अग्निना अंगाराथी शरीरनो जे शृंगार करवो तेना करता आभूषणनो अभाव होय ते सारो छे १ "

आ कहेवानो आशय एवो छे के, जेम शरीरनी शोभा माटे करेलो अंगारानो शृंगार उलटो दाहादि अनर्थना हेतुरूप छे, तेम पोतानी निपुणताने माटे आरंभेलु असत्य वचन उलटु नरकादिकने विषे पाडनार थाय छे–अनेक दुःखोनु कारण बने छे, तेनाथी मुगापणु उत्तम छे

आ बीजु मृषावाद त्याग रूप व्रत पाळ्या अणपाळ्यानु फल देखाडे छे

" सच्चेण जिओ जायइ, अप्पडिहय महुर गहिर वर वयणो ।
अलिएण मुहरोगी, हीणसरो मम्मणो मूओ " ॥ १ ॥

सत्यव्रत वडे जीव आलोकने विषे विश्वास तथा यशनु पात्र थाय छे अने परलोकने विषे अप्रतिहत, मधुर अने गंभीर प्रधान एवा वचनोने बोलनारो थाय-छे अप्रतिहत एटले वज्रनी पेठे कोइ ठेकाणे स्खलना न पामे तेवु, मधुर एटले परिपक्व सेलडीना रसना पान जेवु, गंभीर एटले जल सहित मेघनी गर्जनानी पेठे अने प्रधान एटले स्पष्ट अक्षरवालु मनोहर, एम समजवु.

वली असत्य वचन बोलवाथी आलोकने विषे अविश्वासनु तथा दुराचरणनु भाजन थाय छे अने परलोकने विषे मुख रोगी, हीन स्वरवालो अने मम्मन बोलनारो मुगो थाय छे जे बोलता छता स्खलित थाय ते मम्मन कहेवाय छे आ

व्रत वाणीना विषयवाळुं होवाथी तेनुं फळ पण वाणीना विषयमांज कहेलुं छे. नहीं तो आ व्रत विराधना रहित पाळवाथी स्वर्गादिकनुं फळ होय छे अने विराधना सहित पाळवाथी नरकादिकनुं फळ होय छे, एम समजवुं. आ व्रतने माटे व्यतिरेकवडे दृष्टांत कहे छे—

" दप्पेण अलियवयणस्स जं फलं तं न सक्किमोवोत्तुं ।
दक्खिणालिएण विगओ, वसू सत्तम नरयं " ॥ १ ॥

" पोताना मतनी स्थापनाना गर्वथी—आग्रहथी जे अलीक बोलवुं, एटले जिनमत विरुद्ध भाषण करवुं, तेनुं फळ आ अनंतानंत संसारमां भ्रमण करवारूप थाय छे. तेने कहेवाने छद्मस्थ अने प्रमाणोपेत आयुष्यवाळा समर्थ थइ शकता नथी. दाक्षिण्यालीक ए शब्दनो एवो अर्थ छे के, दाक्षिण्य एटले गुरु तथा स्त्रीना अनुरोधना हेतुथी जे अलीक एटले असत्य कहेवुं ते. ए रीते बोलेला असत्य वचनथी ज्यारे दुर्गति थाय छे तो पछी अभिमान वडे कहेला असत्य वचनथी केवुं नठारुं फळ थाय ? ए दाक्षिण्यालीकथी वसुराजा सातमी नरके गयो हतो."

वसुराजानी कथा.

माहल्लदेशमां शुक्तिमती नामे नगरीने विषे अभिचंद्र नामे राजा हतो. तेने वसु नामे एक पुत्र हतो. तेज नगरमां जिनमतथी वासित हृदयवाळा क्षीरकदंबक नामे एक उपाध्याय वसे छे. बाळवयथी पण्डितना जेवा आचारवाळो अने सत्यव्रतमां रक्त वसुकुमार तेमनी समीपे विद्याभ्यास करतो हतो. ते वखते पर्वतक नामनो उपाध्यायनो पुत्र अने एक नारद नामनो विद्यार्थी पण तेज उपाध्याय पासे भणता हता. ते बन्ने वसुकुमारना सहाध्यायी हता.

एक दिवस आ त्रणे विद्यार्थीओ अभ्यासनो श्रम लागवाथी आंगणानी भूमिमां सूता हता, तेवामां तेमना गुरु क्षीरकदंबके आकाशमांथी कोइ चारण ऋषिना मुखथी आ प्रमाणे वाणी सांभळी—" जे आ आंगणानी भूमिमां त्रण विद्यार्थीओ सुतेला छे, तेओमांथी एक उच्च गतिने पामशे अने बे नरके जशे " आ वाणी सांभळी उपाध्याय क्षीरकदंबक पोताना मनमां विचार्युं के, चारण

मुनिनी वाणी मृषा होती नथी. तेथी आ त्रणेमां नरक गामी ये कोण छे ? अने सद्गतिने पामनार कोण छे ? तेनी परीक्षा करु अने ते परीक्षा दयालुपणाथी थइ शकशे " आ प्रमाणे विचार करी ते चतुर उपाध्याये आटाना त्रण कुकडा बनाव्या. आ कुकडा बनावी ते त्रणे शिष्योने एक एक कुकडो आप्यो अने कह्यु के, " हे शिष्यो, तमारे कोइ पण न देखी शके एवे स्थले जइ आ कुकडाने हणी नाखवो. " गुरुनी आवी आज्ञा थवाथी वसु अने पर्वतक त्रणेए जुदा जुदा एकांत प्रदेशमां जइ निर्दयपणाथी ते पिष्टना कुकडाने मारी नाख्या. पेलो त्रीजो शिष्य नारद ते कुकडाने एकांते लइ जइ आ प्रमाणे विचार करवा लाग्यो—" गुरुए अमोने आवु भयंकर काम करवानी आज्ञा केम करी हशे ? आवा निरपराधी प्राणीने कयो पुरुष हणशे ? वळी तेमणे कह्यु छे के, " ज्यां कोइ न देखे तेवे स्थळे कुकडाने मारजो. " गुरुना आवा वचन उपरथी तेमनो अभिप्राय एम जणाय छे के, आ कुकडाने मारवो न जोइए कारणके, गमे तेवा एकांतमां जइए, तो त्यां कुकडो तो जुवे छे, अने हु पण जोउ छु अने ज्ञानीओ पण जुवे छे ज्यां कोइ देखतुं नथी, एवु स्थान कोइ छेज नहीं. तेथी हु एम मानु छु के, गुरु दयालु होवाथी तेमणे अमारा शिष्योनी परीक्षा करवा माटे आ हुकम करेलो छे. " आवु विचारी ते नारदे कुकडाने मार्यो नहीं. ते पछी ते नारद शिष्य पोताना गुरुनी पासे आव्यो तेणे कुकडाने नहणवानो हेतु कही संभळाव्यो. ते शिष्यनो वृत्तांत सांभळी गुरुए नारदनी ऊर्ध्वगति थवानो निश्चय कर्यो अने अतिशय संतुष्ट थइने नारदनी प्रशंसा करी तेवामां पेला वसु अने पर्वत बने कुकडाने हणीने आव्या अने तेमणे पोतानो वृत्तांत गुरु समीपे जणाव्यो गुरुए " तमे पतित मूर्ख छो, " एम कही तेमने धिक्कार आप्यो. अने गुरु पोताना हृदयमां अतिशय खेद पामी गया. गुरुए ते वखते पोताना हृदयमां विचार्यु के, मारा जेवो गुरु मळ्या छतां आ बने शिष्यो नठारी गतिए जाय तो पछी तेमां मारु शु माहात्म्य? अथवा जेनु आयुष्य क्षीण थइ गयु छे, एवा पुरुषने मोटो राजवैद्य होय तो पण ते शु करी शके ? ऊंचा प्रदेशमां मेघ वृष्टिनी जेम ए बने शिष्योने भणावा करेलो मारो श्रम निष्फळ थयो हवे नरकनी पीडाना कारण रुप एवा आ गृहना आरंभनी शी जरुर छे ? "

आवो विचार करी ते क्षीरकदंबक उपाध्याये संसारनो त्याग करी

चारित्र अंगीकार कर्यु. ते पछी पर्वतक तेनी पाट ऊपर बेठो हतो.

पेलो नारद शिष्य के जे शास्त्रनो महान् वेत्ता हतो, ते पोतानी इच्छा प्रमाणे त्याथी बीजे स्थले चाल्यो गयो. राजा अभिचन्द्रे पण दीक्षा ग्रहण करी. ते पछी तेनो कुमार वसु राज्यासन ऊपर बेठो. वसु नीतिथी राज्य करतो हतो अने ते सत्यवादीपणाथी आखी पृथ्वी ऊपर प्रख्याती पाम्यो हतो. ते कदि पण मृषावाद बोलतो नहीं. एक समये कोइ एक भिल्ल विंध्याचल पर्वतनी अटवीमा फरतो हतो. तेणे एक हरिण ऊपर बाण छोड्युं. ते बाण स्खलना पामी वच्चे पडी गयु, हरिणने वाग्यु नहीं आथी आश्चर्य पामी ते भिल्ल पोतानु बाण व्यर्थ थवानु कारण शोधवा लाग्या तेनु कारण शोधता एक आकाशमा स्वच्छ स्फटिक शिला तेना जोवामा आवी. तेने पोताना हाथनो स्पर्श कर्यो. ते वखते ते शिलानी नीचे आसपास पेला मृगने चरतो जोयो ते जोताज भिल्ले विचार कर्यो के, “ मारु बाण स्खलना पाम्यु, तेनु कारण आ शिलाज छे आ अति स्वच्छ–निर्मल शिला वसुराजाने योग्य छे. ” आवु विचारी ते भिल्ल छानी रीते वसुराजा पासे आव्यो अने तेने शिलानो वृत्तात कह्यो. ते ऊपरथी वसुराजाए ते भिल्लने धन आपी ते शिला ग्रहण करावी पछी वसुए एक सारा कारीगर पासे ते शिलानी वेदिका करावी तेने एकाते गोठवी अने ते ऊपर पोतानु सिंहासन स्थापित कर्यु. शिलाना प्रभावथी ते सिंहासन आकाशमा रह्यु. ते वखते लोको कहेवा लाग्या के, “ वसुराजाना सत्यना प्रभावथी आ सिंहासन आकाशमा रह्यु छे. अने आ राजाना सत्यथी देवताओ पण तेने सेवे छे.

एक वखते नारद प्रीतिथी पर्वतकने घेर आव्यो. ते वखते ते पर्वतक ब्राह्मणोनी सभामा ऋग्वेदनी व्याख्या करतो हतो. ते वखते “यजैर्यष्टव्य” एवु सूत्र आव्युं पर्वतके तेनो एवो अर्थ कर्यो के, “ बोकडाथी यज्ञ करवो. ” आ वखत ते साभळी नारद बोल्या. ‘ आः शात पाप” ‘ अरे पाप शात थयुं. ” पछी तेणे पोताना हाथ वडे कान ढाकीने कह्यु, “ भाइ, भ्रातिथी आ शु बोले छे? ” आपणा उपाध्याये तो ‘अज’ शब्दनो अर्थ त्रण वर्षनी जुनी शाल एवो कर्यो छे पर्वतकने ते साभळी गुरुना कहेला ते अर्थनु स्मरण थइ आव्यु परतु समीप रहेला लोकोना मनमा पोताना अविश्वास न ऊपजे एवा

इरादाथी ते गर्वित थइने बोल्यो. " अरे नारद, तुज भ्रांतिमा पड्यो छे, तेथीज तु मने भ्रांतिवालो कहे छे. कारण के, 'मेष' शब्दना कहेनारा गुरुनी निघट्ट ग्रंथनी साक्षी छे. " नारदे कह्यु, " शब्द बे प्रकारनो छे एक मुख्य अर्थने कहेनारो अने बीजो गौण अर्थने कहेनारो". तेथी " ञजायते इति अजा. " न उत्पन्न थाय ते 'अज' कहेवाय आ प्रकारे व्युत्पत्ति करी गुरुए 'अज' शब्दनो गौण अर्थ कहेलो छे, पण ते मुख्य अर्थ नथी. बुद्धिमतोने निघट्टनो कहेलो शब्दार्थज प्रमाण छे, एम मानीए तो पछी गुरु शा माटे करता ? माटे हे पर्वतक, धर्मोपदेशक गुरु आ धार्मिक श्रुतिनो लोप करे तो ते पोताना ने लोकनो[1] लोप करे छे "

नारदना आ वचनो साभळी पर्वतक गुस्सो करीने बोल्यो-" नारद, आवो फोगट शब्दवाद शा माटे करे छे आपणे बने ते विषे पण[2] लइए जेनो पक्ष जुठो ठरे तेनी जिह्वानो छेद करवो अने आपणा प्रमाणपणामा वसुराजाने राखो. तेओ जाणेला छे, तेथी ते जे कहे ते आपणे प्रमाण करवु " पर्वतकना आ वचन साभळी ' पातानो पक्ष सत्य छे' एवु दृढताथी माननार नारदना मन मा काइ पण क्षोभ थयो नहीं. तेणे ते वात कबुल करी पछी ते कोइ कार्य माटे नगरमा गयो.

पाछळथी पर्वतकनी स्नेहाळ माताए पुत्रनु एवु जारे पण जाणी आ प्रमाणे कह्यु, " वत्स, ते तारा आत्माने नाश करनार पण कर्यु छे, कारणके, में पण तारा पिता पासेथी साभळ्यु छे के, अजा एटले व्रीहि-जुनी डागर सम जवी ते शिवाय बीजो अर्थ तेनो थतो नथी, तेथी हजु पण नारदने बोलावी तारा असत्य वचनने अगीकार कर अने तने गमाव गर्व ए जम रागनु मूल अ-जीर्ण छे, तेम सर्व आपत्तिनु मूल छे. तेनो परिहार कर "

माताना आ वचन साभळी पर्वतक बोल्यो-" माता, एमा शो भय राखवानो छे ? मरणनो भय राखवो ए घटित नथी जे प्राणी जन्म्या छे, ते अवश्य मरवानाज छे. हवे तो जे थवानु होय ते थाय पण जे बोल्या तेमा फरवानु नथी "

पुत्रना आवा वचन साभळी पोताना पुत्रनी आपत्ति दूर करवा माटे

---

१ आ लोक अने परलोक २ प्रतिज्ञा

वसुराजानी पासे आवी वसुराजाए प्रणाम करी ते माताना कुशल प्रश्न पुछवा वगेरेथी सत्कार कर्यो पछी ते विनीत राजाए जणाव्यु, " माता, आजे अहीं पधारी तमे मारी उपर मोटी कृपा करी छे. आपना आगमननु कारण शु छे? आपनी शी इच्छा छे? ते जणावो." माताए 'चिरजीव' नी आशीष आपी आ प्रमाणे कह्यु, " राजा, हु मारा पुत्रने जीवतो जोउ, एवु करो. " वसुराजा आश्चर्य पामीने बोल्यो—" बहेन, तमारो पुत्र मारो गुरुभाइ छे, तेम वळी मारा गुरुनो पुत्र होवाथी ते मारो गुरु छे, तो तेनो द्वेषी कोण थयो छे? तेनु नाम आपो. " माताए कह्यु, " तेना पोताना मुख शिवाय तमारा गुरुभाइना बीजो कोइ द्वेषी नथी. " आटलु कही तेणीए पोताना पुत्रना विवादनो सर्व वृत्तात कही संभळाव्यो. पछी तेणीए वसुराजाने प्रार्थना करी के, " तमारे मारा पुत्रना वचनने सत्य करवु " तेणीना आवा वचन साभळी वसुराजाए कह्यु, " बहेन, हु कोइ दिवस कोइ पण वखते मिथ्या वचन बोलतो नथी, तो खोटी साक्षीमा अने गुरुना वचनने उलटु करवामा हु मिथ्या केम बोलु? ए माराथी कदिपण बनवानु नथी". तेणीए विनति पूर्वक जणाव्यु, " भाइ, आवो विचार करशो नहीं, जीवरक्षानु पुण्य तमोने थाओ अने मृषा बोलवाथी थयेलु पाप मने लागो." आ प्रमाणे तेणीए तीव्र आग्रहथी कह्यु, एटले वसुराजाए ए वात मान्य करी.

बीजे दिवसे प्रात:काले वसुराजा सभामा आव्यो, ते वखते पेला नारद अने पर्वतक वाद करता करता राजानी सभामा आव्या अने तेमणे ऊंचे स्वरे पोतपोतानो पक्ष वसुराजा आगळ निवेदन कर्यो. ते समये सभामा बेठेला मध्यस्थ दृष्टिवाळा सभ्य लोकोए वसुराजाने आ प्रमाणे कह्यु, " महाराजा, आ पृथ्वी आपनाथीज सत्यव्रती कहेवाय छे. आपे बाल्यवयथी कदि पण सत्यव्रतनो त्याग कर्यो नथी. सत्य व्रतना प्रभावथी देवताओ पण आपना सेवक थइ आपना सिंहासनने आकाशमा धारण करी राखे छे, तेथी हे सत्यना समुद्र महाराजा, ते सत्यवाणीथी आप आ बनेना वादने शमावी धो "

सभ्य लोकोए आ प्रमाणे कह्यु तो पण जेनी बुद्धि भ्रष्ट थयेली छे एवा वसुराजाए पोताना सत्यव्रतनो भग करी कह्यु के " गुरुए 'अज' शब्दनो अर्थ 'मेष' बकरो एम कह्यु छे. " आ प्रमाणे राजाए खोटी साक्षी आपी. आ वखते

" आ वसुराजा मलिनात्मा छे, ते मारा निर्मल स्वरूपने अधःपात करे छे, एवो जाणी रोष उत्पन्न थयो होय, तेम ते स्फटिकनी शिला तत्काल फाटी गइ. अने कोपायमान थयेला देवताओए वसुराजाने सिंहासन उपरथी पाडी नाख्यो आ वखते नारदे कह्यु, " अरे धर्मभ्रष्ट राजा, तारु मुख जोवा योग्य नथी." आ प्रमाणे तेनी निंदा करी नारद त्यांथी चाली नीकल्यो. ते वखते लोकोए पेला पर्वतकने कह्यु के, " हे मूढ, ते आवा गुप्त अने मलिन विचारथी आ शु कर्यु ? आ प्रमाणे लोकोनी निंदा थवाथी ते पर्वतके मानभ्रष्ट थइ ते नगरनो त्याग करी दीधो ते पछी वसुराजाने राजदेवीए घणा प्रहार कर्या, तेथी ते मृत्यु पामी असत्यनी सहायथी सातमी नरके गयो हतो. ते पछी वसुराजानी गादी उपर जे पुत्र बेसे तेना राजदेवी नाश करवा लागी. अनुक्रमे राजदेवीए तेनी पछीना आठ पुत्रोने मारी नाख्या हता. कह्यु छे के,

" यो य सूनुरुपाविक्ष्यत् पट्टे तस्यापराधिन. ।
स स देवतया जघ्ने यावदष्टावनुक्रमात्" ॥ १ ॥

" ते अपराधी वसुराजानी पाट (सिंहासन) उपर जे जे पुत्र बेसता, तेने देवताए मारी नाख्या हता. अनुक्रमे एवी रीते आठ पुत्रो मार्या हता." १

आ वात पद्म चरित्रादिकमा कहेली नथी, तो तेमा तत्त्व शु छे ? ते तो केवली जाणे ते विषे एम पण कह्यु छे के,

" न भुक्त माजन्म कदापि भुक्तमते विष हति यथा मनुष्यम् ।
कदाप्यनुक्ता वितथा तथा गीरुक्तावसाने वसुमाजघान"॥ १ ॥

"जन्म पर्यंत न खाधेलु विष पण जो एक वार खावामा आव्यु तो ते मनुष्यने हणे छे. तेवी रीते वसुराजाए कदि पण असत्य वाणी कही न हती, पण एक वार असत्य वाणी कही तो तेणीए ते वसुराजानो नाश कर्यो हतो."

एवी रीते बीजा अणुव्रत उपर वसुराजानी कथा कहेवाय छे. आ प्रकारे मृषावादनो विपाक सांभळी सर्व भव्य जीवोए तेनो परिहार करवा तत्पर थवु. तेम थवाथी सर्व प्रकारनी इष्ट सिद्धि प्राप्त थाय छे, तेने माटे आ प्रमाणे जाणवा छे—

' थोवंपि अलीय वयणं जे न हु जासंति जीवियंतेवि ।
सच्चे चेवरयाणं तेसि नमो सव्व साहूण ॥ १ ॥"

"जेओ जीवितनो अंत थाय तो पण थोडु खोटु पण बोले नहीं अने जेओ सत्य बोलवामां तत्पर रहे, तेवा सर्व साधुआने मारो नमस्कार हो."

त्रीजु स्थूल अदत्तादान विरमण व्रत

स्थूल एवु अदत्तादान एटले नहीं आपेल वस्तुनु ग्रहण करवुं, तेनाथी विराम पामवु, ते स्थूल अदत्तादान विरमण नामे त्रीजु अणुव्रत कहेवाय छे. ते सचित्तादि स्थूल वस्तुनी चोरी न करवारूप छे. तेने माटे कह्यु छे के–

" तइय वयमि वज्जा, सचित्ताचित्त स्थूल चोरिज्जम् ।
तिणमाइ तणुअ तेणिय, मेसो पुण मोत्तुमसमत्थो ॥ १ ॥"

" त्रीजा अणुव्रतने विषे सचित्त–अचित्त स्थूल चोरीने वर्जवु. केमके, तृण वगेरे सूक्ष्म वस्तुनी चोरीने मुकवाने ते असमर्थ छे " ?

सचित्त एटले द्विपद (मनुष्य) चतुष्पदादि अने अचित्त एटले सुवर्ण, रुपु वगेरे. उपलक्षणथी आभूषण, वस्त्र वगेरेनु ग्रहण करवु तेनो स्थूलपणे त्याग करवो. स्थूलपणे स्थूल बुध्धिथी. चारनो व्यपदेश हेतुपणाथी पण जाणवो, तो पछी सूक्ष्मनी शी वार्त्ता ? ते आ प्रमाणे–तृण घासनी सळी, लोढानी रुळी, नदीनु जल, वनना पुल, छाणा, इंधणा वगेरेनी सूक्ष्म चोरीनो त्याग करवाने गृहस्थ असमर्थ छे, कारण के, तेवी वस्तुओ लीधा शिवाय गाय वगेरेना निर्वाहनो अभाव थाय छे तेवी सूक्ष्म वस्तुनी चोरीनो त्याग तो सूक्ष्मदृष्टिवाळा पुरुषो करी शके छे. ते स्थूल चोरी जेटला प्रकारे त्याग करवा योग्य छे, ते कहे छे––

" नासीकयं निहिगय, पम्हिय वीसारिय ठिअं नट्ठं ।
पर अत्थ हीरंतो, निअअत्थ को विणासेइ ॥ १ ॥"

थापण मुकेलु, दाटेलु, पडी गयेलु, वीसराइ गयेलुं, धणी मरी जवाथी कोइए ग्रहण न करेल तेथी नष्ट थयेलु––एवु परद्रव्य हरण करी पो-

तानी सर्व संपत्तिने उत्पन्न करवाने समर्थ एवो क्यो पुरुष पोताना पुण्य रूप द्रव्यनो विनाश करे ? कोइ पण न करे

वळी ते परद्रव्यने हरवाथी मात्र त्रीजा व्रतनो जंग थाय छे, एम नथी पण तेथी पेहेला व्रतनो पण जंग थाय छे, ते वात जणावे छे

" जंपइ ममत्ति जपइ, त त जीवस्स बाहिरा पाणा ।
तिण मित्तपि अदिन्न, दयालुओ तो न गिण्हेइ ॥१॥"

जे सचित्त–अचित्तादि वस्तुने माटे प्राणी एम कहे के, ' आ मारी वस्तु छे, ' ते वस्तु ते प्राणीना बाहेरना प्राणरूप छे एटले प्राण बाह्य अने आभ्यतर–एम बे प्रकारना छे जे श्वासादिक ते आभ्यतर प्राण छे अने जे ममत्वना कारणरूप सुवर्णादि ते बाह्य प्राण छे. ते उजय प्राणना नाश करवो ए प्राणनोज नाश कर्यो केहेवाय छे बाह्य प्राणनो नाश पण घणा दु खोनु कारण थइ पडे छे ते उपरथी दयालु श्रावक के जेणे पेहेला व्रत वडे प्राणी वधना पच्चखाण करेल छे, तेणे एक तृण मात्र पण अदत्त वस्तुने ग्रहण करवी न जोइए. आ गाथानु ए रहस्य छे. जे पेहेला गृहस्थने अदत्त एवा तृण वगेरे ग्रहण करवानी आज्ञा मुकी छे, ते मार्गादिकने विषे धणी वगरना तृणादिकनी अपेक्षाए छे अहिं तेनो जे निषेध छे, ते धणीवाना पदार्थनी अपेक्षाए जाणी लेवु बीजाए सचय करेल तृणादिक ग्रहण करवा नहीं. ते अदत्त कहेवाय छे तेने ग्रहण करनार चोर वध, बधनादि प्राप्त करे छे, अने तेथी कुलनी कीर्त्तिने कलक लागे छे, तेथी बीजाए ग्रहण करेल तृणादिक अदत्तने गृहस्थे ग्रहण करवु नही

जे विचार रहित चित्तवाळो पुरुष चोरी करीने लक्ष्मीनी इच्छा करे छे, तेने आश्रीने कहे छे—

" कुलकित्तिकलककर चोरिज्ज माकरेह कइयावि ।
इह वसण पच्चक्ख सदेहो अत्थलाजस्स ॥ १ ॥
काऊण चोरवित्ति, जे अवुहा अहिलसति सपत्ति ।
विषजक्खणेण जीवियमिच्छता ते विणस्सति ॥ २ ॥

चोरी कुलनी कीर्त्तिने कलंकित करनारी छे, तेथी हे जन्य, तु कदि-पण चोरी करीश नहीं, कारणके तेथी आ जवमा कारागृहमा निवास, वध, बंध अने हाथ, नाक तथा पगने कापवा वगेरे घणा दुःखो मत्यक्ष आवी पडे छे अने तेमा वळी परद्रव्यनी माप्तिनो संदेह छे, एटले ते मळे अथवा न मळे तेवी शंका छे. १

जे मूर्ख लोको परद्रव्यनी चोरी करीने संपत्तिनी इच्छा करे छे, ते विषनु जक्षण करी जीववानी इच्छा करे छे, पण तेओ उलटा विनाशने पामे छे.

उपर कहेला लक्षणोथी व्यतिरेक रीते (उलटी रीते) वर्त्तनाराओनी प्रशंसा करे छे.

"ते धन्ना सप्पुरिसा, जेसिं मणो पासिऊण परभूइं ।
एसा परभूइ च्चिय, एव संकप्पणं कुणइ" ॥१॥

"जे पुरुषो पारकी संपत्तिने देखी" ते संपत्तिने लेवाथी ते वधबंधादिकनुं कारण थाय छे अने तेनाथी उजयलोकमा पराजव थाय छे, " एवो संकल्प करे छे, ते पुरुषोने धन्य छे तेओने पुण्यवान् समजवा. तेओ पर संपत्तिने पराजवरूप जाणे एटले तेनाथी सर्वदा डर रहे छे "१

चोरीना फळो कहे छे

"वहबंधरोह मच्चू, चोरिज्जाउ हवंति इहलोए ।
नरय निवाय धणक्खय,दारिद्दाइ च परलोए "॥१॥

"चोरी करवाथी वध, बंध, रोध, अने मृत्यु आलोकमा थाय छे अने परलोकमा नरकमा पात, धननो क्षय अने दारिद्र वगेरे थाय छे." १

अहीं बंध एटले चाबका वगेरेनो प्रहार, वध एटले दोरी, साकळ वगेरेनु बंधन तथा रोह एटले कारागृहमा वास अने मृत्यु एटले शिरच्छेदनादिक जाणवुं.

अदत्तादानना त्यागनु दृष्टांत सहित फल आ प्रमाणे छे—

"जं इत्थ जणं पससाइ परजवे सुगइमाइ होइ फलो।
मुक्के अदत्तदाणे तं जायं नागदत्तस्स"॥१॥

"अदत्तादाननो त्याग करवाथी आ जवमां लोकोनी प्रशंसा अने पर जवमां सुगति वगेरे फल प्राप्त थाय छे. ते अदत्तादानना त्यागथी नागदत्तने शुभ फळ प्राप्त थयुं हतु. ते स्वरूप तेनी कथाथी जाणी लेवु."

नागदत्तनी कथा

वाराणसी नगरीमा जितशत्रु नामे राजा हतो. ते नगरमा धनदत्त नामे एक शेठ रहेतो हतो. ते शेठने धनश्री नामे एक स्त्री हती. तेणीना उदरथी नागदत्त नामे एक पुत्र उत्पन्न थयो हतो. नागदत्तने बाल्यवयथी सद्गुरुनो योग थइ आव्यो. आथी तेणे जैन धर्मने अंगीकार कर्यो हतो. अनुक्रमे गुरुनो उपदेश सांभळी ते आ संसार उपरथी विरक्त थयो हतो तेणे गुरु पासेथी अदत्तादान विरमण व्रत ग्रहण कर्युं हतु जो के बीजा व्रतो पण तेणे अंगीकार कर्या हता, तथापि अदत्तादान विरमण व्रतमा ते विशेष चुस्त हतो

एक दिवसे ते नगरना नगरशेठनी नागवसु नामनी कन्या जिनपूजा करवा माटे जिनालयमा जती हती रस्तामा पेलो नागदत्त तेणीनी दृष्टिए पड्यो. तेने जोताज ते बाळा तेना रूपमा मोहित थइ गइ. तत्काल तेणीए चिंतव्यु के, "मारे आ जवमा आ नागदत्तज भर्त्ता थाओ." आ प्रमाणे निश्चय करी ते बाला पोताने घेर आवी अने ते पोताना चिंतित अर्थने पिता पासे निवेदन कराव्यो पोतानी पुत्रीनो आवो निश्चय जाणी तेणीनो पिता नागदत्तना पिताने घेर गयो अने तेनी आगळ पोतानी कन्यानो अभिग्रह जणाव्यो. ते शेठे ते वात मान्य करी. पछी नागदत्त के जे आ सांसारिक भोगनी इच्छा राखतो नथी तो पण पिताना आग्रहथी तेने मान्य करवु पड्यु, पछी नागदत्तनी साथे ते नगर शेठनी पुत्री नागवसुनु वेवीशाळ–विवाह करवामा आव्यो. ते पछी एवु बन्युं के ते नगरना कोटवाळे एक वखते नगर शेठनी कन्याने जोइ ते उपरथी मोहित थइ तेणे नगरशेठनी पासे पोताना माणसो मोकली ते कन्यानी मागणी करी. नगर शेठे तेना माणसोने कह्युं के, "कोटवाळने कहो के, आ कन्या धनदत्त शेठना पुत्र नागदत्तने आपी दीधी छे. तेथी हवे बीजाने आपवा हु समर्थ नथी. नीतिशास्त्रमां कह्युं छे के, "सकृत् कन्या प्रदीयते" "कन्या एक वारज अपाय

छे." शेठना आ वचनो ते माणसोए कोटवालने कह्या, तेथी कोटवाल कोपायमान थइ गयो, त्यारथी ते नागदत्तना छिद्रोनी गवेषणा करवा लाग्यो.

एक दिवसे राजा एक अतिचपल घोडा उपर बेसी रवयाडी फरवा नीकल्यो दैवयोगे राजाना कानमाथी कुंडल पडी गयु. राजा नगरमा आवतां तेने पोताना कुंडलनी खबर पडी एटले तेणे पोलीसना माणसो द्वारा आखा नगरमां ते कुंडलनी गवेषणा करवा मांडी, पण कोइ स्थले कुंडलनो पत्तो लाग्यो नहीं.

ते अवसरे नागदत्त जिनालयमा दर्शन करवा जतो हतो. तेणे मार्गमा कुंडल पडेलु जोयु. पोते अदत्तादानना पच्चखाण करेला तेथी तेणे ते कुंडल लीधु नहीं. तत्काल ते जिनालयमा जइ प्रभुनी पूजा करी तेमनी समीपे ते कायोत्सर्ग करीने रह्यो, आ वखते दैवयोगे पेलो कोटवाल त्या आवी चडयो. पडेलु कुंडल तेना जोवामा आव्यु. ते लइ देरासरमां गयो. त्या नागदत्तने कायोत्सर्गे रहेलो जोयो. लाग आवेलो जाणी ते दुष्ट बुद्धिए नागदत्त उपर कलंक लगाडवाने ते कुंडल तेना कानमा पेहेरावी दीधुं. अने पछी तेने गाढ बंधनथी बांधी राजानी पासे हाजर कर्यो. राजाए तेना कानमा प्रत्यक्ष कुंडल जोइ 'आ चोर छे' एवो निश्चय करी तत्काल कोप पामी तेना वध करवानो कोटवाळने हुकम कर्यो. कोटवाल पोतानी धारणा सफळ थयेली मानी खुशी थयो. पछी ते कोटवाल नागदत्तने चोरना जेवी विटंबना करतो बांधी शहेरमा फेरववा लइ गयो. ज्या नगरशेठनी पुत्री नागवसु पोतानी हवेलीना गोखमा बेठी हती, ते गोख नीचे थइ नागदत्तने काढवामां आव्यो. पोताना शुद्ध श्रावक भर्त्तारनी आवी अवस्था जोइ हृदयमा खेद पामती नागवसु बाला श्री जिनमतनी लघुता निवारवाने अने पोताना भर्त्तारना संकटनो नाश करवाने तत्काल बेठी थइ पोताना गृह देरासरमा आवी त्या शासनदेवीनु स्मरण करी, 'ज्यारे आ अकार्य नाश पामशे त्यारे हु कायोत्सर्ग पारीश" एवी मनमा धारणा करी ते बाला धर्मध्यान धरती श्री जिनप्रतिमा आगळ काउस्सग्ग ध्याने उभी रही.

अहिं कोटवाल नागदत्तने लइ स्मशान भूमिमां आव्यो. त्या तेने शूळी उपर चडाव्यो, तेवामा शूळी भांगी गइ. पुनः चडाव्यो, त्यारे पण पाछी भांगी.

एम त्रण वार नागी तोपण निर्दय कोटवाले तेने पाछो चडाव्यो, तेवामा श्री जैन धर्मना प्रभावथी शासनसुरीए करेली सहाय वडे ते शूलीन ठेकाणे एक सुंदर सिंहासन थइ गयु. पछी दुष्ट कोटवाले ते नागदत्त उपर खड्गना प्रहार करवा माड्या, तो ते प्रहार पुष्पनी मालारूपे परिणम्या आ देखाव जोइ लोको विस्मय पामी गया. तेमणे जइने राजाने आ चमत्कारी वृत्तांत कह्यो. ते सांजली अति आश्चर्य पामेलो राजा ते स्थले आव्यो. त्या तेणे नागदत्तने सुवर्णना सिंहासन उपर बेठेलो विलोक्यो. तेना अंग उपर अनेक आभूषणो रहेला जोवामा आव्या तत्काल राजा प्रसन्न थइ गयो अने नागदत्तनी आगल पोतानो अपराध खमावी तेने मोटा गजेंद्र उपर बेसारी महोत्सव पूर्वक नगरमा प्रवेश कराव्यो नागदत्तने विषे धर्मनो प्रजाव जोइ लोको श्रीजिनधर्मनी प्रशंसा करवा लाग्या. पेली नागवसु तेवा आभूषणवाला नागदत्तने पोतानी हवेलीना गोख पासे नीकलतो जोइ घणी खुशी थइ अने तेणीए ग्रहण करेला कायोत्सर्गने पारी दीधो.

ते वखते कोटवाले नागदत्तनी उपर खोटुं दूषण आप्यु हतु, एवो निश्चय थवाथी राजा तेनी उपर घणो रोषातुर बनी गयो तेणे कोटवालनु सर्व द्रव्य लइ लीधु अने तेने जानथी मारवानी आज्ञा करी आ समये दयाने विषे जेनु हृदय तत्पर छे एवा नागदत्ते राजाने विनंति करी ते कोटवालने जीवतो रखाव्यो. ते पछी नागदत्त पोताने विषे नागवसु कन्यानो तात्त्विक प्रेम जाणी माता पिताए करेला महोत्सव पूर्वक शुभलग्ने तेणीने परण्यो ते पछी तेणीनी साथे चिरकाळ पर्यंत सांसारिक सुख जोगवी अंते सद्गुरु समीप तेणे दीक्षा ग्रहण करी ते सम्यक् प्रकारे संयमनी आराधना करी समाधि पूर्वक काल करी देवपदने प्राप्त थयो हतो

आ प्रमाणे त्रीजा अदत्तादान विरमण व्रतने विषे नागदत्तनी कथा कहेवाय छे ते उपरथी सर्व जव्य आत्माओए सर्वथा अदत्तादाननो त्याग करवो

ते व्रतनी जावना आ प्रमाणे छे—

" इणमविचिंतिअन्न, अदिन्नदाणाउ निच्च विरयाण ।
समतिणमणिमुत्ताण, नमो सया सव्व साहूण " ॥१॥

" जेओ अदत्तादानथी नित्य विराम्या छे अने जेओ तृण अने मणि-मोतीने तजी देनारा छे एवा सर्व साधुओने सदा नमस्कार छे " १

चोथु स्थूल मैथुन विरमण व्रत

हवे चोथु स्थूल मैथुन विरमण व्रत कहे छे. स्थूल एवु मैथुन एटले स्थूलपणे कामसेवन, तेनाथी विराम पामवु, ते चोथु स्थूल मैथुन विरमण व्रत कहेवाय छे. अर्थात् परस्त्री वगेरेनो त्याग करवा रूप ते व्रत छे. ते आ प्रमाणे—

" ओरालिय वेउव्विय, परदारासेवण पमुत्तूणं ।
गेहिवए चउत्थे, सदारतुट्ठिं पवज्जिज्जा " ॥ १ ॥

" औदारिक अने वैक्रिय परस्त्रीनु सेवन मुकीने गृहस्थ चोथा व्रतने विषे स्वदार संतोषना व्रतने ग्रहण करे छे. " १

अहिं औदारिक अने वैक्रिय एवी परनी-पोतानाथी जुदानी अर्थात् मनुष्य, तिर्यच अने देवतानी-मनुष्यनी परणेली, अथवा ग्रहण करेली -राखेली वगेरे स्त्रीओ तथा तिर्यचणी अने देवीओ, तेमनु सेवन, तेनो त्याग करी गृहस्थ चोथा व्रतने विषे स्वदार संतोष अगीकार करे एटले परस्त्री तथा वेश्याने वर्जी पोतानी स्त्रीमा संतुष्ट थइ रहे

अहिं प्रश्न करे छे के, श्रावकोने वैरादि दोषने उत्पन्न थवाने लीधे परदारानो संसर्ग करवो युक्त नथी, ए तो ठीक, पण जे बीजी स्त्रीओ नदीना जलनी पेठे सर्वने साधारण होय छे, तेमनो उपभोग करवामा शो दोष छे ? " तेना उत्तरमा गुरु कहे छे-" एम न कहो. कारण के, तेवी स्त्रीनो उपभोग पण सर्व दुराचारोनी शिक्षानु मूल होवाथी आलोक तथा परलोकमा महा दुःखनो हेतु छे, तेथी तेनो सर्वथा त्याग करवो युक्त छे. कह्यु छे के,—

" जपति महुर वयण, वयणं दसति चंदमिव सोम ।
तहवि न विससियव्वं, नेह विमुक्काणवेसाणं " ॥ १ ॥

" वेश्या स्त्री सुलक्षणा स्त्रीना जेवा साकर साथे मळेला दूधनी समान मधुर वचन बोले छे चंद्रमा जेवु सौम्य वदन देखाडे छे, तोपण ए स्नेहहीन वेश्याओनो विश्वास करवो नहीं. " १

" मा जाणह जह मउअं, वेसाहिअअं समंमणुल्लाव ।

सेवालबद्धपत्थर, सरिसं परिणेण जाणिहसि " ॥ १ ॥

" हे जीव, तु वेश्याना हृदयना मधुर आलापने कोमल न जाणं, पण सेवालथी बांधेला पत्थरना जेवु कठोर जाण. " १

ते वेश्याओना अनासेवनने दृष्टांत पूर्वक देखाडे छे—

" तह अम्मा पिउ मरणं, सोउण कुणइ रायपुत्ताण ।
मणसावि न माणिज्जा, कुरहिणिं वेसाउ वेसाओ"॥१॥

" जे राजपुत्रोए पोताना माता पिताना मरणने सांभळीने मनमां पण वेश्याने दुष्ट अध्यवसायवाळी मानी नहीं. " १

आ गाथानो आशय एवो छे के, कोइ बे राजपुत्रोए पोताना माता पिताना मरणना खबर सांभळ्या तोपण तेमणे वेश्याने खराब जाणी नहीं. उपर क्षणथी पोतानी स्तुतिनिंदा अने दुःखनी प्राप्ति सांभळीने वेश्याना दुष्ट अध्यवसाय माटे तेमना मनमां काइ पण आव्युं नहीं ज्यारे मनमा पण कांइ न थयु तो पछी वचन अने कायानी वात शी करवी ? ते बने राजपुत्रोनो वृत्तांत शांतिनाथचरित्रमा आपेल छे

बे राजपुत्रोनो वृत्तांत

आ भरतक्षेत्रने विषे रत्नपुर नामे एक नगर छे. ते नगरमा सोळमा तीर्थंकरनो जीव होवाथी महा प्रभाविक श्रीषेण नामे राजा हतो ते अति अद्भूत सौभाग्य अने भाग्यथी विभूषित हतो. तेने अभिनंदिता अने नंदिता नामे बे स्त्रीओ हती ते बने राणीओने बे कुमारो थया हता, ते बने कुमारोने उपाध्याय समीपे भणाव्या हता, परंतु चित्तना दुर्निवार्यपणाने लइने अने कामदेवना दुर्जयपणाने लइने ते बने कुमारो गुरुना शिक्षणने नीरस मानी, पोतानी प्रसिद्धिनी अवगणना करी अने लज्जाना समुद्रनु उल्लंघन करी ते नगरमां रहेनारी, अने रूपथी देवांगनाने पण जितनारी एक अनंगसेना नामनी गणिकाने विषे रक्त थया आ वातनी जाण थता तेना पिताए ते बने कुमारोने एकांते बोलावी आ प्रमाणे शीखामण आपी. " हे कुमारो, तमे आ यौवनवयमा शु आचरण करो छो ?

आना जेवुं महत्त्वाना जगतुं बीजु कोइ कारण नथी, के जेथी पोतानी विवाहित प्रेमवती कुलीन स्त्रीओनो त्याग करी स्वार्थी अने निःस्नेह एवी वेश्याने विषे तमे प्रीति बांधी छे." इत्यादि पिताए तेमने शीखामण आपी तोपण तेमना मनमां तेनी कांइ पण असर थइ नहीं. तेओ उलटा चाबुकना प्रहारने नहीं गणनारा अश्वनी पेठे तोफानी अने वचनस्थान जेणे तोडी नाख्युं छे एवा मदोन्मत्त हाथीनी पेठे स्वेच्छाथी वेश्यानी साथे विशेष विलास करवा लाग्या. एक वार एवुं बन्युं के, ते बन्ने एक वेश्या रूप वस्तुना अभिलाषी होवाथी तेमनामां परस्पर द्वेष उत्पन्न थइ आव्यो. तेओ कटीबद्ध थइ हाथमां शस्त्र लइ जाणे वैरी होय तेम निर्लज्जपणे कलह करवा लाग्या. आ खबर राजाना जाणवामां आव्याथी तेना हृदयमां घणो परिताप थइ आव्यो. तेणे तेमने सुधारवा माटे घणा उपायो कर्या पण तेओ जरा पण सुधर्या नहीं. जाणे असाध्य व्याधिए ग्रस्त थया होय अथवा कोइ प्रबल पिशाचे छल्या होय, तेम बनी गयेला ते कुमारोने माटे सुधारवाना उपायनी अशक्यता जाणी आखरे ते राजाए पोतानी बे राणीओ साथे कालकूट झेर खाधुं अने तेथी तेओ त्रणे मरणने शरण थइ गया. ते बन्ने कुमारो परस्पर युद्ध करता अने लोकोमां निंदाता महा दुःखना भाजन थया हता. आ उपरथी भव्य जीवोए वेश्यानुं व्यसन के जे दुःखे त्यजी शकाय तेवुं छे, तेम जाणी ते करवुं नहीं. उत्तम श्रावके परस्त्रीने विषे कायनो संसर्ग न करवो जोइए. तेणे तो सदा स्वदार संतोषना व्रतमां रहेवुं जोइए. जो एम करवामां न आवे तो कामांधपणानी प्राप्ति थाय छे अने ते कामांधपणुं श्रावकने अनुचित छे. तेने माटे कहे छे के,—

" कामं कामंधेणं, न सावएण कयावि होयव्वं ।
देह धण धम्मक्खयकारिणीहि कामम्मि अइगिद्धी" ॥१॥

" काम-विषयना अभिलाषथी अन्धनी जेम जेनी विवेकरूपी दृष्टि नाश पामी छे, ते कामांध कहेवाय छे. उत्तम श्रावके तेवा कामांध थवुं न जोइए. कामांधपणाथी कामने विषे लोलुपताने लइने धन, देह अने धननो क्षय थाय छे "१

आ प्रमाणे कामांधपणामां दोषोने जाणी गृहस्थे पोतानी स्त्रीमां पण अत्यंत आसक्ति न राखवी. आ शीलनुं स्वरूप पुरुषोने आश्रीने कहेलुं छे,

हवे स्त्रीओने आश्रीने कहे छे—

" जह नारीओ नराणा, तह ताण नरावि पासभूयाउ ।
तम्हा नारीओ विहु, परपुरिसपसग मुज्झति " ॥ १ ॥

" आ लोकमा सयम रूप वाह्यागमा विचरता पुरुषरूपी मृगोने स्त्रीओ तेमनी सद्गतिमा जवामा विघ्नरूप, पाशरूप थाय छे–तेवी रीते स्त्रीओने पुरुषो पाशरूप थाय छे. कामदेव उभय अशे अवलबीने रहेल छे, एटले स्त्री तथा पुरुष बनेमा व्यापीने रहेल छे, तेथी शीलना अभिलाषी पुरुषो परस्त्रीना सगने वर्जे छे. " १

एवी रीते स्त्रीओ पण पोताना पति शिवाय अन्य पुरुषोनी साथे प्रसग, गुप्त वार्त्तालाप, एकाते वास, मुखदर्शन अने मन्मन आलाप वगेरे कामोद्दीपक परिचयनो परहरे छे ब्रह्मव्रतनो आदर करती स्त्रीओए–पोताना भर्त्तारने वर्जाने सामान्य रीते बीजा पुरुष मात्रनो त्याग करवो

हवे सुशील अने दुःशीलनो अतर बे गाथाथी कहे छे—

" ते सुर गिरिणोवि गुरू, जेसि सीलेण निम्मलाबुद्धी ।
गयसीलगुणे पुण पुण, मणुए तणुए तिणाओवि ॥१॥
वग्घाइया जयादु, दुट्टाविजिआ न सीलवताण ।
निय छायपि निररिकय, सासका हुति गयसीला" ॥ २ ॥

" जेमनी बुद्धि शीलगुणे करीने निर्मल छे, ते पुरुषो मेरुपर्वतथी पण मोटा छे, केमके, मेरुपर्वतनु लक्ष योजननु प्रमाण छे अने ते पुरुषोना यशनु त्रण भुवनने विषे व्यापकपणु छे अने जे पुरुषो शीलगुणे रहित छे, तेओ तृणथी पण लघु छे. तृण लघु होवाथी तेने वायु लइ जाय छे अने तेथी ते पर्वत पाषाण वगेरेमा स्खलना पामतु रहे छे अने कुशील पुरुष घणा सचित करेला दुष्कृतकर्मे प्रेरायेलो सतो आ त्रण भुवनने विषे भमतो कोइ ठेकाणे पण स्थिरता पामतो नथी, तेथी कुशील पुरुष तृणथी पण लघु छे जे शीलव्रत पुरुषो छे, तेमने वाघ आदि शब्दथी सर्प, अग्नि, पिशाच वगेरे दुष्ट जीवो भयना हेतु थता नथी, अर्थात् भयना करनारा थता नथी, अने कुशील पुरुषो छे, तेओ–

" सर्वत्र शुचयो धीराः स्वकर्म बलगर्विता. ।
कुकर्मनिरतात्मान. पापाः सर्वत्र शंकिताः " ॥ १ ॥

" जे धीरपुरुषो छे, तेओ सर्वत्र पवित्र अने पोताना सत्कर्मना बलथी गर्व करनारा होय छे अने पापी पुरुषो तो कुकर्मने विषे सदा तत्पर रही सर्वत्र शंकावाला होय छे. " १

शीलवाळा पुरुषोने कोइ ठेकाणेथी भय उत्पन्न थतो नथी. तेने माटे आ प्रमाणे लखे छे–

" जलणो वि जलं जलहिवि गोपय विसहराविरज्जूओ ।
सीलजुअण मत्ता, करिणो हरिणोवमाहुति " ॥ १ ॥

" शीलवाना पुरुषोनी आगळ अग्नि जल थइ जाय छे, समुद्र खावो-चीयु थइ जाय छे, सर्प दोरडु थइ जाय छे अने मदो मत्त हाथी हरिणना जेवो थइ जाय छे. " १

एवी रीते शीलना प्रभावथी सर्व दुष्टोनो नाश थाय, एम कह्यु. हवे शीलना प्रभावथी मनोवांछित लाभ थवानु कहे छे

" वित्थरइजसंवट्ठइ बलच विलसति विविह रिद्धीओ ।
सेवंति सुरा सिझति मंतविज्जा य सीलेण " ॥ १ ॥

" शील पाळवाथी यश विस्तार पामे छे, बल वधे छे, अनेक प्रकारनी ऋद्धिओनो विलास थाय छे, देवताओ सेवा करे छे अने मंत्र तथा विद्या सिद्ध थाय छे. " १

शील सर्व बीजा अलंकारो करता विशेष अलंकार रूप छे, ते दर्शावे छे.

" किंमंडणे हि कज्ज, जइ सीलेण अलंकिओ देहो ।
किं मडणे हि कज्ज, जइ सीले हुज्ज संदेहो " ॥ १ ॥

" शीलरूप आभूषणथी देह अलंकृत होय तो पछी बीजा आभूषणनु शु काम छे ? अने जो शीलरूपी आभूषण न होय तो पछी बीजा आभूषण शा

कामना छे ? " १

अहिं शिष्य शंका करे छे के, पुरुषोने तो हृदयनुं दृढतापणुं होवाथी शील होइ शके परंतु स्त्री जातिना हृदय तुच्छ अने चपल होवाथी तेमज तेमनामां पुरुषोने आधीन रहेवापणुं होवाथी तेओने शील शी रीते रही शके ?" आ शंकाना समाधानमां गुरु कहे छे के, एवी शंका करवी अयुक्त छे. कारण के, सर्व स्त्रीओ एक स्वभाववाळी होती नथी स्त्रीओमां पण घणी स्त्रीओ सुशील धर्मना अनुष्ठानथी अने शास्त्रना श्रवण करवाथी शोभनिक होय छे. तेने माटे कह्युं छे के,

" नारिओ वि अणेगा सीलगुणेण जयम्मि विक्खाया ।
जासिं चरित्तसवणे मुणिणो विम्हेच्चमक्कंति" ॥ १ ॥

" सुभद्रा, सीता, द्रौपदी आदि अनेक स्त्रीओ शीलगुण वडे आ जगतमां विख्यात थयेली छे. तेओना चरित्रो सांभळी मुनिओ पण पोताना मनमां चमत्कार पामी जाय छे. " १

ते विषे आ प्रमाणे कह्युं छे—

" अज्जाओ बंभि सुंदरी, राइमई चंदणा पमुक्खाओ ।
कालत्तए वि जाओ, ताओ वि नमामि भावेण " ॥ १ ॥

" आर्या ब्राह्मी, सुंदरी, राजिमती, अने चंदन बाला, प्रमुख सतीओ त्रण काळने विषे पण शीलगुणथी चलित थइ नथी, ते सतीओने हुं भावथी नमुं छुं. " १

आ जिनशासनने विषे जो के धर्म पुरुषथी उत्पन्न थयेलो छे अने मोटा मोटा ग्रंथोना कर्त्ताओ पण पुरुषोज होय छे, तेथी पुरुष जातिनुं प्रधानपणुं छे. परंतु जे कायर पुरुषो छे, तेमने स्त्रीओ पाशरूप छे, एवा व्यवहार नयनुं अवलंबन करीने प्राय उत्कृष्ट मुनिओए स्त्रीनी निंदा करेली छे तेने माटे कह्युं छे के,

" सोअसरी दुरियदरी, कवडकुडि महिलिआ किलेसकरी ।
वइर विरोअण अरणी, दुक्खखणी सुख पडिवक्खा " ॥ १ ॥

" स्त्री शोकनी सरिता छे, पापनी गुफा छे, कपटनी कुटी छे, क्लेशनी करनारी छे, वैर विरोध करनारी छे, दुःखनी खाण छे अने सुखनी प्रतिपक्षी छे."

तथापि निश्चय नयथी विचार करता पुरुषपणुं अने स्त्रीपणु-बने स्तुति के निंदाना हेतु नथी. केमके सुशीलता अने दुःशीलतानु पुरुषपणु अने स्त्रीपणु कारणभृत छे. तेने माटे कयु छे के,

" इत्थि वा पुरिसंवा निस्संक नम सुसील गुणपुट्ठं ।
इत्थि वा पुरिसं वा चयसु लहु सील पब्भट्ठं " ॥ १ ॥

" स्त्री अथवा पुरुष गमे ते होय, पण शीलगुण जेनामा स्पष्ट होय, तेने नमस्कार थाओ. अने स्त्री अथवा पुरुष गमे ते होय पण जो ते शीलगुणथी भ्रष्ट होय तो तेनो त्याग थाओ. " १

दुःशीलतानु फळ शु छे ? ते कहे छे—

" पडुत्तं पंडत्तं, दोहग्गा मरूवयाय अवलत्तं ।
दुस्सीलया लयाए, इणमो कुसुमं फलं नरओ " ॥ १ ॥

" पांडुरोग-कोढ, नपुंसकपणु, दुर्भाग्य, कुरूप, अल्पआयुष्य, अने निर्बलता ए दुःशीलता रूप लताना पुष्पो छे, अने नरक तेनु फळ छे. " १

सुशीलतानु फल शु छे ? ते कहे छे—

" आरोग्ग सोहग्गं, सधयणं रूव माउबल मउलं ।
अन्नं पि किं अदिज्ज, सीलव्वय कप्परुक्खस्स " ॥ १ ॥

" शील व्रत रुपी कल्पवृक्ष, आरोग्य, सौभाग्य, संघयण, रूप, आयुष्य, अने अतुल धन आपे छे. तेनाथी बीजु अदेय शु छे ? अर्थात् सर्व आपे छे." १

हवे शीलव्रतनु दृष्टांतथी वर्णन करे छे—

" चालणी जलेण चंपा, जीए उग्घाडिअ कवाडतिअं ।
कस्स न हरेइ चित्तं, तीए चरिअं सुभद्दाए " ॥ १ ॥

" जेणीए चालणी वडे जल काढीने चंपानगरीना त्रण दरवाजा उघाड्या

हता, ते सुभद्रा सतीनु चरित्र कोना चित्तने न हरे ? " १

सुभद्रानु चरित्र

वसंतपुर नगरमा जिनदास नामे एक श्रावक रहेतो हतो. तेने अत्यंत शीलगुणवाली जिनमती नामे स्त्री हती तेमने सुभद्रा नामे एक पुत्री थइ हती. सुभद्रा बाल्यवयथी सम्यक्त्व धर्मने धारण करनारी श्राविका थइ हती ते बाला यौवन स्वरूपवती हती. आथी घणा मिथ्यात्वी वणिकोना पुत्रो तेणीना रूपमां मोहित थइ श्रावक जिनदास पासे तेणीनी मागणी करवा मांड्या तोपण जेम कागडो क्षीरनु भोजन न प्राप्त करे, तेम मिथ्यात्वीपणाने लइने तेओ तेणीने जिनदास पासेथी प्राप्त करी शक्या नहीं

एक वखते बुद्धिदास नामना एक बौद्ध धर्मी वणिक् पुत्र चंपानगरी माथी वेपार करवाने वसंतपुरमा रहेवा आव्यो त कोइ व्यापारना प्रसंगे जिनदासने घेर आवता सौंदर्यवती सुभद्रा तेना जोवामां आवी तत्काल मोह पामी तेणे जिनदासनी पासे पाणिग्रहण करवा माटे सुभद्रानी मागणी करी. जिनदासे तेने मिथ्यात्वीपणाना कारणथी आपवानी ना कही. बुद्धिदास पछी ते कन्या मेळववाना इरादाथी कपटी श्रावक थइ कोइ विचक्षण जैन मुनिनी सेवा करवा लाग्यो. ते अल्प समयमां ते मुनि पासथी श्रावकना आचार शीखी गयो अने साचा श्रावक जेवो बनी गयो तेनामां श्रद्धा न हती, पण ते निरंतर देवपूजा, साधु सेवा अने आवश्यकादि धर्म कृत्यो करवा लाग्यो अनुक्रमे तेने जिनदासनी साथे मैत्री थइ, अने परिचय वधता गया आखरे बुद्धिदासने शुद्ध श्रावक जाणी जिनदासे पोतानी पुत्री सुभद्रा तेनी साथ परणावी. कपटी बुद्धिदास सुभद्रानी साथे विषयभोग भोगववा लाग्यो अने सुखे काल निर्गमन करवा लाग्यो

एक वखते जेणे व्यापारमा घणुं द्रव्य उपार्जन कर्यु छे, एवा बुद्धिदासे पोताना देशमा जवा माटे पोताना ससरा जिनदासनी रजा मागी. ते वखते जिनदासे कह्यु, " वत्स, तमे स्वदेशमा जवानी इच्छा राखो छो, ते ठीक छे; परतु तमारा माता पिता विपरीत धर्मवाला छे ते पासा जेम घोमाने न सहन करी शके, तेम मारी श्राविका पुत्री सुभद्राने तेओ केम सहन करी शकशे? " बुद्धिदासे कह्यु, " भद्र, तमे ते विषेनी चिंता राखशो नहीं हु तेमने जुदा घरमां

राखीश, परतु मने स्वदेश जवानी आज्ञा आपो." पछी ससराए कह्यु, "त्यारे खुशीथी जाओ. मार्गमा तमारु कल्याण थाओ." ससरानी आज्ञा थता बुद्धिदास पोतानी स्त्री सुजड्डा साथे रथमा बेसी मार्गे चाल्यो अने अनुक्रमे ते चपानगरी आवी पोहोंच्यो पोतानी स्त्री सुजड्डाने जुदा वासगृहमा राखी पोते माता पिताने घेर गयो, अने तेमने आनदथी मल्यो. तेणे पोतानो सर्व वृत्तात माता पिताने जणाव्यो. पछी पोताना कार्यमा तत्पर थइ पोताने घेर रहेवा लाग्यो.

सुजड्डा जुदा घरमा रही निष्कपट वृत्तिथी अरिहत प्रभुनो धर्म सेवती हती, परतु तेणीनी सासू अने नणद तेणीना छिद्रो जोया करती हती. एक वखते एवु बन्यु के, कोइ जैन मुनि भिक्षाने माटे सुजड्डाना वासगृहमा आवी चाल्या गया. ते जोइ ते बुद्धिदासने तेनी माता अने ब्हेने कह्यु के,"जाइ, तारी वहु कोइ जैन मुनिनी साथे रमे छे." बुद्धिदास बोल्यो, "तमारे एवी जुठी वात कहेवी नहीं, कारण के, मारी स्त्री कुलीन, जैन धर्ममा रक्त अने सती छे. ते कदि पण कुशीला थायज नहीं. तमे धर्मनी इर्ष्याथी आवो मिथ्या आरोप चडावी कहो छो. तमारे आवु अनुचित न बोलवु जोइए." बुद्धिदासना आवा वचनो साभली ते सुजड्डानी सासू अने नणद ते सुजड्डाना विशेष छिद्रो जोवा लाग्या.

एक वखते कोइ जैन मुनि सुजड्डाने घेर भिक्षा लेवाने आव्या. तेज वखते पवनयोगे तेमना नेत्रमा उडतु तरणु पड्यु ते साधुमा जिनकल्पीपणु हतुं, एटले तेओ शरीर सस्कारथी विमुख हता आथी तेमणे ते तरणाने नेत्रमाथी दूर कर्यु नही. आ समये सुजड्डा भिक्षा आपवा आवी. ते वखते तेणीना जोवामा आव्यु के मुनिना नेत्रमा वाध्क पीडा थाय छे आथी तेणीए चालाकीथी जिव्हाना अग्र भागथी ते मुनिना नेत्रमाथी तरणु लही लीधु. तेम करता तेणीना कपालमा करेलु कुकुमनु तिलक ते मुनिना ललाट उपर चोटी गयुं. मुनि भिक्षा लइ तेणीना घरमाथी बाहेर नीकल्या, ते वखते छिद्र जोनारी तेणीनी सासूए पोताना पुत्रने बोलावी ते मुनिना ललाटनु तिलक प्रत्यक्ष बताव्यु. तेवी निशानी जोइ बुद्धिदासे पोतानी मातानु वचन कबुल कर्यु अने सुजड्डाना शील विषे तेने शका उत्पन्न थइ. त्यारथी बुद्धिदास सुजड्डानी उपर विरक्त थइ गयो.

सती सुजड्डा पोताना पतिने पोतानी उपर निःस्नेह जाणी मनमा विचार करवा लागी. "अहा! मारी उपर वृथा दोषारोप थयो. वळी मारा निमित्ते

श्री जिनशासनने पण आ अपवाद लाग्यो,माटे हवे मारु जीवित नकामु छे. जीवितनो त्याग करीने पण हु आ मलिनता दूर करु तो ठीक." आवु विचारी सती सुभद्राए आ प्रमाणे अभिग्रह धारण कर्यो. "ज्या सुधी आ मारा अपवादनी मलिनता दूर न थाय, त्या सुधी हु कायोत्सर्गने पारीश नहीं." आवो अभिग्रह लइ तेणीए जिन पूजा करी अने शासनसुरीनी मनमा धारणा करी. स यांकाले घरना एक खूणामा कायोत्सर्ग करीने रही. तेणीना सम्यक् ध्यानथी आकर्षाएली शासन देवीए प्रगट थइ सुभद्राने कहु,—"हे वत्से, हु तारा बोलाववाथी आवी छु, माटे जे कार्य होय ते कहे. ते वखते सुभद्रादेवी ते देवीना वाक्य सांभळी कायोत्सर्ग पारी सहर्षा थइ देवीने नमन करी बोली—" हे देवी, मारा निमित्ते शासनने लागेलु कलक दूर करो" देवी बोल्या—" वत्से, तु खेद करीश नहीं. तारु कलक दूर करवा माटे अने श्री जिनशासननी प्रभावना वधारवा माटे प्रातःकाले सर्व शुभ थशे. तु निश्चित थइ शयन करी जा." आ प्रमाणे कही देवी अदृश्य थइ गया. ते पछी सुभद्रा निश्चित थइ सुइ गइ. प्रातःकाल ते जागृत थइ देव पूजा, गुरु पूजा वगेरे आवश्यक करी परवारी.

आ समये नगरना दरवाजा के जे राते बध करेला, ते ऊघडी शक्या नहीं. राजाना माणसोए घणु कर्यु, पण कोइ रीते दरवाजाना कमाडो ऊघडता न हता. आथी नगरना लोको मुझाइ गया तेमना ढोरो पशुओ क्षुधा अने तृषाथी आकुल व्याकुल थवा लाग्या पोतानी प्रजाने माथे आवु भारे दुःख थतु जोइ राजा हृदयमा आकुल-व्याकुल बनी गयो. राजाए, विचार्यु के, आ कार्य कोइ देव तरफथी थयेलु होवु जोइए, आवु विचारी राजा पोते पवित्र थइ धूप दीप करी अजलि जोडी आ प्रमाणे बोल्यो—" हे देवदानवो, सांभळो. तमारामांथी जे कोइ मारी ऊपर कोपायमान थया होय तो तमे आ मारा धूप दीपथी प्रसन्न थाओ." राजाना आ शब्दोथी तत्काल आ प्रमाणे आकाश वाणी प्रगट थइ—

" जलमुद्धृत्य चालिन्या कूपतस्ततुबद्धया ।
काचिन्महासती पुर्या कपाटाश्चुलुकैस्त्रिभि ॥ १ ॥
आच्छोटयति चेच्छीघ्रमुद्घटतेऽखिला अपि ।

कपाटा द्वार देशस्था, नोचेन्नैव कदाचन ॥ २ ॥

युग्मम् ।

"जो कोइ सती स्त्री काचा सूत्रना तंतु वडे चाळणीने बांधी, ते वडे कुवामांथी जळ लइ आ नगरीना दरवाजाने त्रण अंजलि छांटे तो ते नगर द्वारना कमाडो उघडी जशे. ते शिवाय कदि पण उघडशे नहीं." १, २

आ प्रमाणे आकाशवाणी सांभळी राजाए सती स्त्रीओने आज्ञा करी एटले नगरनी क्षत्रियाणीओ, ब्राह्मणीओ अने वणिक् स्त्रीओ कुवाने कांठे आवी चाळणी वडे जळ भरवा लागी, परंतु काचा सूत्रना तंतुओ तुटी जवा लाग्या. केटलीएक चाळणीओ कुवामां पडी. कोइनाथी ते काम थइ शक्युं नहीं. बधीओ विलखी थइ पाछी चाली गइ. अने हृदयमां अत्यंत खेद पामवा लागी.

आ वखते विनयवती सुभद्रा पोतानी सासू पासे आवी अने आ प्रमाणे कहेवा लागी—" हे माता, जो तमारी आज्ञा होय तो हुं कुवामांथी चाळणी वडे जळ काढी आ नगरना दरवाजा उघाडवानी इच्छा राखुं छुं." सासूए उंचे स्वरे कह्युं, " अरे जैन मुनिने सेवनारी, ताराथी ए कार्य बनशे नहीं. तारं सतीपणुं हुं सारी रीते जाणुं छुं." हवे बीजा लोकोने जणाववानुं शुं कारण छे? में एकलीए जाण्युं, एटलुं बस छे." नगरनी बधी स्त्रीओ जे दरवाजाने उघाडवा समर्थ थइ नथी, तो हवे तुं शी रीते थइश "? सुभद्रा बोली—" माता, तमे कहो छो, ते युक्त छे, पण हुं पचनी साक्षीए मारा सतीपणानी परीक्षा करी शकीश. तमारे आ कार्यमां मने अटकाववी नहीं." आटलुं कही ते सती सुभद्रा, तेणीनी सासू अने नणंद हास्य करती हती, ते छतां तत्काळ स्नान करवा गइ. स्नान करी देवगुरुने नमन करी ते कुवाने कांठे आवी. त्यां नवकार मंत्र पूर्वक शासन देवीनुं स्मरण करी सूर्य सन्मुख उभी रही आ प्रमाणे बोली—" जो हुं जैन धर्म अने शील रूप अलंकारने धरनारी होउं तो आ काचे तांतणे बांधेली चाळणी वडे कुवामांथी पाणी नीकळजो." आ प्रमाणे कही ते सतीए काचा तंतुओथी बांधेली चाळणी कुवामां नाखी अने तत्काळ तेणीए चाळणीने जळ साथे बाहेर काढी. आ शीलनो प्रभाव प्रत्यक्ष जोइ राजा वगेरे सर्वे सान-

दाश्चर्य थइ गया. राजा पोताना परिवार साथे ते सतीनी आगळ आव्यो अने आ प्रमाणे बोल्यो–" हे पतिव्रता, हे सती, आप कृपा करी आ नगरना दरवाजा उघाडो अने लोकोना संकटने दूर करो." पछी सती सुभद्रा नगर जनाथी वींटाएली, विकस्वर नेत्र तथा मुखवाली अने बिरुदावळी बोलनाराओ जेनी आगळ जय जय शब्द करी रह्या छे, एवी थइ प्रथम नगरना दक्षिण दरवाजे आवी. त्यां नवकार मंत्र बोली तेणीए जलनी त्रण अंजलिओ ते दरवाजा उपर छांटी, एटले जेम जांगुलि मंत्रना जाप वडे सर्पना विषथी आर्त्त एवा नेत्रो उघडी जाय तेम नगरना दरवाजा उघडी गया. ते वखत आकाश मार्गे दुंदुभिनो नाद थयो अने देवताओए जैन धर्मने आश्री जयध्वनि कर्यो आथी नगरना लोको घणाज आश्चर्य साथे हर्षित थइ गया. ते पछी सती सुभद्राए पश्चिम अने उत्तर दिशाना दरवाजाओ तेवी रीते उघाड्या पछी सुभद्राए कह्यु के, में श्री जैन धर्मना प्रसादथी त्रण दरवाजा उघाड्या छे हवे आ नगरमां जे कोइ स्त्री सतीपणानो गर्व करती होय तो तेणी आ चोथो दरवाजो उघाडे" आटलु कही सती सुभद्रा पाछी वळी अने तेणीए ते दरवाजो उघाड्यो नहीं पछी बीजी कोइ स्त्री ते पुर द्वारने उघाडी शकी नहीं ते चंपानगरीनु द्वार अद्यापि बंध रहेलु छे, एम संभळाय छे. सती सुभद्रानु आ चरित्र जोइ ते णीनी सासू अने नणंद श्याममुखी थइ गइ तेणीना पति बुद्धिदासनु मुख तो पोतानी स्त्रीनु आवु आदरभूत शील जोइ शरद् ऋतुना चंद्रनी पेठे देदीप्यमान थइ गयु नगरना लोको ते सतीनी स्तवना करवा लाग्या. राजाए अत्यंत हर्ष पामी सती सुभद्राने उत्तम सत्कारा आप्या अने मोटा उत्सवथी तेणीने तेने घेर पोहोचाडी. पछी ते महासतीना प्रतिबोधथी राजा विगेरे सर्व लोकोए जैन धर्मनो अंगीकार कर्यो सर्व ते सतीनी स्तवना करता पोतपोताने घेर चाल्या गया पाछळथी सुभद्राना ससराना कुटुंबे घणो पश्चात्ताप कर्यो पछी तेओए सतीनी समीपे जइ जैन धर्मने अंगीकार कर्यो सती सुभद्रानो स्वामी बुद्धिदास के जे कपटी श्रावक हतो, ते पछी सत्य श्रावक बनी गयो अने सत्य प्रेमथी सुभद्रा साथे रही सुखे काळ निर्गमन करवा लाग्यो ते बने दंपती गृहस्थ धर्म पाळी अंते संयमने आराधी सद्गतिना भाजन थया हता.

एवी रीते चोथा व्रत उपर सती सुजद्रानी कथा कहेवाय छे. आ प्रकारे शील व्रतनु माहात्म्य सांजळी बीजा पण जव्यजनोए आदर पूर्वक शील व्रत पाळवाने तत्पर थवु. तेनी जावना आ प्रमाणे छे—

" चित्तेअव्वं च नमो, तेसि तिविहेण जेहिअबंजं।
चत्तं अहम्ममूलं, मूलं जवगप्भवासाण " ॥ १ ॥

" जेमणे मन, वचन अने काया–ए त्रण प्रकारे अधर्मनुं अने आ संसारमा गर्जावासनु मूल रुप एवु अब्रह्मचर्य छोमी दीधु छे, तेमने नमस्कार हो. " १



पाचमुं स्थूल परिग्रह विरमण व्रत

स्थूल एवा परिग्रहनु परिमाण करी तेनाथी विराम पामवु, ए पाचमुं स्थूल परिग्रह विरमण व्रत कहेवाय छे. जेमके,

" गेही गिद्धि मणंतं, परिहरिय परिग्गहे नवविहंमि ।
पचमवए पमाणं, करेज्ज इच्छाणुमाणेणं " ॥ १ ॥

" पाचमा स्थूल परिग्रह विरति नामना व्रतने विषे गृहस्थ अनंत गृद्धि–इषणानो त्याग करी नव प्रकारना परिग्रहनु प्रमाण करे छे–आटलुं मारे मोकलु छे, एवी अवधि करे छे. " १

परिग्रहना नव प्रकार आ प्रमाणे छे.

१ क्षेत्र, २ वास्तु, ३ हिरण्य, ४ सुवर्ण, ५ धन, ६ धान्य, ७ द्विपद, ८ चतुष्पद अने कुप्य—एवा नव प्रकार छे. तेमा पेहेलु क्षेत्र ते त्रण प्रकारनु छे. १ सेतु क्षेत्र, २ केतु क्षेत्र अने ३ उजय क्षेत्र. जे रेंट प्रमुखना जलथी सिंचाय, ते सेतु क्षेत्र कहेवाय छे, जे आकाशना पाणीथी सिचाय ते केतु क्षेत्र कहेवाय छे अने जे बनेना पाणीथी सिंचाय ते उजय क्षेत्र कहेवाय छे.

वस्तु एटले घर, हाट, गाम, नगर वगेरे. तेमा घर त्रण प्रकारनु छे. १ खात, २ उच्छ्रित अने ३ तदुजय. जे भूमिगृह—जोंयरादि गृह ते खात-

गृह कहेवाय छे. जे मेहेल, हवेली वगेरे ते उच्छ्रित गृह कहेवाय छे अने जे भोंयरा उपर रहेल मेहेल वगेरे ते तदुभय गृह कहेवाय छे.

हिरण्य एटले सोनु रुपु, जे प्रसिद्ध छे ते. धन एटले गणिम वगेरे चार प्रकारनु छे ते सोपारी, जायफळ वगेरे जे गणी शकाय अथवा गणीने वेची शकाय, ते गणिम धन कहेवाय छे. कंकु, गोळ वगेरे जोखी शकाय अथवा जोखीने वेची शकाय, ते धरिम धन कहेवाय छे घृत, लवणादि जे मापी शकाय अथवा मापी ने वेची शकाय, ते मेय धन कहेवाय छे अने वस्त्र, रत्न वगेरे जे परीक्षा करीने लेवाय ते परीक्ष्य धन कहेवाय छे.

धान्य एटले चोखा, डांगर वगेरे सत्तर प्रकारनु कहेवाय छे. कोइ ग्रंथा तरमा तेना चोवीश प्रकार पण कहेला छे. सत्तर प्रकारना धान्यने माटे आ प्रमाणे लखे छे.

" व्रीहिर्यवो मसूरो, गोधूमो मुद्ग माष तिल चणकाः ।
अणव प्रियगु कोद्रवमकुष्टका शालिराढस्य " ॥१॥
किंच कलाय कुलत्थौ शण सप्त दशापि सर्वे धान्यानि ।

"१ डांगर, २ जव, ३ मसूर, ४ गोधूम, ५ मग, ६ अडद, ७ तल, ८ चणा, ९ अणव, १० काच, ११ कोद्रवा, १२ मठ, १३ शाल, १४ चोला, १५ कलथी, १६ शण अने १७ आढक, ए सत्तर प्रकारना धान्यो कहेवाय छे " ?

द्विपद एटले स्त्री, दास, दासी, मेना, पोपट वगेरे. अने चतुष्पद एटले गाय, भेंस, उंट वगेरे जाणवा. कुप्य एटले शयन, आसन, रथ, गाडा, हल, माटीना ठाम, स्थाल, कचोळा वगेरे घरना उपकरणो.

अहिं शंका करे छे के, ए उपर कहेला पदार्थोनु शी रीते परिमाण करवु ? तेना उत्तरमा कहे छे के, पोतानी इच्छा–कल्पना प्रमाणे तेमनु परिमाण थाय छे कहेवानो आशय ए छे के, जो इच्छानी निवृत्ति थाय तो नियम करती वखते जेटलो परिग्रह सत्तामा रहेलो छे, एटले ते समये जे परिग्रह पोतानी पासे विद्य मान छे, तेनाथी ओछु प्रमाण करवु अने पछी वधेनु द्रव्य धर्मकार्यमा

जोमी देवु. अथवा सत्तानुमाने करीने छता प्रमाणे छेवट नियम ग्रहण करवो. ते उपर आनदादि श्रावकोना दृष्टांतो प्रसिद्ध छे. जो कदि गृहस्थ इच्छा निरोध न करी शके तो जे होय ते करता बमणु के चोगणु मोकळु राखीने बाकी जे शेष रहे तेनो नियम करे

अहिं कोइ शका करशे के, "आ छता परिग्रहनो निषेध करीने जे व्रतनु अगीकार करवापणु छे, ते मरु देशनी वापीकाना जळना स्नाननी जेम कोने हास्यनु स्थान नहीं थाय"? ते शकाना समाधानमा कहेवानु के, भाग्य-योगे कालांतरे करीने इच्छा प्रमाणे क्षेत्रादिक सपदाना पण अधिक आरंभनु थवापणु छे अने कदि सपदा न होय पण इच्छा अनती होय छे, तेनो निरोध करवा माटे व्रतनो अगीकार करवो ते सफळ छे. तेने माटे कह्यु छे के,

"परिमिअमुवसेवंतो, अपरिमिअमणंतया परिहरंतो ।
पावइ परंमि लोए, अपरिमिअमणतयं सुक्खं" ॥१॥

परिमित परिग्रहने सेवतो अने अपरिमित अनतनो परिहार करतो पुरुष आ लोकनो पार पामे छे अने अपरिमित अनत सुखने पामे छे." १

अहिं प्रश्न करे छे के, इच्छा प्रमाणे वस्तु प्राप्त करता इच्छा पोतानी मेळे शात पामे छेज, तो पछी आ परिग्रह परिमाण करवानु शु कारण छे? भोजन करवाथी क्षुधा पनी मेळे समाइ जाय छेज.

तेना उत्तरमा कहेवानु के, एम नथी; कारण के परिपूर्ण समृद्धि प्राप्त थता पण इच्छानी अतृप्तिज छे. तेने माटे कह्यु छे के,

"जह लहेइ रिद्धि, तह लोहो विवड्ढए बहुओ ।
लहिऊण दारुभारं, किं अग्गी कहविविज्झाइ" ॥१॥

"जेम जेम ऋद्धि प्राप्त थती जाय छे, तेम तेम लोभ बहु वृद्धि पामे छे. अग्नि लाकडानो समूह प्राप्त करीने बुझी जतो नथी, पण उलटो वृद्धि पामे छे" १

परिग्रह सर्व क्लेशोनु मूल छे, ते दर्शावे छे.

"सेवति पहुं लंघंति सायरं सायरं भमति वुवं ।
विविरं विसति निविसंति पिजवणे परिग्गहे निरया" ॥१॥

"द्रव्यादि सचयने विषे एकाग्र चित्तवाला प्राणीओ धनना स्वामीनी सेवा करे छे, समुद्रनु उल्लंघन करे छे, आदर पूर्वक पृथ्वीमा जटके छे, सिद्धरस वगेरेने माटे पर्वतनी गुफामा प्रवेश करे छे अने मंत्रादिकनी सिद्धिने माटे श्मशानमां वसे छे. आवा प्रकारनो परिग्रह दुःखनो हेतुरुप छे." १

एवा परिग्रहने दुःखनो हेतु जाणी, तेनाथी सतोष राखवो सारो छे. सतोषी मनुष्यो निर्धन होय तोपण इन्द्रादिकना सुखने अनुभवे छे. तेने माटे कह्यु छे के,

"संतोसगुणेण अकिंचणोवि इंदाइअसुह लहइ ।
इदस्स वि रिद्धि पाविऊण जणो च्चिय अतुट्ठो" ॥१॥

"निर्धन पण सतोपना गुणवमे इन्द्रादिकना सुखने अनुभवे छे अने असतोषी प्राणी इन्द्रनी समृद्धिने पण पामीने जणो रहे छे—अतृप्त रहे छे." १

असतोषी मनुष्यने इन्द्रना सुखो मळे तोपण सतोष वळतो नथी, एटले करतां पण वधारे सुखनी इच्छा करे छे.

उपर कहेला स्वरुपवाला परिग्रह प्रमाणनु स्वरूप अने सतोषनु मूल विवेक छे, ए वात दृष्टातथी देखामे छे.

"विवेक सद्गुणश्रेणिहेतुर्निगदितो जिनै. ।
सतोषादिगुण कापि, प्राप्यते नहि त विना" ॥ १ ॥

"विवेक सद्गुणोनी श्रेणिनु कारण छे, एम जिनेश्वरोए कहेलु छे. ते विवेकविना सतोपादि गुण बीजे कोइ स्थळे पण प्राप्त थतो नथी." १

विवेक प्रगट थवाथी सर्व सद्गुणो पोतानी मेळे आवी ते भव्य पुरुषना

शरीरमां धननी जेम आश्रय करे छे. तेने माटे कह्युं छे के,

> " प्रादुर्भावे विवेकस्य, गुणाः सर्वेऽपि शोभना ।
> स्वयमेवाश्रयंतेहि, भव्यात्मानं यथा धनम् " ॥ १ ॥

आ श्लोकनो अर्थ उपर कहेवामा आव्यो छे.

आ विषे विशेष अर्थ धन नामना शेठना वृत्तांतथी जाणवो.

धन शेठनी कथा

कोइ एक नगरमा " श्रीपति " नामे एक मोटो धनवान् शेठ रहेतो हतो. तेने " धन " नामे एक पुत्र हतो. तेने पिताए एक मोटा धनाढ्य शेठनी पुत्रीनी साथे परणाव्यो. एक वखते आचार्यना सर्व गुणोथी अलंकृत एवा " सोमाचार्य " नामे एक आचार्य ते नगरमा आवी चड्या. तेमने वंदना करवा माटे नगरना घणा लोको गया. ते साथे श्रीपति शेठ पण गयो. आचार्य भगवाने सर्व धर्मनी देशना आपी. ते देशनामा परिग्रह परिमाण व्रतनु स्वरूप विशेषपणे वर्णवी बताव्यु. देशनाने अंते जेने विवेक उत्पन्न थयो छे, एवा श्रीपति शेठे ते सूरिनी पासे ते व्रत ग्रहण कर्युं. बीजा पण श्रावकोए विविध प्रकारना नियमो ग्रहण कर्या. ते पछी सर्वे गुरु महाराजने नमीने पोताने घरे चाल्या गया.

ते पछी श्रीपति शेठे पोताना नियमित करेला द्रव्यथी वधारे रहेला द्रव्यने धार्मिक स्थानमा वापरवा निश्चय कर्यो. श्री अरिहंत चैत्यना निर्मापणनु मोटु फल जाणी एक मोटु जिनालय कराव्यु. ते जिनचैत्यमा शुभ मुहूर्त्तमा उत्तम परिवार साथे तेणे श्री जिनेंद्रनी प्रतिमानु स्थापन कर्यु. ते पछी ते श्रीपति शेठ ते चैत्यमां निरंतर जिन पूजा करता अने सत्पात्रने दान आपता अनुक्रमे पोतानो काल निर्गमन करतो हतो. आयुष्य पूर्ण थता ते शेठ शुभ ध्यानवडे काल करी सद्गतिने प्राप्त थया. ते पछी स्वजनोए एकठा मली तेना पुत्र धनने तेना स्थान उपर स्थापित कर्यो. धन शेठ लोभग्रस्त अने निर्विवेकी हतो. तेणे आ प्रमाणे चिंतव्यु—" अरे मारो पिता गांडो थइ गयो हशे, तेथी तेणे घणु द्रव्य खर्ची नांख्यु छे आवा चैत्य बनाववामा द्रव्यनो व्यय करवो, ते व्यर्थ छे. हवे हु मूल द्रव्य (मुडी) ना व्ययना कारणोने अटकावी नवु द्रव्य उत्पन्न

करवाने उजमाळ थाऊं. " आ प्रकारे चिंतवी ते धन शेठे पोताना निवासगृह शिवाय बीजां घर अने हाट वगेरे स्थानो वेची नाख्यां अने दास, दासी वगेरे जे उपजीवक वर्ग हतो, तेने विसर्जन करी नाख्यो. ते शिवाय चैत्य पूजा तथा प्रभावनादिक सर्व धर्मकृत्योनो पण त्याग करी दीधो. पछी पोते एकलो जीर्ण वस्त्रो पेहेरी खभे कोथळो लइ गोळ प्रमुख लइ वेचवा माटे गामोगाम फेरी करवा लाग्यो. भोजन वखते ते मात्र तेल मिश्रित जुनी कळथी प्रमुख नीरस आहार करवा लाग्यो. धनशेठनी आवी कृपण स्थिति जोइ तेनी कुलवती अने शीलवती स्त्री हृदयमां खेद पामवा लागी. तेणीए तेने घणी हित शिक्षा आपी परंतु ते लोभादिकथी ग्रस्त हतो, एटले तेना वचनने अल्प अंशे पण मानतो नहीं.

आवी रीते केटलोक समय वीत्या पछी पेला आचार्य महाराज तेज स्थले पुनः आवी चड्या. भव्य जीवो तेमने वंदना करवा माटे आववा लाग्या. आचार्य महाराजे तेमने देशना आपी. ते आचार्ये श्रीपति शेठनी स्थिति अने प्रवृत्ति विषे लोकोने पुछ्युं. ते लोकोए कह्युं, " स्वामी, श्रीपति शेठ कालधर्मने पाम्यो छे. हाल तेनो " धन " नामनो पुत्र विद्यमान छे. ते घणो लोभाभिभूत थइ गयो छे. निर्विवेकपणे ते जिनपूजादि सर्व धर्मकृत्यो छोडी पशुनी जेम फोगट काल गुमावे छे. " ते श्रावक लोको आ प्रमाणे ते धनशेठनी स्थितिनुं व्यान करता हता, तेवामां खभा उपर कोथळो लइ मलिन वेषवाळो ते धन शेठ कोइ गाम तरफ उतावळे जतो दृष्टिए पड्यो. ते वखते श्रावकोए कह्युं, "स्वामी, जुओ, आ श्रीपतिनो पुत्र धन शेठ जाय छे " गुरु महाराज ते धनती एवी स्थिति जोइ, तेनो उपकार करवाने माटे पोतानी पासे बेठेला एक श्रावकने मोकली तेने बोलाव्यो. धन गुरुनी समीप आव्यो नहीं. ते तेज ठेकाणे उभो रही बोल्यो, " भाइ, हुं द्रव्यनो अर्थी छुं. मारे गुरुनी साथे काइ काम नथी. " ए वचना आ शब्दो सांभळी आचार्य महाराज केटलोएक लाभ धारीने पोते त्यां गया अने बोल्या, " भाइ, तुं श्रीपति शेठनो पुत्र छे. तारा जेवाने आवी रीते धर्मकार्यनी विमुखता घटती नथी. कदि ताराथी कोइ नवुं धर्मकार्य न बनी शके तो काइ नहीं, पण तारा पिताए करावेला जिनचैत्यमां रहेल प्रभुनी प्रतिमानुं मुखकमळ जोइ ते पछी तारे भोजन करवुं, एवो नियम तुं अंगीकार कर " गुरुना

आ वचनो सांजळी, ते धन बोल्यो. " महाराज, हुं मारा कार्यमाथी अत्या-रे भ्रष्ट थाउं छुं, माटे हाल मने छोमी द्यो परतु आजथी पछी तमारो कहेलो नियम मारे प्रमाण छे. " आ प्रमाणे कही ते धन पोताना धर्मकार्यमा प्रवर्त्यो अने आचार्य भगवान् त्याथी विहार करीने बीजे स्थाने चाल्या गया.

त्यारथी कोइ शुभ कर्मना उदयथी ते शेठ निरतर प्रभुनु मुखकमळ जोया पछी भोजन करतो हतो. तेनी स्त्री पोताना पतिनी आ प्रवृत्ति जोइ खु-शी थती हती. तेणी धारती हती के, आवा लुब्ध पुरुषना हृदयमा आवो शुभ भाव उत्पन्न थयो छे, तेथी जणाय छे के, आ पुरुषनो कोइ शुभोदय थशे.

एक वखते एवु बन्यु के, लोभी धन गाममा फेरी करी बपोरे मोमो आव्यो. ते उतावळमा प्रभुना मुखकमळनु दर्शन भुली गयो, अने तरत भोजन करवा बेठो. ते वखते तेने याद आव्यु के, " अरे ! में हजु देवदर्शन कर्या नथी, माटे जइने सत्वर करी आवु. " आवु विचारी ते तत्काळ बेठो थयो अने जि-नचैत्यमा आवी प्रभुना दर्शन करवा लाग्यो. तेवामा चैत्यनी अदर " हे धन, माग, माग," एवो ध्वनि प्रगट थयो आ शब्द साभळी धन चारे तरफ जोवा लाग्यो, पण ते शब्द कहेनार कोइ माणस तेना जोवामा आव्यु नही. आथी तेना मनमा अतिशय आश्चर्य उत्पन्न थयुं. ते वखते ते धने आ प्रमाणे कह्यु, " तमे जे बोलो छो, ते कोण छो?" पुनः आ प्रमाणे ध्वनि थयो. "हु आ चैत्यनो अधिष्ठायक अ-ने श्रीअरिहत भगवाननो उपासक देवता छु. तने तारा नियममा दृढ जोइ हु तुष्यमान थयो छु, माटे तु वाछित वर माग " धन बोल्यो—" हु मारी स्त्रीने पुछीने मागीश. " आ प्रमाणे कही धन पोताने घेर आव्यो अने तेणे पोतानी स्त्रीने ते सर्व वृत्तात कह्यो. ते साभळी तेनी विवेकी स्त्रीए विचार कर्यो के, " घ-रमा द्रव्यनी काइ न्युनता नथी, पण आ मारा पतिमा विवेकनी खामी छे. जो तेनामां विवेक आवे तो पछी सर्व कार्यनी सिद्धि थशे. " आवु विचारी ते स्त्रीए धनने कह्यु, " स्वामी, तमे सत्वर ते देव पासे जाओ अने तेमनी पासे विवेक मागो. " स्त्रीनु आ वचन मान्य करी ते धनशेठ कोथळो फे-रवतो चैत्यमा आव्यो. अने ऊंचे स्वरे बोल्यो, " हे देव, जो तमे मारी उपर तुष्ट थइ मने वर आपवा इच्छता हो तो मने विवेक आपो. " तेना

आ वचनो सांजळी अने तेना दुष्कर्मनो क्षय जाणी देवताए कह्यु, " हे धन, सर्व प्रकारनी जमतानो नाश करनारु विवेक रूपी रत्न हु तने आपु छु. हवे तु घेर जा. " ते पछी धन विवेकनु वरदान प्राप्त करी पोताने घेर आवी जोजन करवा बेठो. ते वखते तेनी स्त्रीए तेलथी मिश्रित एवु कळथीनु अन्न तेनी आगळ लावीने मुक्यु. ते जोइ धन विवेकवान थइ बोल्या, " अरे ! आपणा समृद्धिवाला घरमा आवु दुष्ट भोजन केम ? " स्त्रीए कह्यु " स्वामी, तमे जेवु अन्न लावी आपो छो, ते हु राधी आपु छु " पछी तेणे घरमा नजर करी तेवामा स्थाने स्थाने विविध जतुओना जाळथी जरेलु तेवु अन्न अने बीजा हलका पदार्थो तेना जोवामा आव्या. दारिद्र्यथी जरपूर एवो पोताना घरनो देखाव जोइ धन पोताना हृदयमा विचार करवा लाग्यो, " अरे ! मने अज्ञानीने धिक्कार छे. में आवा आचरण करी मारा कुलने लजव्यु. में काइ पण धर्मकृत्य कर्यु नहीं. आटला दिवसो नकामा फोगट गुमाव्या. हवे हु उत्तम व्यवहारने विषे उद्यमवान् थाउ तो वधारे सार. " आ प्रमाणे चिंतवी तेणे पूर्वे वेची दीधेला घर, हाट वगेरे पाछा खरीदी लीधा, अने सर्व उपजीवक वर्गने पाछो बोलाव्यो. पोताना पिताना समयनी जे व्यवस्था हती, तेवी व्यवस्था करी दीधी. पछी पोताना पिताए करावेला चैत्यनो अने बीजा पण चैत्योनो विशेषपणे पुजा प्रभावनादि उत्सव कर्यो अने वर्द्धमान परिणामथी बीजा दानादिक कृत्यो करवा माड्या. गुरुना योगथी परिग्रह परिमाणनु व्रत लइ तेणे वधारानु द्रव्य सर्व धार्मिक कार्योमा वापरवा माड्यु अने अनुक्रमे ते बीजा व्रतोना नियमो लेवामां पण उद्यत थयो. आथी धनशेठ नगरना महाजन प्रमुख लोकोमा माननीय थइ पड्यो. अने उत्तम प्रकारनी यश लक्ष्मीने प्राप्त थयो एवी रीते वर्ता ते धन शेठ चिरकाल श्रावक धर्मने पाळी छेवटे सद्गतिनो जाजन बन्यो हतो.

आ प्रमाणे पाचमा परिग्रह परिमाण व्रत उपर ते धन शेठनी कथा कहेवाय छे बीजा पण जव्य प्राणीओए हृदयमा विवेकने धारण करी परिग्रह परिमाण करवामा उद्यमवत थवु अने लोजादिकनो त्याग करवो के जेथी उजय लोकमा मनवाछित समृद्धिनी सिद्धि प्राप्त थाय छे.

ते उपर आ प्रमाणे जावना छे—

" जह जह अन्नाणवसा, धणधन्नपरिग्गहं बहु कुणसि।
तह तह लहु निमज्जसि, भवे भवे भारियतरिव्व ॥१॥
जह जह अप्पो लोभो, जह जह अप्पो परिग्गहारंभो।
तह तह सुहं पवड्ढइ, धम्मस्स य होइ संसिद्धि ॥ २ ॥
तम्हा परिग्गह उ–ज्झिऊण मूलमिह सव्वपावाणं ।
धम्माचरण पवन्ना, मणेण एवं विचिंतिज्जा " ॥ ३ ॥

" हे भवि, जेम जेम तुं अज्ञानना वशथी धन तथा धान्यनो परिग्रह करे छे, तेम तेम जाणे अति भारथी भरेलो हो, तेम तुं भवभवने विषे डुबे छे. जेम जेम थोडो लोभ होय छे, अने जेम जेम परिग्रहनो आरंभ अल्प होय छे, तेम तेम परिग्रहनुं सुख वधे छे अने धर्मनी सिद्धि थाय छे तेथी परिग्रह सर्व पापोनुं मूल छे एम धर्मना आचरणमा प्रवीण एवा मन वडे विचारी तेनो त्याग करवो." १–२–३

एवी रीते पाचमुं व्रत कहेवामा आव्युं. आ व्रतो महाव्रतनी अपेक्षाए लघु–नाना छे, तेथी ते अणुव्रत कहेवाय छे.

त्रण गुणव्रतो

आ व्रतो अणुव्रतोना गुण (उपकार)ने माटे वर्ते छे, तेथी ते गुणव्रत कहेवाय छे.ते गुणव्रतो दिशि परिमाण वगेरेथी हिंसाना निषेध करनार होवाथी अणुव्रतोने उपकारक छे.

पेहेलुं दिशिपरिमाण गुणव्रत

जे सर्व प्राणीओथी सर्व भवमा ऊर्ध्व, अधो अने तिर्यग् दिशामा गमन आश्रीने परिमाण करवामा आवे छे ते पेहेलुं दिक्परिमाण गुणव्रत कहेवाय छे.तेनी अंदर " मारे दरेक दिशामा आटली भूमि आक्रमण करवी, ते करता वधारे करवी नहीं " एवो नियम लेवाय छे.

अहि कोइ शंका करे के, दिक्परिमाण व्रत लेवाथी शो लाभ थाय

छे? तेना उत्तरमा कहेवातु छे. ते दिक् परिमाण व्रत लेवाथी लोजनो निग्रह थाय छे अने ते मोटा गुणना लाभनो सजव छे. तेने माटे आगममा कहेवु छे.

" जुवणक्कमणसमत्थे, लोजसमुद्देवि सप्पमाणंसि ।
कुणइ दिसापरिमाण, सुसावओ सेजवंधं व " ॥ १ ॥

"आ त्रण जुवनने आक्रमण करवाने समर्थ एवा लोजरुपी समुद्रने विषे गति करतो एवो श्रावक दिशापरिमाण रुप सेतुना बधने करे छे " १

एटले नियमित करेला क्षेत्रथी बाहेर मोटा लाजनी प्राप्ति होय, तो पण ते त्या जतो नथी, तेथी आ दिशा परिमाणव्रतथी तेटलो लोजनो निग्रह थाय छे.

ते विषे व्यतिरेकथी दृष्टात कहे छे

" करुणा वल्ली बीय, जइ कुव्वतो दिसासु परिमाण ।
राया असोगचदो, ता नरए नेव निवडतो " ॥ १ ॥

" दयारुप वल्लीना बीजसमान एवु ते दिशिपरिमाण व्रत कर्यु होत तो राजा अशोकचन्द्र नरकमा पडते नहीं " १

अर्थात्—तपावेला लोढाना गोळा जेवा आ पृथ्वीमडल पर भ्रमण करवाना निषेध करवारुप आ व्रतवडे गृहस्थे एवी जावना करवी के, आ दिशिपरिमाण व्रत दयारुप वेलडीनु बीज छे

राजा अशोकचन्द्रनी कथा

चपानगरीमा श्रेणिक राजानो पुत्र अशोकचद्रनामे राजा हतो ज्यारे तेनो जन्म थयो, त्यारे तेनी माताने दु.स्वप्न आववाथी, तेणीए ते पुत्रने बाहेर मूकेलो, तेवामा एक कुकडीए आवी तेनी आगळी करडी खाधी हती. आथी ते राजा कोणिकना नामथी पण ओळखातो हतो.

एक वखते श्रीवीरप्रभु ते चपानगरीमा समोसर्या ते समये जगम कल्पवृक्ष समान ते प्रजुनु आगमन साजळी राजा अशोकचन्द्र मोटा उत्सव साथे तेमने वदना करवाने गयो वीरप्रभुए धर्मदेशना आपी, देशना समाप्त थया पछी

अशोकचंद्रे प्रभुने आ प्रमाणे पूछ्युं, "हे स्वामी, जेणे जोगनो त्याग कर्यो नथी, एवो चक्रवर्त्ती मृत्यु पामीने कइ गतिमा जाय छे ?" प्रभु बोल्या, "तेवो चक्रवर्त्ती मरण करीने सातमी नरके जाय छे." अहिं मरण शब्द ग्रहण करवानी चक्रवर्तीनी साते नरकनी गति समजवी, एम जगवती सूत्रमा कह्यु छे. राजा अशोकचंद्रे पुनः पुछ्युं, "त्यारे शु मारे पण सातमी नारकीए जवु पडशे ?" स्वामीए कह्यु, "राजा, तु चक्रवर्त्ती नथी, तेथी तारे सातमा नरकनी गति क्याथी होय ? तु तो छठी नरके जवानो छु." राजा कोणिक पोताने चक्रवर्त्ती मानतो हतो, तेथी ते बोल्यो, "स्वामी, हु चक्रवर्ती नथी, एम मनाय ? [illegible] के, मारी सेना एटलीमरी छे के, जे लाखो हाथी, अश्व, रथ अने [illegible] सुजटोथी आखा जगत्ने सहार करवाने समर्थ छे. तेमज घणा मकानन [illegible] द्रोणमुख पाटण, खेटक, कर्बट, नगरादि अने खाणो मने दाण आपनार छे. तेमज व्यापारना करो, अक्षय निधानो पण मारा ताबामा छे. मारो [illegible] जयकर छे, ते सर्व शत्रु वर्गने आक्रमीने रहेलो छे. मारे शु ओछु [illegible] मारामा चक्रवर्त्तीपणु न होय ?" राजाना आ वचनो सांजळी [illegible] "राजन्, एटली समृध्दि होय तेथी शु थयु ? चक्रादिक चौद [illegible] क्रवर्त्तीपणु कदिपण होतु नथी." प्रभुना आवा वचन सांजळी [illegible] शोकचंद्र त्याथी उठीने पोताने स्थाने गयो. अने त्या जइ [illegible] एकेंद्रिय रत्नो बनाव्या पोतानी पद्मावती स्त्री उपर स्त्री [illegible] पोताना पट्टहाथीने गजरत्न ठराव्यो. बाकीना रत्नो पण [illegible] धा. पछी ते पोतानी मोटी सेना लइ पूर्वादि दिशाओ [illegible] कर्यो. ते मोटा सैन्यथी परिवृत थइ वैताढ्य पर्वतनी [illegible] व्यो. त्या तेणे बनावटी दंड रत्नथी ताडना करी [illegible] नहीं. ते वखते ते गुहानो द्वारपाल कृतमाल देव [illegible] गट थयो अने बोल्यो, अरे! नहीं प्रार्थना करवा [illegible] कोण छे ? अहिंथी चाल्यो जा. ख्योंखारा [illegible] छे ?" कोणिक राजाए कह्यु, "हु जरतक्षेत्रने [illegible] थयो छु. तेथी तु आ गुहानु द्वार सत्वर [illegible] "अरे कोणिक ! आ जरतक्षेत्रने विषे बार [illegible]

तेथी तुं चक्रवर्त्ती नथी पण कोइ चक्रवालो लागे छे." अशोकचन्द्र बोल्यो, "देव, तने खबर नथी. हु मारा पुण्यना बलथी तेरमो चक्रवर्त्ती थयो छु. माटे तु द्वार उघाड अने विलंब करी मने खेद न पमाड." अशोकचन्द्रना आवा आग्रही वचन सांभळी अने जाणे तेनामां भूतनो आवेश थयो होय तेम जाणी ते क्रोधातुर बनी गयो. तत्काल तेनामांथी जाज्वल्यमान अग्निनी ज्वाला प्रगट थइ. अने तेथी तेणे तेने दग्ध करी छठी नरकनो अतिथि करी दीधो हतो.

आ प्रमाणे अशोकचन्द्रनी कथा कहेवाय छे. आ वृत्तांत सांभळी बीजा भव्य मनुष्योए दिशिपरिमाण व्रतनो अनादर न करवो. जो ते व्रतनो अनादर करवामां आवे तो अशोकचन्द्रनी जेम आ लोकना कष्टने पामी परभवमां नरकनी पीडा भोगवे छे. तेथी ते व्रतने ग्रहण करवामां आलस करवु नहीं.

तेनी भावना आ प्रमाणे छे—

" चिंतेअव्व च नमो, साहूणं जे सया निरारंभा ।
विहरति विप्पमुक्का, गामागर मंडिअं वसुहं " ॥ १ ॥

"जेओ हमेशां आरंभ रहित अने मुक्त थइ ग्राम, आकर (खाणो)थी मंडित एवी आ पृथ्वीमां विहार करेछे, तेवा साधुओने नमस्कार हो, एम चिंतववु." १

आ प्रमाणे ग्रहु दिशि परिमाण नामे पहेलु गुणव्रत छे.

भोगोपभोग प्रमाण नामे बीजु गुणव्रत

जे पदार्थो एक वखत भोगवाय ते भोग एटले भोजन, पुष्प वगेरे. अने जे वारवार भोगवाय ते उपभोग, एटले स्त्री, वस्त्र, आभूषण वगेरे. तेनु *परिमाण करवाथी जे व्रत लेवाय ते " भोगोपभोग परिमाण " नामे बीजु गुणव्रत* कहेवाय छे. ते व्रत भोजनथी अने कर्मथी— ए बे प्रकारे छे. ते विषे कह्यु छे के,

" भोयण कम्मेहि दुहा, बीय भोगोवभोग माणवय ।
भोयणओ सावज्ज, उसग्गेण परिहरेइ ॥ १ ॥

" तह अतरंतो वज्जइ, बहु सावज्जाइंएस भुज्जाइं।
वावीसं अन्नाइवि, जहारिहं नाय जिणधम्मो" ॥ २ ॥

" बीजुं जोगोपजोग परिमाण व्रत जोजनथी अने कर्मथी एम वे प्रकारे छे. तेमा भोजनथी श्रावक उत्सर्ग मार्गे करी (मुख्य वृत्तिए करी) सावद्य (सचित अने एषणीय) जोज्यने परिहरे छे अने अने ए तेने परिहरवानी अशक्ति होय तो एकला सचित्तनेज परिहरे छे. [ते गाथामा कहुं नथी, तो पण जाणी लेवुं] तथापि अशक्त छता पण जिनधर्मने जाणनारो श्रावक बहु सावद्य एवा वावीश अजक्ष्यने परिहरे छे" १,-२

ते वावीश अजक्ष्योना नाम

" [५]पंचुंबरि [९]महविगई, [१०]हिम, [११]विस [१२]करगेअ [१३]सव्वमट्टीअ
[१४]राईजोअणगंचिय, [१५]वहुबीज [१६]अणंत [१७]संधाणं ॥ १ ॥
[१८]घोलवम्य [१९]वायंगण, [२०]अमुणियनामाणि फुल्लफलयाणि ।
[२१]तुच्छफलं [२२]चलिअरसं, वज्जइ जुज्जाइ वावीसं" ॥ २ ॥

" पाच उंवरा, एटले उंवरो, पीपळानी पेपरी, वड, प्लक्ष, काकोदुंवरिका, ए पाचना फल जे मशकना आकारवाला अने बहु जीवोथी जरेला होय छे, तेथी ते वर्जवा. तथा मद्य, मांस, मध, अने माखण-ए चार विगय (विकृति) ते घृतादिकनी अपेक्षाए महाविकारना हेतु रुप होवाथी वर्जवी. तेम वली ते क्रूर अध्यवसायना हेतु रुप छे, अने तेनी अंदर तत्काल तेना जेवा वर्णवाला जीवो उत्पन्न थइ जाय छे, तेथी ते वर्जवा योग्य छे. तेने माटे कह्यु छे के,

" मज्जं महुंमि मंसे, न वणीयंमि चउत्थए चेव।
उप्पज्जंति असंखा, तव्वण्णा तत्थ जंतुणो " ॥ १ ॥

" मद्य, मधु, मास, अने माखण ते चारमा तेना जेवा वर्णवाला असंख्याता जंतुओ उत्पन्न थाय छे. " १

तेम हिम, विष, करा, माटी, अने रात्रिजोजन ते प्रसिद्ध छे. तेऊं

मां हिम, करा, माटीने विषे घणा जीवोनी उत्पत्तिनो सन्नव छे. अने विष तो पोतानेज उपघात करनारु अने महामोहनु उत्पादक छे. रात्रिन्नोजनमा घणा जीवोनो सपात थवानो सन्नव छे अने तेथी ते आ न्नव तथा परन्नव सबधी बहु दोषोथी दूषित होवाथी वर्जनीय छे. मसक [धमण]ने विषे मगनी पेठे अगणित बीज रहेला होय ते बहु बीज कहेवाय छे. पेपा वगेरे बहु बीज छे, तेना दरेक बीजमा जीवोनु उपमर्दन थवानो सभव छे. जे म्लेच्छ कदादिक ते अनतकाय छे. तेना बत्रीश न्नेद छे. तेनी अदर पण अनत जीवोनी उत्पत्ति छे. सधान—एटले घोल अथाणु. तेमा पण बहु जीवनी व्याप्ति छे. घोळवमा एटले काची छाश, दहीं अने दाळना वमा, तेने मिश्र करीने करवामा आवे छे. ते विदल रुप छे. तेमा सूक्ष्म त्रस जीवोनी उत्पत्ति छे, ते केवलिगम्य छे. तेने माटे बृहत्कल्प सूत्रमा कह्यु छे,

> " जइ मुग्ग मास पमुहं, विदलं कच्चमि गोरसे पडइ ।
> ता तस जीवुप्पत्तिं, न्नणति दहिए तिदिण उवरिं" ॥१॥

" मग, अमद, प्रमुख काचा गोरस (दहीं छास)मा पमे तेने विदल कहे छे. तेमा त्रस जीवनी उत्पत्ति छे, एम प्रन्नु कहे छे. " १

वृताक—एटले रींगणादिक, ते प्रसिद्ध छे. ते बहु बीज छे. तेनु अतिशय लोक विरुद्धपणु छे. तेमा बहु जीवमयपणु छे. वळी ते घणी निद्रा करनार तथा कामने उद्दीपन करनारा दोषना हेतुरुप छे, माटे वर्जवा योग्य छे

पोताथी के परथी जेमनु नाम जणाय नहीं, तेवा अजाण्या फूल तथा फल वर्जवा, कारण के, तेनी अदर जीवोनो उपघात रहेलो छे. तेम जे न्नक्षण करवाथी तृप्ति अल्प थाय छे अने तेनो आरम्न मोटो होय, ते तुच्छ फल कहेवाय छे, ते गगेटक, सींगोमा प्रमुख कोमळ फलो जाणवा. तेथी अनर्थ दमनो सन्नव छे एटले थोमा आरन्नथी श्रावकने एह व्यवहार चनावता अनर्थ दम होतो नथी. चलित रस एटले समीगयेलु दुर्गंधी धान्य, (फुगी वळीगयेलु होवाथी) ते अनंतकाय कहेवाय छे, माटे वर्जवा योग्य छे. सुखमी प्रमुख काल उपरात रहेल होय ते तथा समी गयेला दाणा के जेमना वर्ण अने गधादिक बदलाइ गया होय ते कुत्सित अन्न कहेवाय छे

आ प्रमाणे आ बावीश अभक्ष्यो कहेला छे. परंतु तेटला बावीशज अभक्ष्य छे, एम न समजवु, कारण के उपलक्षणथी बीजा पण अभक्ष्य कहेवाय छे. जेमके, जेने बे दिवस उल्लंघन थइ गया होय, राधेला चोखाए करी व्याप्त एवुं दहीं तथा पत्र पुष्पादि, जे बहु सावद्य होय ते वर्जवा.

अल्प सावद्य होय तोपण तेनो नियम करवो. जेमके, " मारे आटला प्रमाण ओदनादि जमवा. " तेवी रीते चित्तनी अत्यंत गृद्धि-लोलुपता, उन्माद तथा अपवाद वगेरेने उत्पन्न करनारा वस्त्र, आभूषण अने वाहनादिक वर्जवा, अने बाकीनानु प्रमाण करवु. प्रमाणमा विरतिनी परिणति एटले विरति करवाना परिणाम होय छे, माटे परिमाण अवश्य करवु.

आहि केटलाएक अज्ञानी लोको कहे छे के, "आ संसारमा शरीरज साररुप छे, माटे ते शरीरने जेम तेम पोषवु जोइए.तेमा भक्ष्य अभक्ष्यनी कल्पना शा माटे करवी ? " आ सबंधे तेमने कहेवानुं के, तेओ खरेखरा मूर्खज छे. कारण के, आ शरीरने बहु प्रकारे पोषण करवामा आवे, तोपण ते शरीरनु असारपणुज होय छे, तेथी तेवा असार शरीरने अर्थे विवेकी पुरुषोए अभक्ष्य भक्षण करवु नही. तेने माटे कह्यु छे के—

" अइ पोसिअंपि विहडइ, अंते एअं कुमित्तमिव देहं ।
सावज्ज भुज्ज पावं, को तस्स कए समायरइ " ॥ १ ॥

"आ शरीर अति पोषण कर्या छता पण अंते नठारा मित्रनी पेठे विनाश पामी जाय छे, तेथी तेवा शरीरने माटे सावद्य भोगववानु पाप कोण आचरे ? " १

हवे दृष्टांत सहित आ व्रत लीधानु फळ देखाडे छे.

" मंसाईणं नियमं, धीमं पाणच्चए वि पालंतो ।
पावइपरंमिलोए, सुरभोए वंकचुलोव्व" ॥ १ ॥

"मांसादिकनो नियम बुद्धिमान् मनुष्य प्राणना त्याग सुधी पण पालन करतो तो परलोकमा वंकचूलनी पेठे देवलोकना सुखने पामे छे.

वंकचूलनी कथा

आ भरतक्षेत्रने विषे विमल नामे राजा हतो. तेने सुमगला नामे स्त्री हती ते बने दंपतीथी बे संतानो उत्पन्न थया. तेमा पुष्पचूल नामे एक पुत्र अने पुष्पचूला नामे एक पुत्री हती. ते बने अनुक्रमे यौवन वयने प्राप्त थया. राजकुमार पुष्पचूलने एक सुंदर राजकन्या साथे परणाव्यो. राजकन्या पुष्पचूलाने कोइ उत्तम राजकुमारनी साथे परणावी राजकन्या पुष्पचूला विवाहित थया पछी थोडाज वखतमा विधवा थइ आथी राजा विमल अने सुमगला राणी घणाज दुःखी थइ गया. विधवा थयेली पुष्पचूला तेना भाइ पुष्पचूल उपर अति प्रेम राखती हती. आथी ते भ्रातृ स्नेहने लइने पोताना पिताने घेर रही हती.

राजकुमार पुष्पचूल चोरी वगेरे दुर्व्यसनोमा पडी गयो, तेथी ते नगरना लोकोने अतिशय पीडवा लाग्यो. आ दुर्व्यसनने लइने लोकोमा ते वंकचूलना नामथी ओलखावा लाग्यो. तेनी व्हेन पुष्पचूला पण तेना जेवीज बुद्धिवाली थइ, तेथी ते वंकचूलाना नामथी लोकोमा विख्यात थइ. वंकचूल नगर जनोने अत्यंत पीडतो हतो. तेनी घणी फरीयादो राजाना सांभळवामा आवी. आथी राजा तेनी उपर रोषातुर थइ गयो अने तेणे वंकचूलने पोताना राज्यनी हदमाथी काढी मूक्यो. तेनी बेहेन वंकचूला अने तेनी स्त्री तेना प्रेमने लइने तेनी पाछळ चाली नीकळी. वंकचूल पोतानी व्हेन अने स्त्रीने साथे लइ जंगलमा भमवा लाग्यो. कोइ एक भयंकर अटवीमा ते आवी पहोंच्यो, तेवामा कोइ धनुर्धर भिल्ले तेने जोयो. ते भिल्ले आकृतिथी तेने राजपुत्र जाणी बहु मानथी पोतानी पल्लीमां राख्यो. तेणे आदरथी तेनो वृत्तांत पुछयो. वंकचूले तेने पोतानो वृत्तांत कही संभळाव्यो. तेनो वृत्तांत जाणी ते भिल्लनी तेनी उपर घणी प्रीति थइ. ते समये त्या मूल पल्लीपति मरण पामेलो हतो, तेथी तेना स्थान उपर वंकचूलने स्थापवामा आव्यो. वंकचूल एक मोटो भिल्ल राजा बनी गयो. ते भोलभीओनी साथे रहेवा लाग्यो अने भीलोनी साथे लोकोने लुटतो ते स्थले सुखे काल निर्गमन करवा लाग्यो.

एक वखते वर्षाऋतुनो समय आव्यो. तेवामा चंडयशा नामना एक

आचार्य केटलाएक मुनिओना परिवारना साथमाथी जुदा पडी गयेला होवाथी भुला पडी ते पल्लीमा आवी चड्या. ते आचार्य पोताना आचारमा सारी रीते वर्तनारा हता, तेथी वर्षामा निरंतर नवा उत्पन्न थयेला अंकुराना मर्दनथी अने सचित्त जलना संघट्टथी भय पामता हता, तेथी ते समय तेमने विहार करवामा अयोग्य लाग्यो. आथी तेओ ते पल्लीमा पेशी गया हता. वंकचूले कुलीनताने लइने ते मुनिने प्रणाम कर्यो. गुरुए तेने धर्मलाभनी आशीष आपी. गुरुए ते स्थले वसवा माटे वंकचूलनी पासे जग्यानी मागणी करी. ते वखते वंकचूले कह्यु, " महाराज, हु तमोने रहेवा वसति आपु, परंतु तमारे ते जग्यामा के मारी हदमा धर्मनी प्ररूपणा करवी नहीं. कारण के, हिंसा, असत्य, अने चोरी वगेरेनो त्याग करवाथी धर्म प्राप्त थाय छे. परंतु अमारी आजीविका तो तेमाज रहेली छे. माटे तमारे आ स्थले धर्मनी प्ररूपणा करवी नहीं. "

आचार्य चंद्रयशाए ए वात कबुल करी. पछी वंकचूले तेमने रहेवाने माटे निरवद्य स्थान आप्यु. पछी गुरु स्वाध्याय ध्यानादि धर्मकृत्य करता ते स्थले चातुर्मास्य रह्या हता.

एक वखत वंकचूले आचार्यने आहारादिकने माटे निमंत्रण कर्यु, त्यारे आचार्ये कह्यु, " भद्र, अमारे तमारा घरनी भिक्षा कल्पती नथी. अमे तो अहिं तपश्चर्या करीनिज सुखे काल निर्गमन करीशु. तमोए अमोने जे वसति दान कर्यु छे, तेथी तमोए महापुण्य उपार्जन करेलु छे. तेने माटे आगममा आ प्रमाणे कहेलु छे

" जो देइ उवस्सं मुणि—वराण तव नियम जोगजुत्ताणं ।
तेणं दिन्नावत्थन्न पाण, सयणासणविगप्पा ॥ १ ॥
पावइ सुरनर रिद्धी, सुकुलुप्पत्ती य भोगसामग्गी ।
नित्थरइ भवमगारि, सिज्जा दाणेण साहूणं " ॥ २ ॥

" तप, नियम अने योगथी युक्त एवा मुनिओने जे उपाश्रय आपे छे, तेणे तेमने वस्त्र, पाणी, शयन, अने आसन प्रमुख सर्व आप्यु छे. ते वसति दानना पुण्यथी ते मनुष्य देव तथा मनुष्यनी ऋद्धिने पामे छे, सारा कुलमा जन्म

मेळवे छे, भोगनी सामग्री प्राप्त करे छे अने आ संसारनो पार पामे छे. "१-२

वर्षाकाळ अतिक्रांत थया पछी गुरु महाराजाए वंकचूलने पुछी त्यांथी विहार कर्यो. वंकचूल ते आचार्यनी सत्य प्रतिज्ञाथी हर्ष पामतो भक्ति वडे तेमनी पाछळ गयो. केटलोक मार्ग उल्लंघ्या पछी चिरकाळ रहेला मुनिना वियोगथी विह्वल थयेला वंकचूले गुरुने नमन करी आ प्रमाणे विनति करी— "स्वामी, अहींथी हवे बीजानो सीमाडो आवे छे, तेथी हुं हवे पाछो वळीश हवे मने तमारुं पुनर्दर्शन तत्काळ प्राप्त थाजो " आ प्रमाणे तेना वचन सांभळी आचार्ये मधुर वाणीथी वंकचूलने कह्युं, " हे भद्र तमारी सहायथी अमो आटलो काळ तमारा स्थानमां सुखे रह्या हता, तेथी जो तमोने रुचे तो तमारो प्रत्युपकार करवा माटे थोडुं कांइ कहीए " वंकचूल बोल्यो—" महाराज, जे माराथी सुखे पाळी शकाय, तेवा वचनो कही मारी उपर अनुग्रह करो. " वंकचूलना कहेवाथी ते आचार्य आ प्रमाणे बोल्या—" भद्र, १ जेनुं नाम कोइनाथी जाणी शकाय नहीं एवा अजाण्या फळ तमारे खावा नहीं २ बीजाने मारवानी इच्छा थतां तमारे सात आठ पगलां पाछुं हठवुं ३ राजानी पटराणीने माता समान गणवी.अने ४ कदि पण कागडानुं मांस खावुं नहीं. आ चार नियमो तमारे चोकस रीते पाळवा आ नियमो पाळवाथी तमारे उत्तरोत्तर मोटो लाभ थशे " आचार्यना आ वचन सांभळी " महाराज, आपे मारी उपर मोटो अनुग्रह कर्यो " एम कही वंकचूले ते चार नियमो ग्रहण कर्या. पछी ते पोताने स्थाने पाछो फर्यो अने गुरु महाराज त्यांथी विहार करी बीजे स्थळे चाल्या गया.

एक वखते वंकचूल भिल्लोनी सेना लइ कोइ गाम मारवाने चाल्यो. ते गामना लोकोने अगाउथी मालूम पडवाथी तेओ गाम मुकीने नाशी गया वंकचूल गामने खाली थयेलुं जोइ पोतानो परिश्रम निष्फळ थवाथी मनमां परिताप पामतो परिवार साथे त्यांथी पाछो फर्यो. अने अटवीमां एक वृक्ष नीचे विश्रांति लेवा बेठो. वंकचूलने क्षुधा लागवाथी तेणे अटवीमांथी फळादि लाववाने पोताना माणसोने आज्ञा करी ते लोको पण क्षुधाथी पीडित थता हता, एटले तेओ फळादि लेवाने अटवीमां आम तेम फरवा लाग्या. कोइ वन लतामां सुगंधी अने पाकेलां फळोथी नम्र थइ गयेलुं एक किंपाकनुं वृक्ष तेमना जोवामां आव्युं. तत्का

ल तेमणे ए वृक्षना फलो लीधा अने ते लइ तेओ वंकचूलनी पासे आव्या. वंकचूलने ते फलोने जोतांज पोते लीधेलो नियम याद आव्यो. तेथी तेणे ते फलनुं नाम पुछ्युं. भिल्लोए कह्युं, " अमे आ फलनुं नाम जाणता नथी. परंतु ते बहु स्वादवाला छे. माटे आपने खावामां हरकत नथी. " वंकचूले कह्युं, " हुं अजाण्या फल खातो नथी , कारण के में अजाण्या फल न खावानो नियम लीधो छे. " भिल्लोए आग्रह पूर्वक कह्युं, " स्वामी, आवी अस्वस्थ अवस्थामां नियमनो आग्रह राखवामां आवतो नथी. कारण के, अहींतो प्राण रहेवानो पण संदेह छे, तेवा वखतमां अभिग्रह शो ? " ते लोकोना आवा वचन सांभळी वंकचूल धर्मनुं धैर्य धारण करीने बोल्यो, " भिल्लो, हुं क्षुधाथी पीडात छुं, परंतु मने ए नियममां दृढता छे. तमारे आवा वचनो बोलवा नहीं. प्राण जवानां होय तो जल्ले जाओ, परंतु गुरु समीपे ग्रहण करेलो मारो नियम स्थिर रहो. " पछी ते भिल्लोए वंकचूलने आग्रह कर्यो नहीं. तेओ बधा ए फल खाइने ते वृक्ष नीचे सुइ गया, पण तेओमांथी वंकचूलना निरोधथी एक सेवके ते फल खाधा नहीं. पछी वंकचूल पण सूइ गयो थोडीवार पछी वंकचूले जाग्रत थइ पोताना खास सेवकने जगाड्यो अने कह्युं के, "आ सूतेला लोकोने जगाड. हवे आपणे आपणी पल्लीमां जइए " ते सेवके पोकार करी बधाने जगाडवा मांड्या, पण कोइ जाग्युं नहीं. पछी करस्पर्श करी जगाडवा मांड्या, तोपण कोइ जाग्या नहीं.तेणे तपास करी जोयुं, तो त्यां सर्वे मरण पामेला मालूम पड्या पछी तेणे वंकचूलने ते वृत्तांत जणाव्यो. आथी वंकचूल आश्चर्य पामी गयो अने पोते ग्रहण करेलो नियम सफल थयो, एम जाणी मनमां आ प्रमाणे कहेवा लाग्यो. " अहा ! गुरु वाणीनुं माहात्म्य केवुं छे ? ते वाणीना प्रभावथी हुं जीवतो रह्यो.हुं केवो निर्भागी के सर्व इष्ट सिद्धिने करनार कल्पवृक्ष जेवा ते गुरु अकस्मात् मने प्राप्त थया हता, तेमनी वाणीना उपदेशनो लाभ में छोडी दीधो अने फोगटनो वखत गुमाव्यो. " आ प्रमाणे चित्तमां भावतो ते वंकचूल हर्ष अने खेद साथे रात्रि पडतां पोतानी पल्लीमां आव्यो. जेवामां ते रात्रे घरमां प्रवेश करे छे, तेवामां पोतानी व्हेन पुरुषनो वेष धारण करी पोतानी स्त्रीनी साथे सुतेली तेना जोवामां आवी तेणे पुरुष वेषवाळी पोतानी व्हेनने ओळखी नहीं. तेना मनमां एम आव्युं के, कोइ पुरुष साथ पोतानी स्त्री सुतेली छे. आथी

तेणे चिंतव्यु के, " अरे ! मारी स्त्री दुराचारिणी छे. ते आ कोइ पुरुषनी साथे सुतेली छे, माटे आ बंनेने आ वखते खड्गथी मारी नाखु. " आवु चिंतवी ते प्रहार करवाने खड्ग उगामे छे, तेवामा तेने पेलो ग्रहण करेलो बीजो नियम याद आव्यो तत्काल ते सात पगला पाछो फर्यो. ते वखते क्रोधातुर एवा ते वकचूलनु खड्ग द्वारनी साथे अथडायु तेना शब्दथी तेनी पुरुषवेषधारी ब्हेन वकचूला जागी गइ. तेणे पोताना भाइने जोताज कह्यु, " भाइ, चिरजीवो. " वकचूल पोतानी ब्हेनने ओळखी शरमाइ गयो. पोताना खड्गनी साथे क्रोधने सवरी तेणे पोतानी ब्हेनने पुरुष वेष धरवानु कारण पुछ्यु. वकचूला बोली— "भाइ, आजे सन्ध्याकाले तमारा शत्रुना सेवको नटनो वेष धारण करीने अहीं आव्या हता हु तेमनो कपट वेष जाणी गइ हती. ते वखते में चिंतव्यु के, भाइ वकचूल बाहेर गया छे. ते क्या छे, एनी मने खबर नथी. जो आ लोकोना जाणवामा आवशे के वकचूल परिवार सहित बाहेर गयेल छे, तो तेओ आ पल्लीने अनाथ धारी पराभव करवाने आवशे, माटे कोइ उपाय करवो. आवु चिंतवी में रात्रे कपटथी तमारो वेष पेहेर्यो अने पछी सभामा ते नट लोकोनी पासे नाटक करावी, तेमने योग्यता प्रमाणे द्रव्य आपी विदाय कर्या. पछी आलसथी में तमारो वेष काढ्यो नहीं अने ते वेष साथे मारी भोजाइनी साथे सुइ गइ हती " पोतानी ब्हेनना मुखथी आ वृत्तात सांभळी वकचूल पोताना मनमा विचारवा लाग्यो के, "अहा ! गुरुना उपदेशनो केवो मोटो लाभ मल्यो? मने ते गुरुनी वाणीए ब्हेननी हत्याना पापमाथी बचाव्यो. " आ प्रमाणे तेणे गुरुवाणीनी बहु प्रशसा करी.

एक वखते वकचूल चोरी करवा माटे उज्जयिनी नगरीमा गयो. त्या अर्ध रात्रे कोइ धनवान् शेठना घरमा चोरी करवाने पेठो. तेवामा त्या ते गृहनो स्वामी शेठ एक कोडीनो खर्च वधारे थवाथी पोताना पुत्रनी साथे वादविवाद करतो तेना जोवामा आव्यो. ते जोताज वकचूलने मनमा तिरस्कार उपज्यो के, आवा शेठना धनने धिक्कार हजो. पछी ते त्याथी चोरी कर्या विना पाछो फर्यो पछी कोइ ब्राह्मणना घरमा पेठो लोकोनी पासे थोडु थोडु याची सपत्तिने पामेला एवा आ ब्राह्मणनु धन लइने शु करवु ? एम चितवी तेनु घर पण छोडी चाल्यो गयो पछी ते कोइ वेश्याना घरमा पेठो. " पोताना रमणीय शरीरवडे

कुष्टी नरने पण सेवनारी वेश्यानु धन लेवु, एतो विशेष निंदनीय छे, माटे मारे एनु धन पण शा माटे लेवु जोइए! " आम विचारी तेणे वेश्यानुं घर पण छोडी दीधु. ते पछी ते राजाना घर आगल आव्यो. त्या तेणे चितव्यु के,

" चौर्यमाचर्यते तच्चे, ल्लुंट्यते खलु नृपतिः ॥
फलिते धनमक्षीणमन्यथापि चिर यशः " ॥ १ ॥

" जो चोरी करवी तो राजानेज लुटवो.कारण के जो काम सफल थाय तो अक्षय धन मले अने नहींतो लावा कालनु मोटु यश मले. " १

आवु विचारी ते वनमाथी एक घो लाव्यो. तेने राजाना घरना किल्ला उपर चोटाड्यो, तेना पुछमा साथे वलगी राजाना मेहेलमा दाखल थयो. त्या अद्भुत रुपने धारण करनारी राजानी पटराणी तेना जोवामा आवी. ते समये जाग्रत थयेली राणीए तेने जोयो अने आ प्रमाणे पुछ्यु,"तु कोण छे? अने अहिं शा-माटे आव्यो छे?" वकचूले कह्यु, "हु चोर छु अने वहु प्रकारनां मणि तथा रत्नादिक द्रव्यनी इच्छाथी अहिं आव्यो छु."आ वखते वकचूलनु रूप जोइ राजानी राणी तेनी पर मोहित थइ गइ. तेणीए कोमल स्वरथी आ प्रमाणे कह्यु,"जद्र,द्रव्यनी वार्ता छे ? आ बधु तमारुज छे. कोइ जातनो जय राखशो नही. स्वस्थ थाओ. आजे तमारा कुल देवता तमारी उपर तुष्यमान थया छे कारण के, हु राजानी पटराणी तमारे वश थइ गइ छु. आजे में मारा सौजाग्यना गर्वथी राजाने रीसाव्यो छे, तेथी तमे अहीं आवो अने तमारा यौवनने सफल करो.हु सतुष्ट थतां माणसोने अर्थ काम सुलन्न छे.मारो सतोष हशे तो पछी तमारो वध के बंध थशे नहीं. " आ प्रमाणे पटराणीए ते वकचूलने कामग्रहथी लोजाव्यो अने क्षोज्ज पमाड्यो. तोपण वकचूल पोते अगीकार करेला नियमनु स्मरण करी राणीने नमी आ प्रमाणे बोल्यो, " माता, तमे मारा पूज्य छो. मारा जेवा एक वनवासी तस्कर तरफ तमारे स्पृहा करवी योग्य नथी. " पटराणी बोली, " अरे वाचाल, हु तारी साथे कामनी अजिलाषी छु, तेने तु माता कहीने बोलावता केम शरमातो नथी ? जो तु मार वचन मानीश नहीं तो आजे तारी उपर यमराज रुठ्यो समजजे. " आ प्रकारे राणीए घणां वचनो युक्तिथी कह्यां, तोपण ते वकचूल ज-

रा पण क्षोभ पाम्यो नहीं. पछी ते राणी क्रोधातुर थइ अने नखे करी पोतानु शरीर उजरडी उंचे स्वरे पोकार करवा लागी. "

आ तरफ राजा ते राणीवासना गृहना द्वार आगळ छुपी रीते उभो रही आ सर्व वृत्तांत साभळतो हतो ज्यारे राणीए पोकार करवा माड्यो एटले द्वारपालो जागी उठ्या अने उघाडा शस्त्रो लइ दोडी आव्या. ते वखते राजाए ते लोकोने अटकावीने कह्यु, " आ चोर निरपराधी छे, माटे तेने मारशो नहीं मात्र जरा बाधीने लइ जजो अने सवारे मारी आगळ सभामा लावजो. " द्वारपालोए राजानी आज्ञा प्रमाणे कर्यु. ते चोरने पकडी बाधीने लइ गया.

आ वखते पोतानी राणीनो दुराचार प्रत्यक्ष जोइ राजा मनमा चिंता करवा लाग्यो अने ते चिंतामा तेणे जाग्रतपणाथीज महा कष्टे रात्रि निर्गमन करी. प्रात काळे राजसेवको ते चोरने बाधी राजानी आगळ सभामा लाव्या. राजाए आक्षेपथी वकचूलने, सत्य कहेवाने कह्यु, एटले वकचूले रात्रिनो सर्व वृत्तात जे बन्यो हतो, ते साचे साचो कही सभळाव्यो. अने राणीए पोताने मधुर वाणीथी केटलाक वचनो कह्या हता, एम गुप्तपणे ते वात जणावी आथी राजा वकचूलनी उपर सतुष्ट थइ गयो. तेने वधमाथी मुक्त करी राजाए आलिंगन कर्यु. अने आ प्रमाणे कह्यु, " हे सत्पुरुष, तमारा साहसथी हु तमारी उपर सतुष्ट थयो छु, माटे मारी पटराणी हु तमने अर्पण करछु. " वकचूल बोल्यो—"स्वामी, आपना पटराणी ए मारी माता छे आपे एवु वचन न बोलवु " ते पछी राजाए धमकी आपीने कह्यु के, " जो तु राणीने ग्रहण करशे नहीं तो हुं तने शूलीए चमावीश. " वकचूल आवी धमकीथी पण डग्यो नहीं तेणे धैर्यथी ते वात अगीकार करी नहीं. वकचूलने आम अचल अने दृढ जोइ राजा तेनी उपर घणोज तुष्यमान थइ गयो अने तेज वखते तेने पोताना पुत्रना पद उपर स्थापी दीधो. पछी राजा पोतानी दुराचारिणी राणीने हणवा इच्छतो हतो, तेने वकचूले केटलाएक वचनो कही जीवती रखावी हती ते पछी वकचूले पोतानी स्त्री अने व्हेनने त्या बोलावी ते उज्जयिनी नगरीमा सुखे रह्यो हतो त्यारथी तेने धर्म उपर विश्वास उत्पन्न थयो अने तेथी तेणे पोताना हृदयने जैनधर्मने विषे अनुरक्त कर्यु. पेला आचार्य महाराजाए आपेला नियमोने निरतर सभारतो वकचूल यथाशक्ति धर्म उपर श्रध्धावानो थयो हतो

एक दिवसे वकचूलना भाग्योदयथी ते आचार्य भगवान् तेज नगरीमा पधार्या. ते खबर जाणी वकचूल मोटा आडम्बरथी तेमने वंदना करवाने गयो. आचार्य पासेथी धर्मनु शुद्ध स्वरुप सांभळी तेणे तत्त्व रुचिरुप सम्यक्त्व अंगीकार कर्यु हतु. आ अरसामा ते उज्जयिनी नगरीनी समीपे आवेला शालिग्राम गामना रहेवासी जिनदास नामना श्रावकनी साथे वकचूलने मैत्री थइ हती. ते जिनदास श्रावक ऊपर वकचूलनो घणोज स्नेह थयो हतो.

एक समये राजाए अति दुर्जय एवा कामरूप देशना राजाने जीतवा माटे वकचूलने आज्ञा करी. वकचूले राजानी आज्ञाथी कामरुप देशमा जइ त्याना राजा साथे युद्ध करी तेने पराजित कर्यो, परतु शत्रुओना शस्त्रोथी ते घणोज घायल थइ गयो.घायल थयेलो वकचूल तेवीज स्थितिमा उज्जयिनी नगरीमा आवी पोहोंच्यो. वकचूलनी आवी स्थिति जोइ राजाना हृदयमा चितानी पीडा उत्पन्न थइ आवी. तत्काल तेणे घणा वैद्योने बोलावी तेनी चिकित्सा करावी; पण वकचूलना घा रूझाया नही. राजाए पछी पोताना वैद्योने क्रोध लावीने कह्यु, " तमे वकचूलने शा माटे साजो करी शकता नथी' तमारे तेने जलदी साजो करवो. " वैद्योए कह्यु, " महाराज, तेने माटे हवे एक उपाय छे के, जो ते कागमानु मास खाय तो तेना शरीरना घा रूझाइ जाय. " आथी राजाए वकचूलने आलिंगन करी अश्रुपात करता कह्यु, " वत्स, तारी पीडा दूर करवा माटे वैद्योए घणा उपचार कर्या,पण तारा घा रूझाया नही. हवे कागमानु मास खावानो उपाय बाकी छे, ते तु कर एटले तारा शरीरनी पीडा दूर थइ जाय. वकचूले कह्यु, " स्वामी, हु सर्वथा मासभक्षणथी निवृत्त थयो छु. तेमा खास करीने कागमानु मास न खावानो में नियम कर्यो छे, तेथी हु मारो नियम तोडीश नही. राजा बोल्यो, " वत्स, जो जीवता रहेवाय तो घणा नियमो लइ शकाशे. अने मृत्यु पाम्या पछी ते बधा नियमो चाल्या जशे. माटे जीवन राखवा तु कागमानु भक्षण कर " राजाना आवा वचन सांभळी वकचूल बोल्यो " स्वामी, हवे मारे जीववानी जरा पण तृष्णा नथी, कारण के, एकवार अवश्य मृत्यु तो थवानुज छे. तेथी आ प्राण भले जाय, पण हु अकृत्य नही करु. "

आ वखते राजाए पेलो शालिग्राम वासी जिनदास श्रावक के जे वंक-

चूलनो परम मित्र हतो, तेने बोलाव्यो. राजाना बोलाववाथी जिनदास तत्काल वकचूलने मलवाने मार्गे चाली नीकल्यो. ते रस्तामा आवतो हतो, तेवामा कोइ बे देवीओ रुदन करती तेना जोवामा आवी. जिनदास तेमनी पासे आव्यो अने तेणे ते देवीओने पुछ्यु, " तमे कोण छो ? अने शा माटे रुदन करोछो ? " ते स्त्रीओ बोली—" अमे सुधर्म देवमा रहेनारी देवीओ छीए. अमारो स्वामी देवलोकमाथी च्यवी गयो, तेथी तेना विरहथी अमे विह्वल बनी वकचूल नामना एक क्षत्रिय भर्तारने प्रार्थवा इच्छीए छीए.आजे ते तमारा वचनथी जो तेनो नियम भागशे तो ते सत्वर दुर्गतिए जशे तेथी अमारे तेनो पाछो वियोग थशे आथी अमे रुदन करीए छीए " ते बने देवीओना आ वचन साभळी जिनदासे कह्यु, "तमे रुदन करशो नहीं. जेम तमारु इष्ट थशे, तेम हु करीश. " आ प्रमाणे ते देवीओने आश्वासन आपी जिनदास उज्जयिनी नगरीमा आव्यो ते राजाना मदिरमा गयो अने राजाने मल्यो. पछी तेणे वकचूल आगळ आवी तेनु कुशल पुछी औषधना उपाय माटे पूछ्यु, ते वारे राजाए तेने सर्व वृत्तात कह्यो. वकचूलने काकमास न खावाना नियममा अति दृढ जोइ अने तेनु शरीर अत्यत जर्जरीभूत थयेलु देखी तेणे राजादि सर्वनी समक्ष आ प्रमाणे कह्यु— " आ मारा मित्र वकचूलने धर्म तेज औषध छे, माटे बीजु कोइ पण औषधनी प्रवृत्ति करवी नहीं " मित्रना आवा वचन साभळी वकचूले कह्यु, " मित्र, तमे कह्यु, ते योग्य छे. हवे मारे तमने विशेषमा कहेवानु के जो तमे मारी उपर पूर्ण स्नेह राखता हो तो आलस्यने दूर करी मने आ छेल्ले अवसरे काइक [1]सबल आपो. " वकचूलनी आ मागणी उपरथी जिनदासे तेने सम्यक् प्रकारे आराधना करावी. तेथी वकचूल चार आहारना पच्चखाण करी अने चार शरणनो अगीकार करी पच परमेष्टी नमस्कारनु स्मरण करतो, तथा सर्व जीवोने विषे निर्वरपणानी धारणा करतो, पूर्वना करेला पापने निदतो अने सुकृतने अनुमोदतो समाधि पूर्वक काल करी बारमा देवलोके देवता थयो. ते पछी जिनदास वकचूलनी मरण क्रिया करी शोक करतो पोताने घेर चालतो थयो ते रस्ते जतो हतो, त्या मार्गे पेली बे देवीओने रुदन करती जोइ तेणे पुछ्यु, " बहेनो, हजु शा माटे रुदन करो छो ? ते अखडित व्रतवालो थइ मृत्यु पामी देवलोकमा तमारो स्वामी न थयो ? " ते देवीओए नि.श्वास नांखीने कह्यु,

---

[1] भातु

" हे निर्मलाशय जिनदास, तमे शु पूछो छो ? अमारे तो ते अमारा स्वामीनो वियोगज रह्यो. कारण के, तेओ परिणामनी विशुद्धिथी अमोने ओलगीने वारमे देवलोके गया. " पछी जिनदास त्याथी पोताने स्थाने चाल्यो गयो

ए प्रमाणे वङ्कचूलनुं वृत्तात कहेवाय छे. आ वृत्तात उपरथी थोमा पण अभक्ष्य भक्षणना नियमनु महा फल जाणीने भव्य प्राणीओए विशेषथी नियम पालवामा तत्पर थवु

आ प्रमाणे भोजनने आश्रीने भोगोपभोग व्रतनु स्वरुप कह्यु. हवे कर्मने आश्रीने कहे छे—

" कम्माउ जइ कम्म विणानतीरेइ निव्वहेउतो ।
पनरसकम्मादाणे चयइअणंपि खरकम्मं " ॥ १ ॥

' कर्मने आश्री उत्सर्ग मार्गे करीने श्रावके कोइ पण सावद्य कर्म करवुं नहीं. अने निरारम्भ करीनेज रहेवु. पण जो कर्म विना निर्वाह न थाय तोपण पनर कर्मादान अवश्य त्यजी देवा " ?

पनर कर्मादान

१ अगार कर्म, २ वन कर्म, ३ शकट कर्म, ४ भाटक कर्म, अने ५ स्फोटक कर्म, ए पाच कर्म. १ दात, २ लाख, ३ रस, ४ केश अने ५ विष, ए पाच वाणिज्य. १ यत्रपीलन, २ निर्लाछन, ३ दवदान, ४ सर'शोषण, अने ५ असती पोषण, ए पाच सामान्य ए पनर कर्मादान कहेवाय छे.

१ आजीविका माटे अगारा पामवा, भाम्भुजीपणु करवु, कुम्भार, लोहकार, अने सुवर्णकारनु काम तथा इटो पकाववा प्रमुखनो आरम्भ करवो ते अगार कर्म कहेवाय छे.

२ वृक्षादिकना पत्र, पुष्प वगेरेनु छेदन, भेदन अने वेचवा प्रमुखना आरम्भ वमे जीवनु, ते वनकर्म कहेवाय छे

३ गाडा अने तेना अगो घमावी रावचा-वेचवा तथा गाडीथी आजीविका करवी, ते शकटकर्म कहेवाय छे.

४ पोताना गाडा, ऊंट तथा घोडावडे बीजानो भार वहेवो, अने भाडु लइ गाडा प्रमुख बीजाने आपवा–ते वडे आजीविका करवी, ते भाटक कर्म कहेवाय छे.

५ कोदाळी, पावडो, हळ वगेरेथी भूमिनु विदारण करवु, तथा पथ्थर घडवा–इत्यादि वडे जे आजीविका करवी, ते स्फोटक कर्म कहेवाय छे. तेमज यव प्रमुख धान्यनो साथवो वगेरे करी वेचवु, ते पण स्फोटक कर्म कहेवाय छे तेने माटे कह्यु छे के,

> " जव चणया गोहुम–मुग्ग मास करडिप्पभिइय धन्नाणं ।
> सत्तुय दालि कणिक्का, तंडुल करणाइ फोडयण ॥ १ ॥
> अहवा फोडि कम्मं, सीरेण भूमिफोडणे जलू ।
> उडुत्तयणं च तहा, तहाय सिल कुट्टयं त चेति " ॥ २॥

" जव, चणा, घउं, मग, अडद, करडी प्रमुखनो साथवो करवो, दळ कणिक अने तडुल करवा, ते स्फोट कर्म कहेवाय छे अथवा हळे करीने जमीन फोडवी, पाणीने मारवा कूटवा लाकडीओना प्रहार करवा इत्यादि पण स्फोट कर्म कहेवाय छे.

६ प्रथमथी म्लेच्छ वगेरे लोकोने मोकली हाथीना दांत मगावीने वेचवा अथवा जे स्थळोमा ते हाथीना जीवो पेदा थता होय त्या पोते जइ, दांत लावीने वेचवा ते दंतवाणिज्य कहेवाय छे उपलक्षणथी शख, चामडु, चामर वगेरे पण जाणी लेवा, तेनो वेपार करवो ते पण दंतवाणिज्य कहेवाय छे स्थळ शिवाय बीजे ठेकाणेथी दंतादिक वेचवामा के लेवामा दोप नथी

७ लाखनो वेपार करवो ते लाखवाणिज्य. उपलक्षणथी गळी, मण शील आदि अथवा मनोहर धान्यादिक पण जाणी लेवा

८ घी, तेल, मदिरा, मध, चरबी आदिनु वेचवु, ते रसवाणिज्य कहेवाय छे.

ए सींगडीओ वछनाग, अफीण, सोमल प्रमुख वेचवा, ते विषवाणिज्य कहेवाय छे. लोह, हरताळ पण घणा जीवना घातक छे, माटे ते उपलक्षणथी जाणवा.

१० दासी, गाय, भेंश ऊंट वगेरेने वेचवा, ते केशवाणिज्य कहेवाय छे.

११ तल शेलडी आदिने यत्रे करी पीलवा, पीलाववा, ते यंत्रपीलण कर्म कहेवाय छे.

१२ बलद,घोडा वगेरे खशी करवा,नाक वींधवा अने कान तथा कंबल वगेरेनुं छेदन करवुं, ते निर्लंछन कर्म कहेवाय छे.

१३ तृणादिकनी वृद्धिने माटे अथवा क्षेत्र वगेरेने शोधवा माटे जे अग्नि लगाडवो ते दवदान कर्म कहेवाय छे.

१४ गोधूम वगेरेना लाभ माटे द्रह, सरोवर वगेरे सुकववा, ते शोषण कर्म कहेवाय छे.

१५ असती–दुःशील दासी, बीलाडी प्रमुख जानवरोनुं पोषण करवुं, ते असतीपोषण कर्म कहेवाय छे. अहिं उपलक्षणथी शुक, सारिका, कुतरा आदि अधम प्राणीओनु पण पोषण जाणी लेवु.

ए पनर निविड कर्मना बंधना हेतु होवाथी आगम जाणाए ते पनरकर्मादान कहेवाय छे. अहिं एटला मात्र पनरज त्यजवानु नथी परंतु बीजा पण खर –कर्म कर्म, क्रूर, अ ध्यवसायथी सा य कर्म जेवा के कोटवालपणुं तथा बंदीखानानुं रक्षकपणुं, इत्यादिकनो पण त्याग करवो. कदि अल्प सावद्य कर्मथी निर्वाह करवो पडे तो ते युक्त छे. तेने माटे कह्यु छे के,

" इयरंपिहु सावज्जं, पढम कम्म न तं समारभइ ।
जंदट्ठूण पयट्टइ, आरंभे अविरओ लोओ " ॥ १ ॥

" श्रावक नहीं निषेध करेल सावद्य कर्म के जे घरनो आरंभ, ग्रामांतर गमन,शकट,खेडवादिक छे,तेनो बीजाथी पेहेलो आरंभ पोते करे नहीं,ते शा माटे? ते कहे छे के, " जेने तेवु कर्म करतो देखीने अयतनावंत लोको ते कार्य करवामां प्रवर्ते छे, तेथी बीजाना आरंभनो ते हेतु बने छे, माटे प्रथम आरंभ न करवो.

आ प्रमाणे कर्मथी जोगोपजोग व्रत समजवु

" अहिं शिष्य प्रश्न करे छे के, " पूर्वे जोगोपजोग शब्द वाची तो स्त्री वगेरे कह्या हता, तेथी ए व्रतमा तेनुज प्रमाण करवु जोइए. तो पछी कर्मथी ए व्रत होइ शके नहीं अने कर्म शब्दने क्रियावाचीपणु होवाथी क्रियाने जोगोपजोगपणानो संजव नथी. "

तेना उत्तरमा गुरु कहे छे—" ए वात सत्य छे, पण जे जोगोपजोग ते वेपारादिक कर्मनु कारणभूत छे, तेथी कारणने विषे कार्यनो उपचार करवाथी कर्मने पण जोगोपजोगपणु कह्यु छे. ते विषे अहिं वधारे चर्चा करवानी जरुर नथी.

ते व्रतनी जावना कहे छे—

" सव्वेसि साहूण, नमामि जेहि अहियंति नाऊण ।
तिविहेण कामजोगा, चत्ता एव्व विचितिज्जा " ॥ १ ॥

" जे मुनिओ कामजोगने अहित जाणीने मन, वचन अने काया, ए त्रिविध वमे तेनाथी विरम्या छे, ते सर्व मुनिओने हु नमु छु. " १

अनर्थदंड विरमण नामे

त्रीजु गुणव्रत

अनर्थदंम विरमण नामे त्रीजु गुणव्रत कहेवाय छे. स्वजन, शरीर, धर्म तथा व्यवहारने माटे जे आरंज करवामा आवे ते अर्थदंम कहेवाय छे ते शिवाय बाकीनु ते अनर्थदंम कहेवाय छे एटले पोताना उपयोगमा आवे तेनो आरंज ते अर्थदंम अने जेनी साथे पोतानु काइ पण प्रयोजन न होय, छता तेनो आरंज करवो ते अनर्थदंम तेवा अनर्थदंमथी जे विरमण एटले विराम पामवु, ते अनर्थदंम विरमण नामे त्रीजु गुणव्रत कहेवाय छे ते व्रत दुर्ध्यान वगेरे चार प्रकारना अनर्थदंमना त्याग करवा रुप छे. तेने माटे कह्यु छे के,

" दंडिज्जइ जेण जिउं, वज्जिय निय देह सयण धम्मठ ।
सो आरंभो केवल, पावफलोऽणत्थ दंडत्ति ॥ १ ॥
अवझाय पाव उवएस, हिंसदाणप्पमाय चरिएहिं ।
जं चउहा सो मुच्चइ, गुणव्वयं त भवे तइयं ॥ २ ॥

" पोतानो देह, स्वजन अने धर्मनो अर्थ वर्जीने बाकीना जे जे आरंभोमा जीव दंडाय तेवो आरंभ के जे केवल पाप रूप फलने आपनार छे, ते अनर्थदंड कहेवाय छे. ते दुर्ध्यान, पापोपदेश, हिंसा अने प्रमाद, ए चार आचरवाथी अनर्थदंड होय छे. ए चारनो जे त्याग करवामा आवे ते त्रीजुं अनर्थदंड विरमण नामे गुणव्रत कहेवाय छे. " १–२

बीजी गाथामा आ प्रमाणे विशेष व्याख्या छे. अपकृष्ट एटले हीण ध्यान, ते आर्त्त तथा रौद्रध्यान कहेवाय छे.

तेने माटे कहेलु छे के—

" राज्योपभोग शयनासन वाहनेषु ।
स्त्री गंध माल्य मणिरत्न विभूषणेषु ॥
इच्छाभिलाष मति मात्रमुपैति मोहात् ।
ध्यान तदार्त्तमिति सप्रवदंति तज्ज्ञाः ॥ १ ॥
संछेदने दहन भंजन मारणैश्च ।
वंध प्रहार दमनै र्विनिकृत्तनैश्च ॥
यो याति रागमुपयाति च नानुकंपा ।
ध्यान तु रौद्रमिति संप्रवदति तज्ज्ञाः " ॥ २ ॥

" राज्यनो उपभोग, शयन, आसन, वाहन, स्त्री, गंध, माल्य, मणि, रत्न अने तेना आभूषणोनी अदर जे मोहथी अत्यत इच्छा–अभिलाष प्राप्त थाय, तेने विद्वानो आर्त्तध्यान कहे छे. १

जे छेदन, दहन, भंजन, मारण, वध, प्रहार, दमन अने खंडनथी रागने प्राप्त थाय अने दया न लावे तेने विद्वानो रौद्रध्यान कहे छे. " २

१ धर्मी पुरुषोने पण आ संसारने विषे घणु करीने अंतरमा दुर्ध्यान थाय छे. परंतु तेओ पोताना सज्ञानना बळथी उन्मार्गे जाता एवा पोताना चित्तने अट कावी पुनः सन्मार्गे लावे छे. जे प्राणीओ निरंतर आर्त्त तथा रौद्रध्यानमा प्रवर्त्ते छे, तेमने तो अनर्थदण्ड छे.

२ पापनो हेतु होवाथी पाप एटले खेती आदि कर्म, तेनी दाक्षिण्यताना स्थान विना जे उपदेश ते पापोपदेश कहेवाय छे.

३ जे हिंसनशील होय ते हिंस्र कहेवाय छे. एवा विष, अग्नि, हळ अने शस्त्र वगेरे तेनु दाक्षिण्यताना स्थान विना जे असयतोने आपवु, ते हिंस्रदान कहेवाय छे.

४ प्रमाद एटले मद्य, विषय, कषायादिक ते वडे जे आचरण, ते प्रमादाचरण कहेवाय छे. सात व्यसन, जलक्रीडा, वृक्षनी शाखाने आश्रीने हींचको खेलवो, कुकडा प्रमुख जीवोने लडाववा, कुशास्त्रनो अभ्यास करवो अने विकथा करवी वगेरे प्रमादाचरण कहेवाय छे, अथवा प्रमादाचरण एटले आळसनी व्याप्ति. नहीं शोधेला धन, धान्य तथा जलादिकनो व्यापार करवाथी, चुला,पाणी आरा वगेरेनी उपर चदरवो न बाधवाथी अने घी, दहीं, दूध अने छाश आदिना पात्रो नहीं ढाकवाथी तेमा पोतानो तथा परनो उपघात थवाने लीधे ते बहु अनर्थना कारणो छे, एम जाणवु. ते कारणने लइने परम गुरुए श्रावकने घेर सात गळणा अने नव चदरवा[1] कहेला छे. जेमके—

" सुड्ढे सावयगेहे, हवइ गलणाइ सत्त सविसेस ।
जल मिउ खार आवण तक्क घी तिल्ल चुणाय " ॥१॥

मीठु जल, खार पाणी, उनु पाणी, छास, घी, तेल अने लोट—ए सातने गळवा माटे श्रावके गरणा राखवा आ गाथानो अर्थ सुगम छे अहिं लोटनु गळवु एवी रीते समजवु के, तेने चाळणीथी चाळवो अहिं उपलक्षणथी दूध आदि वस्तुओ माटे पण गरणु राखवु

[1] केटलेक स्थळे दश चदरवा पण कहेला छे

चंदरवा क्ये क्ये स्थळे जोइए

जलस्थानोदूखल० १ पाणीआरे, २ खारुणीए, ३ चूलीए, ४ चूले, ५ धान्यनी भूमिने विषे, ६ दहींनु ज्या मारवण करवामा आवे त्या, ७ भोजन करवाने ठेकाणे, ८ सुवानी जग्योए अने ए उपाश्रेय, ए नव स्थाने सुदर वस्त्रथी निष्पन्न करेला चदरवा श्रावके धारण करवा. जो ते न करवामा आवे तो अनर्थदंड थाय छे. एवी रीते चार प्रकारना अनर्थदंडनो त्याग करवो.

ए अनर्थदंड नामे त्रीजु गुणव्रत कह्यु.

आ अनर्थदंडने विषे त्याग करवापणु विशेष प्रकारे बतावे छे. घणु करीने पोतानी शक्ति प्रमाणे जेणे अनर्थदंड वर्जेलो छे अने परमार्थ जाणेलो छे, एवो श्रावक केवे प्रकारे अनर्थदंडने प्रयुजे छे ? ते विषे सर्व प्रकारना अनर्थदंडना भेदो उपर दृष्टातो कहेवा अशक्य छे. तेथी मात्र एक चूला उपरनु दृष्टात आपवामा आवे छे. प्रमादे करीने चूला उपर चंदरवो नही बाधवाथी शुं थयु हतु, ते दृष्टात अन्वय—व्यतिरेकथी कहे छे—

" चदोदयदाणाओ, जाया मिगसुंदरी सया सुहिया ।
तब्भालनाउ कुट्ठी, तन्नाहों परभवे जाओ" ॥१॥

" चूला उपर चदरवो बाधवाथी श्रेष्ठीकन्या मृगसुदरी नामे राजकन्या सदा सुखी थइ हती अने तेना भर्तारे ते चदरवो बाळी नाख्यो, तेथी ते परभवे कुष्टी थयो हतो. " १

बीजा केटलाएक तेना सबधीजनो चूला उपर चदरवो न बाधवा वगेरेथी अकस्मात् मृत्यु रुप कष्टने पाम्या हता, ए उपलक्षणथी जाणी लेवु गाथानो अर्थ आ प्रमाणे अने तेनो भावार्थ कथाथी जाणवो.

मृगसुदरीनी कथा

श्रीपुर नगरमा श्रीषेण नामे राजा हतो. तेने देवराज नामे एक पुत्र थयो हतो. ते देवराज ज्यारे युवान थयो, त्यारे पूर्वना दुष्कर्मना उदयथी ते कुष्टी थयो. तेना रोगने दूर करवा माटे सात वर्ष सुधी उपचारो करवामा आव्या, पण ते नीरोगी थयो नही. छेवटे कटाळी गयेला वैद्योए तेनो उपचार करवानो त्याग कर्यो. राजा

श्रीषेण आथी वधारे दुःखी रहेवा लाग्यो. एक वखते तेणे एवी जाहेर घोषणा करावी के, " जे मारा कुमारने नीरोगी करे तेने अर्ध राज्य आपवामा आवशे." आ घोषणानो पडह आखा नगरमा वगडाव्यो.

ते नगरमा यशोदत्त नामे एक मोटो धनाढ्य वसतो हतो. तेने शीलादि गुणोथी युक्त एवी लक्ष्मीवती नामे पुत्री हती तेणीए राजाना ते पटहने निवार्यो अने कह्युं के, "हु राजकुमारने नीरोगी करीश." राजाए अति आदरथी ते लक्ष्मीवतीने पोतानी पासे बोलावी. लक्ष्मीवती पोताना पिता वगेरेनी साथे राजानी पासे गइ.तेणीए पोताना शीलना प्रभावथी पोताना हाथनो स्पर्श करी ते राजकुमारना शरीरने नीरोगी बनावी दीधु. आथी प्रसन्न थयेला राजाए पोतानी प्रतिज्ञा पालवाने माटे ते कन्या पोताना राजकुमारनी साथे परणावी. ते पछी ते पोताना पुत्रने राज्य आपी राजा गुरु पासे दीक्षा लइ चाली नीकल्यो. पाछल नवीन राज दपती सुखे राज्य भोगववा लाग्या.

एक दिवसे कोइ ज्ञानी आचार्य ते श्रीपुर नगरमा आवी चडया. तेमना आगमननी वार्त्ता सांभळी राजा देवराज अने राणी लक्ष्मीवती तेमने वदना करवा आव्या. गुरुए तेमने धर्मदेशना सभळावी. देशनाने अते राजा देवराजे पोताने कुष्ठनो रोग थवानु कारण कारण पूछयु, त्यारे गुरुए कह्यु के, पूर्व भवने विषे उपार्जन करेला दुष्कर्म वडे तमने रोग थयो हतो, तेनु स्वरुप आ प्रमाणे छे.

वसतपुर नगरमा मिथ्यात्वथी जेनी शुद्धमति आच्छादित थयेल छे, एवो देवदत्त नामे एक वेपारी रहेतो हतो तेने धनदेव,धनमित्र, धनेश्वर अने धनदत्त नामे चार पुत्रो हता. ते चार पुत्रोमा जे धनेश्वर हतो ते व्यापार करवामा कुशल हतो. एक वखते ते धनेश्वर मृगपुर नगरमा व्यापार करवाने गयो. ते नगरमा जिनदत्त नामे जैनधर्मने पालनारो शेठ रहेतो हतो तेने मृगसुदरी नामे कन्या हती. ते बाला आर्हत्त धर्म उपर आस्तिक हती. एक वखते तेणीए गुरु पासे आ प्रमाणे त्रण अभिग्रह ग्रहण कर्या श्री जिनेश्वरनी पूजा करवी, कोइ साधु महाराजाने दान आपी भोजन करवु अने रात्री भोजननो त्याग करवो. आ त्रण अभिग्रह प्रमाणे ते सर्वदा वर्त्तती हती. मृगसुदरी घणीज स्वरुपवती हती. एक वखते व्यापार अर्थे ते स्थळे आवेला धनेश्वरे मृगसुंदरीने जोइ, तेणीने जोताज ते तेना सौंदर्यथी मोहित थइ गयो तत्काल तेणीने परणवाने ते अनुरागी बनी गयो.

तेणे जिनदत्त शेठनी आगळ ते कन्यानी मागणी करी, पण शेठे धनेश्वरने मिथ्यात्वी जाणी पोतानी कन्या आपी नहीं. मोह पामेलो धनेश्वर कपटी श्रावक बनी गयो. पछी ते मृगसुंदरीनो साथे परण्यो. परण्या पछी मृगसुंदरीने साथ लइ ते पोतानी नगरीमां आव्यो. घेर आव्या पछी धर्मनी इर्ष्याने लइने तेणे मृगसुंदरीने जिन पूजा वगेरे करता अटकावी. श्राविका मृगसुंदरी आर्हतधर्म उपर पूर्ण आस्तिक हती, तेथी ते दृढता राखीने रही. तेणीए जिनपूजा न थवाथी उपवास करवा मांड्या. अनुक्रमे त्रण उपवास थया. चोथे दिवसे कोइ जैन मुनि तेणीने द्वार आवी चड्या. ते वखत तेणीए पोताना ग्रहण करेला नियमना रक्षणने माटे ते मुनिने उपाय पुछयो. ते समये गुरुए गुण अवगुणनो विचार करीने कह्युं, "भद्रे, तारे चुला उपर चंदरवो बांधवो. एम करवाथी पांच साधुओने प्रतिलाभित करवाथी अने पंच तीर्थोने नमस्कार करवाथी जेटलुं फल प्राप्त थाय, तेटलुं फल तने प्राप्त थशे." गुरुनी आ आज्ञा तेणीए शिरपर चडावी, अने त्यारथी ते प्रमाणे तेणीए कर्युं. ते चंदरवो बांधेलो जोइ तेणीना मिथ्यात्वी ससरा वगेरेए धनेश्वरने कह्युं के, "आ तारी वहुए वस्त्र बांधीने कामण कर्युं छे." ते सांभळी धनेश्वरने क्रोध चडी आव्यो अने तत्काल तेणे ते चंदरवाने अग्नि लगाडी बाळी नाख्यो. ते पछी मृगसुंदरीए फरीवार बांध्यो. ते पण धनेश्वर बाळी नाख्यो. एवी रीते सात चंदरवा बांध्या अने सात बाळी नाख्या. पछी ससराए मृगसुंदरीने कह्युं, "भद्रे, शामाटे तुं आ प्रयास करे छे?" मृगसुंदरी बोली, "जीवदया माटे." ते सांभळी ससराए क्रोधथी जणाव्युं, "जो तारे जीवदया पाळवी होय तो तुं तारा पिताने घेर जा." मृगसुंदरीए कह्युं, "हुं कुलवाननी पुत्री छुं, तेथी कुलवाननी पेठे एकली नहीं जाउं. माटे तमारा कुटुंब साथे मने मारा पिताने घेर मोकलो." तेणीना आवा वचन सांभळी तेनो ससरो कुटुंब सहित तेणीने लइने मृगपुर नगर तरफ चाल्यो. मार्गमां कोइ एक गाममां तेणीना ससरानो सगो रहेतो हतो, तेने घेर तेओ मीजमान तरीके गया. ते सगाए पोताने घेर परोणा आव्या जाणी रात्रिने विषे भोजन तैयार कराव्युं. भोजन करवाने सर्व कुटुंब तैयार थयुं, पण रात्रि भोजनना नियमने सचारी मृगसुंदरी भोजन करवा उठी नहीं. कोइ पूर्वना पुण्यथी शुभ बुद्धि उत्पन्न थवाथी मृगसुंदरीना ससरा वगेरे

खाधु, अने खाधा पछी तत्काल तेओ मरणने शरण थइ गया. प्रातःकाले ते सर्वने मरण पामेला जोइ, मृगसुंदरीना ससरा वगेरे तेनु कारण जाणवा आमतेम जोवा लाग्या. तेवामा एक तपेलीनी अंदर सर्पनी गरळ जोवामा आवी. ते जोता ज तेओए विचार्यु के, रात्रे रसोइना धूमाडाथी आकुल थयेलो कोइ सर्प उपरथी तपेलीमा पडी गयेलो, तेना झेरथी सर्वनु मृत्यु थयु छे. आ थीना जाणी सर्वेए मृगसुंदरीना वखाण कर्या अने तेणीनी क्षमा मागी आ वखते मृगसुंदरी बोली, " आर्यो, आवा कारणने लइने हु चूला उपर चंदरवो बांधती हती, अने रात्रि भोजननो त्याग करती हती. " तेणीना आवा वचन सांभळी सर्वे प्रतिबोध पामी गया अने मृगसुंदरीने जीवितदात्री थवाथी कुलदेवीनी प्रमाणे मानवा लाग्या. पछी तेओ पाछा घेर आव्या अने मृगसुंदरीना उपदेशथी उत्तम प्रकारना श्रावको थया ते पछी मृगसुंदरी अने धनेश्वर चिरकाल पर्यंत सम्यग धर्मने आराधीने छेवटे समाधिपूर्वक काल करी स्वर्गे गया हता. स्वर्गना सुखनो अनुभव करी आ वखते तमो बने देवराज अने लक्ष्मीवती थया छो. तें पूर्वजन्मे चंदरवा बाळ्या हता, ते दुष्कर्म निंदा वगेरे करवाथी ते खपावी दीधु हतु पण ते अंशमात्र रहेलु, तेना थी आ भवमा तने सात वर्ष सुधी ते व्याधि रह्यो हतो. आ लक्ष्मीवतीए तें पूर्वना नियमना प्रभावथी तारा व्याधीने शांत कर्यो हतो.

राजा देवराज अने राणी लक्ष्मीवती गुरुना मुखथी आ प्रमाणे पूर्व भवनो वृत्तांत सांभळी जाति स्मरण ज्ञानने प्राप्त थया. तत्काल तेओ बने आ संसार उपरथी विरक्त थइ गया. पछी पुत्रने राज्य उपर स्थापितकरी तेमणे दीक्षा ग्रहण करी. छेवटे काल धर्मने पामी स्वर्गना सुखना भाजन थया हता

आ प्रमाणे अनर्थदंड विरमणव्रतने विषे मृगसुंदरीनी कथा कहेवामा आवी. ते उपरथी बीजा भव्य जीवोए चुला उपर चंदरवा न बांधवा रुप वगेरे अनर्थदंडथी विराम पामवु. अहिं आ प्रमाणे भावना छे—

" चितेअव्वं च नमो, सअट्ठगाइ च जेहि पावाइ ।

साहूहि च वज्जियाइ, निरट्ठगायं च सव्वाइ " ॥१॥

वळी,

" तुल्लेवि उअरजरणे, मूढ अमूढाण अंतरं पिच्छ ।
एगाणनरय दुक्कं, अन्नेसिं सासयंसुखं " ॥२॥

" जे स्व अने परने अर्थे–उजय प्रकारे पाप कर्मथी विराम पाम्या छे, ते मुनिराज प्रत्ये अमारो नमस्कार हो. " १

मूढ अने तत्त्वज्ञानी–बनेने उदर जरवु, ते सरखुं छे; पण मूढ अने अमूढ–तत्त्वज्ञानीनी वच्चे केटलो अतर छे ? ते जुवो. मूढ पुरुषने नरकना दुःख प्राप्त थाय छे अने अमूढ—तत्त्वज्ञानीने शाश्वत सुख मळे छे, एटलो अतर छे. " २



चार शिक्षाव्रत.

वारवार प्रवृत्ति जेमा छे, ते शिक्षा कहेवाय छे अने ते शिक्षा जेमा प्रधान छे एवु जे व्रत ते शिक्षाव्रत कहेवाय छे. जेम विद्याना शिक्षक वर्ग वारवार अभ्यास कराय छे, तेम श्रावके आ व्रतोनो अभ्यास वारवार करवा योग्य छे.

प्रथम सामायिक व्रत.

चार शिक्षा व्रतोमा प्रथम सामायिक व्रत कहेवाय छे. सम एटले राग द्वेष रहितपणु. तेनो आय एटले लाज ते समाय कहेवाय छे. जे क्रिया–अनुष्ठान करवुं प्रयोजन एटले जे क्रिया—अनुष्ठान करवाथी समायनी प्राप्ति थाय ते सामायिक कहेवाय छे. ते रुपव्रत ते पेहेलु सामायिक नामे शिक्षाव्रत छे. तेने माटे आ प्रमाणे कह्यु छे–

" सामाइय मिह पढम सावज्जो जत्थ वज्जिओ जोगे ।
समणाणं होइ समो, देसेणं देसविरओवि " ॥१॥

" अहि जे सामायिक नामे पेहेलु शिक्षाव्रत करवाथी देशविरति श्रावक पण सावद्य एवा मन, वचन अने कायाना व्यापारने वर्जीने सर्वविरति मुनिसदृश थाय छे " १

अहिं प्रश्न करे छे के, ते देशविरति सर्वविरति शी रीते थाय ? देशे करीने एटले देश दृष्टांते करीने जेम चंद्रमुखी स्त्री, समुद्र जेवुं तळाव, नहीं तो साधु अने श्रावक वच्चे मोटो अंतर जे छे ते दर्शावे छे उत्कृष्ट द्वादशांगीना अभ्यासी ते साधु अने श्रावक तो षट् जीवनिकाय नामना दश वैकालिकना अध्ययन सुधीनो अभ्यासी होय छे. साधु उत्कृष्टपणे सर्वार्थसिद्धि विमानमां उपजे छे अने श्रावक बारमा देवलोक सुधी उपजे छे. साधुओने काळ धर्म पाम्या पछी देवगति अने मोक्षगति ए बे गतिओ छे अने श्रावकने एकली देवगति छे वळी साधु फक्त संज्वलनना चार कषायवाळा होय छे अथवा निष्कषायी पण होय छे. अने श्रावक तो आठ कषायवाळा एटले प्रत्याख्यानी अने संज्वलनी होय छे. साधुओ एको साथे पंच महाव्रतना अंगीकारी छे अने श्रावक तो थोडा अथवा समस्तना पण इच्छा प्रमाणे अंगीकारी छे साधुओने एक वार अंगीकार करेलुं सामायिक व्रत जावजीव पर्यंत रहे छे अने श्रावकने तो ते सामायिक व्रत वारंवार अंगीकार कराय छे साधुने एक व्रतना भंग थतां सर्व व्रतनो भंग थाय छे, कारणके माहोमाही तेनुं सापेक्षपणुं छे अने श्रावकने तेम नथी. तथी आ सामायिक क्यां करवुं ? एवी शंका थतां तेनो उत्तर आ प्रमाणे छे—

"मुनेः समीपे जिनमंदीरे वा, गृहेऽथवा यत्र निराकुलः स्यात् ।
सामायिकं तत्र करोति गेही, सुगुप्तियुक्तः समितश्च सम्यक्"॥१॥

"गृहस्थ मुनिनी समीपे, अथवा जिनमंदिरमां, घेर अथवा ज्यां निराकुळपणे रहेवाय त्यां त्रण गुप्ति अने पांच समिति साथे सामायिक करे छे." १

अहिं सामायिक करनारे जो के जिनमंदिरमां सामायिक करवुं योग्य छे; कारणके, तेमां सम्यक् प्रकारे समाधि प्राप्त थाय छे, माटे तेनुं ग्रहण प्रथम करवुं जोइए परंतु अहिं मुनिनी समीपे सामायिक करवानुं प्रथम कहेलुं छे, तेनुं कारण ए छे के, मुनिनी पासे धर्म वार्ता वगेरे सांभळवाथी विशेष लाभ थाय छे माटे तेनुं प्रथम ग्रहण करेल छे. वळी ज गृहादिकने विषे सामायिक करे तेणे पण समिति तथा गुप्ति सहित गुरु समीपे आवीने ते गुरुनी साक्षी पूर्वक सामायिक उच्चरे. आ विधि अल्प ऋद्धि श्रावकने माटे छे अने ऋद्धिवाळा श्रावकनो विधि तो आ प्रमाणे छे जे महर्द्धिक राजादि छे, ते प्रथम साधुनी पास आवी ते

पछी सामायिक उच्चरे. जो तेम न होय तो जेणे सामायिक करी छे एवो श्रावक समृद्धिमान् राजादिक श्रावकनी पाछळ चालता तेने याद्धाओ अने घोमाओथी आरंभनो प्रसग आवे छे. आ विष विशेष विवेचन करवाथी बस छे. ते विष वधारे जाणवुं होय तो आवश्यक चूर्णी ग्रथ जोइ लेवो.

सामायिक लेनाराओनुं कृत्य.

सामायिक ग्रहण करनाराए केवी रीत वर्त्तवु जाइए ? ते प्रथम जाण तुं छे सामायिकमा रहेला पुरुषे श्रेष्ठ एवा सिद्धातना अर्थो पुछवा. अने महात्मा पुरुषोनां चरित्रोने सभारवा तेमज तण आलस निद्रा, विकथा वगेरे दोषोने वर्जी देवा. हृदय शुद्ध अने दयामय राखवु तेने माटे आ प्रमाणे कहु छे.

" सामायिकस्थ प्रवरागमार्थं पृच्छेन्महात्माचरित स्मरेच्च ।
आलस्य निद्रा विकथादि दोषान् विवर्जयेच्छुद्धमना दयालुः ॥१॥

आलस्य प्रमुख दोषो कहे छे.

कायाना बार दोषो.

१ आलस, २ निद्रा, ३ पलोंठी वालवी, ४ अस्थिर आसन, ५ दृष्टिनुं परावर्त्तन, ६ बीजा कार्यमा प्रवृत्ति, ७ भींत प्रमुखनु ओठींगण, ८ अगनु अति गोपन, ९ देहनो मल उतारवो, १० आगळी वगेरे मोडवा, ११ विश्रामण (लांबा पग करी बेसवु) अने १२ खुजली खणवी.

वचनना दश दोषो

१ कुवचन, २ अविचारी वचन, ३ प्रतिघात वचन, ४ स्वच्छन्दवचन, ५ स्तुतिवचन अथवा परिचय वचन, ६ कलह, ७ विकथा, ८ उपहास वचन, ९ शीघ्र वचन अने १० जरा आववातु कथन-ए दश वचनना दोष छे.

मनना दश दोष

१ अविवेक, २ यश-कीर्त्तिनी अभिलाषा, ३ लाभार्थीपणुं, ४ अहकार,

५ नय, ६ नियाणु, ७ फलनो संशय, ८ क्रोध, ९ अविनय, अने १० भक्तिशून्यपणुं–ए दश मनना दोष छे.

एवी रीते सर्व मळीन बत्रीश प्रकारना दोषो सामायिकने विषे वर्जवा. वळी कह्यु छे के,

"गृहीत्रस स्थावरजंतुराशिषु, सदैव तप्तायसगोलकोपम‧।
सामायिकावस्थित एष निश्चित, मुहूर्त्तमात्र भवतीह तत्सखः"॥१॥

"गृहस्थ त्रस तथा स्थावर जीवोनी राशिने विषे हमेशा तपेला लोढाना गोळा जेवो छे, पण ज्यारे ते सामायिकमा रहे छे, त्यारे मुहूर्त्त मात्र—बे घडी निश्चये करी तेमनो सखा—मित्र तुल्य छे " १

अहिं मित्र तुल्य शामाटे कह्यो ? तेणे सामायिकमां सर्व आरंभनो त्याग कर्यो छे. वळी अहिं सावद्य योगना पच्चखाणरूप सामायिकनु जे मुहूर्त्तनु प्रमाण ते सिद्धांतमा कहेलु नथी पण जाणी लेवु, कारण के पच्चखाणनो काळ पण जघन्यपणे नवकार सहित पच्चखाणनी जेम मुहूर्त्त मात्रनो छे.वळी सामायिकनु जघन्य अंतर्मुहूर्त्त प्रमाण छे अने उत्कृष्ट एक अहोरात्रनु मान छे एम जाणवु. ते वात दृष्टांतथी सिद्ध करे छे.

"सदैव सामायिकशुद्धवृत्तिर्मानेऽपमानेऽपि समानभाव. ।
मुनीश्वर श्रीदमदंतसंज्ञो बभूव सद्भूतसमृद्धिभोगी"॥१॥

"सदाकाळ सामायिकने विषे जेनी शुद्ध वृत्ति छे अने जे मान तथा अपमानने विषे समान भाववाळा छे एवा श्री दमदंत नामे मुनीश्वर सम्यक्त्ववाळी समृद्धिना भोगी थया हता." १

सामायिकमा रहेनारो पुरुष केवो होय छे ? ते कहे छे.

" निंदपससासु समो, समो अ माणावमाणकारिसु।
सम सयणपरयण मणो, सामाइयसगओ जीवो" ॥१॥

सामायिकमा रहेलो पुरुष निंदा अने प्रशंसा अने मान तथा अपमानने विषे समान तेमज सज्जन अने परिजनने विषे समान एवो होय छे." १

ते विषे दमदंत महर्षिनुं वृत्तात

हस्तिशीर्ष नगरमा दमदत नामे एक राजा हतो तेनी पासे घणी उत्कट सेना हती ते सुखे करीने राज्य करतो हतो. ते समयमा हस्तिनापुर नगरमा पाडवो अने कौरवो राज्य करता हता. एक वखते राजा दमदतने ते पाडवो अने कौरवोनी साथे राज्यना सामाडानो मोटो कलह उत्पन्न थयो ते पछी एक दिवस दमदत राजा जरासघ राजाना पुत्रनी सेवा अर्थे गयो हतो. ते प्रसगनो लाग जोइ कौरवो अने पाडवोए पाछळथी आवी दमदतना देशनो जग कर्यो. आ खबर जाणी राजा दमदतने भारे क्रोध उत्पन्न थयो. तत्काल ते मोटुं सैन्य लइने हस्तिनापुर उपर चमी आव्यो. त्या ते बनेनी वचे माहोमाही मोटु युद्ध थयु. दैवयोगे पाडवो अने कौरवो दमदतथी भागी गया अने दमदतनो जय थयो. राजा दमदत विजयनो डंको वगाडतो पोताना नगरमा आव्यो.

ते पछी केटलोक काल निर्गमन थया पछी एक वखते राजा दमदत संध्याकाले पोताना मेहेल उपर आकाश तरफ जोता हता, तेवामा पचरगी वादलाओ तेमना जोवामा आव्या. तेओने क्षणवारमा वीखराइ गयेला जोइ तेमना हृदयमा वैराग्य भावना प्रगट थइ आवी. तेमणे आ ससारना क्षणिक स्वरूपनो विचार कर्यो. प्रत्येकबुद्धपणाथी तेणे सर्व ससारने असार जोइ तत्काल दीक्षा ग्रहण करी राजा दमदत त्यांथी विहार करी चाली नीकल्या. गामोगाम विहार करता तेओ हस्तिनापुरनी पासे आव्या. त्या ते नगरना दरवाजा पासे तेओ कायोत्सर्ग ध्याने रह्या. तेवामा पाडवो राजवाडीए जवा नीकल्या. ते वखते ते मुनि तेमना जोवामा आव्या. पाडवोए पोताना सेवकोने पुछ्यु के, " आ मुनि कोण छे " ? सेवकोए तपास करीने कह्यु, " ते दमदत राजर्षि छे. " ते साभळताज पाडवो तत्काल अश्व उपरथी नीचे उतरी त्या आव्या अने ते महर्षिने त्रण प्रदक्षिणा करी नमन कर्युं अने तेमना उभय प्रकारना बलनी प्रशसा करी त्यांथी आगळ चाल्या.

क्षणवार पछी ते मार्गे कौरवो नीकल्या. तेओमांथी दुष्ट एवा दुर्योधने ते मुनिने जोइ सेवक पासे तपास करावी. सेवके दमदत मुनिनु नाम आप्युं, एटले दुर्योधने कह्यु के, अरे ! आतो आपणो शत्रु छे. तेनु मुख पण जोवु योग्य

नथी. इत्यादि दुर्वाक्योथी मुनिनो तिरस्कार करी ते साधु तरफ एक बीजोराना फळनो घा करी तेओ आगळ चालता थया. ते पछी ते कौरवोनी पाछळ चालता तेमना सैनिकोए " यथा राजा तथा प्रजा " ए कहेवत प्रमाणे लाकडा, धूळ, अने पाषाण वगेरे ते मुनि तरफ फेंक्या, जेथी करीने ते मुनिनी समीपे जाणे मोटा चॉरो होय, तेवो एक ढगलो थइ गयो.

पाण्डवो स्वेच्छा प्रमाणे वनमां क्रीडा करी पाछा फर्या, तेवामां तेमणे ते मुनिनी पासे मोटो पाषाण वगेरेनो ढगलो जोयो ते विषे लोकोने पुछता तेवु काम कौरवोए कर्यु छे, एम तेमना जाणवामां आवता खेद पामी तेमणे ते पाषाण वगेरेना ढगलाने त्याथी दूर करी दीधो अने पछी ते दमदत महर्षिने विधि पूर्वक वंदना करी पछी पोताने स्थाने चाल्या गया हता

आवी रीते पाण्डवोए सत्कार कर्यो अने कौरवोए अपमान करेला पण ते दमदत मुनिए ते बनेनी उपर समभावने धारण कर्यो हतो. बन्नेनी उपर राग के द्वेष राख्यो न हतो. ते पछी चिरकाल पर्यंत चारित्रनी आराधना करी ते महा मुनि प्रांते उत्तम गतिना भाजन थया हता

आ दमदत महर्षिनी कथा जाणी दरेक आस्तिक गुणना इच्छक पुरुषोए स्थिर परिणामे सामायिक आचरवु अहिं आ प्रमाणे भावना छे.

" धन्ना ते जिय लोए जावज्जीव करंति जे समणा ।
सामाइय विसुद्ध निच्च एव विचितिज्जा ॥ १ ॥
कइआणु अहं दिक्खं जावज्जीव जहट्ठिओ समणो ।
निस्संगा विहरिस्स, एवं च मणेण चितिज्जा " ॥ २ ॥

" जेओ निरतर निर्मल एवु सामायिक जावजीव सुधी करे छे, तेमने धन्य छे. आ प्रकारे चिंतववु. " १

" क्यारे हु दीक्षा लइश ? अने जावजीव सुधी साधुओना समुदायमा रहीने निःसंगपणे क्यारे विचरीश. आ प्रमाणे मनथी चिंतववु " २

आ प्रकारे प्रथम शिक्षाव्रत समजवु.

देशावकाशिक नामे बीजुं शिक्षाव्रत

मोकला नियमोने संक्षिप्त विभागे करी, एटले देशथी अवकाश एटले छूट राखवी ते देशावकाशिक अने तेथी रचायलु व्रत ते देशावकाशिक नामे बीजु शिक्षाव्रत कहेवाय छे. अने वार व्रतोनी गणनामा ते दशमु व्रत कहेवाय छे. कहेवानो भावार्थ एवो छे के, व्रत अगीकार करती वखते यावज्जीवित ग्रहण करेला दिग्व्रतने, प्राणातिपातादिक विरमणनो अने बीजा सर्व व्रतोनो प्रतिदिन जे सक्षेप कराय छे, ते देशावकाशिक व्रत जाणवु तेने माटे एज भावार्थमा आ प्रमाणे लखे छे.

" पुव्वं गहिअस्स दिसा—वयस्स सव्व वयाणुदिण ।
जो संखेवो देसा—वगासियं तं वयं विइयं " ॥ १ ॥

अहिं वृष्ध पुरुषो कहेछे के, दिग्व्रतनो जे सक्षेप करवो ते बीजा व्रतोनो सक्षेप करवा बावत उपलक्षणथी जाणी लेवु, एटले तेमा बीजा व्रतोनो सक्षेप पण आवश्यक छे. वळी दरेक व्रत प्रत्ये दिवस, अने पक्षादिक मर्यादा करीने सक्षेप करवाथी भिन्न व्रत होवाथी जे वार व्रतोनी सख्या छे तेमा विरोध आवे, ए प्रकारे जाणवु के, देशावकाशिक व्रतमा दिग्व्रतनोज विषय छे, तेथी ए शका दूर करवी. वळी कह्यु छे के,

" दिसिवयगहियस्स दिसापरिमाणस्स पइदिणं
परिमाण करणं देसावगासियति "—

" दिशिव्रत ग्रहण करेलु होय तेने प्रतिदिवस दिशानु परिमाण करवु ते देशावकाशिक छे. ए मूळ सूत्रमा दर्शावेलु छे. अने जे आ व्याख्या करवामा आवी छे, ते उपलक्षणथी छे. वळी अवचूर्णी कहे छे के,

" एवं सव्ववएसु जे पमाणा छविया ते पुणो पुणो
दिवसओ उसारेइ देवसिआओ रत्तिंओ सारे "

ए प्रकारे सर्व व्रतोमा जे जे परिमाण करेलु होय ते वारवार दिवसे सक्षेपे अने दिवसनु रात्रिए सक्षेपे. "

आ व्रत उपर दृष्टांत कहे छे. जेने नरकावास नजीक छे, एवो क्रूरमति चण्डकौशिक सर्प देशावकाशिक व्रतवडे तत्काल आठमे देवलोके गयो हतो.

चंडकौशिकनी कथा

कोइ क्षपक (तापस) मुनि मासोपवासना पारणाने दिवसे शिष्य सहित आहारने माटे मार्गमा जता हता. तेवामा तेमना चरणना तल नीचे एक देडकी चपाइ गइ. ते वखते शिष्ये कह्यु, "स्वामिन्, तमोए आ देडकी चगदी नाखी, माटे मिथ्या दुष्कृत आपो." शिष्यना आवा वचनो साभळी ते मुनिने कषाय उत्पन्न थइ आव्यो. तेथी ते क्षपक तापसे ते मर्दन करेली देडकी लोकोने बतावीने शिष्यने कह्यु के अरे दुष्टात्मा, आ देडकीतो मरण पामी गइ, शु ते में हणी?" त्यारे ते शिष्य गुरुने क्रोधायमान थयेला जाणी मौन धरीने रह्यो, काइपण बोल्यो नहीं. पछी संध्या समये आलोचना करती वखते ते शिष्ये मुनिने ते देडकीनी वात संभारी आपी. ते वखते मुनिने विशेष क्रोध उत्पन्न थइ आव्यो, तत्काल रजोहरण उपाडीने मुनि शिष्यने मारवा दोड्या तेवामा वचमा एक स्तंभ आव्यो, तेनी साथे मुनिनु मस्तक अफलायु, अने फुटी गयु, तेथी ते मुनि काल धर्मने पामी गया मृत्यु पामीने ज्योतिषी देवमा उत्पन्न थया. त्याथी चवीने ते कनकखल नामना वनने विषे चण्डकौशिक नामे तापस थयो. ते भवमा पण पूर्व भवना परिचयथी ते घणोज कषायवान् थयो एक वखते कोइ राजकुमारो तेना वनमा फलादिक लेवाने आव्या तेमने जोताज ते तापस कुहाडो लइ तेमने हणवाने पाछळ दोड्यो. दोडता दोडता तेने पगे स्खलना थता ते कोइ खाडामा पडी मृत्यु पामी गयो पछी तेज आश्रममा दृष्टिविष सर्परूपे उत्पन्न थयो. ते वनमा पूर्वभवना अभ्यासथी ते अति मूर्छा—मोह पामी कोइ पण मनुष्यनो संचार थवा देतो नहीं.

एक दिवसे श्रीवीर भगवान् छद्मस्थावस्थामा विद्यमान होइ विचरता विचरता ते वनमा आवी चड्या. त्या जता तेमने गोवालीआ लोकोए वार्या, पण तेओ ज्ञान धारी ते दृष्टिविष सर्पना बिलपासे कायोत्सर्ग करीने रह्या ते वखते ते सर्प पोताना बीलमाथी बाहेर नीकळ्यो प्रभुने जोताज तेनामा उग्र कषाय उत्पन्न थइ आव्यो. तत्काल कषायना आवेशथी तेणे प्रभुना शरीर उपर डश मार्यो.

वज्रना स्तज्जनी जेम अचल एवा श्री वीर ज्गवान्ना शरीरमांथी दूधना जेवा उज्ज्वल रुधिरनी धारा नीकली. ते जोताज ते सर्पना मनमां आश्चर्य उत्पन्न थइ आव्युं तत्काल प्रजुना स्वरूपनु चिंतवन करता तेने जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न थइ आव्यु. पोताना पूर्व जवो तेना जोवामा आव्या. तत्काल ते निर्विष थइ प्रजुने प्रदक्षिणा करी अने नमन करी सामे ऊजो रह्यो. पछी पोते करेल जीवहिंसादि अकृत्यने आलोची अनशन व्रत ग्रहण कर्युं ते पछी " मारी दृष्टिथी कोइ प्राणीने जय न थाओ. " एम विचारी तेणे देशावकाशिक व्रत अंगीकार कर्यु. पछी ते पोतानु मुख वीलमा राखीने रह्यो हतो. आ सर्पनो वृत्तांत सांजली गोवालीआओए आवी माखणथी तेनी पूजा करी. ते माखणना गंधथी कीडीओ आवी ते सर्पना शरीरने वलगी पडी अने तेना आखा शरीरने छिद्रवालु करी दीधु तथापि ते चंडकौशिक सर्प मन अने काया वडे निश्चल रह्यो हतो. तेवी रीते अनशन व्रत पाली मृत्यु पामी आठमा सहस्रार नामना देवलोकमा महर्द्धिक देवता थयो हतो. एवी रीते दशमा देशावकाशिक व्रत उपर चंडकौशिक सर्पनी कथा कहेवाय छे. एवी रीते बीजा पण संसारजीरु प्राणीओए ए व्रतने पालवामा उद्यमवंत थवु.

तेनी जावना कहे छे—

" सव्वे अ सव्व सगोहि, वज्जिए साहूणों नमंसिज्जा ।
सव्वेहि जे हि सव्व सावज्जं सव्वहा चत्त " ॥१॥

ए प्रमाणे दशमु व्रत अने बीजु शिक्षा व्रत कहेवामा आव्यु.

त्रीजु शिक्षाव्रत पोषधव्रत.

धर्मनी पुष्टि करे ते पोषध कहेवाय छे. तेने आचरनार व्रत ते पोषध व्रत कहेवाय छे एटले पर्वने दिवसे अनुष्ठान करवानो जे व्यापार ते रूप जे व्रत ते पोषधव्रत कहेवाय छे. ते आ प्रमाणे—

" आहार देह सक्कार—गेह वावार विरइ बंभेहिं
पव्वदिणाणुट्ठाण, तइय पोसहवय चउहा " ॥ १ ॥

"आहार, देह सत्कार, तथा गृहना व्यापारनी विरति अने ब्रह्मचर्य ए चार प्रकारे जे पर्वना दिवसनु अनुष्ठान ते त्रीजु चार प्रकारनुं पोषधव्रत कहेवाय छे." १

वलि आहि जे निवृत्ति शब्द छे, ते आहार, देह अने सत्कार अने गृह व्यापारनी साथे राखवो. एटले आहारनी निवृत्ति, शरीर सत्कारनी निवृत्ति अने घरना व्यापारनी निवृत्ति—एम समजवु. अने ब्रह्मचर्यनु पालन करवानु छे.

१ आहारनी निवृत्तिमा अशनादि आहारनो विशेषे करी त्याग समजवो.

२ शरीर सत्कार निवृत्तिमा स्नान, उद्वर्त्तन (शरीरे तेलादि चोलवु) अने विलेपन वगेरेनो त्याग समजवो.

३ गृह व्यापारनी निवृत्ति, एटले घरना व्यापारनो निषेध समजवो.

४ ब्रह्मचर्य एटले स्त्री सेवा (संग)नो निषेध, आहिं वली आहार निवृत्ति पोषध बे प्रकारे कहेलु छे. एक देश थकी अने वीजु सर्व थकी. त्रिविध आहारनु पचखाण करनारने देशथकी पोषध होय छे अने चतुर्विध आहारना पचखाण करनारने सर्व थकी पचखाण होय छे. ते शिवायना वाकीना भेदोतो सर्व थकीज छे. तेने माटे आवो पाठ छे.

" करेमि भंते पोसह आहार पोसह देसओ,
सव्वओ वा, शरीरसक्कार पोसहं
सव्वओ, अव्वावारपोसहं सव्वओ, बंभचेर पोसह सव्वओ,
चउव्विहे पोसहे सावज्ज जोगं पचखामि जावदिवस
अहोरत्ति वा पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणमित्यादि"॥१॥

वीजे ठेकाणे वीजी रीते पण कहेलु छे.

आ चार प्रकारनु पोषधव्रत देश अने सर्व एम बे प्रकारे थाय छे.

१ तेमां देशथी आहार पोषध—विगय वगेरेनो त्याग अने एक वार बेवार

पा. २४४ (नो वधारो)[A]

आ ग्रथमा अगीआरमा पोषधव्रतनी बाबतमा [१]खरतरगच्छनी समाचारीमा अने तपगच्छनी समाचारीमा शु तफावत छे ते नीचे मुजब बताववामा आवे छे

१ चार प्रकारना पोषध व्रत बताव्या छे जेमा देशथी आहार पोषध— विगय वगेरेनो त्याग अने एक वार, बे वार भोजन करवु ते. अने सर्वथी आहार पोषध ते चतुर्विध आहारनो त्याग करवो ते, आम कहेल छे. परतु तपगच्छ समाचारी प्रमाणे देशथकी पोषधमा तिविहार उपवास, आयबिल अथवा एकाशन सुधीनी मान्यता छे.

२ खरतरगच्छनी समाचारीमां पोषध पर्वदिवसना अनुष्ठाननो व्यापार छे— एटले मात्र पर्व तिथिएज पोषध करवो जोइए तेम मान्यता छे. वळी तेओ आवश्यक वृत्तिनो पाठ आगळ करी आवी रीते कहे छे के ' पोषध तथा अतिथिसविभागव्रत प्रतिनियत दिवसे अनुष्ठेय छे, परतु प्रतिदिवस अनुष्ठेय नथी ' आम कहे छे, परतु तेमना आ करेला अर्थ माटे तपगच्छाचार्य श्रीमद् रत्नशेखरसूरिजी आवश्यकचूर्णिना अन्य पाठने आगळ करी आ प्रमाणे कहे छे—

" सव्वेसु कालपव्वेसु पसत्थो जिनमतए तवोजोगो ।
अट्ठमी चउद्दसी सुनियमेणहविज्ज पोसहिउ "

भावार्थ—" सर्व काळ अथवा सर्व पर्वोमा प्रशस्त जिनमतने विषे तपयोग छे, परतु अष्टमी आदि तिथिने विषे नियमथी पोषध व्रत होय छे " आ उपरथी समजवानु के पोषधव्रत अन्य दिवसोमा न थइ शके एवो अर्थ कदापि नीकळतो नथी, परतु पर्व दिवसमां तेनी अवश्यकरणीयता समजवी एवो भावार्थ छे

३ खरतरगच्छीय आचार्यो पोतानी समाचारीमा चार तिथिओने पर्व तिथिओ तरिके माने छे, परतु तपगच्छीय आचार्यो तेने माटे नीचे प्रमाणे कहे छे—

"बीयापचमी अट्ठमी एगारसी चउद्दसी पण तिहिउ ।
एयाउ सुतिहीउ गोयमगणहारिणाभणिया ॥

"गौतम गणधर महाराजे आ पाच तिथि—बीज, पाचम, आठम, एकादशी अने चतुर्दशी एम कहेल छे, वळी महावीर प्रभुए कह्यु छे केः—

भयव ! बीयपमुहासु पचसुतिहिसु विहिय धम्माणुठाणं
किं फलहोइ ? गोयमा ! बहुफलं होइ !

हे भगवन् ! बीज प्रमुख पाच तिथिओमा विधान करेला धर्मानुष्ठाननुं फळ शु होय ? हे गौतम ! बहु फल होय. ते सिवाय प्रश्नप्रश्नमा पूर्णिमा अने अमावास्या मळी बार तिथिओ कहेल छे

---

१ आ भणना व्याख्यानकार वाइक आ विषय परत्वे तपगच्छनी मान्यतावाच्य होय तेम लागे छे

"आहार, देह सत्कार, तथा गृहना व्यापारनी विरति अने ब्रह्मचर्य ए चार प्रकारे जे पर्वना दिवसनु अनुष्ठान ते त्रीजु चार प्रकारनु पोषधव्रत कहेवाय छे." १

वलि आहिं जे निवृत्ति शब्द छे, ते आहार, देह अने सत्कार अने गृहव्यापारनी साथे राखवो. एटले आहारनी निवृत्ति, शरीर सत्कारनी निवृत्ति अने घरना व्यापारनी निवृत्ति—एम समजवु. अने ब्रह्मचर्यनु पालन करवानु छे.

१ आहारनी निवृत्तिमा अशनादि आहारनो विशेषे करी त्याग समजवो.

२ शरीर सत्कार निवृत्तिमा स्नान, उद्वर्त्तन (शरीरे तेलादि चोळवु) अने विलेपन वगेरेनो त्याग समजवो.

३ गृह व्यापारनी निवृत्ति, एटले घरना व्यापारनो निषेध समजवो.

४ ब्रह्मचर्य एटले स्त्री सेवा (संग)नो निषेध, आहिं वळी आहार निवृत्ति पोषध बे प्रकारे कहेलु छे. एक देश थकी अने बीजु सर्व थकी. त्रिविध आहारनु पच्चखाण करनारने देशथकी पोषध होय छे अने चतुर्विध आहारना पच्चखाण करनारने सर्व थकी पच्चखाण होय छे ते शिवायना बाकीना भेदोतो सर्व थकीज छे. तेने माटे आवो पाठ छे.

" करेमि भंते पोसहं आहार पोसह देसओ, सव्वओ वा, शरीरसक्कार पोसह सव्वओ, अव्वावारपोसहं सव्वओ, बंभचेर पोसहं सव्वओ, चउव्विहे पोसहे सावज्ज जोग पच्चखामि जावदिवसं अहोरत्ति वा पज्जुवासामि दुविह तिविहेणमित्यादि"॥१॥

बीजे ठेकाणे बीजी रीते पण कहेलु छे

आ चार प्रकारनु पोषधव्रत देश अने सर्व एम बे प्रकारे थाय छे.

१ तेमां देशथी आहार पोषध–विगय वगेरेनो त्याग अने एक वार बेवार

आ ग्रंथमा अगीआरमा पोषधव्रतनी बाबतमा ¹खरतरगच्छनी समाचारीमा अने तपगच्छनी समाचारीमा शु तफावत छे ते नीचे मुजब बतावबामा आवे छे

१ चार प्रकारना पोषध व्रत बतावेला छे जेमा देशथी आहार पोषध— विगय वगेरेनो त्याग अने एक वार, बे वार भोजन करवु ते अने सर्वथी आहार पोषध ते चतुर्विध आहारनो त्याग करवो ते, आम कहेल छे परंतु तपगच्छ समाचारी प्रमाणे देशथकी पोषधमा तिविहार उपवास, आयंबिल अथवा एकाशन सुधीनी मान्यता छे.

२ खरतरगच्छनी समाचारीमा पोषध पर्वदिवसना अनुष्ठाननो व्यापार छे— एटले मात्र पर्व तिथिएज पोषध करवो जोइए तेम मान्यता छे वळी तेओ आवश्यक वृत्तिनो पाठ आगळ करी आवी रीते कहे छे के 'पोषध तथा अतिथिसंविभागव्रत प्रतिनियत दिवसे अनुष्ठेय छे, परंतु प्रतिदिवस अनुष्ठेय नथी' आम कहे छे, परंतु तेमना आ करेला अर्थ माटे तपगच्छाचार्य श्रीमद् रत्नशेखरसूरिजी आवश्यकचूर्णिना अन्य पाठने आगळ करी आ प्रमाणे कहे छे—

"सव्वेसु कालपव्वेसु पसत्थो जिनमतए तवोजोगो ।
अट्ठमी चउद्दस्सी सुनियमेणहविज्ञ पोसहिउ"

भावार्थ—"सर्व काळ अथवा सर्व पर्वोमा प्रशस्त जिनमतने विषे तपयोग छे, परंतु अष्टमी आदि तिथिने विषे नियमथी पोषध व्रत होय छे" आ उपरथी समजवानु के पोषधव्रत अन्य दिवसोमा न थइ शके एवो अर्थ कदापि नीकळतो नथी, परंतु पर्व दिवसमा तेनी अवश्यकरणीयता समजवी एवो भावार्थ छे.

३ खरतरगच्छीय आचार्यो पोतानी समाचारीमा चार तिथिओने पर्व तिथिओ तरिके माने छे, परंतु तपगच्छीय आचार्यो तेने माटे नीचे प्रमाणे कहे छे—

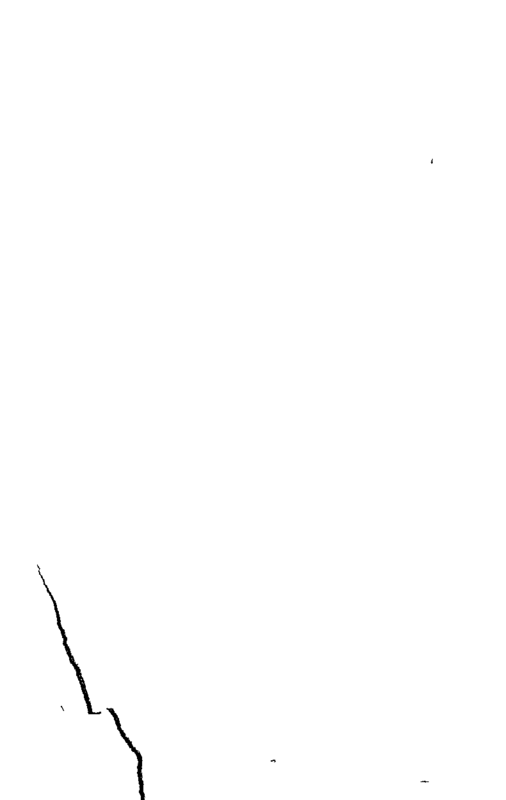
"बीयापचमी अट्ठमी एगारसी चउद्दसी पण तिहिउ ।
एयाउ सुतिहीउ गोयमगणहारिणाभणिया ॥

"गौतम गणधर महाराजे आ पाच तिथि-बीज, पाचम, आठम, एकादशी अने चतुर्दशी एम कहेल छे, वळी महावीर प्रभुए कह्यु छे के.—

भयव ! बीयपमुहासु पचसुतिहिसु विहिय धम्माणुठाण किं फलहोइ ? गोयमा ! बहुफलं होइ !

हे भगवन् ! बीज प्रमुख पाच तिथिओमा विधान करेला धर्मानुष्ठाननु फळ शु होय ? हे गौतम ! बहु फळ होय. ते सिवाय श्येनप्रश्नमा पूर्णिमा अने अमावास्या मळी चार तिथिओ कहेल छे

१ आ ग्रंथना व्याख्याकार पाठक आ विषय परत्वे तपगच्छना मान्यतावाळा होय तेम लागे छे



भोजन करवु ते अने सर्वथी आहार पोषध चतुर्विध आहारनो त्याग करवो ते.

२—३ देह सत्कार अने गृह व्यापार पोषधने विषे काइक देह सत्कार अने गृह व्यापार करवो ते. थोडुं करवु ते देशथकी अने सर्वथा न करवुं ते सर्व थकी.

४ ब्रह्मचर्य पोषधमा ब्रह्मचर्यनु प्रमाण करवु ए देशथकी अने ब्रह्मचर्य सर्वथा पाळवु, ए सर्व थकी.

अहिं आ प्रमाणे समाचारी छे—

" जो देस पोसह करेइ सो सामाइयं करेइ वा नवा.
जो सव्व पोसह करेइ सो नियमा सामाइयं करेइ,
जइ न करेइ तो वंचिज्जइ, तं कहं ? चेइघरे साहुमूले
घरे वा पोसहसालाए वा उमुक्कमणिसुवण्णो पढंतो
पुच्छंग वा वायंतो सुणतो धम्मझाणं झियाइत्ति "

अहिं तत्त्व शु छे ? ते तो केवळी जाणे.

जे देश पोषध छे, ते सामायिक करे अथवा न करे अने जे सर्व पोषध करे ते तो नियमा सामायिक करे. जो सर्व पोषधवालो सामायिक न करे तो ते लाभथी ठगाय छे. ते क्या करे ? तेने माटे कहे छे के, चैत्यगृहे. साधु पासे पोताने घेर अथवा पोषधशालामा करे. जेणे मणि सुवर्ण वगेरेनो त्याग करेलो छे एवो ते भणतो, गणतो, पुछतो, वाचना लेतो, अने धर्म सांभळतो धर्मध्यानने ध्यावे. "

हवे पूर्वे जे कह्यु छे के, पोषध " पर्व दिवसना अनुष्ठाननो व्यापार छे, तेथी पर्व शु ते कहे छे—चौदश, आठम, अमावास्या, पुनम एटली तिथिओना दिवसो, तपनकल्याणथी कल्याणकना दिवसो अने पर्युषणा पर्व—ए दिवसोमा पापनो व्यापार मुकीने पण्डित पुरुषो पोषध व्रतने करे.

अहिं नामथी पर्वतिथिओ चार छे पण वस्तुताथी छ छे. एक मासे बे आठम, बे चउदश, अमावास्या अने पुनम—एम छ थाय छे

अहिं प्रश्न करे छे के, " श्रावक पर्व तिथिने दिवसेज पोषध करे ते शि

वाय न करे ? " तेना उत्तरमा कहे छे के, केटलाएक श्रावको सर्व तिथिओने विषे पोषध करे छे, परतु केटलाएक तेम न करी शके त्यारे तेमणे पर्व तिथिने विषे ते व्रत अवश्य करवु, तेथीज अहिं पर्वनु ग्रहण करेलु छे आवश्यक वृत्तिने विषेतो श्रावके दररोज पोषध करवानो स्पष्ट रीते निषेध करेलो छे. तत्त्व शु छे ? ते तो केवलिगम्य छे

हवे पोषधमा सर्व अपहार—त्याग करवो दुष्कर छे, पण ते करवानु घणु पुण्य छे, माटे ते अवश्य करवो जोइए. तेने माटे कह्यु छे के,

" नृप निग्रह रोगादिषु, न ह्यशनाद्य न धर्ममपि लभसे ।
तत् किं प्रमाद्यसि त्व, ध्रुवधर्मे पोषधे भव्य " ॥ १ ॥

" हे भव्य, राजा ए निरोध कर्यो होय, कोइ रोग थइ पड्यो होय इत्यादि[1] प्रसगे अशनादि थतु नथी, परतु तेवा अनशनथी तने धर्मनी प्राप्ति थती नथी , तो जेमां अवश्य धर्म प्राप्त थाय छे, एवु पोषधव्रत लेवामा शा माटे प्रमाद करे छे ? " १

आ व्रत उपर दृष्टात आपे छे

" य पोषधस्थ· सुतरा सुरेण, पिशाचनागोरग दुष्टरूपै ।
विक्षोभितोऽपि क्षुभितो न किंचित्,
स कामदेवो नहि कस्यवर्ण्य " ॥ १ ॥

"जे कामदेव नामना श्रावकने पोषधव्रतमा रहेलां छता कोइ देवताए पिशाच, हाथी अने सर्प वगेरेना दुष्टरुपोथी निरतर क्षोभ पमाड्यो तो पण ते जरापण क्षोभ पाम्यो नहीं, ते कामदेव श्रावक कोने वर्णनीय न होय ? " १

ते कामदेव श्रावकनी कथा आगळ कहेवामा आवशे

तेनी अहिं आ प्रमाणे भावना छे.

"धन्ना तप्पति तव, जे एएसि नमो सुसाहूण ।

१ इत्यादि शब्दथी वरणक अने दुकाळ वगेर पड्यो होय त्यारे एम लेवु

निस्संगा य सरीरे,वि सावगो चिंतएमिइम "॥ १ ॥

" जे उग्रतप तपे छे अने जे शरीरने विषे निःसंग छे, एवा सुसाधुने नमस्कार थाओ. " आ प्रमाणे श्रावक मनमा चिंतवे. " १

एवी रीते त्रीजुं पोषध नामे शिक्षाव्रत कहेवामा आव्यु.

चोथुं अतिथि संविभाग नामे शिक्षाव्रत

जेने तिथिपर्वादि लोक व्यवहार नथी, ते अतिथि कहेवाय छे. तेवा अतिथिने जे शुद्ध आहार वगेरे आपवारूप व्रत ते अतिथि संविभाग व्रत कहेवाय छे. केटलाएक आ व्रतने यथासंविभाग एवा नामथी कहे छे. ते नाम प्रमाणे आ प्रमाणे अर्थ करवो यथा एटले प्रवृत्ति अर्थात् यथाप्रवृत्ति स्वभावे निष्पन्न थयेल जे आहारादिक ते साधु प्रमुखने आपवा ते यथासंविभाग कहेवाय छे. एवो व्युत्पत्त्यर्थ छे.

गृहस्थ पोषधने पारणे परम विनयपूर्वक गुरुने जे शुद्ध अशनादिक आपे ते चोथु शिक्षाव्रत कहेवाय छे आ स्थले उपयोगि होवाथी चूर्णीमाथी केटलुएक आपवामा आवे छे—

"पोसहं पारतेण साहूण अदाउं न वट्टई, पारेइ सव्व साहूण दाउं पच्छा पारेयव्व । काहे विहीए दायव्व ? जाहे देसकालो ताहे अप्पणो सव्व सरीरस्स विभूस काऊण साहू पडिस्सयगओ निमतेइ भिक्ख गिण्हवन्ति साहुण का पभिवत्ति । ता हे अन्नोपम्हलग अन्नो भायण पम्हिलेहेइ,मा अतराइ अदोसा ठविअगाइ दोसाय भविस्सति सो जइ पढमाइ पोरिसिए निमतेइ अथ्थिय नमोकारइत्ता ताहेघिप्पइ जइ नथ्थि ताहे न घिप्पइ । त धरिअव्वय होहि इसो घण लगिज्जा ताहेघिप्पइ सचिरका विज्जइ जो वा उग्घाड पोरिसीए पारेइ पारणगइत्तो अन्नो वा तस्स विसाजिज्जए तेण सावएण सह गम्मइ सघाऋओ

वच्चइ एगो न वच्चइ साहु पुरओ सावगो पच्छओ घर
तेऊण आसणेण निमंतिज्जा, जइवि न निविट्ठो विणओ
पउत्तो ताहे जत्तपाणं सय देहि अहवा जायणं धरेइ
जज्जा देइ अहवा ठिओ अच्छि जाव दिण सेस च गिण्हिऊव
पच्छा कम्माइ परिहरणट्ठा दाऊणं वदित्ता विसज्जेइ अणुगच्छिअ
पच्छासयं जुजइ ज च किर साहुण न दिन्न त सावएण
न जुत्तव्व जहिं पुण साहूनत्थि तथ्थ देसकाल वेलाए दिसाव-
लोओ कायव्वो विसुध्धेण जावेण जइ साहूणो हु तो तो
नित्थरिओ तोत्ति " ॥

" पोषध पारीने साधुने वहोराव्या वगर पारणु करवु कल्पतु नथी, माटे साधुने दान दइ पछी पारणु करवु योग्य छे. हवे क्यारे अने कइ विधिए करवु ते कहे छे—देश कालने अनुसारे पोताना शरीरने विभूषित करी अर्थात् शृगार करी साधु उतर्या होय ते स्थान (उपाश्रय) मा जइ साधुने आहारनी विनति करे. ते वखते साधु शु करे ते कहे छे—कोइ पमला कोइ पात्र विगेरे जुदां जुदा पमिलेहे जेथी वखत नही लागवाथी अतराय दोष तथा स्थापना दोष लागे नहि. जो विनति करनार पहेली पोरिसिमा विनति करे अने कोइ साधुने नमुकारसहिउं पच्चखाण होय तो ग्रहण करे अने जो न होय तो ग्रहण न करे, जेथी आहार राखी मूकवो न पमे ' जो श्रावक घणो पाछळ लागे तो ग्रहण करी साचवीने राखे, अथवा जे कोइ तपस्वी पारणा निमित्ते अथवा बीजो कोइ उग्घाडपोरिसिए पारे तेने आपे आहार लेवा जती वखते एकलो साधु न जाय, परतु सघाटक वे साधुओ जाय तेओ पण विनति करनारनी सायेज जाय. तेमा पण साधु आगळ चाले अने श्रावक पाछळ चाले. आवी रीते घेरे लइ जइ श्रावक आसननी निम त्रणा करे. जो के साधु कारण विना वेसे नहि. तथापि पोताना तरफथी विनय कर्यो कहेवाय. पछी श्रावक पोते साधु महाराजने आहार पाणी वहोरावे अथवा श्रावक पोते पात्र धरे अने श्राविका वहोरावे, अथवा श्रावक पोते एक तरफ

उजो रहे अने स्त्री श्राविका विगेरे बीजा कोइ वहोरावे साधु पण पश्चात् कर्मादि दोष वर्जवा निमित्ते जे चीज वहोरावे ते शेष बाकी राखीने ग्रहण करे. श्रावक शुद्ध जावथी दान दइ वंदना करी थोडे दूर गुरु महाराजने वळावी घरे आवी पोते आनंद पामतो जोजन करे. पण जे चीज साधुने दानमा न आपी होय ते श्रावके खावी न जोइए जो नगरमा साधु न होय तो जोजनना स्थान अने काळमा दिशावलोकन करी मनमा शुद्ध जावना जावे के जो आ वखते साधु महाराज होततो मारो निस्तार थात." आथी करीने उत्तम श्रावके निरंतर साधुने दान देवुज जोइए, पण अतिथि संविजाग व्रतनो उच्चार पर्वपोषधना पारणाने दिवसेज होय छे. तेने माटे आवश्यक वृत्तिमा कह्यु छे के, पोषध अतिथि संविजाग तो प्रतिनियत दिवसे अनुष्ठेय छे, पण प्रतिदिवस अनुष्ठेय नथी. ते विषे बहु विस्तार करवाथी बस थयु.

वळी सुश्रावके साधुने जे एषणीय आहारादिक आपवा, ते महालाजनुं कारण छे, अने निर्वाह थता छता अनेषणीय आहारादिक सर्वथा देवा नहीं; कारणके, ते अल्पआयुर्बंधादिकनु कारण छे.

अहिं कोइ प्रश्न करे छे के "कुपात्रने विषे एषणीय आहारादिक देवाथी तथाप्रकारना गुण उत्पन्न थाय छे के नहीं?" तेनो उत्तर आ प्रमाणे छे. कुपात्रने देवातु एषणीय आहारादिक पण केवल पापनुज कारण छे, ते निर्जरानु हेतु नथी. श्री जगवतीजीमा कह्यु छे के, "श्रावक तथाप्रकारना असयति, अविरति, तथा पाप कर्मना जेणे पच्चखाण कर्या नथी तेना प्रत्ये फासु, अफासु, एषणीय, अनेषणीय, असण, पाण, खाइम, अने साइमने प्रतिलाजता (आपता) छता शु उपार्जन करे"? प्रजुए कह्यु, "हे गौतम, ते एकात पाप कर्म उपार्जे, पण तेने काइ पण निर्जरा नथी. हवे एम छे तो श्रावकोए साधुशिवाय बीजे कोइ ठेकाणे दान आपवु नहीं, एम थयु. गुरु कहे छे. "एम नथी. आगमने विषे अनुकपा दान निषेध्यु नथी". पूर्वाचार्योए कह्यु छे के,

" ज मुक्खट्टा दाणं, तपइ एसो विहि समक्खाओ ।
अणुकपा दाणं पुण, जिणेहि न कयावि पडिसिद्धं" ॥ १ ॥

आवता दानने आश्रीने छे. पण जे कर्मनिर्जराने अणचींतवीनेज केवल कृपाए करीनेज देवाय ते अनुकंपा दान कहेवाय छे. ते कृपालु जिनजगवते कोइ वखत पण निषेध्युं नथी. १ ”

आ कारणने लइने श्रीराजप्रश्नीय उपांगमा प्रदेशीराजाने केशी गणधरे कह्यु छे के, “ हे प्रदेशी, तुं पूर्वे रमणिक थइने अरमणिक न थइश ” ते उपरथी प्रदेशी राजाए पोताना देशना चार जाग करी, तेमा एक जागे दीन—अनाथादिकने माटे निरंतर दानशाला प्रवर्तावी हती, ते तेटला माटे प्रवर्तावी हती के, दानना त्यागथी जिनमतनी निंदा न थाओ. एटले जो ते बीजा दाननो तदन त्याग करे तो जिनमतनी निंदा थाय. तेथी ज्ञानी महाराजाए कोइ ठेकाणे अनुकंपा दान निषेध्युं नथी. जो वली जगद्गुरुए श्रावकोने सर्व ठेकाणे दान करवानी आज्ञा न दीधी होत तो तुंगिका नगरीना श्रावकोना वर्णनना अधिकारमां कहेलुं छे के, “जेने विस्तारवंत—प्रचुर जात पाणी छे ” इत्यादि विशेषणो आप्या छे, तेवा विशेषणो न आपता केवल साधुदानमांज प्रचुर अन्न आपवु एम कहेत, आ उपरथी निश्चय थयो के, कर्म निर्जराने माटे जे दान देवुं, ते साधुओनेज देवुं. साधुओने दान देवाथी कर्मनी निर्जरा थाय छे. अने जे अनुकंपा दान छे, ते बीजा सर्वने देवुं.

सुपात्र दानने माटे विशेष कहे छे.

“ जयेनलोभेन परीक्षयावा, कारुण्यतोऽमर्षवशेन लोके ।
स्वकीर्त्ति प्रश्नार्थितया च दान, नार्हंति शुद्धा मुनय कदापि ” ॥ १ ॥

“ जयथी, लोजथी, परीक्षाथी, दयाथी, क्रोधने वश थवाथी, अने लोकोमा पोतानी कीर्त्ति प्रसरे तेवा हेतुथी अने प्रश्नना अर्थीपणाथी जे दान आपवुं, तेवा दानने शुद्ध मुनिओ कदि पण योग्य थता नथी. ” १

१ जयथी एटले “आ लोकोने जो नहीं आपीए तो तेओ असत् करनार होइ मने शाप आपशे अथवा लोकोमा मारी विरुद्ध बोलशे”—आवा जयथी

२ “लोजथी एटले दान आपवाथी आ जन्ममा अथवा अन्य जन्मने विषे

मने समृद्धि मळशे " एवा लोजथी.

३ परीक्षाथी एटले " आ साधु निर्लोभी छे, एम सांजळ्युं छे ते आ दान लेशे के नहीं " एवी परीक्षा करवाना इरादाथी.

४ दयाथी एटले " मारा आप्या शिवाय ए बिचारानो शी रीते निर्वाह थशे." एवी करुणाथी

५ अमर्षथी एटले " अमुक माणसे आप्यु, तो शुं हुं तेनाथी ओछो छुं, के न आपु " एवा विचारथी.

६ पोतानी कीर्त्ति लोकोमा प्रसरे तेथी एटले " दान लेनारना अथवा मुखथी पोतानी प्रशंसा सांजळवानी इच्छाथी. "

७ प्रश्नना अर्थीपणाथी एटले " दानथी सत्कार करवाने लीधे ते मारा प्रश्नोनो ज्योतिष प्रमुखथी खुलासो करशे " एवी इच्छाथी

उपर कहेला कारणोथी शुद्ध मुनिओ लोकने विषे कदि पण दानने योग्य थता नथी. अर्थात् उपर कहेला सात कारणोने लइने मुनिओने दान आपवु नहीं. पोतानी निस्सार बुद्धिथी नक्तिवमेज दान देवु योग्य छे.

वळी सुपात्रने विषे दान आपनारा गृहस्थे पाच दूषणो वर्जवा अने पांच आभूषणो धारण करवा.

पांच दूषणो

" अनादरो विलंबश्च, वैमुख्यं विप्रियं वच ।
पश्चात्तापश्च पचैते, सद्दानं दूषयत्यहो " ॥ १ ॥

दान आपवामा अनादर करवो, आपता विलंब करवो, मुख अवलुं करवुं, अप्रिय वचन बोलवु, अने आप्या पछी पश्चात्ताप करवो, ए पाच दानने दूषित करे छे.

पाच भूषणो

" आनंदाश्रूणि रोमाचो, बहुमानं प्रियं वच· ।
पात्रेऽनुमोदना चैव, दानं भूषणपंचकम् " ॥ १ ॥

" दान आपता आनंदना अश्रुओ आवे, शरीर रोमांचित थइ जाय, बहु मान करे, प्रिय वचन बोले अने पात्रनु अनुमोदन करे, ए दानना पांच आभूषणो छे. " १

सुपात्र दानना प्रस्तावमां जव्य प्राणीओए मनना परिणाम चडता राखवा. पचक शेठनी पेठे हीन परिणामी थवु नहीं.

पचक शेठनी कथा.

कोल्लर नामना गामने विषे पचक नामे एक व्यापारी शेठ रहेतो हतो. एक दिवसे कोइ ज्ञानी मुनि तेने घेर जिक्षा लेवाने अर्थे आव्या ते वखते पचक शेठ उल्लसित जाववडे ते मुनिने अखंड धारावडे घृतनु दान आपवा तत्पर थया घीनी धाराथी तेमनु पात्र जरा जाणु रह्यु तोपण मुनिए ज्ञानना बलथी ते शेठना परिणामनी शुद्धिवडे घणो लाज जाणी तेना परिणामनो जंग न थाय, एवी बुद्धियी, जेवामां मुनि ते शेठने दान आपता निषेधता नथी, तेवामा ते शेठना परिणाम चपलताथी पतित थइ गया. तत्काल तेणे चिंतव्यु के, " अहो ! आ मुनि लोजी लागे छे पोते एकला छता आटलाबधा घीने शु करशे ? " आवु चिंतवताज तेना हाथमा घीनी धारा हळवे हळवे पडवा लागी एटले ते ज्ञानी मुनिए ज्ञानना बळथी तेना परिणाम जाणीने कह्यु,"हवे पडो नहि" पडो नहि त्यारे शेठे कह्यु,"स्वामी,हु तो सारी रीते दृढताथी स्थिर रह्यो छु,हु लगारमात्रपण पडतो नथी, ते छतां तमे मृषा वचन केम बोल्यो छो ? " त्यारे मुनिए कह्यु, तु द्रव्यथी पडतो नथी पण जावथी पड्यो छे तने वधारे शु कहेवु ? पण बारमा देवलोकमा जवा योग्य एवा अध्यवसायथी पडीने तु पेहेला देवलोकमा जवा योग्य एवा अध्यवसायमा आवी रहेलो छे "

मुनिना आ वचनो सांजळी ते पचक शेठ अत्यंत पश्चात्ताप करवा लाग्यो. पछी मुनि तो पोताने स्थाने चाल्या गया.

एवी रीते पचक शेठनी कथा छे

दान कर्म उपर जावनुज प्रधानपणु छे, ए वात दृष्टांतथी देखाडे छे. द्रव्यथी नहीं पण जाव शुद्धियीज दान आपनार जिनदत्त (जीरण) नामे शेठ

महान् लाभने पाम्यो हतो. अने पुरण नामे शेठ भावविना नगारा फलने पाम्यो हतो.

आगममा एम मनलाय छे के, " जिनदत्त शेठ प्रभुनो संयोग पामी द्रव्यथी दान न देता छता भावथी दान आपी महा लाभने प्राप्त थयो हतो अने पुरण शेठ द्रव्यथी दानने देतो पण भाव विना जिनदत्तनी पेठे महा लाभने पाम्यो नहि अर्थात् द्रव्य प्राप्तिरूप अल्प लाभनो ते भागी थयो हतो.

कथा

एक दिवसे श्री वीरप्रभु छद्मस्थावस्थामा विचरता विचरता विशाळा नगरीनी बाहेर आवेला बलदेवना देहेरामा चार मास सुधी चतुर्विध आहारना पच्चखाण करी कायोत्सर्गे रह्या हता. ते नगरमा उत्कृष्टपणे जैन धर्ममा रक्त एवो जिनदत्त (जीर्ण) नामे शेठ रहेतो हतो. ते एक वखते बलदेवना मदिरमा आवी चड्यो. त्या श्री वीर प्रभुने जोइ वदना करी ते पोताना मनमा आ प्रमाणे चिंतववा लाग्यो.—" आ स्वामीए उपवास करेल छे. ते स्वामी प्रातःकाले अवश्य पारणु करशे ते वखते हु आ प्रभुने पडिलाभीश.—तेमने आहार पाणी व्होरावीश. " आ प्रमाणे ते दररोज ते प्रभु पासे आवतो अने आवी भावना भावतो हतो. तेम करता पक्ष, मास व्यतीत थवा लाग्या, तेने गणतो ते शेठ निर्मल अध्यवसायवालो थतो हतो, तेम करता चार मास व्यतीत थइ गया. चातुर्मास्यने अते पारणाने दिवसे ते शेठ शुद्ध आहारनी सामग्री मेलवी बपोरे पोताना घरना द्वार उपर बेठो. प्रभुना आगमनना मार्गने जोतो ते आ प्रमाणे चिंतववा लाग्यो—" हमणा श्री वीर स्वामी अहिं पधारशे त्यारे हु मस्तके अजलि जोडी प्रभुनी सन्मुख जइ तेमने त्रण प्रदक्षिणा करी वदना करी घरमा लइ जइश. त्या भक्तिपूर्वक प्रधान प्रासुक अने एषणीय अन्न पानादिकथी प्रभुने पडिलाभीश, अने पारणु करावीश. ते पछी प्रभुने नमी केटलाक डगलां प्रभुनी पाछळ जइश. त्यारबाद हु मारा आत्माने धन्य मानी बाकी रहेल अन्नादिकनु भक्षण करीश. " आ प्रमाणे जीर्णशेठ भावनामयमनोरथो करता हता, तेवामा श्री वीर प्रभु भिक्षाने माटे विचरता पुरण शेठना घरमा पेठा. ते पुरण शेठ मिथ्यात्वी हतो, तेथी तेणे दासीने हाथे प्रभुने अडदना

" दान आपता आनंदना अश्रुओ आवे, शरीर रोमांचित थइ जाय, बहु मान करे, प्रियं वचन बोले अने पात्रनु अनुमोदन करे, ए दानना पांच आभूषणो छे." १

सुपात्र दानना प्रस्तावमा भव्य प्राणीओए मनना परिणाम चडता राखवा. पचक शेठनी पेठे हीन परिणामी थवु नहीं

पचक शेठनी कथा

कोल्लर नामना गामने विषे पचक नामे एक व्यापारी शेठ रहेतो हतो. एक दिवसे कोइ ज्ञानी मुनि तेने घेर भिक्षा लेवाने अर्थे आव्या. ते वखते पचक शेठ उल्लसित भाववडे ते मुनिने अखंड धारावडे घृतनु दान आपवा तत्पर थया. घीनी धाराथी तेमनु पात्र जरा ऊणु रह्यु तोपण मुनिए ज्ञानना बलथी ते शेठना परिणामनी शुद्धिवडे घणो लाभ जाणी तेना परिणामनो भंग न थाय, एवी बुद्धिथी, जेवामां मुनि ते शेठने दान आपता निषेधता नथी, तेवामा ते शेठना परिणाम चढ्ढताथी पतित थइ गया. तत्काल तेणे चिंतव्यु के, " अहो ! आ मुनि लोभी लागे छे पोते एकला छता आटलाबधा घीने शु करशे ? " आवु चिंतवताज तेना हाथमा घीनी धारा हळवे हळवे पडवा लागी एटले ते ज्ञानी मुनिए ज्ञानना बळथी तेना परिणाम जाणीने कह्यु,"हवे पडो नहि" पडो नहि त्यारे शेठे कह्यु,"स्वामी,हु तो सारी रीते दृढताथी स्थिर रह्यो छु,हु लगारमात्रपण पडतो नथी, ते छता तमे मृषा वचन केम बोलो छो ? " त्यारे मुनिए कह्यु, तु द्रव्यथी पडतो नथी पण भावथी पड्यो छे तने बधारे शु कहेवु ? पण बारमा देवलोकमा जवा योग्य एवा अध्यवसायथी पडीने तु पेहेला देवलोकमा जवा योग्य एवा अध्यवसायमा आवी रहेलो छे "

मुनिना आ वचनो सांभळी ते पचक शेठ अत्यत पश्चात्ताप करवा लाग्यो. पछी मुनि तो पोताने स्थाने चाल्या गया.

एवी रीते पंचक शेठनी कथा छे

दान कर्म उपर भावनुज प्रधानपणु छे, ए वात दृष्टातथी देखाडे छे. द्रव्यथी नहीं पण भाव शुद्धिथीज दान आपनार जिनदत्त (जीरण) नामे शेठ

महान् लाजने पाम्यो हतो. अने पुरण नामे शेठ जावविना नगारा फलने पाम्यो हतो.

आगममा एम सत्वलाय छे के, " जिनदत्त शेठ प्रभुनो संयोग पामी द्रव्ययो दान न देता छता जावथी दान आपी महा लाजने प्राप्त थयो हतो अने पुरण शेठ द्रव्यथी दानने देतो पण जाव विना जिनदत्तनी पेठे महा लाजने पाम्यो नहि अर्थात् द्रव्य प्राप्तिरूप अल्प लाजनो ते जागी थयो हतो.

कथा

एक दिवसे श्री वीरप्रभु छद्मस्थावस्थामा विचरता विचरता विशाळा नगरीनी बाहेर आवेला बलदेवना देहेरामा चार मास सुधी चतुर्विध आहारना पच्चखाण करी कायोत्सर्गे रह्या हता. ते नगरमा उत्कृष्टपणे जैन धर्ममां रक्त एवो जिनदत्त (जीर्ण) नामे शेठ रहेतो हतो. ते एक प्रवते बलदेवना मंदिरमा आवी चड्यो. त्या श्री वीर प्रभुने जोइ वंदना करी ते पोताना मनमा आ प्रमाणे चिंतववा लाग्यो.—" आ स्वामीए उपवास करेल छे. ते स्वामी प्रातःकाले अवश्य पारणु करशे ते वखते हुं आ प्रभुने पमिलाजीश.—तेमने आहार पाणी व्होरावीश " आ प्रमाणे ते दररोज ते प्रभु पासे आवतो अने आवी जावना जावतो हतो. तेम करता पक्ष, मास व्यतीत थवा लाग्या, तेने गणतो ते शेठ निर्मल अध्यवसायवाळो थतो हतो, तेम करता चार मास व्यतीत थइ गया. चातुर्मास्यने अंते पारणाने दिवसे ते शेठ शुद्ध आहारनी सामग्री मेळवी वगेरे पोताना घरना द्वार उपर बेठो. प्रभुना आगमनना मार्गने जोतो ते आ प्रमाणे चिंतववा लाग्यो—" हमणा श्री वीर स्वामी अहिं पधारशे त्यारे हुं मस्तके अंजलि जोडी प्रभुनी सन्मुख जइ तेमने त्रण प्रदक्षिणा करी वंदना करी घरमा लइ जइश त्या जक्तिपूर्वक प्रधान प्राशुक अने एषणीय अन्न पानादिकथी प्रभुने पमिलाजीश, अने पारणु करावीश. ते पछी प्रभुने नमी केटलाक डगलां प्रभुनी पाछळ जइश. त्यारबाद हु मारा आत्माने धन्य मानी बाकी रहेल अन्नादिकनु जक्षण करीश. " आ प्रमाणे जीर्णशेठ जावनामयमनोरथो करता हता, तेवामा श्री वीर प्रभु भिक्षाने माटे विचरता पुरण शेठना घरमा पेठा. ते पुरण शेठ मिथ्यात्वी हतो, तेथी तेणे दासीने हाथे प्रभुने अडदना

बाकला देवराव्या तत्काल सत्पात्र दानना माहात्म्यथी देवताए त्या पांच दिव्य प्रगट कर्या. ते समये ते नगरनो राजा अने बीजा उत्तम लोको पुरण शेठने घेर एकठा थया अने ते शेठनी जारे प्रशंसा करवा लाग्या. पछी श्री वीरप्रभु अम्दना बाकलाथी पारणु करी त्यांथी विहार करी बीजे स्थले चाल्या गया.

अहिं जीर्ण शेठ आकाशमां थता देवताना दुन्दुभिना नादने सांजळी विचार करवा लाग्यो—"अहा ! मने निर्जागीने धिकार छे, हु सर्व रीते अधन्य छु, के श्री वीरप्रभु मारे घेर जिक्षा लेवाने पधार्या नहीं अने तेमणे बीजे ठेकाणे पारणु कर्यु मारा सर्व मनोरथो निष्फळ थइ गया." आ प्रमाणे ते शेठ अपशोच करवा लाग्यो.

आ अरसामा तेज दिवसे तेज नगरमां श्री पार्श्वनाथना संतानिक कोइ केवलज्ञानी मुनि महाराज समोसर्या. ते खबर जाणी राजा अने नगरना लोको तेमने वदना करावाने गया. ते वखते राजाए ते केवली जगवानने पुछ्यु, " स्वामी, अमारा नगरमा कयो जीव पुण्यवान् छे ? " " केवळी जगवाने कह्यु, राजा, आ नगरमा जीर्णशेठना जेवो कोइ पुण्यवान् नथी. " राजाए कह्यु, " महाराज ते जीर्ण शेठे श्री वीरप्रभुने पारणु कराव्यु नथी. परंतु पुरण शेठे पारणु कराव्यु छे, तो ते पुरण शेठ तेनाथी पुण्यवान् केम नहीं ? " त्यारे केवली जगवाने जीर्ण शेठनी जावनानु स्वरूप मूळथी मांमीने कही सजळाव्यु पछी विशेषमा कह्यु के, "पुरण शेठे प्रभुने दान आप्यु, पण ते द्रव्यथी आप्यु छे अने जीर्ण शेठे प्रभुने जावथी दान आप्यु छे वळी ते जीर्णशेठे जाव समाधिने धारण करी बारमा देवलोके जवा योग्य एवु कर्म उपार्जन कर्यु छे जो ते जीर्णशेठे ते व खते देवदुन्दुभिनो शब्द सांजळ्यो न होततो ते तत्काल केवलज्ञानने पण प्राप्त करत. अने पुरण शेठेतो जाव शून्यपणे दान आप्यु छे ते सुपात्रदान करवाथी सुवर्णवृष्टि वगेरेने प्राप्त थयेल छे पण तेथी काइ अधिक फल पामेल नथी. " आ प्रमाणे ते केवली जगवानना वचन सांजळी राजा वगेरे सर्वे ते जीर्ण शेठनी प्रशंसा करता पोतपोताने स्थाने चाल्या गया हता

जीर्ण शेठ चिरकाळ सुधी शुध्ध रीते जिनेश्वरनो धर्म आराधी बारमे देवलोके गयो हतो आ प्रमाणे दान आपवामा जावशुद्धिने विषे जीर्ण शेठनी

कथा कहेवाय छे, ते उपरथी बीजा श्रद्धालु श्रावकोए दाननी क्रियामां निर्मळ भाव धारण करवो, के जेथी सर्व समृद्धिओ पोतानी मेळे प्रगट थाय छे.

अहिं आ प्रमाणे भावना छे.

" धन्ना ते सप्पुरिसा, जे मणसुद्धीए सुद्धपत्तेसु ।
सुद्धासणाइदाणं, दिंति सया सिद्धिगइहेउ " ॥१॥

"जे मननी शुद्धिवडे सिद्धि गतिना हेतुरूप एवुं शुद्ध अशनादि दान शुद्धपात्रने सदा आपे छे, ते पुरुषोने धन्य छे. १"

सर्व धर्मने विषे दाननी गौणताने कहेनाराओना मतनु निराकरण करवाने आगमने अनुसारे तेनु प्राधान्य बतावे छे.

" सर्वतीर्थकरैः पूर्वं, दानं दत्वाहृत व्रतम् ।
तेनेद सर्व धर्माणा,माद्य मुख्यतयोच्यते " ॥ १ ॥

"सर्व तीर्थकरोए पूर्वे दान आपीनेज व्रतनो आदर करेलो छे, तेथी ए दान सर्व धर्मोमा प्रधानपणे मुख्य कहेवाय छे." १

तीर्थंकरोनो दानविधि

प्रथम शक्र इन्द्रनी आज्ञाथी धनद नामे लोकपाल आठ क्षणमा नीपजावेला, सोळ मासा प्रमाण वाला, जिनेश्वरना पिताना नामथी आंकित अने सावत्सरिक दानने योग्य एवा सोनैयावडे जिनेश्वरना भंडारो पूरे छे. ते वखते जिनेश्वर भगवान् दाननी प्रवृत्तिने अर्थे सूर्योदय पछी छ घडीए जे प्रहर आवे ते, एटले छ घडी पछी परिपूर्ण प्रहर सुधी प्रतिदिन एक कोटी अने आठ लाख सोनैया आपे छे. आवश्यकजीने विषे कह्यु छे के, एक सवत्सरमा जिनेश्वर भगवान् त्रणसो अठ्यासी कोटी अने एशी लाख सोनैयानु दान आपे छे.

ते दान समये उत्पन्न थता छ अतिशयो.

जिनेंद्र भगवान् ज्यारे सुवर्णनी मुष्टि भरीने दान आपे छे, त्यारे सौधर्मेंद्र ते भगवान्ना जमणा हाथमा महा शक्ति स्थापन करे छे ; के जेथी तेमना हाथने जरापण खेद उत्पन्न न थाय. अनत वीर्यवाला भगवान्ना हाथमां इन्द्र शक्तिनु

स्थापन करे ए अयुक्त छे, एवी शंका अहिं करवी नहीं, कारणके, भगवान् अनंत बलवाला छतां पण इंद्रने ते न करवामां पोतानी चिरकालनी स्थिति अने भक्तिना भंगनो प्रसंग आवे, तेथी ते अनादि स्थिति पाळवाने माटे अने पोतानी भक्ति देखाडवाने माटे इंद्रनुं ते करवुं युक्तज छे, ते विषे विशेष विस्तार करवाथी सर्यु.

वळी ते समये ईशानेंद्र सुवर्णरत्नमय छाकमी ग्रहण करी वचमां ग्रहण करता बीजा सामानिक देवताने वर्जता छता जे दान पामवाना छे, तेमने जिनेश्वरना हाथथी देवरावता छता लोको पासे शब्द करावे छे के, "हे प्रभु मने आपो" चमरेंद्र अने बलींद्र लोकोना भाजनने अनुसारे प्रभुना दाननी मुष्टि पूरे छे अने देवरावे छे भवनपति देवताओ दान ग्रहण करनारा भरत क्षेत्रना मनुष्योने त्यां लावे छे व्यंतर देवताओ ते मनुष्योने पोताने स्थाने पहोचाडे छे. ज्योतिषी देवताओ विद्याधरोने ते दान ग्रहण करावे छे. वळी इंद्रो पण ते प्रभुना दानने ग्रहण करे छे, कारण के, ते दानना प्रभावथी देवलोकमां बार वर्ष पर्यंत कोइ पण जातनो क्लेश न थाय. मोटा चक्रवर्त्ती राजाओ पण पोतानो भंडार अक्षय करवा माटे ते दानने ग्रहण करे छे. श्रेष्ठी प्रमुख गृहस्थो पोतानी यश कीर्त्तिनी वृद्धिने माटे अने रोगी पुरुषो पोताना मूळ रोगनी हानि थवाने माटे तेमज बार वर्ष सुधी नवो रोग उत्पन्न न थाय तेने माटे ए दाननुं ग्रहण करे छे. वधारे शुं कहेवुं? सर्व भव्यजीवो ए दाननो योग प्राप्त करी पोतपोताना वांछित अर्थनी सिद्धि थवा माटे श्री जिनेश्वरना हाथथी दान ग्रहण करे छे अभव्य आत्माओ कदि पण ते दानने पामताज नथी शास्त्रने विषे ते अभव्यजीवोने तीर्थंकरोना हाथना दान प्रमुख केटलाएक उत्तम भावोनी प्राप्तिनी अयोग्यता कहेली छे. ते कहे छे.

जह अभवियजीवेहिं, न फासिया एवमाइयाभावा ।
इंदत्तमणुत्तरसुर, सिलाय नरनारयत्त च ॥ १ ॥
केवलि गणहरहत्थे, पव्वज्जा तित्थवच्छर दाण ।
पवयणसुरी सुरत्त, लोगतिय देवसामित्त ॥ २ ॥

तायत्तीससुरत्त, परमाहम्मिअ जुयलमणुअत्तं ।
संभिन्नसोय तह पुव्व, धराहारयपुलायत्त ॥ ३ ॥
मइनाणाइसु लद्धि, सुपत्तदाण समाहिमरणत्त ।
चारणडुगमहुसिप्पय, खीरासव खीणठाणत्त ॥ ४ ॥
तित्थयर तित्थ पडिमा, तणुपरिभोगाइ कारणेवि पुणो ।
पुढवाइय भावमवि, अभव्व जीवेहि नो पत्त ॥ ५ ॥
चउदसरयणत्तंपिय, पत्त न पुणो विमाणसामित्तं ।
सम्मत्त नाण सयम, तवाइ भावा न भाव दुगे ॥ ६ ॥
अणुभव जुत्ता भत्ति, जिणाण साहम्मिआण वच्छल्ल ।
न य साहेइ अभव्वो, संविगत्त न सुप्पक्ख ॥ ७ ॥
जिणजणयजणणिजाया, जिणजक्खजक्खणि जुगप्पहाणा ।
आयरियापयाइ दसग, परमत्थ गुणट्ठमप्पत्तं ॥ ८ ॥
अणुबंधहेउसरूवा, तथ्यअहिंसा तहा जिणुदिट्ठा ।
दव्वेण य भावेण य, दुहावि तेहि न सपत्ता ॥ ९ ॥

" अभवी जीवो केटला भावोने पामता नथी ? ते कहे छे. १ इन्द्र-पणु, २ अनुत्तर विमानवासी देवपणु, ३ त्रिषष्टिशलाका पुरुषनी पदवी, ४ नारदपणु, ५ केवली अने गणधरने हाथे दीक्षा, ६ तीर्थंकरने हाथे वर्षीदान, ७ शासनना अधिष्ठायक देव देवी, ८ लोकांतिकपणु, ९ देवतानु स्वामिपणु, १० त्रायस्त्रिंशत् देवपणु, ११ परमाधामीपणु, १२ जुगलीया मनुष्यपणु, १३ संभिन्न श्रोतोलब्धि, १४ पूर्वधरनी लब्धि, १५ आहारक लब्धि, १६ पुलाक लब्धि, १७ मतिज्ञानादिकनी लब्धि, १८ सुपात्रदान, १९ समाधिमरण २० विद्या चारण तथा जंघाचारणपणु, २१ मधुशिल्प लब्धि, २२ क्षीराश्रव लब्धि, २३ क्षीणमोह गुणठाणु, २४ तीर्थंकर अने तीर्थंकरनी प्रतिमाना शरीरना भोगमा आववाना कारणे पृथिव्यादिक भाव, २५ चौदरत्नोमा उपजवु, २६ वि-

माननु स्वामिपणु, २७ सम्यक् ज्ञान, चारित्र, तपादिक भाव तथा उपशमिक अने क्षायिक तथा क्षयोपशमिक भाव पामवापणु[1] २८ अनुभव युक्त भक्ति, २९ साधर्मिवात्सल्य, ३० सवेगपणु, ३१ शुक्लपक्षपणु, ३२ जिनेश्वरना माता, पिता के स्त्रीपणे थवापणु, ३३ जिनेश्वरना यक्ष यक्षिणीनु थवापणु, ३४ युगप्रधानपणु, ३५ आचार्यादि दश पदमा थवापणु, ३६ परमार्थ गुणोनु पामवापणु अने ३७ अनुबध, हेतु अने स्वरुप—ए त्रण दयानु द्रव्यथी अने भावथी पामवापणु.

आ प्रमाणे सामग्रीश भाव अभव्य प्राणीने कदिपण प्राप्त थता नथी.

अनुबध, हेतु अने स्वरूप ए त्रण प्रकारनी दया उपर कहेवामा आवी तेना लक्षणो आ प्रमाणे छे—जे साक्षात् जीवोनो अविघात ते पेहेली स्वरूप दया कहेवाय छे. जे यतना पूर्वक प्रवृत्ति ते बीजी हेतुदया कहेवाय छे अने जे ते दयाना फलरूपे परिणमे ते त्रीजी अनुबध दया कहेवाय छे. वळी जिनाज्ञानु अखन्डन ते पण अनुबध दया कहेवाय छे.

वळी प्रभुना दानना प्रसगमा एम पण छे के, तेमना दानने अवसरे तेमना माता पिता अने भाइओ त्रण दानशाला करावी तेमा अन्न, पाणी, वस्त्र अने अलकार देवरावे छे. ते विषे हवे विशेष विस्तार करवाथी वस छे.

ए प्रकारे सप्रसग चोथु शिक्षाव्रत कहेवामा आव्यु, हवे तेनु निगमन कहे छे

" इत्थ व्रतद्वादशक दधाति, गृही प्रमोदेन प्रतिव्रत हि ।
पचातिचारान् परिवर्जयश्च, ध्रुव यथाशक्त्यपि भागपट्के"।१

" गृहस्थ ए प्रकारे हर्षथी शक्ति प्रमाणे छ भागाए करी बार व्रतने धारण करे छे अने प्रत्येक व्रतना पाच अतिचारोने वर्जे छे. " १

विस्तार थवाना भयथी अहिं अतिचार दर्शावेला नथी ते ग्रथातरथी जाणी लेवा अहि बाहुल्यपणाने आश्रीने अतिचारनी पाच पाच सख्या कही छे, परतु भागोपभोगमा वीश अतिचार छे एम जाणवु

जे उपर छ भागा कहेवामा आव्या, ते आ प्रमाणे.

---

[1] आ त्रण भावो भावथी न होय परतु द्रव्यथी होय

१ एकविध एकविध—ए पेहेलो भांगो. एटले मने करीने, वा वचने करीने वा कायाए करीने न करे अथवा न करावे.

२ एकविध द्विविध—ए बीजो भांगो ते कहे छे. जेम मन वचने करीने अथवा मन कायाए करीने अथवा वचन कायाए करीने न करे अथवा न करावे.

३ एकविध त्रिविध—ए त्रीजो भांगो छे. मन वचन कायाए करीने न करे अथवा न करावे.

४ द्विविध एकविध—ए चोथो भांगो छे. जेम मन अथवा वचन अथवा कायाए करीने न करे अने न करावे.

५ द्विविध द्विविध—ए पांचमो भांगो छे. जेम मन वचने करीने, तथा मन कायाए करीने अथवा वचन कायाए करीने न करे अने न करावे

६ द्विविध त्रिविध—ए छठ्ठो भांगो छे. मन, वचन कायाए करीने न करे अने न करावे.

आ प्रकारे एकवीश भांगायुक्त एवी पद्भंगीनो श्रावकने घणु करीने अनुमति अने निषेध नथी, तेथी तेना बीजा भेदो (भांगा) बताव्या नथी

आहिं बारव्रतने आश्रीने भांगाना भेदने कहेवानी इच्छाने विषे ते अंगीकार करनारनी कर्मना क्षयोपशमनी विचित्रता होवाथी घणा भेदो उपजी शके छे. ते कहे छे—१३ अबज ८४ करोड, १२ लाख, ८७ हजार, २०० ने २ बे भांगा थइ शके छे. ए रीते श्री जिनेश्वरे श्रावकोने अभिग्रहना भेदनी संख्या दर्शावी छे. ए भांगाने माटे श्री प्रवचन सारोध्धारनु बसोछत्रीशमु द्वार जोवु.

वळी बार व्रतमा प्रथमना आठ व्रतो एक साथे अंगीकार करेला जावजीव सुधी होय छे, तेथी ते यावत्कथिक कहेवाय छे. जे चार शिक्षाव्रतो तेनो मुहूर्तादि अवधिथी लइने तेमनु वारंवार अंगीकार करवापणु छे ते अल्पकालभावि छे माटे ते इत्वर कहेवाय छे तेम वळी ते बारव्रतने विषे पेहेला पांच व्रत धर्मरूपी वृक्षना मूलभूत होवाथी ते मूल गुण कहेवाय छे. बाकीना सात

नीकळता कोल्लाक सन्निवेशनी अति नजीक नहीं तेम अति दूर नहीं तेम विचरतां लोकोना मुखथी आनंद श्रावकनी तपनी प्रवृत्ति तेमना सांजळवामां आवी. तत्काल पोते ते प्रत्यक्ष जोवा कोल्लाक सन्निवेशमां आवेली पोषधशालामां आव्या. त्यारे आनंद श्रावक ते जगवान् गौतमने आवता जोइ घणाज खुशी थया अने तेमने वंदना करी आ प्रमाणे बोल्यो—" हे स्वामी, तपस्याने लइने जेना शरीरमां मात्र नाडी अने अस्थि रहेला छे एवो हुं आपनी समीपे आववाने शक्तिमान् नथी, माटे आप मारी उपर कृपा करीने पधारो. ते वखते गौतम स्वामी ज्यां आनंद श्रावक रहेला छे, त्यां आव्या. स्वामीने आवेला जोइ आनंद श्रावके तेमने मस्तक वमे त्रण वार चरणमां नमी आ प्रमाणे पूछ्युं.—" हे स्वामी, गृहस्थने घरमां रहेतां उतां अवधिज्ञान उत्पन्न थाय के नहीं ? " गौतम स्वामीए कह्युं, " हा, उत्पन्न थाय, " त्यारे आनंदे कह्युं, " महाराज, मने पण अवधिज्ञान थयुं छे.तेनाथी हुं पूर्व, दक्षिण अने पश्चिम दिशामां पांचशो पांचशो योजन क्षेत्र रूप लवण समुद्र पर्यंत हुं देखी शकुं छुं अने उत्तर दिशामां हिमवंत वर्षधर पर्वत जाणी शकुं छुं. ऊर्ध्व लोके सौधर्म देवलोक यावत् अने अधोजागे रत्नप्रभा पृथ्वीना लोलुचय नामना नरकवास पर्यंत जाणुं छुं–देखुं छुं आनंदना आ वचनो सांजळी गौतम मुनि बोल्या " जद्र, गृहस्थने अवधिज्ञान उत्पन्न थाय, पण एटलुं बधुं मोटुं न थाय, माटे आ स्थाननुं आलोचन—निंदनादिक करो. " आनंदे कह्युं, " हे स्वामी, जिन वचनमां साचा अर्थनी आलोयणा होय छे? त्यारे गौतमे कह्युं, " एम न होय " आनंद बोल्या " महाराज, जो एम छे तो पछी तमारेज ए स्थानकनी आलोचना निंदना करवी. " आनंदना आ वचनो सांजळी गौतम हृदयमां शंकित थइ गया. पछी तत्काल त्यांथी नीकळी दूतपलाश चैत्यमां ज्यां श्री वीरप्रभु रहेला छे त्यां आवी गमनागमन प्रतिक्रमणादि पूर्वक स्वामीने नमी सर्व वृत्तांत निवेदन करी आ प्रमाणे पूछ्युं जगवन् ! ते स्थानक आनंदने आलोचवा योग्य छे के मारे आलोचवा योग्य छे? प्रभुए कह्युं, " तुं ज ते स्थानने आलोच अने तेने माटे आनंदने खमाव " जगवान्ना आ वचनने विनयथी अंगीकार करी पोते गौतमे ते स्थानकनी आलोचनादि लइ पछी आनंद श्रावक पासे आवी ते अर्थने खमाव्यो हवे ते पछी आनंद श्रावक बहु प्रकारना शीलव्रतादि धर्मकृत्यवमे पोताना आत्माने जावी,

ा वर्ष पर्यंत श्रावक पर्याय पाळी छेवट एक मासनी सल्लेखणा करी समाधि पूर्वक नकरी सौधर्म देवलोके अरणाभ नामना विमानमा चार पल्योपमना आयुष्यवाळो ता थयो. त्याथी चवीने ते महाविदेहने विषे सिद्धिपदने प्राप्त थशे. ए प्रकारे नद श्रावकनु वृत्तात छे.

कामदेव श्रावकनो वृत्तात

चपानगरीमा कामदेव नामे एक गृहस्थ रहेतो हतो. तेने भद्रा नामे स्त्री ी. अढारकोटी सोनैयाना द्रव्यनो स्वामी हतो. तेटला द्रव्यमाथी छ कोटी सु- । द्रव्य निधानमा छ कोटी व्याजमा अने छ कोटी व्यापारमा एम त्रण भागे , द्रव्य रहेलु हतु. ते शिवाय दश दश हजार गायोवाळा छ गोकुळो तेनी ते हता

एक वखते ते नगरनी समीपे आवेला पूर्णभद्र नामना चैत्य श्री वीरप्रभु समोसर्या. आ खबर साभळी कामदेव तेमने वदना करवा गयो ने आनद श्रावकनी पेठे तेणे प्रभु पासे बार व्रत अगीकार कर्या. अनुक्रमे ए लु पालन करता कामदेवे एक समये पोताना ज्येष्ठ पुत्रने कुटुबनो भार सोंपी ते पोषधशाळामा आवी पोषध व्रत लइ बेठो. अर्द्ध रात्रिनो समय थता कोइ एक याची मिथ्यात्वी देव प्रगट थइ तेनी पासे आव्यो. ते विकराळ पिशाचनु स्व- प विकुर्वी हाथमां तीक्ष्ण धारावाळु खड्ग लइ तेनी पासे ऊभो रह्यो. तेणे का- देवने आ प्रमाणे कह्यु, " अरे कामदेव, तु नहीं प्रार्थवा योग्यनी प्रार्थना कर- ार, बुद्धि लज्जा अने लक्ष्मी वगरनो अने धर्मपुण्यवडे स्वर्ग तथा मोक्षनी ाछना राखनारो छे. पण हवे तारा शीलव्रतादि तथा पोषधोपवासादिनो सत्वर ाग करी दे. जो तु त्याग नहीं करेतो हमणाज आ तीक्ष्ण खड्गवडे तारा रीरने खड खड करी नाखीश, जेथी तु पीडा पामतो मरणने शरण थइश. " शाचे आ प्रमाणे कह्यु तो पण कामदेव तेथी भय पाम्यो नहीं, ते अधिक क्षो- । पाम्या शिवाय, अचलित, मौनधारी अने धर्म ध्यानथी युक्त थइने रह्यो. ते मेथ्यात्वी देवे तेने निश्चल जाणी ते प्रमाणे बे त्रण वखत कह्यु, परतु धर्मवान् ामदेव तेनाथी जरापण चलायमान थयो नहीं. तेथी ते देवने भारे कोप थइ ाव्यो. भ्रूकुटी चढावी तेणे तेनी पर खड्ग उगाम्यु. तोपण कामदेव जराए

त्रीजा श्रावक चुल्लनीपितानो वृत्तांत

वाराणसी नगरीमा चुल्लनीपिता नामे एक गाथापति—गृहस्थ रहेतो हतो. तेने सोमा नामे स्त्री हती. ते चोवीश कोटी द्रव्यनो स्वामी हतो ते द्रव्य आठ कोटी निधानमा, आठ कोटी व्याजमा अने आठ कोटी व्यापारमा—एम त्रण जागे वहेंचाएलु हतु. प्रत्येक दश दश हजार गायोवाला आठ गोकुल तेनी सत्तामा हता, तेणे एक वखते आनद अने कामदेवनी जेम श्री वीर प्रभु पासे बार व्रत ग्रहण कर्या. अवसर आवता पोताना ज्येष्ठ पुत्रने कुटुंब उपर स्थापी पोते पोषधशालामा जइने पोषध लइने रह्यो. त्यां अर्ध रात्रे कोइ देवे हाथमा तीक्ष्ण खड्ग लइ ते चुल्लनीपिता श्रावकने आ प्रमाणे कह्यु,—"अरे चुल्लनी पिता, तु आ धर्मनो त्याग कर. जो नहीं करे तो तारा ज्येष्ठ पुत्र वगेरेने आ खड्गथी हणीश." तेणे आ प्रमाणे कह्यु, ते छता पण ते चुल्लनीपिता जरा पण क्षोभ पाम्यो नहीं, त्यारे अति क्रोधायमान थयेला ते देव तेना ज्येष्ठ, मध्यम अने कनिष्ठ—त्रणे पुत्रोने त्या लाव्यो ते त्रणेने तेनी समक्ष खड्गथी हणी नाख्या अने पछी तेमने एक तपेली कडाहनी अदर नाखी तेना मास अने रुधिरथी ते चुल्लनीपिताना शरीर उपर सिंचन कर्यु. तथापि ते क्षोभ पाम्यो नही पछी ते देवताए तेने वारवार आ प्रमाणे कह्यु, "अरे चुल्लनीपिता, जो तु मारु वचन नाहि माने तो हमणाज तारी माता भद्रा सार्थवाहीने अहिं लावी तारी सन्मुख हणी तपेली कडाहमा नाखीश अने तेणीना मास तथा रुधिरथी तारा शरीरनु सिंचन करीश, जेणीना दुःखथी पीडित एवो तु अकाले मृत्युने पामीश. आ प्रमाणे कहेता छता पण ज्यारे ते चुल्लनीपिता क्षोभ पाम्यो नहीं, एटले तेणे फरीवार कह्यु ते पछी ते श्रावकना मनमा आ प्रमाणे विचार उत्पन्न थयो.— "अहो! आ कोइ अनार्य पुरुष लागे छे, ते अनार्य बुद्धिथी न आचरवा योग्य एवा पाप कर्मने आचरे छे, जेथी तेणे मारा त्रण पुत्रोने मारी नाख्या अने हवे माताने मारवा ते तत्पर थयो छे, तो हवे हु आ दुष्ट पुरुषने ग्रहण करु तो ठीक" आवु विचारी ते श्रावक शीघ्रताथी जेवामा तेने ग्रहण करवा हाथ प्रसारे छे, तेवामा ते देव उछलीने आकाशमा चाल्यो गयो अने चुल्लनीपिताना हाथमा एक स्तंभ आव्यो. पछी ते श्रावके मोटा शब्दोथी कोलाहल कर्यो, तेवामा तेनी माता

जद्रासार्थवाही पोताना पुत्रनो शब्द सांभळीने तेनी पासे आवी अने तेणीए कोलाहल करवानु कारण पूछ्युं. चुल्लनीपिताए पोते जे अनुभवेलो हतो ते सर्व वृत्तांत माताने कही संभळाव्यो. माता ते वृत्तांत सांभळी आ प्रमाणे बोली— "वत्स, कोइ एवो पुरुष नथी, अने तेणे तारा पुत्रोने हण्या नथी, आ कोइ पुरुष तने उपसर्गो करे छे, माटे तुं हमणा जग्न व्रत थयो छु—तारा पोषध व्रतनो जग थइ गयो छे, माटे तु ए स्थानकनी आलोचना वगेरे कर." माताना आ वचनो सांभळी ते चुल्लनीपिताए तेणीना वचननो अंगीकार करी ते स्थानकनी आलोचनादि ग्रहण कर्या. ते पछी ते आनद श्रावकनी जेम अनुक्रमे श्रावकनी अगीआर पडिमाने आराधी छेवटे समाधिवडे काल करी पहेला देवलोके अरुणाज विमानमा चार पल्योपमना आयुषे उत्पन्न थयो. त्यांथी च्यवीने ते महाविदेह क्षेत्रने विषे सिद्धिपदने प्राप्त थशे एवी रीते चुल्लनीपितानी कथा छे.

श्रावक सुरादेवनो वृत्तांत

वाराणसी नगरीमा सुरादेव नामे एक गृहस्थ श्रावक रहेतो हतो. तेने धन्या नामे एक स्त्री हती. तेने कामदेवना जेवी द्रव्यनी सपत्ति अने गोकुलो हता तेणे पण कामदेव श्रावकनी जेम व्रत ग्रहण कर्यु हतुं, अने तेमा उपसर्गो पण थया हता ते सुरादेवने त्रण पुत्रो हता पूर्वनी जेम कोइ मिथ्यात्वी देवे तेना त्रण पुत्रो हणवानो उपसर्ग करेलो तो पण ते सुरादेव मनमा जरा पण क्षोभ पाम्यो न हतो तेने व्रतमा दृढतावालो जोइ ते देवताए कह्यु, "अरे सुरादेव, जो तु आ जैनधर्मनो त्याग नहीं करे तो तने सोळ जातना महा रोग उत्पन्न करी अकालेज तारा प्राणनो नाश करीश. ते उपरथी तेणे कोलाहल करता तेनी धन्या स्त्री आवी अने तेणीए तेना नामनु समाधान कर्यु. ते पछी पूर्ववत् वृत्तात बन्यो हतो. मरण पामी ते श्रावक सौधर्म देवलोके अरुणाज विमानमा देव रूपे उत्पन्न थयो हतो. त्यांथी च्यवीने ते महाविदेह क्षेत्रने विषे सिद्धिपदने पामशे. एवी रीते सुरादेवनो वृत्तात छे.

पाचमा चुल्लशतक श्रावकनु दृष्टांत

आलभिका नगरीमा चुल्लशतक नामे एक गृहस्थ रहेतो हतो. तेने बहुला नामे स्त्री हती. तेने द्रव्यनी सपत्ति अने गोकुलो कामदेव श्रावक प्रमाणे

हता व्रत वगेरे ग्रहण करवानो प्रसग तेने त्रीजा श्रावकनी जेम बन्यो हतो. विशेषमां एटलु के, परीक्षा करवा आवेला देवताए तेना पुत्रने उपसर्ग करतां ते क्षोभ पाम्यो नहीं, त्यारे कह्यु के, " जो तु तारा धर्मनो त्याग नहीं करे तो अढार कोटी सोनैया तारा घरमांथी काढी आ नगरीना त्रिकमार्गे चौटामां एक दम विखेरी नांखीश, जेथी आर्त्त तथा रौद्र ध्यानमां पेठेलो तु अकाले मृत्यु पामीश " इत्यादि प्रसग बनता कोलाहल कर्यो एटले तेनी स्त्री बहुला आवी तेणे पूर्ववत् कर्यु ते पछी ते श्रावक मृत्यु पामी सौधर्मदेवलोके अरुणाभविमानमा देवपणे उत्पन्न थयो त्याथी च्यवी ते महाविदेहक्षेत्रने विषे सिद्धिपदने पामशे एवी रीते चुल्लशतक श्रावकनु दृष्टात छे.

छठा कुडकोलिक श्रावकनो वृत्तात

कांपिल्य नगरने विषे कुडकोलिक नामे एक गृहस्थ रहेतो हतो. तेने पुष्पमित्रा नामे स्त्री हती. तेनी समृद्धि अने गोकुलो कामदेव प्रमाणे हता. अने व्रत ग्रहण वगेरेनो विधि पण एज प्रमाणे हतो. एक दिवसे ते कुडकोलिक श्रावक मध्यरात्रे पोतानी अशोक वाडीमां पृथ्वीपर रहेली शिलाना पट उपर आव्यो. त्यां आवी पोतानी नामाकित मुद्रा अने उत्तरासग वस्त्रने राखी ते धर्मध्यान करतो रह्यो हतो. ते वखते एक देव प्रगट थइ तेनी मुद्रा अने वस्त्रादि त्याथी उपाडी आकाशे रही आ प्रमाणे बोल्यो—" अरे श्रावक कुडकोलिक, गोशाले-मखलीपुत्रे कहेला धर्मनी प्रज्ञप्ति सुदर छे, कारण के जेमां उद्यमादिक काइ पण नथी जीवोनो पुरपाकार छता पुरपार्थनी सिद्धिनु पाळवापणु नथी, ते कारण माटे सर्व भाव नियत छे, अने श्री वीरप्रभुनी प्रज्ञप्ति सारी नथी, कारणके तेनी अदर उद्यमादिक वर्त छे. तेथी करी तेमां सर्व भाव नियत छे. ते देवना आ वचनो साभळी ते कुडकोलिक आ प्रमाणे बोल्यो. "हे देव, जो, एम होय तो, तु आ देवनी ऋद्धि उद्यमादिकथी पाम्यो के उद्यमादिक विना ? " देव बोल्यो "हु आ देवऋद्धिने उद्यमादिक विना पाम्यो छु " कुडकोलिके कह्यु, "जो तु उद्यमादिक विना देवऋद्धि पाम्यो छो तो जे जीवोने उद्यमादिक नथी ते सर्वे जीवो देवपणु केम पाम्या नहीं ? अने जो उद्यमादिकवडे आ ऋद्धि पा-

थइ, एम कहे तो गोशालाना धर्मनी प्रज्ञप्ति सुंदर छे, इत्यादि तें जे कह्यु, ते
थ्या छे." ज्यारे ते श्रावके आ प्रमाणे कह्यु, एटले ते देव शंका पामी ते ग-
ने प्रत्युत्तर आपवाने समर्थ थइ शक्यो नहीं. पछी तेनी मुद्रा अने उत्तरासंग-
त्र पृथ्वीनी शिलाना पट उपर मुकी ते देव पोताने स्थाने चाल्यो गयो. तेवा अ-
रमा श्री वीरप्रभु ते स्थले समोसर्या. ते खबर जाणी कुम्भकोलिक प्रातःकाले
नुनी समीपे गयो. ते पछी बधो वृत्तांत कामदेव श्रावकनी प्रमाणे जाणी लेवो.
शेपमा एटलुं के अर्थ हेतुना प्रश्नादिकथी अन्य तीर्थीओने निरुत्तर करवाथी
। वीरप्रभुए ते कुडकोलिक श्रावकनी प्रशंसा करी, त्यारे कुम्भकोलिके चौद व-
पछी पूर्वना श्रावकोनी पेठे ज्येष्ठ पुत्रने कुटुंबमां स्थापी पोते पोषधशाळामां रही
ावकनी अगीआर पडिमा आराधी हती. ते पछी एक मासनी सलेखनाथी
माधि पूर्वक काल करी ते पेहेले देवलोके अरुणाभविमानमां देवपणे उत्पन्न
यो. त्यांथी चवीने ते महाविदेह क्षेत्रने विषे सिद्धि पदने पामशे. ए रीते कु-
कोलिकनो वृत्तांत छे.

सातमा सद्दालपुत्र श्रावकनो वृत्तांत

पोलासपुर नगरने विषे सद्दालपुत्र नामे एक कुंभकार श्रावक रहेतो
तो. ते गोशालानो सेवक हतो. तेने अग्निमित्रा नामे स्त्री हती. तेनी पासे त्र-
ण कोटी सोनैयानु द्रव्य हतु. तेमा एक कोटी द्रव्य निधानमां, एक कोटी व्या-
ामां अने एक कोटी व्यापारमां रहेतुं हतुं. तेने दशहजार गायोवाळुं एक गोकुल
तु तेना तावामां कुंभारनी पाचसो दुकानो हती.

एक वखते सद्दालपुत्र मध्य रात्रे अशोक वाडीमा आवी गोशालाए
हेला धर्मध्याननुं ध्यान करतो हतो ते वखते एक देवे प्रगट थइने तेने आ प्र-
ाणे कहुं, "हे देवानुप्रिय, आहिं महामाहण, जेने ज्ञान दर्शन उत्पन्न थयु
ं तेवा, ज्ञानदर्शनना धरनारा अने त्रिकालने जाणनारा अरिहंत प्रभु आवशे,
ामने तारे वदना करवी अने तेमनी प्रतिपत्ति करवी." आ प्रमाणे देवता बे
ाणवार कही पोताने स्थाने चाल्यो गयो. ते देवतानु आ वचन सांभळी ते स

तेमने वदना करीश." आ प्रमाणे ते शेठ विचार करवा लाग्यो. प्रात काल थतां श्री वीरजगवान् त्या समोसर्या. ते खबर जाणी सद्दाल पोताना परिवार साथे प्रजुनी पासे आव्यो. त्या प्रजुने वदना करी योग्य स्थाने बेठो. प्रजुए धर्मदेशना आपी. पछी जगवने ते सद्दालने बोलावी रात्रे बनेलो सर्व वृत्तांत कही स जलाव्यो. ते पछी आ प्रमाणे पुछ्यु, हे सद्दालपुत्र, आ वृत्तात सत्य छे के केम ? " तेणे कह्यु, " हा एमज छे " पछी जगवाने कह्यु, " हे सद्दालपुत्र, ते देवताए गोशालाने आश्रीने कह्यु न हतु. " प्रभुनु आ वचन साजळी ते स द्दालपुत्रे चिंतव्यु के, " पूर्वे कहेला गुणोथी सपन्न एवा तो आ श्री महावीर स्वामी छे, माटे हु आ प्रजुने वदना करी पीठफलकादि वडे निमत्रण करु. " आ प्रमाणे चिंतवी तेणे वदना करी प्रभुने कह्यु, "हे जगवन्, आ नगरनी बाहेर कुजकारनी पाचसो दुकानो छे, तेने विषे तमे पीठफलक शय्या सस्तारकादि ग्र- हण करीने विचरो. " आ प्रमाणे गोशालाना एटले आजीविक मतना श्रावकना वचन साजळीने ते स्थले पीठफलकादिक ग्रहण करीने प्रभु रह्या हता.

एक वखते ते सद्दालपुत्रे शालामांथी जामो (पात्रो)ने बाहेर लइ जइ तापमां मुक्या त्यारे प्रजुए पूछ्यु, हे सद्दालपुत्र, आ जामो (ठाम) केम उत्पन्न थाय छे ? " त्यारे तेणे मृत्तिकाथी आरभी जामोनी निष्पत्तिनु स्वरुप प्रजुनी पासे कही सजळाव्यु त्यारे प्रजुए कह्यु, "ते जामा उद्यमादिकवमे कराय छे के, अनुद्यमादिकवमे ? " त्यारे सद्दालपुत्र बोल्यो. " हे स्वामी, ते अनुद्य- मादिकवमे कराय छे, उद्यमादिकवमे नहीं तेथी उद्यमादिक नथी. माटे सर्व जाव नियतज छे." स्वामीए कह्यु,"जो कोइ पुरुष आ तारा जामोने अपहरे अथवा वि नाश करे अथवा तारी स्त्रीनी साथे जोग जोगवतो विचरे तो ते पुरुषने तु शु दम आपे ? " सद्दालपुत्रे कह्यु, " स्वामी, हु तेने हणवादिक करु " आ प्र माणे सद्दालपुत्रने पोताना वचने पुरुषाकार अगीकार करावी प्रजु बोल्या —" जे निश्चे करी तारा भामोने हरे नहीं अथवा तेनो नाश करे नहीं तो तेनु हननादिक तु न करे वळी जो उद्यमादिक नथी अने सर्व जाव नियत छे, तेम अपराधी पुरुषने तु हननादिक करे छे, तो तें जे कह्यु के उद्यमादिक नथी, ए वात मिथ्या थाय छे. " प्रजुना आ वचनो सांजळी सद्दालपुत्र प्रतिबोध पाम्यो.

तत्काल तेणे प्रभुने वंदना करी अने तेमना मुखथी धर्म सांभळी आनंद पामी प्रभु पासे बार व्रतो अंगीकार कर्या. तेनी पासे पूर्वना श्रावक जेटलु द्रव्य हतु. ते पछी पोताने घेर आव्यो अने तेणे पोतानी स्त्रीनी आगल ते सर्व वृत्तात जणाव्यो अने तेणीने पण व्रत ग्रहण कराव्या. त्यारथी ते श्रावक थयो हतो

एक वखते आ वृत्तात सांभळी गोशालो ते सद्दालपुत्रने जैनधर्ममाथी चलित करवा अने पोताना धर्ममां लाववा आजीविक सघथी परिवृत थइ ते नगरमा आव्यो ते नगरनी अदर आजीविकनी सभामा पोताना भाडादिक मुकी केटलाएक नियतवादी मतवालाओने साथे लइ ते सद्दालनी समीपे आव्यो. सद्दालपुत्रे गोशालाने आवतो जोयो पण तेनो आदरसत्कार कर्यो नहीं. ते मौनधरीनेज बेशी रह्यो. सद्दालपुत्रे पोतानो आदर कर्यो नहीं, ते उता पीठफलकादिकने माटे ते श्रावकनी आगल श्री वीरप्रभुना गुणोनु कीर्त्तन तेणे करवा मांड्यु. तेणे कह्यु, हे देवानुप्रिय, अहिं महामाहण, महागोप, महा सार्थवाह, महाधर्मकथक, अने महानिर्यामक आव्या हता ? " सद्दालपुत्रे कह्यु, " हे देवानुप्रिय, एवा कोण छे ? " त्यारे गोशाले कह्यु, तेवा श्री श्रमण भगवत महावीरस्वामी. श्रावक सद्दालपुत्रे कह्यु, " ते एवी उपमाना धारक केम छे ? " त्यारे गोशाले कह्युं, " हे सद्दालपुत्र, श्री वीरस्वामी अनत ज्ञानादिकना धारक होवाथी अने चोसठ इद्रोने पूजवा योग्य होवाथी महामाहण कहेवाय छे. आ ससार रुप अटवीमा त्रास पामता एवा बहु जीवोने धर्ममय दंडे करी रक्षण करनार अने निर्वाण पदरुप मोटा वाडाने पमाडनार होवाथी ते महागोप कहेवाय छे आ ससाररुप अटवीमा उन्मार्ग पडता जीवोने मुक्तिना नगरमा लइ जनारा होवाथी ते महासार्थवाह कहेवाय छे. सन्मार्गथी भ्रष्ट थयेला जीवोने अनेक प्रकारना अर्थ—हेतुवडे सन्मार्गे लावी ससारथी निस्तार करनार होवाथी ते धर्मकथक कहेवाय छे. आ ससार समुद्रमा डुबता एवा प्राणीओने धर्ममयी नाविकावडे निर्वाणरुप नगरना कांठानी सन्मुख करवाथी ते महानिर्यामक कहेवाय छे. " गोशालाना आवा वचन सांभळी सद्दालके कह्यु, " हे देवानुप्रिय, निपुण, नयवादी अने विज्ञानवान् एवा मारा धर्माचार्य श्री वीरप्रभुनी साथे तमे विवाद करवा समर्थ छो ? " गोशाले कह्यु,

"हु समर्थ नथी." सद्दालपुत्रे कह्यु, "तमे केम समर्थ नथी ?" गोशालो बो ल्यो—"महावीरस्वामी मारी प्रत्ये अर्थ-हेतु पक्ष करी ज्या ज्या ग्रहण करेछे, त्या त्या मने निरुत्तर करे छे, तेथी हु तमनी साथे विवाद करवाने समर्थ नथी." सद्दालपुत्रे कह्यु, "देवानुप्रिय, तु मारा धर्माचार्यनु आ प्रमाणे गुणोत्कीर्त्तन करे छे, माटे हु पीठफलकादिवडे तने निमत्रण करु छु, परतु धर्मने माटे निमत्रण करतो नथी. तमे मारी कुभकारनी दुकाने जाओ अने पीठादिक ग्रहण करीने विचरो." ते श्रावकना आवा वचनथी गोशालो पीठादिक ग्रहण करीने त्या रह्यो हतो. परतु ज्यारे ते सद्दालपुत्रने कोइ प्रकारे पण जिनप्रवचनथकी चलाववाने शक्तिमान् न थयो त्यारे पोते खेद पाम्यो थको पोलासपुरनगरथी पाछो नीक ळीने बीजे ठेकाणे चाल्यो गयो सद्दालपुत्र सम्यक् प्रकारे धर्मने पालतो थको चौद वर्ष अतिक्रमे थके आनदादिकनी पेठे पोषधशालामा आवीने रह्यो. त्या चुल्लनीपितानी जेम ते श्रावकने उपसर्ग थया. पण एटलु विशेष के चोथी वार अग्निमित्रा नार्याने हणवाना वचन देवे कह्या त्यारे ते देवने ग्रहण करवानु आ-रभे उते देव आकाशमां उमी गयो अने कोलाहल कर्या पछी अग्निमित्रा नार्या आवी ते वृत्तात पूर्ववत् बन्यो. पछी सद्दालपुत्र एक मासनी सलेखना करी काल धर्मने पामी पहेला देवलोके अरुणाभ विमानमा उत्पन्न थयो. ते पछी ते महाविदेह क्षेत्रमा सिद्धिपदने पामशे एवी रीते सद्दालपुत्रनो वृत्तात छे.

आठमा श्रावक महाशतकनु वृत्तात

राजगृही नगरीमा महाशतक नामे गाथापति रहेतो हतो तेने रेवती प्रमुख तेर स्त्रीओ हती. तेनी पासे चोवीश कोटी सोनैया द्रव्य हतु निधान, व्याज अने व्यापारमा—आठ आठ कोटी द्रव्य रहेलु हतु, अने आठ गोकुल हता. तेनी मुख्य स्त्री रेवतीना पिता तरफथी आठ करोड सोनैया अने आठ गोकुलो मळ्या हता बीजी बार स्त्रीओना पिताना घर तरफथी बार बार कोटी सोनैया अने बार बार गोकुलो आव्या हता

एक दिवसे तेणे पण आनद श्रावकनी पेठे श्री वीरप्रभु पासे बार व्रता ग्रहण कर्या. विशेषमा एटलु के, तेणे पोतानी निश्राना चोवीश कोटी सोनैया

अने आठ गोकुलो राखी बाकीना रेवती प्रमुख तेर स्त्रीओना द्रव्यनो त्याग कर्यो. तेमज रेवती प्रमुख स्त्रीओ शिवाय बीजी स्त्री साथे विषयभोग करवानो पण त्याग कर्यो हतो. तेथी ते महाशतक श्रावक सुखे करी श्रावक धर्मने पाळतो विचरतो हतो. एक वखते रेवतीना मनमा एवो विकल्प उत्पन्न थयो के, मारी बार शोक्योना व्याघातथी हु मारा पति साथे एकली भोग भोगववाने शक्तिमान् थती नथी, माटे कोइ उपायथी ते शोक्योने मारी नाखु तो हु भर्तारनी साथे एकली भोग भोगवु अने तेम वळी ते स्त्रीओना द्रव्यनी पण हु एकलीज स्वामीनी थाउ." आवो विचार करी ते पापिणी रेवतीए कोइ छल करी पोतानी छ शोक्योने शस्त्रथी अने छ शोक्योने विष प्रयोगथी मारी नाखी अने तेमना द्रव्यनी पोते स्वामिनी थइ आ प्रमाणे शोक्य वगरनी रेवती पोताना पति साथे एकली भोग भोगववा लागी. ते भोगनी आसक्तिथी मास अने मदिरानी पण लोलुप बनी गइ.

एक दिवसे ते नगरीमा अमारी घोषणा थइ, आथी रेवतीने मास मळवु दुर्लभ थयु. पछी तेणीए पोताना पिताना घरना खानगी पुरुषोने बोलावीने कह्यु के, "तमारे दररोज गायना बे बे वाछरडा मारीने अहिं लाववा." रेवतीना आ वचन प्रमाणे ते पुरुषो तेम करवा लाग्या. रेवती ते वाछरडानु मास खाइ मदिरापान करती विचरवा लागी. श्रावक महाशतके ते पछी चाद वर्ष अतिक्रमण करी पूर्वनी पेरे पुत्रने कुटुब उपर स्थापी पोषधशाळामा आवी धर्मध्यान करवा मांड्यु आ वखते तेनी स्त्री रेवती मदिरानु पान करी मदोन्मत्त बनी वीखराएला केशवाळी अने मस्तक उपरथी उत्तरासन वस्त्र उतारती ते पोषधशाळामा आवी त्या आवी पोताना भर्तारने उन्माद उत्पन्न करावनार हाव भाव देखाडती शृगारना वचनो बोलवा लागी—"हे महाशतक श्रावक, तमे धर्मथी स्वर्ग तथा मोक्षादिकना वाछक थया छो आ तमारी धर्मकरणीथी शु थवानु छे? तमे शा माटे मारी साथे भोग भोगवता नथी?" तेणीए आ प्रमाणे कह्यु, तोपण ते महाशतक श्रावक मौनधरीने रह्यो. तेणीना ए वचननो तेणे अनादर कर्यो ते तो धर्मध्यानमा तत्पर थइने रह्यो हतो. रेवतीए ए प्रमाणे बे त्रणवार कह्यु, पण तेणीनो अनादर करवामा आव्यो, पछी ते पोताने स्थानके चाली गइ. ते पछी श्रावक महाशतक श्रावकनी अगीयार पडिमा आराधी अने बहु प्रकारना तप करी शरीरने सूकवी ते आ-

नंद श्रावकनी जेम मात्र नाडी तथा अस्थिवाळा शरीरने धारण करनारो थयो हतो.

एक दिवसे शुभ अध्यवसाये करी तेमने अवधिज्ञान उत्पन्न थइ आव्यु तेनाथी ते पूर्व, दक्षिण अने पश्चिम दिशाना लवण समुद्रमा एक एक हजार योजन प्रमाण क्षेत्रने जाणनार अने जोनार थयो. बाकीनी दिशाओने पण आनद श्रावकनी जेम देखवा लाग्यो.

एक वखते रेवती पूर्वनी जेम महाशतकने उपसर्ग करवा आवी, त्यारे ते गाथापति क्रोधायमान थइ गयो अने अवधिज्ञान प्रयाजी तेणे रेवतीने आ प्रमाणे कह्यु, " अरे रेवती, तु नहीं प्रार्थना करवा योग्यने प्रार्थना करनारी छे. तु सात दिवसमा अलसक व्याधिथी पराभव पामी असमाधिवडे काळ करी पहेली नरके लोलुचय नामना नरकावासमा चोराशी हजार वर्षनी स्थिति ए नारकीपणे उत्पन्न थइश. रेवती तेना आ वचनो साभळी भय पामी मनमा आ प्रमाणे चिंतववा लागी—" आजे आ महाशतक मारी उपर रुष्टमान थयो छे, तेथी ते कोइ कदर्थनाथी मने मारशे " आवु चिंतवी ते हळवे हळवे त्याथी पाछी ओसरीने पोताने घेर आवी अने दुःखे रहेवा लागी. ते पछी तेणी सात दिवसनी अदर काळ करी पहेली नरके लोलुचय नामना नरकावासमा उत्पन्न थइ. आ अरसामा श्री वीर परमात्मा समोसर्या त्या एकठी थयेली पर्षदाने प्रभुए धर्मदेशना आपी. ते साभळी पर्षदा पोतपोताने स्थाने गया पछी श्री वीरप्रभुए गौतम स्वामीने बोलावी श्रावक महाशतकने क्रोध उत्पन्न थया वगेरे बधो वृत्तात जणावी आ प्रमाणे कह्यु,—" गौतम, पोषधशाळामा छेल्ली सलेखना करी जेणे पोताना शरीरने दुर्बल कर्यु छे अने जेणे भात पाणीना पचखाण कर्या छे, एवो महाशतक श्रावक बीजा प्रत्ये साचा होय तोपण अप्रीति कारी वचनो बोले, ते घटित नथी, माटे तमारे महाशतकनी पासे जवु अने तेने कहेवु के, " हे महाशतक, तमे रेवती प्रति सत्य वचन कह्या, पण ते अनिष्ट वचन होवाथी अघटित हता, माटे तेनी आलोयणा करो " प्रभुना आ वचनथी गौतम राजगृहनगरीमा महाशतकने घेर गया ते गौतम मुनिने आवता जोइ श्रावक महाशतक खुशी थयो अने तेणे तेमने भावपूर्वक वदना करी पछी गौतमे श्री

वीरजगवान्ना वचनो तेमना नामथी कह्या, एटले ते महाशतके गौतम स्वामीना वचनने अंगीकार करी ते स्थानकनी आलोयणा लीधी. पछी गौतम स्वामी त्यांथी नीकळी श्री वीरप्रभुनी पासे आव्या. ते पछी महाशतक श्रावक सम्यक् प्रकारे श्रावकधर्मने पाळी, प्रांते अनशन करी अरुणावतंसक विमानने विषे देवपणे उत्पन्न थयो. त्यांथी च्यवीने ते महाविदेह क्षेत्रने विषे सिद्धिपदने पामशे एवी रीते महाशतक श्रावकनो वृत्तांत छे.

नवमा नंदिनीपिता श्रावकनो वृत्तांत

श्रावस्तीनगरीमां नंदिनीपिता नामे एक गाथापति श्रावक रहेतो हतो. तेने अश्विनी नामे स्त्री हती. तेनी पासे द्रव्य अने गोकुळ आनंद श्रावकना जेटलां हतां, अने बार व्रत पण तेणे आनंदश्रावकनी पेठे ग्रहण कर्या हतां. ते चौद वर्ष अतिक्रमण करी अनुक्रमे पुत्रने कुटुंब उपर स्थापी पोषधशाळामां आवी अनेक प्रकारना धर्मकृत्योथी आत्माने भावी श्रावकनी अगीआर प्रतिमा आराधी प्रांते अरुणाभ विमानमां देवपणे उत्पन्न थयो हतो अनुक्रमे ते महाविदेह क्षेत्रे सिद्धिपदने प्राप्त थशे एवी रीते नंदिनीपितानो वृत्तांत छे.

दशमा तेतलीपिता श्रावकनो वृत्तांत

श्रावस्तीनगरीमां तेतलीपिता नामे एक गाथापति रहेतो हतो, तेने फाल्गुनी नामे स्त्री हती. तेनी समृद्धि अने बार व्रत लेवानो प्रकार पूर्वनी पेठे समजवो. ते पोताना ज्येष्ठ पुत्रने कुटुंब उपर स्थापी, तेनी आज्ञाथी पोषधशाळामां आव्यो अने श्रावकनी अगीआर पडिमा आराधी प्रांते सौधर्म देवलोके अरुणाभ विमानमां चार पल्योपमनी आयुष्ये देवपणे उत्पन्न थयो. त्यांथी च्यवीने ते महाविदेह क्षेत्रने विषे सिद्धिपदने प्राप्त थशे. ए प्रकारे दशमा तेतलीपिता श्रावकनो वृत्तांत छे.

आ दशे श्रावकोने पंनरमा वर्षमां गृहत्याग करवानो अध्यवसाय थयो हतो, अने ते सर्वेए वीश वर्ष सुधी श्रावक पर्याय पाळ्या हता तेमज तेओ सर्वे सौधर्म देवलोकमां समान आयुष्ये उत्पन्न थया हता. ते दश श्रावकोमां पहेला, छठ्ठा,

नवमा अने दशमा श्रावकने उपसर्गो थया नथी. बाकीना छ श्रावकोने उपसर्गो थयेला छे. पहेला श्रावकने श्री गौतमस्वामी साथे प्रश्नोत्तर थया अने छठा श्रावकने देवनी साथे धर्मचर्चा थइ हती आ दश श्रावकोना बार व्रत उपरना दृष्टांतो श्री उपासकदशांग सूत्रने अनुसारे लखेला छे आ वृत्तांतो सांभळी बीजा पण सम्यग्दृष्टि जीवोए एवी रीते बार व्रतो पाळवा तत्पर थवु.

श्रावकनी अगीआर प्रतिमानु स्वरूप

" दसण[1] वय[2] सामाइय,[3] पोसह[4] पडिमा[5] अवंभ[6] सचित्ते[7] । आरंभ[8] पेस[9] उद्दिट्ठ[10], वज्जए[11] समणभूए य ॥ १ ॥ "

" १ दर्शन—सम्यक्त्व प्रतिमा, २ व्रत—अणुव्रतादि, ३ सामायिक, ४ पोषध, ५ कायोत्सर्ग प्रतिमा—आ पांच प्रतिमाने विषे विधान रुपे करीने अभिग्रह विशेष रुप प्रतिमा जाणवी, ६ अब्रह्म, ७ सचित्त—ए बे प्रतिमा त्याग रुपे जाणवी, ८ आरंभ-पोतानी जाते पापक्रिया करवी ते, ९ प्रेष्य, एटले बीजाने पापकर्मनो व्यापार कराववो, १० उद्दिष्ट—एटले ते ते श्रावकने उद्देशीने सचेतन अथवा अचेतन अथवा पक्व आहारादिक ते त्रणेनो वर्जक तथा आत्मी आदि प्रतिमानो धारक, ११ श्रमणभूत एटले साधु-तुल्य—ए अगीआर प्रतिमा कहेवाय छे

आ गाथार्थ थयो हवे भावार्थ—आ प्रमाणे छे.

१ एक मास पर्यंत शंकादि दोष तथा राजाभियोग आदि छ आगार वर्जितपणे करी केवल शुद्ध सम्यक्त्वने धारण करवाथी पेहेली प्रतिमा थाय छे

२ बे मास पर्यंत अतिचार रहित अने अपवाद वर्जित व्रतोने अने सम्यक्त्वने धारण करवाथी बीजी प्रतिमा थाय छे

३ त्रण मास पर्यंत सम्यक्त्व अने व्रत सहित प्रतिदिन उभय सन्ध्या सामायिक करवाथी त्रीजी प्रतिमा थाय छे

४ चार मास सुधी प्रत्येक मासे ब पर्वने विषे चार प्रकारे पोषध करवा चोथी प्रतिमा थाय छे.

५ पांच मास पर्यंत स्नान रहित दिवसे प्रकाशवाला भागमां जोजन करता ने राते सर्वथा जोजननो त्याग करता पेहेरवाना वस्त्रनो कच्छ नहीं बांधता वसे ब्रह्मचारी अने रात्रे अपर्वतिथिमां स्त्रीओनुं अने तेना जोगनुं परिमा- करता अने पर्वतिथिए रात्रे चौटादिकने विषे कायोत्सर्ग करता पांचमी प्र- मा थाय छे अहिं रात्रिजोजन वर्जवामाटे सूचव्युं छे. श्रावकोए तो केशवादि- नी पेठे कोइ काले पण रात्री जोजन न करवुं जोइए, परंतु जे कोइ श्रावक ते यम करवाने शक्तिमान् न होय तेने पण पांचमी प्रतिमाथी आरंजीने अवश्य त्रि जोजननो त्याग करवो. ते केशवनुं वृत्तांत आगळ कहेवामां आवशे.

६ ब मास यावत् दिवस अने रात्रिने विषे सर्वथा ब्रह्मचर्य धारण कर- ए बठी प्रतिमा थाय छे.

७ सात मास पर्यंत अचित्त अशनादिक भोगवनारने सातमी प्रतिमा- ाय छे.

८ आठ मास पर्यंत आरंजनो त्याग करवाथी आठमी प्रतिमा ाय छे

९ नव मास पर्यंत बीजा पासे पण आरंज नहीं करावनारने नवमी प्र- तिमा थाय छे

१० दश मास पर्यंत क्षुरमुंड अने शिखाने धारण करता अथवा उ- दिष्ट आहारनो त्याग करता दशमी प्रतिमा थाय छे.

११ अगीआर मास पर्यंत क्षुरमुंड अथवा लोचे करीने लुप्तकेश एटले केश रहितपणे रजोहरण तथा पात्रादि साधुना उपकरणो ग्रहण करी साधुनी जेम एषणीय अशनादिकने ग्रहण करता अद्यापि स्वजनने विषे अव्यवछिन्न स्नेह वाळो तथा गोचरीने अवसरे " जेणे प्रतिमा अंगीकार करेली छे, एवा श्रावकने जिक्षा आपो " ए प्रकारे बोलनारने अगीआरमी प्रतिमा होय छे.

प्रतिमा अंतर्मुहूर्त्त प्रमाण वाळी छे. ते मरण समये अथवा दीक्षा लेवामा संभवे छे, ते शिवाय संभवती नथी.

अहिं प्रथमनी सात प्रतिमा कोइ प्रकारांतरे कहेली छे, ते विषेनो विचार श्री प्रवचन सारोध्धार ग्रंथमाथी जाणी लेवो

पूर्वे सूचवेलु केशवनु दृष्टांत

कुण्डिनपुर नगरने विषे यशोधन नामे एक वणिक् रहेतो हतो तेने रंभा नामे स्त्री हती. तेणीना उदरमाथी हंस अने केशव नामे बे पुत्रो उत्पन्न थया ते बने पुत्रो अनुक्रमे यौवन वयने प्राप्त थया. एक वखते तेओ क्रीडा करवा माटे वनमा गया त्या धर्मघोष नामे एक मुनि तेमना जोवामा आव्या तेमने जोता ज तेओने विवेक उत्पन्न थयो. तत्काल वंदना करी तेमनी समीपे बेठा गुरुए धर्मोपदेश आप्यो ते उपदेशमा रात्रि भोजनने माटे आ लोक तथा परलोक संबधी घणा दोषो बताव्या ते आ प्रमाणे—"रात्रिने विषे क्रीडा करवाने माटे निशाचर—राक्षस देवताओ स्वेच्छाथी भूतल उपर भमे छे, तेओ रात्रि भोजन करनाराओने तत्काल छल करे छे. जो भोजन करवा योग्य अन्नादिकमा कीडीओ आवेतो भक्षण करनारनी बुध्धिनो नाश करे छे, जो मक्षिका आवे तो वमन थाय छे, जो जू आवे तो जलोदरनो रोग थाय छे, जो करोळीओ आवे तो कोढ नीकळे छे, जो वाल आवे तो गळे वळगवाथी स्वरनो भंग करे छे, कांटो अथवा लाकडानो कटको आवेतो गळे पीडा करे छे, जो वींछी आवे अथवा उपरथी सर्पनु गरल पडे तो मरणांत कष्ट उत्पन्न थाय छे ते वखते भाजन—पात्र वगेरेने धोवादिक करवामा लघु जीवोनी हिंसा थाय छे इत्यादि आ लोक संबंधी दोषो छे अने नरके पडवा रुप परलोक संबधी घणा दोषो रहेला छे, तेथी ते रात्रि भोजनने घणा घणा दोषोथी दुष्ट मानी संसारभीरु प्राणीओए तेनो त्याग करवामां उद्यम करवो"

आ प्रमाणे गुरुना उपदेश वचन सांभळी जेमने प्रतिबोध थयो छे एवा बने भाइओए गुरुनी साक्षीए हर्षपूर्वक रात्रिभोजनना त्यागनो नियम ग्रहण कर्यो. ते पछी गुरुने वंदना करी तेओ पोताने घेर आव्या प्रं याह्नकाले भोजन करी बने भाइ वेपारना धंधा माटे दुकाने गया, ज्यारे बे घडी दिवस बाकी रह्यो

एटले तेओ घेर आव्या अने तेमणे मातानी पासे भोजन (वालु) माग्यु, त्यारे माताए कह्यु, " अत्यारे काइ पण भोजन तैयार नथी, रात्रे थशे, तेथी चार घडी सुधी खमो. " माताना आवा वचन सांभळी हस अने केशव बोल्या— "माता, तमे जे कह्यु, ते सत्य छे, परन्तु अमोए रात्रिभोजननो त्याग करेलो छे, माटे जो अमोने भोजन कराववु होय तो हमणाज आपो. " तेमना आ वचनो घरमा छाना रहेला यशोधने सांभळ्या. तत्काल तेना मनमा क्रोध उत्पन्न थइ आव्यो. तेणे मनमा आ प्रमाणे चितव्युं–" अरे कोइ धूर्ते जरुर मारा पुत्रोने ठग्या लागे छे, नहीं तो कुलक्रमथी आवेला रात्रिभोजननो तेओ शामाटे त्याग करे ? हवे हु तेमने बे त्रण दिवस भुख्या राखी तेमना रात्रिभोजनना त्यागना कदाग्रहने त्यजावी दउ तेज ठीक. " आ प्रमाणे चितवी तेज वखते काइ भोजन आपवा थाळ ग्रहण करवाने गर्भगृहमा आवेली पोतानी स्त्री रंभाने तेणे गुप्त रीते आ प्रमाणे कह्यु. " तारे मारी आज्ञा शिवाय पुत्रोने भोजन आपवु नहीं. " पतिनी आवी आज्ञा थता तेणी घरमाथी पाछी आवी अने आ प्रमाणे पुत्रोने कह्यु, " पुत्रो, हाल घरमा काइ पण पक्वान्न वगेरे खावानु नथी, माटे रात्रे तमारे पितानी साथे भोजन करवुं. नीतिमा कह्यु छे के, " जेओ पिताना मार्गने अनुसरे तेज पुत्रो कहेवाय छे. " आ वखते ते बनेए जरा हास्य करीने कह्यु, " माता, जे सत्पुत्र होय ते पितानो सन्मार्गी थाय छे, पण कुवामा पडता पितानी पछवाडे शु गमन कराय ? " पुत्रोना आवा वचन सांभळी माताए कह्यु के, " जे तमोने रुचे ते करो, पण आ वखते भोजनतो नहीं मळे " माताना आ वचन सांभळी तेओ बने मौन धरीने रह्या, पछी तेओ घरनी बाहेर चाल्या गया. ते पछी तेना मिथ्यादृष्टि पिताए अति क्रोधातुर थइ रंभाने आ प्रमाणे कह्यु, " तारे ए पुत्रोने रात्रिने विषेज भोजन आपवु दिवसे कदि पण आपवु नहीं. " पतिनी आज्ञा रंभाए स्वीकारी ज्यारे रात्रि पडी एटले ते बने घेर आव्या, ते वखते माताए तेमने भोजन करवानु कह्यु, पण ते धैर्यवाळा बने पुत्रोए भोजन करवानी ना कही. बीजे दिवसे तेमना मूर्ख पिताए ते सरल चित्तवाला बने पुत्रोने क्रय–विक्रयना मोटा व्यापारमाज जोडी दीधा, ते वेपारमा तेमनो आखो दिवस पसार थइ गयो. तथापि ए व्यापारनो अंत आव्यो नहीं. ज्यारे रात्रि पडी त्यारे घेर आव्या. तेओ बने पोताना नियमने अनुसरी भोजन कर्या शिवाय सुइ गया. आ प्रमाणे तेना द्वेषी पिताए तेमने ए

व्यापारमा एवा जोडी दीधा के जेथी तेमने आहार विना पाच रात्रिओ प्रसार थइ गइ. ते पछी छठे दिवसे रात्रे तेना कुटिलमति पिताए आ प्रमाणे सारा वचनोथी कह्यु, " वत्सो, जे कार्य मने अनुकूळ अने सुखदायक होय ते तमारे इष्ट होवु जोइए. आवी प्रतीति धारण करी हु तमोने जे कहु, ते प्रमाणे तमारे करवु. वळी तमे रात्रिभोजननो त्याग कर्यो छे, ए वात मारा जाणवामा नथी, नहीं तो हु तमोने एवा क्लेशकारी व्यापारना कार्योमा शामाटे जोडु ? तमोए आटला दिवस भोजन कर्यु नहीं, तेथी तमारी माताए पण भोजन कर्यु नथी. ते एणीने पण आजे छठो उपवास थयो छे, ते छ उपवास छ मास जेवा थइ पड्या छे, तमारी आ नानी व्हेन पण अन्न न पामवाथी अति ग्लान शरीरवाळी थइ गइ छे. मे ज्यारे तेणीना शरीरनी ग्लानि थवानु कारण पूछ्यु त्यारे तमारी माताए तमारो सर्व वृत्तात मने जणाव्यो माटे तमारे हवे आ बाळिका उपर दया लावी भोजन करवु जोइए एटले तमारी माता पण जमे वळी पडित पुरुषो रात्रिना पेहेला अर्ध पहोरने प्रदोष कहे छे अने पाछला अर्ध पोहोरने प्रत्यूष कहेछे अने तेज कारणथी रात्रि लोकोमा त्रियामा कहेवाय छे. ते अपेक्षाए जे रात्रिमुखे भोजन करवु, ते निशाभोजन कहेवातु नथी "

आ प्रमाणे पितानी वाणीथी जेने भारे क्षुधा लागी छे तेथी विह्वल थयेलो हस केशवनी सन्मुख जोवा लाग्यो पोताना मोटा भाइ हसने कायर थयेलो जोइ पोते निश्चल चित्तवाळो थइ पिता प्रति आ प्रमाणे बोल्यो—" पिताजी, जे काइ तमने सुखदायक होय, ते हु करु, पण जे मने पाप रुप होय ते तमने सुखने माटे शु थाय ? वळी जे तमे माता वगेरेना वात्सल्य विषे कहोछो ते वात्सल्य धर्मकार्यमा शल्यरुप छे, कारणके सर्वे लोक पोताना करेला कर्मना फळने भोगवे छे. ते कारणे कोण कोने माटे पापकर्म करे ? वळी जे तमे त्रियामानु स्वरुप कह्यु, ते तो कथनमात्र छे तत्त्वथी तो दिवसना मुखे–अने अते रहेलु जे मुहूर्त्त ते रात्रिनु समीपवर्त्ति होवाथी रात्रि तुल्यज छे, माटे तेमा उत्तमबुध्धिवाळाए भोजन न करवु जोइए, अने हमणां तो रात्रिज छे, तेथी तेमा तो कदि पण भोजन थायज नहीं पिताजी, तमारे मने ते विषयमा वारवार कहेवु नहीं "
आ प्रमाणे केशवनु वचन साभळी यशोधने क्रोधातुर थइने केशवने आ प्रमाणे कह्यु, " अरे दुर्विनीत, जो तु मारु वचन उल्लघे छे, तो मारी दृष्टिथी दूर जा "

पिताना आवा वचन सांभळी महाधैर्यवान् केशव तत्काळ द्रव्यादिकनी ममतानो त्याग करी घरमांथी बाहेर नीकळ्यो, ते वखते हंस तेनी पछवाडे जवा लाग्यो, एटले यशोभद्रे बळात्कारे तेने पकड्यो अने घणा वचनो कही तेने लोभावी दीधो. आथी हंस रात्रे भोजन करवाने बेठो.

हवे केशवे त्यांथी नीकळी देशांतरे जवा विचार कर्यो. मार्गमां घणा नगर, गाम तथा आराम वगेरे उल्लंघतो सात दिवस निराहारपणे एक मोटी अटवीमां आवी पोहोंच्यो ते अटवीमां रात्रि पडी एटले आम तेम भमता घणा यात्रालुओथी युक्त एक यक्षायतन तेना जोवामां आव्युं त्यां केटलाएक यात्रालुओ रसोइ करता तेना जोवामां आव्या. तेओए आ केशवने आवतो जोइ हर्षथी आ प्रमाणे कह्यु, " हे पांथ, अहीं आवो, अहिं आवो अने भोजन करी अमोने पुण्यनुं फळ आपो, अमोए पारणु करवानो आरंभ करतां तमो अमोने अतिथि तरीके प्राप्त थया छो. अमे अतिथिनी गवेषणा करता हता " यात्रालुओना आवा वचन सांभळी केशवे कह्युं, " हे यात्रालुओ, आ केवा प्रकारनुं व्रत के जेमां रात्रे पारणु थायछे ? " यात्रालुओ बोल्या—"हे पांथ, आ माणव नामे महा प्रभावक यक्ष छे आजे तेनो यात्रानो दिवस छे. अहिं आवेला लोको दिवसे उपवास करीने रात्रे कोइ अतिथिने जमाडी पारणु करे छे. आम करवाथी महापुण्यनी प्राप्ति थाय छे. माटे तमे अमारा अतिथि थाओ. "

यात्रालुओना आ वचन सांभळी केशव बोल्यो—"रात्रे अशन करवाथी पापना कारणरूप एवा आ पारणामां हुं भोजन करीश नहीं. जेमां रात्रे पारणु करवामां आवे, तेनो उपवास कहेवायज नहीं धर्म शास्त्रमां आठ प्रहर सुधी भोजननो त्याग करवो, ते उपवास कहेवाय छे. वळी जेओ धर्म शास्त्र विरुद्ध तप करे छे, ते दुर्बुद्धि लोको दुर्गतिमां जाय छे. " केशवना आवा वचन सांभळी ते यात्रालुओ बोल्या—" अरे भाइ, आ देवना व्रतमां आवोज विधि छे.' माटे अहिं शास्त्रोक्त विधिनी युक्तायुक्त विचारणा करवानी नथी. अमारे अतिथिनी शोध करतां घणी रात्रि गइ छे, माटे ए विचार मुकी दइ तत्काळ आ पारणु करवाने तैयार थाओ. " आ प्रमाणे कही तेओ सर्वे उभा थइ तेना चरणमां पड्या. तोपण केशवे तेमनु वचन मान्यु नहीं. आ समये यक्षना शरीरमांथी एक भयकर रूपवाळो पुरुष बाहेर नीकळ्यो. ते हाथमां मुद्गर लइ विकराळ नेत्रवाळो

थइ तीक्ष्ण अने रूक्षवाणीवमे केशवने आ प्रमाणे कहेवा लाग्यो—" अरे ! दु-ष्टात्मा, तु मारा धर्मने दूषित करे छे अने मारा जक्तोनी अवगणना करेछे? तु हमणा जल्दी जोजन कर. जो नहीं करे तो तारा मस्तकना सो खरू करी ना-खीश." आ वखते केशव हसीने बोल्यो—"हे यक्ष तु मने शा माटे क्षोभ प मामेछे ? जवातरे उपार्जित करेला प्रधान भाग्यनी ऋध्धिए करी मने मरणनो भय जरापण नथी" तेना आ वचन साभळी ते यक्षे पोताना भक्तोने कह्यु,"हे ज-क्तो, आ माणसना धर्मगुरुने पकमीने लावो, तेने आनी आगळ मारे हणवो छे कारणके, तेणे आ केशवने आवो धर्मोपदेश दीधोछे" आम कहेताज ते से वकोए जेनो कशपाश पकड्यो छे अने जे आर्त्तनाद करे छे, एवा धर्मघोष मुनिने त्या लाववामा आव्या. अने तेमने यक्षनी आगल मुक्या. त्यारे यक्षे कह्यु, " अ-रे मुनि, आ तारा शिष्य केशवने अहीं जमाम, नहींतो तने हमणा हणी नाखी-श." त्यारे ते मुनिए केशवने कह्यु, " जद्र, देव गुरु अने सघने माटे अकृत्य पण करवु, माटे तु जोजन करी ले, अनेमने हणवाने तैयार थयेला एवा आ यक्षथी तु मार रक्षण कर." तेना आवा वचन साजळी केशव चिंतववा लाग्यो—" जेओ महा धैर्यादि गुणोथी सपन्न एवा धर्मघोष मुनि स्वप्नने विषे पण यथा र्थ बोले नहीं, तेओ मृत्युना जयथी आवा पाप कृत्यमा अनुमति केम आपे? माटे निश्चे आ मारा गुरुज नथी. आ यक्षनी कोइ माया लागे छे." आ प्रमाणे चिंतवी केशव मौनधरीने रह्यो. त्यारे यक्षे मुनिउपर मुद्गर उपामीने कह्यु, " अरे केशव, तु जोजन कर नहींतो आ तारा गुरुने हणु छु." केशवे नि शकनाथी जणाव्यु, " अरे मायावी, आ मारा गुरु नथी. तेवा चारित्रना पात्र गुरु तारी आवी शक्तिने वश कदापि न थाय." ते वखते कल्पित मुनिए कह्यु, " अरे! के-शव, हुज तारो गुरु छु मारु रक्षण कर, रक्षण कर." आ प्रमाणे पोकार करता ते मुनिने यक्षे मुद्गरना प्रहारथी हणी नाख्यो. पछी तेणे केशवने कह्यु, " अरे! जो तु जोजन करीश तो आ तारा मरेला गुरुने पाछो सजीवन करी-श. अने तने मोटु अर्ध राज्य आपीश, नहींतो हु आ मुद्गरना घा वडे तने पण यमराजनो अतिथि करीश." त्यारे केशव हसतो हसतो बोल्यो "अरे य क्ष, आ मारा गुरु होयज नहीं, अने हु तेना वचने करी मारा नियमनो जग न हीं कर, अने जो तु मरेलाने जीवता करतो हो तो आ तारा जक्तोना पूर्वजोने

केम जीवता करतो नथी ? तेम वली ताराम। जो राज्य देवानु सामर्थ्य होय तो आ तारा जक्तोने राज्यधारी केम करतो नथी ? वली तुं मने वारवार मृत्युनो जय व-तावे छे, पण मारामा जो आयुष्यनु वल हशे तो कोइ पण मने मारवाने समर्थ थवानो नथी. " केशवनी आ वाणी सांजळी अने तेनी दृढता जोइ यक्ष खुशी थइ गयो. तत्काल ते केशवने आलिंगन करीने आ प्रमाणे बोल्यो.

" अहो मित्र धिया पात्र न स्याद्देष गुरुस्तव ।
मृता मया न जीव्यते नैव राज्य च दीयते " ॥ १ ॥

" अहो बुद्धिना पात्र मित्र, आ तारा गुरु नथी. मरेला (प्राणीउ) माराथी जीवता थता नथी अने माराथी राज्य आपी शकातु नथी. " १

आ प्रमाणे ज्यारे यक्षे कह्यु, त्यारे मुनिरूपे भूमि उपर पमेलो ते यक्षनो कि-कर हास्य करतो करतो उठी अने मुनिना रुपनो त्याग करी आकाश मार्गे चाल्यो गयो. आवी विचित्र मायाथी विस्मय पामेला केशवने यक्षे आ प्रमाणे कह्यु " हे मित्र, तु सात उपवासे करी खिन्न थइ गयो छे. अने घणा मार्गनो विहार करीने थाकी गयेलो छे, माटे आ रात्रे अहिं विश्रांत था अने प्रात काले आ मारा जक्तोनी साथे पारणु करजे " आ प्रमाणे कही ते यक्षे पोतानी माया शक्तिथी एक शय्या उपजावी तेने वतावी पछी यक्षनी आज्ञाथी जक्तजनो जेना पग चापेछे, एवो केशव ते शय्याने विषे सुइ गयो. ते श्रांत थयेलो होवा-थी तत्काल निद्राने वश थइ गयो. चारघडी पछी प्रजात विकुर्वी निद्राथी जे-ना लोचन व्याप्त छे एवा केशवने यक्षे कह्यु, जद्र, रात्रि चाली गइ. प्रजात थ-येल छे, माटे निद्रानो त्याग करी जाग्रत् थाओ. " तत्काल केशव जाग्रत् थ-यो. दिवसना अजवाळाने अने सूर्यथी मंडित एवा आकाशने तेणे जोयु. त्यारे ते आ प्रमाणे चिंतववा लाग्यो—' हु रात्रिना पाछला पोहोरे सुतो होउ, तो-पण ब्राह्म मुहूर्तमा स्वत' जागी जाउ‌छु अने आजेतो अर्ध रात्रे सुतो हतो, तोपण आ अर्ध प्रहर दिवस चढ्यो ते छता केम जाग्यो नहीं, तेनु शु कारण हशे ? वळी हजु मारा नेत्रो निद्राथी व्याप्त केम हशे ? तेमज मारा श्वास-नो पवन हजु सुगंधी केम नथी ? " आ प्रमाणे चिंतवता केशवने यक्षे कह्यु,

" हे सत्पुरुष, तमे धीरपणु ग्रहण करो. अने प्रजातना कृत्य करी पारणु करो. "
केशव बोल्यो—" हे यक्ष, तारा यक्षपणाथी हु ठगायो नथी मने खात्री था
यछे के, हजु रात्रि छे आ दिवसनो प्रकाश तारी मायाथी उत्पन्न थयेलो छे. "
आ प्रमाणे केशव बोलतो हतो, तेवामा तेना मस्तक उपर आकाशमाथी पुष्पनी
वृष्टि थइ अने जय जय शब्द प्रगट थयो त्यारे केशवे पोतानी सन्मुख एक का-
तिवाळा दिव्य पुरुषने जोयो. अने यक्षायतन, यक्ष अने यक्षना भक्तो जोवामा
आव्या नहीं. ते देवे केशवने कह्यु, हे महाधीरजवान्, हे पुण्यवान्मा शिरो-
मणिरूप, तमारा जेवा पुरुषोनी उत्पत्तिथी आ पृथ्वी रत्नगर्भा कहेवायछे.
इमणा इन्द्रे पोतानी सजाने विषे रात्रि जोजनना त्यागना विषयमा तमारा
धैर्यनु अत्यत वर्णन कर्यु ते माराथी सहन थइ शक्यु नहीं. हु वह्नि नामे देव
छु पछी तमारी परीक्षा करवाने माटे हु अहिं आव्यो, पण नियमने विषे दृढ
चित्तवाळा एवा तमारु एक रोम पण चलित करवाने हु समर्थ थयो नहीं, हवे
हु तमोने खमावुछु तमे मारो अपराध क्षमा करो वळी देवनु दर्शन निष्फळ
न होय, तेथी तमे मारी पासे काइक वर मागी ल्यो, अथवा तमारा जेवा सत्पु-
रुषोने कोइ जातनी इच्छा होती नथी, पण मारे पोताने पोतानी शक्ति देखाड-
वी जोइए, तेथी हु तमोने बे वरदान आपु छु " आजथी जे कोइ रोगी पु-
रुष तमारा अगने लागेला जलवडे पोताना शरीरनु सिंचन करशे, ते तत्काळ
नीरोगी थशे " बीजु तमे कदाचित् आतुरताथी जे काइ चिंतवशो, ते कार्य
सत्वर सिद्ध थशे " आ प्रमाणे बे वरदान आपी ते केशवने साकेतपुरनी पा
से मुकी ते देव अदृश्य थइ गयो केशवे पोताना आत्माने कोइ नगरनी पासे
रहेलो जोयो. ते पछी सूर्योदय थता केशव पोतानु नित्य कृत्य करी ते नगर जो
वाने अदर गया जता मार्गमा कोइ प्रदेशना मध्यभागे राजादि लोकोने धर्मो
पदेश आपता कोइ आचार्य तेना जोवामा आव्या. ते महाभाग्यरूप मानतो
केशव तत्काळ त्या गयो अने ते गुरुना चरणमा नमी पड्यो अने पछी तेमनी
आगळ बेठो गुरुए धर्मदेशना आपी देशनाने अते ते नगरना राजा धनजये
गुरुने आ प्रमाणे विनति करी—" भगवन्, हु जराथी व्याप्त थयो छु माटे
हु व्रत ग्रहण करु तो ठीक, पण हु अपुत्र छु, तो मारा राज्य उपर कोने
स्थापित करु ? आवु चिंतवन करतो हु रात्रे सुइ गयो. तेवामा कोइ दिव्य पुरु-

पे स्वप्नमा आवी मने कह्यु, "काले प्रभाते देशांतरथी तारा गुरु समीपे कोइ पुरुष आवशे. ते सत्पुरुषने तारा राज्य उपर स्थापी तु तारो मनोरथ पूर्ण करजे." आ स्वप्नथी तत्काल हु जागृत थइ गयो प्रभातना कृत्यो करी अहीं आव्यो. त्या आ पुरुषने में आपनी पासे जोयो छे" राजाना आ वचन सांभळी ते गुरुए ते केशवनो रात्रि भोजनना त्याग सबंधी सर्व वृत्तांत कही स मजाव्यो. आ वखते राजाए पूछ्यु, "भगवन्, मने जे पुरुषे स्वप्नमा कह्यु हतुं ते पुरुष कोण हशे?" त्यारे गुरु बोल्या—"आ केशवनी परीक्षा करनार वह्नि नामे देवताए तने स्वप्नमां कह्यु हतु." ते पछी राजा गुरुने नमी केशव सहित पोताना नगरमा गयो. अने मोटो उत्सव करी केशवनो राज्य उपर अभिषेक कर्यो पछी पोते गुरु पासे व्रत लइ चाली नीकळ्यो हतो

केशव राजा थया पछी प्रतिदिन चैत्यपूजा करतो हतो अने दीन जनोने दान आपतो हतो तेणे पोताना प्रतापथी सीमाडाना राजाओने ताबे करी लीधा हता ते न्याय मार्गे प्रेमथी पोतानी प्रजाने पाळतो हतो

एक वखते केशव पोताना महेलना गोख उपर बेठो हतो, तेवामा तेने पोताना पितानु स्मरण थइ आव्यु पिताना दर्शन करवानी तीव्र इच्छा प्रगट थइ आवी आ समये भूमि उपर तेज मार्गे चालता पिताने तेणे जोया. केशवे तत्काल पोताना पिताने ओळखी लीधा तेज वखते ते महेल उपरथी नीचे उतर्यो, तेनी पाछळ घणा सेवको दोडता चाल्या. केशव मार्गमां आवी पोताना पिताना चरणमा नमी पड्यो. केशवने ओळखीने आश्चर्य पामी गयो केशवे कह्यु, "हे पिता, तमे एवा समृद्धिवान् हता, ते आजे रांकना जेवा केम देखाओछो?" यशोधन पुत्रनी राज्यनी समृद्धि जोइ हृदयमा आनद पामतो अने दुःखाश्रु वर्षावतो आ प्रमाणे बोल्यो—"हे पुत्र, तु गया पछी में तारा भाइ हंसने रात्रे भोजन करवा बेसार्यो, अर्धे भोजन कर्या पछी तेने अकस्मात् भ्रम उत्पन्न थइ आव्यो, अने ते मूर्छा खाइ पृथ्वी उपर पडी गयो तत्काल 'आ शु थयु' एम चिंतवती अने दुःखातुर थयेली तारी माता दीवो लावी अने तेणीए त्या जोयु, तेवामा तेना अन्नने विषे गरळ (विष) पडेल जोवामा आव्यु. पछी लपरना आगमा जोग

मनतु फल जोइ अमो वधा कुटुवे तने धर्मनो ज्ञाता जाणी मोटो आक्रद करवा गांड्यो, तेथी घणा लोको त्या एकठा थइ गया. तेवामा कोइ एक विषवैद्य त्या आवी चड्यो. अमोए ते वैद्यने पूछ्यु के, " आ विष कोइ पण प्रयोगथी साध्य छे के नहीं ? " त्यारे तेणे कह्यु के, शास्त्रमा तिथि, वार, नक्षत्र आदि आश्रीने साध्य असाध्यपणानो विचार कहेलो छे

ते आ प्रमाणे—

" तिथय पचमी पष्ठ–ष्टमी नवमिका तथा ।
चतुर्दश्यप्यमावास्या–ऽह्निना दष्टस्य मृत्युदा ॥ १ ॥
।शेपास्तु नैवमित्यर्थ.।
दष्टस्य मृतये वारा भानुभौम शनैश्चरा ।
प्रात सध्याऽस्तसध्या च सक्रातिसमयस्तथा ॥ २ ॥
भरणी कृत्तिकाश्लेपा विशाखा मूलमश्विनी ।
रोहिण्यार्द्रा मघापूर्वात्रय दष्टस्य मृत्यवे ॥ ३ ॥
वारि श्रवतश्चत्वारो दशाश्च यदि शोणिता ।
वीक्ष्यते यस्य दष्टस्य स प्रयाति भवातरम् ॥ ४ ॥
रक्तवान् दश एको वा छिद्री काकापदाकृति ।
शुष्क श्याम स्त्रिरेखो वा दष्टे स्पष्टयति व्ययम् ॥ ५ ॥
सवर्त्त सर्वत. शोफो वृत्त सकुचितानन ।
दश शसति दष्टस्य विनष्टमिह जीवितम् ॥ ६ ॥
केशाते मस्तके भाले भ्रू मध्ये नयने श्रुतौ ।
नासाग्र ओष्ठे चिबुके कठे स्कधे हृदि स्तने ॥ ७ ॥
कक्षाया नाभिपद्मेच लिंगे सधौ गुदे तथा ।
पाणिपादतले दष्ट स्पृष्टोऽसौ यमजिह्वया ॥ ८ ॥

" पाचम, छठ, आठम, नवमी, चौदश अने अमास-एटली तिथिओ सर्प डशेला माणसने मृत्यु आपनारी छे, ते शिवायनी तिथिओ मृत्यु आपनारी नथी. रविवार, मगळवार अने शनिवार एटला वार सर्प डशेला माणसने मृत्यु आपनारा थाय छे. प्रातःकाल, सायकाल, सक्रातिनो समय, पण मृत्यु आपनार छे. नक्षत्रोमा, भरणी, कृत्तिका, अश्लेषा, विशाखा, मूल, अश्विनी, रोहिणी, आर्द्रा, मघा, त्रण पूर्वा (पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढा, पूर्वाभाद्रपद) एटला नक्षत्रो सर्प डशेला माणसने मृत्यु आपनारा छे. सर्प डशेला माणसना जखमना चार भागमाथी जो पाणी झरता अने रुधिरवाला देखाय तो ते माणस अवश्य मृत्यु पामे छे. ज्या सर्प दश मार्यो होय ते भाग रुधिरवाळो, छिद्रवाळो, कागडाना पग जेवी आकृतिवाळो, शुष्क, श्याम अथवा त्रण रेखावाळो होय तो ते डशेला माणसना नाशने करेछे. जो डश आवर्त्त-घुमरीवाळो, सर्व तरफ सोजावाळो, गोळाकार अने संकुचित मुखवाळो होय तो ते जीवितनो नाश सूचवेछे. केशने अंते, मस्तक उपर, ललाट, बे भ्रूकुटीनी वच्चे, आखे, काने, नासिकाना अग्र भागे, होठे, हडपचीए, गळे, काधे, छातीए, स्तने, काख उपर, नाभिए, लिंगे, साथा उपर, गुद उपर अने हाथ पगने तळीए डशायलो पुरुष यमराजनी जिह्वाथी स्पर्श करायलो छे, अर्थात् मृत्यु पामे छे. १-२-३-४-५-६-७-८

शास्त्रमा आ प्रमाणे लखेछे, पण आ हस सर्पे डशेलो नथी, परतु तेना उदरमा गरळनो प्रवेश थयेल छे, तेथी तेमा साध्य-असाध्यनो विचार करवो शा कामनो छे ? " आवा ते विपर्वैद्यना वचन साभळी में तेने पूछ्यु के, "त्यारे आ हस शा उपायथी जीवे ?" त्यारे तेणे मत्रनु आव्हान करीने कह्यु, "तमारो कोइ पण उपाय चालशे नहीं, तेथी तेने माटे श्रम करवो नहीं. कारण के, आ सर्पनु विष तेना शरीरमा हळवे हळवे व्यापी जशे, अने आ वालकनी काया तेनाथी एक मास सुधी गळती जशे. पछी एक मासे तेनु मरण नीपजशे." आवा तेना वचन साभळी सर्व लोकोनु विसर्जन करी तारा भाइ हसने एक शय्यामा सुवाडी हु पाच दिवस सुधी तेनी शी स्थिति थाय छे ते जोतो घरमा रह्यो. तेटला वखतमा तेना शरीरमा रोम रोम छिद्रो पडवा लाग्या तेथी ते मृत्यु पामी गयो. पछी हु तारी शोध करवाने घरमाथी बाहेर नीकळ्यो. हु घणो मार्ग

उल्लघन करी अहिं आव्यो, त्यारे पुण्ययोगे तारो अचानक मेलाप थइ आव्यो नेरथी नीकळ्या मने आजे मास पूर्ण थाय छे आजे ते हसनु मृत्यु थयु हशे, अथवा हमणा थशे " पिताना आवा वचन साम्भळी केशव अतिशय खेदातुर बनी गयो. ते पोताना मनमा आ प्रमाणे विचार करवा लाग्यो–" अहिंथी ते नगर सो योजन दूर हशे हवे मारा जीवता बाधवनु मुख जोवा शी रीते जावु?" आ प्रमाणे जेवा पोते विचार करे छे, तेटलामा केशवे पोताना आत्माने पिता सहित हसनी पासे रहेलो जोयो हसनु शरीर अत्यत कोहाइ गयु हतु तेनी दुर्गंध चारे तरफ प्रसरती हती तेथी सर्व परिवारे तेने छोमी दीधो हतो अति रुदन करवाथी जेणीना नेत्र शून्य थइ गयेला छे एवी तेनी माता तेनी पासे बेठी हती नरकनी पीमाथी पीमित अने मृत्यु जेनी नजीक छे एवो हस पृथ्वी उपर ना-खेलो जोवामा आव्यो तेने जोताज 'हु अहिं अकस्मात् शी रीते आव्यो?' एम विचार करता केशवे तेज वखते पोतानी समीपे पेला वह्निदेवने उभेला जोयो. तत्काल ते देव बोल्यो—"मित्र, अवधिज्ञानथी तारी पीमा मारा जाणवामा आवता तने आपेलु वरदान सत्य करवाने हु उतावळो आव्यो अने तने अहीं मुकी तारा मनोरथ में पूरा कर्या छे." आ प्रमाणे कही ते देव तत्काल अदृश्य थइ गयो ते पछी हर्ष पामेला केशवे पोताना हस्तना स्पर्शवाळु जल लइ हसना शरीर उपर तेनु सिंचन कर्यु एटले तत्काल हस रोगथी मुक्त थइ बेठो थयो अने तेनु स्वरूप पूर्वना जेवु थइ गयु हसने आवो नीरोगी अने सुदर जोइ सर्व परिवार आनदित थइ गयो सर्वे सानदाश्चर्य थइ केशवना गुणोनी प्रशसा करवा लाग्या. ते वखते बीजा रोगी अने विपनी पीमाथी पीडाता एवा घणा लोको आवी केशवना अगने स्पर्शेला जलवमे पोताना शरीरनु सिंचन करी नीरोगी थवा लाग्या धर्मनो आवो प्रत्यक्ष प्रभाव जोइ तेना सबधीओए अने बीजाओए रात्रिभोजनना त्यागनु व्रत ग्रहण कर्यु हतु पछी केशवराजा पोताना कुटुबने पोतानी राजधानी साकेतनगरमा लइ गयो. त्या केशव चिरकाल राज्य भोगवी घणा लोकोने धर्म मार्गमा लावी अने पोते श्रावक धर्मने पाळी छेवटे सद्गतिनो भाजन थयो हतो. ए प्रकारे रात्रिभोजनना त्याग विपे केशवनो दृष्टात कहेवाय छे.

आ प्रमाणे अन्वय अने व्यतिरेकवाळा आ हस केशवनो दृष्टात साम्भळी विवेकी पुरुषोए रात्रिभोजनना त्यागमा उद्यमवत थवु एवी रीते श्रावकनी पमि

मानु स्वरूप कहेवामा आव्यु छे.

श्रावकने निवास करवा योग्य स्थानकनुं स्वरूप

" न चैत्य साधर्मिक साधुयोगो, यत्रास्ति तद्ग्रामपुरादिकेषु ।
युतेष्वपि प्राज्यगुणैः परैश्च, कदापि न श्राद्धजना वसंति" ॥१॥

" ज्या चैत्यो, साधर्मिकजनो अने साधुओनो योग होतो नथी, तेवा गाम तथा नगर वगेरे कदि बीजा घणा गुणोथी युक्त होय तोपण तेमा श्रावक लोको वसता नथी " १

अहि बीजा गुणो एटले सार राज्य, जल, इंधण, धन उपार्जन करवाना व्यापारादि साधनो, कुटुंबीओ, घर, हाट अने सारा स्थानो वगेरे समजवा. जे नगरमा जिनालयो होय, साधर्मिक बंधुओ अने उत्तम धर्मनो उपदेश आपनारा साधुओ होय, तेवा गाम के नगरमा श्रावको वसेछे. ते विषे बीजे स्थले पण कह्यु छे के,—

" बहुगुण आईणेविहु, नगरे गामे च तत्थ न वसेइ ।
तत्थ नवि जइ चेइय साहम्मि य साहु सामग्गी" ॥१॥

तेनो नावार्थ उपर प्रमाणे छे.

ते नगरादिकमा वसनारा श्रावकोए केवा पमोशमां न रहेवुं ? ते कहेछे

" पाखंडि पारदारिक—नटनिर्दयशत्रुधूर्त्तपिशुनानाम् ।
चौरादीना च गृहा—न्यर्णे न वसति सुश्राद्धाः" ॥२॥

" पाखमी, व्यनिचारी, नट, निर्दय, शत्रु, धूतारा, चामीया अने चोर वगेरेना घरना पडोशमा उत्तम श्रावकोए रहेवुं नहीं. " २

अहीं आदि शब्दथी कुंभा वगरना, अनिमानी, दासी, गोला, जुगारी अने विदूषक वगेरे जाणवा आवा पमोशमा रहेवाथी अनुक्रमे सम्यक्त्वनो नाश थाय, परस्त्रीगमननी इच्छा थाय, तेमनी कलानी अनिलाषा थाय, क्रूर परिणाम

उत्पन्न थाय, प्राणनो नाश थइ जाय, द्रव्यनी हानि थाय, राजदंडादिकना कष्ट उपजे, कलहनी वृद्धि थाय, इत्यादि घणा दोषो थवानो संभव छे, माटे ते वर्जवा योग्य छे.

केवो श्रावक उत्तम गणाय ?

" मातापित्रोर्भक्तः कुलशीलसमैश्च विहितविवाह. ।
दीनातिथिसाधूना प्रतिपत्तिकरो यथायोग्यम् " ॥ १ ॥

" जे माता पितानो भक्त होय, कुल शीलमा सरखाओनी साथे विवाह करनार होय अने योग्यता प्रमाणे दीन, अतिथि अने साधुओनी बरदास करनार होय. (आवो श्रावक उत्तम गणाय छे) ".

आ उपरथी श्रावके समजवानु के, तेणे समान कुलशीलवाळानी साथे विवाह संबंध जोडवो. विरुद्ध कुलशीलवाळानी साथे विवाह संबंध जोडवाथी निरंतर उद्वेग रहेवाने लीधे धर्मनी हानि थाय छे वळी तेणे दीन पुरुषोने दान आपवु अने उत्तम मुनिराजनी भक्ति करवी.

वळी कह्यु छे के,

" परिहरति जनविरुद्ध दीर्घं रोषं च मर्मवचन च ।
ईष्ट शत्रूणामपि परितप्तिविवर्जको भवति" ॥१॥

उत्तम श्रावक लोकविरुद्ध, दीर्घकालनो रोष अने मर्मवचननो त्याग करे छे अने शत्रुओने पण इष्ट होय छे तेमज परिताप करतो नथी. " ?

वळी कह्यु छे के,

" सव्वस्स चेव निंदा विसेसओ तहय गुणसमिद्धाण ॥
उज्जुधम्माण हसण रीढा जणपूयणिज्जाणं ॥ १ ॥
बहुजणविरुद्धसंगो देसाचारस्स लंघणा चेव ।
पमाइयाइ इच्छठं लोगविरुद्धाइ नेआइति " ॥ २ ॥

अर्थ—सर्व प्राणीओनी निंदा—विशेषे करीने गुणोवडे समृद्ध थयेला

जनोनी निंदा, सरल स्वभावी प्राणीओनी मश्करी, पूज्य जनोनी हेलना, बहु जनना विरोधी मनुष्यनो संसर्ग, देशाचारनु उल्लंघन करवु, विगेरे आ सर्व लोकविरुद्ध जाणवा.

वळी श्रावके पासथ्यादिकना अब्रह्म सेवा वगेरे दुराचार जोइने धर्मनी विमुखता करवी नहि. कह्यु छे के—

" पासथ्थाईए फुड अहम्मकम्मं निरिक्खए तहवि ।
सिढिलो होइ न धम्मे एसो च्चिय वंचिओत्ति मइ" ।१।

आ गाथानो अर्थ उपर प्रमाणे छे, मात्र चोथा पदनो अर्थ एवो छे के, ते विचारो राक कर्मे करीने ठगाणो छे एटले के जेणे कल्पवृक्षना माहात्म्यने नीचु करेलु छे तथा जे समस्त सुख आपवाने समर्थ छे तेवु आ अपार संसारसमुद्रमा तारवाने यानपात्र समान अति निर्मल चारित्र पामीने उपर कह्या प्रमाणे प्रवर्त्ते छे—माटे ते कर्मवडे ठगायो छे.

वळी कोइ मुनिने स्खलित जोइने तेनी उपर निःस्नेहपणु राखे नहीं. परंतु ते एकांतपणे ते मुनिने मातापितानी जेम शिक्षा आपे छे तेने माटे कह्यु छे के,—

" साहूस्स कहवि खलिअ दट्ठूण न होइ तस्य निन्नेहो ।
पुण एगते अम्मा पिउव्वसे चोअणं देइ" ॥ १ ॥

" आ गाथानो अर्थ उपर आवी गयो छे. आथी करीने श्रावक साधुना मातापिता समान छे एम सूचव्यु छे.

ठाणांग सूत्रमा चार प्रकारना श्रमणोपासक श्रावको कहेला छे—१ मातापिता समान, २ भाइ समान, ३ मित्र समान अने ४ सपत्नी—शोक्य समान ते चार प्रकारना श्रावकोने माटे आ प्रमाणे गाथा छे.

" चितइ मुणिकज्जाइं न दिट्ठ खलिओ वि होइ निन्नेहो ।
एगत वच्छलो मुणि—जणस्स जणणीसमो सड्ढो" ॥१॥

" मुनिनु कार्य चिंतवे, मुनिने स्खलित जोइ स्नेह रहित न थाय

अने मुनि उपर एकाते वात्सल्य राखे, तेथी श्रावक मुनिने मातापिता समान थाय छे " १

हवे श्रावक भाइ समान केवी रीते थाय छे ? ते कहे छे—

" हियए ससिणेहोच्चिय मुणीण मदादरो विणयकज्जे।
भाउसमो साहूणं पराभवे होइ सुसहाओ" ॥ १ ॥

" मुनिने माटे हृदयने विषे स्नेहवाळो, विनय कार्यमा मद आदरवाळो अने पराभवमां सहायभूत थनारो श्रावक मुनिने भाइ समान छे. १

श्रावक मित्र समान केवी रीते ते कहे छे.

" मित्तसमाणो माणाइहि रूसइ अपुच्छिउ कज्जे ।
मन्नंतो अप्पाण मुणीण सयणाउ अब्भहिअ " ॥१॥

" मुनिने पोताना कुटुबथी अधिक मानतो अने मानादिकने विषे रोष करनारो अने पुछ्या वगर कार्य करनारो, ते श्रावक मुनिने मित्र समान छे. १

श्रावक मुनिने शोक्य समान केवी रीते थाय छे ? ते कहे छे—

" थद्धो छिद्दप्पेही पमाय खलिआण निच्चमुच्चरइ ।
सड्ढो सवक्किकप्पो साहुजण तणसम गणइ" ॥ १ ॥

" स्तब्ध, मुनिना छिद्र जोनारो, ' आ मुनि प्रमादी अने स्खलित छे ' एम नित्य बोलनारो, अने साधुजनने तृण समान गणनारो श्रावक मुनिने शोक्य समान छे. १

श्रावकनु सक्षिप्त आन्हिक

"प्रबुध्य दोषाष्टमभागमात्रे स्मृत्वोज्ज्वला पचनमस्कृति च ।
अव्यापृतोऽन्यत्र विशुद्धचेता धर्मार्थिका जागरिका स कुर्यात्।१।

" रात्रिने आठमे भागे एटले चार घडी रात्रि बाकी रहे त्यारे श्रावके जागीने उज्ज्वल एवा पच नमस्कारनु स्मरण करवु पछी बीजा काममा जोडाया

वगर-एटले गृहकार्यमा लाग्या शिवाय शुध्ध हृदयवाला थइ धर्मजागरिका करवी. " १

ते धर्मजागरिका शी रीते करवी ? ते कहे छे—

" कोऽहं का मेऽवस्था, किं च कुल के पुनर्गुणा निगमा ।
किं न स्पृष्टं क्षेत्रं, श्रुत न किं धर्मशास्त्रं च " ॥ १ ॥

" हुं कोण छुं ? मारी शी अवस्था छे ? मारु कुल शु छे ? मारामा केवा गुणो छे ? मे केवा नियमो कर्या छे ? मे क्या क्षेत्रने स्पर्श्यु नथी ? अने मे शु धर्मशास्त्र साभळ्युं नथी ? " १

ते विषे विशेष कहे छे. रात्रे निद्राथी मुद्रित एवा लोचनवाला श्रावके प्रथम उठी चित्तनी पटुता प्राप्त कर्या शिवाय तेणे चिंतववु के, हु कोण छु ? हु मनुष्य छु के देवता छु ? हु मनुष्य छु तो मारी शी अवस्था छे ? हु बाल्यावस्थामा छु के यौवन अवस्थामा छु ? जो यौवन अवस्थामा होउ तो मारामा बाल्यचेष्टाओ अने वृद्धचेष्टाओ न थाओ. हु युवावस्थावालो छु, तो पछी मारु कुल शु छे ? श्रावक कुल छे के बीजुं कुल छे ? जो मारु श्रावक कुल छे, तो मारामा केवा गुणो छे ? मूल गुणो छे के उत्तर गुणो छे ? वली मे केवा नियमो-अभिग्रहो धारण करेला छे ? वळी वळी १ जिनभुवन, २ बिंब, ३ प्रतिष्ठा, ४ पुस्तक, ५-६-७-८ चतुर्विध संघ, अने ९ शत्रुंजयादि तीर्थयात्रा-आ नव लक्षणवाला नव क्षेत्रोने विषे मे क्या क्षेत्रो स्पर्श्या नथी ? धर्मशास्त्रमा दशवैकालिक वगेरेमा मे शु शु नथी साभळ्या ? माटे हु क्षेत्र स्पर्शवाने माटे तथा धर्मशास्त्र साभळवाने माटे उद्यम करु. वळी ते श्रावक के जेने आ संसारने विषे वैराग्य उत्पन्न थयो छे, ते दीक्षा लेवाना यत्नने मुकतो नथी. जेने ते समये बीजो व्यापार नथी एटले ते दीक्षाना अभिलाषथी आ प्रमाणे चिंतवे छे—" ते वज्रस्वामी प्रमुखने धन्य छे के जेमणे बाल्यावस्थाने विषे समग्र दुःखो जेथी निवारण थाय तेवा संसारना कारणोनो त्याग करी शुध्ध हृदयथी संयमनो मार्ग सेव्यो छे अने हु तो अद्यापि गृहस्थावासरूपी पाशमा पडेलो ते मार्ग सेववाने शक्तिमान् थयो नथी, तेथी मारे तेवो शुभ दिवस क्यारे आवशे के ज्यारे हु मारा आत्माने धन्य मानतो संयम मार्गने अंगीकार करीश."
(इत्यादि श्लोकमा कह्यु नथी तोपण जाणी लेवु.)

अने मुनि उपर एका ... करी पछी श्रावक शु करेछे ते कहेछे-
थाय छे. " १

... रावश्यक शुद्धमनोंगवस्त्र ।
हवे श्रा ...
" ... समाचरेन्नित्यमनुक्रमेण " ॥१॥

... पूर्वोक्त प्रकारे एटले रात्रि मुहूर्तमात्र बाकी रहे ... लोकोत्तर भावपूर्वक आवश्यक करवा. जो ते अने ... करवाने अशक्त होय तो ते निश्चे करी यथाशक्ति ... तेने माटे कहु छे के, " श्रावके जघन्यथकी नमस्कार ... ते पछी सूर्यनु अर्धबिंब जोवामा आवे त्यारे ... अगे धारण करी जिनेन्द्रनी पूजा आचरेछे. ते पूजाने ... करीने विधिपूर्वक घर देरासरनी पूजा करी पछी पजाना उप ... करी महोत्सवपूर्वक ... स्नानालयमा जइ मुखकोश बांधी दश त्रिक, ... इत्यादि शास्त्रो ... जिनपूजन ... [पूजाना भेदोनु ... श्री ज्ञाताधर्म ... अनु ... प्रकाशमा आ- ... स्थली जाणी ...

प्रथम जे क ... ते ... सर्व सा ... अध्यवसायनु वर्ज ... कचरा रहि ... तथा पोशाश विना ... बहु व्यापा ... सर्वांग स्नान करवु, ... वस्त्र ... करवा ते वस्त्रशुद्धि. देहशुद्धि कर्या शिव ... तेम करवाथी आ ... देवताओ पण ... जेने नव अने अगि ... एवा मनुष्योथी ... पूजा करनारने ... करी छे.

कोई प्रश्न करे छे के, "यतनामां तत्पर एवा श्रावकोने पण आरंभपणु होवाथी स्नान करवु अनुचित छे." तेना उत्तरमां कहे छे के 'एम कहेवु नहीं, कारण तो पछी जल, धूप, पुष्प वगेरे आरंभना हेतु होवाथी, तेमनो पण निषेध आवी पडशे, माटे पंडितोने तेनो निषेध करवो इष्ट नथी. कह्यु छे के,—

"छज्जीव कायसंयमो, दव्वथ्थए सोवि सुज्झइ कसिणो ।
तो कसिण संयमविऊ पुप्फाइय न इच्छंति" ॥ १ ॥

"छ जीवनिकायनी यतनावंत होय ते द्रव्यस्तवथी विराम पामे, तेथी संपूर्ण यतनावंत होय ते पुष्पादिकने इच्छता नथी."

अथवा—

'अकसिणपवत्तयाणं, विरयाविरयाण एस खलु जुत्तो ।
संसार पयणुकरणे, दव्वथ्थए कूवदिट्ठंतो" ॥ १ ॥

"असंपूर्ण चारित्रने विषे प्रवर्त्तनारा एवा विरताविरती श्रावकोने संसार पातळो—अल्प करवा माटे कुवाना दृष्टांते करी द्रव्यस्तवमां प्रवर्त्तन युक्त छे.'"

इत्यादि आगम प्रमाण छे, माटे हवे ते विषे विशेष विस्तार करवानी जरूर नथी.

देशना कर्या पछी श्रावक विनयपूर्वक गुरुवंदन आचरे. ते कहे छे—

"शंखी यथा क्षारजले पयोनिधौ वसन्नपि स्वादुजलं पिबेत्सदा ।
तथैव जैनामृतवाणिमादरा—च्छृणोद्गृही समुनि मध्यगोऽपि सन् ॥१॥

"जेम शंखी जातनो मत्स्य खारा जळवाळा समुद्रमां वसता छतां पण सदा मीठुं जळ पीये छे, तेम संसारना मध्यमां रह्यो पण गृहस्थ श्रावक जैन आगमनी अमृत जेवी वाणीने आदरथी सेवे."

ते पछी श्रावके साथे रहेला ग्लानादिक साधुने प्रभाते साता योग्य एवा औषधादि सारी रीते अन्नपान देवुं. आ वात दर्शावी नथी तोपण जाणी लेवी ते पछी श्रावके शुं शुं करवु जोइए ते कहे छे—

आ प्रकारे रात्रिने शेप जागे चिंतवन करी पछी श्रावक शु करेछे ते कहेछे–

" विभाव्य चेत्य समये दयालुरावश्यक शुद्धमनोंगवस्त्र. ।
जिनेंद्रपूजा गुरुवंदन च, समाचरेन्नित्यमनुक्रमेण " ॥१॥

" दयालु एवा श्रावके ए पूर्वोक्त प्रकारे एटले रात्रि मुहूर्त्तमात्र बाकी रहे त्यारे सामायिकादि प्रत्याख्यान पर्यंत लोकोत्तर भावपूर्वक आवश्यक करवा. जो ते व्याकुलपणाने लइने पडावश्यक करवाने अशक्त होय तो ते निश्चे करी यथाशक्ति प्रत्याख्यान आवश्यक चिंतवे, तेने माटे कह्यु छे के, " श्रावके जघन्यथकी नमस्कार सहित प्रत्याख्यान तो करवुज. " ते पछी सूर्यनु अर्धबिंब जोवामा आवे त्यारे शुद्ध अने मनोहर वस्त्र अंगे धारण करी जिनेंद्रनी पूजा आचरेछे. ते पूजाने माटे प्रथम यतनाए करीने विधिपूर्वक घर देरासरनी पूजा करी पछी पूजाना उपकरण ग्रहण करी महोत्सवपूर्वक श्री जिनालयमा जइ मुखकोश बाधी दश त्रिक, पाच अभिगम इत्यादि शास्त्रोक्त विधिपूर्वक जिनपूजन करे छे [पूजाना भेदोनु व्याख्यान श्री ज्ञाताधर्मकथा आदि सिद्धातने अनुसारे प्रथम प्रकाशमा आपेलु छे त्याथी जाणी लेवु.]

प्रथम जे कह्यु के, " शुद्धमनोंग वस्त्र " ते आ प्रकारे–प्रथम सर्व सावद्य अध्यवसायनु वर्जवु, ते मननी शुद्धि. ते पछी निर्जीव एटले कचरा रहित तथा पोलाश विनानी भूमिने विषे अल्पजल अने हस्तना बहु व्यापारवमे सर्वांग स्नान करवु, ते अंगशुद्धि ते पछी पवित्र, श्वेत, अखंडित वस्त्र धारण करवा ते वस्त्रशुद्धि. आ प्रमाणे मन, अंग अने वस्त्रनी शुद्धि करवी. स्नानवमे देहशुद्धि कर्या शिवाय देवपूजा कराय, एम कदि पण मानवु नहीं कारण के, तेम करवाथी आशातना थवानो प्रसग आवे छे जन्म पर्यंत निर्मल शरीरधारी देवताओ पण विशेष शुद्धिने माटे स्नान करीनेज देवपूजा अर्थे प्रवर्त्तेछे तो जेने नव अने अगीयार प्रवाह निरंतर स्रवता छे अने जे दुर्गंधी मलवाला छे एवा मनुष्योथी स्नान कर्या विना जिनपूजा केम कराय ? ए कारणने लइने देव पूजा करनारने सिद्धांतमा ठेकाणे ठेकाणे " एहाया कय बलिकम्मा " " न्हाइने जेणे पूजा करी छे. " एम विशेषण आपेलु छे.

अहि प्रश्न करे छे के, " यतनामा तत्पर एवा श्रावकोने बहु आरम्भपणु होवाथी स्नान करवु अनुचित छे. " तेना उत्तरमा कहे छे के. " एम कहेवु नहीं, कारण तो पछी जल, धूप, पुष्प वगेरे आरम्भना हेतु होवाथी, तेमनो पण निषेध आवी पडशे, माटे पण्डितोने तेनो निषेध करवो इष्ट नथी. कह्यु छे के,—

" छज्जीव कायसंयमा, दव्वथ्थ एसोवि सुझइ कसिणो ।
तो कसिण सयमविऊ, पुप्फाइय न इच्छति " ॥ १ ॥

" छ जीवनिकायनी यतनावत होय ते द्रव्यस्तवथी विराम पामे, तेथी संपूर्ण यतनावत होय ते पुष्पादिकने इच्छता नथी. "

अथवा—

' अकसिणपवत्तयाण, विरयाविरयाण एस खलुजुत्तो ।
संसार पयणुकरणे, दव्वथ्थए कूवदिट्ठतो " ॥ १ ॥

" असपूर्ण चारित्रने विषे प्रवर्त्तनारा एवा विरताविरती श्रावकोने संसार पातळो-लघु करवा माटे कुवाना दृष्टाते करी द्रव्यस्तवमा प्रवर्त्तन युक्तज छे. " १

इत्यादि आगम प्रमाणे छे, माटे हवे ते विषे विशेष विस्तार करवानी जरुर नथी.

देवपूजा कर्या पछी श्रावक विनयपूर्वक गुरुवदन आचरे, ते कहे छे—

"शृंगी यथा क्षारजले पयोनिधौ वसन्नपि स्वाद्रुजल पिवेत्सदा ।
तथैव जैनामृतवाणिमादरा—द्भजद्गृही ससृति मध्यगोऽपि सन्।१।

" जेम शृंगी जातनो मत्स्य खारा जळवाळा समुद्रमा वसता छता पण सदा मीठु जळ पीवेछे, तेम ससारना मध्यमा रहेलो पण गृहस्थ श्रावक जैन आगमनी अमृत जेवी वाणीने आदरथी सेवेछ. " १

ते पछी श्रावके बाल तथा ग्लानादिक साधुओने प्रभाते खावा योग्य एवा औषधादि लावी देवा यत्नवान् थवु आ वात दर्शावी नथी तोपण जाणी लेवी. ते पछी श्रावके शु शु करवुं जोइए ? ते कहे छे—

"द्रव्यार्जनं सद्व्यवहार शुद्ध्या, करोति सद्भोजनमादरेण।
पूजादिकृत्यानि विधाय पूर्वं, निजोचित मुक्तविशेषलौल्य."॥१॥

ते पछी श्रावक व्यवहारशुद्धिवडे द्रव्योपार्जन करे छे. त्यार बाद पहेला मध्यान्हकाल संबंधी देवपूजा करीने, मुनि महाराजाओने दान आपीने अने वृध्द, आतुर, अतिथि अने पशु वगेरेनी चिंता करीने विशेष लोलुपतानो त्याग करी श्रावक पोताने योग्य एवुं भोजन आदरथी करे छे. योग्य एवुं भोजन एम कहेवानो आशय एवो छे के, सूतकवाळुं भोजन लोकविरुद्ध होवाथी, अनंतकायादिवडे व्याप्त एवुं भोजन आगमविरुध्द होवाथी अने मद्यमांसादिकनुं भोजन उभयलोक-शास्त्र विरुद्ध होवाथी श्रावक करतो नथी, तेम लोलुपपणाथी पोताना जठराग्निना बलनो विचार कर्या वगर श्रावक अधिक भोजन करे नहीं. कारण के, अधिक भोजन करवाथी वमन, विरेचन आदि रोगनी उत्पत्ति अने तेमाथी मरण प्रमुख बहु अनर्थ उत्पन्न थाय छे, तेथी जे मितभोजन करे छे ते पछी धर्मशास्त्रनो परमार्थ चिंतवी योग्य व्यापारमा दिवसना त्रीजा पोहोरनुं निर्गमन करे छे. सूर्य अस्त थता पहेला सन्ध्याकाले जिनपूजा करे छे. जो द्विभुक्त[बेशणा]नुं प्रत्याख्यान कर्युं होय तो चार घडी दिवस बाकी रहे त्यारे व्यालु करेछे, ए श्लोकमां कहेल नथी तोपण जाणी लेवुं

त्रिकाल जिनपूजानो विधि

" प्रातः प्रपूजयेद्वासैर् मध्यान्हे कुसुमैर्जिनम् ।
सन्ध्यायां धूपनैर्दीपैस्त्रिधा देवं प्रपूजयेत् " ॥ १ ॥

"प्रातःकाले जिनेश्वरने वासक्षेपथी पूजवा, मध्यान्हे पुष्पोथी पूजवा अने सन्ध्याकाले धूपदीपथी पूजवा—एम जिनदेवने त्रिकाल पूजवा." १

इति श्रावक दिन कृत्य

श्रावक रात्रि कृत्य संक्षेप.

" कृत्वा षडावश्यकधर्मकृत्यं, करोति निद्रामुचितक्षणे च ।
हृदि स्मरन् पंच नमस्कृति स, प्रायः किलाब्रह्म विवर्जयश्च"॥१॥

" ते पछी श्रावक षडावश्यकरूप धर्मकृत्य [प्रतिक्रमण] करीने योग्य अवसरे निद्रा करे छे [ते वखते ते शु करे छे ? ते कहे छे.] ते समये हृदयने विषे पंचपरमेष्ठी नमस्कारनु स्मरण करेछे अने प्राये करीने अब्रह्मनो परिहार करेछे अने तेम करता निद्रा करेछे. अहि प्राये करीने कह्यु छे, तेनो हेतु एवो छे के, ऋतुकाले संतानने अर्थे तथा वेदोदय शमाववाने अर्थे तेमज पोतानी विवाहित स्त्रीने अब्रह्म सेवानो अनियम होइने अब्रह्म सेवा बनी आवे छे. तेम वळी श्रावक मैथुन भावमा अत्यंत लोलुप न थाय, ते पण सूचव्यु छे. ए रीते श्रावकना अहोरात्रना कृत्यो संक्षेपमा कहेवामा आव्या छे.

हवे उपर कहेल देवपूजाना विषयमा विशेष कहेवामा आवे छे. कारण के वारवार जिनपूजानु विधान मोटा पुण्यना लाभनु कारण छे. तेने माटे कह्यु छे के,

" व्वीसेसइढ्ढिजणणी, डुग्गइदालिद्दडुक्खनिद्दलणी ।
दंसणसुध्धि निमित्तं, पुणो पुणो कीरए पूआ " ॥ १ ॥

" समस्त विशेष ऋध्धिने उत्पन्न करनारी अने दुर्गति, दारिद्र तथा दुःखने दळनारी एवी जिनेश्वरनी पूजा दर्शनशुध्धिने माटे वारवार कराय छे." १

हवे स्थानांग नामना त्रीजा अंगना चोथा ठाणामा कहेली श्रावक संबंधी चार विश्राम भूमिओ देखाडे छे. जेमके व्यवहारमा,

जत्थणं अंसाओ अंसं साहरइ १, जत्थ वियणं उच्चार पासवणं वा परिठवेइ २, सुवण्णकुमारावाससि वा जत्थ वियणं नागकुमारावाससंसि वासं उवेइ ३, जत्थ वियणं आवकहाए चिट्ठइ ४

अर्थ—[१] जे अवसरे एक स्कंध उपरथी बीजा स्कंध उपर स्थापन करे,

] जे स्थाने मलमूत्र परठवे, [३] जे स्थाने नागकुमार अथवा सुवर्णकुमार सुरोना वासमा आसो ले–रात्रि रहे [४] जे स्थाने यावज्जीव रहे.

[१]ए प्रकारे श्रावकने चार विश्राम (विशामा) कहेला छे कह्यु छे के,–

" जत्थणं सिलव्वयगुणव्वय वेरमण पच्चक्काण पोसहोववासाइ पडिवज्जइ " ॥ १ ॥

" जत्थ विअण सामाइय देसावगासिय वा पडिवज्जइ"॥२॥

" जत्थ वियण चाउद्दसिट्ठद्दिट्ठपुण्णिमासीसु पडिपुन्नं पोसह सम्मं अणुपालेइ " ॥ ३ ॥

" जत्थ वियण अपच्छिम मारणंतियसंलेहणा झूसणा झूसिए भत्तपडिआइक्खिए पाओवगए काल अणवकंख माणे विहरइ " ॥ ४ ॥

अर्थ—[१] ज्या अणुव्रत, गुणव्रत, विरमणव्रत, प्रत्याख्यान अने पोषधोपवासादि अंगीकार करे, [२] जे स्थाने सामायिक करे अथवा देशावकाशिकने करे, [३] जे स्थाने चतुर्दशी अष्टमी अमावास्या पूर्णिमाने दिवसे परिपूर्ण अहोरात्र पोषधव्रतने सम्यक् पाले, [४] जे स्थानमां मृत्यु समयनी संलेखना करवडे कषायने पातळा करवापणुं अंगीकार करे, अणसण करे अने पादोपगमन करीने जीवित अने मरणने अणइच्छतो विचरे

श्रावकना सद्भूत गुणोनु वर्णन

जिनप्रणीतार्थविदो यथार्थ–सद्वाग्युतोऽपास्तमतांतरस्था. ।
स्वकीय धर्मोज्ज्वल मार्गमग्ना श्रद्धालवः शुद्धधियो जयतु"॥१॥

" जिनप्रणीत एवा अर्थने जाणनारा, यथार्थ सत्य वाणी बोलनारा, मतांतरने दूर करनारा, पोताना धर्मना उज्ज्वल मार्गमां मग्न रहेनारा, श्रद्धालु अने शुद्ध बुद्धिवाला श्रावको जय पामो. " १

विशेषार्थ—जे श्रावको श्री जिनेश्वरे प्ररूपेला यथास्थित जीवाजीवादि

१ जेम कोइ भारवाहा मनुष्य आ प्रकारे चार विसामा लिए तेम श्रावकने माटे नीचेना चार विसामा छे अत्र दृष्टांत दार्ष्टांतिक छे

पदार्थोना जाणनारा होय. मद्रुक श्रावकनी जेम यथार्थ वचननी युक्तिवडे निरुत्तर करवाथी मतांतरीओ-कुलिंगिओने जेमणे पराभव करेला होय, जेओ पोताना धर्मना उज्ज्वल मार्गने विषे लीन थयेला एटले एकाग्र चित्तवाळा होय, जेओ शुद्ध बुद्धिना धारक अने श्रद्धालु होय, तेवा श्रावको जय पामो. १

मद्रुक श्रावकनो वृत्तांत

[पंचमांग विवाहप्रज्ञप्तिमांथी संक्षिप्त.]

राजगृहीनगरीनी समीपे गुणशील नामे एक चैत्य छे. ते चैत्यना समीपना भागमा कालोदायी शैवालोदायी प्रमुख घणा अन्य तीर्थीओ वसता हता. एक वखते तेओ बधा एकत्र थया अने तेमनी वच्चे माहोमांही वादविवाद थइ आव्यो. जे श्री महावीरस्वामी धर्मास्तिकायादि पांच अस्तिकायोने प्ररूपे छे, तेमा धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय अने पुद्गलास्तिकायने अचेतन अने जीवास्तिकायने सचेतन प्ररूपे छे. तेम वळी धर्म, अधर्म, आकाश, जीव-अस्तिकायोने अरूपी अने पुद्गलास्तिकायने रूपी प्ररूपे छे. ए प्रकारे सचेतन-अचेतनादिरूपे करीने अदृश्यपणु होवाथी ते शीरीते मनाय ?" आ प्रमाणे तेमनी माहेमांही आलाप संलाप थयो हतो.

हवे ते राजगृहनगरमा मद्रुक नामे एक श्रावक रहेतो हतो. ते महान् समृद्धिवाळो, सर्वलोकमान्य, जीवाजीवादि पदार्थोना स्वरूपने जाणनार, अने निरंतर धर्मकृत्यवडे आत्माने भावनार हतो. ते सुखे करी काल निर्गमन करतो हतो.

एक वखते श्री वीर भगवान् गुणशील चैत्ये आवी समोसर्या. प्रभुना आगमननी वार्त्ता सांभळी ते मद्रुक श्रावक अत्यंत आनंदथी प्रभुने वंदना करवा नीकळ्यो. जेवामा ते नगरनी बाहेर नीकळी पेला अन्य तीर्थिओनी अति नजीक नहीं तेम अति दूर नहीं एम आव्यो, तेवामा ते तीर्थिओनी दृष्टिए आव्यो. तत्काल तेओ एकठा थइ तेनी पासे आव्या अने आ प्रमाणे बोल्या-" हे मद्रुक, तारो धर्माचार्य जे पंचास्तिकायादिकनी प्ररूपणा करे छे, ते शी रीते मनाय ? तेमने शी रीते जणाय ? " मद्रुके कह्यु, " जे धर्मास्तिकायादिके करी पोतानु कार्य कराय छे, ते कार्य उपरथी ते धर्मास्तिकायादिकने अमे जाणीए छीए. जेम

धुमाडाथी अग्नि जणाय छे, तेम तेमना कार्य उपरथी ते जणायछे. वळी जो तेओथी कार्य करातु न होय तो अमाराथी न जाणी शकाय. एटले कार्यादिक लिंगद्वारे करीनेज छद्मस्थ जीवोने अतींद्रिय पदार्थोनु ज्ञान थाय छे, तेम वळी धर्मास्तिकायादिकनु कार्यादिलिंग अमोने प्रतीतवाळु देखातु नथी ते प्रसगे तेना अभावथी अमे नथी जाणता."

आ वखते धर्मास्तिकायादिक सबधी अपरिज्ञानने अगीकार करता मडुकने उपालभ्भ आपता ते अन्य तीर्थीओ बोल्या—"हे मडुक, जो तु आ अर्थने जाणतो नथी तो तु श्रावक केम?"

आवा उपालभथी ते मडुक श्रावक जेमणे अदृश्यमानपणे धर्मास्तिकायादिकनो असभव कहेलो छे, तेमनो ते विषय खडन करवा आ प्रमाणे बोल्यो— "हे आयुष्मत, वायुकाय वाय छे? त्यारे तेमणे कह्यु, 'हा, वाय छे.' मडुके पूछ्यु, "तमे ते वायुकायने वातरुप देखो छो?" तेमणे उत्तर आप्यो, "ए पदार्थ समर्थ नथी, एटले रूप देखता नथी."

मडुक—गधवाला पुद्गलो छे?
अन्यतीर्थिओ—हा, छे
मडुक—त्यारे तमे घ्राणसहगत पुद्गलोना रूपने देखो छो?
अन्यतीर्थिओ—नथी देखता.
मडुक—काष्ट सहचारी अग्निकाय छे?
अन्यतीर्थिओ—हा, छे.
मडुक—त्यारे तमे अग्निकायना रूपने देखो छो?
अन्यतीर्थिओ—नथी देखता
मडुक—समुद्रनु रूप पारगत छे?
अन्यतीर्थिओ—हा, छे
मडुक—तमे ते देखी शको छो?
अन्यतीर्थिओ—नथी देखता
मडुक—देवलोक सबधी रूप छे?
अन्यतीर्थिओ—हा, छे

मडुक—त्यारे ते स्वपने तमे देखो छो.

अन्यतीर्थिओ—नथी देखता.

मडुक—हे आयुष्मतो, हु तमे अने बीजा छद्मस्थ जीवो ज्यारे ते देखता नथी तो शु ते सर्व नथी? तमारा मत प्रमाणे तो त्रण लोको पण न होय. आवा प्रश्नोथी ते अन्यतीर्थिओने निरुत्तर करी दीधा ते पछी मडुक श्रावक गुणशील चैत्यने विषे रहेला श्री वीरस्वामी पासे जइ वदनापूर्वक योग्य स्थाने बेठो त्यारे भगवाने मडुकने कह्यु, " भद्र, तु शोभनिक छे. कारण के तें अस्तिकायोने न जाणता छता अन्यतीर्थिओनी आगळ हु नथी जाणतो एम कह्यु. जो तु अजाणतो छतो ' हु जाणु छु, ' एम कह्यु होत तो तु अरिहतादिकनी आशातना करनारो थात. " प्रभुना आवा वचन साभळी मडुक खुशी थइ गयो. पछी प्रभुने वदना करी धर्मदेशना साभळी पोताने स्थाने चाल्यो गयो. आयुष्यना क्षयथी अरुणाभ नामना विमानमा प्रथम देवलोके उत्पन्न थयो. ते पछी त्याथी च्यवी महाविदेह क्षेत्रमा सिद्धिपदने प्राप्त थशे.

एवी रीते मंडुक श्रावकनु दृष्टांत कहेवाय छे.

उपर प्रमाणे श्रावकपणु पामी ते पाळवाने माटे सर्वथा प्रमादनो परित्याग करवो जोइए. ते कहे छे—

" निशम्य विप्रोपनय सुधीभि. प्रमादसंगोऽपि न कार्य एव ।
इहोत्तरत्रापि समृद्धिहेतौ, महोज्ज्वलेऽस्मिन्निजधर्मकार्ये" ॥१॥

" सारी बुद्धिवाळा भव्यप्राणीओए दरिद्र ब्राह्मणनु उपनय-दृष्टात साभळी आलोक तथा परलोकमा समृद्धिना कारणरूप एवा महान् उज्ज्वल पोताना धर्मकार्यमा प्रमादनो सग पण न करवो जोइए. " १

ते दरिद्र ब्राह्मणनुं दृष्टात

कोइ नगरमा जन्मपर्यंत दरिद्री अने घणोज आळसु एक ब्राह्मण रहेतो हतो एक दिवसे ते पोतानी स्त्रीनी प्रेरणाथी दान लेवा माटे राजानी पासे गयो. तेणे ' चिरकाळ जीवो ' इत्यादि आशीष आपी. आकृति उपरथी तेने दरिद्री जाणी अनुकपाथी पूरित हृदयवडे राजाए कह्यु, " हे विप्र, सूर्यास्त थया अगाउ

तारी इच्छा प्रमाणे मारा जंमारमांथी द्रव्य लइ तारे घर पूर. हु तेरी आज्ञा आपुछु " आ प्रमाणे कही ते आज्ञानी साथे पोताना नामथी अंकित पत्र लखावीने ते विप्रने आप्यो. तेथी खुशी थइ ब्राह्मणे ते पत्र लइ पोताने घेर आवी ते वृत्तांत पोतानी स्त्रीने जणाव्यु. एटले स्त्रीए कह्यु, " स्वामी, सत्वर त्यां जाओ अने पूरतु द्रव्य लइ आवो. " कारण के, नीतिशास्त्रमां कह्यु छे के, " श्रेय कार्योमा विघ्न घणा होय छे " ब्राह्मणे कह्यु, " प्रिया, नीतिशास्त्रमा कह्यु छे के, " शतं विहाय भोक्तव्यं " " सो काम पड्या मुकीने जमवु. " माटे हु भोजन कर्या पछी स्थिर चित्तवाळो थइ पछी द्रव्य लेवाने माटे जइश. " पतिना आवा वचन सांभळी स्त्री पडोशीने घेरथी आटो लावी, तेने पकावी पतिने जमाड्यो. अने पछी तेणीए कह्यु, " स्वामी, हवे शीघ्र जइ पोतानु कार्य साधो. ' पतिए कह्यु, " शास्त्रमां कह्यु छे के, " जो जम्या पछी सुवानु न मळे तो सो मगलां चालवु. " माटे क्षणवार शयन कर्या पछी जइश. " आ प्रमाणे कही ते विप्र सुइ गयो. प्राये करीने दरिद्रीने निद्रा घणी होय छे, तेथी ते एवी गाढ निद्रामां सुतो के, तेनी स्त्रीए घणा घांटा पाड्या अने तेना हाथ पग हलाव्या छता ते दिवसने त्रीजे पोहोरे माड माड जाग्रत थयो. ते पछी स्त्रीनी प्रेरणाथी ते दरिद्री ब्राह्मण घेरथी नीकळ्यो, पण मार्गमा जतां चौटामां एक नाटक थतु तेना जोवामा आव्यु, त्यारे तेणे चिंतव्यु के, " हजु दिवस घणो छे, माटे नाटक जोया पछी द्रव्य लेवाने माटे राजद्वारमा जइश. " आ प्रमाणे चितवी तेणे पूर्ण रीते नाटक जोयु. ते जोया पछी ते आगळ चाल्यो. मार्गमा ठेकाणे ठेकाणे कौतुको जोतो जोतो ते रोकायो. दिवस पसार थइ गयो, ते तेना जाणवामा आव्यु नहीं. ज्यारे सूर्य अस्त थयो, त्यारे ते राजाना भंडार समीपे आवी पहोंच्यो, त्यां भंडारी भंडारे तालु आपी जतो हतो, तेनी पासे आवी ते विप्रे राजाना हुकमनो पत्र आप्यो भंडारीए पत्र वाचीने कह्यु, " अरे विप्र, राजाए करेलो नियम पूर्ण थइ गयो छे, तेथी हवे तने काइ पण द्रव्य मळी शकशे नहीं, माटे पाछो घेर जा. " भंडारीना आवा वचन सांभळी प्रमादना वशथी द्रव्यने नहीं पामतो, हाथ घसतो अने पश्चात्ताप करतो ते पोताने घेर पाछो आव्यो, अने पूर्वनी पेठे दरिद्रपणे रह्यो हतो.

आ लौकिक दृष्टांतनो उपनय आत्मा उपर आ प्रमाणे घटे छे. आ संसाररूपी नगरमा दरिद्री ब्राह्मणरूप दुःखी संसारी जीव रहे छे. तेने सत् कार्यमा प्रेरणा करनारी जे स्त्री ते सुमति समजवी. जे राजा ते तीर्थंकरादि सद्गुरु समजवा. तेओ धर्मरूपी धनना दातार छे. जे नगार कह्यो, ते आ मनुष्य भव समजवो. कारण के, ते विना धर्मरूपी धननी प्राप्ति थती नथी. जे आयुष्य ते सूर्य समजवो. जे सूर्य अस्त पाम्या अगाउ धन ग्रहण करवानी आज्ञा हती, ते आयुष्यनो क्षय थया अगाउ धर्म करवानी गुरुनी आज्ञा समजवानी छे, तेने माटे कह्यु छे के,—

" जरा जाव न पीडेइ, वाहि जाव न वड्ढइ ।
जाव न इंदियहाणी, ताव धम्मं समायरे " ॥ १ ॥

" ज्या सुधी जरा आवी नथी, ज्या सुधी व्याधि वृद्धि पाम्यो नथी अने ज्या सुधी इन्द्रियोनी हानि थइ नथी, त्या सुधी धर्मनु आचरण करवु." १

वळी जेम ते ब्राह्मण 'दिवस हजु घणो छे' एम मानी निद्रा, नाटक अने कौतुको जोवाना प्रमादमा आसक्त थता धननी प्राप्ति करी शक्यो नहीं, अने पछी पश्चात्तापमा पडी गयो. तेम प्रमादी जीव आयुष्य होय त्या सुधी प्रमादमा पडी पछी आयुष्य पूर्ण थता धर्मकृत्य न करता गत्यतरमा जइ दुःखे पीडित थइ पश्चात्ताप करे छे जेमके—"अहो! हु पूर्व भवे विषयोमा मग्न थइ पड्यो सर्व प्रकारनी सामग्री छता में जैनधर्म आराध्यो नहीं." आ प्रमाणे ए दरिद्री ब्राह्मणनो उपनय समजवानो छे. अवसर गुमाव्या पछी काइ पण कार्य सिद्ध थतु नथी, माटे हे भव्यजनो ! प्रथमथीज प्रमादनो त्याग करी स्वधर्म पाळवाने तत्पर थाओ. जेथी सर्व इष्ट सिद्धि प्राप्त थशे.

आ प्रकारनु श्रावकपणुं प्राप्त करवानी इच्छावाळा भव्य पुरुषोए निन्हावादिक कुदृष्टिओना वचनमां विश्वासी थवु न जोइए

"जनस्य सत्काचनकंकणद्वयी—निर्मापकस्योपनय निशम्य स. ।

कुदृष्टिवाक्याश्रयणे पराङ्मुखो न्नवेन्नचेद्वचनमश्नुते ध्रुवम्"॥१॥

"सोनीनी पासे उत्तम प्रकारना सोनाना जे कंकणोने करावनार लोकोनो उपनय साजळी श्रावके कुदृष्टिओना वचनने सांभळवामां विमुख थवु, अन्यथा ते निश्चे वचनाने पामे छे." १

कहेवानो आशय एवो छे के, सोनीनी पासे उत्तम प्रकारना बे कंकण घमावनार लोकोनु दृष्टांत साजळी योग्य धर्मना अभिलाषी एवा श्रावके कुदृष्टिओना वचनथी पराङ्मुख थवु, एटले तेमना वचनोनो विश्वास न करवो जो तेमना वचनथी पराङ्मुख न थाय तो निश्चे वचनाने पामे छे अर्थात् तेमना वचनथी व्युद्ग्राहित चित्तवाळो थइ सद्गुरुना उपदेशनो अनादर करी स्वधर्मथी भ्रष्ट थाय छे.

सुवर्णना कंकण घडावनार पुरुषनु दृष्टांत

कोइ मुग्ध पुरुषे सोनीनी पासे सोनाना बे कंकण घमाववा आप्या. ते धूर्त्त सोनीए ते पुरुषने जोळो—मूर्ख जाणी तेने ठगवा माटे बे कंकणो बनाव्या, तेमा एक जोम सुवर्णमय अने बीजी पीतळमय जोम करी. बने साचा कंकणो पेला मूर्खने आपी ठगवानी बुद्धिए ते सोनीए एकांते जणाव्यु के, आ गाममा सर्व लोको मारा द्वेषी छे, तेथी तेओ मारा बनावेला आजरणो साचा होय तोपण तेने खोटा कहे छे, माटे तमारे मारु नाम लीधा शिवाय बीजा लोको पासे आ बने कंकणो बतावी तेनी परीक्षा कराववी पछी हु ते कंकणोने उजाळीने तारा हाथमा पेहेरावीश पेला मुग्ध माणस तेना कपटने न जाणतो ते साचा कंकणनी जोम लइ लोकोने बताववा नीकळ्यो. लोकोए ते कंकणोने चोखा सोनाना शुद्ध कह्या, ते सर्व वृत्तांत तेणे सोनीने आवी जणाव्यो पछी ते कपटी सोनीए पोताना हस्तनी लाघवताथी ते सुवर्ण कंकणना युगलने छुपी रीते मुकी दइ, तेना जेवा तुल्य प्रमाणवाला आकारना बीजा पीतळना बे कंकणो तेना हाथमा पेहेराव्या अने कह्यु के, "आजथी मारु नाम साजळी जो कोइ लोको आ कंकणने पीतळना कहे तो तारे तेमनु वचन न मानवु अने मारा वचन उपर विश्वास राखशे". ते मुग्ध पुरुषे ते वात अंगीकार करी. ते पछी ते अशुद्ध कंकणनी जोम

पहेरी ते पुरुष चौटामा नीकळ्यो, त्यारे लोको तेने पुछवा लाग्या के, " आ कं-कणनी जोम कया सोनीए करी ? " तेणे ते सोनीनु नाम आप्युं; पछी परीक्षक लोकोए तेने सारी रीते तपासीने कह्यु के, " आतो पीतळना ककण छे. " तने ते धूर्त्त सोनीए ठग्यो छे. "पेला धूर्त्त सोनीए जेना चित्तने व्युद्ग्राहित करेलु छे एवा ते पुरुषे मनमा चिंतव्युं के, " आ लोको तेना द्वेषी छे, माटे आ प्रकारे बो-लेछे आ मारा कंकणोतो शुध्द सुवर्णमय छे. माटे आ द्वेषी लोको नक्की द्वेष बुध्दिथी कहे, पण हुं तो तेनो त्याग करीश नहीं " आवु चिंतवी ते पुरुष सा-रा माणसोना वचनमा अनादर करी अने ते धूर्त्त सोनीना वचन उपर विश्वास राखी अशुध्द वस्तु पामीने ठगायो अने शुध्द वस्तुनो जोगी थयो नहीं.

आ दृष्टांतनो उपनय आत्मा उपर आ प्रमाणे घटे छे. जे सुवर्णना कं-कणने ग्रहण करनार पुरुष ते धर्मार्थी जीव समजवो. जे धूर्त्त सोनी ते निन्हवा-दिक कुगुरु समजवा. जे पूर्वे सुवर्णमय कंकणो बताव्या, ते अहीं प्रत्याख्यान, दा-न, दया आदि धर्मकृत्य बतावबामा आवेछे ते समजवु वळी तेणे पोतानो वि-श्वास उपजावी पीतळना कंकण आप्या ते अहिं कुदृष्टिरूपे अनेक प्रकारना वचननी रचनावडे माणसना चित्तने विकल करी एकांतवाद युक्त श्री अरिह तना धर्मनी विरुध्द समजाववानु समजवु. ते पुरुष मिथ्यात्वथी व्युद्ग्राहित चित्त वाळो होवाथी शुध्द धर्मना उपदेशक एवा गुरुने द्वेषी जाणी तेमना वचनने मा-न्य करतो नथी. जेम पेलो मुग्ध पुरुष अशुध्द सुवर्ण पामीने ठगायो छे, तेम मि-थ्यात्वथी व्युद्ग्राहित चित्तवाळो पुरुष अशुद्ध तत्त्व वस्तु पामीने ठगायो समजवो. तेवो पुरुष आखेर दुर्गतिनु भाजन थाय छे अने पछी तेने सम्यग्धर्मरुप वस्तु-नी प्राप्ति दुर्लभ थइ पडे छे, माटे हे भव्य जीवो ! जो तमारे शुध्द धर्म प्राप्त क-रवानी इच्छा होय तो प्रथमथीज निन्हवादिक कुदृष्टिओना वचन उपर विश्वास करशो नहीं. श्रीमद् अर्हत्प्रणीत अनेकांत धर्मना उपदेशक एवा शुध्द गुरुना वचन उपर विश्वास करवो, जेथी तमोने तत्काळ परमात्मसंपत्ति प्रकट थशे.

ए प्रकारे कुदृष्टिना वचनमा विश्वास राखवा उपर सुवर्णकंकणनिर्मा-पकनो उपनय कहेवामा आव्यो.

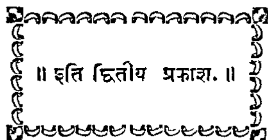
" इत्थं स्वरूपं परमात्मरूप–निरूपकं चित्रगुणं पवित्रम् ।
सुश्रावकत्वं परिगृह्य भव्या भजतु दिव्य सुखमक्षयंच॥"१॥

" लेशाद्देशविरते विचार एषोऽत्र वर्णितोऽस्ति मया ।
अनुसाराद् ग्रंथस्योपदेशचिंतामणिप्रभृते " ॥ २ ॥

हे भव्यो ! आ प्रमाणे परमात्माना रूपने निरुपण करनार अने वि-चित्र गुणवालु पवित्र श्रावकपणु ग्रहण करी तमे दिव्य एवा अक्षय सुखने भजो. १

उपदेश चिंतामणि वगेरे ग्रंथने अनुसारे आ देशविरतिना स्वरुपनो विचार में संक्षेपथी वर्णन करी बताव्यो छे. २

इति श्रीमद्बृहत् खरतरगच्छाधिराज श्री जिनभक्तिसूरिना
चरणकमळमां हंससमान श्री जिनलाभसूरिए रचेला
आत्मप्रबोध ग्रंथनो देशविरति नामे बीजो
प्रकाश पूर्ण थयो.





अथ तृतीय प्रकाश.

(सर्वविरति.)



त्रीजा सर्वविरति नामे प्रकाशना आरम्भमा तेनी प्राप्तिना भेदने सूचवनारी आर्या आ प्रमाणे छे—

" प्रत्याख्यानावरणकषायचतुष्कक्षयोपशमभवनात् ।
लभते मानव एता देशविरतिमानविरतो वा "

" देशविरति एटले पंचमगुणस्थानवर्ती पुरुष अथवा अविरति एटले प्रथम गुणस्थानवर्ती अथवा चतुर्थ गुणस्थानवर्ती पुरुष प्रत्याख्यानावरणीय नामना त्रीजा कषायनी चोकडीनो क्षयोपशम थता सर्वविरतिने पामे छे. त्रिविध त्रिविध भागाए करीने सर्व सावद्य योगथी जे निवृत्ति ते सर्वविरति कहेवाय छे. देवता, तिर्यंच अने नारकी तथाप्रकारना भवना स्वभावने लइने ए सर्वविरतिने पामी शकता नथी, ते कारणथीज अहिं मनुष्यपणुंज ग्रहण करेलुं छे. वळी ए सर्वविरति देशविरतिनी प्राप्तिने अवसरे भविष्यमा थनारी कर्मनी स्थितिमाथी संख्याता सागरोपम खपाव्याथी प्राप्त कराय छे, ए प्रथम विस्तार पूर्वक दर्शाव्यु छे. तथा स्थितिमान आ सर्व विरतितु तथा देशविरतितु पण जघन्यथी अंतर्मुहूर्त्त अने उत्कर्षथी देशोनपूर्वकोटीनुं जाणवु, एवा प्रकारनी छे सर्व विरति जेने ते सर्व विरतिमान् साधु कहेवाय छे.

आवा साधुओ छद्मस्थ अने केवळी एम बे प्रकारना छे. तेमा जे मुनिराज छठा गुणठाणाथी आरंभीने बारमा गुणस्थानवर्ती छे, ते छद्मस्थ कहेवाय छे. अने जे तेरमा अने चौदमा—ए बे गुणस्थाने वर्तनारा छे, ते केवळी

કહેવાય છે. તેમા આ ત્રીજા પ્રકાશને વિષે છદ્મસ્થ સાધુનો અધિકાર આવેછે. અને કેવળી કે જે પરમાત્મરૂપ છે, તેમનુ સ્વરૂપ ચોથા પ્રકાશમા કહેવાશે.

અહિં પ્રથમ સર્વ વિરતિ અંગીકાર કરનાર પુરુષ સ્ત્રી અને નપુસકનુ યોગ્યાયોગ્યપણુ દેખાડે છે.

" અટ્ઠારસપુરિસેપુ વીસ ઇત્થીસુ દસ નપુસેસુ ।
પવ્વાવણા અણરિહા, ઇય અણલા આહિયાસુત્તે" ॥૧॥

" અઢાર પુરુપને વિષે અને સ્ત્રીને વિષે વીસ તથા નપુસકમા દશ–દીક્ષા આપવાને અનલા એટલે અયોગ્ય સૂત્રને વિષે કહેલા છે. "

દીક્ષાને વિષે અયોગ્ય અઢાર પુરુપો આ પ્રમાણે છે—

" વાલે વુડ્ઢે નપુસેય કીવે જડ્ડેય વાહિએ ।
તેણે રાયાવગારીય ઉમ્મત્તે ય અદસણે " ॥ ૧ ॥
દોસે દુટ્ટે ય મૂઢેય રુનત્તે જુગિએદ્દઇય ।
ઉચટ્ટએયભયએ સેહ નિપ્ફેમિયાઇય ,, ॥ ૨ ॥

જન્મથી આરભી સાત—આઠ વર્ષ સુધી વાલ કહેવાય છે વાલ જેનો તેનો તિરસ્કાર કરે તેથી અને તેનામા ચારિત્રના પરિણામનો અભાવ હોય તેથી તે દીક્ષાને અયોગ્ય છે વલી વાલકને દીક્ષા આપવાથી સયમની વિરાધના થવા પ્રમુખ દોષો સભવે છે, જેથી તે વાલક અજ્ઞાનીપણે લોઢાના ગોળા જેવો છે. એટલે જેમ જેમ તે ચાલે તેમ તેમ છકાયના જીવોનો વધ થવાનો તે હેતુરૂપ બને છે. તેથી લોકોમા નિંદા થાય છે કે, " આ સાધુઓ નિર્દય છે કે જેમણે આવા વાલકને બલાત્કારે દીક્ષારૂપ બદીખાને નાખ્યો છે અને તેમ કરીને તેની સ્વાધીનતાનો ઉચ્છેદ કર્યો છે " તેમ વલી માતા પ્રમુખની કરવા યોગ્ય એવી પરિચર્યા કરતા સ્વાધ્યાય (સઝાય) ધ્યાનનો ભગ થાય છે.

અહિં પ્રશ્ન કરે છે કે, જ્યારે વાલકને દીક્ષા અપાતી ન હોય તો—

" છવ્વરિસો પવ્વઇઓ, નિગ્ગથરોઇઊણ પાવયણં "

[इत्यादोपद्रवार्पिकस्यातिमुक्तकुमारस्य]

" छ वर्षना अतिमुक्तकुमारनी दिक्षानी प्रतिपत्ति केम कहेवामा आवे छे ? आ प्रश्नना उत्तरमा कहेवानु के, अतिमुक्तकुमारने त्रिकाळना ज्ञाता भगवान् श्री महावीर प्रभुए पोते दीक्षित करेल होवाथी तेमा कोइ जातनो दोष आवतो नथी. ते अतिमुक्तकुमारनु वृत्तात श्री अतगड दशाग आदि सूत्रने अनुसारे अहिं आपवामा आवे छे—

अतिमुक्त कुमारनुं वृत्तात

पोलासपुर नगरने विषे विजय नामे राजा हतो. तेने श्री नामे पटराणी हती. ते श्री राणीने अतिमुक्त नामे कुमार थयो हतो. ते कुमार बहु प्रयत्नवडे वृद्धि पामतो अनुक्रमे छ वर्षनो थयो ते अरसामा नगरनी बाहेर श्री वीरप्रभु समोसर्या ते वखते प्रथम गणधर गौतम स्वामी श्री वीरप्रभुनी अनुज्ञा लइ भिक्षाने माटे नगरमा आव्या आ समये राजकुमार अतिमुक्त कुमार बाळकोनी साथे रम्तामा क्रीडा करतो हतो. ते गौतम स्वामीने जोइ आ प्रमाणे बोल्यो, " तमे कोण छो ? अने शा माटे फरो छो ? " गौतम स्वामीए कह्यु, " अमे साधु छीए अने भिक्षाने माटे फरीएछीए. " तेमना आ वचन साभळी राजकुमारे कह्यु, " हे पूज्य, आवो तमोने भिक्षा अपावु " आ प्रमाणे कही ते कुमार गौतम स्वामीनी आगळीए वळगी पोताने घेर लइ गयो. ते वखते तेनी माता श्रीदेवी अति हर्ष पामती भक्तिपूर्वक श्री गौतम स्वामीने नमीपडी अने तेणीए चारवडे गणधरने प्रतिलाभित कर्या. ते वखते ते राजकुमारे आ प्रमाणे कह्यु, " महाराज, तमे क्या रहोछो ? " गौतमे कह्यु, " जे उद्यानमा अमारा धर्माचार्य श्री वर्द्धमान स्वामी वसे छे. त्या अमे वसीए छीए " राजकुमार बोल्यो. " स्वामी, त्यारे हु तमारी साथे त्या आवु अने तमारा धर्माचार्यने वदना करु " गौतमे कह्यु, " देवानुप्रिय, तमने सुख थाय तेम करो. " ते पछी अतिमुक्त कुमारे गौतम स्वामीनी साथे श्री वीरप्रभुने वदना करी. " पछी प्रभुए तेने धर्मोपदेश आप्यो. ते साभळी अतिमुक्त कुमार प्रतिबोध पामी गयो. अने दीक्षा लेवानी इच्छाथी पितानी आज्ञा लेवाने घेर आव्यो. तेणे घेर आ

कहेवाय छे. तेमा आ त्रीजा प्रकाशने विषे छद्मस्थ साधुनो अधिकार आवेछे. अने केवळी के जे परमात्मरूप छे, तेमनु स्वरूप चोथा प्रकाशमा कहेवाशे.

अहिं प्रथम सर्व विरति अंगीकार करनार पुरुष स्त्री अने नपुसकनु योग्यायोग्यपणु देखाडे छे.

" अट्ठारसपुरिसेसु वीस इत्थीसु दस नपुंसेसु ।
पव्वावणा अणरिहा, इय भणिआ आहियासुत्ते" ॥१॥

" अढार पुरुषने विषे अने स्त्रीने विषे वीस तथा नपुसकमा दश-दीक्षा आपवाने अनर्ह्ला एटले अयोग्य सूत्रने विषे कहेला छे. "

दीक्षाने विषे अयोग्य अढार पुरुषो आ प्रमाणे छे—

" बाले वुड्ढे नपुंसेय कीवे जड्डेय वाहिए ।
तेणे रायावगारीय उम्मत्ते य अदंसणे " ॥ १ ॥
दोसे दुट्ठे य मूढेय रुणत्ते जुंगिएइय ।
उबद्धएयभयए सेह निप्फेडियाइय „ ॥ २ ॥

जन्मथी आरंभी सात—आठ वर्ष सुधी बाल कहेवाय छे. बाल जेनो तेनो तिरस्कार करे तेथी अने तेनामा चारित्रना परिणामनो अभाव होय तेथी ते दीक्षाने अयोग्य छे. वळी बालकने दीक्षा आपवाथी संयमनी विराधना थवा प्रमुख दोषो संभवे छे, जेथी ते बालक अज्ञानीपणे लोढाना गोळा जेवो छे. एटले जेम जेम ते चाले तेम तेम छकायना जीवोनो वध थवानो ते हेतुरूप बने छे. तेथी लोकोमा निंदा थाय छे के, " आ साधुओ निर्दय छे के जेमणे आवा बालकने बलात्कारे दीक्षारूप बंदीखाने नाख्यो छे अने तेम करीने तेनी स्वाधीनतानो उच्छेद कर्यो छे. " तेम वळी माता प्रमुखनी करवा योग्य एवी परिचर्या करता स्वाध्याय (सझाय) ध्याननो भंग थाय छे

अहिं प्रश्न करे छे के, ज्यारे बालकने दीक्षा अपाती न होय तो—

" छव्वरिसो पव्वइओ, निग्गथरोइऊण पावयणं "

[इत्यादौ षड्वार्षिकस्यातिमुक्तकुमारस्य]

" छ वर्षना अतिमुक्तकुमारनी दिक्षानी प्रतिपत्ति केम कहेवामा आवे छे ? आ प्रश्नना उत्तरमा कहेवानु के, अतिमुक्तकुमारने त्रिकाळना ज्ञाता जगवान् श्री महावीर प्रजुए पोते दीक्षित करेला होवाथी तेमा कोइ जातनो दोष आवतो नथी. ते अतिमुक्तकुमारनु वृत्तात श्री अंतगम दशाग आदि सूत्रने अनुसारे अहिं आपवामा आवे छे—

अतिमुक्त कुमारनु वृत्तात

पोलासपुर नगरने विषे विजय नामे राजा हतो. तेने श्री नामे पटराणी हती. ते श्री राणीने अतिमुक्त नामे कुमार थयो हतो. ते कुमार बहु प्रयत्नवमे वृद्धि पामतो अनुक्रमे ब वर्षनो थयो ते अरसामा नगरनी बाहेर श्री वीरप्रजु समोसर्या ते वखते प्रथम गणधर गौतम स्वामी श्री वीरप्रजुनी अनुज्ञा लइ जिक्षाने माटे नगरमा आव्या. आ समये राजकुमार अतिमुक्त कुमार बालकोनी साथे रस्तामा क्रीमा करतो हतो. ते गौतम स्वामीने देखी आ प्रमाणे बोल्यो, " तमे कोण छो ? अने शा माटे फरो छो ? " गौतम स्वामीए कह्यु, " अमे साधु छीए अने भिक्षाने माटे फरीएछीए. " तेमना आ वचन साजळी राजकुमारे कह्यु, " हे पूज्य, आवो तमोने जिक्षा अपावु. " आ प्रमाणे कही ते कुमार गौतम स्वामीनी आगळीए वळगी पोताने घेर लइ गयो. ते वखते तेनी माता श्रीदेवी अति हर्ष पामती जक्तिपूर्वक श्री गौतम स्वामीने नमीपमी अने तेणीए जावथी गणधरने प्रतिलाजित कर्या ते वखते ते राजकुमारे आ प्रमाणे कह्यु, " महाराज, तमे क्या वसोछो ? " गौतमे कह्यु, " जे उद्यानमा अमारा धर्माचार्य श्री वर्द्धमान स्वामी वसे छे. त्या अमे वसीए छीए " राजकुमार बोल्यो. " स्वामी, त्यारे हु तमारी साथे त्या आवु अने तमारा धर्माचार्यने वंदना करुं. गौतमे कह्यु, " देवानुप्रिय, तमने सुख थाय तेम करो. " ते पछी अतिमुक्त कुमारे गौतम स्वामीनी साथे श्री वीरप्रजुने वंदना करी. " पछी प्रजुए तेने धर्मोपदेश आप्यो. ते साभळी अतिमुक्त कुमार प्रतिबोध पामी गयो अने दीक्षा लेवानी इच्छाथी पितानी आज्ञा लेवाने घेर आव्यो. तेणे घेर आ

वी आ प्रमाणे माता पिताने कह्यु, " हे माता पिता, मे आजे श्री वीरप्रजुनी पासे धर्म साजळ्यो छे अने ते धर्म मने रुच्यो छे. त्यारे माता पिता बोल्या. " पुत्र तने धन्य छे. तु कृतपुण्य छे अने आ लोकमा कृतार्थ थयो छे, के जे तें श्री वीरप्रजु पासे धर्म साजळ्यो अने वळी ते धर्म तने रुचिकर थयो. " कुमार बोल्यो. हे माता पिता, हु ते प्रजुना मुखथी धर्म साजळी आ ससारना जयथी उद्विग्न थइ गयो छु. मने जन्म मरणनो अति जय लाग्यो छे, तेथी तमारी आज्ञाथी हु ते वीरप्रजु पासे दीक्षा लेवा इच्छा राखु छु. " ते अनिष्ट, अमनोज्ञ, अप्रिय अने पूर्वे नहि साजळेल वचन साजळी तत्काल माता शोक सागरमा मग्न थइ गया तेमनु हृदय दीनवत् खेद पामी गयु अने मन उपर ग्लानि प्रसरी गइ. तत्काल ते पुत्रवियोगना जयथी मूर्छित थइ गृहना आगणामा सर्वांगे पडी गया. ते वखते दासी सत्वर सुवर्णनो कळश लइ, ते कलशना मुखमाथी नीकळती शीतल अने निर्मल जलनी धारावडे ते राणीना शरीरने सिंचन कर्यु अने वायुनो उपचार कर्यो एटले ते राणी चेतनाने प्राप्त थया. तत्काल ते विलाप करता राणीए पुत्रने आ प्रमाणे कह्यु, " हे पुत्र, तु अमारे एकज पुत्र छे. इष्ट, कमनीय अने प्रिय छे. हे वत्स, अमूल्य रत्नना आजरणना कर्मीया समान, हृदयने आनद उपजावनार अने उबराना पुष्पनी पेठे तु छुर्लज छे, माटे एक क्षणमात्र पण तारो वियोग सहन करवाने अमे शक्तिमान नथी, तेथी ज्या सुधी अमे जीवीए त्या सुधी तु घरमा रहे, ते पछी तु सुखे करी चारित्र ग्रहण करजे. "

माताना आवा वचन साजळी राजकुमार आ प्रमाणे बोल्यो—" माता, तमे कहो छो ते सत्य छे, परतु आ मनुष्यजव के जे अनेक जन्म जरा मरण वाळो छे तेमज शरीर अने मन सबधी अत्यत छुःख—वेदना अने उपद्रवोथी युक्त छे, ते अध्रुव-अनित्य छे. ते सध्याना वादळाना रग सरखो, जलना परपोटा जेवो अने विद्युत् लतानी पेठे चंचल छे. शरीर के जे सडन, पडन, विध्वसन धर्मवाळु अने पेहेला अथवा पछी अवश्य त्याग करवा योग्य छे. वळी विचार करो के, आपणामाथी कोण जाणे छे के, परलोकमा पेहेलो कोण जशे ? अने पछी कोण जशे ? तेथी तमारी आज्ञाथी हु हमणाज दीक्षा लेवा इच्छा राखु छु "

राजकुमारना आ वचनो साजळी माता पिता बोल्या—" हे पुत्र, आ

तारु शरीर अतिशय सुंदर अने लक्षण—व्यजन गुणोथी युक्त छे, तेमज अनेक प्रकारनी व्याधिओथी रहित, सौभाग्यवालुं, उन्नत, मनोज्ञ, अने पचेंद्रियोथी शोभायमान छे. वत्स, तेथी तारे प्रथम शरीरना ते सौभाग्यादि सर्व गुणोने अनुभवी पछी योग्य वयवाला थइ दीक्षा ग्रहण करवी." राजकुमार बोल्यो, "हे माता पिता, तमोए जे मारा शरीरनु स्वरूप कही बताव्युं, ते मानव शरीर निश्चे सेंकमो दुःखनु घर. अने सेंकमो व्याधिओनु स्थान रुप छे. वली ते अस्थिरुप काष्ठपिंजरवालु, नसो तथा ओररुप जालथी वींटाएलुं, मृतिकाना पात्रनी पेठे दुर्बल, अशुचि पुद्गलोथी उत्पन्न थयेलु, "सभ्रन, पभ्रन, विध्वसन धर्मवालु अने प्रथम अने पाछलथी अवश्य त्याग करवा योग्य छे, तेथी कयो बुद्धिमान पुरुष तेवा शरीरने माटे राचे ?"

माता पिताए कह्यु, "पुत्र, आ तारा पूर्वज—वडिलोनी परपराथी आवेल विस्तीर्ण धन, सुवर्ण, रत्न, मणि, मोती, शखरत्न, परवाला, प्रमुख स्वाधीन प्रधान दोलत छे अने ते सात पेढी सुधी गरीब प्रमुखने आपता छता क्षय पामे तेवु नथी, एवा द्रव्यनो स्वेछा प्रमाणे उपभोग करी अने तारी मनोवृत्ति प्रमाणे चालनारी अने तारी समान रुप लावण्यवाली घणी राजकन्याओने परणी तेमनी साथे आश्चर्यकारक सासारिक सुख भोगवी ते पछी तु दीक्षा ग्रहण करजे."

अतिमुक्त कुमार बोल्यो—"हे पूज्य माता पिता, तमोए जे द्रव्यादिकनु स्वरूप कह्यु, ते द्रव्य निश्चे करीने अग्नि, जल, चोर, राजा अने भागीदारो प्रमुख घणाओने साधारण छे अने परिणामे अध्रुव छे तेथी ते पण पेहेला अथवा पछी अवश्य त्याग करवा योग्य थशे. जे मनुष्यसबधी कामभोगो छे, ते पण अशुचि अने अशाश्वत छे, ते साथे वात, पित्त, कफ, शुक्र—वीर्य अने शोणितने आश्रय करनारा छे. अहिं कामभोग शब्दथी वातपित्तादिकना आधारभूत एवा स्त्री पुरुषना शरीरो जाणवा. वळी ते अमनोज्ञ तथा दुगछा उत्पन्न करनारा मूत्र अने विष्टाथी परिपूर्ण, निःश्वास अने उच्छ्वासथी दुर्गंधी, अने अज्ञान जनोए सेवित छे. ससारने वधारनारा होवाथी साधुजनने निंदनीय छे. तेना फल घणा कटु छे, तेथी तेवाओने माटे कोण पोताना जीवितने निष्फल करे ?"

पुत्रना आ वचन साभली तेना माता पिता विचारमा पडी गया. ते

मणे विषयोने अनुकूळ एवा घणा वचनोथी तेने लोभाव्यो, तो पण ते जरा पण रग्यो नहीं पछी तेने लोभावाने अशक्त थयेला माता पिताए विषयने प्रतिकूळ अने संयमना भयने बतावनारा वचनो आ प्रमाणे कह्या—" वत्स, निर्ग्रंथ संबंधी जे प्रवचन छे. ते सत्य छे , सर्वोत्कृष्ट छे, शुद्ध छे, कर्म रूपी शल्यने तोडनार छे, मोक्ष मार्गनुं दर्शक छे अने सर्व दुःखोनो नाश करनार छे. ए प्रवचनने विषे स्थित एवा जीवो सिद्धिपदने पामे छे, परंतु ए प्रवचन लोढाना चणा चाववा जेवुं अत्यंत दुष्कर छे. रेतीना कोळीआ जेवुं स्वादरहित छे अने भुजावडे महासमुद्रने तरवा जेवुं दुष्कर छे. वळी ते प्रवचन खड्गनी धार उपर चालवा जेवुं, दोरडे वांधेली महा शिलाने हाथे धारण करवा जेवुं छे. वत्स, वळी साधुने आधाकर्मी, उद्देशिक आदि भोजन कल्पतुं नथी, ते तारा जेवा स्वादिष्ट भोजन लेनाराने शी रीते रुचिकर थशे ? पुत्र, तुं सदा सुखमां रहेनारो छे, दुःखमां रहेनारो नथी, तेथी साधुने सहन करवामां शीत, उष्ण, क्षुधा, पिपासा, डंश, मशकना तथा रोगादिकना परिसहो अने उपसर्गो सहन करवा समर्थ नथी तेथी तने प्रव्रज्या लेवानी आज्ञा आपवाने इच्छता नथी. " माता पिताना आवा वचन सांभळी कुमार बोल्यो— " हे पूज्य माता पिता, तमोए जे संयमनी दुष्करता बतावी ते सत्य छे, परंतु ते पुरुषातन विनाना कायर पुरुषोने माटे छे चारित्रनी दुष्करता वीरपुरुषोने माटे नथी, जेओ आ लोकमां प्रतिबंधवाळा, परलोकथी पराङ्मुख रहेनारा अने *विषयोमां तृष्णावाळा छे तेओने महाव्रत* दुष्कर छे, परंतु जेओ धैर्यवाळा, अने आ संसारना भयथी उद्विग्न रहेनारा छे, तेओने ए महाव्रतनुं ग्रहण जरापण दुष्कर नथी माटे आप पूज्य वडिलनी आज्ञाथी हुं दीक्षित थवाने इच्छुं छुं. "

माता पिता बोल्या—" भाइ, ए खरी वात छे. परंतु तारे आवी हठ न करवी जोइए तुं बालक शुं जाणे ? "

अतिमुक्त कुमारे कह्युं, " पूज्य माता पिता, जे हुं जाणुं छुं, ते हुं नथी जाणतो अने जे हुं नथी जाणतो ते हुं जाणुं छुं ' पुत्रना आवा वचन सांभळी माता पिता बोल्या—" वत्स, आ तुं शुं कहे छे ? ते काइ समजातुं नथी ते अमोने स्पष्ट रीते समजाव्य " राजकुमार बोल्यो—" पूज्य, आ जगतमां जे

जन्म्या तेमने अवश्य मरवु छे ते हु जाणु छु परतु तेमने क्यारे कया, केवी रीते अने केटलेक काले मरवुं छे ? ते हुं जाणतो नथी. तेमज केवा कर्म करीने जीवो नरकमा उपजे छे ? ते मारा जाणवामा नथी पण तेओ पोताना करेला नठारा कर्मोथी नरकमा पडे छे, एम हु जाणु छुं. ”

अतिमुक्त कुमारना आ वचनो सांजली तेना माता पिता हृदयमा खुशी थइ गया. “ आ पुत्र चारित्रमा स्थिर चित्तवालो छे. ” एवी खात्री थता तेमणे दीक्षा लेवानी आज्ञा आपी. अने मोटा आडम्बरथी तेनो दीक्षा महोत्सव कर्यो. राजकुमार अतिमुक्त स्नान, विलेपन तथा वस्त्राजूषणथी विजूषित थइ मातापितादि परिवारथी परिवृत बनी सुदर शिबिकामा बेशी विविध वाजित्रोना ध्वनि साथे नगरमा फरवा निकल्यो. ते समये द्रव्यना दाननी इच्छा राखनारा चारण जाट वगेरे याचको आ प्रमाणे आशिष आपवा लाग्या—“ राजकुमार, तमे धर्म अने तपथी कर्म रुपी शत्रुओनो जय करो. हे जगतने आनद करनारा ! तमारु सदा कल्याण थाओ. उत्तम ज्ञान, दर्शन तथा चारित्रवडे, न जीती शकाय तेवी इन्द्रियोने जीतो, साधु धर्मनु सम्यक् प्रकारे पालन करो. अने निर्विघ्ने सिद्धिपदने प्राप्त करो. ”

आ प्रमाणे याचकोथी स्तवातो नगरना स्त्री पुरुषोथी आदरपूर्वक जोवातो अने अर्थी लोकोने इच्छादान आपतो ते अतिमुक्त कुमार नगरनी बाहेर नीकल्यो ज्या श्री वीरप्रजुनु समवसरण हतु, त्या आव्यो. दूरथी शिबिकामाथी उतरी गयो. पछी मातापिता तेने आगल करी श्री वीरप्रजुनी पासे आव्या अने वदना करी आ प्रमाणे बोल्या—“ जगवन्, आ अतिमुक्त कुमार अमारो इष्ट, मनोज्ञ अने एकनोएक पुत्र छे. जेम कमल कादवमाथी उत्पन्न थाय छे अने जलवडे करी वधे छे पण ते कादव तथा जलनी साथे लिप्त थतु नथी, तेम आ कुमार शब्द, रुप, लक्षणोए करी काममाथी उत्पन्न थयेलो छे, गध, स्पर्श लक्षणवाला जोगमा वृद्धि पाम्यो छे, पण कामजोगमा के सगा स्नेहीओमा लेपायो नथी वली आ कुमार आ ससारना जयथी उद्विग्न थइ तमारी पासे दीक्षा लेवा इच्छे छे, माटे अमो आपने आ शिष्यरुपी जिक्षा आपीए छीए ते आप कृपा करी अगीकार करो ”

प्रभु गंभीर स्वरथी बोल्या. "देवानुप्रिय, तमने सुख उपजे तेम करो आ कार्यमां विलंब करशो नहीं." भगवान् वीरप्रभुना आ वचन सांभळी अतिमुक्त कुमार खुशी थइ गयो तत्काळ तेणे प्रभुने त्रण प्रदक्षिणा करी अने वंदना करी इशान खूणामां आवी पोताने मेळे अंग उपरथी वस्त्राभरणो उतार्यां. तेनी माता पुत्रना वस्त्राभरणो हंस चिह्नवाळा कोमळ रुमालमां लइ नेत्रोमांथी अश्रुधारा वर्षावता आ प्रमाणे बोल्या—"व्हालापुत्र, पामेला संयमयोगमां तमे प्रयत्न करजो. अने नहीं पामेला संयमयोगनी प्राप्तिने माटे घटना करजो. चारित्रने अखंड रीते पाळवामां तमारा पुरुषत्वना अभिमानने सफळ करजो अने प्रमादनो तदन त्याग करजो" आ प्रमाणे पिताए पण कह्युं. पछी बने माता पिता प्रभुने वंदना करी पोतपोताने स्थाने चाल्या गया. ते पछी अतिमुक्त कुमार प्रभुनी पासे आव्या अने वंदना करी तेणे विधि पूर्वक दीक्षा ग्रहण करी. प्रभुए पंच महाव्रत ग्रहण करावी संयमना क्रिया कलापने शीखववा माटे गीतार्थ एवा स्थविर मुनिने तेने सोंपी दीधा. ते पछी प्रकृतिए भद्रक अने विनयवान् एवा अतिमुक्त कुमार बाळसाधुरूपे रहेवा लाग्या

एक वखते ते कुमार मुनि मोटी वृष्टि पडता पोतानी काखमां पात्र अने रजोहरण लइ बाहेर आव्या, त्यां जळना प्रवाहने वहेतो देखी बाल्य वयने लीधे तेमणे ते प्रवाहनी आगे माटीनी पाळ बांधी पछी तेनी अंदर रमत करवाने पोतानुं पात्र वहाणनी जेम तरतुं मुक्युं आ देखाव स्थविर मुनिओना जोवामां आव्यो, एटले ते बाळ मुनिनुं उपहास्य करता ते मुनिओए प्रभुनी पासे आवी आ प्रमाणे पुछ्युं, "भगवन्, तमारो अतिमुक्तकुमार शिष्य केटले भवे सिद्धिपदने पामशे?" महाज्ञानी प्रभु आ प्रमाणे बोल्या—"आर्यो! ए मारो शिष्य आ भवमांज मोक्ष पामशे तेथी तमारे ए बाळ मुनिनुं उपहास न करवुं तेनी चेष्टानी निंदा के गर्हणा न करवी तेमज अपमान न करवुं भद्र देवानुप्रिय, तमारे ए मुनिने खेदरहितपणे अंगीकार करवा अने तेनो उपकार करवो ते साथे भात पाणीथी अने विनयथी तेनी वैयावच्च करवी. ते बाळमुनि आ संसारनो अंत करनार चरम शरीरी छे" प्रभुना आवा वचन सांभळी ते मुनिओए वंदना करी प्रभुनुं वचन अंगीकार कर्युं अने अतिमुक्त कुमारने खेदरहित ग्रहण कर्यो. अने तेनी वैयावच्च करवा मांडी छेवटे ते अतिमुक्त कुमार

पापस्थानने आलोवी, अनेक प्रकारनी तपश्चर्या करी संयमनु आराधन करी अं-तगड केवली थया अने परम सिद्धिपदने प्राप्त थया हता. आ वृत्तांतनो संबंध अंतगड दशांग नामना आठमा अंग तथा भगवतीजी—पांचमा अंग प्रमुख सूत्रो-ने आधारे कहेलो छे आ प्रकारे बालवयनी दीक्षा उपर अतिमुक्त मुनिनो वृत्तां-त कहेवामां आव्यो.

जे सात तथा सीत्तेर वर्ष उपरांतना पुरुषो वृध्ध कहेवाय छे, तेमनु पण समाधानादिक करवु अशक्य छे माटे तेवा पुरुषो दीक्षाने अयोग्य छे. तेने माटे कह्युं छे के,

" उच्चासणं समीहइ, विणय न करेइ गव्वमुव्वहइ ।
वुढ्ढो न दिक्खियव्वो, जइ जाओ वासुदेवेणं " ॥ १ ॥

" जे वृध्ध होय ते उचा आसनने इछे छे, विनय करतो नथी अने गर्व धारण करे छे तेथी कदि ते वासुदेवनो पुत्र होय तो पण वृध्ध पुरुषने दीक्षा आ-पवी नहीं. " १

आ वृध्धपणु सो वर्षना आयुष्यनी अपेक्षाए छे. अथवा जे जे काले जेटलु उत्कृष्ट आयुष्य होय तेने दश भागे वेंहेची पछी आठमा नवमा के द शमां भागमा वर्तताने वृध्धपणु जाणवु. १—२

स्त्री तथा पुरुष—उभयनो अभिलाषी अने पुरुषनी आकृतिवालो पु-रुष नपुंसक जाणवो. जे स्त्री वडे निमंत्रित थएलो होय अथवा असंवृत्त स्त्रीने दे-खीने कामाभिलाषी थइ वेदना सहन करवाने शक्तिमान् न थाय, ते पुरुष क्ली-ब कहेवाय छे.—आ बन्ने उत्कट वेदपणाथी अकस्मात् उड्डाहने करनारा थाय छे तेथी तेओ दीक्षा आपवाने अयोग्य छे ४

जड पुरुष त्रण प्रकारना छे १ भाषाजड, २ शरीरजड अने ३ क्रि-याजड. तेमां भाषाजड पण त्रण प्रकारना छे.

१ जलमूक, २ मन्मन्मक, अने ३ एलमूक जे जलने विषे डुबता-नी जेम 'बुडबुडाक' शब्दो करे ते जलमूक कहेवाय छे. जे वचन बोलतो बोलतो स्खलना पामे ते एटले ' मण मण ' एवा शब्दो बोले ते मन्मन्मूक कहेवाय छे. अ

ने जे बोकमानी पेठे मात्र अव्यक्त शब्दो बोले ते एडमूक कहेवाय छे. जे शरीर जम्ड पुरुष छे, ते अति स्थूलपणाने लइने मार्गमां, भिक्षाटन करवामा अने वंदनादिकमा अशक्त होय छे. जे क्रियाजम्ड छे ते प्रतिक्रमण तथा प्रत्युपेक्षणादि क्रियानो वारवार उपदेश कर्या छता पण जडपणाने लइने ग्रहण करवाने शक्तिमान् थतो नथी. अने जे भाषाजम्ड छे ते ज्ञाननु ग्रहण करवाने असमर्थ थाय छे. आथी तेवा पुरुषो दीक्षा आपवाने योग्य नथी. ५

वळी जे कोढ, भगदर अने अतिसार वगेरे रोगोथी ग्रस्त थयेलो होय, तेवो व्याधिग्रस्त पुरुष पण दीक्षाने योग्य नथी. कारण, तेने चिकित्सा करवामां छ कायनी विराधना अने स्वाध्यायादिकनी हानि थाय छे. ६

खातर देवु, लुट करवी इत्यादि चोरीनी क्रियामा तत्पर एवो चोर जो दीक्षा ग्रहण करे तो तेथी गच्छने वध बंधनादि घणा अनर्थोनो हेतु थाय छे तेथीते दीक्षा आपवाने अयोग्य छे. ७

राजाना शरीरादिकनो घात करनार, जनानामा घातकपणु आचरनार, अने राजकुमारने हानि करनार तेमज राजानो कोइपण अपकार करनार पुरुष अनर्थनो हेतु होवाथी दीक्षा आपवाने योग्य नथी. ८

यक्षादिकथी अथवा महामोहना उदयथी जेने गांडापणु थयु होय, तेवो पुरुष घणा दोषोनो हेतु होवाथी दीक्षा आपवाने अयोग्य छे ९

अदर्शन एटले नेत्र वगरनो अथवा सम्यक्त्व वगरनो. थिणद्धि निद्राना उदयवाळो पुरुष दिक्षित करवाथी दृष्टिनी विकलताने लइने पगले पगले षट्काय जीवोनो विराधक थाय छे अने पोतानो पण उपघातक बने छे. थिणद्धी निद्रावाळो पुरुष द्वेषने पाम्यो होयतो गृहस्थो तथा साधुओने मारणादिक करे छे तेथी तेवो पुरुष दीक्षा आपवाने अयोग्य छे १०

दास एटले घरनी दासीथी उत्पन्न थयेलो अथवा पगारथी राखेलो, वेचाती लीधेलो के लेणापेटे राखेलो पुरुष ते पुरुष पण दीक्षा आपवाने अयोग्य छे कारणके, तेवा पुरुषने दीक्षा आपवाथी स्वामीना करेला दीक्षाना त्याग करवा रुप दोषो थवा संभव छे ११

दुष्ट पुरुष बे प्रकारना छे. १ कपायदुष्ट अने २ विषयदुष्ट. तेमां गुरुए ग्रहण करेल सर्षपनी नाजीना वृत्तातथी गैसाएल्ला साधुनी जेम जे उत्कट कपायी होय ते कपायदुष्ट कहेवाय छे. तेम जे परनारी आदिमा अतिशय आसक्त रहे ते विषयदुष्ट कहेवाय छे. तेवा पुरुषो दीक्षा आपवाने अयोग्य छे, काकारणके तेओ अत्यंत संक्लिष्ट अध्यवसायी होय छे. १२

स्नेह एटले अज्ञानादिकना वशथी तत्त्वज्ञानवमे शून्य हृदयवालो ते मूढ कहेवायछे. ते कृत्याकृत्यादि विवेकथी विकल होवाथी विवेकमूल एवी अरिहंतनी दीक्षाने अयोग्य छे. १३

ऋणार्त—एटले देवादार, तेने दीक्षा आपवामा पण प्रसिद्ध दोषो छे. १४

जुंगित एटले जातिए करीने, कर्मे—क्रियाए करीने अने शरीरादिके करीने दूषित एवो पुरुष जुंगित ए नीच जातिनो पुरुप छे. चमार, धोबी, कोळी, मोची आदि जे अस्पृश्य छे, ते बधा जुंगितमा गणाय छे. तेओ जाति चंमाल पण कहेवाय छे. ते शिवाय स्त्री, मोर, कुकमा अने शुक आदिना पोषण करनारा स्पृश्य छे, छता तेपण जातिचंडाल कहेवाय छे. वास, दोरमा, उपर चमनारा, हजाम जातिना, कसाइपणु अने पारधिपणु आचरनारा कर्मचंमाळ कहेवाय छे. जेओ पागला, कुबमा, ठींगणा अने काणाप्रमुख छे तेओ शरीर जुंगित कहेवाय छे. तेवा पुरुषो दीक्षा आपवाने अयोग्य छे, कारणके, तेवाओने दीक्षा आपवाथी लोकोमा अवर्णवाद थवानो संभव छे. १५

द्रव्य ग्रहण करवा माटे अथवा विद्या निमित्ते ' अमुक दिवस हु तमारो छु ' आ प्रकारे जेणे पोतानी पराधीनता करेली होय ते अवबद्ध कहेवाय छे. तेमा कलह आदि दोषोनो हेतु रहेलो छे, तेथी ते दीक्षा आपवाने अयोग्य छे. १६

जे अमुक द्रव्य—पगारथी धनवंतनी आज्ञा उठाववा नीमाएलो होय ते भृत कहेवाय छे, तेपण दीक्षा आपवाने अयोग्य छे, कारणके, तेवाने दीक्षा आपवाथी जेना कार्यमा पूर्वे ते निमाएलो होय, ते गृहस्थनी अप्रीतिनो ते पात्र बने छे. १७

जे दीक्षा लेवा उत्सुक होय तेनु अपहरण करवुं, एटले जेनो दीक्षा लेवानो जाव होय तेने छुपी रीते बीजे लइ जवो—उपलक्षणथी माता पितादिकनी आज्ञा वगर जेने दीक्षा आपवी, ते शैक्ष्यनिष्फेटिका कहेवाय छे. तेवाओ पण दीक्षा आपवाने अयोग्य छे, कारणके, तेवाओने दीक्षा आपवाथी अदत्तादानादि दोषनो प्रसग आवे छे १८

आ प्रमाणे आ अढार पुरुषो दीक्षादानने अयोग्य कहेवाय छे तेवाओमा पण वज्रस्वामीनी पेठे केटलाएकने दीक्षा आपवानी आज्ञा करेली छे.

स्त्री जातिने विषे पण वीश दीक्षा आपवाने अयोग्य छे

" जे अट्ठारसन्नेया पुरिसस्स तहिह्थिआइ ते चेव ।
गुव्विणी¹ सबालवच्छा² छुन्नि इमे हुंति अन्ने वि" ॥१॥

जेम पुरुषना अढार नेद कहेला छे, तेवाज स्त्रीना पण अढार नेद छे तेमां गुर्विणी एटले सगर्जा अने स्तनपान करनारा नाना बालकवाली ते बालवत्सा—ए वे नेद मेलववाथी स्त्री जातिना वीश नेद थाय छे. " १

पूर्वोक्त ते वीश स्त्रीओना नेद छे ते दीक्षा आपवाने अयोग्य छे. तेमने विषे दोष पण पूर्वनी पेठे समजी लेवा.

नपुसकना सोळ नेद

आगमने विषे नपुसकना सोल नेद कहेला छे, तेमा दश नेद सर्वथा दीक्षा आपवाने अयोग्य छे, कारणके तेमा अतिशय संक्लिष्टपणु रहेल छे.

ते आ प्रमाणे—

पंडए वाइए कीवे। कुंनीईसालु एइय ॥ सउणी तक्कम्मसेवीय । पक्खिया पक्खिएइय ॥ १ ॥ सोगंधिए अ आसत्ते दसएए नपुंसगा ॥ संकिलिठत्ति साहूणं । पव्वावेउ अकप्पिया ॥ २ ॥

(१) पंडक (२) वातिक, (३) क्लीब (४) कुंनी (५) ईर्ष्यालु (६) शकुनी (७) तत्कर्मसेवी (८) पाक्षिकापाक्षिक (९)

सौगंधिक (१०) आसक्त ए दश नपुसक संक्लिष्ट चित्तवाळा होवाथी साधुओने दीक्षा देवाने अयोग्य छे, ते सर्वनु संक्लिष्टपणु महानगरदाह समान कामना अध्यवसाय युक्तपणावडे स्त्री पुरुष सेवन आश्रीने होय छे. केमके ते उजय सेवी छे. तेमनु स्वरुप निशीथ भाष्यथी तथा प्रवचनसारोध्धारथी जाणी लेवु. अत्र प्रश्न थाय छे के पुरुषना जेदमा अने अत्र नपुसक कहेला छे तेमा शु विशेष छे ? उत्तरमा कहेवामा आवे छे के त्या प्रथम पुरुष आकृतिनु ग्रहण छे अने अत्र नपुसक आकृतिनु ग्रहण छे—ए विशेषपणु छे. तेमज स्त्रीने विषे पण समजवु. हवे सोळ जेदमा बाकी रहेला छ जेद दीक्षाने योग्य छे ते दर्शावे छे.

" वद्धिए[१] चिप्पिए[२] चेव मंतओ[३] सहिउवहे[४] ।
इसिसत्ते[५] देवसत्ते[६] य पव्वावेज्ज नपुंसए " ॥ १ ॥

१ राजा अतःपुरनी रक्षा माटे उत्तर काळमा बाल्य अवस्थामा छेद आपी जे पुरुषना चिह्नने गाळी नाखे छे ते वर्द्धक नपुसक कहेवाय छे

२ जन्म पामताज अंगुठाथी अथवा आगळीथी जेनु पुरुष चिह्न खेरवी नखाय अथवा चीरिरी नखाय ते चिप्पित नामे नपुसक कहेवाय छे.

३—४ जेने मंत्रनी शक्तिथी अथवा औषधना प्रजावथी पुरुष वेद अथवा स्त्री वेद हणता नपुसक वेद उदय थाय ते बे प्रकारे नपुसक कहेवाय छे.

५ कोइ ऋषि के तापसे शाप आपवाथी जे नपुसक थयेला ते ऋषिशप्त नपुंसक कहेवाय छे.

६ जे कोइ जुवनपति वगेरे देवताना शापथी नपुसक थयेला होय ते देवशप्त कहेवाय छे. आ छ प्रकारना नपुसकोने दीक्षा आपी शकाय छे.

हवे अढार, वीश अने दश जेदथी व्यतिरिक्त एवा पुरुष स्त्री अने नपुसकने विषे जे सर्व विरति अंगीकार कराय छे, ते कहे छे—

" अमन्दवैराग्यनिमग्नबुद्धय. तनूकृताशेषकषायवैरिण. ।
ऋजुस्वभावा. सुविनीतमानसा भजंति भव्या मुनिधर्ममुत्तमम्" १

" जेमनी बुध्धि तीव्र वैराग्यमां निमग्न थयेली छे, जेमणे कषायरुपी सर्व शत्रुओने सूक्ष्म करी दीधा छे, जेमनो स्वभाव सरल छे अने जेमणे पोताना मनने अनुकूल करेलुं छे, एवा भव्य प्राणीओ उत्तम एवा मुनिधर्मने भजे छे." १

आ श्लोकमां अमंद वैराग्य ए विशेषण आपेलुं छे, ते उपरथी सिद्ध थाय छे के रोगादिजन्य एवा क्षण मात्र रहेनारा वैराग्यवडे कांइ पण सिद्धि थती नथी, एम सूचव्युं छे.

वळी कह्युं छे के,—

" रोगेण व सोगेण व, दुक्खेण व जं जणाण उल्लसइ ।
मग्गंति न वेरग्गं, तं विबुहा अप्पकालंति " ॥ १ ॥
सुहिअस्सव्व दुहिअस्सव, जं वेरग्गं भवे विवेएणं ।
पायं अपच्चयवा, तं चिय चारित्ततरुबीअं " ॥ २ ॥

" तेवा वैराग्यने पंडित पुरुषो मागता नथी के जे वैराग्य निर्विवेकी पुरुषोने कासश्वासादि रोगथी, पुत्र वियोगादि शोकथी अने वध बंधादिकना योगथी उत्पन्न थाय छे वळी आ असारसंसारने धिक्कार छे, कारण के, रोग, शोक आदि घणा कष्टो जेमां रहेला छे एवी विचारणामय वैराग्य जेमां उल्लास पामे छे तेवा वैराग्यने पंडित पुरुषो इच्छता नथी, जेथी तेवुं वैराग्य सर्व विरतिने अयोग्य छे. १

तेवा वैराग्यनी अयोग्यता शाथी थाय छे ? ते कहे छे–तेवा वैराग्यनुं अल्प काल सुधी स्थायीपणुं छे, तेमज रोगादिकनी निवृत्ति थतां तेवा वैराग्यनी पण निवृत्ति थइ जाय छे, माटे उत्तम बुध्धिवाळा पुरुषोए तेवुं वैराग्य इच्छवा योग्य नथी. अहीं प्रश्न करे छे के, " त्यारे सर्व विरतिने योग्य केवुं वैराग्य होय ? " तेना उत्तरमां कहे छे के, सुखी अथवा दुःखी जनने जे वैराग्य थाय, तेवुंज वैराग्य अनश्वर होय छे, कारण के, विवेकना मूलपणाने लइने सर्व दुःखादिकनी निवृत्ति थतां वैराग्य पण निवृत्ति पामतुं नथी, तेथी ए वैराग्य चारित्ररूपी वृक्षने उत्पन्न करवानुं कारण बीजरुप छे. अहिं चारित्रने वृक्षनी उपमा आपेली छे, ते सम्य-

क्त्वरुप मूलथी, प्रथम व्रतरुप स्कंधथी, शेष-बाकीना व्रतरुप शाखाओथी, प्रशमादिक प्रशाखाओथी, सकल क्रियाकलापरुप पत्राळाथी, लब्धिओ रुप पुष्पोथी अने मोक्षरुप फलथी बराबर घटे छे. तेनी अंदर जे प्रायः शब्द मुकेलो छे, तेथी व्यभिचार छता दोष आवतो नथी; कारण के, ते नंदीषेण वसुदेवना पूर्व भवना जीव छे, ते अति कुरूपपणाथी स्त्रीवर्गे अनादर कराता मनने विषे अत्यंत दुःख पामता अविवेकथी पण अविनाशी वैराग्यने पामेला हता. १-२

दश प्रकारनो यतिधर्म

" खती १ मद्दव २ अज्जव ३ मुत्ती ४ तव ५ संजमेय ६ बोधव्वे ।
सच्च ७ सोयं ८ आकिं-चणाच ९ बंभं १० च जइधम्मो " ॥१॥

" १ क्षांति—एटले सर्वथा क्रोधनो परित्याग, २ मृदुता—सर्वथा माननो त्याग, ३ सरलता—सर्वथा कपट वृत्तिनो त्याग, ४ निर्लोभता—सर्वथा लोभनो त्याग, एथी मुनिओए प्रथम चार कषायनो जय करवो, एम सूचव्युं छे.

कषायो उभयलोकमा प्राणीओना स्वार्थनो विनाश करनारा छे. कह्युं छे के,

" कोहो पीइं पणासेइ माणो विणयनासणो ।
माया मित्ताणि नासेइ लोहो सव्व विणासओ ॥ १ ॥
कोहो नाम मणुसस्स, देहाओ जायए रिऊ ।
जेण च्चयंति मित्ताइ धम्मो य परिभस्सई ॥ २ ॥
नासियगुरूवएसं विज्जाअहलत्त कारणमसेस ।
कुग्गहगयआलाणं को सेवइ सुव्वओ माण ॥ ३ ॥
कुडिलगइ कूरमइ सयाचरणवज्जिओ मलिणो ।
मायाइ नरो भुअगव्व दिठमित्तो वि भयजणओ ॥४॥
किच्चाकिच्च विवेय हणइ जो सया विमंवणाहेउं ।
त किरलोहपिसायं को धीम सेवए लोए " ॥५॥

" क्रोध प्रीतिनो नाश करे छे, मान विनयभंजक छे, माया मित्रोनो विनाश करनारी छे अने लोभ सर्व विनाश उत्पन्न करनार छे " (१)

" क्रोध मनुष्यना शरीरमाथी उत्पन्न थयेलो शत्रु छे जेना सद्भावथी मित्रो (सग) तजी दे छे अने धर्म दूर जाय छे (२)

" जेणे गुरुना उपदेशग्रहणनो विनाश करेलो छे, जे समस्त विद्याने निष्फल करवाने कारणभूत छे, जे कुग्रहरूप हस्तीने बांधवानु स्थान छे तेवा माननें कोण सदाचरणी पुरुष सेवे ? " (३)

मायावी मनुष्य वक्रगतिवाळो, क्रूर बुद्धिवाळो, सदाचरणवर्जित, मलिन, अने सर्पनी पेठे दृष्टिमात्रथी भयने उत्पन्न करनार होय छे " (४)

" जे कृत्याकृत्यना विवेकनो विनाश करे छे, जे सर्वदा विडंबनाना हेतुभूत छे, तेवा लोभरूप पिशाचने कयो बुद्धिमान पुरुष सेवे ? " (५)

वळी बीजा सर्व मोक्षना अंगोने विषे कषायनो त्याग ते पण मोक्षनु एक मुख्य अंग छे ते विना कदिपण मोक्षनी प्राप्ति थती नथी. तेने माटे कहु छे के,—

" कट्ठ किरियाहिं देह दमंति किं ते जडा निरवराहं ।
मूलं सव्व दुहाणं, जेहिं कसाया न निग्गहिया" ॥१॥

" जेमणे कषायोनो निग्रह कर्यो नथी एवा पुरुषो कष्ट क्रियाओ करी सर्व दुःखना मूलरूप एवा निरपराधी देहने दमे छे तेओ जड पुरुषो छे." १

" सव्वेसुवि तवेसु कसायनिग्गहसम तवो नत्थि ।
ज तेण नागदत्तो सिद्धो बहुसो वि भुंजतो " ॥ १ ॥

"सर्व प्रकारना तपमा पण कषायोनो निग्रह करवा रुप तपना जेवुं बीजु तप नथी, जे तपना प्रभावथी नागदत्त घणीवार भोजन करतो पण सिद्ध थयो हतो "१

नागदत्तनु बीजु नाम कुरगडु साधु कहेवाय छे ते दररोज त्रण त्रणवार भोजन करतो, पण केवल कषायना निग्रहना बलथी केवळज्ञाननी लक्ष्मीने प्राप्त थयो हतो. ए नागदत्तनी कथा प्रसिद्ध छे, तेथी आ स्थळे दर्शावेल नथी.

हवे अपवाद मार्गने आश्रीने अहीं विशेषपणे देखाडे छे.

"यः शासनोड्डाह निवारणादि–सद्धर्मकार्याय समुद्यतः सन् ।
तनोति माया निरवद्यचेता प्रोक्त. स चाराधक एव सुज्ञै "१

" जे मुनि शासननी निंदानु निवारण करवा वगेरे सारा धर्मकार्योने माटे उजमाळ थइ निर्दोष हृदये मायाने विस्तारे छे, तेवा मुनिने सुज्ञ पुरुषोए आराधक कहेलो छे. " १

कहेवानो आशय एवो छे के, जे मुनि शासननी निंदा अटकाववाने माटे माया—कपट आचरे ते मुनि शासनना आराधक गणाय छे, विराधक गणाता नथी, कारणके, शासननी अपभ्राजना निवारवार्थी पोते आचरेला मायाकषायना लेशनी आलोचना करी तेओ शुद्ध थइ शके छे. वळी सिद्धातमा पण नवमा गुणस्थान सुधी सज्वलन मायानो उदय कहेलो छे, ते उपर एक दृष्टात कहेवामा आवे छे.

मायाकषाय विषे दृष्टांत

कोइ एक नगरमा एक मिथ्यात्वी राजा राज्य करतो हतो. तेनी राणी जैनधर्म उपर परम रागवती हती. बनेनी वच्चे अत्यत प्रीति हती. तेओनी वच्चे वारंवार धर्मनी चर्चा थती हती. एक वखते ते मिथ्यात्वी राजाए विचार कर्यो के, "जो हु कोइ रीते आ राणीना धर्मगुरुनो अनाचार प्रगट करी बतावु तो राणी मौन थइने रहेशे. " आ प्रमाणे विचारी राजाए तेनो उपाय योजवा माटे पोताना नगरनी पासे आवेला एक चण्डिकाना पूजारीने बोलावी आ प्रमाणे कह्यु–" जो कोइ जैनमुनि आ चण्डिकाना मदिरमा रात्रे निवास करे, त्यारे तमारे कोइ वेश्याने मदिरमा राखी द्वार बध करी देवा अने तत्काळ मने ते खबर आपवा. " आ प्रमाणे राजानी आज्ञा ते पूजारी अगीकार करी पोताने स्थाने गयो.

एक दिवसे कोइ जैनमुनि चण्डिकाना मदिरमा आवी चड्या. ते वखते तेणे वेश्याने अदर पूरी द्वार बध करी दीधा. पछी तेणे राजाने ए वात निवेदन करी राजाए कह्यु, " हवे ज्यारे हु त्या आवु, त्यारे तमारे ते द्वार उघाडवा." राजाना आ वचनने अगीकार करी पूजारी पोताने स्थाने आव्यो

अहीं मदिरमा पूराएला जैनमुनिए चिंतव्यु के, " कोइ मिथ्यात्वीए द्वेष बुद्धिथी मने आ उपसर्ग करेलो छे, माटे मारे आ उपसर्गने सम्यक् प्रकारे सहन करवो. हु आ उपसर्गने सहन करीश पण प्रभाते अहीं आवनारा लोकोमा मारा निमित्ते जिनमतनी निंदा थशे, तेथी आ निंदा दूर करवा माटे हु कोइ उपाय

आचरु. " आ प्रमाणे चिंतवी तत्काल उत्पन्न थयेली बुद्धिवमे तेणे ते मदिरना मध्य जागे रहेला दीपकना अग्निथी पोताना वस्त्रादिक सर्व उपकरणोने बाळी तेनी रक्षा करी. ते रक्षाथी तेणे पोतानु सर्व शरीर चोळ्यु अने रजोहरणमां रहेली लाकडी हाथमा ग्रहण करी जे खूणे वेश्या हती तेनाथी दूर मदिरने बीजे खूणे ते निश्चितपणे बेठा.

मुनिनु आवु जयानक स्वरूप जोइ वेश्या मनमा जय पामी गइ अने ते मौन धरीने एकात जागे लुपाइने बेशी गइ.

प्रातःकाले राजा जैन मुनिना अनाचार देखामवानी इच्छाथी नगरना मुख्य लोकोने अति आग्रह करी चन्डिकाना मदिर पासे लाव्यो. नगरना श्रेष्ठी शाहुकारो सहित राजा मदिर पासे आव्यो अने देवीना पूजारीने कह्यु, " पूजारी, आ द्वारना कमाम उघाम, अमारे माताना दर्शन करवा छे. " राजाना आवा वचनथी पूजारीए मदिरना द्वार उघाम्या, तेवामा ते जैनमुनि हाथमा लाकडी लइ नग्न स्वरूपे ' अलख अलख ' एवा शब्दो करता अदरथी बाहेर नीकळ्या अने राजा वगेरे सर्व लोकोनी वचे थइ बीजे स्थाने चाल्या गया, तेनी पाछळ वेश्या पण बाहेर नीकळी. राजा पोतानाज धर्मना गुरुनु आवु दुःस्वरूप जोइ अतिशय शरमाइ गयो अने नम्र मुखे उजो रह्यो.

आ वखते राणी बोली, " स्वामी, शी चिंता करो छो ? मिथ्यात्वनी विडबनाए करी प्राणीने शी शी चिंता उत्पन्न थती नथी. ? "

आ वखते राजाए उठी पोताने स्थाने आवी पूजारीने क्रोधथी ते बनाव विषे पूछ्यु, त्यारे तेणे कह्यु, " स्वामी, आपना कहेवा प्रमाणे में कर्यु हतु, ते छतां आम विपरीत बन्यु, ते विषे हु काइ पण जाणतो नथी पछी राजाए ते वेश्याने बोलावीने पूछ्यु, त्यारे वेश्याए ते सर्व वृत्तात राजाने निवेदन कर्यो अने जैनमुनिना धैर्यनु वर्णन करी बताव्यु. पछी राजा ते वृत्तात साजळी राणीना वचनथी प्रतिबोध पामी सम्यक्त्ववत श्रावक बनी गयो हतो

पेला मुनि फरीथी मुनिवेष धारण करी पोते करेल मायाकषायना स्थानकने आलोवी अने शुध्ध सयमने आराधी छेवटे उत्तम गतिना जाजन थया हता.

आ प्रमाणे शासननो उड्डाह निवारवा विषे माया करनार मुनिनो दृष्टांत छे

तपस्यानु स्वरूप

तप बे प्रकारनुं छे. १ बाह्य अने २ आभ्यंतर. ते प्रत्येक छ छ प्रकारना छे, तेने माटे आ प्रमाणे कहेलु छे—

" अणसणमुणोअरिआ, वित्तिसखेवण रसच्चाओ ।
कायकिलेसो संलीणा, याय बज्झो तवो होइ " ॥ १ ॥

" अनशन एटले आहारनो त्याग–ए बे प्रकारे छे. १ इत्वर अने २ यावत्कथिक. श्रीवीरतीर्थे नमुकारसहियी लइने छ मास पर्यंत अने प्रथम जिनना तीर्थमा वर्ष पर्यंत अने शेष जिनोना तीर्थमा आठ मास पर्यंत होय छे.

बीजुं यावत्कथिक.—१ पादपोपगमन, २ इंगितमरण अने ३ भक्तपरिज्ञा–एम त्रण प्रकारे छे. तेमा भक्तपरिज्ञामा त्रिविध अथवा चतुर्विध आहारना पच्चखाण अने शरीरनी परिकर्मता (शरीर संबधी वैयावच्च) पोते करे अथवा बीजा पासे करावे. बीजा इंगितमरणमा निश्चे चतुर्विध आहारनो त्याग अने बीजाथी परिकर्म–वैयावच्चनुं वर्जन होय छे, अने पोते पण पोताना कल्पेला देश भागमा उद्वर्त्तनादिक परिकर्म करे छे. त्रीजा पादपोपगममा वृक्षनी पेठे पोताना अंग तथा उपांग ने सम अथवा विषम प्रदेशने विषे जेम प्रथम पड्यु होय तेम धारण करी निश्चल थइ रहेवानु छे, एटले वृक्षनी शाखानी जेम पासु बदल्या वगर पड्यु रहेवानु छे.

ऊनोदरी प्रमुखनु स्वरूप.

" बत्तीस किरकवला–हारो कुच्छिपूरओ भणिओ ।
पुरिसस्स महिलयाए, अट्ठावीस भवे कवला " ॥१॥

" जे बत्रीश कवळ–कोळीयानो आहार ते कुक्षिपूरण आहार कहेलो छे, तेमां पुरुषना बत्रीश अने स्त्रीना अठ्यावीश कोळीया कहेला छे आ प्रमाणे आहारनु मान संक्षेपरूपे जाणी लेवु. वृत्ति–भिक्षाने द्रव्य, क्षेत्र, काल अने भावथी अभिग्रहविशेषवडे संकोचवी ते वृत्तिसंक्षेप कहेवाय छे अथवा आजीविका

कायानुं आसन बांधवुं अथवा लोचादिकथी कायाने क्लेश आपवो ते कायक्लेश कहेवाय छे. जे इन्द्रिओनी गुप्तता ते संलीनता कहेवाय छे. एटले इन्द्रिय, कषाय अने योगवर्गे संकीर्ण तेमज स्त्रीपशुपण्डकादि वर्जित स्थाने रहेवुं ते संलीनता कहेवाय छे.

ए छ प्रकारना तप लोकोमां प्रवर्त्ते छे, वळी केटलाएक कुतीर्थिओ पण ए तप आचरे छे, तेथी ते बाह्य तप कहेवाय छे.

आभ्यंतर तपना प्रकार.

" पायच्छित्त विणओ, वेयावच्चं तहेव सज्झाओ ।
झाणं उस्सग्गोवि अ, अब्भितरओ तवो होइ" ॥१॥

" १ प्रायश्चित्त, २ विनय, ३ वैयावृत्य, ४ स्वाध्याय, ५ ध्यान अने ६ कायोत्सर्ग–ए छ प्रकारनुं आभ्यंतर तप कहेवाय छे. " १

प्रायश्चित तपना दश प्रकार

" आलोयण पडिक्कमणे, मीसविवेगे तहावि उस्सग्गो ।
तवच्छेय मूल अणवठ्ठ–याय पारंचिय चेव" ॥१॥

१ आलोचना–एटले गुरुनी आगळ पोतानुं दुष्कृत वचनथी प्रगट करवुं.

२ प्रतिक्रमण–एटले लागेला दोषथी पाछुं फरवुं–फरीथी ते दोष न करवाने माटे मिथ्या दुष्कृत आपवुं पण गुरु समक्ष न आलोचवुं, अनुपयोगपणे श्लेष्मादिकना प्रक्षेपनी जेम.

३ मिश्र–जे दुष्कृत आ बनेथी शुध्ध न थाय तो तेनी शुध्धिने अर्थे आलोचना अने प्रतिक्रमण ए बने करवा ते.

४ विवेक–जे आधाकर्मादि आहार ग्रहण करवा प्रमुख के जे अकृत्यपणे ग्रहण करेला आहारादिकनो त्याग करवाथी शुध्ध थाय छे, ते शिवाय बीजी रीते शुध्धि थती नथी, ते शुध्धिने अर्थे जे आहारादिकनो परित्याग ते विवेक कहेवाय छे.

५ व्युत्सर्ग–दु.स्वप्नथी उत्पन्न थयेल दोषनी शुध्धिने माटे कायाना व्यापारनो निरोध करवो ते.

६ तप–जे प्रथम कहेला उपाये करी जे अशुद्ध रहे तो ते दुष्कृतनी शुद्धिने माटे यथायोग्य नीवी आदि छ मास पर्यंत जे तपनुं आचरण ते.

७ छेद–शेष चारित्र पर्यायनी रक्षाने माटे सदोष पूर्व पर्यायनु छेदन करवु ते.

८ मूल–कोइ महा दोष लागता समग्र चारित्र पर्यायने छेदी फरीथी महा व्रतनुं आरोपण करवु ते.

९ अनवस्थाप्यता–क्रोधादिकना उदयथी सेवन करेला पापनी शुद्धिने माटे गुरुए यथार्थ आपेला तपनी शुद्धि ज्या सुधी नथी करी त्या सुधी तेने व्रतने विषे अथवा वेषने विषे न स्थापवा ते अनवस्थाप्यता कहेवाय छे.

१० पारांचित–मुनिघात, राजवध आदि महा अकृत्य सेववाथी लिंग, काल, क्षेत्र अने तपवडे तेनो पार पामवो ते.

आ प्रमाणे प्रायश्चित्त तपना दश प्रकार छे. ते प्रायश्चित्त अप्रगटपणे लिंग धरनारा, जिनकल्पिकना तुल्य रूपवाळा अने क्षेत्रथी बाहेर रहेला आचार्योने शुद्ध विस्तीर्ण तप करता छता जघन्यथी छ मास अने उत्कृष्टथी बार वर्ष पर्यंत होय छे; ते पछी एटले अतिचारनु पार गमन कर्या पछी अनतर तेने दीक्षा अपाय छे, अन्यथा अपाती नथी.

आ दश प्रकारना प्रायश्चित्तमा छेल्ला बे प्रायश्चित्त पहेला संघयणवाळा चौद पूर्वी सुधी होय छे अने बीजा आठ प्रायश्चित्त श्री दुःप्रसन्नसूरि सुधी रहेशे, एम जाणवु. विनय, ज्ञानादिक भेदे करीने सात प्रकारनो छे, तेमा ज्ञानादिकनी भक्ति रूप ज्ञान, दर्शन अने चारित्रनो विनय त्रण प्रकारनो छे, तथा मन, वचन अने कायाए करी आचार्यादिकने विषे अकुशल एटले नठारी रीते प्रवर्त्तता मन, वचन अने कायानो निरोध अने कुशल प्रवृत्तिवाळाने मन, वचन तथा कायानु उदीरण एम विनयना छ प्रकार थया सातमो उपचारिक विनय ते गुरु आदिकनी अनुकूल प्रवृत्तिरूप कहेवाय छे.

आ सात प्रकारनो विनय सर्व काले मुनिओने आचरवा योग्य छे.

४ वैयावच्च

वैयावच्च तप सेवावृत्तिमा आवे छे. आचार्यादिकने अन्न, पाणी, वस्त्र,

पालादि सपादन करवानी विधिनो जे व्यापार ते वैयावच्च कहेवाय छे.

५ स्वाध्याय

अकाल वेलानो परिहार करीने अथवा पोरिसीनी अपेक्षाए जे अध्ययन करवु ते स्वाध्याय कहेवाय छे ते स्वाध्याय पाच प्रकारे छे. १ वाचना, २ पृच्छना, ३ परावर्त्तना, ४ अनुप्रेक्षा अने ५ धर्मकथा–एवा तेमना नाम छे.

जे नहीं जणेला सूत्रोनु शास्त्रोक्त विधिवडे गुरु मुखे ग्रहण करवु. ते वाचना कहेवाय छे. तेमां सदेह थता पुछवु ते पृच्छना कहेवाय छे. ते पृच्छना वडे निश्चित सूत्रोनु विस्मरण न थाय तेने माटे गणवु ते परावर्तना कहेवाय छे. सूत्रनी पेरे अर्थनु जे चिंतववु, ते अनुप्रेक्षा कहेवाय छे अने अभ्यास करेला सूत्र अने अर्थनो बीजाने उपदेश आपवो ते धर्मकथा कहेवाय छे.

अहीं सूत्र बे प्रकारे छे. १ अगप्रविष्ट अने २ अगबाह्य तेमा बे पग, बे जघा, बे उरु, बे गात्र, बे हाथ, एक ग्रीवा अने एक मस्तक ए बार अगवालो पुरुष " सुअविसिठ्ठो " थी ओलखाय छे.

ए प्रवचनरुप पुरुषना अगमा जे रहेलु ते अगप्रविष्ट सूत्र कहेवाय छे. ते बार प्रकारे छे. आचाराग अने सूत्रकृताग सूत्र ए प्रवचन पुरुषना बे पग छे. स्थानाग अने समवायाग—ए तेनी बे जघा छे. भगवती अने ज्ञातासूत्र ते तेना बे उरु छे, उपासकदशाग तथा अतगडदशाग ते तेना पीठ तथा उदररुप बे गात्र छे, अनुत्तरोववाइदशाग अने प्रश्न व्याकरण—ए बे तेना हाथ छे, विपाक सूत्र ते ग्रीवा अने दृष्टिवाद ते मस्तक छे. आ प्रमाणे प्रवचन पुरुषना ते सूत्रो बार अग रुप छे

हवे जे अग बाह्य ते आवश्यक छे, ते उपागो, पयन्ना आदि भेदथी अनेक प्रकारनु छे दीक्षा ग्रहण करनारने जेटले वर्षे जे सूत्रनी वाचना ग्रहण करवा योग्य होय छे ते स्वरूप व्यवहार सूत्र माहेली गाथावडे दर्शावे छे. सवत्स रादि कालना अनुक्रमे करी जे जे काल प्राप्त थाय, ते ते काले धीरपुरुष वाचना लेछे ते काल आ प्रमाणे छे.

त्रण वर्षना दीक्षा पर्यायवालो आचारकल्प नामना अध्ययन सुधी वाचना ले छे. चार वर्षवालो सूयगडाग नामे बीजा अग सुधी अने पाच वर्षनो

दीक्षित दशाश्रुतस्कंध, कल्पसूत्र अने व्यवहार सूत्रनी वाचना लइ शके छे. अहिं आचारकल्प एटले निशीथ सूत्रनु अध्ययन समजवु. आठ वर्षना दीक्षा पर्यायवालो पुरुष श्री स्थानाग अने चोथु समवायांग वाची शके छे. दश वर्षना पर्यायवालाथी श्री जगवतीजी वाची शकाय छे. अगीआर वर्षना पर्यायवालाथी श्री खुड्डियविमाणविजत्ती आदि पाच अध्ययन वाच्य छे. बार वर्षना पर्यायवालाने माटे श्री अरुणोववाऽ आदि पाच अध्ययन कहेला छे. तेर वर्षना दीक्षा पर्यायवालाने उट्ठाणश्रुतादिक चार अने चौद वर्षना पर्यायवालाने श्री आशीविष जावना वाचनीय छे. पदर वर्षना पर्यायवाला दृष्टिविष जावना अने सोळ वर्षना पर्यायवाला चारणजावना सुधी वाची शके छे. सत्तर वर्षना पर्यायवालाने महसुमिण जावना अने अढार वर्षना पर्यायवालाने तेयगनिसग जावना सुधी अध्ययन करवु योग्य छे. ओगणीश वर्षना पर्यायवालाने बारमा दृष्टिवाद वाचवानी आज्ञा छे अने संपूर्ण वीश वर्षना पर्यायवाला मुनिने सर्व सूत्रनी आज्ञा छे ते स्वाध्यायने करनारा अने संयम मार्गने नहीं विराधनारा मुनिओए व्याविद्धत्व प्रमुख अतिचारो सर्वथा वर्जवा जोइए. ते अतिचारो चौद प्रकारना छे.

१ व्याविद्धत्व–विपरीतपणु. २ व्यात्रेडित–जुदा जुदा आलावा मेलवी बे त्रणवार कहेवु. ३ हीनाक्षर—हीन अक्षरपणु. ४ अत्यक्षर—वधारे अक्षरो कहेवा ते. ५ पदहीनता—पद ओछु कहेवु ते. ६ विनय हीनता—विनयनो त्याग करवो ते. ७ उदात्तादि घोष हीनपणु. ८ योग हीनता—योगनी उपचारता न करवी ते. ए अल्पश्रुतने योग्य होय तेने अधिक श्रुतनु दान देवु.१० पात्रइछताने कलुषित हृदये ग्रहण करवुं ते. ११ अकाले स्वाध्याय करवो. १२ काले स्वाध्याय न करवो ते. १३ स्वाध्यायने अवसरे स्वाध्याय न करवो. १४ स्वाध्याय न करवो होय त्यारे करवो.

ए चौद अतिचारनु स्वरूप विशेषपणे आवश्यकादि सूत्रोथी जाणी लेवु. आ चौद अतिचारोने वर्जी स्वाध्याय करनारा मुनिओने महान् लाज प्राप्त थाय छे जो आ अतिचारोनो त्याग कर्या विना स्वाध्याय ध्यान करवामा आवे तो हीनाक्षर दोषने करनारा एक विद्याधरनी पेठे विद्यानी निष्फलता प्रमुख महादोषो उत्पन्न थाय छे.

ते विद्याधरनुं दृष्टांत.

एक वखते राजगृह नगरने विषे तेनी समीपे आवेला उद्यानमा श्री वीर प्रभु समोसर्या, ते वखते स्वामीना आगमननी वार्ता सांभळी जेनु चित्त संतुष्ट थयेलु छे, एवो श्रेणिक राजा अभयकुमार वगेरेने लइ त्या आव्यो. ते प्रभुने त्रण प्रदक्षिणा करी वंदना करी घणा देव अने असुर कुमारादि तथा विद्याधर अने मनुष्योना समूहे विराजित एवी सभामा योग्य स्थाने बेठो. धर्मने सांभळी पर्षदा पुन. पोतपोताने स्थाने गइ तेवामा कोइ विद्याधर आकाश मार्गे उडतो जतो हतो, ते तत्काल पृथ्वी उपर पडी गयो विद्याधरने पृथ्वीपर पडतो देखी श्रेणिक राजा विस्मय पामी गयो. अने तत्काल तेणे प्रभुने तेना पडवानु कारण पुछ्यु. प्रभुए कह्यु, " राजन्, आ विद्याधर गगनगामिनी विद्यानो एक अक्षर चुकी गयो, तेथी तेनो अधःपात थइ गयो छे. ते हवे आकाश मार्गे जवाने समर्थ थवानो नथी. " आ वखते श्रेणिक राजानी पासे रहेलो मंत्री अभयकुमार प्रभुना वचन सांभळी तत्काल बेठो थयो अने तेणे त्या जइ विद्याधरने कह्यु, "हे विद्याधर, तु तारी विद्याना एक अक्षरथी भ्रष्ट थयो छे, जो तु मने ए विद्या आपे तो हु तने ते अक्षर आपु." विद्याधरे अभयकुमारनु ते वचन अंगीकार कर्यु. पछी विद्याधरने एक अक्षर आपी तेणे तेनी पासेथी आकाशगामिनी विद्या ग्रहण करी. पछी विद्याधर पूर्ण विद्या प्राप्त करी आकाश मार्गे चाल्यो गयो अने अभयकुमार अनुक्रमे पोताने स्थाने आव्यो हतो.

आ विद्याधरना दृष्टांतनो लेश सांभळी मुनिओए पूर्वे कहेला दोषोनो त्याग करवा यत्न करवो.

वळी पोते स्वाध्याय करता अने बीजाने करावता एवा मुनिओए प्रथम सोळ वचनो अवश्य जाणवा जोइए. ते सोळ वचनो श्री अनुयोगद्वारादि सूत्रोमा आ प्रमाणे आपेला छे. ३ लिंग, ३ वचन, ३ काल, १ परोक्ष, १ प्रत्यक्ष, ४ उपनय-अपनय अने १ अध्यस्थ—ए सोळ वचनो कहेवाय छे.

३ लिंग त्रण छे. १ पुरुष लिंग, २ स्त्री लिंग अने ३ नपुसक लिंग

३ त्रण वचन १ एकवचन, २ द्विवचन अने ३ बहुवचन.

३ त्रण काल. १ अतीत, २ अनागत अने ३ वर्तमान.

१ परोक्ष एटले ' ते ' निर्देशवचन.

१ प्रत्यक्ष एटले ' आ, ' प्रत्यक्षवचन.

४ उपनय-अपनय चार प्रकारे छे. जे प्रशसा वचन ते उपनय वचन–जेमके, " आ रूपवती स्त्री छे. " जे निंदावचन ते अपनय वचन छे जेमके, " आ स्त्री रूपवती छे, पण दुःशीलवाली छे. " अपनय–उपनय एटले निंदा करीने प्रशसा करवी ते. जेम " आ स्त्री कुरूपा छे पण सुशीलवती छे. " चित्तमा वीजु धारण करी, छेतरवानी बुध्धिए वीजु कहेवा इच्छता छता पण जे चित्तमा छे, ते तत्काल बोली नाखे, ते अध्यात्मवचन कहेवाय छे.

जेओ आ सोळ वचनना अज्ञात होइ सूत्रवाचनादिकमा प्रवर्त्ते छे, ते मूढ जीवो जिनवचनने उल्लंघन करनारा होवाथी जिनाज्ञाना विराधक छे, एम समजवुं, तेथी उत्तम मुनिओए प्रथम कहेला विधिथी परिज्ञान पूर्वक सूत्रअर्थनो स्वाध्याय करवो.

४ ध्यान

अंतर्मुहूर्त्त मात्र काल सुधी चित्तनो एकाग्र अध्यवसाय करवो ते ध्यान कहेवाय छे. ते ध्यान चार प्रकारनु छे. १ आर्त्त, २ रौद्र, ३ धर्म अने ४ शुक्ल. तेमा आर्तध्यान चार प्रकारे छे. १ इष्टवियोग, २ अनिष्टसयोग, ३ रोगचिंता अने ४ अग्रशोचविषय.

१ इष्ट एवा शब्द, रूप, रस, गध स्पर्श लक्षणवाला विषयोनो जे वियोग, एटले " आ मने कदि पण न थाओ, " इत्यादि चिंतववुं, ते इष्टवियोग नामे पहेलु आर्त्तध्यान कहेवाय छे.

२ " अनिष्ट शब्दादिक विषयोनो सयोग ते मने कोइ दिवस पण न थाओ. " एवुं जे चिंतवन ते अनिष्टसयोग नामे बीजुं आर्तध्यान कहेवाय छे.

३ रोगनी उत्पत्ति थता जे घणी चिंता करवी ते रोगचिताविषय नामे त्रीजुं आर्त्तध्यान कहेवाय छे.

४ देवपणानी अने चक्रवर्त्तीपणानी ऋध्धिनी प्रार्थना करवा प्रमुख अनागतकाल सबधी कार्यनो शोक करवो, ते अग्रशोचविषय नामे चोथु आर्तध्यान कहेवाय छे. आ ध्यान शोक, आक्रदन, स्वदेह ताडन आदि लक्षणोथी ओलखाय छे. ते तिर्यचनी गतिनुं कारणरूप कहेवाय छे. आ ध्यानना सभव छठा गुणठाणा सुधी छे, एम जाणवु.

दुःखी प्राणीओने जे रोवरावे ते रुद्र कहेवाय छे, ते प्राणिवध आदि

कार्यवमे परिणत एवा आत्मानु जे कर्म ते रौद्र अथवा ते रुद्रपणानो जे नाव (क्रिया) ते रौद्र कहेवाय छे ते संबंधी जे ध्यान ते रौद्रध्यान कहेवाय छे. ते रौद्रध्यानना चार प्रकार छे. १ हिंसानुबंधी, २ मृषानुबंधी, ३ चौर्यानुबंधी, अने ४ परिग्रहरक्षणानुबंधी. एवा तेना नाम छे.

१ प्राणीओना वध, बंधन दहन, अंकन अने मारणादिकनु चिंतवन ते हिंसानुबंधी रौद्रध्यान कहेवाय छे.

२ पिशुनता, सत्यासत्य अने घातादिकनु चिंतवन करवु, ते मृषानुबंधी रौद्रध्यान कहेवाय छे.

३ तीव्रकोप, लोनाकुल, प्राणीनो उपघात करवामा तत्परता, परलोकना नय तरफ उपेक्षा तथा परद्रव्यना हरणनु चिंतवन ते चौर्यानुबंधी रौद्रध्यान कहेवाय छे.

४ सर्व जनने शंकामा पाडवानी तत्परता, उपघातमा परायणता, विषय सुखनी साधकता तथा द्रव्यना संरक्षणनु चिंतवन, ते परिग्रहरक्षणानुबंधी नामे रौद्रध्यान कहेवाय छे. आ ध्यान प्राणिवधादि लक्षणोथी ओळखाय छे, तेथी ते नरकगतिनु कारणरूप थाय छे.

आ रौद्रध्याननो संनव पांचमा गुणठाणा पर्यंत जाणवो. केटलाएक आचार्यो आ ध्यानना चोथा प्रकार (परिग्रहरक्षणानुबंधी)ने छठा गुणठाणा सुधी माने छे.

धर्मध्याननु लक्षण आ प्रमाणे छे–धर्म एटले क्षमादि दश प्रकारनो धर्म, तेनाथी युक्त अथवा ते संबंधी ते धर्मध्यान कहेवाय छे. ते धर्मध्यान चार प्रकारनु छे. १ आज्ञाविचय, २ अपायविचय, ३ विपाकविचय अने ४ संस्थानविचय—एवा तेना नाम छे.

१ श्रीमान् सर्वज्ञ पुरुषोनी आज्ञानु जे अनुचिंतन, ते आज्ञाविचयनामे धर्मध्यान कहेवाय छे.

२ राग, द्वेष, अने कषायने वशवर्त्ती एवा प्राणीओना सांसारिक कष्टोनु जे चिंतवन ते अपायविचय नामे धर्मध्यान कहेवाय छे

३ ज्ञानावरणादि कर्मोना शुनाशुन विपाकनु जे चिंतवन करवु ते विपाकविचय नामे धर्मध्यान कहेवाय छे.

४ भूमंडळ, द्वीप, अने समुद्र प्रमुख वस्तुना संस्थानादिक स्वभावनुं जे विचारवुं, ते संस्थानविचय नामे धर्मध्यान कहेवाय छे

आ धर्मध्यान जिनोक्त तत्त्व पर श्रद्धा करवानु शुभचिह्नरूप छे अने देवगति आदि फलनु साधक छे. ए ध्याननो संभव चोथा अथवा पांचमा गुण ठाणाथी आरंभीने सातमा तथा आठमा गुणठाणा पर्यंत छे, एम जाणवु तेने विषे पहेला वे भेद चोथे गुणठाणे अने पहेलेथी त्रण भेद पांचमे गुण ठाणे—एटलो विशेष छे

आठ प्रकारना कर्मना मलने शोधे ते शुक्ल कहेवाय छे. ते संबंधी जे ध्यान ते शुक्लध्यान. ते शुक्लध्यान चार प्रकारे छे. १ पृथक्त्व वितर्क सप्रविचार, २ एकत्व वितर्क अप्रविचार, ३ सूक्ष्मक्रिया अप्रतिपाति अने ४ समुच्छिन्नक्रिया अनिवृत्ति—एवा तेना नाम छे.

१ जेने विषे भावश्रुतने अनुसारे अंतरंग ध्वनिरूप वितर्क-श्रुत अर्थथी अर्थांतरमा, शब्दथी शब्दांतरमा, अने योगथी योगांतरमा संक्रमे छे, वळी पोताना शुद्ध आत्मद्रव्यथी द्रव्यांतरने पामे छे, गुणथी गुणांतरने पामे छे अने पर्यायथी पर्यायांतरने पामे छे. तेने माटे कह्यु छे के,—

" श्रुतचिंतावितर्कः स्या–द्विचारः संक्रमो मतः ।
पृथक्त्वं स्यादनेकत्व, भवत्येतत् त्रयात्मकम् " ॥ १ ॥

" जे श्रुतनी चिंता ते वितर्क, संक्रम ते विचार अने पृथक्त्व ते अनेकपणु—ए त्रण वस्तुमय पहेलो पायो थाय छे. वितर्कने माटे आ प्रमाणे कहेलु छे–

" स्वशुद्धात्मानुभूत्यात्म–भावश्रुतावलंबनात् ।
अंतर्जल्पो वितर्कः स्यात्, यस्मिंस्तत् सवितर्कजम् ॥ १ ॥
अर्थादर्थांतरे शब्दाच्छब्दांतरे च संक्रमः ।
योगाद्योगांतरे यत्र, सविचारं तदुच्यते ॥ २ ॥
द्रव्याद् द्रव्यांतरे याति, गुणाद्याति गुणांतरम् ।
पर्यायादन्यपर्यायं, सपृथक्त्वं भवत्यतः " ॥ ३ ॥

आ त्रण श्लोकनो भावार्थ उपर कहेवामा आव्यो छे.

आ शुक्लध्याननो पहेलो पायो आठमा गुणस्थानथी आरंभी अगीआरमा गुणस्थान सुधी होय छे.

२ शुक्लध्याननो एकत्व वितर्क अप्रविचार नामे बीजो पायो निश्चल एक द्रव्यनु अथवा एक पर्यायनु अथवा एक गुणनु अथवा शब्दथी शब्दांतरनुं इत्यादि जे संक्रमण तेनाथी रहित छे. भावश्रुतावलंबनवडे चिंतवन करवारूप बीजो पायो बारमा गुणठाणे होय छे अने ते पछी तेरमे गुणस्थाने ध्यानांतरिका होय छे.

३ ते पछी जेने विषे केवली भगवान अत्यंत आत्मशक्तिवडे बादर काययोगमा आत्म स्वभावथी स्थिति कर्या बाद बादर मन वचन युगलने सूक्ष्म करे छे, ते पछी सूक्ष्म वचन तथा मनने विषे स्थिति करी बादरकाययोगने सूक्ष्मतामां लइ जाय छे, ते पछी सूक्ष्म काययोगमा क्षण मात्र स्थिति करी तत्काल सूक्ष्म वचन तथा मननो सर्वथा निग्रह करे छे. त्यारबाद सूक्ष्म काययोगे क्षण मात्र स्थिति करी सूक्ष्म क्रियावाळा ज्ञान स्वरूपी पोताना आत्माने पोतानी मेळे अनुभवे छे अने तेने योग्य एवा जे शुभ परिणाम तेथी पडवापणु थतु नथी. आ शुक्लध्याननो त्रीजो पायो कहेवाय छे. ए तेरमा गुणठाणाने अंते प्राप्त थाय छे.

४ जेने विषे सूक्ष्मक्रियानो पण समुच्छेद थाय छे, ते शुक्लध्याननो चोथो पायो कहेवाय छे. ते चौदमे गुणठाणे होय छे ते पछी जीव सिद्धिपदने पामे छे.

ए ध्यान अबाधा अने असमोहादि लिंग गम्य छे अने मोक्ष फळनु साधक छे एम समजवु एथी अक्रियपणाने योग्य परम विशुद्ध परिणामनी निवृत्ति पण होती नथी.

ए चारे ध्यानमा धर्मध्यान तथा शुक्लध्यान—ए बे निर्जराना हेतु होवाथी अभ्यंतर तपरूप समजवा अने आर्त्त तथा रौद्र—ए बे बंधना हेतु छे, निर्जराना हेतु नथी तेथी ते तपरूप नथी, माटे उत्तम बुद्धिवाळा पुरुषोए ते आर्त्त तथा रौद्र—बने ध्याननो परिहार करवो. अन्यथा नंदमणियार तथा कंडरीकादिकनी जेम महा दुःखनी प्राप्ति थाय छे.

५ जो के चित्तनु अति चचलपणु होवाथी मनुष्य कुध्यानने पामे छे तोपण वीर पुरुषोए प्रसन्नचंद्रादिकनी पेठे ते दुर्ध्यानने निवारवा माटे आत्म वीर्यनो उल्लास प्रकट करवो—वीर्य फोरववुं अने शुभ ध्याननो विच्छेद न थाय,

तेवो अभ्यास करवो.

६ उत्सर्ग एटले त्याज्य वस्तुनो सम्यक् प्रकारे त्याग करवो ते. ते उत्सर्ग बे प्रकारे छे. १ बाह्य अने २ अभ्यंतर. बीजा अभ्यंतर उत्सर्गमा क्रोधादिक कषायनो त्याग करवानो छे.

अहिं प्रश्न थाय छे के, उत्सर्ग प्रायश्चित्तमा आवी जायछे, तो पछी फरीवार कहेवानुं शुं कारण छे ?

तेना उत्तरमा कहेवानुं के, ए सत्य छे परंतु पूर्वे अतिचारनी शुद्धिने माटे कहेल छे अने अहीं तो सामान्यथी निर्जराने माटे कहेल छे, तेथी तेमा पुनरुक्तिनो दोष आवतो नथी.

आ छ प्रकारनो तप लोकोथी अणओळखातो होवाथी, अन्यमत वालाओए नहीं सेवातो होवाथी अने मोक्षनी प्राप्तिमा अंतरंगपणे रहेल तेथी आभ्यंतर कर्मने तपावनार होवाथी ते आभ्यंतर तप कहेवाय छे. ए प्रकारे तपनुं स्वरूप कहेवामा आव्युं. ५.

संयमनुं स्वरूप

संयम शब्दनो अर्थ आ प्रमाणे छे—सं एटले सम्यक् प्रकारे यम एटले सावद्य योगथी निवृत्त थवुं, ते संयम कहेवाय छे तेना सत्तर भेद छे. पांच प्राणातिपातादिकथी विरमवुं अने पंच महाव्रतनुं धारण करवुं ते—तेमना व्रतोनुं स्वरूप आ प्रमाणे छे.

१ त्रस स्थावरादि सर्व जीवोने मन, वचन, कायाए करी पोते हणे नहीं बीजानी पासे हणावे नहीं अने हणनारने अनुमोदे नहीं

२ तेम त्रिविध त्रिविध भागाए करी राग, द्वेष, क्रोध, मान, माया, लोभ, हास्य अने कलहादिके करी प्राणांते पण मृषावाद बोले नहीं.

ते मृषावाद चार प्रकारे छे. १ सद्भावनिषेध, २ सद्भाव उद्भावन ३ अर्थांतर अभिधान अने ४ गर्हावचन पहेला भेदमा आत्मा नथी इत्यादि मानवुं. बीजीमा श्यामाक नामे धान्य अथवा चोखा जेटलो अथवा ललाटने विषे रहेलो आत्मा छे तेम मानवुं, त्रीजा भेदमा गवादिकने अश्वादिकना शब्दे कहेवा ते अने चोथा भेदमां काणाने काणो कही बोलाववो ते.

३ चारित्रवंत साधु उपयोगवंत थइ त्रिविध त्रिविध भागे करी १ जीव-

अदत्त, २ तीर्थंकरअदत्त ३ स्वामिअदत्त, अने ४ गुरुअदत्त एवी अल्प वस्तु पण न ग्रहण करे.

A जे जीवअदत्त छे, ते सचित्त कहेवाय छे, ते पोताना विनाशनी शंका करता जीवोवडे पोते आश्रय करेल शरीरनु अर्पण न करेल होवाथी जे सचित्तने ग्रहण करे ते जीवअदत्त कहेवाय छे. शिष्यने बलात्कारे दीक्षा आपवी ते जीव अदत्त कहेवाय छे.

B अचित्त होय तोपण जेने माटे श्री तीर्थंकरनी आज्ञा न होय, एवा सुवर्णादिकने ग्रहण करवु ते तीर्थंकरअदत्त कहेवाय छे.

C तीर्थंकर प्रजुए आज्ञा आप्या छता जे वस्तु तेना स्वामीए—धणीए न आपी छता ग्रहण करवामा आवे ते स्वामि—अदत्त कहेवाय छे.

D धणीए आज्ञा आपी पण कोइ कारणने लइने जे वस्तु गुरुए निषेधली होय, जेमके, "हे मुनि, तु आ वस्तु ग्रहण करीश नहीं." ते छता लोजादिकने वश थइ ग्रहण करे तो ते गुरु—अदत्त कहेवाय छे अथवा गुरुना कह्या शिवाय जे जोजनादिक जोगववा ते पण गुरु अदत्त कहेवाय छे.

४ साधु अढार प्रकारनु मैथुन सेवे नहीं. तेमा औदारिक शरीर संबधी मैथुन मने करी सेवे नहीं, बीजाने सेववामा प्रेरणा करे नहीं अने बीजा सेवनारने सारा जाणे नहीं एम त्रण जेद थाय छे. तेवी रीते वचने करीने अने कायाए करीने एम बधा मळी नव जेदो थाय छे

एवी रीते औदारिके करी जेम नव जेद थाय, तेम वैक्रियवडे पण मैथुनना नव जेद प्राप्त थता सर्व मळी मैथुनना अढार जेद थाय छे.

संयमने उपकार करनारी उपधि शिवाय मुनिए त्रिविध त्रिविध जागे करी परिग्रहनो त्याग करवो. ते संयमने उपकार करनारी उपधिना बे प्रकार छे. १ औधिक अने २ उपग्रहिक. जे प्रवाहे करीने ग्रहण थाय अने कारणे जोगवाय ते औधिक उपधि कहेवाय छे तेना वस्त्र, पात्र, रजोहरणादि चौद जेदो छे. जे कारण छते ग्रहण कराय छे अने कारण पछ्ये जोगवाय छे, ते उपग्रहिक कहेवाय छे. ते संथारो, उत्तरपट्ट वगेरेना प्रकारे छे ते औधिक अने उपग्रहिक उपधिने विषे मुनिए ममत्वने धारण करवु नहीं. ममत्वथी रहित थइ मात्र संयमयात्राने माटे बे प्रकारनी उपधिने धारण करता छता मुनिओ निष्परिग्रहीज ग-

णाय छे तेने माटे कह्यु छे के,

" न सो परिग्गहो वुत्तो नाइपुत्तेण तायिना ।

मुच्छा परिग्गहो वुत्तो इइ वुत्तं महेसिणा " ॥ १ ॥

" त्राता एवा श्री महावीर प्रजुए ते परिग्रह कह्योज नथी, पण मूर्छाने परिग्रह कहेलो छे, अने महर्षिओए पण तेमज कह्यु छे. " १

अथवा मुनि द्रव्य, क्षेत्र, काल अने जाव ए चार वस्तुमा ममत्व करे नहीं १ तेमा द्रव्यथी उपधिने विषे अथवा श्रावकादिकने विषे २ क्षेत्रथी नगर, ग्राम, तथा सुदर उपाश्रयने विषे. ३ कालथी शरदृतु अथवा दिवसादिकने विषे. ४ जावथी शरीरनी पुष्टि आदिमा तथा क्रोधादिकमा ममत्वने धारण करे नहीं.

वली महाव्रतने उपयोगी होवाथी छठु रात्रिजोजननिवृत्तिरूप व्रत पण मुनिओए अवश्य धारण करवु. ते रात्रि जोजन चार प्रकारे छे. १ दिवसे लावेलु दिवसे जोगववु, २ दिवसे लावेलु रात्रे खावु, ३ रात्रे लावेलु रात्रे खावु, अने ४ रात्रिए लावेलु दिवसे खावु. तेने विषे दिवसे आणेला अशनादिकने ग्रहण करी रात्रे तेने उपाश्रयमा सम्यक् प्रकारे राखी बीजे दिवसे जोगववानेपेहेलो जेद, दिवसे लावेलु रात्रे जोगववु ते बीजो तथा बीजा जेदो सुगम छे. आ चार प्रकारनु रात्रि जोजन पच महाव्रतनु घात करनार होवाथी, तेमज जिनागममा तथा अन्य मतिओना आगममा तेनु निषेधपणु होवाथी, ते परिहरवाने अशक्य छे तोपण तेमा कुथु आदि सूक्ष्म जीवोनो वध होवाथी, सर्व विरति साधुओए तेनो अवश्य परिहार करवो ए रीते पचमहाव्रतना पालवा सबधी स्वरूप कहेवामा आव्यु

पाच इंद्रिओना निग्रहनुं स्वरूप

पचमहाव्रतने पालवानी इछा राखनारो मुनि शब्द, रूप, गंध, रस अने स्पर्शरूप पाच विषयोमा रागद्वेषनो त्याग करी श्रोत्र, नेत्र, घ्राण जिह्वा अने स्पर्श लक्षणवाली पाच इंद्रियोनो निग्रह करे तेमा १ सुस्वर—मधुर स्वरवाला एवा मुरज, वेणु, वीणा, स्त्री, आदिना शुभ अने काग, उट, घुवड, गधेडा, घटी अने रेंट आदिना अशुभ शब्दो साजळीने, तथा २ अलकार, गज, घोडो, वनिता, आदिनुं शुज अने कुब्ज, कुष्टी, वृद्ध, अने मृतक आदिनु अशुज

मरेला कलेवर आदिना अशुभ गन्धने सुंघीने ४ तथा खांड, साकर, मोदक आदिनो शुभ अने लुखु वासी अन्न अथवा कोहौ गयेलु अन्न, अने खारु पाणी —इत्यादिकनो अशुभ स्वाद करीने, तथा ५ स्त्री, तळाइ, अने वस्त्रादिकनो शुभ अने पाषाण, कंटक, कांकरादिकनो अशुभ स्पर्श अनुभवीने तेओ उपर ज्यारे 'आ मने इष्ट छे' एवो राग अने 'आ मने अनिष्ट छे' एवो द्वेष धारण न करे त्यारे अनुक्रमे ते श्रोत्रादिक इंद्रियोनो निग्रह थाय छे.

वळी कदि मुनिने पूर्वे भोगवेला भोग, क्रीडानु स्मरण थइ आवे, तेम वळी कुतूहलीपणाने लइने इंद्रियो उद्धत थइ जाय त्यारे मुनिए आ प्रमाणे आत्माने शीखामण देवी—

" परिमियमाउ जुव्वण—मसठिय वाहिवाहिय देह ।

परिणइविरसा विसया अणुरज्जसि तेसु किं जीव"॥१॥

आयुष्य परिमित छे, यौवनवय असस्थित छे, शरीर व्याधिवडे पीडित छे अने विषयोनी परिणति महा विरस छे, माटे हे जीव, तु एने विषे शु राचे छे"?१

जे मुनि इंद्रियोनो निग्रह करे नहीं, परतु उद्धत अश्वनी पेठे पोतानी इच्छाओने चलित करे, ते आ लोक तथा परलोकमा मोटा दुःखनु भाजन बने छे.

आ विषे श्री ज्ञाता धर्मकथा सूत्रने विषे अन्वय तथा व्यतिरेकथी बे काचबाना दृष्टांतो आपेला छे.

बे काचवाना दृष्टातो

वाराणसी नगरीनी पासे गगा नदीमा मृदंगतीर नामे एक द्रह छे. तेमा गुप्तेंद्रिय अने अगुप्तेंद्रिय नामे बे काचबाओ रहेता हता. ते बने एक दिवसे स्थलचारी जीवाओना मासनी इच्छावाला थया. तेथी तेओ द्रहनी बाहेर नीकळ्या. कोइ दुष्ट बे शीयाळोए तेमने जोया, त्यारे तेओ बने भयभीत थइ गया तत्काल पोतानो बचाव करवाने तेओ चारे पग अने ग्रीवा [1]करोटीमा गोपवी चेष्टा रहित निर्जीवनी पेठे थइ गया. पेला शीयाळीआओ बचनतायी तेमने उचा नीचा करवा लाग्या अने तेमनीपर चरणोनो आघात करवा लाग्या. तेम करवाथी तेओ ते काचबाओने काइ विकृति करी शक्या नहीं पछी तेओ श्रांत थइ त्याथी दूरे जइ एकाते स्थिर थइने रह्या.

[1] मायानी खोपरी

आ वखते जे अगुप्तेंद्रिय काचबो हतो, तेणे चपलताथी पोतानी डोकने चरणोनी बाहेर काढी, तेवामा पेला बने शीयालीओ दोडी आव्या अने तेना शरीरना कडके कडका करी तेने मरण पमाडी दीधो. जे बीजो गुप्तेंद्रिय काचबो हतो, ते अचपळ होवाथी घणा वखत सुधी तेवीज स्थितिमा रह्यो. ज्या सुधी ते बने शीयाळीआओ त्या रह्या, त्या सुधी तेणे काइ पण चपळता करी नहीं. शीयाळीआओ घणी वार बेशी थाकी गया अने पछी त्याथी बीजे स्थळे चाल्या गया हता. ते पछी ते गुप्तेंद्रिय काचबो हळवे हळवे दिशानु विलोकन करतो चाल्यो अने कुदीने पेला ड्रहमा पड्यो, पछी ते सुखी थइ रह्यो हतो.

आ प्रमाणे पाच अगोने गोपवनारा ते काचबानी जेम जे मुनि पाच इंद्रियोने गोपवनार थाय छे, ते सदा सुखी रहे छे अने पेला बीजा अगुप्तेंद्रिय काचबानी पेठे जे पाच इंद्रियोने गोपवतो नथी, ते मुनि दुःखी थाय छे, तेथी मुनिए पाच इंद्रियोनो जय करवामा यत्न करवो. इंद्रियोनो जय करवामा ते बे काचबानो उपनय दर्शावी इंद्रियनिग्रहरुप संयम कहेलो छे.

कषायजयनुं स्वरूप

पाच इंद्रियोनो निग्रह करनार साधुओए क्रोधादि चार कषायो के जेओ अनुदित छे तेमनो अनुदीरणावडे अने जेओ उदय आवेला छे, तेमने निष्फल करवावडे जय करवो—एटले निरोध करवो.

कषाय शब्दनो अर्थ

जेनाथी प्राणी कष एटले संसारने अय कहेता पामे ते कषाय कहेवाय छे. क्रोध, मान, माया, लोभ, एवा तेना चार प्रकार छे. ते चार कषायोना प्रत्येकना अनंतानुबंधी आदि चार चार भेद छे.

१ अनंत भव भमवापणे करी जेमा कर्मनो अनुबंध थाय, ते अनंतानुबंधी कहेवाय छे, तेवा अनंतानुबंधी क्रोधादिकना उदयथी जीवो सम्यक्त्वने पामता नथी, अथवा पामे तो तेओ सम्यक्त्वने वमी नाखे छे

२ जेने सर्वथा विरतिरुप प्रत्याख्यान नथी ते अप्रत्याख्यान कहेवाय छे, तेवा अप्रत्याख्यानी क्रोधादिकना उदयथी सम्यक्त्व पामेला होय तोपण तेवा जीवोने देशविरति परिणाम थता नथी अने थता होय तो अवश्य नाश पामे छे.

३ जे प्रत्याख्यानने आवरे ते प्रत्याख्यानावरणीय कहेवाय छे, तेना

उदयथी जीवो सर्वविरति परिणामने पामता नथी अने जो पाम्या होय तो तेनो विनाश थइ जाय छे. अहिं देशविरतिनो निषेध नथी.

४ जे जरा वाले-एटले परिषह उपसर्गो आवी पडतां साधुओने पण उदयिक भावमा लावे ते सज्वलन कहेवाय छे. तेना उदयथी जीवने यथाख्यात चारित्र होतु नथी, परतु तेने चारित्रना बीजा भेदो थवानो सभव छे

आ अनतानुबधी आदि कषायो अनुक्रमे जावजीव, वर्ष, चार मास अने पक्ष सुधीनी स्थितिवाला छे. अनुक्रमे १ नरक, २ तिर्यच, ३ मनुष्य अने ४ देवतानी गतिना आपनारा छे अगीयारमा गुणठाणाना अग्रभागे आरूढ थयेला साधुने पण पाछी दइ फरीथी मिथ्यात्वरूप अध कुवामा फेंकनारा छे, शुद्ध आत्म गुणना घातक छे अने सर्व अनर्थना मूल छे, माटे बुद्धिमान् उत्तम पुरुषोए तेमनो सर्वथा विश्वास न करवो, तेमनो निग्रह करवामांज उद्यम करवो. तेने माटे कह्यु छे के,—

" जा जीव वरिस चउमास पक्खगा नरय तिरिय नर अमरा ।
सम्माणु सव्वविरइ, अहक्खाय चरित्त घायकरा ॥ १ ॥
जइ उवसत कसाउ, लहइ अणत पुणोवि पडिवाय ।
न हुते विससियव्व, थोवेवि कसाय सेसमि " ॥ २ ॥

आ बे गाथानो भावार्थ उपर दर्शावेलो छे, तेमा बीजी गाथाना चोथा पदनो अर्थ एवो छे के, " थोडामां थोडो पण कषाय होय, तेनो पण विश्वास न करवो वली कह्यु छे के,-

" तत्तमिणं सारमिण, दुवालसगीइ एस भावत्थो ।
ज भवब्भमण सहाया, इमे कसाया चइज्जति" ॥ १ ॥

" तत्त्व पण आ छे, सार पण आ छे, अने द्वादशागीनो पण एज भावार्थ छे के जे भवभ्रमणमा सहायभूत एवा कषायो छे, ते त्याग करवा योग्य छे."

एवी रीते कषायजयरूप सयमनु स्वरूप जाणवु

दंडविरति स्वरूप

हवे त्रण दडनी विरतिनु स्वरूप कहे छे. उपर कहेला चार कषायोना

जितनारा मुनि मन, वचन अने कायाना त्रण दरुथी विरमे छे. अने त्रण गुप्तिने धारण करे छे. अहि आगममा कहेला विधि प्रमाणे तो अशुध्ध क्रियाथी निवृत्त थयेला अने शुध्ध क्रियामा प्रवर्त्तेला एवा मन, वचन तथा कायाना लक्षणवाला जे व्यापारो ते त्रण गुप्ति कहेवाय छे. तेमा वानरनी जेम चिंतवातु एवु जे मन तेनी चचळता घणी छे, तेने माटे कह्यु छे के,—

" लंघइ तरुणो गिरिणो, य लंघए लंघए जलनिहिवि ।
नमइ सुरासुरठाणे, एसो मणमक्कडो होइ " ॥ १ ॥

" मन रुपी मर्कट वृक्षोने ओलंघे छे, पर्वतोने अने समुद्रोने ओलंघे छे अने सुर—असुरोना स्थानमा भमे छे. " १

एज कारणथी ते मन मुनिने पण दुर्जय छे. अने सर्व कर्मोने बांधवामा मुख्य कारण छे, तेथी तेने वमन करवाने इच्छता एवा मुनिओए बहु प्रकारनी असद्भावना परिहरीने बार प्रकारनी सद्भावनाने विषे उत्तम प्रकारे विशेष आदर करवो. तेम करवाथी तेवु चंचल चित्त पण सुखे करीने वशवर्त्ती थाय छे, ए मनो गुप्ति कहेवाय छे.

बीजी वचन गुप्तिने चिंतवतो एवो साधु सझाय ध्यानना समय शिवाय बीजे अवसरे घणु करीने मौनपणु धारण करीने रहे छे अने भ्रूकुटी तथा हस्तादिकनी संज्ञा पण करतो नथी कदि कोइ तेवु कार्य आवी पडे तो ते सत्य तथा असत्य अमृषा वचन बोले छे. एटले के जे वस्तु ' प्रतिष्ठासया ' एटले वस्तु स्थापवाना आशयथी बोलाय छे, ते सत्य कहेवाय छे—जेमके " जीव छे, जीव कर्त्ता छे, कर्मनो भोक्ता छे इत्यादि " जे ' प्रतिष्ठासा विना ' एटले आशय स्थाप्या विना बोले, ते असत्य अमृषा कहेवाय छे, आमंत्रण तथा आज्ञापनादि— आणाववा प्रमुख जेमके " देवदत्त, आ कार्य तु कर " इत्यादि" अहीं तेज सत्य छे, जे सांभळनारने प्रिय—निरवद्य होय तेवुज वचन बोले तेथी अप्रिय अने सावद्य होय ते कदि साचु होयतो तेनाथी क्रोधनी उत्पत्ति तथा जीव घातादिक घणा अनर्थोनु ते कारण होवाथी तेमज असत्य प्राय होवाथी तेनो परिहार करवो

वळी प्रयोजनविना वाचाळनी परे निरवद्य पण यथातथा—जेम तेम बोलवु

नहीं. जे साचु पण प्रिय होय ते बोलवु, तेने माटे आ प्रमाणे कह्यु छे.

" नृपसचिवेश्यनरार्दी–स्तथैव जल्पयति न खलु काणादीन्।
न च सदिग्धे कार्ये–जापामवधारिणीं ब्रूते " ॥ १ ॥

" राजा, मत्री अने लक्ष्मीवान् आदि शब्दथी सामत, शेठ तथा सार्थवाह वगेरेने तेमना नामथी बोलाववा. काणाने काणो वगेरेथी बोलाववो नहीं. जे कार्यमा सदेह होय, तेमा निश्चय बतावनारी जापा बोलवी नहीं. " १

ते विषे आचारांग सूत्रने विषे पण आ प्रमाणे कहेलुं छे

" तेयावन्ने तहप्पगाराहिं जासाहि बूयानो कुप्पंति माणवा तेआवि तहप्पगारा तहप्पगाराहिं भासाहिं अनिकंखजासिज्जत्ति। " न च काणादिष्वपि अय न्यायोऽनुसर्त्तव्य ।

जे जेवा होय, तेने तेवा प्रकारनी भाषावडे बोलावता माणस काम करे नहीं, तेथी तेमने तेवाज प्रकारनी जापावमे बोलावे, पण ए न्याय काणाने काणा कहेवा वगेरेमा अनुसरवो नहीं.—एटले काणाने काणो कही बोलाववो नहीं. आदि शब्दथी कुष्टीने कुष्टी, लंगडाने लगडो अने चोरने चोर वगेरे समजवु.

ते विषे आगममा आ प्रमाणे कहेलु छे—

" तहेव काण काणति पडगं पडगति वा ।
वाहिअ वा रोगित्ति तेण चोरति नावए्त्ति " ॥१॥

" काणाने काणो, व्याधिवालाने व्याधिवाला, रोगीने रोगी, अने चोरने चोर–एम बोलवु नहीं. तेम सदेहवाला कार्यमा पण एमज न्याय छे–तेथी ए प्रकारनी अवधारिणी जापा बोलवी नहीं. मुनिएतो वर्त्तमान योग एम बोलवु जोइए.

तेने माटे कह्यु छे के,

" आउस्स न विस्सासो, कज्जस्स वहूणि अतरायाणि ।
तह्मा साहूण वट्ट–माणजोगेण ववहारोत्ति " ॥ १ ॥

" आयुष्यनो विश्वास नथी अने कार्य करवामा घणा अतरायो रहेला

छे, तेथी साधुने वर्त्तमान योगवडे बोलवानो व्यवहार छे." १

वळी " आ वाछडा धुसरी खमवाने योग्य थयेला छे, एटला आवाना फल जक्षण करवा लायक छे, आ वृक्षो स्थभ, जार, वल्ल, शय्या अने आसन प्रमुखने योग्य छे, ए शाळी, गोधम आदि अन्न लाणी करवाने योग्य थयेला छे." आवा प्रकारना वचनो साधुए बोलवा न जोइए. कारणके, साधुना वचनो प्रतीतिपात्र होवाथी ए वृषजादिकने गाडे जोडवा प्रमुख क्रियानो काल थइ गयो छे, एम निश्चय करी सांजलनार पुरुषो तेमना दमनादि कार्योमा प्रवर्त्ते तेथी मोटो आरंज थवानो संजव छे तेम माता, पिता, जाइ, व्हेन आदि स्वजनोने " हे मात, हे तात, हे जाइ, हे व्हेन " इत्यादि जाषावडे साधु बोलावे नहीं, कारण के, साधु लोकाचारथी रहित होवाथी लोक सबंधीना जाषणनो अनधिकारी, छे, तेने माटे आ प्रमाणे कहेलु छे—

" दम्मे वसहे खज्जे, फले थंजाइ समुचिए रुक्के ।
गिज्जे अन्ने जणयाईयत्ति, सयणे वि न लवेइ" ॥१॥

आ गाथानो अर्थ उपर आवी गयो छे. अहीं विशेष कहे छे के,—

" राजेश्वराद्यैश्च कदापि धीमान्, पृष्टो मुनिः कूपतडागकार्ये।
अस्तीति नास्तीति वदेन्नपुण्य, जवति यद्भूत वधांतराया."॥१॥

" राजा, धनाढ्य वगेरे कदि कुवा के तलाव करावयाना कार्यमा मुनिने पुण्य विषे पूछे तो बुद्धिमान् मुनि तेमा ' छे अथवा नथी ' एम कहे नही. कारण के, तेम एक वात कहेवाथी प्राणीओनो वध अने अतराय थाय छे." १

विशेषार्थ एवो छे के, कोइ युवराज, धनाढ्य के गामनीओ पुरुष कोइ वखते मुनिने पुछे के कुवो के तलाव करावयामा पुण्य छे के नहीं? अथवा पाणीनी परब मंडाववामा पुण्य छे के नहीं ? तेना उत्तरमा बुद्धिमान् एटले सम्यक् प्रकारे आगमना जाण एवा मुनि " कुवो के तलाव करावयो तेमा महा पुण्य छे अने न करावयो तेमा काइ पण पुण्य नथी, एम बे प्रकारे मुनि बोलता नथी. कारण के, जो मुनि ' पुण्य छे ' एम बोले तो प्राणीनो वध थाय छे तेना शोषण समये जलने आश्रीने रहेला सेवाळ प्रमुख अनतकायोनो तथा पूरा, शंख, मत्स्य, देडका, आदि त्रस जीवोनो प्रत्यक्ष विनाश देखावाथी अने मत्स्यादिकनु मांहोमाहे ज-

क्षण होवाथी, पाप लागे छे अने जो 'पुण्य नथी' एम बोलवामा आवे तो अंतरायनो दोष थाय. कारण के, घणा पशु, पक्षी, मनुष्यो जे तृषार्त्त होय छे, तेमना जलपाननो व्यवच्छेद होवाथी पण पापनो संभव छे, तेथी मुनिए तेमा मौननुं आलंबन करवुं अथवा एवा लौकिक कार्यमा अमारे जाणपण करवानो अधिकार नथी एम कहेवुं ते विषे सूत्रकृतांगना बीजा सूत्रमा आ प्रमाणे कहेलुं छे

" तहा गिर समारम्भेअत्थि पुण्णति नो वए ।
अहवा नत्थि पुण्णति एवमेयं महब्भय ॥ १ ॥
दाणट्ठयाइ जे पाणा हम्मंति तस थावरा ।
तेसि सा रक्खणठाए तम्हा अत्थित्ति नो वए ॥२॥
जेसि त उवकप्पेइ अन्नपाणं तहाविह ।
तेसि लाभंतरायंति तम्हा नत्थित्ति नो वए ॥ ३ ॥
जे अ दाण पसंसंति वहमिच्छंति पाणिणं
जे अण पडिसेहंति वित्तिच्छेअ करंति ते ॥ ४ ॥
दुहओवि न भासंति अत्थि वा नत्थि वा पुणो ।
आयंरयस्स हिच्चाण निव्वाण पाउणंति ते " ॥ ५ ॥

"(आ अमारा अनुष्ठानथी पुण्य छे के पाप छे ? एम मुनिने पूछता) ते आ समारंभमा पुण्य छे एम पण न कहे तेमज तेमा पाप छे एम पण न कहे" केमके ए प्रकारे महाभय थाय छे.१

"दानने अर्थे (अन्न पाणी अपाववा माटे) जे त्रस अने स्थावर जीवो हणाय छे ते जीवोने राखवाने माटे आ तमारा अनुष्ठाने पुण्य छे एम पण साधु न कहे" २

"जे लोकने माटे अन्नपाणी तथाविध नीपजावे छे ते लोकने माटे निषेध करे तो लाभांतराय रूप आहार देवानुं विघ्न प्राप्त थाय तेथी पुण्य नथी एम न कहे"३

"कोइ यति दाननी प्रशंसा करे तो ते प्राणीना वधनी इच्छा करे छे अने जे कोइ यति निषेध करे छे ते अनेक जीवोनी आजीविकानो छेद करे छे"४

" 'हा' 'ना' बने प्रकारनी जापा बोले नहि केमके कर्मरजनो तेथी लाज थतो जाणीने तेवी जापा त्याग करे ते निर्वाणपद पामे छे." ५

जेम कालिकाचार्ये दत्तनी आगळ सत्य वचन कह्यु हतुं, तेम पुण्यना अर्थी मुनिए आपत्तिने विषे पण सत्य वचन बोलवु, मृषा बोलवु नहीं.

दत्त अने कालिकाचार्यनी कथा

तुरमिणी नगरीमा श्री कालिकाचार्यनो भाणेज दत्त नामे हतो. ते राजा नो पुरोहित हतो तेणे छले करी पोताना स्वामी राजाने बंदीखाने नाखी पोते स्वतंत्र राज्यना जारने वहन करनार थयो हतो. एक वखते ते मातानी प्रेरणाथी कालिकाचार्य पासे गयो. त्या तेणे उन्मत्तपणे धर्मनी ईर्ष्याथी क्रोध सहित आग्रह पूर्वक कालिकाचार्यने यज्ञ करवानु फल पुछ्यु. ते वखते सूरिये धैर्यनु अवलंबन करी कह्यु के " यज्ञ हिंसारूप छे अने यज्ञनु फल नरक छे." आ प्रमाणे तेमणे जे सत्य हतु, ते कह्यु, अन्यथा कह्यु नही ते वखते दत्ते पुनः पुछ्यु के, " एमा निश्चय शु छे." अने ते वचनमा विश्वास शी रीते पडे ? " गुरुए कह्यु के, आजथी सातमे दिवसे कुतराए जक्षण कराएल कुंजीमा पडशो, पछी हवे तेमा शो निश्चय करवो छे ?" तेम छता तेणे पाछो प्रश्न कर्यो के, 'एथी शु ?' त्यारे सूरिजीए कह्यु, " तेज दिवसे अकस्मात् तारा मुखमा विष्टा पडशे." आ सांजळी अति क्रोधायमान थयेला दत्ते कह्यु, के, " तमे शी रीते मरण पामशो ?" गुरु बोल्या—" हु समाधिवडे मृत्यु पामीश अने पछी हु स्वर्गे जवानो छु." सूरिना आ वचन सांजळी हुंकार करतो दत्त घेर आव्यो अने सूरिनु वचन व्यर्थ करवाने पोते पोताना घरमा सुजटोथी वींटाइ समाधिथी छानोमानो रह्यो. ज्यारे सातमो दिवस आव्यो, एटले ते बुद्धिना मोहथी तेने आठमो दिवस मानी अने ' आजे आचार्यना प्राणथीज शांतिक कार्य करु ' एवु धारी ते घरनी बाहेर नीकल्यो, तेवामा कोइ एक माळी नगरीमा पेसतो हतो, तेवामा तेने दस्तनी हाजत लागी एटले कार्यनी आकुलताथी तेणे राजमार्गमा उत्सर्ग करी ते उपर पुष्पोथी आछादन करी चालतो थयो. आ अरसामा दत्त पोतानो घोडो चलावतो तेज मार्गे आव्यो अने पेली ढांकेली विष्टा उपर घोडो चाल्यो एटले तेमाथी विष्टानो जरा जाग उड्यो, ते तेना मुखमा पडी, विष्टाना स्वादथी ते चमक्यो अने तेना जाणवामा आव्यु के आजे आठमो दिवस नहीं, पण सा-

तमो दिवस हशे, तत्काल खेद पामीने ते पाछो फर्यो तेज दिवसे दत्तना घणा दुराचारोथी कटाळी गयेला मंत्रिओए पेला शत्रु राजाने पांजरानी बाहेर काढयो अने राज्य उपर बेसार्यो अने पाछळथी दत्तने बांधी राजाने सोंपी दीधो. राजाए तेने कुंभीमा नाखी नीचे अग्नि सळगावी कुतराओने छुटा मुकी तेने कदर्थना पमाडी मारी नखाव्यो, ते मरीने नरके गयो अने आचार्य जगवान् राजा प्रमुख थी बहुमान पाम्या हता.

आ प्रमाणे वचन गुप्तिने विषे श्री कालिकाचार्यनो वृत्तांत ध्यानमा लइ मुनिओए वचन गुप्ति धारण करवी.

कायगुप्ति

कायगुप्तिना चिंतवनमा मुनि कायोत्सर्ग करीने अथवा पद्मासनादिके क री शरीरनो व्यापार रोके अने तथाप्रकारनु गमन, शयनादिक कार्य उत्पन्न थ तां शरीरने प्रवर्त्तावबाथी मगले मगले मारा शरीरवमे कोइ जीवनो वध न था- ओ एवी यतना चिंतवे कारणके, यतना विना मगले मगले छकाय जीवनो वि घात थाय छे तेने माटे कह्यु छे के,

" गमणठाण निसीयण–तुअट्टणगीहण निसरणाइसु ।
काय असंवरतो छण्हंपि विराहओ होई " ॥ १ ॥

" मुनि गमन, स्थान, निसीदन, तुअर्त्तन[1]. ग्रहण, निक्षेप आदि कार्य मा कायाने संवरे नहीं तो ते विराधक थाय छे. "

आ प्रमाणे कायगुप्ति कहेवाय छे. ए त्रिविधगुप्तिने कहेवावमे सत्तर प्रकारे संयम कहेलो छे.

हवे दशविध यति धर्मना बाकी रहेला चार सत्यादि भेदो आ प्रमाणेछे.

७ सत्य—एटले मृषावादनी विरति ८ शौच—एटले संयममा निर तिचारता—निरपेक्षपता. ए अकिंचन एटले निष्परिग्रहपणु. १० ब्रह्मचर्य ए- टले सर्वथा कामक्रीडानो निषेध.

अहिं केटलाएक भेदोनु अन्यमा अंतर्भूतपणे होवाछता पृथक ग्रहण करवु ते तेनी स्पष्टता करवा माटे छे एम सद्बुद्धिवानाओए जाणी लेवु.

एवी रीते दश प्रकारनो यतिधर्म कहेवामा आव्यो

[1] आळोटवु.

ए अत्यंत दुर्लभ एवा मुनिधर्ममा निर्ग्रंथोए सर्वथा प्रमादनो परिहार करवो, ते देखाने छे—

" नवसय सहस्स दुलहे, जाइ जरा मरण सागरुत्तारे ।
जइ धम्मंमि गुणायर, खणमविमाकाहिसिपमाय " ॥१॥

" हे गुणव्रत मुनि, लाखो नवे करीने दुर्लभ अने जन्म, जरा, मरणरुप, समुद्रने उतारनार एवा यतिधर्ममा क्षण मात्र पण प्रमाद करीश नहीं, कारण के, ते मोटा अनर्थनो हेतुरुप छे. कह्युं छे के,—

" सेणावईमोहनिवस्स एसो, सुहाणज विग्घकरोदुरप्पा ।
महारिऊ सव्वजियाण एसो, कयावि कज्जो न तओ पमाओ" १

" जे कारण माटे आ दुरात्मा प्रमाद मोहराजानो सेनापति छे, ते कारणे ते मोक्षादिक सुखोमा विघ्न करनारो छे अने ते विघ्न करनार होवाथी सर्व जीवोनो महान् रिपु छे, तेथी जेणे परमार्थने जाणेलो छे, एवा मुनिए कोइ काळे पण ए प्रमादने करवो नही. " १ वळी कह्यु छे के,—

" थोवोवि कयपमाओ जइणो संसारवड्ढणोभणिओ ।
जह सो सुमगल मुणी पमाय दोसेण पयवढ्ढो " ॥१॥

" यतिने थोडो पण प्रमाद ससारनी वृध्धि करनारो कहेलो छे, तेवा थोडा प्रमादना दोषथी सुमगळ मुनि चारगतिथी पगे वधाया हता. " १

सुमंगळ मुनिनो वृत्तांत

आ भरतक्षेत्रने विषे सुमगळ नामे एक आचार्य पाचसो शिष्योथी परिवृत हता. तेओ अप्रमत्त थइ सर्वदा शिष्योने वाचना देता हता. एक वखते वात व्याधिवडे आचार्यनी कटीमा वेदना उत्पन्न थइ आवी, तेथी तेओ वाचना देवाने अशक्त थइ गया ते वखते तेमणे पोताना शिष्योने कह्युं, " हे शिष्यो, तमे कोइ गृहस्थना घरमाथी योगपट्ट लावो " ते वखते एक शिष्ये गुरुनी भक्तिथी योगपट्ट लावी गुरुने आप्यो गुरुए तेने कटीप्रदेशमां स्थापन कर्यो अने तेना योगथी पर्नोठी वाळी एटले तेओ अति सुख पाम्या. पछी आचार्य ते योगपट्टने एक क्षणवार मुकता न हता. तेवी रीते केटलाएक दिवसो गया पछी शिष्योए आचा-

येने कह्यु, " भगवन्, आपने शरीरे हवे आराम थयो छे, तेथी तमारे गृहस्थने योगपट्ट पाछो आपवो जोइए, अने आपे आ प्रमादना स्थाननो त्याग करवो जोइए कारण के, थोडा पण प्रमादथी संसारनी वृद्धि थाय छे." आचार्ये कह्यु, " शिष्यो, आ योगपट्ट धारण करवामा शो प्रमाद थाय छे. आ योगपट्ट तो मारा शरीरने सुख करनारो छे, ते प्रमादनु स्थान नथी " गुरुना आवा वचनो साभळी ते विनीत शिष्यो मौननु अवलंबन करीने रह्या हता

केटलोक समय गया पछी ते मुमगळ आचार्य श्रुतना उपयोगथी पोतानु आयुष्य पूर्ण थवानो अवसर जाणी अने एक विशिष्ट गुणवाळा शिष्यने सूरिपदे स्थापी पोते सलेखना करी काळनी राह जोइ रह्या हता, ते वखते शिष्यो शुभध्यानोपगत गुरुनी निझामणा करता आ प्रमाणे बोल्या—" हे स्वामी, व्रतग्रहण कर्या पछी आज सुधीमा जे काइ प्रमाद स्थान सेव्यु होय तो ते आप आलोवो-पडिक्कमो. ' शिष्योना आ कथनथी सूरिए योगपट्ट धारण करवा शिवायना बीजा जे जे प्रमादना स्थान हता ते आलोव्या अने पडिक्कम्या त्यारे शिष्योए कह्यु, " स्वामी, योगपट्ट धारणनो प्रमाद पण आलोवो. " शिष्योनु आ वचन साभळी आचार्य कोपानळथी प्रज्वलित थइ बोल्या—" अरे शिष्यो, तमारी मति दुर्विनीत छे, जेथी तमे अद्यापि योगपट्टथी थयेला मारा दूषणने ग्रहण करो छो " आ प्रमाणे गुरुने कोपायमान थयेला जाणी तेओ विनयपूर्वक बोल्या—" स्वामी अमारो अपराध क्षमा करो अमोए अजाणता तमोने अप्रीति वचन कहेलु छे, आजथी हवे अमे बोलीशु नहीं " शिष्योना आ वचनथी सूरिनो कोप शात थइ गयो, पण तेमनु ध्यान योगपट्टने विषे रह्यु, तेओ ए प्रमाद स्थानने आलोव्या विना काळ करी गया. ते पछी तेओ ए दोषने लइने कुडागार नगरना राजा मेघरथनी विजया नामे देवीना उदरमा गर्भपणे उत्पन्न थया प्रसव समये जेना पग कटीपर वींटाएला चामडा पट्टे बांधेला छे, एवो ते पुत्र उत्पन्न थयो राजाए तेनो जन्मोत्सव कर्यो अने बारमे दिवसे ते पुत्रनु नाम दृढरथ पाड्यु पाच धात्रीओथी लालन करातो ते बाळक ज्यारे आठ वर्षनो थयो त्यारे तेने कलाचार्यने सोंप्यो अने ते अनुक्रमे बोंतेर कळामा प्रवीण बनी गयो ते कळाओमा ते सगीतकळामा विशेष निपुण थयो कुमार दृढरथने सगीतकळामा विशेष निपुण जाणी घणा गवैयो पोतपातानी कळा बतावबाने तेनी पासे आववा लाग्या ते

चतुर कुमार एटलो बधो संगीत कुशल हतो के जेथी कोइ पण गायक तेना मनने रंजन करवा समर्थ थइ शकतो नहीं. राजकुमार दृढरथ उंची जातना संगीतने जाणनारा गायकोनी कदर करतो तेमने घणुं द्रव्य आपी संतोष पमाडतो हतो तेओ तेनाथी संतोष पामी देश देशांतरमां ते दृढरथनी कीर्त्तिने विस्तारता हता.

आ प्रमाणे दृढरथकुमार पोतानो समय सुखे प्रसार करतो हतो. एक समये जे पेला पांचसो शिष्यो हता, तेओमांथी निर्मल ज्ञान, दर्शन अने चारित्रने धरनार जे शिष्य सुमंगलसूरिना आचार्यपद उपर आवेल, ते अने बीजा शिष्योए अवधिज्ञानथी जाण्युं के, पोताना गुरु सुमंगलाचार्य दृढरथ कुमार थइ अवतर्या छे. आथी पोताना गुरुना स्वरूपनुं दर्शन करवा तेमनी इच्छा थइ अनार्य क्षेत्रमां कुमार दृढरथ रूपे गुरुनो अवतार थयेलो जाणी तेमना मनमां खेद उत्पन्न थयो अने तेओ प्रमादना आचरणने धिक्कारवा लाग्या. तेओए कह्युं के, प्रमादना थोडा पण आचरणथी आ अमारा गुरुना जीवनी आ दशा थइ छे. जेओ संसारमां आ प्रमाणे प्रमादनुं सेवन करशे, तेओ अमारा गुरुनी जेम बहु प्रकारे दुःखना भाजन बनशे." तेओ आ प्रमाणे चिंतवता हता, तेवामां तेमना आचार्यपद उपर आवेला शिष्यना मनमां विचार उत्पन्न थयो के, "हवे कोइ पण उपाय करी गुरुना जीवने अनार्य क्षेत्रमांथी आर्य क्षेत्रमां लावायतो वधारे सारुं." आवो विचार करी तेमणे बीजा शिष्योने ते वात निवेदन करी. पछी कोइ एक योग्य शिष्यने गच्छनो भार सोंपी ते आचार्य अनार्य देशमां शुद्ध आहारनी दुर्लभता मानी तेवा दृढ संयमणथी महातप तथा चारित्र पालवानी शक्तिवाला केटलाएक साधुओने साथे लइ गामोगाम विहार करी अनार्य देशमां आव्या. त्यां आवतां तेमणे आहारनी गवेषणा न करवाथी जारे परिश्रम पड्यो हतो. यानक नामना अनार्य देशमां आवेला कुडागार नगरमां तेओ आवी पोहोच्या. ते नगरनी समीपे आवेला एक उद्यानमां तेओ दाखल थया. त्यां शुद्ध भूमिने पर्ची लेही अने इन्द्रादिकनो अवग्रह लइ तेओ रह्या हता.

आ नगरना वासीओ के जेओए साधुना रूपने कदिपण जोयेलुं नहीं, तेओ आ साधुओने जोइ आश्चर्य पामी गया. तेओए तेमनी समीपे आवीने आ प्रमाणे पुछ्युं, "तमे कोण छो?" साधुओए कह्युं, "अमे नट छीए." त्यारे लोकोए कह्युं, "जो तमे नट होतो राजानी पासे जाओ, एटले तमोने यथेष्ट ध-

न प्राप्त थशे " साधुओए कह्यु, " अमे कोइनी पासे जता नथी, जेओ अमारी पासे आवे तेमने अमे अमारी नृत्य कळा बतावीए छीए " लोकोए प्रश्न कर्यो." जो तमे राजानी पासे नहीं जाओ तो भोजन क्याथी करशो ? " त्यारे साधुओ बोल्या—" अमे भोजन करता नथी. " आ सांभळी लोको विस्मय पामी गया पछी ज्यारे साधुओ पडिलेहणा तथा प्रतिक्रमण करता, त्यारे केटलाएक लोको आवी तेमने पुछवा लाग्या के " तमे आ शु करो छो " साधुओ बोल्या, " अमे आ नृत्य सबधी परिश्रम करीए छीए " ते सांभळी लोको पोताने स्थाने चाल्या गया. लोकोना मुखथी वृत्तात नगरमा फेलायो. ते राजाना साभळवामा आव्यो ते साभळी विस्मय पामेलो राजा तेमनु स्वरूप जोवाने माटे उद्यानमा आव्यो. तेणे आवी साधुओने पुछ्यु, "तमे कोण छो ? क्याथी अने शा प्रयोजनने माटे तमे अहीं आव्या छो ? " आचार्ये कह्यु, " अमे नट छीए तमोने अमारी कळा देखाडवाने दूरथी आव्या छीए. " राजाए कह्यु, त्यारे तमारु नृत्य मने बतावो—" साधुओ बोल्या—' देवानुप्रिय, जे सगीत कळामा निपुण होय, तेनी आगळ अमे नाटक करीए छीए. " त्यारे राजाए कह्यु, " मारो पुत्र दृढरथ ए सर्व जाणे छे. " गुरु बोल्या—" तेमने अहीं सत्वर बोलावो. " आ उपरथी राजाए राजकुमार दृढरथने बोलावा एक पुरुषने मोकल्यो ते पुरुष राजकुमारने तेडवा गयो. राजकुमार पालखीमा बेशीने त्या आव्यो. तेणे आवी साधुओने कह्यु, " तमे सगीत शास्त्रमा कुशल हो तो प्रथम सगीतना भेदो बोलो, " ते वखते आचार्ये श्रुतना बळथी सगीतना बधा भेदो कुमारनी आगळ कही सभळाव्या ते सांभळी कुमार अत्यत विस्मय पामी गयो अने मनमां चिंतववा लाग्यो के, " अहो ! आ तो सगीत शास्त्रमा प्रवीण लागे छे आना जेवो बीजो कोइ नटाचार्य नथी, माटे तेनी नृत्यकळा हमणाज जोइए " आ प्रमाणे चातवी तेणे साधुने आ प्रमाणे कह्यु,—' नटो, तमे नृत्य करो, जेथी तमारी नृत्यकळानी परीक्षा करी शकाय त्यारे आचार्ये कह्यु के, प्रथम नृत्यना उपकरणो मगावो त्यारे कुमारे पोताना माणसो मोकली नृत्यना सर्व उपकरणो मगाव्या ते पछी आचार्ये वादित्रनो ध्वनि करता पेहेला मधुर स्वरे करी तेवा प्रकारनो आलाप कर्यो जे साभळी सर्व श्रोताओ चमत्कार पामी गया अने जेम चित्रमा आलेखेला होय, तेम स्तब्ध थइ गया

आ वखते आचार्य नृत्यना आरंभमा आ ध्रुवपद गाया हता.

" छि छि पमाय लडिय सुमगलो वच्छभेरिसिपत्तो ।
किं कुणिओ अवडया पसरति न अम्हगुरुपाया " ॥१॥

हे वत्स, आ प्रमादना लालित्यने धिक्कार हो, के जेथी सुमंगल आवी दशाने पाम्या ! पूर्व कर्मना दोषथी अमारा गुरुना चरण प्रसरता नथी, तेमा अमे शु करीए ? अमारो शो उपाय ?

ते पछी आचार्यना कहेला वाक्योने बीजा साधुओए मोटे स्वरे उचार्या अने तेमा वीणादिक वाद्यो वगाड्या राजकुमार दृढरथ वारंवार गणाता ते ध्रुव पदने साभळी पोताना चित्तमा विचार करवा लाग्योके, "आ साधुओ शु गाणे छे?

सुमगल कोण अने तेणे केवी रीते प्रमाद कर्यो ? राजकुमारे एवी रीते वारवार उहापोह करवा माड्यो, तेवामा ते तत्काल मूर्छा पामी भूमि उपर पडी गयो. ते वखते सर्वत्र हाहाकार थइ गयो तत्काल राजादिके तेनो शीतोपचार करवा माड्यो. क्षणवारे चेतना पामी ते कुमार पोताना पूर्व भवने संभारी ते पूर्वना शिष्योने देखी आ प्रकारे विलाप करवा लाग्यो—" अहो ! आ संसार दुःखमय छे अने कर्मनी गति विचित्र प्रकारनी छे आ ससारमा दुष्कर्मना उदयथी थयेला प्रमादना दोषे करी आ जीवो बहु प्रकारना दुःखने अनुभवे छे. हु लगार प्रमादने आचरवाथी आवी दशाने पामी गयो. "

कुमारने आम चिंतवतो अने विलाप करतो देखी राजाए चिंतव्यु के, "निश्चे आ साधुओए मारा कुमारने घेलो करी दीधो, माटे तेमने हणवा जोइए" आवु चितवी राजाए रोषथी सेवकोने ते साधुओने बदीवान करी वध करवानी आज्ञा आपी ते वखते कुमारे कह्यु " हे पिता, आ पुरुषो तो हितकर्ता छे अने परना कार्य साधनारा छे, माटे ते पूजवायोग्य छे वध बंधन करवाने योग्य नथी. " कुमारना आ वचन साभळी राजाए ते आज्ञा पाछी खेंची लीधी अने ते साधुओनी बहुभक्तिपूर्वक सेवा करी.

ते पछी कुमारे एकांते जइ ते साधुओने आ प्रमाणे कह्यु, " हे देवानुप्रिय, आ अनार्य क्षेत्र छे. अही वसनारा लोको पण अनार्य छे. आ स्थळे सारा धर्मनी वार्ता पण साभळवामा आवती नथी, तेथी अहि मारी शी गति थशे? "

आचार्य बोल्या–"भद्र, तमे अमारी साथे आवो, जेथी तमारा कार्यनी सिद्धि थशे."
राजकुमार बोल्यो—" महाराज, मारा चरण रंधाइ गया छे, तेथी हु चालवाने समर्थ नथी, तेथी आगळ जता मारो शी रीते निर्वाह थशे ?" आचार्ये जणाव्यु, " भद्र, ज्यार तमे हळवे हळवे आर्यक्षेत्रमा आवशो, एटले आ साधुओ तमारी वैयावच्च करशे " आ आचार्यना आ वचन सांभळी कुमारने हिंमत आवी पछी ते पोताना माता पिता पासे आवी आ प्रमाणे बोल्यो—"हे माता पिता, जो आप आज्ञा आपो तो हु आ महान् कलाचार्य पासे कला शी खवाने जाउ " माता पिता मोहातुर थइने बोल्या—" वत्स, अमे तारो वियोग सहन करवाने समर्थ नथी माटे ए नटोने अहींज राखी कलानो अभ्यास कर " राजकुमार बोल्यो, " ए वात सत्य छे, ए लोको परदेशी छे, तेम आपणा द्र व्यने लेनारा नथी, तो तेओ अहीं शी रीते रहे ? तेथी बीजा सर्व विचार छो डी दइ मने तेमनी साथे जवा आज्ञा आपो जेथी हु तेमनो साथ संगीत क लानो संपूर्ण अभ्यास करु " राजकुमारनो आवो अति आग्रह जाणी माता पिताए तेने आज्ञा आपी ते साथे तेने बेशवाने एक शिबिका, अने केटलाक माणसो आप्या. राजकुमार खुशी थइ शिबिकामा आरूढ थइ तेमनी साथे चाल्यो तेनी पाछळ साधुओ चालवा लाग्या, अनुक्रमे तेओ अनार्य क्षेत्र उल्लंघन करी आर्यक्षेत्रने प्राप्त थया. एटले कुमार ते शिबिकाने पाछी वाळी मुकी साधुओए ते आर्य क्षेत्रमा आवी कोइ एक नगरमा भिक्षाने माटे जइ शुद्ध आहार लावी पोते करेला लांबा तपनु पारणु कर्यु ते वखते राजकुमारे कह्यु, " भग वन, हवे मारे शु करवु ? " आचार्य बोल्या,—" तमे व्रत ग्रहण करो. " सू रिवरनी आवी आज्ञाथी ते कुमारे चारित्रने ग्रहण कर्यु. पछी तेना पूर्व भवना शिष्यो खेद रहित थइ तेनी वैयावच्च करवा लाग्या पछी अनुक्रमे तेमना पोताना गच्छना बीजा साधुओ एकठा थइ आव्या अने तेओ अत्यंत आनंद पामी गया. ते कुमारमुनि महा तपस्वी थया. चारित्र ग्रहणथी मांडीने तेमणे याव ज्जीवित उग्र तप कर्यु अने अप्रमत्तपणे संयमने पाळ्यो. अनुक्रमे आयुष्यनो क्षय थतां समाधि पूर्वक काळ करी तेओ नवग्रैवेयकमा देवपणे उत्पन्न थया हता, त्याथी चवीने महाविदेह क्षेत्रने विषे तेओ सिद्धिपदने प्राप्त थशे बीजा पण सा धुओ संयमनी आराधना करी अनुक्रमे उत्तम गतिने प्राप्त थया हता. ए प्र-

कारे प्रमाद उपर सुमंगलमुनिनुं दृष्टांत छे. आ दृष्टांत उपरथी प्रमादना लेशथी उत्पन्न थयेला कर्मनो विपाक केवो विषम छे ? तेनो विचार करी संसारभीरु एवा मुनिओए सर्वदा प्रमादनो परिहार करवो जोइए.

हवे प्रमादनो परिहार करी संयम पालवामां उजमाल थयेला मुनिओ मननो निग्रह करवा प्रमुख कार्यमां जे बार सद्भावना भावे छे, तेनुं स्वरूप कहेवामां आवे छे.

" पढम मणिच्च मसरणं संसारो एगया य अन्नत्त ।
असुइत्त आसवसंवरोय तह निज्जरानवमी ॥ १ ॥
लोग सहावो बोहि–दुल्लहा धम्मस्स साहगा अरिहा ।
एयाओ भावणाओ, भावेयव्वा पयत्तेण " ॥ २ ॥

१ अनित्य, २ अशरण, ३ संसार, ४ एकत्व, ५ अन्यत्व, ६ अशुचि, ७ आश्रव, ८ संवर, ९ निर्जरा, १० लोक स्वरूप, ११ बोधि दुर्लभ अने १२ धर्मना साधक अरिहंत–इत्यादि बार भावनाओनो सुदृष्टि पुरुषोए यत्ने करी अभ्यास करवो.

१ आ संसारमां मोहादिकने वश थइ सर्व वस्तुने विषे अवली बुद्धिवाला मूढजनो स्वामित्व, धन, यौवन, शरीरलावण्य, बल, आयुष्य, विषय सुखनी वल्लभता अने जनसंयोगादिक पदार्थोने पर्वतथी उतरती महा नदीना पूरनी पेठे अत्यंत वायुना समूहे कंपावेला ध्वजपटनी जेम वांछित प्रदेशमां पोतानी इच्छा प्रमाणे विहार करनारा अने चारे तरफ भमराओना समूहे आश्रित एवा गंडस्थलवाला मदोन्मत्त हस्तीना कर्णतालनी पेरे अने निविड पवने करी हणाएला वृक्षना पाका पानाना समूहनी पेरे अति चंचल छे, तोपण ते सर्वदा नित्यरूप जाणे छे, पण तत्त्व दृष्टिए जोतां आ सर्व भावो अनित्य छे, तेमां एक पण नित्य—शाश्वत नथी. वली जे परमानंदने आपनारा सद्ज्ञानादिक आत्माना गुणो ते नित्य छे, आ प्रमाणे जे चिंतववुं, ते पेहेली अनित्य भावना केहेवाय छे.

तेने माटे आ प्रमाणे कहेलुं छे.

" सामित्तणधणजुव्वणाक्क रूववलाउब्रुहमजोगा ।
अइलोला घणपवणा हयपायव पक्कपत्तव्व " ॥ १ ॥

आ गाथानो अर्थ उपर कहेवामा आव्यो छे.

२ बीजी अशरण भावना छे. जेम आ लोकने विषे माता, पिता, भाइ, ब्हेन, स्त्री, पुत्र, मित्र, सुजनादि परिवार देखता छता एक जैन धर्म शिवाय बीजु कांइ पण शरण रुप नथी इत्यादि चिंतवन करवु, ते अशरण भावना कहेवाय छे तेने माटे आ प्रमाणे कहेलु छे—

" पिउ भाउ भयणि भज्जा, भडाणपच्चक्कमिक्कमाणाणं।
जीव हरइ मच्चू, नहि सरण विणा धम्म " ॥१॥

आ श्लोकनो भावार्थ उपर कहेवामा आव्यो छे.

३ त्रीजी ससार भावना छे. जेनी अदर आ प्रमाणे चिंतवन करवानु छे—" आ ससारने विषे चोराशीलाख जीवायोनिमा वारंवार जन्ममरण आश्रीने भ्रमण करता एवा ससारी जीवो कर्मना उदयथी कोइवार सुखी, कोइवार राजा, कोइवार रंक, कोइवार कुरुपी अने कोइवार स्वरूपवान् एम विविध प्रकारनी अवस्थाने अनुभवे छे. वली परस्पर सबधीओनी चिंताने विषे रह्या करे छे. कर्मना वशनें लइने कुबेरदत्त प्रमुखनी जेम एकज भवमा महान् दुष्कर्मना बधना हेतुरुप एवा अनेक सबधो उत्पन्न थाय छे, तो अनेक भवोमा अनेक सबधो थाय, तेमां शु कहेवु ? तेथी वस्तुताए एकात दुःखरुप एवा आ दुःखमय ससारने विषे मूढ पुरुषो रच्या पच्या रहे छे. पण जेओ तत्त्वज्ञानी छे, तेओ तेमा कदिपण आसक्त थता नथी, आ प्रमाणे जे चिंतवन करवु, ते त्रीजी ससार भावना कहेवाय छे. तेने माटे कह्यु छे के,

" जाइमिगं मुचतो अवर जाइं तहेव गिण्हतो ।
भमइ चिरमविराम, भमरोव्व जिओ भवारामे" ॥१॥

" एकेंद्रिय आदि जातिने मुकतो अने बीजी बे इंद्रिय प्रमुख जातिने ग्रहण करतो एवो जीव भमरानी जेम आ भवरुप आराममने विषे विराम पाम्या वगर चिरकाल भमे छे. " ?

ते विषे कुबेरदत्तनो वृत्तात

मथुरा नगरीमा कुबेरसेना नामे एक गणिका रहेती हती. एक दिवसे ते

णीने नवीन् गर्भ उत्पन्न थइ आव्यो, आथी ते हृदयमा अत्यंत खेद पामवा ला-
गी. तेणीनी माताए ज्यारे तेणीने खेद पामती जोइ, त्यारे तेणीए तेनुं दुःख दू-
र करवा माटे वैद्योने वोलाव्या. वैद्योए नाडी जोइ तेणीने नीरोगी जाणी कहुं,
" आना शरीरमा कोइ जातनो रोग नथी, पण तेणीना उदरमा युगलनो गर्भ छे
ते हेतुथी आ स्त्रीने खेद थयो छे. ते पछी ते वैद्योने विदाय करी वृद्ध कुट्टिनी
पोतानी पुत्रीने आ प्रमाणे कहेवा लागी—" पुत्री, आ तारा उदरनो गर्भ प्र
प्राणने हरनारो छे, माटे तेने पाडी नाखवो योग्य छे वेश्याए कहु,—" हु गमे
तेटला क्लेश सहन करीश पण मारा गर्भनु कुशल थाओ. " पछी ज्यारे योग्य
अवसर आव्यो, एटले तेणीए पुत्र अने पुत्रीना युगलने जन्म आप्यो. आ वख-
ते तेणीनी माताए कहुं, " पुत्री, आ छोकरा तारा यौवनने हरनारा छे, तेथी
आ युगलने विष्टानी जेम त्यजी दइ तारी आजीविकाना साधनरुप एवा यौवन-
वयनु रक्षण कर. " माताना आ वचन साभळी ते वेश्या बोली—' माता ज्या-
रे आप कहो छो तेम होयतो दश दिवस सुधी राह जुवो, पछी तमे जेम कहे-
शो, तेम हु करीश. आ प्रमाणे कही ते कुवेरदत्ता वेश्या ते पोताना बालकोने द-
श दिवस सुधी स्तनपान कराववा लागी, ज्यारे अगीआरमो दिवस आव्यो, एटले
तेणीए पोताना वालकोना कुवेरदत्त अने कुवेरदत्ता एवा नाम पाड्या. पछी ते-
मना ए नामथी अंकित एवी वे मुद्रा करावी तेमनी आगळीओमां पेहेरावी अ-
ने तेमने एक लाकडानी पेटीमा मुकी वनेने सायकाले यमुना नदीना प्रवाहमा
वेहेता मुक्या. जलना प्रवाहमा वेहेती ते पेटी अनुक्रमे सूर्योदय वखते शौर्यपुर न-
गरने दरवाजे आवी. ते वखते कोइ वे शेठना पुत्रो त्या स्नान करवा आवेला,
तेमणे ए पेटी जोइ अने तत्काल तेने ग्रहण करी उघाडी, त्या ते वने वालको ते-
मना जोवामा आव्या तेओमाथी एकने पुत्रनी इच्छा हती, तेणे पुत्र लीधो अने
एकने पुत्रीनी इच्छा हती तेणे पुत्री लीधी. तेओ वनेने लइ पोतपोताने घेर आ-
व्या अने ते सतानो पोतानी स्त्रीने आप्या अने तेमनी मुद्राना लेख प्रमाणे ते-
मना नाम राख्या. केटलेक काले ज्यारे ते वने वालको एकठा थया त्यारे ते शे-
ठीआआए पोतानो स्नेह सबध जाळववाने माटे ते वनेनो विवाह सबध जोडी दी-
धो—मोटी धामधूमथी तेमनो लग्नोत्सव करवामा आव्यो. ते वने दपती एक व-
खते एकाते सोगठा वाजीनी क्रीडा करता हता तेवामा कुवेरदत्तना हाथमाथी

मुद्रा नीकळीपमी अने ते कुबेरदत्तानी आगळ पमी. कुबेरदत्ताए ते हाथमा ली धी, तेमां रहेल नाम वाची अने ते पोतानी मुद्रा साथे मेळववा मांमी, तेवामा ते बनेनो सरखो घाट अने समान आकृति जोइ तेणीना मनमा शका उत्पन्न थइ आवी अने कुबेरदत्त वखते पोतानो भाइ हशे एम निश्चय थवा माड्यो. आ प्रमाणे निश्चय थताज तेणीए मुद्रा कुबेरदत्तना हाथमा पेहेरावी दीधी तेने जोता ज कुबेरदत्तना मनमा पण शका थइ आवी अने कुबेरदत्ता पोतानी व्हेन हशे, एवो तेणे निश्चय कर्यो. आथी तेना मनमा अत्यत खेद उत्पन्न थइ आव्यो. पछी बने एकत्र थइ विचार करी पोताना विवाहना कार्यने अकार्यमानी ते संदेह दूर करवाने पोतपोतानी माताने सोगन आपी अतिशय आग्रहथी पुछवा लाग्या ज्यारे तेमनो अति आग्रह देखायो, एटले ते माताए पेटीनी मांमिथी आरभीने बधो वृत्तांत तेमनी आगळ निवेदन करी दीधो आ वखते कुबेरदत्ते प्रश्न कर्यो —" तमोए अमोने युगल जन्मेला जाणतां छता आवो व्यग सवध केम कर्यो ? तमारे आवु अकार्य करवु न हतु. " ते माताए कह्यु, " तमारा जेवी रूप, गुण अने शीलमा मळती बीजी जोम न मळवाथी अमोए आ सवध जोड्यो छे, छता जो तमारा मनमां ते विषे खद रहेतो होय तो हजु काइ बगमी गयुं नथी, कारणके, हजु तमारे मात्र पाणिग्रहणज थयु छे काइ मैथुन थयु नथी, तेथी तमो खेद पामशो नही तमोने फरीवार बीजा योग्य जोडा साथे परणावीशु. " माताना आ वचनो साभळी कुबेरदत्त बोल्यो—" तमे कहो छो, ते यथार्थ छे पण हाल हु वेपारने माटे विदेशमा जवा इछा राखु छु, माटे मने आज्ञा आपो." माता पिताए कुबेरदत्तने आज्ञा आपी. पछी कुबेरदत्त पोतानी व्हेनने आ वृत्तात जणावी घणु करीयाणु लइ परदेश चाल्यो गयो. कर्मयोगे ते पोतानु वतन जे मथुरा नगरी तेमा आवी चड्यो त्या पोते व्यापार कर्म करवा लाग्यो. एक दिवसे तेनी माता पेली कुबेरसेना वेश्या तेना जोवामा आवी. तेणीने घणी सुंदर जोइ कुबेरदत्त कामवश थइ गयो तत्काल घणु द्रव्य आपी तेणे तेणीनी साथे विषय भोग भोगव्यो. एवी रीते केटलोक वखत विषयभोग भोगवतां तेणीने एक पुत्र उत्पन्न थयो.

अहीं शौर्यपुरमा कुबेरदत्ताए ज्यारे पोतानी माता पासेथी पोतानो वृत्तात सांभळ्यो, एटले तेणीना मनमा वैराग्य उत्पन्न थइ आव्यो तत्काल तेणीए कोइ

सा ध्वीनो योग थता तेणीनी पासे दीक्षा ग्रहण करी. संयमने प्राप्त करी तेणीए एवो तप आचर्यो के, जेथी निर्मल अध्यवसायनें लइने तेणीने अल्प समयमा अवधिज्ञान उत्पन्न थइ आव्यु.

एक वखते ते कुबेरदत्ता सा ध्वीजीए अवधिज्ञानना बलथी पोताना ज्ञाइनु स्वरूप विलोक्यु, तेवामा तेणीना जाणवामा आव्यु के, पोतानो जाइ कुबेरदत्त मथुरामा पोतानी माता साथे आसक्त थयो छे, अने तेनाथी एक पुत्र उत्पन्न थयेलो छे. आ स्वरूप जाणी तेणी कर्मनी गतिने धिकार आपी पोताना बंधुने ते अकार्यरूप महा पापमाथी मुक्त करवा अने तेना आत्मानो उद्धार करवा मथुरा-नगरीमा आवी ते नगरीमा कुबेरसेना वेश्याने घेर जइ धर्मलाभ आशीष आपी, तेणीए रहेवा माटे आश्रय माग्यो. कुबेरसेनाए कह्यु, " हे महा सती, हु वेश्या छु तोपण हमणा एक जर्त्तारना सयोगथी कुलीन स्त्री बनी छु, तेथी तमे सुखे करी मारा घरनी नजीक निरवद्य आश्रयने ग्रहण करो अने उपदेश आपी अमोने सदाचारमा प्रवर्त्तावो. वेश्याना आ वचनो उपरथी कुबेरदत्ता साध्वी पोताना परिवार साथे ते वेश्याना घरनी पासे वास करीने रह्या हता.

वेश्या कुबेरसेना दररोज ते सा ध्वीनी आगळ पोताना बालकने आळोटतो मुकती त्यारे अवसरने जाणनारा सा ध्वी ते बालकने आ प्रमाणे बोलावता हता, " अरे बालक, १ तु मारो जाइ छे, २ तु मारो पुत्र छे, ३ मारो दीयर छे, ४ मारो जत्रीजो छे, ५ मारो काको छे अने ६ मारो पौत्र छे.

वळी तारो जे पिता ते १ मारो जाइ छे, २ मारो पिता छे, ३ मारो दादो छे, ४ मारो जर्त्तार छे, ५ मारो पुत्र छे, अने ६ मारो ससरो पण छे

वळी जे तारी माता ते १ मारी माता छे, २ मारी दादी छे, ३ मारी जाजी छे, ४ मारी पुत्रवधू छे, ५ मारी सासू छे अने ६ मारी शोक्य पण छे.

एक वखते कुबेरदत्ते आ वचन साजळी विस्मय पामी साध्वीजीने आ प्रमाणे पुछ्यु, " साध्वीजी, तमे आवा अयुक्ति वचनो केम बोलो छो ? ते वखते साध्वीजी बोल्या, " जाइ, हु जे बोलु छु, ते युक्तज छे, अयुक्त नथी साजळो, १ आ बालक अने हु एक माताना छीए तेथी ते मारो जाइ थाय छे, २ ते मारा जर्त्तारनो पुत्र होवाथी मारो पुत्र थाय छे, ३ ते मारा जर्त्तारनो नानो जाइ होवाथी मारो दियर थाय छे, ४ मारा जाइनो पुत्र होवाथी मारो जत्रीजो थाय छे,

५ मारी माताना पतिनो भाइ होवाथी मारो काको थाय छे ६ अने मारी शो-क्यनो पुत्रनो पुत्र होवाथी मारो पौत्र थाय छे.

आ प्रमाणे बालकनी साथे पोताना छ संबंधो देखाडी साध्वीए पुन जणाव्युं, " १ आ बालकना पितानी अने मारीमाता एक होवाथी ते मारो भाइ थाय छे, २ आ बालक मारी मातानो भर्त्तार होवाथी मारो पिता थाय छे, ३ आ मारा काकानो पिता होवाथी मारो दादो थाय छे, ४ ते पूर्वे मने परणनारो होवाथी मारो भर्त्तार थाय छे, ५ मारी शोक्यनो पुत्र होवाथी मारो पुत्र थाय छे अने मारा दियरनो पिता तेथी ते मारो ससरो थाय छे.

हवे आ बालकनी माता मारी प्रसव करनारी होवाथी १ ते मारी पण माता थाय छे, २ ते मारा भाइनी वहु तेथी भाभी थाय छे, ३ मारा काकानी माता होवाथी ते मारी दादी थाय छे, ४ मारी शोक्यना पुत्रनी वहु होवाथी मारी वहू थाय छे. ५ मारा भर्त्तारनी माता तेथी ते मारी सासू थाय छे, ६ अने मारा भर्त्तारनी बीजी स्त्री, तेथी मारी शोक्य थाय छे. ए बालकनी माता कुबेर-दत्ता वेश्यानी साथे मारा पोताना छ संबंध थाय छे.

आ प्रमाणे कही ते कुबेरदत्तना आत्मानो उध्धार करवा पोते राखेली पेली मुद्रा तेनी आगळ प्रगट करी बतावी कुबेरदत्त ते मुद्रा जोइ विचारमां पडी गयो अने साध्वीए बतावेला सर्व संबंधोने विरुध्ध जाणी तेना हृदयमां वैरा-ग्य भावना प्रगट थइ आवी. आत्मनिंदा करता ते कुबेरदत्ते पोतानी शुध्धिने माटे विचार करी तत्काल दीक्षा ग्रहण करी अने ते महान् तपस्या करवाने प्रवर्त्यो. आ प्रवृत्ति जाणी कुबेरसेना वेश्याए पण प्रतिबोधने पामी श्रावकधर्म अंगीकार कर्यो. साध्वी कुबेरदत्ता आ प्रमाणे तेमनो उद्धार करी पोतानी प्रवर्तिनी पासे चाल्या गया. अनुक्रमे ते सर्वे जीवो पोताना धर्मने सम्यक् प्रकारे आराधी उत्तम गतिना भाजन थया हता.

अढार संबंध उपर कुबेरदत्तनु दृष्टांत आ प्रमाणे छे–आ अढार संबंधो एक भवने आश्रीने बताव्या छे अनेक भवनी अपेक्षाए तो प्राये करीने सांव्यव-हारिक एटले व्यवहार राशिवाळा जीवोनो एकेको संबंध अनंतीवार थयो तेमज श्री भगवती सूत्रना बारमा शतकना सातमा उद्देशमा कह्यु छे के,—

" अयण भंते जीवे, सव्व जीवाण माइत्ताए " इत्यादि ।

आ कहेवानु तात्पर्य ए छे के, "हे जगवन्, आ जीव सर्व जीवोना मातापणे, पितापणे, जाइपणे, व्हेनपणे, स्त्रीपणे, पुत्रपणे, पुत्रीपणे, वहुपणे, शत्रुपणे, घातकपणे, प्रत्यनीकपणे, शत्रुसहायपणे, राजापणे, युवराजपणे, सार्थवाहपणे, दासदासीपणे, जागग्राहीपणे, शिक्षकपणे, अने इर्ष्यालुपणे पूर्वे उत्पन्न थयो हशे?" आ प्रमाणे गौतम महाराजे पुछता श्री वीरप्रजु कहे छे—"हा, गौतम, अनेकवार अथवा अनतवार पूर्वे उत्पन्न थयो, एम सर्व जीवो आ जीवना मातादिकपणे अनेकवार अथवा अनतवार पूर्वे उत्पन्न थया छे.

४ चोथी एकत्व जावना आ प्रमाणे छे—आ ससारमा जीव एकलो उत्पन्न थाय छे अने एकलो मरण पामे छे, तेमज एकलोज कर्म उपार्जे छे अने तेना फल पण एकलोज जोगवे छे, तेथी तत्त्वपणे करी एक श्री जैन धर्म विना कोइ पण अन्य स्वजनादिक सहाय करता नथी. इत्यादि जे चिंतवन, ते एकत्व जावना कहेवाय छे, तेने माटे आ प्रमाणे कहेलु छे—

" इक्को कम्माइ समं, जणेइ भुंजइ फलपि तस्सिक्को ।
इक्कस्स जम्ममरणे, परभवगमणं च इक्कस्स " ॥ १ ॥

आ गाथानो अर्थ उपर कहेवामा आव्यो छे

५ पाचमी अन्यत्व जावना आ प्रमाणे छे—चिरकालथी आत्म प्रदेशनी साथे गाढ सबधवालु अने मनवाछित अशनपानादिके करी बहु प्रकारे लालित एवुं पोतानु शरीर पण वस्तुगतिए करी अन्य—जुडुंज छे. ते अन्यपणाने लइ छेवटे प्राणीओनी पछवाडे जतु नथी तो पछी बाह्यजूत एवा धन सुवर्णादि परवस्तुओनी शी वात करवी ? माटे एक आत्म धर्म विना सर्वे सासारिक जावो अन्य छे—जुदा छे, आवु जे चिंतवन ते अन्यत्व भावना कहेवाय छे, तेने माटे आ प्रमाणे कहेलु छे—

" चिरलालिअंपि देह जइ जिअ मंतंमि नाणुवट्टइ ।
तातंपि होइ अन्न धणकणयाईण का वत्ता " ॥ १ ॥

अपिच—

" अन्न इमं कुटुंबं अन्ना लच्छी सरीरमवि अन्नं ।

मोत्तु जिणदधम्म, न भवातरगामिओ अन्नो " ॥ १ ॥

पेहेली गाथानो अर्थ उपर दर्शाव्यो छे

बीजी गाथानो अर्थ आ प्रमाणे छे.

" कुटुंब पण अन्य छे, आ लक्ष्मी पण अन्य छे अने आ शरीर पण अन्य छे. श्री जिनधर्म शिवाय भवांतरमा आवनार कोइ बीजु नथी " २

६ छठ्ठी अशुचि भावना कहे छे—" रस, रुधिर, मांस, मेद, अस्थि, शुक्र, अने मज्जा—ए सात धातुमय श्लेष्म तथा मल, मूत्र, पुरीष, त्वचा, आतरडा अने ओरना समूहवडे वींटाएलु अने सर्व काले कृमि, रोग, गडोला आदिथी भरेलु आ औदारिक शरीर तत्त्वदृष्टिए जोता महा अशुचिवालु छे ते एक अद्भुत आत्मधर्म विना कइ प्रकारे शुचि थाय? कदिपण थाय नही. वली जे आत्मा शरीरने केवल जलादिवडे शुध्ध करवा इच्छे छे ते तत्त्वथी विमुख अने अज्ञानी जाणवा " आ प्रकारे जे चिंतवन करवु, ते अशुचि भावना कहेवाय छे. तेने माटे आ प्रमाणे लखे छे—

" मेयवसरे अमलमुत्त पूरिअ चम्म वेढिअ तत्तो ।

जगममिव वच्चहर कहएय सुइए देह " ॥ १ ॥

आ गाथानो अर्थ उपर दर्शाव्यो छे—हवे तंदुलवियालि प्रकीर्णने अनुसारे ते औदारिक शरीरनु गर्भाधानथी आरभीने काइक विशेष अशुचिनु स्वरूप देखाडे छे

स्त्रीनी नाभिनी नीचे पुष्पनालने आकारे बे नाडी छे, तेनी नीचे अधों मुखी कमलना कोशने आकारे जीवनी उत्पत्ति स्थान रूप योनि होय छे तेनी नीचेना भागमा आंबानी माजरीना जेवी एक मासनी मजरी छे, ते मजरी ऋतु वखते फुटी रुधिरना बिंदुओने मुके छे ऋतुकाल वीत्या पछी एटले त्रण दिवस पछी ते कमलना कोशना आकारवाली योनिने विषे प्रवेश करे छे, पछी पुरुषना संयोगथी पुरुषना शुक्र (वीर्य) नी साथे मिश्र थाय छे, त्यारे ज्ञानी महाराजाए ते योनि जीवने उपजवा योग्य कहेली छे, ते स्थिति बार मुहूर्त सुधी ते शुक्र अने शोणित अविनाशी योनीपणे थाय छे अने बार मुहूर्त पछी विनाशी योनिपणाने पामे छे तेथी ते बार मुहूर्त सुधीमा जीवनी उत्पति छे, ते बार महूर्त प-

ठी जीव उत्पन्न थतो नथी, ते उत्पत्तिना प्रथम समये एकत्र थयेल पिता संबंधी वीर्य अने माता संबंधी शोणित तेने ते जीव आहारपणे ग्रहण करे छे, ते आहारने ओज आहार कहेवामा आवे छे, ते ओज आहार अपर्याप्त अवस्था सुधी होय छे, ते पछी ज्यारे ते पर्याप्त थाय छे, त्यारे ते गर्भमा रहेला जीवने लोमाहार होय छे.

ते जीवने आश्रीने रहेल शुक्र अने शोणित द्रव्य सात दिवस सुधी कलल रूपे होय छे अने ते सात दिवस पछी परपोटा रूपे रहे छे. ते पछी पेहेले मासे ' कर्षोपत्र ' एवा प्रमाणनी मासनी पेशी रूपे बने छे. बीजे मासे ते निविड-मासपिंडिका थाय छे, त्रीजे मासे ते माताने दोहद उत्पन्न करे छे. चोथे मासे माताना अगने पीडा उत्पन्न करे छे. पाचमे मासे ते जीवनी मास पिंडिकामाथी अकुरानी पेठे बे हाथ, बे पग अने मस्तक—एम पाच अवयव निष्पन्न करे छे. छठे मासे पित्त अने शोणितने बनावे छे. सातमे मासे सातसो नसो, पाचसो मासपेशी नव धमनी नाडीविशेष अने साडात्रण कोटी रोमराजी, निष्पादन करे छे, आठमे मासे लगार उणो उत्पन्न करे छे अने नवमे मासे सुनिष्पन्न सर्व अगोपाग वालो जीव बनी जाय छे

ते गर्भावस्थामा माताना जीवनी रस हरनारी तथा सततिना जीवनी रस हरनारी जे बे नाडीओ होय छे, तेओमा पेहेली माताना जीवनी साथे बधाएल छता सताननना जीवने स्पर्शेली छे, तेथी सताननो जीव माताए भोगवाता अनेक प्रकारना रसविषयनो एक देशे करीने ओज आहारने ग्रहण करे छे,

बीजी नाडी जे सततिना जीवनी साथे बधाएल ते माताना जीवने स्पर्शेली छे, ते नाडीवडे जीव पोताना शरीरने वृद्धि पमाडे छे, परतु ते अवस्थामा ते कवल आहारने ग्रहण करतो नथी, तेथी तेने उच्चार (झाडो) तथा प्रस्रवण (मूत्र) सभवता नथी तेम वळी ते जीव जे आहार द्रव्य ग्रहण करे छे, ते पोतानी श्रोत्रादिक इद्रियो अने अस्थि, मज्जा, केश, रोम अने नखपणे परिणमे छे.

ते गर्भमा रहेलो जीव माताना शयन वखते सुइ जाय छे अने मातानी जाग्रत अवस्थामा जागे छे. माता सुखी एटले ते पण सुखी होय छे. एवी रीते कर्मना उदयथी जीव उत्कृष्ट अधकारमा अशुचि भरेला गर्भस्थानमा महा दुःख अनुभवतो रहे छे. ज्यारे नव मास अतीत थता ते पुरुष, स्त्री, नपुसक अने नि-

व ए चारमा हरकोइ रूपे प्रसवाय छे. जो शुक्र अल्प होय अने शोणित विशेष होय तो स्त्री, शुक्र विशेष अने शोणित अल्प होयतो पुरुष अने शुक्र अने शोणित समान होय तो नपुंसक जन्मे छे. जो केवळ शोणितनो ज योग होयतो मासना पिंडरूप बिंब प्रगटे छे. वळी कोइ प्राणी माताना उदरमा उत्पन्न थयेलो होय परंतु घणा पापे करीने पराभूत थयेलो होय तो ते वात तथा पित्तादिकवडे दूषित थयेलो अथवा देवतादिके स्तंभित करेलो होवाथी आतरा रहित बार वर्ष सुधी त्याने त्या (गर्भमा) रहे छे—एटले बार वर्ष वीत्या पछी जन्मे छे, लोकमा ते गोम—चोडना नामथी ओळखाय छे. आ प्रमाणे गर्भनी भवस्थिति कहेवाय छे.

तेनी जे कायस्थिति छे, ते मनुष्यने चोवीश वर्षनी छे—ते आ प्रमाणे —कोइ जीव गोमरूपे बार वर्ष गर्भमा रही अंते मृत्यु पामी तेवा प्रकारना दुष्ट कार्यना योगथी त्याज गर्भमा रहेला कलेवरमाज उत्पन्न थाय छे अने उत्पन्न थइ तेमाज बार वर्ष सुधी रहे छे—एवी रीते उत्कृष्टो चोवीश वर्ष सुधी तेनो गर्भावास थाय छे.

तिर्यंच जीवो तिरश्चीना गर्भमा उत्कृष्टथी आठ वर्ष सुधी रहे छे, ते पछी तेनो विनाश अथवा प्रसव पण थाय छे.

स्त्रीनी गर्भोत्पत्तिनी योग्यता अने पुरुषना वीर्यनी गर्भाधान करवानी योग्यताने माटे आ प्रमाणे लखेलु छे—स्त्रीनी योनि पचावन वर्ष पर्यत अम्लान होवाथी गर्भने धारण करी शके छे अने ते पछी आर्त्तवनो अभाव होवाथी तेनी योनि म्लान थइ जाय छे. तेने माटे निशीथ चूर्णीमा आ प्रमाणे कहेलु छे—

'इत्थिए जाव पणपन्नावासा न पूरयति ताव अमिलिआणा य जोणी"

आनो अर्थ उपर दर्शावेलो छे पुरुष पचोतेर वर्ष सुधी गर्भाधानने योग्य एवा वीर्यवाळो होय छे, ते पछी ते प्राये करी तेवा वीर्यथी रहित थइ जाय छे. ते विषे पण निशीथ चूर्णीमा कहेल छे—आ सो वर्षनी आयुष्यवाळानी अपेक्षाए समजवु. सो वर्षनी आगळ बसो, त्रणसो, चारसो इत्यादि पूर्व कोटी होय.

स्त्रीनुं जेटलु आयुष्य होय, ते सर्व आयुष्यमाथी अर्ध आयुष्य पर्यंत म्लानपणा रहित होवाथी ते गर्भ धारण करवाने समर्थ होय छे. अने पुरुषने तो

सर्व पूर्व कोटी पर्यंतना पोताना आयुष्यनो छेल्लो वीशमो जाग अवीज होय छे अने पूर्व कोटी उपरनी स्थितिवालाने तो युगलिकपणे करी एकवार प्रसवधर्मीपणाने लइने अने निरंतर यौवनपणाने लइने आ नियम लागु पमतो नथी.

आ शरीरें त्रण माता संबंधी अंगो छे १ मांस, २ रुधिर अने ३ मस्तक—नेजुं. अने त्रण पिता संबंधी अंगो छे, १ अस्थि, २ अस्थिमज्जा अने ३ केश, स्मश्रु, (दाढी) रोम तथा नख.

आ शरीरना अवयवोनी संख्या आ प्रमाणे छे—तेमां प्रथम मनुष्य शरीर माटे कहे छे—मनुष्य शरीरमां पृष्ठ वंशनी ग्रथिरूप अढार संधिओ छे—एटले वांसामां अढार सांधाओ छे. तेओमां बार संधिओमांथी बार पांसळीओ नीकळी ने पासा–पमखाने वींटाइ वक्षस्थलना मध्य जागे रहेला हामने लागी पट्टाना आकारपणे परिणमे छे, तथा ते पृष्ठवंशना अवशेष रहेला छ संधियी छ पांसळीओ नीकळी ने पमखाने वींटाइ हृदयनी बे बाजु वक्षपंजरथी नीचे शिथिल अने कुक्षनी उपर परस्पर नहीं मलेली रहे छे तेने कटाह कहे छे.' वळी शरीरमां दरेक पांच पांच वामना ने आंतरमा छे, तेमां एक स्थूल छे अने बीजुं सूक्ष्म छे तेमां जे स्थूल छे, तेनाथी वमीनीति परिणमे छे अने जे सूक्ष्म छे तेनाथी लघुनीति परिणमे छे आ शरीरमां बे पमखा छे. एक जमणो अने बीजो माबो. तेमां जे जमणु पमखु छे, ते दुःखकारी परिणामवाळु छे अने जे माबु छे ते सुखकारी परिणामवाळुं छे. वळी आ शरीरमां बीजी एकसो सात पांसळीओ छे. ते अंगुलीआदि अस्थिना खमना मेलापना स्थानथी ओलखाय छे. बीजा एकसो सीतेर सन्धाणिकादिक मर्मस्थान छे. तेमां पुरुषना शरीरे नाभिथी उत्पन्न थवी सातसो नसो छे, तेमां एकसो सात नस ऊर्ध्वगामिनी छे, ते नाभिथी आरम्भीने मस्तक सुधी जाय छे, तेने रसहरणी कहे छे. तेना अनुपघात पणामां कान, चक्षु, घ्राण अने जिह्वानु बळ उल्से छे. अने जो तेनो उपघात थाय तो ते कान वगेरेनु बळ क्षीण थाय छे. ते शिवाय एकसो सात बीजी नसो अधोगामिनी छे. ते पगना तळीआ सुधी रहेली छे, तेनो अनुपघात होय तो ते जंघाना बळने आपनारी छे अने तेनो उपघात थतां मस्तकनी वेदना अने अंधता वगेरे पीडा उत्पन्न करे छे. तेम वळी एकसो सात बीजी गुदाप्रविष्ट नसो छे, ते नसोना बळथी प्राणीओने वायु, मूत्र अने विष्टा प्रवर्त्ते छे जो तेनो विघात थाय तो अर्श,

पाडुरोग, मल, मूत्र अने वायुनो निरोध थाय छे. वीजी एकसो साठ नसो तिरछी गामिनी छे, ते हस्ततळने स्पर्शेली छे, तेनो उपघात न थाय तो ते भुजाने बळ आपनारी छे अने उपघात थवाथी पमखामा के कुखमा वेदना उत्पन्न करेछे. वीजी पचवीश नसो श्लेष्मने धरनारी छे, पचीश पित्तने धारण करनारी छे अने दश शुक्र नामनी सातमी धातुने धरनारी छे. आ प्रकारे नाभिथी उत्पन्न थयेल सातसो नसो पुरुषना शरीर होय छे, तेनाथी स्त्रीओने त्रीश ओछी होय छे अने नपुसकने वीश ओछी होय छे.

वळी आ शरीरमा नवसो हाम बधननी नाभीओ छे, तेमा चार रसने वहन करनारी धमनी नामीओ छे. दाढी तथा मुछना केश विना नवाणु लाख रोमकूप छे अने मुछ सहित गणता साडा त्रण कोटी रोमराजी थाय छे. तेमा दाढी, मुछ अने कूर्चना केशोने शिरोरुह कहेवामा आवे छे. मुखमां जे मासना खमरूपे जिह्वा रहेली छे ते पोताना दीर्घ अगुलना प्रमाणे सात आगळ प्रमाण होय छे अने तेनो तोल मगध देशमा प्रसिध्ध एवा चार पलना मापे चार पलनी छे. चक्षुना वे मासना गोळा तोलमा वे पल छे. मस्तक हामना खम रुप चार कपाळे करी निष्पन्न थाय छे. ग्रीवानु प्रमाण चार आगुलनु छे. मुखमां अस्थिना खम रुप दात प्राये करीने बत्रीश होय छे अने हृदयनी अतर्वर्ती एवो मांसनी खड साडात्रण पळनो छे अने वक्षस्थळना अतरनो गूढ भाग के जे कलेजाना नामथी ओळखाय छे ते पचास पलनु होय छे

वळी शरीरमां मूत्र अने रुधिर दरेक आढक प्रमाण छे अने ते सर्वकाले अवस्थित होय छे चरबीनु प्रमाण अर्धो आढकनु छे मस्तकनु भेजु एक प्रस्थ प्रमाण छे अने पुरुपने छ प्रस्थ प्रमाणनु होय छे. पित्त अने श्लेष्म प्रत्येक एक एक कुमव प्रमाण अने शुक्र अर्ध कुमव प्रमाण सर्वदा अवस्थित छे.

आ आढक तथा प्रस्थ वगेरेनु माप बालक, कुमार अने तरुण वगेरेनु "दोअसईछ पसइ" इत्यादि क्रमे करीने पोतपोताना हाथने आश्रीने जाणवु तेने माटे कह्यु छेके,—

"दोअसइछ पसई, दोपसइओ सेइआ,
चत्तारि सेइआओ कुलओ, चत्तारि कुलअओ पच्छो,

चतारि पच्छा आढयं, सुचत्तारि आढयो दोणो" इत्यादि—

धान्यथी जरेलो अवाङ्मुख करेलो हाथ 'असती' कहेवाय छे—आगला सूत्र प्रमाणे तेनो अर्थ जाणवो, एटले वे मूठा हाथनो एक पसी थाय, बे पसीनो एक सेतिका थाय, चार सेतिकानो एक कुलव, चार कुलवनो एक प्रस्थ, चार प्रस्थनो एक आढक अने चार आढकनो द्रोण थाय छे.

आ प्रमाणे कहेला प्रमाणथी शुक्र तथा शोणित वगेरेनु जे न्यूनाधिकपणु थाय छे, ते वातादिकना दोषने लइने थाय छे. पुरुषना शरीरमा पाच अने स्त्रीना शरीमा छ कोठा छे. पुरुषने बे कान, बे आंखो, बे नसकोरा, एक मुख, एक गुदा अने एक पुरुष चिह्न, ए नव द्वार प्रवाहने वहन करनारा छे. ए नव सहित बे स्तन वधवाथी स्त्रीने प्रवाहने वहन करनारा अगीयार द्वार छे. आ गणना मनुष्य गतिने आश्रीने जाणवी.

तिर्यंच गतिमां बकरा वगेरे बे स्तनवालाने अगीयार अने चार स्तन वाली गाय प्रमुखने तेर तथा शुकरीने वगेरेने आठ स्तन गणता सत्तर—आ प्रमाणे व्याघात विना जाणी लेवानु छे. व्याघात होयतो एक स्तनवाळी अजाने दश, त्रणस्तनवाळी गायने बार,—एम समजवानु छे.

पुरुषना शरीरमा कुल पाचसो मासनी पेशीओ छे, तेनाथी स्त्रीओने त्रीश अने नपुंसकने वीश ओछी छे.

आ शरीर अनेक महा रोगोनुं उत्पत्ति स्थान छे, तेने विषे ससारी जीवोना रोगोनी सख्या पांच करोड, अडसठ लाख, नवाणु हजार अने पाचसो चालीशनी छे. कह्यु छे के,

पचेवयकोडीओ लखाअडसट्ठिसहसनवनवई
पंचसयाचुलसीई रोगाणहुंतिसखाउत्ति ॥

अर्थ उपर आवी गयो छे—आ प्रमाणे अस्थि आदिना समूहवाला अने अनेक प्रकारना व्याधिओथी व्याप्त एवा ए शरीरमा शु शुचि छे? काइपण छेज नही.

७ सातमी आश्रव भावना छे. आ ससारमां जीवो १ मिथ्यात्व, २ अविरति, ३ कषाय अने ४ योग रुप आश्रवे करी समय समय प्रत्ये शुभाशुभ कर्मना

पुद्गलोने जे ग्रहण करे छे. पुण्यात्माओनुं चित्त निरंतर सर्व प्राणी ओमां मैत्रीभाव, जे गुणोथी अधिक होय तेमां प्रमोद, जे अविनीत होय ते उपर मध्यस्थता अने जे दुःखीया होय ते उपर करुणा—करवाथी शुभ कर्म बांधे छे अने जे जीवोनुं चित्त आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान, मिथ्यात्व तथा कषाय विषय वगेरे सर्वदा पीडित छे, तेओ अशुभ कर्म बांधे छे—इत्यादि जे चिंतवन, ते आश्रवभावना कहेवाय छे तेने माटे आ प्रमाणे कहेलुं छे—

" मिच्छत्ता विरइ कसाय–जोग दारेहिं जेहिं अणुसमय ।
इह कम्मपुग्गलाणं गहण ते आसवा हुंति " ॥ १ ॥

ते गाथानो भावार्थ उपर आवी गयो छे—आठमी संवर भावना नीचे प्रमाणे—

उपर कहेल मिथ्यात्वादिकना आश्रवोने सम्यक्त्वादिकथी जे निरोध करवो, ते संवर कहेवाय छे—ते देशथी अने सर्वथी—ए बे प्रकारनो छे. तेमां सर्वथी संवरतो अयोगी केवळीनेज होय छे अने देशथी संवर एक, बे त्रण आश्रवना निरोधीने होय छे, ते संवर प्रत्येक द्रव्य अने भावथी बे प्रकारनो थाय छे आत्माने विषे थता आश्रवथी कर्मना पुद्गलोने जे ग्रहण करवापणुं, तेने सर्वथी अथवा देशथी छेदवुं ते द्रव्य संवर कहेवाय छे अने जे भवहेतुक सर्व क्रियानो त्याग करवो ते भाव संवर कहेवाय छे. एवा स्वरूपना आश्रवना विरोधी संवरनुं जे चिंतवन करवुं, ते संवर भावना कहेवाय छे, तेने माटे आ प्रमाणे कहेलुं छे

" आसवदारपिहाणं सम्मत्ताईहिं संवरो नेओ ।
पिहियासवो हि जीवो सुतरिव्व तरेइ भवजलहिंति " १

आश्रवद्वारनुं सम्यक्त्वादिकमे ज आच्छादान करवुं, ते संवर कहेवाय छे, ते संवरथी सर्व जीवो सारा वाहाणनी पेठे आ संसार समुद्रने तरे छे. "

नवमी निर्जरा भावना छे.—आ संसारमां पूर्वे बांधेला कर्मोने तपवडे जे गाळवा, ते निर्जरा कहेवाय छे जे कर्म बंधाता होय तेने विषे संवर अने पूर्वे बांधेला कर्मोने विषे निर्जरा ए तेमनी वच्चे भेद छे. ते निर्जरा बे प्रकारे छे—सकाम अने अकाम. तेमां जे सकाम निर्जरा छे ते बाह्य अने आभ्यंतर—एवा प्रत्येक तपना

छ भेदथी बार प्रकारनी थाय छे. ते भेद प्रथम यति धर्मना अधिकारमा कहेला छे तेथी आ प्रसंगे आपवामा आव्या नथी.

आ बार प्रकारनी निर्जरा विरति परिणामवाळाने होय छे, एटले विरति परिणामी कर्मक्षयने माटे पोतानी अभिलाषाथी सकाम निर्जरा करे छे. अने जे विरति परिणामथी रहित छे, अने ते शिवाय बाकीना मनुष्य प्राणीओ छे, तेमने अभिलाष रहित शीत, उष्ण, क्षुधा, तृषा आदि सहन करवाथी अकाम निर्जरा थाय छे —आवी निर्जरानु जे चिंतवन, ते निर्जरा भावना कहेवाय छे. तेने माटे आ प्रमाणे कहेलु छे.

" कम्माण पुराणाणं निकुंतणं निज्जरा दुवालसहा ।
विरयाण सा सकामा तहा अकामा अविरयाणं तु" ॥१॥

आ गाथानो अर्थ उपर आवी गयो छे. दशमी लोकस्वरूप भावना छे आ लोकना मध्य भागमा चतुर्दश रज्जु प्रमाण लोक विद्यमान छे. कटी उपर राखेला छे वे हाथ जेणे अने तिर्छा प्रसारेला छे बे चरण जेणे एवा पुरुषना आकार जेवो आ लोक छे अथवा अधोमुख करेल मोटा शरावनी उपर रहेल जे लघु शराव, तेना संपुटना जेवी तेनी आकृति छे कहेवानु तात्पर्य ए छे के, सात रज्जुना विस्तारथी नीचे लोकना तळीयाथी उंचे थोडु थोडु संकोचता तीर्छो लोक एक रज्जु विस्तारवाळो छे. ते पछी ऊर्ध्व भागे अनुक्रमे विस्तारने पामतो ब्रह्मदेवलोकने त्रीजे पाथडे पाच रज्जु विस्तारवाळो छे. ते पछी थोडे थोडे संक्षेपने भजतो सर्व उपरना लोकाग्र प्रदेशने प्रतरे एक रज्जु विस्तारवाळो छे, ए रीते यथोक्त संस्थानवाळो लोक छे. ते लोकने विषे धर्मास्तिकायादि छ द्रव्यो छे.

१ स्वभावथी गतिपरिणत जीव अने पुद्गलोनो मत्स्य अने जळनी जेम जे उपष्टंभकारी सत्त्व ते धर्मास्तिकाय कहेवाय छे.

२ वटेमार्गुने छायानी जेम तेनी स्थितिमा जे उपष्टंभकारी, ते अधर्मास्तिकाय कहेवाय छे.

३ पूर्वोक्त बने द्रव्यो प्रदेशथी अने प्रमाणथी लोकाकाशतुल्य छे, तेमज तेमने गति अने स्थितिमा प्रवर्त्तता अवकाश आपवाथी जे अवगाहन धर्मवाळो छे, ते

आकाशास्तिकाय कहेवाय छे

४ जे चेतना लक्षणवाळो, कर्मनो कर्त्ता तथा जोक्ता अने जीवनधर्मी छे, ते जीवास्तिकाय कहेवाय छे.

५ जे पृथ्वी, पर्वत आदि समस्त वस्तुओनु परिणामी कारण अने पूरण गलन धर्मवाळो, ते पुद्गलास्तिकाय कहेवाय छे.

६ जे वर्त्तना लक्षणवाळो, नवीन पुद्गलिक वस्तुने जीर्ण करनार, तथा समयक्षेत्र (अढी द्वीप) अतर्वर्त्ती छे ते काळ ड्रव्य कहेवाय छे

आ छ ड्रव्यमा एक पुद्गल ड्रव्य मूर्त्त छे अने बाकीना पाच ड्रव्य अमूर्त्त छे. तेमज एक जीव ड्रव्यने वर्जीने बीजा सर्व ड्रव्य अचेतन छे, मात्र जीव ड्रव्यज सचेतन छे.

अहीं प्रश्न थाय छे के असख्याता प्रदेशमय लोकाकाशमा अनतानत जीव ड्रव्यो तथा तेथी अनत गुण अधिक पुद्गल ड्रव्यो शी रीते रहेता हशे? तेमने सकडाश केम न थाय?

आ शकाना उत्तरमा कहेवानु के, जीव ड्रव्योनु अमूर्त्तपणु छे तेथी तेमा सकीर्णपणु थतु नथी अने पुद्गलोनु मूर्त्तपणु छे. दीपकनी प्रजाना दृष्टांते करी तेवा परिणामनी विचित्रताथी एकज आकाशना प्रदेश उपर अनतानत परमाणवादि पुद्गल ड्रव्यो असकीर्णपणे प्रवेश करे छे, तोपछी त असख्याता प्रदेशनु कहेवुज शु? अर्थात् तेमा समाइ जाय, तेमा शु आश्चर्य? तेथी तेमा कोइ जातनो दोष आवतो नथी, ते विषे श्री अजयदेव सूरिजीए श्री जगवतीनी टीकामा तेरमा शतकना चोथा उद्देशमा कहेलु छे—

" आगासत्थिकाएण " ॥ इत्यादि ।

" जीव ड्रव्योनु अने अजीव ड्रव्योनु जाजनजूत आकाशास्तिकाय छे. "

एथी तेमणे आ प्रमाणे कह्यु के, आकाश जीवोनु तथा अजीवोने अवगाहन आपनार छे केमके विस्तारवाळु छे ते पछी आकाशनु जाजनपणु देखाडता थका कहे छे—

" एगेण वि " इत्यादि ।

एक परमाणु आदिके करीने आकाशास्तिकायनो प्रदेश पूर्ण कहेवाय छे, वे परमाण्वादिके करी पूर्ण अने शतसहस्रादिके करीने पण पूर्ण छे, एम जणाय छे ! एम केम कहेवाय ?

तेना उत्तरमा कहे छे के, ते परिणामना भेदथी कही शकाय छे. जेम ओरडानो आकाश एक दीवानी प्रभापटलथी पूराय छे. तेम बीजा दीवानो प्रकाश पण त्या समाइ जाय छे, यावत् एकसो दीवापण तेमा समाइ जाय छे. तेमज औषध विशेपना एकठापणाथी एक पारो खेंचवामा सो सोनामोहर पेशी जाय छे पछी ते पारो अने कर्पूरत औषधना सामर्थ्यथी पारानी कणी अने सुवर्णना सैकडो कर्ष पृथक् थइ जाय छे, कारण के पुद्‌गलोना परिणामनु विचित्रपणु छे.

वळी लोकप्रकाश ग्रथमा पण कह्युं छे के औषधना सामर्थ्यथी पारानी एक कणीमा सुवर्णनी सो कणी नाखीए तोपण तोलमा कर्षथी अधिक न थाय, वळी औषधना सामर्थ्यथी ते बन्ने जुदा जुदा थइ जाय छे—सुवर्णना कर्षक सो अने पारानो एक कर्ष ए प्रमाणे थाय छे.

अहीं वळी ऊर्ध्व, अधो अने तीर्छा लोकनुं स्वरूप ग्रथातरथी जाणी लेवु—आ प्रमाणे लोकनु स्वरूप चिंतववु, ते लोक स्वभाव भावना कहेवाय छे, तेने माटे कह्यु छे के

" अहमुहगुरुमल्लयठिअ लहु मल्लयजुयलसठिअंलोगं ।
धम्माइ पंच दव्वेहि पूरिअ मणसि चिंतिज्जेति " ॥१॥

अर्थ. नीचे मुखवाळा मोटा सरावळानी पेठे रहेला तथा नाना सरावळाना सपुटनी पेठे (ऊर्ध्व भागमा) रहेला तथा धर्मास्तिकायादि पांच द्रव्योवडे परिपूर्ण एवा आ लोकनु मनने विषे चिंतवन करवु

अगीआरमी बोधि दुर्लभ भावना छे. अनंतानत काळे पचेंद्रियपणु दुर्लभ छे तेमां पण मनुष्यभावादि सामग्री दुर्लभ छे, तेनो योग थता पण प्राणीओने परम विशुद्धि करनार सर्वज्ञे दर्शावेल तत्त्वज्ञान रुपी बोधि (सम्यक्त्व) प्राप्त करीने पण दुर्लभ छे, जो ते एकवार पण प्राप्त थयेल होय तो प्राणीओने आटला समय सुधी आ ससारनु पर्यटन होय नहीं. " इत्यादि जे चिंतवन ते

बोधि दुर्लभ जावना कहेवाय छे—

तेने माटे आ प्रमाणे कहेलु छे—

" पंचिंदियत्तणाइ, सामग्गीसंजवेपि अइदुलहा ।
तत्तावबोहरूवा बोहि सुही जीअस्सजओत्ति " ॥ १ ॥

आ गाथानो अर्थ उपर आवी गयो छे.

बारमी धर्मकथक अर्हन् जावना कहेवाय छे. आ संसारमा वीतरागपणे करीने सर्वदा परकार्य करवाने सावधान एवा अने निर्मल केवलज्ञानरुप चक्षुए थी जेमणे सर्व लोकालोक अवलोक्यो छे एवा श्री अरिहंत विना यति अने श्रावकनो निर्मल—सद्भूत धर्म कहेवाने बीजो कोइ समर्थ नथी. कुतीर्थिओना कहेला कुवचनो अज्ञान मूल होवाथी पूर्वापर विरुद्ध अने हिंसादिक दोषोथी दूषित छे, तेथी ते वचनो प्रत्यक्ष असद्भूतज छे तेमज तेमना कोइ वचनमा दया सत्य वगेरेनु काइक पोषण देखाय छे, ते फकत वचन मात्रज छे, पण तत्त्वथी नथीज, ते माटे तत्त्वथी शुध्ध स्वरूपने धरनारी अने सकल जगतना जंतुओने तारनारी श्रीमद् अरिहंत प्रभुनी वाणीनु केटलु विवेचन करीए! जो कोइ पण रीते ते वाणीनु एक पण वाक्य कर्णगोचर थयु होय तो ते रोहिणीया चोरनी पेठे प्राणीने महान् उपकार करनारु थाय छे. " आ प्रकारनु जे चिंतवन ते बारमी धर्मकथक भावना कहेवाय छे

तेने माटे आ प्रमाणे कहेलु छे—

" धम्मो जिणेहि निरवहिउवयारपरेहि सुट्ठु पण्णत्तो ।
समणाण समणोवा—सयाण दसहा दुवालसहा" ॥१॥

आ गाथानो अर्थ उपर आवी गयो छे.

रौहिणेय चोरनी कथा

राजगृह नगरमां श्रेणिक नामे राजा हतो. तेने सर्व बुध्धिओनो निधान रुप अजयकुमार नामे पुत्र थयो हतो. ते नगरनी समीपे वैभारगिरि नामे एक पर्वत हतो तेनी एक गुफामा लोहखुर नामे एक घातकी चोर रहेतो हतो. ते राजगृही नगरीना लोकोना द्रव्य अने स्त्री वडे पोताना काम अने अर्थ अनायासे साधतो हतो अने तेमाज पोतानो काळ निर्गमन करतो हतो. ते लोहखुर चोरने

रोहिणी नामे एक स्त्रीना उदरथी रौहिणेय नामे पुत्र थयो हतो. ते पण पितानी जेम घणोज घातकी थयो हतो.

एक वखते लोहखुर मरण पथारीए पड्यो, एटले तेणे पोताना पुत्र रौहिणेयने बोलावीने कह्यु, " वत्स, जो तु तारु हित इच्छतो हो तो मारी शिक्षा सांभळ—"जे आ त्रण गढ देखाय छे तेमा महावीर नामे एक महात्मा छे, तेओ कोमळ वचन बोले छे, ते वचन उत्तरकाले दारुण होवाथी तारे कदिपण सांभळवा नहीं. " आ प्रमाणे शीखामण आपी ते लोहखुर चोरे पोताना प्राणनो त्याग करी दीधो. ते पछी रौहिणेय ते पिताना वचनने संभारतो नित्य चोरी करतो हतो.

एक वखते श्रीवीर परमात्मा ते स्थले समोसर्या देवताओए ते स्थले समवसरण रच्युं. ते वखते भव्य जीवोने धर्मनी देशना आपवानो प्रभुए आरम्भ कर्यो—ते वखते चोर रौहिणेय राजगृह नगरमा चोरी करवा जता ते समवसरणनी पासे आवी चढ्यो. ते वखते तेने याद आव्यु के, जो हु आ मार्गे जइश तो वीरभगवान्नी वाणी सम्भळाइ जशे अने अहिं जवानो बीजो मार्ग छे नहीं. हवे शु करवुं ? अथवा एवो खेद करवाथी सर्यु. हु कानमा आगळीओ नाखीने चाल्यो जाउं. पछी ते कानमा आगळी नाखी उतावळे पगले चाल्यो, तेवामा तेना पगमा कांटो वाग्यो. एटले ते आगळ एक डगलु भरवाने पण समर्थ थयो नहीं. पछी कानमाथी एक आगळी जुदी करी तेवमे कांटो काढवा लाग्यो, तेवामा अतरना शल्यने शोधनारी अने देवस्वरूपने वर्णन करनारी श्री वीरप्रभुनी वाणी तेना कानमा आ प्रमाणे सांभळवामा आवी—

" *अणिमिस नयणा मणकज्ज साहणा पुष्फदाम अमिलाणा ।*
चउरंगुलेण भूमि न छबिंति सुरा जिणा विंति " ॥ १ ॥

जेमना नेत्रो मींचाता नथी, जेओ मनथी चिंतित एवा कार्यना करनारा छे, जेमनी पुष्पमाला करमाती नथी अने जेओ भूमिथी चार आगळ ऊचा रहे छे, एवा देवताओ होय छे. " १

आ प्रमाणे जिनेश्वरे कह्यु ते रौहिणेय चोरना सांभळवामा आव्यु. तत्काल तेणे चिंतव्यु के, अरे ! मारा सांभळवामा घणु आवी गयु—आम कही

चिंतातुर थतो ते चोर कांटो काढी पाछो कानमा आगळी नाखतो ते राजगृह नगरमा चाल्यो गयो अने त्या पोतानी इच्छा प्रमाणे चोरी करी पाछो पर्वतनी गुफामा पेशी गयो. परतु पेली जे प्रभुनी वाणी तेणे साजळी लीधी छे, तेने माटे ते निरतर चित्तमा खेद पाम्या करतो हतो. ते हमेशा गुप्त रीते राजगृही नगरीने लुटया करतो अने लोकोने रजाडतो हतो.

चोरनी पीडाथी कटाळी गयेला लोकोए राजा श्रेणिकनी आगळ फरी आद करी अने पोताना दु खो निवेदन कर्या. राजाए मधुर वचनोथी लोकोने आश्वासन आप्यु. पछी तेणे कोटवालने बोलावीने कह्यु, " कोटवाल, तमे आखा नगरने हेरान करनारा चोरने पकडी लोकोनी रक्षा केम करवा नथी ? कोटवाले कह्यु, "राजन, रौहिणेय, नामे एक चोर थयो छे, पण ते घणी मुस्केली वडे पकडाय तेवो छे, तेने पकडवा माटे अमे घणा उपायो योजीए छीए, पण ते पकडातो नथी, महाराजा, जो आप पोते तत्पारक्ष बनो तो वखते पकडाशे. " कोटवालना आ वचनो साभळी राजा श्रेणिके पोताना पुत्र अने प्रधान अभयकुमारनी सामे जोयु एटले अभयकुमार अजलि जोडी बोल्यो—" पिताजी, हु सात दिवसनी अदर ते चोरने पकडी लावीश. जो सात दिवसनी अदर तेम न बने तो तमारे मने ते चोरनी जेम शिक्षा करवी " अभयकुमारे आवी ज्यारे प्रतिज्ञा करी, ते साजली सर्व सभा अने राजा आश्चर्य पामी गया.

पछी अभयकुमारे भारे प्रयत्नथी ते चोरनी शोध करवा माडी, पण कोइ रीते ते चोरनो पत्तो लाग्यो नहीं एवी रीते छ दिवस वीती जवा लाग्या छठे दिवसे सध्याकाळे लोकोना कोलाहलने शात करी ते गढनी बाहेर केटलाएक सुभटोने तेणे गोठवी दीधा पेलो रौहिणेय चोर केटलाएक अपशुकनोए तेने अटकाव्यो छता पण ते कर्मने वश थइ नगरीमा चोरी करवाने पेठो, जेवामा तेणे कोइ धनवान्ना घरनु खातर पाडवा माडयु, तेवामा पगी लोकोए मनी एक मोटी हाक मारी तेने त्रास पमाडयो, तेथी ते त्यांथी नाशी नगरीना किल्ला उपर आव्यो. तेने उचो चढी किल्ला उपरथी बाहेर पडतो सुभटोए पकडी लीधो. प्रातःकाले सुभटोए तेने अभयकुमारने सोंपी दीधो. अभयकुमार तेने राजा पासे लइ गयो. चोरेला द्रव्य साथे पकडेला ते चोरने जोइ राजाए पुछ्यु, तु कोण छे ? चोर बोल्यो " राजन, हु शालिग्रामनो रहेवासी अने दुर्गचन्द नामे राजाने जमे

भरनारो खेडुत छुं. हु मारु काइक काम करी रात्रे मारा गाम तरफ जतो हतो तेवामा तमारा सुभटोए मने वीहराव्यो, एटले कील्लो ठेकी बाहेर पडता सुभटोए मने चोर जाणी पकडी लीधो. हे सुज्ञ विक्षचण राजा, विचार करो. जो हु चोर होउतो मने खुशीथी शिक्षा आपो; अने जो मने मारवाथी अभयकुमार जीवे तो तेम करो. " तेना आवां वचन सांभळी राजाए दृढ बंधनथी ठेकाव्या पछी तेनी खात्री करवाने माटे पोताना सेवकोने शालिग्राममा मोकल्या. रौहिणेय चोर एटलोनथो लुचो हतो के, तेणे प्रथमथी शालिग्रामना लोकोनी साथे संकेत करी राख्यो हतो अने तेमनी साथे ते चोरे ठराव करेलो के, तेणे कदि पण शालिग्राममां चोरी करवी नहीं अने ते गामने मदद आपवी, आथी ते लोको तेनी सर्व वात मान्य करता हता. राजा श्रेणिकना सुभटोए शालिग्राममा आवी त्यांना लोकोने पुछ्यु के, आ गाममा कोइ दुर्गचंद नामे खेडुत रहे छे ? ते गामना लोक के जेओ तेना संकेत प्रमाणे वर्त्तनारा हता, तेओ बोल्या,—"हा, ते खरी वात छे. दुर्गचंद आ गामनो रहेवासी छे ते गइ काले नगर तरफ गयो छे, ते हजु सुधी आव्यो नथी, अमे सर्वे तेनो वृत्तांत जाणवाने आतुर थइ रहेला छीए. "

ते लोकोना आ वचनो सांभळी ते सुभटोए श्रेणिक राजाने ते वृत्तांत जणाव्यो, ते वखते राजाए विचार्यु के " आहा ! आ केवी वात कहेवाय ? अभयकुमार मृत्युना भयथी सरल हृदयना एक गाममीआने चोर ठरावे छे. " राजाना मुखना चेहेरा उपरथी अभयकुमार समजी गयो अने तत्काल तेणे विचार्यु के, आ चोरनु काइ पण कपट छे, ते कोइपण रीते खुल्लु करवु जोइए. आम विचारता ते चतुर प्रधानना हृदयमा बुद्धि स्फुरी आवी. तेणे एक देव विमान जेवो सुंदर मेहेल रचाव्यो. ते मेहेलनी अंदर सात भूमिकाओ रची. अनेक प्रकारना चंदरवा अने मोतीओना तोरणोथी तेने अलंकृत कर्यो रत्नासमान स्वरूपवाली स्त्रीओ अने देवतुल्य स्वरूपवाला पुरुषो तेमा स्थापित कर्या. पछी अभयकुमारे पेला रौहिणेय चोरने बोलावीने कह्यु. " भाइ, मारा जेवा मूर्ख माणसने धिक्कार हो. तमे तो कोइ भक्ति करवा लायक पुरुष छो. तमोने में अतिशय हेरान कर्या. ते क्षमा करो. हवे एकवार आ मारा मेहेलमां आवो, जेथी हु त्यां तमारी भक्ति करी मारा अपराधने दूर करुं. "

अभयकुमारना आवां कपट भरेला वचनोनो मर्म ते चोरना समजवामा आव्यो नहीं तत्काल ते तेनी साथे मेहेलमा गयो, त्या तेने प्रथम मिष्ट आहार आपी तृप्त कर्यो पछी कपटी अभयकुमारे तेने मदिरापान करावी उंची जातना दिव्य वस्त्रो पेहेरावी एक सुंदर पलंग उपर सुवाड्यो—ते चोर ते दिव्यमंदिरमां रही जाणे पोते स्वर्गमा रह्यो होय तेम मानवा लाग्यो. शयन कर्या पछी ते जागृत थयो, एटले अभयकुमारनी आज्ञाथी केटलाएक सामंतो अने नरनारीओनो स मूह त्या हाजर रहेल, ते 'जय जय नंद' इत्यादि मांगलिक शब्दोनो उच्चार करता तेना सांभळवामा आव्या. आ देखाव जोइ ते मदिराथी मत्त थयेलो चोर पोताना आत्माने भुली गयो. पेला हाजर रहेला लोको तेनी पासे आवी आ प्रमाणे कहेवा लाग्या—" प्रभु, पूर्वना सुकृत्यवडे तमे आ स्वर्गना विमानमा प्रगट थइ तेना स्वामी थया छो अने आ अमे सर्वे तमारा सेवक छीए. " आ प्रमाणे क-ही तेमणे नाटक करवानो आरंभ कर्यो. ते पछी अभयकुमारनी सूचनाथी जेना हाथमां एक सुवर्णदंम रहेलो छे एवो एक पुरुष आव्यो, तेणे आवी नाटक कर-नाराओने कह्यु के, " हाल नाटक बध करो, हु आ देवने तेमनी देव स्थितिनु भान करावु. " आ प्रमाणे कही तेणे रौहिणेयने कह्यु ' हे नवा देव, पोताना पू र्वोपार्जित एवा जे तमारा पुण्य अने पाप होय ते निवेदन करो अने ते पछी सु ख भोगवो " ते पुरुषना आ वचनो सांभली ते रौहिणेय विचारमा पड्यो. "शु आ साचु स्वर्ग हशे ? अथवा मारे माटे अभयकुमारे प्रपच तो नहीं रच्यो हो-य ? " आ प्रमाणे चिंतवी ते धीर बुद्धिवाला चोरे कटक काढती वेलाए सांभ-लेली देवना स्वरूपना वर्णनवाळी प्रभुनी वाणी (अणिमिसनयणा इत्यादि) संभारी तत्काल तेणे पोतानी आगल रहेला लोकोने पृथ्वी उपर लागेला चरण-वाला, कुमलाएला पुष्पोनी मालाने धरनारा, मटका मारता नेत्रोवाला अने मनो-भीष्ट साधनमा असमर्थ एवा जोइ श्री वीरपरमात्माना वचनो साथे तेमनो विरोध जोइ अभयकुमारे करेला कपटने जाणी लीधु " आ वखते पेलो दंमधारी पुरुष बोल्यो. " देव, शो विचार करो छो ? आ बधो देवलोक पोतपोतानी भक्ति दे-खाडवाने उत्कंठित छे, तेथी तमारो जे शुद्ध वृत्तांत होय ते सत्वर निवेदन क-रो " आ वखते ते रोहिणेय बोल्यो—" जिनपूजा, साधुसेवा, दयापालन, सुपा-त्रदान अने चैत्य निर्मापन आदि उत्तम धर्मकार्यो में पूर्व भवे करेला छे. " ते द

करवा इच्छा राखु छु.

ते पछी अभयकुमारे ते रौहिणेय चोरने राजानी पासे लावी आ प्रमाणे कह्यु, " स्वामी, आ चोर पोतानी चोरी मानी जाय छे. " तत्काल राजाए तेने वध करवानो आदेश कर्यो एटले अभयकुमारे कह्यु, " पिताजी, जो आपणे आ चोरने छोडी दइए तो ते चोरेलु सर्व धन पाछु आपशे, ते शिवाय ते द्रव्य आ पणाथी ग्रहण करी शकाय तेम नथी, वळी में आ चोरने वश करीने पकड्यो छे, बुध्दिए करीने पकड्यो नथी. तेमज आ चोरनु हृदय वैराग्यथी वासित थयेलु छे, तेथी ते अहींथी मुक्त थइ दीक्षा ग्रहण करवाने इच्छे छे, तेथी आ चोर वध करवाने योग्य नथी. " अभयकुमारना आ वचनो उपरथी राजाए तेने छोड्यो, एटले तेणे सर्व धन बताव्यु. पछी राजाए नगरजनोने एकठा करी जेनु जे हतु, तेने ते धन आपी दीधु. ते पछी श्रेणिक राजाए जेनो दीक्षा महोत्सव करेलो छे अने जेणे धन, वैभव, स्त्री अने परिवारनो त्याग करेलो छे एवा रौहिणेय चोरे श्री वीरपरमात्मानी पासे दीक्षा ग्रहण करी. ते वखते नगरजनोए तेनी भारे स्तुति करी हती.

रौहिणेय चोर मुनिव्रत धारण करी पोताना दुराचारनी शुध्दिने माटे अनेक प्रकारना तप तपी अने भवपर्यंत शुद्ध धर्म आराधी भाते अनशन करी ते देवपदने प्राप्त थयो हतो. आ प्रमाणे भगवतनी वाणीना प्रभावने दर्शावनारी रौहिणेय चोरनी कथा कहेवामा आवी

ए रीते बार भावनानु स्वरूप लक्षमा राखी भव्य जीवोए तेना आराधनने विषे तत्पर थवु जोइए

बार प्रतिमानुं सक्षिप्त स्वरूप

पेहेली प्रतिमा एक मासनी कहेवाय छे, बीजी बे मासनी, त्रीजी त्रण मासनी, चोथी चार मासनी, पांचमी पाच मासनी, छठी छ मासनी अने सात मी सात मासनी प्रतिमा छे. आठमी नवमी अने दशमी ए त्रण सात अहो रात्रिनी,छे अगीयारमी एक अहो रात्रिनी अने बारमी एक रात्रिनी छे—एवी रीते भिक्षु—साधुनी प्रतिज्ञा रुप—बार प्रतिमा थाय छे, तेओमा पेहेली प्रतिमा अन्नपानना अव्यवच्छिन्न दानरुप होवाथी एक दत्ती कहेवाय छे. तेवी रीते बीजी

बे दत्ती, त्रीजी त्रण दत्ती—एम सातमी सात दत्ती सुधी गणाय छे. सात अहो-रात्रना प्रमाणवाळी आठमी प्रतिमाने विषे जल रहित एकांतर उपवासे रही पार-णाने दिवसे आंबिल करवामां आवछे. अहीं दत्तीनो नियम नथी. वळी तेमा ग्रामा-दिकनी बाहेर ऊर्ध्व मुखे शयनादि आसने रही घोर उपसर्गो सहन करवाना छे. नवमी प्रतिमामा पण तेज प्रमाणे उत्कटादि आसने रहेवु पडे छे. दशमी प्रतिमामा पण एवीज रीते रहेवानु छे पण गोदोहासन–गाय दोहोवानु आसन करवानु छे. अ-गीआरमी प्रतिमामा पण एमज वर्त्तवानु छे परतु तेमा जल रहित छठ करी लांबी भुजावडे रहेवानु छे.

बारमी प्रतिमामा उपर प्रमाणे छे, परतु तेमा जल रहित त्रण उपवास करी एक पुद्गलव्याप्त निमेष रहित दृष्टि राखी अने लांबी भुजा करी रहेवानु छे. एनो अंगीकार करनार १ वज्र ऋषभ नाराच, २ ऋषभनाराच, अने ३ अर्ध नाराचमांथी हरेक कोइ सघयण युक्त होय छे. जघन्यथी नवमा पूर्वनी त्रीजी वस्तु सुधी अने उत्कृष्टथी काइक ऊणा दश पूर्व सुधी सूत्रार्थ अधिगत होय छे. तेमज १ तप, २ सूत्र, ३ शक्ति, ४ एकत्व अने ५ बले करी प्रतिमा अ-गीकार करनारने ए पाच प्रकारनी तुलनावडे परिकर्म—अभ्यासथी पेहेलाज भा-वितात्मा थइ जवाय छे.

ते परिकर्मनु परिमाण आ प्रमाणे छे—मासिक आदि सात प्रतिमाने वि-षे जेटला प्रमाणनी प्रतिमा छे, तेटला प्रमाणे करी ते परिकर्म होय छे. तेम वर्षा-ऋतुमा ए प्रतिमा अगीकार करातीनथी अने परिकर्म पण कराता नथी. प्रथमनी बे प्रतिमा एकज वर्षमा थाय छे. त्रीजी तथा चोथी एक एक वर्षमा होय छे बीजी त्रण अन्यत्र बीजे वर्षे अने परिकर्म पण अन्यत्र—बीजे वर्षे थाय छे.

ते प्रतिमानी प्रतिपत्ति आ प्रमाणे छे—नव वर्षे करीने पेहेली सात प्र-तिमा समाप्त कराय छे, आठमी आदि त्रण प्रतिमाओ एकवीश दिवसे समाप्त कराय छे अने अगीआरमी त्रण दिवसे प्राप्त थाय छे, अने ते अहो रात्रिने अंते छठ करवाथी बने छे अने बारमी प्रतिमा रात्रि पछी अनतर अठम करवाथी थाय छे अने चार रात दिवसना प्रमाणवाळी छे. अहीं बीजु घणु कहेवानुं छे, पण ग्रथ विस्तारना भयथी कहेवामा आव्यु नथी. ते प्रवचन सारोद्धार ग्रथमां-थी जाणी लेवु.

आ प्रमाणे सङ्क्षेपथी भिक्षुकनी बार प्रतिमानु स्वरूप कहेवामा आव्यु छे

अहो रात्रिनु संक्षिप्त कृत्य

" शुद्धाचार. साधु. श्रीजिनवचनानुसारतो नित्यम् ।
कुर्यात् क्रमेण सम्यक् स्वस्याहोरात्र कृत्यानि " ॥ १ ॥

" शुद्ध आचारवाळा साधुए हमेशा श्री जिनवचनने अनुसारे अनुक्रमे पोताना अहोरात्रिना कृत्यो सम्यक् प्रकारे करवा " १

कृत्यनो क्रम

साधुए रात्रिना पाछला पोहोरे जाग्रत थइ मदस्वरे करी सूत्र तथा अर्थना परावर्त्तन रूप स्वाध्याय करवो. जेथी आसपास रहेला आरम्भी लोको जाग्रत न थाय. ते पछी ज्यारे ते पोहोरनो चोथो अश बाकी रहे त्यारे छ प्रकारना आवश्यक करवा एटले प्रतिक्रमण करवु त्यार बाद उत्कट आसने रही शरीरना परिभोग्य मुहपत्ति आदि उपकरणोनी विधि पूर्वक पडिलेहणा करवी. ते पडिलेहणानी समाप्ति वखते सूर्योदय थाय त्यारे उपाश्रयने प्रमार्जे. ते पछी वदना पूर्वक आचार्यादिकने पुछी तेमनी आज्ञावडे वैयावच्च तथा सज्झाय ध्यान करे पण ते पोतानी बुद्धिए न करे. तेने माटे कह्यु छे के " छठ, अठम, चार, पाच, मास, अर्ध मास, अने मासखमण तेने विषे जे गुरु वचनने अनुसारे न करे तेने अनत ससारी कहेला छे जेम के,

" छठ्ठम दशम डुवालसेंहि, मासद्धमासखमणेहि ।
अकरता गुरुवयणअणंतससारिआ भणिआ " ॥१॥

ते पछी काइक उणी पोरिसि वखते बेशी मुहपत्ती पडीलेही पछी पात्रादिक उपकरणानी पडिलेहणा करे त्यार बाद बीजी पोरसीमा पूर्वे ग्रहण करेला श्रुतना अर्थनु स्मरण करे ते पछी ज्यारे भिक्षाकाल प्राप्त थाय एटले आगममा कहेल विधि प्रमाणे गुरुनी आज्ञा ग्रहण करी " आवस्सही " वगेरे उपाश्रयथी नीकळी भिक्षाकालना समयमा एटले उत्सर्गथी त्रीजी पोरिसीरूप दिवसना वखतमा अथवा " कालेकाल समायरे " ए आगमना वचन प्रमाणे जे देशमा के जे गाममा लोको ज्यारे भोजन करता होय ते देशमा ते वखते स्थविर कल्पीओने भिक्षानो काळ जाणी लेवो

ते पछी साधु व्याक्षेपता, आकुलता, अने शठताए रहित थइ युगमात्र दृष्टि राखी, पाछल अने पमखे उपयोग राखी एक गृहथी बीजे गृह भिक्षा माटे जमे, अने तेम जमीने बेतालीश दोषे रहित एवी भिक्षा ग्रहण करे. त्यांथी पाछो फरी " निस्सिहि " पूर्वक उपाश्रयमां प्रवेश करी इरियावही पडिक्कमी विधि पूर्वक ते अशनादि गुरुने बतावी पछी पचखाण पारी, गृहस्थनी दृष्टि न पमे तेवा प्रकाशवाला स्थानमां रही क्षुधानी वेदना उपशमाववा माटे १ वैयावच्च, २ इर्यानी शुद्धि, ३ सत्तर प्रकारे संयमनुं पालन, ४ प्राण धारण, ५ सज्झाय ध्यानादि अने ६ धर्म चिंताने माटे भोजन करे. ते भोजन समये सुरासुरादि पांच दोषने वर्जे. तेने माटे आ प्रमाणे कहेलुं छे—

"[1]असुरसुरं १ अचवचवं, २ अदुअ ३ मविलंबियं ४ अपरिसाडि ५ मणवयणकायगुत्तो भुंजे अहपक्खिवणसोही " ॥ १ ॥

ए पांच मांमलाना दोषने वर्जे, ते पछी मुनिए मात्रा करवानुं पात्र प्रक्षालन करवुं. तथा सज्झाय ध्यान अने वैयावच्चादि कार्य करी ते पछी चोथे पोहोरे मुखवस्त्रिका पडिलेही गुरुना अने पोताना उपकरणोनी पडिलेहणा करवी. ते पछी ज्यारे सूर्य अर्ध बिंबरूपे रहे त्यारे गुरुनी समक्ष प्रतिक्रमण करवुं ते पछी एक प्रहर पर्यंत श्रुतपरावृत्तिरूप स्वाध्याय ध्यान करवा. ते पछी तेज प्रहरनो चोथो भाग बाकी रहे त्यारे उच्चार प्रश्रवणना स्थंडिलो (मांडला) करवा. ते पछी सूत्र तथा अर्थने संभारवा. त्यार बाद ज्यारे निद्रानो समय आवे त्यारे गुरुनी आज्ञा ग्रहण करवा पूर्वक पृथ्वी उपर संथारो पडिलेही चैत्यवंदन पूर्वक रात्रिना संथारानी गाथा (संथारा पोरिसी) भणी अने रजोहरणने जमणी बाजु मुकी स्वल्प निद्रा करवी अति निद्रावश न थवुं

आ प्रमाणे संक्षेपथी अहोरात्रना कृत्यो बताव्या छे, विस्तारथी ते साधु संबंधी अधिकार ग्रंथांतरथी जाणी लेवो

मुनिओ अनेक गुणोना आधार रूप छे, ते वात दर्शावे छे—

" निच्चमचंचलनयणा । पसंतवयणा परिफ्फुरगुणरयणा ।
जियमयणा मिउवयणा सव्वत्थविसन्निहिअ जयणा ॥१॥

[1] भोजन करतां सुर सुर शब्द न करवो (२) अचवच शब्द न करवो (३) उतावलुं न जमवुं (४) अति विलंबपणे न जमवुं (५) भाग्य पडवा देवा नहि

इरियासमिइपभई, नियसुद्धायारसेवणे निउणा ।
जे सुयनिहिणो समणा तेहिं इमा नूसिया पुहवी" ॥२॥

"जेओ नेत्रोनी चपलताथी रहित छे, जेमना मुख शांत छे, जेमना गुणरत्न प्रसिद्ध छे, जेओ कामना जितनारा छे, जेमना वचन कोमळ छे जेमनी नजीक सर्व प्रकारे यतना छे, जेओ इर्या समिति प्रमुख पोताना शुद्ध आचारने सेववामा निपुण छे, अने जेओ श्रुतना निधान रुप छे, एवा मुनिओथी आ पृथ्वी विभूषित छे १—२

सिद्धातोक्त साधु गुणवर्णन

" जाइसपन्ना, कुलसपन्ना, वलसपन्ना, रूवसंपन्ना विणय सपन्ना, णाणसपन्ना, दसणसपन्ना, चरित्तसपन्ना, लज्जासपन्ना, लाघवसपन्ना, मिउमद्दवसपन्ना, पगइभद्दया, पगइविणीया, ओयसि, तेयंसि, वच्चसि, जससि, जियकोहा, जियमाणा, जियमाया, जियलोहा, जियणिद्दा, जितेंदिया, जियपरिसहा, जिवियासमरणजयविप्पमुक्का, उग्गतवा, घोर तवा, दित्ततवा, घोरवजचेरवासिणो, वहुसुया, पंचस-मिईहिसमिआ, तिहिं गुत्तीहिं गुत्ता, अकिचणा, निम्ममा, निर-हकारा, पुकरव अलेवा, सखोव्व निरजणा, गयणंव निरासया, वाउव्व अप्पडिवद्धा, कुम्मो इव गुत्तेदिया, विहगुव्व विप्पमुक्का, जारडव्व अपमत्ता, धरणिव्व सव्वंसहा, किं वहुणा ! एगतपरोवरायनिरया, जिणवयणोवदेसण कुसला, जावकुत्तियावणजूयाएरिसा जिणाणाराहगा समणा जगवतो नियचरणेहिं महीयल पवित्तयतो विहरतित्ति " ॥

" जाति, कुल, वल, रूप, विनय, ज्ञान, दर्शन, चारित्र, लज्जा, लाघ-

व अने मृदु मार्दवता, ए सर्वने पामेला, प्रकृतिवडे जद्रिक, प्रकृतिवडे विनीत, पराक्रमी, तेजस्वी, वाणीनी सुंदरतावाला, यशस्वी, क्रोध, मान, माया अने लोभने जितनारा, निद्राने, इन्द्रियोने अने परिषहोने जितनारा, जीवितनी आशा तथा मरणना जयथी रहित, उग्र तपस्वी, घोर तपस्वी, दीप्त तपस्वी, घोर ब्रह्मचर्यना धारक, बहुश्रुत, पाच सुमतिवडे सुमत, त्रण गुप्तिवडे गुप्त, निष्परिग्रही, निरहंकारी, कमलनी जेम निर्लेप, शंखनी जेम निरंजन, आकाशनी जेम निराश्रय, वायुनी जेम प्रतिबंध रहित, काचवानी जेम गुप्तेंद्रिय, पक्षीनी पेठे विप्रमुक्त, भारंडनी जेम प्रमाद रहित, पृथ्वीनी जेम सर्वने सहन करनारा, जिनवचननो उपदेश करवामा कुशल, एकांते परोपकार करवामा तत्पर. विशेष शु कहेवु ? पण तेओ [1]कुत्रिकापण जेवा छे, एवा जिनेश्वरनी आज्ञाना आराधक, श्रमण—तपस्वी मुनिओ पोताना चरणवडे आ पृथ्वीतळने पवित्र करता विचरे छे. ”

आवा साधुजन प्रमुख उत्तम पुरुषोने आराधन करवा योग्य एवा सर्वोत्तम धर्मनी दुर्लभता दर्शावे छे—

" जह चिंतामणि रयणं सुलहं न होइ तुच्छविहवाण ।
गुणविहववज्जियाण जियाण तह धम्मरयणंमि ” ॥१॥

" पशुपालनी पेठे तुछ वैभववाला अने थोमा पुण्यवाला जीवोने जेम चिंतामणि रत्न सुलभ होय नहीं, तेम सम्यक्त्वादि गुण रुप वैभवथी रहित एवा जीवोने धर्म रत्न सुलभ होतु नथी. तेतो जयदेव कुमारनी जेम जे अतुल गुणवान् होय छे तेने मणिनी खाण रुप एवी मनुष्य गतिमा चिंतामणि तुल्य उत्तम धर्मने पामे छे. ” १

पशुपाल अने जयदेवनुं दृष्टांत

हस्तिनापुर नगरमां नागदेव नामे एक शेठ रहेतो हतो. तेने वसुंधरा नामे एक स्त्रीना उदरथी जयदेव नामे एक पुत्र उत्पन्न थयो. ते जयदेवे बार वर्ष सुधी रत्ननी परीक्षानो अभ्यास कर्यो हतो, आथी शास्त्रने अनुसारे ते चिंतामणिने महान् प्रजाववालु जाणी बाकीना रत्नोने पाषाण तुल्य समजतो हतो, आथी ते चिंतामणि रत्न उपार्जन करवा माटे आखा हस्तिनापुरमा दरेक दुकाने अने घेर घेर फर्यो. तोपण कोइ स्थले तेने चिंतामणि रत्न मल्यु नहीं आथी

[1] शास्त्रमा कहेल देवताधिष्टित दुकाननी जेवा—अर्थात् जेमनी पासेथी जे जोइए ते मली शके तेवा

खेद पामी तेणे पोताना मातापिताने कह्यु " हे पूज्य, मारं चित्त चिंतामणि र
त्नने माटे लागेलुं छे, में घणी शोध करी पण ते रत्न अहीं प्राप्त थयु नहीं, तेथी
जो आज्ञा आपोतो हु अहींथी बीजे स्थले जाउं. " माता पिता बोल्या " व
त्स, ए चिंतामणिनी तो कल्पना छे, परमार्थथी चिंतामणि रत्न छेज नहीं, माटे
तु तारी इच्छा प्रमाणे बीजा रत्नोनो वेपार कर्य. " आ प्रमाणे कही तेमणे जय-
देवने घणो अटकाव्यो, तथापि जेणे चिंतामणि रत्न मेळववानो निश्चय करेलो
छे एवो ते हस्तिनापुर नगरमाथी नीकली गयो. घणा नगर, गाम, खीण, कर्बट,
पाटण अने समुद्र तीरे गवेषणा करतो ते अतिशय फरवा लाग्यो पण कोइ ठे
काणे तेने चिंतामणि रत्न प्राप्त थयु नहीं. आथी ते खेदातुर थइ आ प्रमाणे चिं
तववा लाग्यो—" शु चिंतामणि रत्ननी वात सत्य नहीं होय ? कोइ पण ठेका-
णे ते देखातु नथी अथवा ते मणि शास्त्रमा दर्शावेल छे, एटले तेनु अस्तित्व न
होय, ते केम सभवे? शास्त्रनु वचन अन्यथा होय नहीं. तेथी कोइ ठेकाणे ए रत्नो
हशेज. " आ प्रमाणे चिंतवी पाछो ते मणिनी खाणोमां फरी तेनी शोध करवा
लाग्यो. तेवामा कोइ एक वृद्ध पुरुष तेने मळी आव्यो, तेणे जयदेवने कह्यु, "अ
हीं एक मणिनी मोटी खाण छे, ते खाणमाथी पुण्यवत पुरुषो चिंतामणि रत्नने
प्राप्त करी शके छे. " वृद्ध पुरुषना आवा वचनो साभळी जयदेवे ते खाणमा चिं-
तामणि रत्ननी गवेषणा करवामाडी, तेवामा एक मदबुद्धि पशुपालना हाथमां
वर्तुलाकार पथ्थर जोवामा आव्यो. शास्त्रमा कहेला लक्षणोथी तेने चिंतामणि
जाणी जयदेवे तेनो पासे तेनी मागणी करी. पशुपाल बोल्यो—" तारे आ व-
स्तुनु शु काम छे ? जयदेव बोल्यो—" हु आ वस्तु घेर जइ बाळकोने रमवा आ-
पीश. " पशुपाले कह्यु, " आवी वस्तुतो अहीं घणी छे, तु पोतानी मेळे ते शा
माटे लइ लेतो नथी ? " जयदेवे कह्यु, " अत्यारे घेर जवानी मने भारे उत्कंठा
थइ छे माटे मने सत्वर आप, एटले हु मारे घेर चालतो थाउं. तने आ स्थळे
बीजा आवा पदार्थो मळशे. " आवा जयदेवना वचनो साभळीने पण ते पशु
पाल परोपकारशील न होवाथी पीगळ्यो नहीं अने तेने ते रत्न आप्यु नहीं.
पछी जयदेवे उपकार बुद्धिथी तेने आ प्रमाणे कह्यु, " जड, जो तारे मने आ
रत्न न आपवु होय तो तु तेनी आराधना कर. ए चिंतामणि रत्न छे तेनो आ-
राधना करवाथी ते तने वाछित फळ आपशे. " पशुपाल बोल्यो—" जो आ

साचु चिंतामणि रत्न होय तो ते मने नदरीना चिंतवेला फल तथा कचकर्मा शीघ्र आपो " पशुपालना आ वचनो साजली जयदेव हसीने बोल्यो—" अरे पशुपाल, एम चिंतवनाथी काइ मलतुं नथी, पण प्रथम तेनी आराधना करवी जोइए. पेहेला त्रण उपवास करी सध्याकाले ते रत्नने शुद्ध जले न्हवरावी, शुध्द भूमिना उचा प्रदेशमा स्थापी तेनी चदन, कपूर तथा पुष्पादिकवडे पूजा करी पछी नमस्कार करी ए रत्ननी आगल पछी जे इष्ट होय, तेनु चिंतवन करवु, तो पछी प्रातःकाले ते प्राप्त थाय छे. "

जयदेवना आ वचन साजळी ते पशुपाल पोताना बकरा अने मेंढाना वृंदने वाळी गाम तरफ चाल्यो. " निश्चे आ मणि आ हीन पुण्यना हाथमा रहेशे नहीं " एम धारतो जयदेव पण तेनी पाछल चालवा लाग्यो मार्गे चालतां पशुपाल ते मणिने उद्देशीने बोल्यो—" अरे मणि, हु आ बकरा वेची तेवडे चंदनादि सामग्री लावी तारी पूजा करीश अने तारे पण मारा चिंतितकार्य साधवामां पूर्ण उद्यम करवो. वळी हे मणि, हजु अहींथी गाम दूर छे, तेथी रस्तामां काइ कथा कहे तो रस्तो खूटशे. जो कदि कोइ कथा तारा जाणवामा न होय तो हु कहु छु, ते साजल—

" कोइएक एक हाथना प्रमाणवाळु देवगृह छे, तेनी अदर चार भुजावाळो देव छे. " आ प्रमाणे तेणे वारवार कहेवा माडयु, तोपण ते मणि काइ पण बोल्यो नहीं, त्यारे ते रोषातुर थइ आ प्रमाणे बोल्यो. " अरे मणि, तु मारी वातमां होंकारो पण आपतो नथी, तो पछी वाछित आपवामा तारी शी आशा राखवी ? अथवा तारु नाम चिंतामणि छे, ते बराबर छे, कारण के तारी प्राप्तिथी मारा मननी चिंता नाश पामती नथी. जे हु छाश विना एक क्षणमात्र पण रही शकतो नथी ते हु तारे माटे कराता त्रण उपवास करी मरणज पामु, एमां शक नथी. एथी हु तो एम मानु छु के, आ वणिके मने मारवाने माटेज तारु वर्णन करेलु छे, तेथी तु चाल्यो जा. फरीवार मारी दृष्टि गोचर थइश नहीं, " आ प्रमाणे कही ते पशुपाले मणिने फेंकी दीधो आ वखते आनंदित थयेला जयदेवे तत्काल ते चिंतामणिने प्रणामपूर्वक ग्रहण करी अने पोताना मनोरथ पूर्ण थयेला जाणी पोताना नगर तरफ चाल्यो. मार्गमा चालता महापुर नामे एक नगर आव्यु. मणिना प्रभावथी ते नगरमा लक्ष्मीनो समूह तेने प्राप्त

थइ आव्यो. ते समये ते नगरना सुबुद्धि नामना शेठे पोतानी पुत्री रत्नवतीने तेनी साथे परणावी. पछी जयदेव ते कन्या तथा बहु परिवार सहित पोताना वतन हस्तिनापुरमा आव्यो अने तेणे पोताना मातापिताना चरणमा वंदना करी. पोताना पुत्रने आवो समृद्धिमान् जोइ ते माता पिता आनंदित थइ तेनी ज्ञारे प्रशंसा करवा लाग्या. स्वजनोए जयदेवनु बहु सन्मान कर्यु अने बीजा लोको तेनी स्तुति करवा लाग्या. अने जयदेव यावज्जीवित सुखी थयो हतो. आ प्रमाणे धर्म रत्ननी प्राप्तिमा जयदेव अने पशुपालनो वृत्तांत कहेवाय छे, ते उपनय रुपे जाणवो. एवी रीते प्रसंगे प्राप्त थयेल छद्मस्थाश्रित एवु सर्वविरतिनु स्वरूप कहेलु छे.

" इत्थं स्वरूपं परमात्मरूप–निरूपकं चित्रगुणं पवित्रम् ।
सुसाधुधर्मं परिगृह्य भव्या भजंतु दिव्यं सुखमक्षयं च" १

" आवा स्वरूपवाळा, परमात्मरूपने निरुपण करनारा, विचित्रगुणवाळा, अने पवित्र एवा उत्तम साधु धर्मने ग्रहण करी भव्य प्राणीओ दिव्य अने अक्षय सुखने भजो. " १

" प्राक्तन सद्ग्रंथानां पद्धतिमाश्रित्य वर्णितोऽत्रमया ।
साध्वाचारविचारः शुद्धो निज आत्मशुद्धिकृते " ॥२॥

पूर्वना सदग्रंथोनी पद्धतिने आश्री मारा पोताना आत्मानी शुद्धिने माटे मे आंहि शुद्ध एवो साधुनो आचार वर्णन करेलो छे " २

ए प्रकारे श्रीमान् वृहत् खरतर गछना अधिराज श्री जिनभक्तिसूरीश्वना चरणाराधक श्री जिनलाभसूरिए रचेला
आ आत्मप्रबोध ग्रंथनो संक्षिप्त सर्व विरति नामनो
त्रीजो प्रकाश संपूर्ण थयो.



अथ चतुर्थ प्रकाश.

परमात्म स्वरूप.





अनुक्रमे आवेला आ चोथा परमात्म प्रकाशनो आरम्भ करवामां आवे छे. प्रथम परमात्मताना बे प्रकार छे. १ भवस्थ परमात्मता अने २ सिद्धस्थ परमात्मता.

ते परमात्मतानी प्राप्तिने सूचवनारी बे आर्याओ आ प्रमाणे छे—

" क्षपकश्रेण्यारूढः कृत्वा घनघातिकर्मणां नाशम् ।
आत्मा केवलभूत्या भवस्थपरमात्मतां भजते ॥ १ ॥
तदनुभवोपग्राहक—कर्मसमूहं समूलमुन्मूल्य ।
ऋजुगत्या लोकाग्रं प्राप्तोऽसौ सिद्धपरमात्मा" ॥ २ ॥

क्षपक श्रेणी उपर आरूढ थयेलो आत्मा ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय अने अंतराय—ए चार कर्म के जे आत्मगुणना घातक होवाथी घनघाती कहेवाय छे, तेनो नाश करी लोकालोकने प्रकाश करनार केवलज्ञाननी संपत्ति प्राप्त करी ते वडे भवस्थ एवा परमात्मपणाने पामे छे. " १

ते पछी ते आत्मा तत्काल काले करीने एटले चौदमा गुणठाणाना छेला समयमां भवोपग्राही एटले वेदनीय, आयु, नाम अने गोत्र रुप चार कर्म जे भव पर्यंत स्थायी छे, ते कर्मना समूहने मूलमांथी उखेडी नांखी ऋजुगति एटले समयांतर के प्रदेशांतरनो स्पर्श न करीने लोकाग्र—सिद्धि स्थानने प्राप्त करी सिद्ध परमात्मपणाने पामे छे. २

थइ आव्यो. ते समये ते नगरना सुबुद्धि नामना शेठे पोतानी पुत्री रत्नवतीने तेनी साथे परणावी पछी जयदेव ते कन्या तथा बहु परिवार सहित पोताना वतन हस्तिनापुरमा आव्यो अने तेणे पोताना मातापिताना चरणमा वंदना करी. पोताना पुत्रने आवो समृद्धिमान् जोइ ते माता पिता आनंदित थइ तेनी ज्यारे प्रशंसा करवा लाग्या. स्वजनोए जयदेवनु बहु सन्मान कर्यु अने बीजा लोको तेनी स्तुति करवा लाग्या. अने जयदेव यावज्जीवित सुखी थयो हतो. आ प्रमाणे धर्म रत्ननी प्राप्तिमा जयदेव अने पशुपालनो वृत्तांत कहेवाय छे, ते उपनय रूपे जाणवो. एवी रीते प्रसंगे प्राप्त थयेला छद्मस्थाश्रित एवु सर्वविरतिनु स्वरूप कहेलु छे.

" इत्थं स्वरूपं परमात्मरूप–निरूपकं चित्रगुणं पवित्रम् ।
सुसाधुधर्मं परिगृह्य भव्या भजन्तु दिव्यं सुखमक्षयं च" १

" आवा स्वरूपवाला, परमात्मरूपने निरूपण करनारा, विचित्रगुणवाला, अने पवित्र एवा उत्तम साधु धर्मने ग्रहण करी भव्य प्राणीओ दिव्य अने अक्षय सुखने भजो. " १

" प्राक्तन सद्ग्रथाना पद्धतिमाश्रित्य वर्णितोऽत्रमया ।
साध्वाचारविचार शुद्धो निज आत्मशुद्धिकृते " ॥२॥

पूर्वना सद्ग्रथोनी पद्धतिने आश्री मारा पोताना आत्मानी शुद्धिने माटे में अहिं शुद्ध एवो साधुनो आचार वर्णन करेलो छे " २

ए प्रकारे श्रीमान् वृहत् खरतर गछना अधिराज श्री जिनभक्तसूरीश्वरना चरणाराधक श्री जिनलाभसूरिए रचेला आ आत्मप्रबोध ग्रथनो संक्षिप्त सर्व विरति नामनो त्रीजो प्रकाश संपूर्ण थयो.



अथ चतुर्थ प्रकाश.

परमात्म स्वरूप.





अनुक्रमे आवेला आ चोथा परमात्म प्रकाशनो आरंभ करवामां आवे छे. प्रथम परमात्मताना बे प्रकार छे. १ भवस्थ, परमात्मता अने २ सिद्धस्थ परमात्मता.

ते परमात्मतानी प्राप्तिने सूचवनारी बे आर्याओ आ प्रमाणे छे—

" क्षपकश्रेण्यारूढः कृत्वा घनघातिकर्मणां नाशम् ।
आत्मा केवलभूत्या भवस्थपरमात्मतां भजते ॥ १ ॥
तदनुभवोपग्राहक–कर्मसमूहं समूलमुन्मूल्य ।
ऋजुगत्या लोकाग्रं प्राप्तोऽसौ सिद्धपरमात्मा" ॥ २ ॥

क्षपक श्रेणी उपर आरूढ थयेलो आत्मा ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय अने अंतराय—ए चार कर्म के जे आत्मगुणना घातक होवाथी घनघाती कहेवाय छे, तेनो नाश करी लोकालोकने प्रकाश करनार केवलज्ञानरूप संपत्ति प्राप्त करी ते वडे भवस्थ एवा परमात्मपणाने पामे छे. " १

ते पछी ते आत्मा तत्काल काले करीने एटले चौदमा गुणठाणाना छे-

अहीं भवस्थ परमात्मतानी स्थितिनु मान जघन्यथी अंतर्मुहूर्त्तनु छे अने उत्कृष्टथी देशे ऊणी एवी पूर्व कोटि वर्षनु छे अने सिध्द परमात्मतानी स्थितिनु मान सादि अपर्यवसित कालनु छे. एवा प्रकारनी परमात्मता जेने होय छे ते परमात्मा कहेवाय छे.

ते परमात्मा भवस्थ केवळी अने सिध्द एम बे प्रकारे छे. तेमा प्रथम भवस्थ केवलीनु स्वरूप बतावे छे.

भवस्थ केवलीनु स्वरूप

भवस्थ केवलीना पण १ जिन अने २ अजिन एवा बे भेद छे. तेमां जे जिन नामकर्म उदयवाला तीर्थंकर ते जिन कहेवाय छे अने जे सामान्य केवली ते अजिन कहेवाय छे. ते जिन १ नाम जिन, २ स्थापना जिन, ३ द्रव्य जिन अने ४ भाव जिन—एम चार प्रकारे छे. ते विषे आ प्रमाणे कह्यु छे—

" नामजिणाजिणनामा ठवणजिणा पुणजिणंदपडिमाओ।
दव्वजिणाजिणजीवा भावजिणा समवसरणत्था" ॥१॥

जे श्री ऋषभ, अजित अने संभव वगेरे जिनो छे ते नाम जिन कहेवाय छे. ते नाम जिन साक्षात् जिनगुण वर्जित छे, तोपण परमात्मगुणनु स्मरण वगेरे कारणने लइने परमार्थपणे सिध्धिने करनार होवाथी सम्यग् दृष्टि पुरुषोए ते सर्व काले स्मरण करवा योग्य छे जेम लोकने विषे पण मंत्राक्षरना स्मरणथी कार्यनी सिध्धि देखाय छे.

रत्न, सुवर्ण, रजत, आदि धातुमय एवी कत्रिम तथा अकत्रिम जे जिनेश्वरनी प्रतिमा ते स्थापना जिन कहेवाय छे, तेने विषे पण जो के साक्षात् जिन गुण विद्यमान नथी तोपण तेमा तात्त्विक जिन स्वरूपनु स्मरण थवाने लीधे तेना दर्शन करनार सम्यग्दृष्टि जीवोना चित्तमा परमशांत रसनु उत्पादक होवाथी अने अबोधी जनने उत्तम बोधिबीजनी प्राप्तिनु हेतु होवाथी तेमज श्री केवली भगवानना वचनवडे तेमा जिनतुल्यपणु होवाथी शुध्द मार्गानुसारी श्रावकोने द्रव्य अने भावथी सर्वकाले शंका रहितपणे ते स्थापना जिन वंदनीय, पूजनीय अने

स्तवनीय छे. अने मुनिओने सर्व सावद्य योगनी निवृत्ति होवाथी तेमनी भावपूजा करवी योग्य छे ते विषे आगमने विषे प्रतिपादन करेलु छे.

केटलाएक सांप्रतकाले बुद्धिहीन, श्री वीरप्रभुनी परंपरानी बाहेर वर्तनारा, मिथ्यात्वना उदयथी पराभव पामेला, स्वमति कल्पित अर्थने स्थापनारा अने श्री जिनेश्वरे प्ररूपेला स्याद्वाद—अनेकांत मार्गने लोपनारा लोकोए कुदृष्टिनो विलास प्रगट करेलो छे, ते लोको जैनाभास एटले जैन लक्षण रहित छतां जैनना जेवो आभास बतावनारा छे. तेओ श्री परम गुरु—तीर्थंकरना वचनोने उथ्थापनारा होवाथी अनंत भव भ्रमणाना भयने अवगणी पोते ग्रहण करेला असत्पक्षने सिद्ध करवा माटे भोळा लोकोनी आगळ उत्सूत्र प्ररूपणा करे छे. तेओ कहे छे के, " स्थापनाजिन ज्ञानादि गुणोथी शून्य होवाथी वंदना करवा योग्य नथी, तेमने वंदना करवाथी सम्यक्त्वनो नाश थाय छे. आगमने विषे पण तेमने वंदना करवानो अधिकार कह्यो नथी. आधुनिक लोकोए पोतानु माहात्म्य प्रगट करवाने माटे जिनचैत्यनी स्थापना करेली छे "

वळी तेओ कहे छे के, "जिनबिंबनी पूजा वगेरे करवामा साक्षात् जीवहिंसा देखाय छे अने ज्यां जीवहिंसा होय त्यां धर्म होयज नहीं. कारण के, धर्म तो दया मूलज कह्यो छे, तेथी पोताना सम्यक्त्वनु अक्षयपणे रक्षण करवाने इच्छनारा प्राणीओने तो श्री जिन प्रतिमानु दर्शन करवु पण अयुक्त छे."

अहा ! केवी अज्ञानता छे ! पूर्वजोने संतुष्ट करवा माटे पींपळा आदि वृक्षोना मूलमा सचित्त जलनु सिंचन करवा प्रमुख आचरण अने मिथ्यात्वी देवनी पूजा वगेरेमा प्रवर्त्तन—ए करवामा सम्यक्त्वनो नाश थतो नथी. कारण के, संसारीपणाने लइने श्रावकोने एवा कार्यमा अधिकार छे.

आ प्रसंगे सिध्धांतना वचनोने अनुसरी अद्भुत युक्तिथी तेमना असत् पक्षने दूर करवा माटे उत्तररूपे वचनो कहेवामा आवे छे—जे स्थापना जिन छे तेनो जिन स्वरूपने स्मरण करावबा प्रमुख जे तात्त्विक हेतु युक्तिपूर्वक प्रथम कहेवामा आव्यो छे, ते प्रत्यक्षादि प्रमाणवडे सिध्ध थाय छे, तेथी तेमनामा सर्वथा गुणशून्यपणानो अभाव होवाथी तेनामा वंदनादि करवानी योग्यता साबित थाय छे. ते स्थापना जिनतु दर्शन वंदन वगेरे करवाथी तत्काल शुभ ध्यान प्रगट थता प्राणीओने सम्यक्त्वनी निर्मलता प्राप्त थाय छे. तेथी ते जैनाभासोए सम्यक्त्वने नाश थवानी जे युक्ति करेली

छे ते सर्वथा मिथ्यात्वनी मूल रुप छे. आ प्रमाणे जाणी सम्यग्दृष्टि जीवोए से युक्तिने आदर आपवो नहीं. वळी जे स्थानकमां चित्रमां आळेखेली स्त्री होय तेवा स्थानकमां साधुओने रहेवानो निषेध आचाराग सूत्रमां कहेलो छे; चितरेली स्त्री साक्षात् स्त्री गुणथी वर्जित छे, छतां आकार मात्रे करी विकार उत्पन्न थवानु कारणभूत छे. त्यारे जो तेना दर्शनथी विकार उत्पन्न थाय छे तो पछी परम शांत रसवाळी सौम्य आकारने धारण करनारी श्री जिन प्रतिमाना दर्शनथी प्रबुध्ध पुरुषोने उत्तम ध्यान थवानो संभव केम न होय ? आवी रीते सद्बुध्धिवाळा पुरुषोए विवेकपूर्वक विचार करवो जोइए. ते जैनाभासो कहे छे के, " आगमने विषे जिन चैत्यवदनादिकनो अधिकार नथी, चैत्य स्थापन ए आधुनिक छे. पूजामां हिंसा थवाथी ते अधर्म छे अने वृक्ष-पींपळा प्रमुखने पाणी पावु, तथा मिथ्यात्वीओना देवनु पूजन करवु, एमां सम्यक्त्वनो विनाश थतो नथी. आ तेमना आलापो उन्मत्त माणसना आलापना जेवा अयुक्त छे. कारण के, आगमने विषे स्थाने स्थाने जिन चैत्यवंदन तथा पूजनादिकना अधिकार छे तेथी स्थापनानु अने पूजानुं प्राचीनपणु सिध्ध थाय छे. जो तेमां अधर्मपणुं होय तो आगमने विषे कहेला हित, सुख अने मोक्षादिकना फळनी प्राप्तिमां विरोध आवे. तेम वळी तिर्यंच, नरक गति आदि नठारा फल अधर्मना कहेला छे. जे पींपळाने सचित्त जल सिंचन करवु, ते प्रत्यक्ष जैन धर्मनी श्रध्धानी विरुध्ध होवाथी ते साक्षात् मिथ्यात्वीओनुज कार्य छे ए प्रसिध्ध छे, कारण के, सम्यक्त्वीओने अन्य देवने वदनादिक करवामां राजाभियोग आदि आगारने वर्जीने बीजे सर्व स्थळे तेनो सर्वथा परिहार करवाने आगममां कहेल छे, तेथी उत्सर्ग मार्गथी अन्य देवने वदनादि करवामां सम्यक्त्वनो अवश्य नाश थाय छे. उपर कहेला अर्थने प्रतिपादन करनारा श्री ज्ञाताधर्मकथा सूत्रना केटलाएक वचनो आ प्रमाणे छे—

१ "तएण सा दोवई रायवरकण्णगा पहाया कय बलिकम्मा कयकोउय मगलपायछित्ता सुध्धपावेसाइ मगलाइ वच्छाइ पवरपरिहिया मज्जणघराउ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव

१ द्रौपदी—द्रुपद राजाना पुत्री—पाडवोनी पत्नीए जिन प्रतिमानी पूजा केवा प्रकारोथी करी तेनो अधिकार छे

जाणहरे तेणेव उवागच्छईश्त्ता जिणहरं अणुपविस्सइ आलोए
णामं करेइ लोमहत्थयं परामुसइ एव जहा सूरिआभे जिण-
डिमाउ अच्चेइ तहेव जणिअव्वं जावधूवं रूहइ वाम जाणुं
चेइ दाहिणजाणुं धरणीतलंसि निहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धानं धर-
ीतलंसि निअंसेइ ईसिं पच्चुन्नमइ करयलजावकट्टु एवं वयासी
मुत्थुणं अरिहंताणं जावसंपत्ताणं वंदइ नमंसइ जिणहराउ
डिनिक्कमइत्ति ॥

वली रायपसेणी सूत्रमां पण आ प्रमाणे कहेलु छे—

"[२] तएणं से सुरिआभे देवे पोत्थयरयणं गिण्हत्तिश्त्ता
ोत्थयरयणं वाएत्तिश्त्ता धम्मियं ववसायं पगिगिण्हत्तिश्त्ता
ोत्थयरयणं पक्तिनिक्खमंतिश्त्ता सिंहासणाओ अब्भुट्ठेइश्त्ता
वसायसन्नाउ पुरित्थमल्लदारेण पक्तिनिक्खमइश्त्ता जेणेव णं
ा पुक्खरणि तेणेव उवागच्छइश्त्ता णंदा पुक्खरणीए पुरत्थि-
ल्लेणं दारेणं तिसोपाण पक्तिरूवेणं पच्चोरुहइश्त्ता तत्थ हत्थ-
ाद पक्खालेइश्त्ता आयते चोक्के परमसुइन्नूए एगं सेयं मह
त्ययामहं विमलसलिल पुण्ण मत्तगयमुहागिइसमाणं जिंगारं
ागिण्हंत्तिश्त्ता जाइं तत्थउप्पलाइं जाव सयपत्ताइ सहसपत्ताइं
ताइ गिण्हंत्तिश्त्ता णंदाउ पुक्खरणीओ पच्चोरुहइश्त्ता जेणे
ं सिध्धायतणे तेणेव पहारत्थगमणाए इत्यादि जाव बहु हिय
देवेहिंअ देवीहिय सद्धिं सपरिवुम्मे सव्वह्नीए जाव वाइयरवेणं
जेणेव सिद्धायतणे तेणे व उवागच्छइ सिध्धायतणं पुरित्थिमल्लेणं

२ सूर्याभदेवे देवलोकमां जिन प्रतिमानी केवा केवा द्रव्य अने भावमय प्रकारोवडे पूजा करी तेनो अधिकार छे

दारेण अणुपविसइ२त्ता जेणेव देवच्छंदए जेणेव जिणपडिमा तेणेव उवागच्छइ जिणपडिमाए आलोए पणाम करेइ२त्ता लोमहत्थग गिण्हइ२त्ता परामुसइ२त्ता लोमहत्थगं जिणपडिमाओ लोमहत्थेण पमज्जइ२त्ता जिणपडिमाओ सुरहिणा गधोदएण एहाणेइ२त्ता सरसेण गोसीस चदणेण गायाइ अणुलिंपइ२त्ता जिणपडिमाए अहियाइं देवदूसजुयलाइ निअसेइ २त्ता अग्गेहिंवरेहिं गधेहि अच्चइ२त्ता पुप्फारुहण मल्लारुहण वन्नारुहणं चुण्णारुहण वत्थारुहण आभरणारुहण करेइ२त्ता आसत्तो सत्त विउल वग्धारिअमल्लदाम कलाव करेइ२त्ता जावक-ग्गह गहिअ करयलपब्भट्ठ विप्पमुक्केण दसद्धवण्णे कुसुमेण मुक्कपुप्फपुजोवयारकलिय करेइ२त्ता जिणपडिमाए पुरओ अत्थेहि संण्हेहिं अत्थरसा तडुलेहि अट्ठमगले आलिहइ त सोत्थियामण्हि १ सिरिवच्छ २ सुन्निअनदिआवत्त ३ वद्धमाण ४ वरकलस ५ नदासण ६ मच्छयुगल ७ दप्पण ८ तयाणतरं चण चंदप्पभ रयण वइर वेरुलिय विमलदड कचणमणिरयण भत्तिचित्त कालागुरु पवरु कुदुरुक्क तुरुक्क धूव मघमघतगधुत्तमाणुविद्ध धूमवट्टि विणिम्मुयतं वेरुलियमय कडुच्छुअ पग्गहिअ पयत्ते धूव दाऊण जिणवराण अट्ठसयविसुद्ध गधजुत्तेहि महावित्तेहि अत्थजुत्तेहिं अपुणरुत्तेहिं सथुणइ२त्ता सत्तट्ठपयाहि ओसरइ२त्ता वामजाणु अचेइ२त्ता दाहिणजाणु धरणितलंसि निहट्टु तिखुत्तो मुद्धाण धरणीतल निवाडेइ ईसि पच्चूण्णमइ२त्ता करयलपरिगाहिअ सिरसावत्त दसनह मत्थ अंजलि कट्टु एव वयासि नमुत्थुणं अरिहताण जाव सपत्ताणं

तिकट्टु वदइ नमंसइत्ति ॥

तेवी रीते जीवाभिगम उपांगने विषे पण विजयदेवना संबंधमां विजयदेवने नामे आ प्रमाणे आलाव कहेलो छे, ते ते स्थलेथी जाणी लेवु एवी रीतना घणा आलावानी अंदर सम्यक्त्ववंत देव तथा मनुष्ये करेली पूजानो अधिकार साक्षात् जोवामां आवे छे छतां ते वातनी ना कहेवा सम्यक्त्व धारीओए शक्तिमान् थवु, ए तद्दन अयोग्य छे. विवेकी पुरुषोए ते विचारी लेवानुं छे.

वली आ अधिकारने विषे जैनाभास लोको पोते मिथ्यादृष्टि होइ बीजाओने मिथ्यादृष्टि तरीके जोवाथी सम्यक्त्ववंती द्रौपदीने पण मिथ्यादृष्टि कहे छे अने सिद्धायतन तथा जिनगृह ए शब्दना मुल अर्थने उलटावे छे अने तेने स्थाने कामदेव यक्ष वगेरेना देहेरानो अर्थ प्ररुपे छे, ए केटलु अयोग्य कहेवाय? तेने माटे एटलु कहेवानु के, जो द्रौपदीए मिथ्यादृष्टिपणाने लइने कामदेव यक्षनी पूजा करी होय तेमज सुर्याभ प्रमुख देवे यक्षादिकनी पुजा करी होय तो ते द्रव्य पूजाने अंते "नमुथ्थुणं अरिहंताणं" इत्यादि शक्रस्तव न जणे; कारण के, शक्रस्तव कथानो पाठ आगमने विषे साक्षात् देखाय छे, ते छतां ए जैनाभासो निन्हव रुपे मोटु बोलवाने केम समर्थ थाय छे? वली वैमानिक देवताओ पोताथी हीन पुण्यवाला एवा यक्षादिकनी पुजा केम करे? अर्थात् नज करे. तेम वली जो द्रौपदी श्राविका न होतती नारद आवता अभ्युत्थान प्रमुख करत पण जे तेणीए कर्यु नथी तेथी निश्चे ते श्राविकाज हती एम सिद्ध थाय छे. वली श्राविका विना तेणीने 'नमुथ्थुणं' (शक्रस्तव) नी विधिनु परिज्ञान पण न संभवे, ए पण्डितोए विचारी लेवु. वली ते जैनाभासो कहे छे के, "सुर्याभ देवे पोतानी राजधानीना मंगलिकने माटे जिन प्रतिमा पुजी छे," तेने माटे सूत्रमा एवा प्रकारनो पाठज नथी परंतु तेनी करेली पूजाने आश्रीने—

"हियाए, सुहाए, खेमाए, निस्सेयहिए, अणुगामियत्ताए भविस्सइ"

ए पाठ विद्यमान छे अने त्यां निःश्रेयस शब्द मोक्षवाची छे, ते सर्व

शास्त्रोमां प्रसिद्ध छे. वळी श्री अरिहतना वचनमां पण अनुक्रमे पूजानु फळ मोक्ष प्ररूपेलु छे, ते जाणीने पछी स्वेछावादीओना वितथ वचनो उपर केम विश्वास रहे ?

तेमज पूजाने आश्रीने ते जैनाजासो कहे छे के. " जगवते हिंसानो तद्दन निषेध कर्यो छे, तो पछी पूजानु आचरण केम कराय ? तेना उत्तरमां कहेवानु के ए वचन कये ठेकाणे कह्यु छे के हिंसा करवी ? हिंसानो निषेध कर्यो छे, ए वात सत्य छे, परतु जगवते कया आगममां जिनपूजा निषेधेली छे ? ते जणावो. आगमने विषेतो उलटु सत्तर भेदी पूजा करवाने कहेलु छे अने ते वार कर्त्तव्य रुपे दर्शावेल छे

श्री प्रश्न व्याकरण सूत्रने विषे पेहेला सवरद्वारमां जे अहिंसा—दयाना साठ नाम आपेला छे, तेमा पूजानु पण नाम छे. जेम के,

" निव्वाण १ निव्वुइ २ समाहि ३ सती ४ इत्यादि यावत् जणो ४६ आयतण ४७ जयण ४८ मप्पमाउ ४९ आसासो ५० वीसासो ५१ अनओ ५२ सव्वस्सविअनाघाओ ५३ चोक्ख ५४ पवित्ती ५५ सुइ ५६ पूया ५७ विमल ५८ प्पनासई ५९ निम्मलतरित्ति ६० " एवमाइणि नियय गुणनिम्मियाई पज्जवनामाणिहोंत्ति ॥ अहिंसाए जगवई एति ॥ (इहाऽहिंसानामसु जणशब्देन 'पूया' शब्देन च देवपूजा गृहीताऽस्ति)

अहिं दयाना नामने विषे (जण) शब्द तथा (पूया) शब्दे करी देव पूजा ग्रहण करेली छे, कारण के ' यजन यज्ञः ' इत्यादि व्युत्पत्ति थाय छे. तो हवे तमो जिन पूजाने हिंसामां केम गणो छो ? वळी श्री सूयगमांगजीना बीजा श्रुतस्कधना बीजा अध्यायनमां अर्थदडना अधिकारमा कह्यु छे के, " नागहेउ जूयहेउ " इत्यादि पाठमां नाग, जूत यक्षादिकनी हेतु पूजाने विषे हिंसापणु कहेल छे, पण जिन पूजामां कहेल नथी, कारण के, जो जिन पूजामां हिंसा थती होत तो ते सूत्रमां 'जिणहेउ,' एवो पाठ कहेत, पण तेवो पाठ त्यां आपेलो नथी, तेथी आ प्रमाणे सूत्रना वचन उत्थापन करी तमारु अगीकार केम कराय ? वळी ते

जैनाभासो कहे छे के, " जिनपूजाने विषे छ कायना आरंभनो संभव छे ते-थी श्रावकोए तेनुं आचरण केम कराय ? " तेना उत्तरमां कहेवानुं के, जैनध-र्मनुं अनेकांतपणुं होवाथी सम्यक्त्ववंत पुरुषोने तेवा एकांतपक्षनो आग्रह होतो नथी; कारण के, श्री ज्ञाताधर्मकथा—छठ्ठा अंगने विषे त्रण ज्ञानवाळा श्री मल्लिनाथ जिनेश्वरे पोताना छ मित्रोने प्रतिबोध करवा माटे सुवर्णनी पुतळीमां निरंतर कवळनो प्रक्षेप कर्यो छे तथा सुबुद्धि मंत्रीए पोताना स्वामीने प्रतिबोधवा माटे एक खाइना जळनुं परावर्त्तन करावेलुं छे. तेम वळी आगमने विषे घणा हाथी, घोडा, रथ अने पायदळ प्रमुख परिवार सहित कुणिकादिक राजाओए आचरेल जिनवंदनादि महोत्सव स्थाने स्थाने सांभळवामां आवे छे. ए कार्योमां घणी हिंसा थवानो संभव छे, परंतु ते लाभनुं कारण होवाथी तेनी गणना हिंसामां करेली नथी पण ते लाभनुं कारण छे, एम समजवानुं छे.

आ कारणथी एम निश्चय थयो के, श्री जिनाज्ञाने आश्री, सम्यक् यत-नाए करी अने भक्तिए करी उत्तम क्रिया करवामां हिंसानो कोइ पण दोष नथी. " ज्यां हिंसा त्यां जिनाज्ञा नथी " एम जे कहे छे, तेने माटे एटलुंज कहेवानुं के, जो एम होय तो साधुओने प्रतिक्रमण अने विहारादिकने विषे पण जिनाज्ञा न होवी जोइए. कारण के, तेने विषे पण हिंसानो संभव छे, माटे श्रुत व्यवहार एवो छे के, जे लाभने माटे निर्दोष परिणामवंत्ते यतना पूर्वक प्रवर्त्तन छे तेवा प्रसंगे तेवा प्रकारनो कर्मबंध नथी. आ वात श्री भगवतीजीना अढारमा शतकना आठमा उद्देशमां विवेचन करी समजावी छे ते विस्तारथी जाणी लेवी. ते प्रस-गमां दर्शाव्युं छे के, भावितात्मा अनगार युगमात्र[१] दृष्टिवडे जोइ जोइ गमन करतां तेना पग नीचे कुलिंग (कुकडा) आदिकनुं बच्चुं मरण पामे तोपण तेमने हिं-साना परिणामनो अभाव होवाथी इरियावही पडिक्कमणानी क्रिया होय छे परंतु सांपरायिकी क्रिया होती नथी विगेरे ते अधिकारमांज छे.

वळी जे पूजामां पुष्पारंभ देखाय छे, ते उपचारिक छे, परंतु उत्तम सद् भावे करी ते आरंभनो परिहार थाय छे, तेमज जेम मुनिओने नदी उतरतीं व-खते जळ उपर करुणाना परिणाम होय छे, तेम श्रावकोने जिन पूजामां पुष्पादिक उपर करुणाना परिणाम होय छे. एवी रीते हिंसानुबंधी क्लिष्ट परिणामना अभावे

१ गाडला धूसरी जटला प्रमाणवाळी

करी साधुनी जेम श्रावकने पण तेवो दुष्ट कर्मनो बध थतो नथी.

जेम चालुं पग्गेलु होय, तेना छेदन वखते प्राणीओने वेदनानो सजव छता अने महा सुखनी उत्पत्ति थाय छे. तेम पूजाने विषे पण स्वल्प मात्र आरज छे छतां परिणामनी शुध्धिने लइने अनुक्रमे परमानदनी प्राप्ति थाय छे.

अहीं प्रश्न करवामा आवे के, " जो, पूजाथी परिणामनी शुद्धि अने तेथी अनुक्रमे परमानदनी प्राप्ति थती होय तो साधुओ द्रव्यपूजा केम नथी करता ?"

तेना उत्तरमा कहे छे के, " रोगीओने जेम औषधोपचार महान् उपकारी थाय छे, तेम द्रव्यपूजा आरजमग्न एवा प्राणीओने महान् उपकारी थाय छे, तेथी ते श्रावकोनेज करवा योग्य छे. सर्वारजथी मुक्त एवा साधुओने ते द्रव्यपूजा योग्य नथी. जे सर्वथा नीरोगी होय तेने औषध उपकारकारक नथी. एज कारणथी श्री तीर्थंकर जगवाने तेमने अनुकपा दान करवा वगेरेनी पण आज्ञा आगममां आपेली नथी. वळी दशमा अगमा (श्री प्रश्न व्याकरण सूत्रना पहेला आश्रवद्वारमां) धर्मार्थे वगेरेने माटे हिंसा करनारने मदबुध्धिपणु कहेलु छे, तेनु रहस्य पण आ ज छे. तेमज देशविरति श्रावकने सिध्धातमा बालपण्डित कहेल छे, एकात पण्डित कहेल नथी, कारण के, तेनामां देशथकी बालपणु रहेलुज छे, आवा कारणने लइने सासारिक कार्योमा प्रवर्त्तता एवा पुरुषोने द्रव्यपूजानो निषेध केम थाय ? ए विवेकी पुरुषोए विचारी लेवु जोइए, अथवा ते युक्ति दूर रहो. तथापि पाप आचरनार पुरुषोने आश्री तेनु मदबुध्धिपणु कहेलु छे, बीजाने आश्रीने कहेल नथी. वळी ते स्थले हिंसा करनारना द्वारने विषे शौकरिक–मच्छीमार आदि जे अशुज परिणामी पापरुचि जीवो छे, तेमने तेना हिंसाना करनार कहेला छे. पण शुज परिणामवाळा जिनगृह वगेरेना करनारा श्रावकोने कहेला नथी

वळी जे जैनाभासो कहे छे के, "प्रतिमामा एकेंद्रियदलपणु छे, तेथी तेनु वदनादिक करवु अयुक्त छे." तेने माटे एटलुज कहेवानु के, " श्री जिनेंद्रोए जिनगृहोने जिन प्रतिमाना शब्दे कहेल छे अने तेमना गृहने सिध्धायतनशब्दथी उचारे छे, तेथी ते जैनाजासो जगवमणना जयथी अवगणना करी शामाटे आवा कठोर शब्दो बोलता हशे ? त्यारे पुछवु जोइए के, " तमे दिशा सन्मुख थइ वदनादिक करो छो, तो ते दिशा अजीवरुप छे, तेथी तमारे दिशा सन्मुख शा माटे थवु जोइए ?"

कदि तेओ एम कहे के, " दिशावदन समये अमारा मनमा सिध्द प्रमुख रहेला छे, तेथी तेम करवामा दोष नथी," तो अमे पण कहीशु के, "श्री जिन प्रतिमाने वदन करवा समये अमारा मनमा पण सिद्ध प्रमुख होय छे." आथी जावनी अपेक्षाए वंने ठेकाणे न्यायनु समानपणु छे, तेथी कोइ प्रकारे पण जिन पूजानो निषेध करवो युक्त नथी.

वली सूत्रने विषे गुरुना आसनादिकनी आशातना वर्जवाने कहेल छे, तो ते पाट पाटला प्रमुख आसनादिक अजीवरुप छे, छता गुरुना संबंधने लइने ते स्थापित होवाथी तेनु जे बहुमान करवामा आवे छे, ते वस्तुताए गुरुनुज बहुमान छे, तेवी रीते जिन प्रतिमानुं जे बहु मान छे, ते परमार्थपणे सिध्द भगवाननुं ज बहु मान छे

वली सुधर्मा सन्नामां जे जिन जगवाननी दाढाओ छे, तेओ अजीवरुप छे, छतां सिद्धातने विषे तेमनुं वदनिकपणुं तथा पूजनिकपणु कहेलु छे. ते साथे तेमनी आशातना न करवी एम पण जणावेलु छे, तों पछी जिन मुद्रानी वदनीयतामां अने पूजनीयतामा शो सदेह राखवो ? वली पचमांगनी आदिमां " णमो बजिए लीविए " ए वाक्योए करी श्री सुधर्मा स्वामीए पोते अक्षरविन्यासरुप एवी लीपिने जो नमस्कार कर्यो तो तेमना वचनने अनुसारे प्राणीओने लीपिनी जेम जिन प्रतिमाने नमस्कार करवामा क्यो दोष उत्पन्न थाय ? कारण के, बने ठेकाणे स्थापनानु तों समानपणु छे.

तेम वली ज्यारे त्रैलोक्यस्वामी जगवान् समवसरणने विषे मूलरुपे पूर्व दिशा सन्मुख थइ सिंहासने बेसे छे, त्यारे देवता तत्काल जगवत समान आकारवाला त्रण प्रतिबिंब करीने बाकीनी त्रण दिशाओमा सिंहासन उपर स्थापन करे छे, ते अवसरे सर्व साधु श्रावकादिक जव्यजनो प्रदक्षिणापूर्वक तेमनी वदना करे छे. आ वात तो आखा जैनमतमा प्रसिध्द छे. वली जगवते दानादिक धर्मनी प्रवृत्ति देखाडी छे, तेमज पोतानी स्थापनानु पोतानी जेम वदनीयपणु देखाड्युं छे, जो एम न होय तो श्री जिनाज्ञानुवर्ती साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविका वदनादिक केम करे ? ए प्रकारे विवेकी पुरुषोए पोतानी मेले विचारी लेवु जोइए. श्रीमद् जगवती अगने विषे वीशमा शतकना नवमा उद्देशमा विद्याचारण जंघाचारण मु-

पणे कहेलो छे, ते आ प्रमाणे छे—" श्री गौतमस्वामी पुछे छे के, " जगवन्, विद्याचारणनी तिर्छी गतिनो विषय केटलो छे ? प्रजुए उत्तर आप्यो के, " तेओ एक मगले मानुषोत्तर पर्वते जाय छे अने त्यां चैत्यवंदन करी वीजे मगले नंदीश्वर द्वीपे जाय छे. त्यांना चैत्योने वंदना करी त्यांथी नीकळी एक मगले अहिं आवे छे अने अहींना चैत्योने वंदना करे छे, ए प्रकारनी तेमनी तिर्छी गति कहेली छे " पछी गौतम स्वामीए पुछ्युं के, " हे जगवन्, विद्याचारणनी ऊर्ध्व गतिनो विषय केटलो छे ?" प्रजुए उत्तर आप्यो–" हे गौतम, तेओ एक मगले नंदनवनमां जाय छे अने त्यांना चैत्योने वंदना करी बीजे डगले पंमगवनमां जाय छे, त्यां चैत्यवंदन करी त्रीजे मगले अहीं आवी अहींना चैत्योने वंदन करे छे. ए प्रमाणे विद्याचारणनी ऊर्ध्व गतिनो विषय कहेलो छे. परंतु गतिना प्रमादथी वच्चे रहेला चैत्योनुं वंदन रही जाय तो ते स्थानकनी आलोयणा–पडिक्कमण कर्या विना तेमने आराधना होती नथी, ज्यारे ते स्थानकने आलोव्या–प्रतिक्रम्याथी आराधना होय छे. एवी रीते जंघाचारणना विषयनुं सूत्र जाणी लेवुं. तेनी गतिना विषयमां जे फेर छे, ते आ प्रमाणे—"जंघाचारण मुनि तिर्छी गति आश्रीने एक मगले तेरमा रुचक द्वीपमां जाय छे, त्यांथी पाछा फरी वीजे मगले नंदीश्वरे आवे छे अने त्रीजे मगले अहीं आवे छे अने तेमनी ऊर्ध्व गति आश्रीने पहेले डगले पंमगवनमां जाय छे, त्यांथी पाछा निवर्ती वीजे मगले नंदनवनमां आवे छे अने त्रीजे मगले अहिं आवे छे ते स्थानकनो आ जावार्थ छे "

लब्धि फोरववाथी थयेलो जे प्रमाद तेने सेववाथी तेने आलोच्या के पमिक्कम्या विना चारित्रनी आराधना थती नथी, कारण के, तेनी विराधना करनारने चारित्रना आराधननुं फल मलतुं नथी.

आ अधिकारने विषे ते जैनाभासोए उत्सूत्र प्ररूपणानो जय अवगणी बहुश्रुत परंपराए आवेलो चैत्य शब्दनो ज्ञान रुप अर्थ जे प्ररूपे छे ते विषे कहेवामा आवे छे—

जो अहीं साधुओए ज्ञान वंदन करेलुं होय तो चेइयाइ (चैत्यानि) एवा बहु वचननो प्रयोग न करत. जगवानना ज्ञाननुं अति अद्भुत एक स्वरूप ज होवुं जोइए तेथी 'चेइय' (चैत्य) एवो एक वचननो पाठ होवो जोइए, पण तेवो पाठ मुकवामा आव्यो नथी, तें उपरथी ते चारण मुनिओए श्री जिन

प्रतिमानुं वंदन कर्युं, एम समजवु. वली एम न मानवुं के, मानुषोत्तर वगेरे पर्वतोमां श्री जिन प्रतिमा नथी, केमके जंबुद्वीप पन्नत्ति आदि शास्त्रोने विषे मेरु, रुचक, मानुषोत्तर, नंदीश्वर द्वीप प्रमुख सर्व शाश्वत स्थानोने विषे श्री जिन प्रतिमानो सद्भाव कहेलो छे. तेम वली श्री भगवतीजीना त्रीजा शतकना बीजा उद्देशमां प्रगटपणे श्री जिन प्रतिमानो अधिकार आपेलो छे. ते आ प्रमाणे—गौतम मुनिए भगवंतने पुछ्युं के " हे भगवन्, असुरकुमार देवता कोनी निश्राए उंचे उमे छे अने यावत् सुधर्म देवलोक सुधी जाय छे ? " तेना उत्तरमां भगवाने आ प्रमाणे कह्युं के,

" से जहानामए इह सप्पराइवा बव्वराइवा ढंकणाइवा चुचुयाति वा पल्हवाति वा पुलिंदातिवा एगं महं रणं वा गड्डं वा पुग्गं वा दरिं वा विसमं वा पव्वयं वा निस्साए सुमहल्लमपि आसवलं वा हत्थिवलं वा जोहवलं वा घणुवलं वा आगलिंति एवमेव असुरकुमारावि देवा णण्णत्थ " ॥

आ पाठमां जे 'णण्णत्थ' शब्द छे, तेना अर्थमां एटलो विशेष छे के, अरहंत, अरिहंतना चैत्य अने अनगार भावित आत्मा—ए त्रणनी निश्राए ते असुर कुमार देवता यावत् सुधर्म देवलोक सुधी उंचे उडे छे

वली 'णण्णत्थ' नो एवो अर्थ पण छे के, निश्चे करीने आ लोकने विषे अथवा अरिहंतादिकनी निश्राए करी ते उंचे उमे छे. तेमनी निश्रा विना ते उंचे उमी शके नहीं. आ उद्देशमां उत्तरोत्तर त्रण निश्रा कहेली छे. अने पछी बे आशातना कहेली छे एक अरिहंतनी अने बीजी साधुनी. त्यां एम समजवुं छे के, अरिहंतनी प्रतिमानुं कोइ प्रकारे अरिहंतनुं तुल्यपणुं जणावाने माटे जुदुं कहेवामां आव्युं नथी एटले अरिहंत पदे करी तेमनी प्रतिमानुं ग्रहण थवाथी जूदो निर्देश कर्यो नथी.

अहीं ते जैनाभासो कुतर्क करे छे के, क्या श्रावके जिन प्रतिमा पूजी छे? तेना समाधानमां कहेवानुं के, सिध्धार्थ राजा, सुदर्शन शेठ, शंख, पुष्कलिक, कार्त्तिक शेठ अने बीजा तुंगिया नगरी निवासी घणा श्रावकोए जिन प्रतिमा पूजी छे. अने ते ते अधिकारे सिध्धांतमां देखाय छे. " न्हाया कयबलिकम्मा "

एवो जे पाठ छे, तेनो अर्थ आ प्रमाणे छे " जेमणे स्नान कर्या पछी बलि कर्म करेलु छे. " एटले पोताना गृह चैत्यना अरिहंत देवनी प्रतिमानी जेमणे पूजा करेली छे.

अहीं कुलदेवीनी पूजा करेली छे, एवो अर्थ न करवो, कारण के, सम्यक्त्व अंगीकार करती वखते जिन भगवान्थी व्यतिरिक्त एवा देवोने वंदन पूजन आदि करवानो त्याग करवामा आव्यो छे, तेम वली तुंगिया नगरीमां रहेनारा श्रावकोनु सूत्रमां जे वर्णन करवामा आवेलु छे तेमां तेथी विरोध आवे छे.

तेना वर्णननो पाठ श्री भगवती सूत्रना बीजा शतकमा पांचमा उद्देशमां आ प्रमाणे छे.

" अट्ठादित्ता इत्यादि यावत् असहिज्जदेवासुरनागसुवणजक्खरक्खस किंनर किंपुरिस गरुल गंधव्व महोरगादिएहिं देवगणेहि निग्गथाओ पावयणाओ अणतिक्कमणिज्जा निग्गंथे पावयणे निस्संकिया निक्कंखिआ निव्वितिगिच्छा लद्धठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा " इत्यादि ॥

तेमां असहिज्जत्ति ए पदनो एवो अर्थ छे के, जेने परनी—बीजानी सहाय नथी एवा अर्थात् आपत्तिने विषे पण देवादिकनी सहायताने नहीं इच्छनारा—पोताना करेला कर्म पोतानेज भोगववा पडे छे, एम मानी अदीन मनोवृत्तिवाला आवा विशेषण वाला श्रावको बीजा मिथ्यादृष्टि देवनी पूजा केम करे ? आ प्रत्यक्ष विरोध आवे छे, तेथी उत्तम बुद्धिवाला पुरुषोए तेनो सम्यक् प्रकारे विचार करवो योग्य छे

श्री उववाइ उपाग सूत्रने विषे अंबड परिव्राजकना अधिकारमां श्री जिन चैत्योनु साक्षात् वंदनिकपणु कहेलु छे, ते सूत्र आ प्रमाणे छे—

" अंबडस्सणं परिव्वायगस्स णो कप्पति अणउत्थिएवा अणउत्थियदेवयाणिवा अणउत्थिय परिग्गहियाणि अरिहंतचेइयाणि वा वंदित्तए वा नमंसित्तए वा जावपज्जु वा-

सित्तएवा णणथ्थ अरिहंते वा अरिहंतचेइयाणि वा " इ-त्यादि ॥

अंबड परिव्राजकने जे कल्पतु नथी तेने माटे कहे छे के, अन्यतीर्थिओने तथा अन्य तीर्थिओना देवोने तेमज अन्यतीर्थिओए ग्रहण करेला अरिहंतना चैत्योने वंदन—नमस्कार तथा पर्युपासना करवी ते विषे. परंतु तेमा आटलुं विशेष छे के, अरिहंत तथा अरिहंतनी प्रतिमाने वंदनादिक करवु कल्पे-छे. ए प्रमाणे श्री उपासकदशांगसूत्रमा पण आनंद श्रावकने अधिकारे जे कहेवामां आव्यु छे, ते ते स्थलेथी जाणी लेवु.

वळी ते जैनाभासो कहे छे के, " प्रदेशी राजाए चैत्यो केम न कराव्या ? " तेना उत्तरमा कहेवानु के, प्रदेशी राजा श्री जैनधर्मनी प्राप्ति कर्या पछी केटलो काळ जीव्यो हतो के ते चैत्यो करावे ? तेम वळी सर्व श्रावको एकज प्रकारनु धर्म कार्य करे, एवो नियम क्यां छे ? तेथी सुदृष्टि पुरुषोए सर्व धर्मकार्यमां सम्यग् दृष्टिवडे श्रद्धा करवी. पण कुदृष्टिओनी जेम श्री जिनोक्त धर्मकृत्यनो स्वमति कल्पनाए निषेध करवो नहीं.

वळी श्री जंबूद्वीप पन्नत्तिमा प्रथम जिनना निर्वाणने स्थाने स्तूप करवाना अधिकारमा " जिणभत्तिए धम्मत्तिए " एवो पाठ छे अने तेनो " जिन भक्तियी धर्मथी " एवो अर्थ थाय छे, ते उपरथी पण सिद्ध थाय छे के, आगमने विषे स्तूप निर्माणनी अंदर जिन भक्ति करवी कहेली छे. तो पछी जिन चैत्य करवा—कराववामां जिन भक्ति प्रगटज छे, तेमा शो संदेह करवो.

तेमज महानिशीथ सूत्रमा श्रावकोने आश्रीने चैत्य निर्मापणनो अने साधुओने आश्रीने चैत्यवंदनादिकनो अधिकार प्रगटपणे कहेलो छे. धर्मना अर्थी प्राणीओए ते स्वतः सम्यग् दृष्टिए विचारी लेवो.

वळी व्यवहार सूत्रमां " जहेव सम्मं भावियाइं पासिज्जा तहेव आलोइज्जा " ए पाठमा पण चैत्यनी साक्षीए आलोचना लेवी कहेली छे, एम केटलाएक आगमना वचनो देखाय छे. घणा आगमने विषे स्थापनादिकनो अधिकार विद्यमान छे.

ते जैनाभासो कहे छे के, " बत्रीशज आगम प्रमाण छे, तेना संबंधमां

कहेवानु के, श्री नदी सूत्रने विषे साक्षात् कहेला आगमोनु उत्थापन करी ते वत्री श आगमोनेज प्रमाण मानवामां कोनी आज्ञा छे ? कदि तेओ कहेशे के तेवा प्रकारना उत्कृष्ट प्रमाणे करी अमो कहीए छीए, तो ते कहेवु तदन अयुक्त छे, कारण के, हाल तेवा प्रकारना ज्ञाननो असभव छे. तेम वली आ काळने विषे भी वीरवाणीमा विश्रात थयेला, अने तेमनी परपरामा उत्पन्न थयेल आज्ञाने अनुसारे वर्त्तमान काळना वर्त्तता सर्व सिध्धातना लेखक महोपकारी श्री देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमणे सर्व साधुओने समतिथी जे सिद्धातो पुस्तक रुपे स्थाप्या छे, तेमने उत्पाथन करनारा ते जैनाभासोने जिनाज्ञानु विराधकपणु प्रगट रीते प्राप्त थयु छे. तेमज आगमने विषे प्रमाण करेला निर्युक्ति, चूर्णी, भाष्य, वृत्ति प्रमुखने उत्थापन करवाथी जिनाज्ञानु विराधकपणु अवश्य प्राप्त थयेलु छे तेओ कहे छे के भगवती सूत्रमां आ प्रमाणे लख्यु छे—

" सुतथ्थो खलु पढमो वीओ निज्जुत्तिमीसिओ भणिओ
तइओ य निरवसेसो एस विहि होइ अणुओगो" ॥१॥

वली ते जैनाभासो कहे छे के, अमे फकत श्री सूत्रने अनुसारे प्ररूपणा करीए छीए, तेथी निर्युक्ति वगेरेनु शु काम छे ? तेना जवाबमा कहेवानु के, ते मनु ए कहेवु तदन अयुक्त छे, कारण के, सूत्रना अति गभीर आशयने लइने निर्युक्ति आदिना परिज्ञान विना उपदेश करनाराओने नय, निक्षेप, द्रव्य, गुण, पर्याय, काल, लिंग, वचन, नाम, धातु अने स्वर आदिनु परिज्ञान थइ शकतु नथी, पदे पदे मृषावादादि दोषनो सभव छे, तेने माटे श्री प्रश्न व्याकरण सूत्रमा वीजा सवर द्वारने विषे आ प्रमाणे कहेलु छे—

"केरिसय पुणाइ सच्च नु भासिअव्वं ज त दव्वेहि प ज्जवेहिं गुणेहि कम्मेहि बहुविहेहि सप्पेहि आगमेहि नामक्खाय निवात उवसग्ग तद्धिय समास सधि पद हेउ जोगिअ उणादि किरियाविहाण धाउ सर विभत्ति वण्णजुत्त तिकाल दसविहपि सच्चं जह भणिय तहय कम्मुणा होइ दुवालसविहाय होइ सोलसविह एवमरिहत अणुन्नाय समक्खिय सज-

एगं कालंमि अवत्तव्वं[1] " इत्यादि ॥

आवा कारणथी ते विषे वधारे कहेवानी जरुर नथी. वस्तुगतिए दुष्ट मिथ्यात्व रुपी पिशाचे तेमनी कुदृष्टिओने ग्रसेली छे, तेथी तेओए ग्रहण करेला असत् पक्षनी पुष्टिने माटे अनेक प्रकारनी स्वेच्छाथी वर्त्ती तेओ उत्सूत्र प्ररूपणा करता थका लोकने विषे जाव साधुनी उपमाने धारण करता पोताने अने बीजा मंदबुद्धि जनोने आ अपार संसाररुप समुद्रमा बुडाडे छे, तेथी ते संसाररुप समुद्रथी जय पामनारा जे जव्य प्राणीओ होय—के जेओ पोताना आत्मगुणनी कुशलताने इछनारा होय तेमणे बगलानी जेम बाह्य क्रियामा तत्पर एवा ते परम अज्ञानी निह्नवोनो परिचय सर्वथा न करवो. कारण, तेवा पुरुषो सूत्रमा विराधक छे. जेओ गीतार्थपणाथी आचार्य, उपाध्याय, कुल, गण वगेरेनी निश्राए विचरे छे, तेओने सूत्रमा आराधक कहेला छे अने जेओ गीतार्थनी निश्राए विचरता नथी, तेओने विराधक कहेला छे. ते विषे श्री जगवतीजीमा आ प्रमाणे कहेलु छे—

" गीयत्थो य विहारो बीओ गीयत्थनिस्सिओ जणिओ।
इत्तो तइयविहारो नाणुन्नाओ जिणवरेहिं " ॥ १ ॥

" पेहेलो गीतार्थ विहार छे, बीजो गीतार्थ निश्रानो विहार छे अने त्रीजा विहारने माटे श्री जिनेश्वर जगवते आज्ञा करेली नथी. "

आथी ते जैनाजासोने एक पण निश्रानो असंजव होवाथी श्री जिनाज्ञानुं विराधकपणु छे.

वळी सिद्धांतमा योग उपधान वहन कर्या पछी सूत्र पाठ भणवानी आज्ञा आपेली छे, तेमा श्रावकोने श्री आचारांग सूत्र जणवानी आज्ञा नथीज. निशीथ सूत्रमां कह्युं छे के—

"जो भिरकु अन्नतित्थीयं वा गारत्थायं वा वायणं वाइज्जति वाइज्जंतं साइज्जतिस्स चउम्मासि अपरिहारठाण इत्यादि" ॥

" जे मुनि अन्य तीर्थीओ तथा गृहस्थने सूत्रनी वाचना आपे ते मुनि पोतानु चार मासनु चारित्र नाश करे छे; तेम वळी साधुओए पण करीने साध्वी-

[1] आनो अर्थ संक्षिप्तपणे आगळ लखवामा आवेल छे

ए लावेला आहारने ग्रहण करवो नहीं इत्यादि जिनाज्ञा छे, ते ते आज्ञाओने ते जैनाभासोए मूलमाथी उन्मूलन करेली छे.

आवा ते जैनाभासोनो सर्वथा परिचय करवो न जोइए. कारण के, तेम करवाथी तत्काल सद्भूत एवा सम्यक्त्व रत्ननी मलिनतानी प्राप्ति थाय छे. जेमना मनमा कदि शंका उत्पन्न थती होय तेमणे सिद्धांतमा कहेला अनेकांत मार्गने अनुसरी तेनी परीक्षा करवी, परंतु मात्र बाह्य क्रियामा अनुरक्त थवु नहीं, कारण के, तेओना करता पण अधिक एवा अभव्यो आ संसारने विषे भमता थका अनंतवार बाह्य क्रिया कर्या करे छे. वली आगमने विषे सद्ज्ञानना अपेक्षाए क्रियानी गौणता कहेली छे. तेनी व्याख्या श्री भगवतीजीना आठमा शतकना दशमां उद्देशमा आ प्रमाणे आपेली छे—

[1]" मए चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तत्थणं जेसे पढमे पुरिसजाए सेणं पुरिसे सीलव असुयव उवरए अविन्नाय धम्मे एसणं गोयमा ! मए पुरिसे देसाराहए पन्नत्ते तत्थणं जेसे दोच्चे पुरिसजाए सेण पुरिसे असीलव सुतव अणुवरए विन्नायधम्मे एसणं गोयमा मए पुरिसे देसविराहए पन्नत्ते तत्थण जेसे तच्चे पुरिसजाए सेण पुरिसे सीलव सुतव उवरए विन्नायधम्मे एसण गोयमा ! मए पुरिसे सव्वाराहए पन्नत्ते तत्थण जेसे चउत्थे पुरिसजाए सेण पुरिसे असीलव असुतवं अणुवरए अविन्नायधम्मे एसण गोयमा ! मए सव्वविराहए पन्नत्ते ॥

अहिं प्रश्न करे छे के, श्री ठाणांगजीमा जमालि प्रमुख सात निन्हवो कहेला छे तेनी अंदर तो आ अंतर्भूत थता नथी तो पछी ते जैनाभासोने निन्हवपणु केम प्राप्त थइ शके ?

" मग्गानेयाइय सुच्चा वहवे परिभस्सइ " ॥

इत्यादि उत्तराध्ययन सूत्रना वचनना प्रमाणथी दिगंबरनी जेम तेमने प-

१ गौतम स्वामीने श्रीमद् वीरप्रभु उत्तर आपे छे के 'चार प्रकारना पुरुषो छे A शील अने श्रुत संपन्न (सर्वाराधक) B शील असंपन्न अने श्रुतसंपन्न (देशविराधक) C शीलसंपन्न अने श्रुतअसंपन्न (देशआराधक) D शीलअसंपन्न अने श्रुतअसंपन्न (सर्व विराधक) '

ए निन्हवपणुं प्राप्त थवु युक्तज छे. जे श्री स्थानाग सूत्रमां तेमनु ग्रहण कर्युं नथी त्यां एम संजवे छे के ते सूत्रने विषे लघु निन्हव ग्रहण करेला छे अने आतो दिगंबरनो पेठे महा निन्हव थाय छे, तेथी ए सूत्रमां ते प्रतिमा उत्थापक तथा दिगंबर—बनेने ग्रहण करेला नथी परतु तत्त्व तो केवली गम्य छे. अथवा बहुश्रुतगम्य छे. हवे ते विषे विशेष विस्तार करवानी जरुर नथी. आ प्रकारे स्थापना जिननुं स्वरूप कहेवामा आव्यु.

३ ऊव्य जिन स्वरूप.

३ हवे ऊव्य जिननुं स्वरूप कहे छे—

जे जीवो तीर्थंकरपणे थशे, तेओ ऊव्यजिन कहेवाय छे. जेम श्रेणिक, कृष्ण वगेरे. तेओ जविष्यकाळने आश्रीने वदनिक छे, कारण के, जरतचक्रिए मरिचिना जवमा श्री वीरप्रभुना जीवने वदन कर्यु हतु.

४ जावजिन स्वरूप

४ जे समस्त जीवादि पदार्थना समूहने यथास्थित प्रकट करनार केवलज्ञान पामी सर्व लोकना नेत्रोने अमद आनंदना उत्सवने करनारु छे, जे उपमाथी रहित छे, जे त्रण गढथी सुशोजित एवा समवसरणना मध्य जागे स्थापित थयेला विविध रत्नोथी जमित एवा सिंहासन उपर बेशी आठ महा प्रातिहार्य वमे उत्कृष्ट एवा अरिहतपणानी संपत्तिने जे अनुजवे छे, ते जावाजिन कहेवाय छे. ते जावजिन सन्मार्गने देखामवा प्रमुख कृत्योथी सर्व प्राणीओनो परम उपकारी होवाथी सर्वकाले वंदन, पूजन, अने स्तवनादि करवाने योग्य छे.

आ प्रमाणे चार निक्षेपाथी श्री जिनजगवतनु स्वरूप कहेलु छे. आ निक्षेपा जिनथी अन्य एवा केवली तथा सिद्धोने विषे एवेज प्रकारे योग्यता अनुसारे लगामी जोमी देवा. कारण के चार निक्षेपे करीनेज सर्व पदार्थोनुं जावपणु छे.

हवे केवलीने आहार संबंधी जे विशेष छे, ते श्री पिंमनिर्युक्तिने अनुसारे देखामे छे—

" ओहो सुओ व उत्तो, सुयनाणी जइवि गिएहइ असुद्धं।
त केवली वि जुजइ, अप्पमाणसुअजवेइयरा " ॥ १ ॥

" सामान्यपणे करी श्री पिंमनिर्युक्ति आदि आगमने विषे उपयुक्त थयो थको एटले ते शास्त्रने अनुसारे कल्पनीय—अकल्पनीयने विचारतो थको श्रुतज्ञानी साधु जो कोइ प्रकारे अशुध्ध आहारादिक ग्रहण करे तोपण ते अशनादिक केवळज्ञानी पण नोगवे—आहार करे, जो तेम न करे तो श्रुतज्ञान अप्रमाण थइ जाय. "

आ वात स्पष्ट करे छे—" छद्मस्थने श्रुतज्ञानना बळे करी शुध्ध आहारादिकनी गवेषणा करवी प्रमाण छे, पण बीजे प्रकारे ते प्रमाण नथी जो केवली—श्रुतज्ञानीवडे ग्रहण करायेलो आहार आगमने अनुसारे गवेषण करता छता अशुद्ध छे, एम जाणी न नोगवे तो श्रुतज्ञाननो अविश्वास थइ जाय, पछी कोइ श्रुतने प्रमाणिकपणे अंगीकार न करे, ज्यारे श्रुतज्ञान अप्रमाणिक थाय तो पछी सर्व क्रियानो लोप थवानो प्रसंग प्राप्त थाय. अने वळी श्रुत विना छद्मस्थोने क्रियाकांमना परिज्ञाननो असंभव होय छे, तेथी श्रुतज्ञानीनो लावेलो आहार केवली नोगवे छे आ अधिकार शिष्यादिक सहित एवा केवळीने आश्रीने कहेलो छे. जो केवळी एकला होय तो पोताना ज्ञानना बळवमे यथायोग्य शुध्ध आहार ग्रहण करे, ए विवेक छे.

अहिं जिनो अने अजिनोने आश्रीने बीजुं घणु कहेवानु छे, पण ग्रंथ वधी जवाना भयथी ए कहेवामां आव्यु नथी, आ तो नवस्थ केवलीनु लेश मात्र स्वरूप कहेवामां आव्यु छे.

सिध्ध स्वरूप

हवे श्री पन्नवणा सूत्रमां कहेली गाथावमे सिध्धनु स्वरूप दर्शावे छे. तेमां प्रथम उत्तानीकृत एटले पोहोंला करेला छत्रना आकारवाळी सर्व रीते श्वेतवर्ण स्फटिक रत्नमय अने समय क्षेत्र (अढी द्वीप)नी सम श्रेणीए पीस्तालीश लाख योजन प्रमाणवाळी सिद्धशिला छे, ते मध्य नागे आठ योजन प्रमाण लांबी पोहोळी अने जामी छे ते पछी सर्व दिशा अने विदिशाने विषे थोमी थोमी प्रदेशनी हानिए करी घटती घटती सर्व चरम (छेल्ला) प्रदेशना अंतने विषे माखीनी पांखना जेवो पातलो एवो अंगुलना असंख्यातमा नागना जामापणावाळी सिध्धशिलारुप पृथ्वीना उपर निसरणीनी गतिए करी एक योजनमा लोकांत नाग आवेलो छे ते उपरनो योजननो जे चोथो गाउ, तेनो सर्वोपरिनो छठो

जाग तेने विषे श्री अनंता सिद्ध जगवानो अनंत अनागत कालनां स्वरूपे रहेला छे; तेना स्वरूपने प्रतिपादन करनारी गाथा आ प्रमाणे छे—

" तत्थवि अ ते अवेया, अवेयणा निम्ममा असंगाय ।
ससारविप्पमुक्का पएसनिव्वत्तसंठाणा " ॥ १ ॥

ते सिद्ध क्षेत्रमां रहेला सिद्ध जगवानो पुरुष वेदादिके रहित, शाता—अशाता वेदनाए वर्जित, ममत्व विनाना अने बाह्य तथा आज्यतर बन्ने प्रकारनी सगथी रहित छे, कारण के, तेओ आ ससारथी मुक्त थयेला अने आत्म प्रदेशोथी निष्पन्न थयेला संस्थानवाला छे.

अहिं प्रदेशमां आत्माना प्रदेश लेवा पण बाह्य पुद्गल न लेवा, कारण के, तेमने पांचे शरीरनो त्याग थयेलो छे.

अहिं प्रश्न करे छे के,

" कहिं पडिहया सिद्धा कहिं सिद्धा पइठिया ।
कहिंबोंदी चइत्ताणं कत्थ गंतूण सिज्झइ " ? ॥१॥

(अहिं 'कहिं' ए त्रीजी विजक्तिना अर्थमां सप्तमी विजक्ति छे)

" ते सिद्ध जगवानो कोनाथी स्खलना पाम्या ? तेओ कया स्थानमां रह्या छे ? कया क्षेत्रमां जइने तेमणे शरीरनो त्याग कर्यो अने क्यां जइने सिद्धिपदने वरे छे एटले निष्ठितार्थ थाय छे ? "

तेना उत्तरमां कहे छे के,

" अलोए पडिहया सिद्धा लोगग्गे य पइठिआ ।
इह बोंदीचइत्ताण तत्थ गंतूण सिज्झइ " ॥ १ ॥

" ते सिद्ध जगवानो अलोके करीने—केवळ आकाश रुपे करीने स्खलना पाम्या एटले सिद्धना जीवो अलोकमां धर्मास्तिकायादिकनो अजाव होवाथी तेनुं जे समीपवर्त्तीपणुं, तेज अहिं तेमनुं स्खलन छे; पण संबंध छतां तेमनो विघात (रोकवापणुं) नथी, कारण के, तेमने रोकवापणानो अजाव छे. तेम वळी पचास्तिकाय रुप जे लोक तेना छेल्ला अग्रजागना मस्तक उपर ते रहेला छे अने फरी पाछुं ससारमां आववुं नथी, एवी स्थितिए रहेला छे तथा आ मनु-

। लोकमां शरीरनो त्याग करी त्यां लोकाग्रने विषे समयांतर अने प्रदेशांतरने
ाणफरसी गतिवमे जइने सिध्ध जीवो रहे छे अने त्यां निष्ठितार्थ (सर्व अर्थथी
रिपूर्ण) थाय छे. अहिं शंका करे छे के, सिध्ध जीवोने कर्म रहितपणु होवाथी
मने गति थवी केम सजवे ?

तेना उत्तरमां कहेवानु के, एवी शंका करवी नहीं कारण के, पूर्व प्रयोग
ने गति परिणामथी तेमने गति थवानो सजव छे. तेने माटे जगवती अगमां
ा प्रमाणे कहेलु छे—

" कहणं नंते अकम्मस्स गइपएणायमिति गोयमा निस्सं-
ताए निरगणताए गतिपरिणामेण बधणछेयणताए निरिं
धणताए पुव्वपयोगेणं अकम्मगइ प० " ॥

श्री गौतम स्वामी श्री वीरप्रजुने पुछे छे के, " हे जगवन्, अकर्मने गति
वे प्रकारे थाय ? जगवन् कहे छे— नि सगपणे एटले कर्मरुपी मलनो नाश हो-
ाथी, नीरोगीपणे एटले मोहनो विनाश होवाथी, गति परिणामे एटले तुबमी-
। फळनी जेम गतिना स्वजाववमे, कर्मना बधने छेदवावमे एटले एरमीना फल-
ी जेम, निरिंधनपणे एटले कर्म रुपी इधणाथी धूमामानी जेम मुकाववावमे, पूर्वना
योगे करीने एटले सकर्मताने विषे गति परिणामवाला बाणनी जेम अकर्मवतोने
ण गति जणाय छे. एप्रकारे विशेषपणे तुबी फलना दृष्टांतोनी योजना सूत्रथी
ाणी लेवी.

ते स्थले गयेला सिध्ध जगवानोने जे सस्थानतु प्रमाण छे ते बतावे छे—

" दीह वा हस्स वा ज चरिम नवेज्ज संठाण ।
तत्तोऽतिन्नागहीणा सिध्धाणोगाहणा भणिया " ॥१॥

" पांचसो धनुष्य प्रमाण दीर्घ, बे हाथ प्रमाण ह्रस्व, वा शब्दथी मध्यम
थवा विचित्र प्रकारनु जे छेल्ला जवमा शरीरनु सस्थान होय ते सस्थानथी त्री-
जागेहीन एटले मुख उदर आदि छिद्रो पूरातां त्रीजे जागे न्यून एवी सि
द्धना जीवोनी अवगाहना श्री तीर्थंकर जगवाने कहेल छे. " १

अहिं सस्थान प्रमाणनी अपेक्षाए त्रिजाग हीन एवु ते सस्थान जाणवु.

ते विषे विशेष स्पष्ट करी बतावे छे—जेटला प्रमाणनु जे संस्थान आ मनुष्य नवमां होय, तेज शरीरने त्याग करती वखते छेल्ले समये सूक्ष्मक्रियाअप्रतिपाती नामना शुक्लध्यानना त्रीजा पायाना ध्यानना बलथी मुख, उदर आदि छिद्रो पूराइ जवाथी त्रीजे नागे हीन एटले प्रदेशनो जे घन होय, ते प्रदेशघनना मूल प्रमाणनी अपेक्षाए करी त्रीजे नागे हीन प्रमाणवालुं संस्थान होय छे. ते सस्थान लोकाग्र क्षेत्रमां ते सिद्ध नगवानोने होय छे, वीजु सस्थान होतु नथी.

ते विषे कहेलुं छे के,—

" जं संठाण तु इह नव चयंतस्स चरिमसमयंमि ।
आसीयपएसघण तं संठाणं तहिं तस्स " ॥ १ ॥

हवे उत्कृष्टादि नेदे करीने त्रीजी अवगाहना देखाडे छे—

" तिन्निसया तित्तिसा धणूतिभागो य होइ नायव्वो ।
एसा खलु सिद्धाण उक्कोसोगाहणा नणिया " ॥ १ ॥

लणसो तेत्रीश धनुष अने एक धनुषनो त्रीजो नाग उपर एटली उत्कृष्ट अवगाहना सिद्धना जीवोनी छे. आ अवगाहना पाचसो धनुष्यवाला जीवोना शरीरनी अपेक्षाए जाणवी.

अहिं कोइ शंका करे छे के, " नान्नि कुलकरना पत्नी मरुदेवा हता. ते नान्नि राजाना शरीरनु प्रमाण सवा पांचसो धनुष्यनु हतु. अने जेटलुं नान्नि राजाना शरीरनु प्रमाण हतु तेटलीज मरुदेवाना शरीरनी अवगाहना हती. एटले पांचसोने पचवीश धनुष्यना प्रमाणनी हती" तेने माटे आ प्रमाणे कह्यु छे—

" तदेव मरुदेवाया अपि सघयणं संगाणं उच्चत्तं कुलगरेहिं समं " ॥

" मरुदेवा माताना सघयण—संस्थाननु उचपणु नान्नि कुलकरनी बरावर हतु. "

हवे ज्यारे मरुदेवा सिद्ध थया त्यारे तेमना शरीरना प्रमाणनो त्रीजो

जाग हीन करता सिद्ध अवस्थाने विषे साक्षात्रणसो धनुष्यनी अवगाहना प्राप्त थाय छे, त्यारे उपर कहेल त्रणसो तेत्रीश अने एक धनुषनो त्रीजो जाग ए शी रीते घटे ?

आ शंकाना उत्तरमां कहेवानु,के मरुदेवाना शरीरनु प्रमाण नाभिराजाना करतां कांइक ओछु होवाथी पण कोइ जातनो विरोध आवतो नथी, कारण के, उत्तम संस्थानवाळी स्त्रीओ उत्तम संस्थानवाळा पुरुषोथी पोतपोताना काळनी अपेक्षाए करी कांइक ओछा प्रमाणवाली होय छे, ते उपरथी मरुदेवा पण पांचसो धनुष्यना प्रमाणवाळा जाणवा, एवी रीते होवाथी कोइ जातनो दोष आवतो नथी. तेम वळी मरुदेवा हाथीना स्कंध उपर आरूढ थता संकुचित अंगवाळा सिद्धिपदने पाम्या छे. त्यारे शरीरना संकोचपणाना सद्भावथी अधिक अवगाहना संजवती नथी, ए पण अविरोध—निर्दोष छे. ते उपर जाष्यकार आ प्रमाणे कहे छे—

" कहमरुदेवा माणं नाभीतो जेण किंचिदूणा सा ।
तो किर पंचसयच्चिय अहवा सकोंचतो सिद्धा " ॥१॥

(आ गाथानो अर्थ उपर कहेवामा आव्यो छे.)

मध्यम अवगाहनानु स्वरूप

" चत्तारिय रयणीओ, रयणीतिभागुणिया य बोधव्वा ।
एसा खलु सिद्धाणं, मज्झिमोगाहणा भणिया " ॥१॥

" चार हाथ अने एक हाथना त्रण जागमाथी बे जाग उपर एटले हाथ ४⅔ मध्यम अवगाहना जाणवी. " १

अहिं वादी प्रश्न करे छे के, जघन्य पदथी सात हाथ उंची अवगाहनावाळा जीवोनी सिद्धि आगमने विषे कही छे, माटे उपर कहेली ४⅔ जघन्य स्थिति थाय छे, पण मध्यम स्थिति केम थाय ?

आ प्रश्नना उत्तरमा कहेवानु के, तीर्थंकर जगवान्नी अपेक्षाए करीने जघन्य पदथी सात हाथनी अवगाहनावाळाओने सिद्धि कहेली छे अने सामान्य केवलीनी अपेक्षाए तेना करतां हीन प्रमाणवाळाओने पण सिद्धि थाय छे, आ

सात हाथनी अवगाहनानु मध्यम मान सामान्य सिद्धनी अपेक्षाए चिंतववु, जेथी कोइ जातनो दोष आवशे नहीं.

जघन्य अवगाहनानु स्वरूप

" एगाय होइ रयणी, अट्ठेवय अंगुलाइ साहिया ।
एसा खलु सिद्धाण, जहन्नओगाहणा नणिया " ॥१॥

" एक हाथ अने आठ आगळ उपर एटले $1\frac{2}{3}$ हाथनी अवगाहना जघन्यथी सामान्य केवळीनी जाणवी. " १

आ अवगाहना बे हाथ प्रमाणवाळा कुर्मापुत्र वगेरेनी जाणवी, अथवा सात हाथ उंचा शरीरवाळा अने यत्रपीलणने लइने संकुचित शरीरवाळानी पण ते जघन्य अवगाहना जाणवी. ते उपर नाष्यकार श्री जिननद्रगणी क्षमाश्रमण नगवान् आ प्रमाणे कहे छे—

" जेठाउ पचधणुसय, तणुस्स मज्कायसत्तहत्थस्स ।
देहत्तिनागहीणा, जहन्निया जावहत्थस्स " ॥१॥

पाचसो धनुष्यवाळानी उत्कृष्ट अने सात हाथवाळानी मध्यम अवगाहना अहिं शरीरने त्रीजे नागे न्यून समजवी अने एक हाथ अने एक हाथनो त्रीजो नाग उपर ए जघन्य अवगाहना समजवी.—एटले उत्कृष्ट ३३३ $\frac{1}{3}$ मध्यम ४ $\frac{2}{3}$ अने जघन्य $1\frac{1}{3}$ ए रीते अवगाहना समजवी. ते विषे आ प्रमाणे लखे छे—

' सतूसिएसु सिद्धि, जहन्नउ कहमिहं विहत्थेसु ।
सा किर तिथ्थयरेसु, सेसाणसिज्कमाणाणं ॥ १ ॥
तेपुण होज्जविहुत्था, कुम्मापुत्तादयो जहन्नेण ।
अन्ने सवट्टियस्स–नहथ्थ सिद्धस्स हीणत्ति " ॥२॥

सिद्धोना संस्थाननु लक्षण

ओगाहणाए सिद्धा, नवत्तिभागेण होइ परिहीणा ।
संठाणमणिथ्थंथ, जरामरणविप्पमुक्काणं " ॥ १ ॥

" सिध्ध भगवाननी अवगाहना त्रीजे भागे हीन होय छे ते 'अनित्थस्थ' एटले आ प्रकारे पामेल नथी अर्थात् मुख आदि पोलाशनो भाग पूरावाने लइने पूर्वना आकारथी अन्यथा प्रकारे आकारनो तेमां सद्भाव छे ए भावार्थ समजवो. तेम वळी सिध्धादिकना गुणोने विषे सिध्ध भगवानोने जे दीर्घपणानो प्रतिषेध कह्यो, ते पूर्वना आकारनी अपेक्षाए संस्थानना अनित्थस्थ (ए प्रकार रहितपणे) पणे अंगीकार करवो, पण सर्वथा संस्थाननो अभाव नथी.

अहिं कोइ शंका करे के, " सिध्धना जीवो परस्पर देश भेदे करीने रह्या छे के बीजी रीते ?"

तेनो उत्तर कहे छे—

" जत्थ य एगो सिध्धो, तत्थ अणंता भवक्खयविमुक्का ।
अण्णोण्ण समोगाढा, पुट्ठा सव्वेवि लोगंते " ॥१॥

" ज्यां एक सिध्ध छे, त्यां अन्योअन्य अवगाहीने लोकांतने स्पर्शी अनंता सिध्ध भगवानो रहेला छे. " १

सिध्धजीवोनुं लक्षण

" असरीरा जीवघणा, उवउत्ता दंसणे य नाणे य ।
सागारमणागारं, लक्खणमेयं तु सिद्धाणं " ॥ १ ॥

" शरीर रहित जीवघन एटले घणा जीवो अथवा वदनादि छिद्रो पूराइ जवाथी जीवघन केवळ दर्शन तथा केवळज्ञानने विषे उपयोगवाळा, अहिं जो के सिध्धपणुं प्रगट थवामां केवळज्ञानना उपयोगनो संभव होवाथी ज्ञाननी प्रधानता छे तथापि सामान्य सिध्धोनुं लक्षण जणाववा माटे प्रथम सामान्य अवलंबन रुप दर्शन कह्युं छे. अहिं सामान्य विषय ते दर्शन अने विशेष विषय ते ज्ञान समजवुं, तेथी साकार अने अनाकार—सामान्य विशेष उपयोगरुप सिध्ध जीवोनुं लक्षण छे.

केवळज्ञान अने केवळदर्शननें समस्तवस्तुनुं विषयपणुं छे

" केवळनाणुवउत्ता, जाणंति सव्वभावगुणभावे ।
पासंती सव्वउं खलु, केवलदिट्ठीहिणंताहिं " ॥१॥

" सिद्ध जगवानो केवलज्ञाने करी उपयोगवाला थइ सर्व द्रव्य, गुण-पर्यायोने जाणे छे. तेमां जे सहवर्त्ती ते गुण अने क्रमवर्त्ती ते पर्याय कहेवाय छे; वली तेओ अनंत एवी केवलदृष्टिओवमे सर्व प्रकारे देखे छे. अहिं जे केवळदर्शननी अनंतता कही, ते सिद्धोनी अनंतता होवाथी जाणवी. आ स्थले प्रथम ज्ञाननुं ग्रहण कर्युं छे, तेनुं कारण ए छे के, प्रथम ज्ञानना उपयोगवमेज सिद्धिपद प्राप्त थाय छे, एम जणाववा माटे समजवुं.

सिद्धना जीवो निरुपम सुखना जजनारा छे

" नवि अत्थि माणुसाणं, तं सुक्खं न विय सव्वदेवाणं ।
जं सिद्धाणं सुक्खं, अव्वावाहं उवगयाणं " ॥ १ ॥

"सिद्धना जीवोने जे सुख छे, ते चक्रवर्त्ती आदि मनुष्योने पण नथी अने अनुत्तर विमानवासी देवताओने पण नथी, तो पछी बीजा नीचेना देवताओने क्यांथी होय ? कारण के, ते सिद्ध जगवानो अव्याबाध–बाधाना अभावने प्राप्त थयेला छे. " १

ते सिद्धना सुखनी समान बीजुं सुख नथी

" सुरगणसुहं समत्तं, सव्वद्धापिंडिअं अणंतगुणं ।
ण वि पावइ मुत्तिसुहं, णंताहिं वि वग्गवग्गेहिं " ॥१॥

" अतीत, अनागत अने वर्त्तमानकालथी उत्पन्न थयेलुं एवुं जे देवसमुदायनुं सुख, तेने सर्व काळना समय साथे गुणी अनंतगणुं करीए एवा प्रमाणना सुखने असत् कल्पना करी एकेक आकाश प्रदेश उपर स्थापीए, एवी रीते सर्व आकाश प्रदेश पूरवाथी पण अनंतुं थाय, ते अनंताने पण अनंत नामना वर्गे करी वर्गित करीए–गुणीए तेथी प्रकर्षपणाने पामेलुं सुख पण मुक्ति सुखनी बराबर थइ शके नहीं " १

ते सिद्धनुं सुख निरुपम छे

" जह नाम कोइ मेच्छो, नयरगुणे बहु विआणंतो ।
न सक्कइ परिकहेउं, उवमाए तहिं असंतीए " ॥१॥

" जेम कोइ वनेचर म्लेच्छ नगरना निवास करवा वगेरे गुणोने जाणतो होय पण ते बीजा वनेचरोनी आगळ कहेवाने समर्थ थइ शकतो नथी, कारण के, वनमा तेवी उपमानो अभाव छे. " १

ते विषे कथानक

" कोइ मोटी अटवीमा घणा म्लेच्छ लोको (जगली लोको) रहेता ह-ता. तेओ वनना पशुओनी जेम त्या रहीने पोतानो काळ निर्गमन करता हता. एक वखते कोइ लुटाएलो राजा ते अटवीमा आवी चड्यो. तेने एक वनवासी म्लेच्छे जोयो. ' आ कोइ सत्पुरुष लागे छे ' एवु धारी ते वनेचर ते राजाने पोताना वासस्थानमा लइ गयो अने त्या तेनी सारी बरदाश करी तेने सतुष्ट कर्यो. राजा तेने पोतानो उपकारी जाणी पोताना नगरमां ते म्लेच्छ पुरुषने तेडी गयो. त्या तेने एक सुदर बगलामा राखी स्नान, विलेपन, अमूल्य वस्त्राभरण वगेरेथी तेने घणोज सतोष पमाड्यो. पोताना शरीरनी जेम तेनी उची जातनी बरदास करावी. शेहेरमा हरवा फरवाथी अने राजवैभव भोगववाथी ते अत्यत खुशी थयो. केटलाक दिवसो रह्या पछी वर्षाकाळ आव्यो. वर्षाकाळ आवतां तेने पोतानु चिरकाळनुं वतन जगल सांभरी आव्यु ते वखते तेने राजवैभव गम्यो नहीं. तत्काल पोतानो मूल वेश पेहेरी ते पोताना जगलमा चाल्यो आव्यो. तेने जोताज वनवासी म्लेच्छो तेनी पासे आव्या अने तेने आ प्रमाणे पुछवा लाग्या—" अरे भाइ, तु क्या गयो हता ? " तेणे कह्यु के "हु एक मोटा नगरमां गयो हतो." वनचर म्लेच्छोए पुछ्यु, " भाइ, कहे, ते नगर केवु होय अने तेमा शु शु हतु ?" ते जगली मनुष्य नगरना बधा गुणोने जाणतो हतो, पण नगरनी उपमा आपवाने ते जगलमां कांइपण हतु नहीं, तेथी ते नगरना गुणोने कहेवाने समर्थ थइ शक्यो नहीं. नगरमा जे वस्तुओ तेणे जोयेली तेवी वस्तु अटवीमां न होवाथी ते उपमाना अभावे कांइपण कही शक्यो नहीं. "

आ दृष्टात उपरथी समजवानु के, केवळज्ञानी भगवान् पोताना अनत ज्ञानना बळे करीने सिद्धिना (मोक्षना) सुखने जाणे छे, छता पण आ ससारमां तेनी उपमाना अभावथी तेओ भव्य जीवोनी आगळ ते सुखनु वर्णन करवाने शक्तिमान् थता नथी. उपर कहेला दृष्टांतनो आ उपनय समजवो.

ते विषे कह्यु छे के,

" इय सिद्धाणं सुक्खं अणोवमं नत्थि तस्स ओवम्मं ।
किंच विसेसेणेत्तो सारक्खणमिणं सुणह वोच्छं" ॥१॥

" आ प्रमाणे सिद्ध जगवानोनुं सुख अनुपम छे, एटले ते सुखनी उपमा आपी शकाती नथी, तथापि बाल जनने समजाववा माटे काइक विशेषणोए करीने तेने आ प्रमाणे कहेवामां आवे छे—

" जह सव्वकामगुणिय पुरिसो जोत्तूण जोयणं कोइ ।
तण्हा बुहा विमुक्को अछिज्ज जहा अमियतत्तो ॥ १ ॥
इय सव्वकालतत्ता अतुल निव्वाणमुवगया सिद्धा ।
सासयमव्वावाहं चिट्ठति सुही सुहंपत्ता " ॥ २ ॥

"जेम कोइ पुरुष संपूर्ण सुंदरताए करी सत्कार करेला जोजनने जमी क्षुधा अने तृषाथी मुक्त थइ जाणे अमृतथी तृप्त थयो तेम रहे छे, तेम निर्वाणने पामेला सिद्ध जगवानो सादि—अपर्यवसित कालपर्यंत तृप्ति पामेला सर्व प्रकारे उत्सुकपणानी निवृत्तिथी परम संतोषने आश्रित थता अतुल, अनुपम, शाश्वत, अप्रतिपाती अने अव्याबाध एवा सुखने पामेला छे, तेथीज तेओ परम सुखी छे. "

उपर कहेला अर्थनी विशेष भावना कहे छे

" सिद्धत्तिय बुद्धत्तिय, पारगत्तिय परपरगयत्ति ।
उम्मुक्क कम्मकवया अजरा अमरा असगा य ॥ १ ॥
णित्थीणसव्वदुक्खा जाइजरामरणबंधणविमुक्का ।
अव्वावाह सोक्खं अणुहोतिसासयं सिद्धा " ॥ २ ॥

"जेमणे आठ प्रकारना कर्म क्षय करेला छे, ते सामान्यपणे कर्मक्षयसिद्ध

" कम्मे सिप्पे य विज्जाए मते जोगे य आगमे ।
अथ्थजुत्त अभिप्पाए तवे कम्मक्खए इय " ॥ १ ॥

" कर्मसिध्ध, शिल्पसिध्ध, विद्यासिध्ध, मत्रसिध्ध, योगसिध्ध, आगमसिध्ध, अर्थसिध्ध, युक्तिसिद्ध, अभिप्रायसिध्ध, तपःसिध्ध अने कर्मक्षयसिध्ध इत्यादि सिध्धा कहेला छे, ते कर्मादि सिध्धोनो त्याग करवा माटे बुध्ध कहेल छे एटले अज्ञाननिद्राने विषे सूतेला एवा जगत्ने विषे बीजाना उपदेशवडे जीवादि तत्त्वोने जाणनारा ते बुध्ध कहेवाय छे.

हवे घणा बुध्धो पण आ ससारना भयने त्याग करनारा छे, तेमनो निरास करवाने कहे छे के, ते पारगत छे, एटले ससारना सर्व प्रयोजनना समूहने पार पामेला छे. केटलाएक यदृच्छावादीओ पण अक्रम सिध्धपणाथी तेवा कहेवाय छे, ते भ्रमनो निरास करवा माटे 'परपरागता' कहेल छे, एटले ज्ञान, दर्शन अने चारित्रद्वारा चौद गुणठाणाए करी अनुक्रमे मोक्षना पदने पामेला, ते परपरागत कहेवाय छे. केटलाएक तत्त्वथी कर्ममुक्त नहीं थयेला कहे छे के, 'पोताना तीर्थना तिरस्कारपणाथी (विनाशपणाथी) तेना उध्धार माटे आ लोकमां अवताररूपे आवे छे.' ए वचनथी फरीवार ससारमां आववानु अगीकार करवामा आवता, तेमनो निरास करवाने कहे छे के, ' उन्मुक्त कर्मकवचाः ' प्रवळताथी -फरीथी प्रगट न थवापणाथी सर्व प्रकारे कर्मरुपी कवचनो जेमणे त्याग कर्यो छे एवा छे. तेथीज तेओ 'अजराः' शरीरना अभावथी जरावस्थाए रहित, माटेज 'अमराः' शरीरने अभावे नहीं मरनारा, कारण के, शरीरना असभवथी प्राणना त्यागनो पण तेमने असभव छे, एवा अमर छे, वळी ते सिद्ध भगवानो 'असगाः' एटले बाह्य तथा आभ्यतर एवा सगथी रहित छे वळी तेओ " निस्तीर्णसर्वदुःखाः " एटले जेओ सर्व दुःखोने ओळगी गया छे कारण के, जाति, जरा, मरण अने बधनथी मुक्त थयेला छे, जाति एटले जन्म, जरा एटले वयनी हानि, मरण एटले प्राण त्याग अने बधन एटले तेना कारणरुप कर्मो—ते सर्वेनो जेमणे सम्यक् प्रकारे विनाश करेलो छे, तेथीज ते सिध्ध भगवानो अव्याबाध शाश्वत सुखने अनुभवे छे.

सिद्ध भगवान्ना एकत्रीश गुणो

" संठाण[५] वन्न[५] रस[५] गंध[२] फरस[८] वेयं[३]गसंगजवरहियं[३]।
इगतीस गुणसमिद्धं सिद्धं बुद्धं जिणं नमिमो " ॥१॥

" १ वृत्त, (वर्तुल) २ त्र्यस्र (त्रणखुणादार) ३ चोरस, ४ लांबु अने ५ परिमंडल—ए पांच संस्थान, १ कृष्ण, २ नील, ३ पीत, ४ रातो अने ५ श्वेत—ए पांच वर्ण, १ तीखो, २ कडवो, ३ कसाएलो, ४ खाटो अने ५ मधुर—ए पांच रस, १ सुगंधी अने २ दुर्गंधी—ए बे गंध; १ गुरु, २ लघु, ३ मृदु, ४ खर, ५ शीत, ६ उष्ण, ७ स्निग्ध अने ८ लुखो—ए आठ फरस, १ स्त्री, २ पुरुष अने नपुंसक—ए त्रण वेद, अंग एटले शरीर, संग एटले परवस्तुनो संसर्ग, अने जव एटले जन्म—संसार—आ एकत्रीश उपाधिथी रहित–तेथीज एकत्रीश गुणोथी समृद्धिमान् एवा श्री सिद्ध जगवानोने नमस्कार करीए छीए. "

ते सिद्धोना आठ गुण

आठ कर्मोना क्षयथी सिद्धोने विषे आठ गुणो उत्पन्न थाय छे, ते दर्शावे छे—

" नाणं च दंसणं च अव्वाबाहं तहेव सम्मत्तं ।
अक्खयठिई अरूवं अगुरुलहू वीरियं हवइ " ॥ १ ॥

" ज्ञानावरणीय कर्मना क्षयथी अनंतज्ञानपणुं, २ दर्शनावरणीय कर्मना क्षयथी अनंत दर्शनपणुं, ३ वेदनीय कर्मना क्षयथी अनंत अव्याबाधपणुं,–आ अव्याबाध गुणने लइने अनंत सिद्धो परिमित क्षेत्रमां अन्योन्य अवगाढपणे रहेला छतां तेमने परस्पर बाधा थवानो अजाव छे. ४ मोहनीय कर्मना क्षयथी क्षायिक सम्यक्त्वपणुं, ५ आयुः कर्मना क्षयथी अक्षय स्थितिपणुं, ५ नाम कर्मना क्षयथी अरूपीपणुं, अने ६ गोत्र कर्मना क्षयथी अगुरुलघुपणुं —कारण के, उच्च गोत्रना उदयथी लोकमां गौरव थाय छे अने नीच गोत्रना उदयथी लघुता थाय छे—सिद्ध जगवानोने विषे ए बन्नेनो अजाव होवाथी अगुरुलघुपणुंज छे. अहिं कोइ वादी शंका करे के, सिद्ध जगवानने, सज्जनोने पूजनीय होवाथी गुरुपणुं अने नास्तिकोने पूजनीय न होवाथी लघुपणुं होय,

तेथी अहिं अगुरु लघुपणु केम कहेवाय ? " तेना उत्तरमा कहे छे के, " जेम उच गोत्रवाळा पुरुषना आववाथी आसन उपरथी उठवु, आसन देवु अने पूजा करवी वगेरे थाय छे, अने नीच गोत्रवाळा पुरुषना आववाथी तेम थतु नथी, तेने तो दूरज रखाय छे, तेवी रीते अहिं सिद्ध भगवानोना व्यवहारमां थतु नथी, माटे तेओमा अगुरु लघुपणु छे, ते युक्तज छे. ७ अतराय कर्मना क्षयथी सिद्ध भगवानोमा अनतवीर्यपणु छे, तेथी लोकवर्ती अनत पदार्थोनु समकाले ज्ञान तेमने सभवे छे ८ वळी ते सिद्ध भगवानोने अनत सुखपणु कहेवाय छे, ते वेदनीक कर्मना विनाशथी उत्पन्न थयु एवु अव्याबाध स्वरूप अथवा सम्यक्त्व स्वरूप समजवु.

आ प्रमाणे श्री सिद्ध भगवानना गुणोनु वर्णन करवामा आवे छे, तेमना सकळ मगळमय परमात्म स्वरूपनु वर्णन करता कहे छे के,—

" इत्थ स्वरूप परमात्मरूप, निधाय चित्ते निरवद्यवृत्ते ।
सद्ध्यानरंगात्कृतशुद्धिसंगा भजन्तु सिद्धि सुधिय. समृद्धिम् ।१।

" ए प्रकारे निर्दोष वृत्तिथी चित्तनी अदर श्री परमात्मानु स्वरूप धारण करी शुभ ध्यानना सगथी जेमणे भाव शुद्धि प्राप्त करेली छे, एवा सद्बुद्धिवाळा जनो सिद्धिरूपी समृद्धिने भजो. " १

" भगवत्समयोक्तीना—मनुसारेणैष वर्णितोऽस्ति मया ।
परमात्मत्वविचार शुद्ध स्वपरबोधकृते " ॥ २ ॥

" श्री जिनराजना आगमना वचनोने अनुसारे आ शुद्ध परमात्म तत्त्वनो विचार (स्वरूप) में पोताना अने पर (भव्यजीवो)ना बोधने माटे वर्णन करेल छे. २

श्री जिनभक्तिसूरिना चरणकमळना आराधनमा भ्रमरतुल्य
एवा श्री जिनलाभसूरिए प्रकाशित करेला आ
आत्मप्रबोध ग्रथने विषे परमात्म स्वरूप वर्णन
नामे चोथो प्रकाश सपूर्ण थयो.



आत्मबोधनी दुर्लभता.



" नरेन्द्र देवेंद्र सुखानि सर्वाण्यपि प्रकामं सुलभानि लोके ।
परं चिदानंदपदैकहेतु: सुदुर्लभस्तात्त्विक आत्मबोधः " ॥१॥

" आ लोकने विषे चक्रवर्त्ती अने इन्द्र वगेरेना सर्व सुखो प्राप्त थवां सु
लभ छे, परतु चिदानंद–ज्ञानानद पद (मोक्षपद)ना हेतुरुप एवो तात्त्विक–पार
मार्थिक आत्मबोध थवो अत्यन्त दुर्लभ छे. " १

" ततो निरस्याखिलदुष्टकर्म–व्रज सुधीभिः सततं स्वधर्मः
समग्रसासारिकदु.खरोधः समर्जनीयः शुचिरात्मबोधः ॥२॥

" तेथी उत्तम बुद्धिवाळा पुरुषोए सर्व दुष्ट कर्मना समूहनो नाश करी
संसारना सर्व दुःखोने रोकनार एवा आत्मिक धर्मरुप पवित्र आत्मबोधने संपादन
करवो. " २

ते आत्मबोध करनारी श्री जिनवाणीनु माहात्म्य

" न ते नरादुर्गतिमाप्नुवन्ति, न मूकता नैव जडस्वभावम् ।
न चांधतां बुद्धिविहीनतां नो, ये धारयन्तीह जिनेंद्रवाणीम्"।

" जे पुरुषो आ लोकमा श्री जिनेंद्रवाणीने धारण करे छे, ते पुरुषो
दुर्गतिने, मुंगापणाने, जड स्वभावने, अंधपणाने अने बुद्धिनी हीनताने पामता
नथी. " १

" ये जिनवचने रक्ताः, श्री जिनवचनं श्रयंति भावेन ।
अमलागमतोऽक्लेशा, भवंति ते स्वल्पसंसाराः " ॥२॥

" जे पुरुषो श्री जिन भगवानना वचनने विषे रक्त छे अने जेओ भाववडे श्री जिन वचनने अंगीकार करे छे, तेओ निर्मल आगमना बोधथी क्लेशरहित अने अल्प ससारी थाय छे. " २

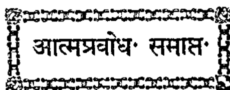
यदुक्तमादौ स्वपरोपकृत्यै, सम्यक्त्वधर्मादिचतुःप्रकाशः ।
विज्ञाप्यतेऽसौ शुचिरात्मबोधः, समर्थित तद्भगवत्प्रसादात् ।३।

" जे प्रथम कहेवामा आव्यु हतु के, पोताना तथा परना उपकारने अर्थे सम्यक्त्वधर्म वगेरे चार प्रकाशवाळो आ आत्मप्रबोध ग्रंथ कहेवामां आवे छे, ते प्रमाणे श्री भगवानना प्रसादथी आ शुद्ध–पवित्र आत्मप्रबोध ग्रथ सपूर्ण कहेवामां आव्यो छे. " ३

मिथ्यादुष्कृत प्रार्थना

प्रमादबाहुल्यवशादबुद्ध्या, यत्किंचिदाप्तोक्तविरुद्धमत्र ।
प्रोक्त भवेत्तज्जनित समस्त, मिथ्याऽस्तु मे दुष्कृतमात्मशुद्ध्या १

" विशेष प्रमादना वशथी, अने बुद्धिना अभावथी, आ ग्रथमा जे काइ आप्त पुरुषोना वचनथी विरुद्ध कहेवामा आव्यु होय, ते आत्मशुद्धिवडे मारु समस्त दुष्कृत मिथ्या थाओ. " १


आत्मप्रबोध· समाप्त·





ग्रंथकार प्रशस्ति.



(ग्रंथकर्त्तानी गुरुपरंपरा.)

" श्रीमद्वीरजिनेंद्रतीर्थतिलकः सद्भूतसंपन्निधिः
संजज्ञे सुगुरुः सुधर्मगणभृत्तस्यान्वये सर्वत. ।
पूर्णे चांद्रकुलेऽनवत्सुविहिते पक्षे सदाचारवान्
सेव्यः शोभनधीमता सुमतिमानुद्योतनः सूरिराट्" ॥१॥

" श्री वीरजिनेश्वरना तीर्थमा तिलकरुप अने सत्य संपत्तिओना निधानरुप गुरु श्री सुधर्मा स्वामी थया हता. तेना वंशमा सर्व प्रकारे पूर्ण एवा चंद्रकुलमा[१] विधिपक्ष (खरतरगच्छनी) अंदर उत्तम आचारवाला अने सारी बुद्धिवाळा विद्वानोने सेववा योग्य एवा उद्योतन नामे सूरिवर थया हता.

" आसीत्तत्पदपंकजैकमधुकृत् श्रीवर्द्धमानाभिधः
सूरिस्तस्य जिनेश्वराख्यगणभृद् जातो विनेयोत्तम. ।
० ८ ० १
य. प्रापच्छिवसिद्धिपंक्तिशरदि श्रीपत्तने वादिनो
जित्वा सद्बिरुदं कृती खरतरेत्याख्यंनृपादेर्मुखात्" ॥२॥

" ते उद्योतन सूरिना चरणकमलमां भ्रमररुप श्री वर्द्धमान नामे तेमना शिष्य थया हता. ते श्री वर्द्धमानसूरिना उत्तम शिष्य श्री जिनेश्वरसूरि गणधर थया हता. ते जिनेश्वरसूरिए विक्रम संवत् १०८० ना वर्षमा श्री जवल्लपुर-

१ अहिं 'सुविहिते पक्षे' एनो अर्थ चंद्रपक्षे उज्वल पक्ष पण थाय छे

मा वादिओने जीती त्याना राजा वगेरेना मुखथी खरतर पदनी पदवी प्राप्त करी हती. २

" तच्छिष्यो जिनचंद्रसूरिगणभृद् जज्ञे गुणांभोनिधिः
संविज्ञोऽभयदेवसूरिमुनिपस्तस्यानुजोऽभूत्ततः ।
येनोत्तुंगनवाङ्गवृत्तिरचना कृत्वार्हतः शासने
साहाय्यं विदधे महच्छ्रुतपरिज्ञानार्थिना धीमताम् " ॥३॥

ते श्री जिनेश्वरसूरिना शिष्य गुणोना समुद्ररूप श्री जिनचंद्रसूरि गणधर थया हता. तेमना शिष्य संवेगी अभयदेवसूरि थया हता. तेमणे श्री जिनशासनने विषे मोटा सिद्धांतोना अर्थने जाणवाना अर्थी एवा बुद्धिमान् पुरुषोने सहाय करवा नव (श्री स्थानांगसूत्रथी विपाकसूत्र सुधीना) अंगो उपर टीका रची हती. ३

" तत्पट्टे जिनवल्लभो गणधरः सन्मार्गसेवापरः
संजातस्तदनुप्रभूतमहिमा सद्भव्यबोधप्रदः ।
अवादत्तयुगप्रधानपदभृत् मिथ्यात्वविध्वंसकृत्
नेता श्रीजिनदत्तसूरिरभवद् वृंदारकाभ्यर्चित " ॥४॥

" ते श्री अभयदेवसूरिनी पछे सन्मार्गनी सेवा करवामां तत्पर एवा श्री जिनवल्लभ गणधर थया हता. ते पछी ते श्री जिनवल्लभनी पाटे जेमनो घणो महिमा छे, जेओ उत्तम एवा भव्य प्राणीओने बोध आपनारा छे, अवा देवीनी सहायथी जेमणे युगप्रधान पद प्राप्त करेलु छे, जेओ मिथ्यात्वनो नाश करनारा छे अने जेओने देवताओए पूजेला छे, एवा श्री जिनदत्तसूरि थया हता. ४

" तदनु श्रीजिनचंद्र. सूरिवरोऽभूत् स्वधर्मनिस्तंद्रः ।
रत्नमणिमण्डितभालप्रणताखिलशिष्टभूपाल. " ॥ ५ ॥

" ते पछी श्री जिनदत्त सूरिनी पाटे श्री जिनचंद्रसूरि थया हता. जेओ स्वधर्मने विषे अप्रमादी अने जेमने सर्व उत्तम राजाओ पोताना सुंदर-सुकुटवाळा मस्तकोथी नमता हता.

" तत्पट्टे गुणनिधयः सम्यग्विजया मुनीश्वराः शुभयः ।

श्री जिनकुशलमुनींद्र–श्रीजिनभद्रादयो मुनयः ॥६॥

श्री जिनचन्द्रसूरिनी पाटे गुणोना निधि रूप, सम्यक् प्रकारे विजयवाला, अने पवित्र एवा श्री जिनकुशल अने श्री जिनभद्र वगेरे मुनींद्रो थया हता. ६

" जज्ञे मुनींद्रस्तदनुक्रमेण श्रीजैनचंद्रो मुनिमार्गसेवी ।
प्रबोधितो येन दयापरेण अक्कब्बराख्यः प्रतिसाहिमुख्यः ७

ते पछी अनुक्रमे मुनिओना मार्गने सेवनारा श्री जैनचन्द्रमुनि थया. जे दयालु मुनिए बादशाहोमा अग्रेसर एवा श्री अकबर बादशाहने प्रतिबोधित कर्यो हतो. ७

तदन्वभूत् श्रीजिनसिंहसूरिः स्वपाटवाल्हादितसर्वसूरि. ।
ततः स्वधीनिर्जितदेवसूरिः स्फुरत्प्रतापो जिनराजसूरिः ८

श्री जैनचन्द्रसूरिनी पाटे पोताना चातुर्यथी सर्व विद्वानोने आनंदित करनार श्री जिनसिंहसूरि थया हता अने तेमनी पाटे पोतानी बुद्धिथी देवताना सूरि बृहस्पतिने पण पराजय करनार अने प्रतापथी स्फुरणायमान एवा श्री जिनराजसूरि थया हता.

तच्छिष्यो जिनरत्नसूरिसुगुरुः श्री जैनचंद्रस्ततो
गच्छेशो गणभृद्वरो गुणगणांभोधिर्जगद्विश्रुतः ।
तत्पट्टोदयशैलमूर्ध्नि च सूरि र्भास्वत्प्रतापोत्कुरः
पूज्य· श्रीजिनसौख्यसूरिरभवत्सत्कीर्त्तिविद्यावरः ॥९॥

" ते श्री जिनराजसूरिना शिष्य जिनरत्नसूरि थया अने तेमना शिष्य श्री जिनचन्द्र थया, जेओ गच्छना नायक, गणधरोमा श्रेष्ठ, गुणगणोना समुद्र अने जगतमां प्रख्यात थया तेमनी पाटरूपी उदयगिरिना शिखर उपर सूर्यना जेवा प्रतापी, पूज्य अने सत्कीर्त्ति तथा सद्विद्याथी श्रेष्ठ एवा श्री जिनसौख्यसूरि थया हता ९

" तत्पादांबुजसेविनो युगवरा· सत्यप्रतिज्ञाधराः
श्रीमंतो जिनभक्तिसूरिगुरवोऽभूवन गणाधीश्वराः ।

" ते श्री जिनसौख्यसूरिना चरणकमळने सेवनारा श्री जिनभक्तिसूरि, गुरु थया, तेओ युगप्रधान, सत्य प्रतिज्ञा धरनारा अने श्रीमान् गणना अधीश्वर थया हता. उद्दामगुणवाळा, स्वधर्ममां निपुण अने अत्यंत सुंदर एवा तेओ पुष्पोनी जेम प्रतिदिन सर्वे तेजस्वी पुरुषोना शिरपर स्थान करता हता १०

तेषां विनेयो निरवद्यवृत्तिः प्रमोदत श्री जिनलाभसूरिः ।
इम महाग्रंथपयोधिमध्यात् समग्रहीद्रत्नमिवात्मबोधम् ११

" ते श्री जिनभक्तिसूरिना निर्दोष वृत्तिवाळा शिष्य श्री जिनलाभसूरि थया हता. तेमणे मोटा ग्रंथोना महासागरमांथी रत्नोनी जेम संग्रह करी आ आत्मप्रबोध ग्रंथ हर्षथी रचेलो छे. ११

३ ३ ८ १

हुताशसंध्यावसुचन्द्रवत्सरे समुज्ज्वले कार्त्तिकपंचमीदिने ।
मनोरमे श्रीमनरारव्यबिंदरेऽगमन्निबंध परिपूर्णतामयम् ।१२

" संवत् १८३३ना वर्षमां कार्त्तिक मासनी शुक्ल पंचमीने दिवसे मनोहर एवा मणार नामना बंदर गामने विषे आ ग्रंथ परिपूर्ण थयेलो छे. १२

यत्किंचिदुत्सूत्रमपप्रयोग निरर्थकं चात्र मया निबद्धम् ।
प्रसिद्य तच्छोध्यमहो सुधीभिः परोपकारो हि सतां स्वधर्मः १३

आ ग्रंथने विषे काइ पण उत्सूत्र [सूत्र विरुद्ध], अशुद्ध प्रयोगवाळु, अने निरर्थक–अर्थ वगरनु माराथी लखायु होय, ते सद्बुद्धिमान् पुरुषोए कृपा करी शोधी लेवु कारण परोपकार करवो, ए सत्पुरुषोनो स्वधर्म छे. १३

यावन्मही मंडलमध्यदेशे विराजते शैलपतिः सुमेरुः ।
तावन्मुनींद्रैरभिवाच्यमानो जीयादसौ ग्रंथवरात्मबोधः १४

ज्यां सुधी आ भूमंडलना मध्य भागे पर्वतोनो राजा सुमेरु पर्वत विराजे छे. त्यां सुधी मुनींद्रोथी वंचातो आ उत्तम ग्रंथ आत्मप्रबोध जय पामो १४

प्रथमादर्शेऽलेखि क्षमादिकल्याणसाधुना श्रीमान् ।
संशोधितोऽपि सोऽयं ग्रंथः सद्बोधभक्तिभृता ॥ १५ ॥

" श्री क्षमा कल्याणक मुनिए आ श्रीमान् ग्रंथने प्रथम प्रति (प्रत) रूपे लखेलो छे अने सद्बोध उपर भक्तिवाळा तेज मुनिए शोधेलो छे. १५

इति ग्रंथकार प्रशस्ति

